

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्व इतिहास

धिरकाल की प्रतीक्षा के बाद सिधी जैन ग्रन्थ-माला का तरुणप्रभाचार्यकृत 'षडावश्यक बालवबोध वृत्ति' नामक यह एक विशिष्ट-ग्रन्थ विद्वानों के हाथ में उपस्थित हो रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का इतिहास मेरे साहित्यिक-जीवन के प्रारंभ काल के जिनना पुराना है।

सन् १९१९ में पूना में रहते हुए सबसे प्रथम मुझे इस ग्रन्थ का परिचय हुआ। मैं उन दिनों पूना में नूतन स्थापित भाषाभारकर प्राच्यविद्या संशोधन मंदिर में राजकीय ग्रन्थ संग्रह का निरीक्षण कर रहा था; प्रो. उटगीकर उस समय उक्त संग्रह के अधीक्षक थे। वे संग्रहगत पुराने ग्रन्थों की सूचियों का निरीक्षण कर रहे थे, तब उन्होंने जैन ग्रन्थों की सूची में 'षडावश्यक वृत्ति' नामक इस ग्रन्थ की बहुत सुन्दर प्राचीन हस्तलिखित प्रति (पांडुलिपि) मेरे सामने लाकर रखी और पूछा कि इस ग्रन्थ का क्या विषय है?

चूँकि इसके पहले मैंने भी इस ग्रन्थ को देखा नहीं था इसलिये प्रो. उटगीकर की जिज्ञासा को पूरी करने के लिये मैंने ग्रन्थ को हाथ में लेकर उसके आदि अन्त के कुछ पन्नों को उलट पुलट किया, तो मुझे मालूम हुआ कि आवश्यक सूत्र पर प्राचीन गुजराती भाषा में सुलिखित, बालजनों को बोध कराने की दृष्टि से लिखा गया, विवरणात्मक बालवबोध वृत्ति अर्थात् व्याख्या है।

उस समय मेरे पास उक्त प्राच्य विद्या संशोधन मंदिर के मुख्य पुरस्कर्ता स्व. प्रो. पांडुरंग दामोदर गुणे बैठे हुए थे। डॉ. गुणे फर्गुसन कलेज में संस्कृत भाषा एवं तुलनात्मक भाषा विज्ञान के मुख्याध्यापक थे। उन्होंने जर्मनी जाकर डॉ. हर्मन जेकोबी के पास प्राकृत भाषा का विशेष अध्ययन किया था और पीएच. डी. की डिग्री ली थी। प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा में लिखित साहित्य का उस समय तक विद्वानों को विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ था। मुझे जैन साहित्य एवं जैन ग्रन्थ भंडारों का अच्छा अध्ययन एवं अवलोकन होने के कारण डॉ. गुणे मुझसे इस विषय में विशिष्ट जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। अतः उनका मेरे साथ पत्रिष्ठ-सा सम्बन्ध हो गया था। जैन भंडारों में प्राकृत अपभ्रंश तथा प्राचीन देशी भाषाओं में लिखित बहुत विशाल साहित्य भरा पड़ा है। इसका परिचय मैं उनको देना रहता था। कुछ छोटी अपभ्रंशी रचनाओं का मैंने उनको परिचय दिया तो वे उनको सम्पादित कर किसी संशोधनात्मक अंग्रेजी पत्रिका में प्रगट करना चाहते थे। उसी सिलसिले में डॉ. गुणे को मैंने इस ग्रन्थ का भी कुछ परिचय कराया। बालवबोध शब्द का अर्थ उनको समझाया। मराठी भाषा में बालबोध शब्द प्रचलित है। परन्तु वृत्ति तो प्रायः देवनागरी लिपि के अर्थ में प्रयुक्त होता है। बालबोध अर्थात् देवनागरी लिपि में लिखी तथा छपी हुई मराठी पुस्तक। इसमें भ्रान्त होकर डॉ. गुणे ने पूछा कि क्या यह ग्रन्थ मराठी भाषा में है? तब मैंने उनको बताया कि प्राचीन जैन ग्रन्थों का आवाल-जनों को ज्ञान प्राप्त कराने की दृष्टि से उन पर प्रचलित देश भाषा में जो कोई अर्थ, विवरण या विवेचन आदि लिखे जाते हैं वे सामान्य रूप से बालवबोध के नाम से पढ़ाने जाते हैं।

जैन आगमों में आवश्यक सूत्र-नामक नामक प्राकृत भाषा का जो एक मूल सूत्र है, उस पर प्राचीन काल में संस्कृत भाषा में अनेक व्याख्याएँ तथा टीकाएँ आदि लिखी गई हैं; परन्तु यह आवश्यक सूत्र संस्कृत तथा प्राकृत भाषा नहीं जानने वाले जैन गृहस्थ-स्त्री, पुरुष या बाल आदि सामान्य जनों को भी अत्रय पठनीय है। इसलिये इसका ज्ञान होता आवश्यक मानकर मध्य-वार्त्तन जैन विद्वानों ने अपने समय की प्रचलित देश भाषा में विवरण आदि लिखने का प्रयत्न

दिया है और इस प्रकार अनेक प्राचीन ग्रन्थों का तात्कालीन देश भाषा में ऐसे बहुत से भाष्यरचोप
रचकर लिखे गये अब मिलते हैं।

डॉ. गुप्ते को अब यह मालूम हुआ कि इस ग्रन्थ की रचना विष्णु की पत्नी कात्यायि के
प्रारंभ में हुई और इसकी भाषा बहुत ही व्याकरणबद्ध तथा शुद्ध उच्चारण पूर्वक कथित है तो उनको
एक विद्वाना जलम हुई और वे कुछ दिन तक मेरे पास बैठकर इस ग्रन्थ के कुछ अंशों को समझने
का प्रयत्न करते रहे।

डॉ. गुप्ते का विचार उस समय अरुण्य भाषा के भाष्य सम्बन्ध रखनेवाला छोटा-मोटा
व्याकरणनामक विद्वान् लिखने का था इस दृष्टि से वे प्राचीन मराठी भाषा का सबसे महत्व का
ग्रन्थ को 'ज्ञानेश्वरी' हैं-उपमा की अपेक्षा कर रहे थे। चूंकि 'ज्ञानेश्वरी' की मूल प्राचीन
मराठी भाषा का सम्बन्ध प्राचीनतम गुजराती भाषा के भाष्य भी कुछ कुछ साम्य रखा है।
इसलिये मैं भी ज्ञानेश्वरी की रचना का उस दृष्टि से अपेक्षा करता रहता था। डॉ. गुप्ते का यह
विचार हुआ कि तत्कालभाषाएँ हून-सन्धुत पहावाचक भाषावर्षोप के कुछ अंशों को प्राचीन
मराठी ग्रन्थ के रूप में अर्थात् लिखा जाय तो कैसा रहेगा ?

मैंने कई जगहों से गुजराती भाषा में लिखित प्राचीन पद्य-महात्मक उन्मेषों का संग्रह करता
रहा था। पाठन में रहते हुए मैंने तादृश्यों पर लिखे गये लिखने ही गद्यांशों का भी संग्रह कर रखा
था और वेग ही वेगों अनेक पद्य रचनाओं का भी संग्रह करता रहा।

प्रस्तुत भाषावर्षोप की विविध उपयोगिता और उसके प्रकाशन निमित्त मेरे प्रयत्न

पर जब मैंने तत्कालभाषाएँ हून प्रस्तुत पहावाचक भाषावर्षोप का विशेष ध्यानपूर्वक
अवधारण किया तो मुझे इसकी विविधता का अच्छा ज्ञान हुआ और मैंने सोचा कि इस
ग्रन्थ का प्राचीन गुजराती भाषा के अपेक्षा की दृष्टि से विविध महत्व है और प्रकाश
में लाना चाहिए।

मैंने इनके तो पहले सोम गुन्दरगूरि हून रचनाओं में से ऐसे लिखने प्राचीन भाषा के महात्मक
अध्यायों का संग्रह कर रखा था। तथा माणिक्यगुन्दरगूरि-‘बागुविलास’ नामक एक सम्पूर्ण
गुजराती महाग्रन्थ का प्रकाशन भी माणिक्य ओरिण्टल गिरीज के एक ग्रन्थ में प्रकाशित करवाया
था। परन्तु उस रचनाओं की अपेक्षा मुझे प्रस्तुत ‘पहावाचक भाषावर्षोप’ अनेक दृष्टि से अधिक
महत्व का मान्य दिया। इसके रचयिता तत्कालभाषाएँ हून गुजरात राजस्थान गिन्ध आदि प्रदेशों
में विशेष परिश्रम किया था। अतः इनको तत्कालीन देश भाषा के विविध स्वरूपों का अच्छा
परिचय था।

प्रथम तो इस ग्रन्थ की रचना वि. सं. १४११-१२ में हुई, जो तब तक प्रायः मुझे सबसे प्राचीनतम
महात्मक भाष्य ही थी और इसकी विविधता इसकी यह मालूम दी कि जो प्रति मूल में उपलब्ध है
यह जगह समय लिखी गई और वह भी स्वयं ग्रन्थकार के निजी तत्कालभाषा में तैयार की गई है।
प्रतिनिधि को ग्रन्थकारने स्वयं पदच्छेद आदि के बिना ही अक्षरों की और लिखितों से कोई लब्ध
या अक्षर छूट गया मालूम दिया तो उसे स्वयं उन्होंने शुद्ध कर दिया। इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ की
उपरोक्त प्रतिनिधि सर्वथा प्रमाणभूत प्रतीत हुई। अतः विचार हुआ कि इस ग्रन्थ को उस मूल प्रति
के आधार पर तैयार करवाकर प्रकाशित करना चाहिए।

इसके बाद मन् १९२० में महारामा गांधीजी ने अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ नामक राष्ट्रीय
विश्वविद्यालय की स्थापना की और उसमें सेवा देने के लिए स्वयं महारामाजी ने मुझे आमन्त्रित
किया। तब मैं मूल प्रति अपने मुख्य कार्यालय को संदुचित कर अहमदाबाद के गुजरात विद्या-

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन का पूर्व इतिहास

चिरकाल की प्रतीक्षा के बाद सिधी जैन ग्रन्थ-माला का तट्टणप्रभाचार्यकृत 'पडावश्यक-बालवबोध वृत्ति' नामक यह एक विशिष्ट-ग्रन्थ विद्वानों के हाथ में उपस्थित हो रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का इतिहास मेरे साहित्यिक-जीवन के प्रारंभ काल के जितना पुराना है।

सन् १९१९ में पूना में रहते हुए सबसे प्रथम मुझे इस ग्रन्थ का परिचय हुआ। मैं उन दिनों पूना में नूतन स्थापित भाषणकारक प्राच्यविद्या संशोधन मंदिर में राजकीय ग्रन्थ संग्रह का निरीक्षण कर रहा था; प्रो. उटगीकर उस समय उक्त संग्रह के अधीशक थे। वे संग्रहगत पुराने ग्रन्थों की सूचियों का निरीक्षण कर रहे थे, तब उन्होंने जैन ग्रन्थों की सूची में 'पडावश्यक वृत्ति' नामक इस ग्रन्थ की बहुत सुन्दर प्राचीन हस्तलिखित प्रति (पांडुलिपि) मेरे सामने लाकर रखी और पूछा कि इस ग्रन्थ का क्या विषय है?

पूरी इमके पहले मैंने भी इस ग्रन्थ को देखा नहीं था इसलिये प्रो. उटगीकर की जिज्ञासा को पूरी करने के लिये मैंने ग्रन्थ को हाथ में लेकर उसके आदि अन्त के कुछ पन्नों को उलट पुलट किया, तो मुझे मालूम हुआ कि आवश्यक सूत्र पर प्राचीन गुजराती भाषा में सुलिखित, बालजनों को बोध कराने की दृष्टि से लिखा गया, विवरणात्मक बालवबोध वृत्ति अर्थात् व्याख्या है।

उस समय मेरे पास उक्त प्राच्य विद्या संशोधन मंदिर के मुख्य पुस्तकाली स्व. प्रो. पांडुरंग दामोदर गुणे बैठे हुए थे। डॉ. गुणे फार्सल कवित्र में सरवृत भाषा एवं तुलनात्मक भाषा विज्ञान के मूल्याध्यायक थे। उन्होंने जर्मनी जाकर डॉ. हर्मन जैकोबी के पास प्राकृत भाषा का विशेष अध्ययन किया था और पीएच. डी. की डिग्री भी थी। प्राकृत तथा अपभ्रंस भाषा में लिखित साहित्य का उस समय तक विद्वानों की विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ था। मुझे जैन साहित्य एवं जैन ग्रन्थ भंडारों का अच्छा अध्ययन एवं अवलोकन होने के कारण डॉ. गुणे मुझमें इस विषय में विशिष्ट जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। अब उनका मेरे साथ परिचित-मा सम्बन्ध हो गया था। जैन भंडारों में प्राकृत अपभ्रंस तथा प्राचीन देगो भाषाओं में लिखित बहुत विंगल साहित्य भरा पड़ा है। इसका परिचय मैं उनको देना रहता था। कुछ छोटी अपभ्रंशो रचनाओं का मैंने उनको परिचय दिया तो वे उनको सम्पादन कर शिरो संशोधनात्मक अंग्रेजी पत्रिका में प्रगट करना चाहते थे। उमो गिर्नमिने में डॉ. गुणे को मैंने इस ग्रन्थ का भी कुछ परिचय कराया। बालवबोध काय व अर्थ उनको समझाया। भराटी भाषा में बालवबोध मध्य प्रचलित है। परन्तु वर तो प्रायः देवनागरी लिपि के अर्थ में प्रयुक्त होता है। बालवबोध अर्थात् देवनागरी लिपि में लिखी तथा छोटी हुई भराटी पुस्तक। इसमें ज्ञान होकर डॉ. गुणे ने पूछा कि क्या यह ग्रन्थ भराटी भाषा में है? तब मैंने उनको बताया कि प्राचीन जैन ग्रन्थों का भाषा-जनों को ज्ञान प्राप्त कराने की दृष्टि से उन पर प्रचलित देग भाषा में जो कोई अर्थ, विवरण या विवेचन आदि लिखे जाने हैं वे सामान्य रूप से बालवबोध के नाम से पढ़ाने जाते हैं।

जैन भाषाओं में आवश्यक सूत्र-नामक नामक प्राकृत भाषा का जो एक मूल मूल है, उस पर संक्षेप रूप से संस्कृत भाषा में अनेक व्याख्याएँ तथा टीकाएँ आदि लिखी गई हैं; परन्तु यह आवश्यक सूत्र संस्कृत तथा प्राकृत भाषा तर्जुम करने वाले जैन सूत्रग्रन्थों, पुस्तक या भाष आदि सामान्य ग्रन्थों की अन्तर्गत पड़ती है। इसलिये इसका ज्ञान होना आवश्यक मानकर मध्य-कालीन जैन विद्वानों ने अपने समय की प्रचलित देग भाषा में विवरण आदि लिखने का प्रयत्न

किया है और इस प्रकार अनेक प्राचीन जैन ग्रन्थों का तत्कालीन देश भाषा में ऐसे बहुत से बालवबोध स्वरूप लिखे गये ग्रंथ मिलते हैं।

डॉ. गुणे को जब यह मालूम हुआ कि इस ग्रन्थ की रचना विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दि के प्रारंभ में हुई और इसकी भाषा बहुत ही व्याकरणबद्ध तथा शुद्ध उच्चारण पूर्वक ग्रथित है तो उनको एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई और वे कुछ दिन तक मेरे पास बैठकर इस ग्रन्थ के कुछ अंशों को समझने का प्रयत्न करते रहे।

डॉ. गुणे का विचार उस समय अपभ्रंश भाषा के साथ सम्बन्ध रखनेवाला छोटा-मोटा व्याकरणात्मक निबन्ध लिखने का था इस दृष्टि से वे प्राचीन मराठी भाषा का सबसे महत्व का ग्रन्थ जो 'ज्ञानेश्वरी' है—उसका भी अध्ययन कर रहे थे। चूंकि 'ज्ञानेश्वरी' की मूल प्राचीन मराठी भाषा का सम्बन्ध प्राचीनतम गुजराती भाषा के साथ भी कुछ कुछ साम्य रखता है। इसलिये मैं भी ज्ञानेश्वरी की रचना का उस दृष्टि से अध्ययन करता रहता था। डॉ. गुणे का यह विचार हुआ कि तर्हणप्रभाचार्य कृत—प्रस्तुत पडावश्यक बालावबोध के कुछ अंशों को प्राचीन मराठी ग्रन्थ के रूप में अवतरित किया जाय तो कैसा रहेगा?

यों में कई वर्षों से गुजराती भाषा में लिखित प्राचीन गद्य-व्याकरणक उल्लेखों का संग्रह करता रहा था। पाठन में रहते हुए मैंने ताड़पत्रों पर लिखे गये कितने ही ग्रंथों का भी संग्रह कर रखा था और वैसे ही वैसे अनेक पद्य रचनाओं का भी संग्रह करता रहा।

प्रस्तुत बालावबोध की विशिष्ट उपयोगिता और उसके प्रकारान् निमित्त मेरे प्रयत्न

पर जब मैंने तर्हणप्रभाचार्य कृत प्रस्तुत पडावश्यक बालावबोध का विशेष ध्यानपूर्वक अवलोकन किया तो मुझे इसकी विशिष्टता का अच्छा ख्याल हुआ और मैंने सोचा कि इस ग्रन्थ का प्राचीन गुजराती भाषा के अध्ययन की दृष्टि से विशिष्ट महत्व है और प्रकाश में लाना चाहिए।

मैंने इसके तो पहले सोम सुन्दरसूरि कृत रचनाओं में से ऐसे कितने प्राचीन भाषा के गद्यात्मक अवतरणों का संग्रह कर रखा था। तथा माणिक्यसुन्दरकृत—'वाग्बिलास' नामक एक सम्पूर्ण गुजराती गद्यग्रन्थ का प्रकाशन भी गायकवाड़ ओरिएण्टल सिरीज के एक ग्रन्थ में प्रकाशित करवाया था। परन्तु उक्त रचनाओं की अपेक्षा मुझे प्रस्तुत 'पडावश्यक बालावबोध' अनेक दृष्टि से अधिक महत्व का मालूम दिया। इसके रचयिता तर्हणप्रभाचार्यने गुजरात राजस्थान सिन्ध आदि प्रदेशों में विशेष परिभ्रमण किया था। अतः इनकी तत्कालीन देश भाषा के विविध स्वरूपों का अच्छा परिचय था।

प्रथम तो इस ग्रन्थ की रचना वि. सं. १४११-१२ में हुई, जो तब तक प्राप्त मुझे सबसे प्राचीनतम गद्यरचना मालूम दी और दूसरी विशिष्टता इसकी यह मालूम दी कि जो प्रति पूना में उपलब्ध है वह उसी समय लिखी गई और वह भी स्वयं ग्रन्थकार के निजी तत्त्वावधान में तैयार की गई है। प्रतिलिपि को ग्रन्थकारने स्वयं पदच्छेद आदि के चिन्हों से अक्षरों को और लिपिकरुता से कोई शब्द या अक्षर छूट गया मालूम दिया तो उसे स्वयं उन्होंने शुद्ध कर दिया। इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ की उक्त प्रतिलिपि सर्वथा प्रमाणभूत प्रतीत हुई। अतः विचार हुआ कि इस ग्रन्थ को उम मूल प्रति के आधार पर तैयार करवाकर प्रकाशित करना चाहिए।

इसके बाद सन् १९२० में महात्मा गांधीजी ने अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ नामक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की और उसमें सेवा देने के लिए स्वयं महात्माजी ने मुझे आमंत्रित किया। तब मैं पूना स्थित अपने मुख्य कार्यालय को संकुचिन् कर अहमदाबाद के गुजरात विद्या-

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकारान का पूर्ण इतिहास

चिरकाल की प्रतीक्षा के बाद गिणी जैन ग्रन्थ-भाषा का तत्कालमाध्यायित 'बालावबोध वृत्ति' नामक यह एक विशिष्ट-ग्रन्थ विद्वानों के हाथ में उभरना हो रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का इतिहास मेरे साहित्यिक-जीवन के प्रारंभ काल के विना पुराना है।

सन् १९१९ में पूना में रहते हुए सबसे प्रथम मुझे इस ग्रन्थ का परिचय हुआ। मैं उन दिनों पूना में नूतन स्थापित भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मंदिर में राजकीय ग्रन्थ संग्रह का निरीक्षण कर रहा था; प्रो. उदगीकर उस समय उक्त संग्रह के अधीशक्त थे। वे भद्रहृत् पुराने ग्रन्थों की सूचियों का निरीक्षण कर रहे थे, तब उन्होंने जैन ग्रन्थों की सूची में 'बालावबोध वृत्ति' नामक इस ग्रन्थ की बहुत सुन्दर प्राचीन हस्तलिखित प्रति (पांडुरंगिणी) मेरे सामने लाकर रखी और पूछा कि इस ग्रन्थ का क्या विषय है?

चूँकि इसके पहले मैंने भी इस ग्रन्थ को देखा नहीं था इसलिए प्रो. उदगीकर की जिज्ञासा को पूरी करने के लिये मैंने ग्रन्थ को हाथ में लेकर उसके आदि अन्त के कुछ पन्नों को उपर उल्टा किया, तो मुझे मालूम हुआ कि आवश्यक सूत्र पर प्राचीन गुजराती भाषा में मुनिविरचित, बाण्डरनों को बोध कराने की दृष्टि से लिखा गया, विवरणात्मक बालावबोध वृत्ति अर्थात् व्याख्या है।

उस समय मेरे पास उक्त प्राच्य विद्या संशोधन मंदिर के मुख्य पुरस्कर्ता स्व. प्रो. पांडुरंग दामोदर गुणे बैठे हुए थे। डॉ. गुणे फर्गुसन कलेज में संस्कृत भाषा एवं तुलनात्मक भाषा विज्ञान के मुख्याध्यापक थे। उन्होंने जर्मनी जाकर डॉ. हर्मन जैकोबी के पास प्राकृत भाषा का विशेष अध्ययन किया था और पीएच. डी. की डिग्री ली थी। प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा में लिखित साहित्य का उस समय तक विद्वानों को विशेष परिचय प्राप्त नहीं हुआ था। मुझे जैन साहित्य एवं जैन ग्रन्थ भंडारों का अच्छा अध्ययन एवं अवलोकन होने के कारण डॉ. गुणे मुझसे इस विषय में विशिष्ट जानकारी प्राप्त करना चाहते थे। अतः उनका मेरे साथ परिचय-सा सम्बन्ध हो गया था। जैन भंडारों में प्राकृत अपभ्रंश तथा प्राचीन देशी भाषाओं में लिखित बहुत विद्याल साहित्य भरा पड़ा है। इसका परिचय मैं उनको देता रहता था। कुछ छोटी अपभ्रंशी रचनाओं का मैंने उनको परिचय दिया तो वे उनको सम्पादित कर किसी संशोधनात्मक अंग्रेजी पत्रिका में प्रकट करना चाहते थे। उसी सिलसिले में डॉ. गुणे को मैंने इस ग्रन्थ का भी कुछ परिचय कराया। बालावबोध शब्द का अर्थ उनको समझाया। मराठी भाषा में बालबोध शब्द प्रचलित है। परन्तु वह तो प्रायः देवनागरी लिपि के अर्थ में प्रयुक्त होता है। बालबोध अर्थात् देवनागरी लिपि में लिखी तथा छपी हुई मराठी पुस्तक। इससे भ्रान्त होकर डॉ. गुणे ने पूछा कि क्या यह ग्रन्थ मराठी भाषा में है? तब मैंने उनको बताया कि प्राचीन जैन ग्रन्थों का आबाल-जनों को ज्ञान प्राप्त कराने की दृष्टि से उन पर प्रचलित देश भाषा में जो कोई अर्थ, विवरण या विवेचन आदि लिखे जाते हैं वे सामान्य रूप से बालावबोध के नाम से पहचाने जाते हैं।

जैन आगमों में आवश्यक सूत्र-नामक नामक प्राकृत भाषा का जो एक मूल सूत्र है, उस पर प्राचीन काल में संस्कृत भाषा में अनेक व्याख्याएँ तथा टीकाएँ आदि लिखी गई हैं; परन्तु यह आवश्यक सूत्र संस्कृत तथा प्राकृत भाषा नहीं जानने वाले जैन गृहस्थ-स्त्री, पुरुष या बाल आदि सामान्य जनों को भी अवश्य पठनीय है। इसलिये इसका ज्ञान होना आवश्यक मानकर मध्य-कालीन जैन विद्वानों ने अपने समय की प्रचलित देश भाषा में विवरण आदि लिखने का प्रयत्न

किया है और इस प्रकार अनेक प्राचीन जैन ग्रन्थों का तत्कालीन देश भाषा में ऐसे बहुत से बालवबोध स्वरूप लिखे गये ग्रंथ मिलते हैं।

डॉ. गुणे को जब यह मालूम हुआ कि इस ग्रन्थ की रचना विक्रम की पन्द्रहवीं शताब्दि के प्रारंभ में हुई और इसकी भाषा बहुत ही व्याकरणबद्ध तथा शुद्ध उच्चारण पूर्वक प्रथित है तो उनको एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई और वे कुछ दिन तक मेरे पास बैठकर इस ग्रन्थ के कुछ अंशों को समझने का प्रयत्न करते रहे।

डॉ. गुणे का विचार उस समय अपभ्रंश भाषा के साथ सम्बन्ध रखनेवाला छोटा-मोटा व्याकरणात्मक निबन्ध लिखने का था इस दृष्टि से वे प्राचीन मराठी भाषा का सबसे महत्त्व का ग्रन्थ जो 'ज्ञानेश्वरी' है—उसका भी अध्ययन कर रहे थे। चूंकि 'ज्ञानेश्वरी' की मूल प्राचीन मराठी भाषा का सम्बन्ध प्राचीनतम गुजराती भाषा के साथ भी कुछ कुछ साम्य रखता है। इसलिये मैं भी ज्ञानेश्वरी की रचना का उस दृष्टि से अध्ययन करता रहता था। डॉ. गुणे का यह विचार हुआ कि तर्हणप्रभाचार्य कृत—प्रस्तुत पडावश्यक बालावबोध के कुछ अंशों को प्राचीन मराठी ग्रन्थ के रूप में अवतरित किया जाय तो कैसा रहेगा ?

यों मैं कई वर्षों से गुजराती भाषा में लिखित प्राचीन गद्य-पद्यात्मक उल्लेखों का संग्रह करता रहा था। पाठन में रहते हुए मैंने ताड़पत्रों पर लिखे गये कितने ही गद्यांशों का भी संग्रह कर रखा था और वैसे ही वैसे अनेक पद्य रचनाओं का भी संग्रह करता रहा।

प्रस्तुत बालावबोध की विशिष्ट उपयोगिता और उसके प्रकाशन निमित्त मेरे प्रयत्न

पर जब मैंने तर्हणप्रभाचार्य कृत प्रस्तुत पडावश्यक बालावबोध का विशेष ध्यानपूर्वक अवलोकन किया तो मुझे इसकी विशिष्टता का अच्छा ख्याल हुआ और मैंने सोचा कि इस ग्रन्थ का प्राचीन गुजराती भाषा के अध्ययन की दृष्टि से विशिष्ट महत्त्व है और प्रकाश में लाना चाहिए।

यों मैंने इसके तो पहले सोम सुन्दरमूरि कृत रचनाओं में से ऐसे कितने प्राचीन भाषा के गद्यात्मक अवतरणों का संग्रह कर रखा था। तथा माणिक्यसुन्दरकृत—'वाग्बिलास' नामक एक सम्पूर्ण गुजराती गद्यग्रन्थ का प्रकाशन भी गायकवाड़ ओरिएण्टल सिरीज के एक ग्रन्थ में प्रकाशित करवाया था। परन्तु उक्त रचनाओं की अपेक्षा मुझे प्रस्तुत 'पडावश्यक बालावबोध' अनेक दृष्टि से अधिक महत्त्व का मालूम दिया। इसके रचयिता तर्हणप्रभाचार्यने गुजरात राजस्थान सिन्ध आदि प्रदेशों में विशेष परिभ्रमण किया था। अतः इनको तत्कालीन देश भाषा के विविध स्वरूपों का अच्छा परिचय था।

प्रथम तो इस ग्रन्थ की रचना वि. सं. १४११-१२ में हुई, जो तब तक प्राप्त मुझे सबसे प्राचीनतम गद्यरचना मालूम दी और दूसरी विशिष्टता इसकी यह मालूम दी कि जो प्रति पूना में उपलब्ध है वह उसी समय लिखी गई और वह भी स्वयं ग्रन्थकार के निजी तत्वावधान में तैयार की गई है। प्रतिलिपि को ग्रन्थकारने स्वयं पदच्छेद आदि के चिन्हों से अंकित की और लिपिकर्ता से कोई शब्द या अक्षर छूट गया मालूम दिया तो उसे स्वयं उन्होंने शुद्ध कर दिया। इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ की उक्त प्रतिलिपि सर्वथा प्रमाणभूत प्रतीत हुई। अतः विचार हुआ कि इस ग्रन्थ को उस मूल प्रति के आधार पर तैयार करवाकर प्रकाशित करना चाहिए।

इसके बाद सन् १९२० में महात्मा गांधीजी ने अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ नामक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की और उसमें सेवा देने के लिए स्वयं महात्माजी ने मुझे आमंत्रित किया। तब मैं पूना स्थित अपने मुख्य कार्यालय को संकुचित कर अहमदाबाद के गुजरात विद्या-

पीठ में सबसे प्रथम एक राष्ट्रीय सेक्टर के रूप में सम्मिलित हुआ। मेरी प्रेरणा मे गांधीजीने उक्त विद्यापीठ में प्राचीन भारतीय सभ्यता, साहित्य और इतिहास के विशिष्ट अध्ययन, अध्यापन की दृष्टि से पुरातत्व-मंदिर नामक एक विशिष्ट समोधन विभाग की स्थापना की और उसके मुख्य आचार्य के रूप में मेरी नियुक्ति हुई।

इस विभाग में अनुसन्धान और स्नानयोगर विद्यार्थियों के अध्ययन की विशिष्ट व्यवस्था की गई थी। सभ्यता, पालि, अपभ्रंस, प्राचीन गुजराती, राजस्थानी पारसी और अरबी भाषा के अध्ययन की भी समुचित व्यवस्था की गई थी। साथ में भारत के प्राचीन इतिहास, स्थापत्य कला आदि सांस्कृतिक विषयों का भी विशिष्ट परिचय प्राप्त करने, कराने की भी योग्य व्यवस्था की गई। इन विषयों के विशिष्ट ज्ञान विद्वानों का भी यथायोग्य प्रबन्ध किया गया।

अध्ययन, अध्यापक के सिवाय उन उन विषयों के प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन कार्य करने की भी व्यवस्था की गई। तद्नुसार सर्वप्रथम सभ्यता, प्राकृत, पालि भाषा की प्राथमिक पाठपुस्तकों प्रकाशित की गई। श्री बाका साहेब बालेनकर जो उक्त समय उक्त पुरातत्व मंदिर के एक विशिष्ट परामर्शदाता, मंत्री के रूप में सम्मिलित हुए थे, उन्होंने 'उपनिषद्-शास्त्रावली' नामक एक पुस्तक तैयार की। मैंने भी प्राकृत भाषा तथा पालि भाषा के विद्यार्थियों के लिए प्राकृत-शास्त्रावली तथा पालि पाठावली नामक दो प्राथमिक पुस्तिकाएँ तैयार की। प्राचीन गुजराती, राजस्थानी भाषा का विशेष अध्ययन एवं समोधन करने, कराने की दृष्टि से 'प्राचीन गुजराती-गद्य संदर्भ' नामक एक विशिष्ट ग्रन्थ का सकलन तैयार किया। इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम मैंने इसी 'यथावश्यक बालावबोध' में से कुछ कथाओं का सवयन किया। इसके उपरान्त सोमसुन्दरसूत्रित्त कुछ कथाओं का सग्रह भी संकलित किया। माणिक्यसुन्दरसूत्र पृथ्वीचंद्र चरित्त अथवा नाम 'बाणविलास' नामक एक पूर्ण कृति भी उक्त सदर्भ में संकलित की गई तथा कितने ही पुरातन औक्तिक निबंधों का भी सकलन किया गया।

इस सदर्भ के संपादन के समय मेरा विचार हुआ कि प्रस्तुत 'यथावश्यक बालावबोध' पूर्ण रूप में 'गुजरात पुरातत्व मंदिर' ग्रन्थावली में यथासमय प्रकाशित किया जाय। तद्नुसार मैंने इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण सुवाच्य अक्षरों में प्रेस कॉपी तैयार करवाई। इस समय मुझे पता लगा कि इस ग्रन्थ का मेरसुन्दरकृत-संश्लिष्ट रूप भी भंडारों में प्राप्त होता है। पता लगाने पर बम्बई की रोयल एशियाटिक सोसायटी के ग्रन्थ संग्रह में भी उसकी एक प्राचीन प्रति विद्यमान है। तब मैंने उसको भी मंगवाई और इन दोनों ग्रन्थों के पाठों का मिलान करना चाहा तो मुझे मालूम हुआ कि मेरसुन्दर ने बहुत से अंश तो तरुणप्रभाचार्य के ग्रन्थ से वैध के वेंगे ही उद्धृत कर लिये हैं और कहीं कहीं वाक्यान्तर और शब्दान्तर का भी प्रयोग किया है। मैं चाहता था कि ग्रन्थ के मूल भाग में तरुणप्रभकृत पाठ दे दिया जाय और उसके नीचे पाद टिप्पणी के रूप में मेरसुन्दरकृत पाठ दिया दे जाय। क्योंकि तरुणप्रभ और मेरसुन्दर के बीच में प्रायः एक शताब्दि के अन्तर है। इसलिए भाषा का तुलनात्मक अध्ययन करनेवाले शोधक-विद्वानों को यह पता लग जाय कि तरुणप्रभ की भाषा में और मेरसुन्दर की भाषा में कितना अंतर पाया जाता है। इस दृष्टि से मैंने मेरसुन्दरकृत रचना की पूर्ण प्रतिलिपि करवा ली थी।

यह समय सन् १९२६-२७ का था। मैंने इस ग्रन्थ को छापवाने के लिये बम्बई के निर्णय सागर जैसे विख्यात एवं सुन्दर छापाई करनेवाले प्रेस में जाकर इसके टाइप आदि का प्रबन्ध किया।

इसके साथ ही उसी गुजरात पुरातत्व मंदिर ग्रन्थावली में, गुजरात के प्राचीन इतिहास का एक मुख्य आधारभूत ग्रन्थ, मेरसुन्दर आचार्य रचित 'प्रबन्ध चिन्तामणि' नामक ग्रन्थ का मुद्रण कार्य भी मैंने प्रारंभ किया और उसे बम्बई के जैसे ही प्रख्यात कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस में छपाने को दे दिया। निर्णय सागर प्रेस में 'सम्पत्ति तर्क' नामक महाग्रन्थ, पुरातत्व मंदिर ग्रन्थावली के अन्तर्गत छप रहा था इसलिए उस प्रेस ने कुछ समय बाद प्रस्तुत ग्रन्थ का काम हाथ में लेने को कहा।

सन् १९२८ के प्रारंभ में मेरा विचार जर्मनी जाने का हुआ और उसके लिए मैंने, गुजरात विद्यापीठ से दो साल की अनुपस्थिति की स्वीकृति के लिये, महात्मा गांधीजी से निवेदन किया और उन्होंने मुझे सहर्ष एवं सोत्साह वसा करने की अनुमति प्रदान की। साथ ही उन्होंने कृपा करके अपने यूरोपियन मित्रों को उद्दिष्ट कर अपने हस्ताक्षरों से अंकित एक संक्षिप्त सिफारशी पत्र भी मुझे प्रदान किया।

सन् १९२८ के मई महीने के अन्तिम सप्ताह में पी. एण्ड ओ. कम्पनी की स्टीमर द्वारा मैंने यूरोप के लिये प्रस्थान किया। पेरिस और लन्दन की युनिवर्सिटियों और ब्रिटिश म्यूजियम आदि का अवलोकन करना हुआ हार्सर्ड और बेलजियम की कुछ विशिष्ट संस्थाएँ देखता हुआ, अगस्त महीने में जर्मनी के प्रख्यात बन्दरगाह हाम्बुर्ग में पहुँचा। वहाँ पर मेरे कई सम्मान्य जर्मन विद्वान मित्र-जैसे कि डॉ. हर्मन याकोबी, प्रो. फोनग्लाडेनाप, प्रो. ओट्टोभायडर, प्रो. शुब्रिग, डॉ. आल्सडोर्फ आदि विद्वानों से मुलाकातों करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि इन विद्वानों में से प्रो. आल्सडोर्फ के सिवाय आज कोई विद्यमान नहीं है।

हाम्बुर्ग युनिवर्सिटी में इण्डोलोजी (भारतीय ज्ञानविज्ञान) विषयक शिक्षापीठ के अध्यक्ष प्रो. शुब्रिग थे, जो सन् १९२६ में अहमदाबाद स्थित हमारे गुजरात पुरातत्व मंदिर का कार्य निरीक्षण करने के लिए आये थे। उनके साथ वहाँ पर प्रायः चार महीने व्यतीत किया। उनके शिष्यों में डॉ. ओल्सडोर्फ तथा डॉ. तवाडिया (जो गुजरात के पारसी कौमके एक रिसर्च स्कॉलर थे और खासकर गुजराती भाषा के अध्ययन, अध्यापन एवं संशोधन कार्य का उच्च ज्ञान प्राप्त कर रहे थे), आदि पाँच-सात रिसर्च स्कॉलर जिनमें कुछ जर्मन बहिने भी थी—काम कर रहे थे। डॉ. आल्सडोर्फ अपभ्रंश भाषा साहित्य का विशेष अध्ययन एवं संशोधन सम्पादन आदि कार्य कर रहे थे। डॉ. तवाडिया भी जो गुजराती भाषा एवं साहित्य का विशिष्ट अध्ययन कर रहे थे के साथ प्राचीन गुजराती भाषा साहित्य विषयक चर्चा होती रहती थी। प्रसंगवश मैंने प्राचीनतम गुजराती गद्य साहित्य का जब परिचय कराया तो उसमें प्रस्तुत तरुणप्रभाचार्यकृत 'पद्मवर्गक बालावबोध' का भी परिचय विशेष रूप से कराया। चूंकि डॉ. तवाडियाने मेरी सम्पादित 'प्राचीन गुजराती गद्य सदम' नामक पुस्तक का अच्छी तरह अवलोकन किया था। और उनके पास मेरी वह पुस्तक भी रखी हुई थी। प्रसंगवश मैंने उनसे कहा कि जब मैं जर्मनी से वापस लौटकर अपने स्थान गुजरात पुरातत्व मंदिर पहुँचूँगा तब इस पूरे ग्रन्थ को छापवाने का प्रबन्ध करूँगा इत्यादि।

प्रो. डॉ. शुब्रिग अपने समय के जर्मन विद्वानों में जैन साहित्य के सबसे बड़े अभ्यासी और उच्च कौटि के समस्त विद्वान थे। प्राकृत और संस्कृत, अपभ्रंश भाषा के अनिरीक्षित प्राचीन गुजराती तथा हिन्दी भाषा के भी ज्ञाता थे। प्राचीन गुजराती गद्य-गद्य वे अच्छी तरह समझते थे और मुझसे उनका आग्रह था कि मैं उन्हें जो पत्र लिखूँ वह गुजराती में ही लिखा करूँ। उनसे भी प्रसंगवश प्रस्तुत 'पद्मवर्गक बालावबोध' ग्रन्थ का परिचय मैंने उनको कराया और वे इन सब बातों को बराबर नोट करते रहे।

हाम्बुर्ग से दिसम्बर में मैं बतलिन गया और वहाँ पर मुझे युनिवर्सिटी में भारतीय विद्या संस्थान के प्रधानाध्यापक तथा जर्मन ओरिएंटल सोसायटी के अध्यक्ष विश्वविद्यालय गोंहाइमगट डॉ. हार्डनीस ल्युडन तथा उसकी विदुषी पत्नी डॉ. एल. जे. ल्युडन, डॉ. वाडबगेन आदि अनेक विद्वानों से परिचय करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

उसी तरह जर्मनी के विश्व विद्यालय, बर्लिन पोलिटिकल के महान् आचार्य, जर्मन साम्राज्य की पोलिटिकल एनेडेमीके अध्यक्ष, प्रो. फोनमुन्च वेबेनिन्स जैसे महान् राजनीतिज्ञ आदि अनेक विद्वानों का भी यथेष्ट परिचय प्राप्त करने का मुअसरर मिला। फोनमुन्च वेबेनिन्स अपने समय के संसार के एक राजनीतिशास्त्र के महान् विद्वान थे। उनको भारत की नन्वाचीन राजनीतिक परिस्थिति का भी बहुत कुछ परिज्ञान था। इंग्लैंड के मुस्लिम राजनीतिज्ञ विद्वान और नेता प्रो. हेल्ड सातकी जैसे उनके मित्र शिष्यों में से थे। उनके साथ महात्मा गांधीजी द्वारा बनाई बतलिन-

वाली राजकीय प्रवृत्ति के विषय में भी बहुत-सी चर्चाएँ होती थी। उनकी एक मात्र विदुषी पुत्री थी, जिसको भी भारतीय संस्कृति और जाति के विषय में बहुत रुचि थी और वह कई बार मेरे द्वारा बर्लिन में स्थापित हिन्दुस्तान हाउस में मिलने आता करती थी। डॉ. ह्यूमर्स तथा उनकी पुत्री एवं प्रो. गेदेन्सिस तथा उनकी पुत्री एक बार हिन्दुस्तान हाउस में चाय पान करने के लिए भी आये थे।

बर्लिन में बैठे बैठे भी गुजरात पुरातत्व मंदिर द्वारा छात्रे हुए और छात्रेजाने वाले ग्रन्थों के विषय की चिन्ता बराबर बनी रहती थी। प्रबन्ध विन्नामनि के कुछ प्रक भी मैं वहाँ मंगवाता रहा। प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ की प्रस्तावना जो मैं विचार के साथ लिखना चाहता था, परन्तु जर्मनी चले जाने के कारण वह लिख नहीं पाया। बाद में पीछे मे पुरातत्व मंदिर को उनी मूलरूप में छपवाकर उसे प्रसिद्ध कर देना पड़ा। यदि उम प्रस्तावना को मैं उम समय लिख पाता तो उममें प्रस्तुत 'पडावश्यक बालावबोध' के साथ सम्बन्ध रखनेवाली उपयुक्त माहिती लिख देता।

जर्मनी से आने पर जान हुआ कि गुजरात पुरातत्व मंदिर की स्थिति स्थिति-सी हो गई है, और मुझे महात्मा गांधीजी द्वारा प्रारंभ नामक सत्याग्रह आन्दोलन में से मंगल होकर सन् १९३० के मई महीने में अंग्रेज सरकार के जेल जाने में छ महीने की विश्रान्ति का आनन्द लेना पड़ा।

नासिक की सेट्रल जेल में रहते हुए स्व. भिन्नपर श्री कर्णधारान मुशी से घनिष्ठ सम्बन्ध हुआ। हम दोनों पास पास भी कोठरियों में रातको सो जाया करते थे, परन्तु गारा दिन; खाना पीना, उठना बैठना, चर्चा वार्ता करना आदि सब एक साथ ही करते रहते थे। मुशीजी वही जेल में रहते हुए अपनी 'गुजरात एंड इट्स लिटरेचर' नामक प्रसिद्ध पुस्तक का आवेष्टन भी करते रहते थे। उसके विषय में उनके साथ हमेशा विचार-विमर्श होता रहता था। 'कुचलय माया' आदि ग्रन्थों का परिचय मैंने उनको कराया उसी तरह और भी अनेक ग्रन्थ तथा ऐतिहासिक प्रमाणों आदि के विषय में भी उनको बहुत से नोट्स कराये। उनके साथ भी प्राचीन गुजराती गद्य विषयक साहित्य के अनेक ग्रन्थों का परिचय देते हुए प्रस्तुत 'पडावश्यक बालावबोध' नामक ग्रन्थ का भी विशिष्ट परिचय कराया। यह सुनकर मुशीजी की बड़ी तीव्र अभिजाया हुई कि गुजराती भाषा के ऐसे महत्व के ग्रन्थों का उद्धार करने की कोई योजना बनानी चाहिए।

चूंकि गुजरात पुरातत्व मंदिर की विघटना हो चुकी थी, अतः उसके स्थान पर बम्बई के पास अन्धेरी में एक ऐसी नूतन साहित्यिक संस्था स्थापित की जाय, जिसमें श्री मुशीजी, मैं तथा अन्य इसी प्रकार के दो चार विद्वान आसन लगा कर बैठें और गुजरात की संस्कृति के साधनमूल विविध प्रकार के ग्रन्थों का आलेखन, सम्पादन तथा प्रकाशन आदि का कार्य किया जाय। श्री मुशीजी की योजना थी कि उनके द्वारा पूर्वस्थापित गुजरात साहित्य सभा का पुनर्निर्माण किया जाय और अन्धेरी में एक अच्छीसी उपयुक्त जगह लेकर वहाँ पर कार्यारंभ किया जाय। इस विषय में जेल में बैठे बैठे हम अनेक मनोरथ किया करते थे।

इसी नासिक जेल में गुजरात बहुधुत, वयोवृद्ध, छायातनामा कवि श्री बलवन्तराय कम्पाण-राय ठाकोर मुझसे मिलने आये। वे गुजराती साहित्य के उद्भूत विद्वान थे। उस समय वे प्राचीन गुजराती भाषा की साहित्यिक कृतियों का अध्ययन एवं सम्पादन कार्य करना चाहते थे। उन्होंने जब मेरी सम्पादित उपर्युक्त 'प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ' नामक पुस्तक देखी तो उस पर उनको काम करने की इच्छा हुई। प्रसंगवश वे नासिक के पास देवलाही नामक स्थान में रहनेवाले अपने एक मित्र के पास हवा खाने की दृष्टि से कुछ दिन आकर रहे थे। उनको ज्ञात हुआ कि मैं भी नासिक की जेल में हवा खा रहा हूँ। तब वे जेल सुपरिटेण्डेंट की खास इजाजत लेकर मुझसे मिलने आये, सबसे पहले तो मुझे बहुत मीठे शब्दों में उन्होंने उपालम्भ दिया, कि आप साहित्य सेवा के महान् पुण्य कार्य को छोड़कर इस राजनैतिक खटपट के गोरखघर में पड़कर अपना अमूल्य समय क्यों नष्ट कर रहे हैं—इत्यादि। चूंकि प्रो. ठाकोर एक विशिष्ट विचारधारा रखनेवाले बड़े स्वतंत्र मित्राज के घनी थे। महात्मा गांधीजी द्वारा चलाई गई कुछ राजकीय प्रवृत्तियों के वे घात विरोधी

थे। इसीसे मुझे उन्होंने उक्त प्रकार का भीड़ा उगावम्भ दिया, उनके साथ मेरा बहुत बुरा मे घनिष्ठ सम्बन्ध था मैं जब पूना में भांडारकर रिमर्श इंस्टीट्यूट के लिए कार्य कर रहा था, तब वे पूना के देश प्रख्यात वैद्यकन कनिष्ठ में एक विद्वत् प्रोफेसर के पद पर काम कर रहे थे। यही मे उनके साथ मेरा विद्वत् स्नेह सम्बन्ध हो गया था। प्रो. टाकोर के साथ अनेक प्रकार की साहित्यिक सर्वाकारों के प्रयोग में उन्होंने अपनी यह दृष्टा व्यक्त की, कि 'प्राचीन मुसलानी मध्य मंत्रमें' का मध्य रचनाओं पर भाषावीय विवेचन रूप एक निबन्ध और विद्वत् शब्द कोप तैयार करने का विचार है। इसलिये मध्यमभाषाई इति-पदावम्भ कायारबोध' के रचना समय तथा उपलब्ध प्राचीन निबन्ध प्रति एवं व्यवहार के विषय में उपयुक्त जानकारी मांगी। मैंने उनसे सन्दर्भ कर जानकारी दी और कहा कि मैं जेठ से मुक्ति पाने के बाद इस पूरे ग्रन्थ को छावाने का प्रबन्ध करना चाहता हूँ।

मुत्तर प्रो. टाकोर बोले कि आज जब यहाँ मे मुक्त होकर अहमदाबाद जावे तब मुझे सुचित करना विगमे मे वही आकर इस विषय में विशेष बातचीत करना चाहूँगा।

जेठ का समय पूरा होने पर मैं और भी मुंशीजी दोनों ही एक साथ नाविक के मेलन जेठ के द्वार मे बाहर निकले और साथ ही रेल द्वारा बम्बई पहुँचे। उस समय मुंशीजी गान्धाकुल में रहते थे, हम दोनों वहाँ पहुँचे। मुंशीजी की पुत्रनीया माताजी मे हमारा स्वागत किया। मैं उनके साथ दो-तीन दिन बहाँ रहा और उगी समय अण्ठेरी में जाकर, त्रिम मंधा की स्थापना की। बन्दना जेठ में बैठे कर रहे थे उसने जिने उपयुक्त जगह की भी तयार की। दो-तीन जगह भी देखी गई। मुंशीजी चाहते थे कि महीने दो महीने में ही यह मूलन माया शुरु कर दी जाय। उनके जिने अतिशय रक्षय बँसे प्राण की जाय इसकी भी कुछ करेगा उन्होंने आर्पोषित कर ली और मुझे भी उगसे शीघ्र ही सम्मिलित होकर कार्यरत करने का आग्रह किया। मैं वहाँ मे तिर अहमदाबाद जाने स्थान पर पहुँचा।

शांतिनिकेतन में सिधो जैन ज्ञानपीठ की स्थापना तथा सिधो जैन उद्यममाताका कार्यरिभ

दो-तीन महीने अहमदाबाद रहना हुआ इस बीच मे बनारस मे तब भी बहदुर निरजी सिन्धी का आग्रहपूर्वक आमरण किया और जेठ जाने के पहले शांति निवेदन जाने का और वहाँ पर सिन्धी जैन ज्ञानपीठ स्थापित करने का जो बहुत-सा विचार विविध होकर एक सफल का ही साबित था। अक्टूबर १९३१ के आसपास महीने में अहमदाबाद मे अपने आश्रम के कुछ छात्रों के सहित ही निकर मे शांतिनिकेतन पहुँचा। वहाँ पर सिन्धीजी की विद्वत् साहित्य विद्वत् एवं उपलब्ध के कारण सिधो जैन ज्ञानपीठ और सिधो जैन उद्यममाता की मूलन स्थापना की। जेठ से सिन्धी जैन उद्यममाता मे अनेकानेक उद्यो के सम्बन्ध और प्रबन्ध की योजना हुआ मे ली, उनके सहित अनेक जैन साहित्य के अनेक विद्वत् एवं प्रकाश मे आने लगे।

उद्यममाता मे स्थापित विवेकानन्दो उद्यो की विद्वत् स्थापना मे उपयुक्त अनेकानेक आचारबोध' उद्ये का भी सहायक किया गया। अनेक उद्यो ऐस बनें जो बीने अहमदाबाद से दुर्गम स्थान मे रहने हुए कार्यरत की वृ मेरे मदद से मुक्तिपत की।

बार मे मज् १९३२ में मुंशीजी के विद्वत् प्रकाश मे उगी दुर्गम स्थान और बनारस (जो हमने शांति की मेलन जेठ में बैंगलर लोदी और जेठ मे मे लिखे कर अण्ठेरी में बना क जिने उपलब्ध करि की जो देवस्थान कर लगी थी) अहमदाबाद स्थित विद्वत् स्थापना की मूलन स्थापना का स्थापक हुआ। श्री मुंशीजी मे प्रकाश ही मे मुझे हमने सफल हुए के जिने अण्ठेरी का प्रकाश किया। बीने उनके उपलब्ध अनेकानेक साहित्य, इतिहास अनेक विद्वत् स्थापना के कारण अहमदाबाद होकर मया दोन दोन मूलन स्थापना विद्वत् स्थापना के कार्य मे मदद कर देवे का समय हुआ। कार्य के अहमदाबाद और दोन दोन मूलन स्थापना की मूलन स्थापना विद्वत् स्थापना (अहमदाबाद)

काशीकर) का कार्य मात्र सम्पादने को कहा। मद्रास देने तक मिथी जैन ग्रन्थमाला के सम्पादन एवं प्रकाशन का बहुत बड़ा काम था और जिसका पूर्ण अंतिम देने ही पर मिथी का अन्तर्गत श्री मन्त्रीजी के माध्यम से के कारण इसे सम्पादित किया गया के सम्पादन का कार्य मात्र ही कुछ समय के लिये हाथ में लिया गया किन्तु जैन ग्रन्थमाला के सम्पादन एवं भी वास्तविकता मिथी मिथी के परामर्श में ही मैने यह कार्य भी सम्पादन। बाद में श्री मन्त्री जी के माध्यम से गया ग्रन्थमाला की भारी मुद्रणव्यय एवं मुद्रणकार को दक्षिण में सम्पादन का कार्य कराया गया भी भारतीय विद्या भवन को सौंप देने का मैने निर्णय किया। मद्रास ग्रन्थमाला भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रकाशित की जा रही है।

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन कार्य डॉ. श्री प्रबोध पंडित को देने का प्रस्ताव

उत्तरोक्त उल्लेखानुसार मिथी जैन ग्रन्थमाला सम्पादनका कार्य की शर्ती में परमेश्वर वाचस्पत्योय का भी सम्मिलित कर रखा था और मद्रास तक वर्ष १९००-०१ में इस काम का शेष मैने देने का और प्रेम में छानवाने का विचार मैने कर ही रहा था। उन्होंने द्वारा डॉ. प्रबोध पंडित भारतीय विद्या भवन में एक स्वामिन् के रूप में कुछ प्रशयन करना वास्तव में। उन्होंने भी इनका स्वीकार किया देने का प्रस्ताव किया। बाद में उनका मत और पत्रों का कार्य का विचार हुआ था मैने इनको मुताबक दिया कि उपरोक्त प्रस्तुत वाचस्पत्योय के कुछ बातों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन करने जैसा है। इनको मैने मुताबक प्रस्तुत माला और इनका मत वास्तव इसी विषय पर अपना योग्य तैयार करना निर्णय किया। डॉ. वैज्ञानिक मत प्राप्त की वह मैने इनका दो माध्य में प्राचीन मुद्रणार्थि मद्रास नामक पुस्तक भी इनका दो बर्षों इस कार्य की मुख्य या कर्ता है वे सब उनमें मैने छानवा दी थी।

श्री प्रबोध पंडित लन्दन में दिशि प्राप्त कर वापस आये तब उन्होंने मुझे बताया मद्रास विद्यार्थी इसकी विविध उत्तरोक्ति देखकर मैने इस मिथी जैन ग्रन्थमाला में छानवा देने का निर्णय किया, परन्तु उन्होंने जो काम किया वह तो ग्रन्थ गत विविध गनों वास्तवों का भाषा-वैज्ञानिक विनिर्णय रूप है। ग्रन्थ का मुख्य विषय क्या है और इसमें सम्पादन के लिये विविध विषयों का विचारों का विवेचन किया है वह तो मूल ग्रन्थ का पूरा अध्ययन किये बिना ठीक परिज्ञान नहीं हो सकता और मैने लक्ष्य जो इस ग्रन्थ की तरफ प्रारंभ ही में आहूट हुआ है वह तो भाषा-वैज्ञानिक विनिर्णय के उपरान्त ग्रन्थ गत विविध विषय की विविधता के कारण है। अब मैने अपने पूर्व मन्त्रालयानुसार डॉ. प्रबोध पंडित के प्रस्तुत योग्य के माध्यम से ग्रन्थ का मूल रूप में शुद्धता के माध्यम छानवा देने का निर्णय किया और इस पूरे ग्रन्थ का सम्पादन कार्य करने का भी इनको परामर्श दिया। मद्रास बम्बई के निर्णय सागर प्रेम में मुद्रण कार्य मैने चालू कराया।

निर्णय सागर प्रेम में इसका काम अब चालू किया तब उस प्रेम में मिथी जैन ग्रन्थमाला के और भी ऐसे अनेक महत्व के ग्रन्थ छान रहे थे। इसलिये प्रेम मुद्रिधानुसार धीरे धीरे इसका मुद्रण कर रखा था। इसी बीच मैने बम्बई निवास कम होने लगा और अधिक समय राजस्थान में मैने प्रयत्न द्वारा नूतन प्रस्थापित और राजस्थान सरकार द्वारा संचालित 'राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान' का कार्यभार मुझे सम्पादन प्राप्त हुआ। अब अधिक समय इस नूतन प्राच्य विद्या मंदिर की व्यवस्था में व्यस्त रहने लगा।

उधर बम्बई में निर्णय सागर प्रेम त्रिममें मैने अनेकानेक ग्रन्थ छाने रहे, इसकी व्यवस्था में भी कुछ विशेष गतिविधता होने लगी और प्रेम अपनी इच्छानुसार काम देने में असमर्थ मालूम दिया। तब अधूरा रहा हुआ काम पूना के आर्य भूषण प्रेम में कराता निर्णय किया। ग्रन्थ सम्पादन डॉ. प्रबोध पंडित भी उस समय पूना के एक इन्स्टीट्यूट में काम कर रहे थे, इसलिये इनको प्रेष आदि देखने में सुविधा रही। इस प्रकार नई वर्षों के परिश्रम के बाद अब यह ग्रन्थ प्रकाशित होने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

प्रस्तुत सम्पादन में, जैसाकि श्री प्रबोध पंडित ने सूचित किया है तीन-चार प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं जिनमें सबसे पहले जो प्रति मेरे देखने में आई वह ऊपर उल्लेखित पूना के भांडारकर प्राच्य विद्या संगोष्ठन मंदिर के संग्रहण राजकीय ग्रन्थालय की है। परन्तु बाद में वीकानेर के प्रसिद्ध जैन मंडार में इस ग्रन्थ की एक वैसी ही विमुद्रा प्रति उपलब्ध हुई जो प्रसिद्ध साहित्योपासक और बहुपरिश्रमी लेखक श्री अगरचंदजी नाहटा द्वारा प्राप्त हुई। वैसी ही दो अन्य प्रतियाँ क्रमशः पाटण (गुजरात) और सीमड़ी (सीराष्ट्र) के ज्ञान भंडारों से प्राप्त हुई। ये सब प्रतियाँ ग्रन्थकार के समय की हैं। ग्रन्थकार के उपदेश ही से उनके भवन श्रावकोंने इन प्रतियों का आलेखन कराया है। अतः इस दृष्टि से इस ग्रन्थ का यह सम्पादन एक विनिष्ट महत्त्व रखता है।

इस ग्रन्थ की एक ऐसी ही विनिष्ट प्रति हमको जैसलमेर के भंडार में देखने को मिली थी। हमारे विचार से यह प्रति सर्वोत्तम थी। इसके प्रथम पृष्ठ में सुवर्णमय त्रिन भगवान का चित्र था और दूसरे पृष्ठ के प्रथम पार्श्व में तरुणप्रभाचार्य का रेखांकित स्वर्णमय चित्र था। मालूम देना है कि इस प्रति को स्वयं ग्रन्थकारने अपने हाथ से संशोधित की थी। इसकी अन्तिम प्रगति में उल्लेख किया गया है कि इस 'पडावश्यक बालावबोध' की अद्वारह प्रतियाँ उस समय तैयार की गई थी। उनको भिन्न-भिन्न भंडारों में स्थापित की थी। इस प्रगति की हमने नज़र करनी थी। परन्तु वह हमारे सपह के इधर उधर हो जाने से अब हमें प्राप्त नहीं है।

कुछ ऐसे अन्य बालावबोध भी उपलब्ध हुए हैं

अन्यान्य भंडारों के अवलोकन करते समय हमें ऐसे और भी पडावश्यक बालावबोधों की प्रतियाँ देखने में आईं, जिनसे मालूम होता है कि तरुणप्रभाचार्य प्रस्तुत बालावबोध के अतिरिक्त भी अन्य कुछ विद्वानों ने ऐसे बालावबोधों की रचनाएँ की हैं, जो इसी प्रकारकी भाषा शैली में लिखी गई हैं।

तरुणप्रभाचार्य धरतर गच्छ के एक विनिष्ट अनुयायी थे और उन्होंने अपने गच्छ के उत्तमक जनों की दृष्टि रखकर अपने गच्छ की परंपरानुसार इस ग्रन्थ में मूल पाठ अतिष्ठित किया है। संभव है इसी तरह तरुणगच्छ आदि अन्य गच्छों के विद्वानों ने भी जरने-जाने गच्छों को परंपरा-अनुसार मान्य मूल पाठ पर बालावबोध लिखे होने चाहिए। इसी प्रकार का एक अन्य 'पडावश्यक बालावबोध' हमारे अवलोकन में आया है,—जिसके स्थान का अब हमें ठीक से स्मरण नहीं है। शायद अहमदाबाद के ही किसी भंडार से उपलब्ध हुआ था। परन्तु उसके अन्तिम दो पन्नों की फोटोकॉपी हमने अहमदाबाद में रहते हुए करवा ली थी, जो अभी तक हमारे पास है। यह प्रति भी बहुत पुरानी है। यह बालावबोध भी बहुत पुराना लिखा हुआ है। इसकी पत्र संख्या १५५ है। इसका जो अन्तिम पत्र है वह मूल प्रति की, आठानि और तिपि से कुछ भिन्न है। इसमें मालूम होता है कि मूल प्रति का अन्तिम पत्र किसी कारण से नष्ट या भ्रष्ट हो जाने के कारण पीछे में नया पत्र लिखकर मूल प्रति के साथ सलग्न कर दिया गया है। यह नया पत्र में १४५५ में लिखा गया है। अतः मूल प्रति इससे अवश्य पुरानी लिखी गई होनी चाहिए तथापि स. १४५५ का उल्लेख सूचित करता है कि कम से कम तरुणप्रभाचार्य के बालावबोध रचना के समनानामिक ही यह बालावबोध रचा गया होगा। इस बालावबोध की प्रति का अन्तिम उल्लेख नीचे दिया जाता है। भाषा की दृष्टि से यह उनकी परिष्कृत नहीं मालूम देनी, जिनकी तरुणप्रभाचार्य की रचना में दृष्टिपूर्वक होती है। इस दृष्टि से ही तरुणप्रभाचार्य की रचना को हमने श्रेष्ठ ममता है। तथापि भिन्न-भिन्न लेखक विद्वानों की विभिन्न शैली की दृष्टि में ऐसे सभी ग्रन्थों का संशोधन सम्पादन कार्य होने में भाषा के विकास विस्तार एवं प्रचार का सम्बन्ध ज्ञान प्राप्त हो सकता है। ऐसे ग्रन्थों के अध्ययन से सम्बोधन और सम्बोधन संपोषना के विविध रूपों का विशेषसाध्यक अध्ययन बहुत जरूरी है।

“एहो पच्छरवाणनइ विपद। विवेचिइ। दन उदम दन करम। जेह भगी मूया धर्मनउ उदम और हइ। मोक्ष पतसानी उकार। ॥ छ ॥

प्रत्याख्यान बालावबोध ॥ छ ॥ चउपउ-अधिकार संपूर्ण हूउ ॥ छ ॥ श्री आश्रयक-
पदावबोध बालावबोधः । एहमाहि च्यारि अधिकार ॥ छ ॥ पहिलेद अधिकारि देव बंदन १ ।
बीजद गुरु बंदन २ । बीजद पहिलमणउ ३ । चउपउपन्ववा ४ । समाप्त ॥ संवत् १४५५
वर्ष भाद्रवामासे शुक्लपक्षे १२ गुरुवासरे । लिपित कापस्थ ॥

ग्रन्थगत विषय का किंचित परिचय

राजपत्रभावायें ने इस ग्रन्थ के आवश्यक सूत्र में आनेवाले विषयों का बहुत विस्तार से विवेचन किया है । उन्होंने न केवल आवश्यक सूत्र के अन्तर्गत सूत्र पाठों का ही अर्थोद्घाटन करने का प्रयत्न किया है । अपितु प्रसंगान्तर्गत अनेक अन्यान्य शास्त्रीय उल्लेख और प्रमाण उद्धृत करके उनका भी अर्थोद्घाटन किया है । इसलिये इसमें मूलसूत्र पाठ के सिवाय संकड़ों प्राचीन गद्यांश तथा प्रकरण आदि में बहून से श्लोक भी उद्धृत किये गये हैं और उनका भी स्पष्टीकरण सूचक अर्थ लिखा गया है । नही-नही किमी विषय से सम्बन्ध रखनेवाले सन्धे प्रकरण भी उद्धृत कर दिये हैं ।

उदाहरण के तोर पर गान पान के विषय में जैन धर्मानुयायियों को किस प्रकार संयम रखना चाहिए और दिन-दिन यस्तुओं का उपयोग नही करना चाहिए इस विषय में जो अनेक नियम उपनिषद बतलाये गये हैं, उनमें मद्यपान, मासमक्षण, रात्रिभोजन, आदि का निषेध भी बनाया गया है । मद्यपान के कारण मनुष्य को दिन-दिन दोषों का भागी होना पड़ता है और मनुष्य का जीवन जिस तरह दुःखमय और दुर्गुणमय बनता है, इसके लिये प्रमाण स्वरूप हिन्दूग्रन्थों में से अनेक श्लोक उद्धृत किये हैं । इसी तरह मास मक्षण के लिये भी हिन्दूग्रन्थों में से निषेधात्मक कई श्लोक उद्धृत किये हैं । रात्रि भोजन से होनेवाले शारीरिक और मानसिक दोषों का निरूपण करने-वाले कई ग्रन्थों के श्लोक उद्धृत किये हैं । इस विषय में आयुर्वेद शास्त्र के भी कुछ प्रमाण लिखे हैं (देखें प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठ १३३ से १३६ तक दिये गये संहृत श्लोक) ।

इसी तरह जैन धर्मानुयायियों को व्यापार आदि में भी किस प्रकार का संयम रखना चाहिए और किस-किस प्रकार के व्यापारिक कर्म भी नही करने चाहिए । इसका भी बहुत मार्मिक विचार धार्मिक दृष्टि से किया गया है और उसके लिये जैन ग्रन्थों में से अनेक शास्त्रीय प्रमाण उद्धृत किये गये हैं । (देखें पृ १३८ से १८० तक) ।

सप्तमानुसार जैन गृहग्रन्थों को अपने श्लोक उपयोग की सामग्री के व्यवहार में किस प्रकार का सम्यग्भाव रखना चाहिए और उसमें किस प्रकार मनुष्य को साम अनाम आदि कतरी प्राप्ति होती है । इसके लिये उदाहरणस्वरूप एक पुरानी घमे-कथा भी लिखी गई है । इसी तरह अहिंसा, सत्य, आश्रय, व्रतचर्य, अपरिग्रह आदि व्रतों के पालन के विषय में भी गुण-दोष सूचक अनेक शब्द प्रमाण लिखे गये हैं । तथा विवेकीय विषयों को स्पष्ट करने के लिये तद् तद् विषयक उदाहरण भूत पुरानी कथाएँ भी लिखी गई हैं । ये सब कथाएँ हमने अपनी उक्त प्राचीन गुजराती मय सन्धे कापक पुस्तके में भी प्रकाशित कर दी थी । किन्तु मद्रास २३ है । वहीं वहीं प्रकाशक ने अपनी इतिहास रचनेवाली प्रसक्तानुसार कर दी है जैने कि पृ २१६ से २१९ पर स्वर्चित "क्षेत्रीय शरणन किन प्रकिया प्रमाण स्वरुप" नामक भारतीय ग्रन्थों का एक गुण स्तव हो उद्धृत कर दिया है । इसी तरह पृष्ठ २२६ पर "आश्रयन जोडु किन स्वरुप विषयक" नाम के भाद्रपक्षी का एक और इतिहास स्वरुप उद्धृत किया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ में अनेक वृत्तों को जैन धर्म विषयक शास्त्रीय विचारों और शिक्षाओं का परिचय करने का योग्य प्रयत्न किया गया है और इतिहास वत् यथायथ बालावबोध ग्रन्थ बन रहा है ।

ग्रन्थ का मूल नाम 'बालावबोध सूत्रार्थ' रखा है । परन्तु पर सूत्र वृत्ति प्राचीन प्रसक्तानुसार

इन्होंने विचरण विद्या। सं. १२२२ में तीर्थयात्रा करते हुए अपने भक्त-धनिक श्रावकों के साथ इनका आगमन दिल्ली नगर में हुआ (दिल्ली का नाम उस समय योगीनीपुर भी प्रसिद्ध था)। दिल्ली में उस समय तोमरवंशीय राजा मदनपाल का राज्यशासन चल रहा था। दिल्ली में उस समय राज्यमान्य और जन सम्मान्य अनेक जैन श्रावकों का गुज प्रभुत्व था। मूर्ति स्तूपशोण के नाम से प्रसिद्ध प्राप्त श्रावकों के कई धनिक कुटुम्ब वहाँ बगने थे। इन श्रावकों ने विद्या गिद्ध और बुद्धि निधान आचार्य जिनचन्द्र सूरि का बहुत बड़े ठाठ के साथ प्रवेशोत्सव किया। जिसे जान गुन कर महाराज मदनपाल भी बड़ा प्रभावित हुआ और उसने बहुतमत्पूत्रक जैन आचार्य को अपने चरण कमल से राज प्रासाद को पवित्र करने के लिये आमंत्रित किया। राजा ने बहुत भक्तिपूर्वक इनका सत्कार किया और अत्यन्त विनय भाव से धर्मोपदेश श्रवण किया। दैवगति से इनका उगी वर्ष दिल्ली में ही स्वर्गवास हो गया।

इस तरह केवल २५, २६ वर्ष जितनी अल्पायु में ही ये दैवगति को प्राप्त हुए, परन्तु इनकी इस प्रकार की अल्पायु में ही बड़ी प्रतिबुद्धि और प्रतिष्ठा हुई। इनकी योग विद्या गिद्ध अनेक चमत्कारिक घटनाएँ घटाने छतर गच्छ की पट्टावलिमें से उल्लिखित मिलनी है। दिल्ली के पाग महरोली नामक स्थान में जहाँ इनके विभूतिपूर्ण शरीर का अग्निस्फार हुआ था यहाँ पर गुप्रसिद्ध दादाबाड़ी नामक एक पूजनीय स्थान बना हुआ है, जहाँ पर आज भी सैकड़ों भक्तजन उस भूमि के दर्शन बन्दन करने जाते रहते हैं।

इन्हीं प्रथम जिनचन्द्र सूरि की पट्ट परंपरा में द्वितीय जिनचन्द्रसूरि हुए जो प्रस्तुत ग्रन्थकर्ता के दीक्षामुक्त थे। ये जिनचन्द्र सूरि भी प्रथम जिनचन्द्र सूरि के समान ही बहुत प्रभावशाली और सम्मान प्राप्त आचार्य हुए। इनकी आचार्य पदस्थापना सवत १३४१ में इनके गुरु आचार्य जिनप्रबोध सूरि ने स्वयं की और संवत १३७६ में इनका स्वर्गवास हुआ। इस प्रकार प्रायः ३५ वर्ष जितने इनके आचार्य काल में छतरगच्छ की मुख्य परंपरा के अनुयायी समुदाय में इनके द्वारा अनेक धार्मिक महोत्सव सम्पन्न हुए। इन्होंने अपने आचार्यकाल में सोराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, सपाद-लक्ष एवं सिंध प्रदेश में कई बार परिभ्रमण किया और वहाँ के निवासी अपने भक्तजनों में धर्मोपदेश द्वारा धार्मिक संस्कारों की खूब वृद्धि की अनेक तीर्थयात्राएँ की गईं। इसके लिये बड़े बड़े सभ निकाले गये अनेक स्थानों में नये जिन मंदिर बनाये गये और उनमें सैकड़ों जिन मूर्तियाँ स्थापित की गईं। इसी तरह अनेक श्रावक श्राविकाओं ने आत्मकल्याण का व्रत ग्रहण किये तथा तपस्या आदि के उद्योग, मालारोपण आदि विविध प्रकार के धार्मिक कार्य सम्पन्न हुए।

इन जिनचन्द्र सूरि के समय में गुजरात, सोराष्ट्र, मारवाड़, दिल्ली, हरियाणा और सिन्ध के प्रदेशों में भयंकर राजनैतिक उथल-पुथल हुई। यह समय भारत के राजकीय इतिहास में बहुत ही दुःखदायक एवं प्रलयकारी परिस्थिति का घटक रहा था। इन्हीं वर्षों में गुजरात के स्मृद्धिशाली अणहिलपुर, पाटण का विध्वंस हुआ। उसकी अपार स्मृद्धि का विनाश हुआ। सोराष्ट्र में शत्रुंजय, गिरनार, सोमनाथ तथा द्वारका जैसे भारत विख्यात तीर्थस्थान नष्ट भ्रष्ट हुए। जालोर चित्तौड़ और रणथम्भौर जैसे हिन्दूजाति के महान् संरक्षक गिने जानेवाले दुर्ग ध्वस्त हुए। गुजरात का सोनीय राजवंश, मालवे का परमार राजवंश, मेवाड़ का गुहिलीत राजवंश तथा जालोर और रणथम्भौर का चौहान जैसा महान् पराक्रमी राजवंश स्थानभ्रष्ट और सत्ताहीन बनें। इसके कारण सारा भारत भयान्त्रन्त हो रहा था। सर्वत्र विधर्मी-लुटेरों द्वारा भयंकर लूटमार मची हुई थी। जनता का सर्वस्व खोसा जाता था। हिन्दू देवी-देवताओं के भव्य मंदिर खंडहर बन रहे थे। देवमूर्तियाँ तोड़ी फोड़ी जाकर मस्जिद और मकबरों की दीवारों में चुनी जा रही थी। हजारों स्त्री-गुरुप पकड़ पकड़ कर कैदी बनाये जा रहे थे और हजारों ही तलवार की धार से बतल किये जा रहे थे। एक प्रकार से भारत के मध्यकालीन इतिहास का सबसे बड़ा संकट मय और विपत्तिजनक यह समय था।

जिनचन्द्र सूरि उस समय के प्रत्यक्षदर्शी एवं अनुभवी आचार्य थे। छतर गच्छ बृहद् गुर्विली

मूरि की वृद्धावस्था का प्रभाव बढ़ रहा था। उनकी शारीरिक स्थिति क्षीण हो चली थी तब वे अपना अन्तिम समय नवद्वीक जानकर से सं. १३८८ में देवराजपुर आ गये। वहाँ के शायर जनों ने उनका बड़ा प्रवेशोत्सव किया। उस समय उनकी सेवा में जो मनि, मुनि आदि विद्यमान थे उनमें मुख्य थी तरुणप्रभ गणि और सन्धिनिदान गणि थे। उस वर्ष के मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी के दिन एक बड़ा महोत्सव मनाया गया और उस महोत्सव में पं. तरुणबीनि गणि को आचार्य पद प्रदान किया गया और तरुणप्रभाचार्य ऐसा नाम उद्घोषित किया। पं. सन्धिनिदान गणिको महोपाध्याय के पद पर अभिषिक्त किया। उसी प्रसंग पर दो शुल्क और दो शुल्किताओं का भी दीशोत्सव हुआ। उन शुल्करों के नाम ज्योतिष मुनि और पुण्यप्रिय मुनि रचे गये। शुल्किताओं के नाम ज्योती और धर्मधी थे। उस प्रसंग पर दस शायरियों ने धर्ममानस्य धारण की तथा अनेक शायर, शायरिकाओं ने कई प्रकार के व्रत ग्रहण किये। बृहद् गुरुवाली में इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए तरुणबीनि गणि के लिये निम्नलिखित गुणवर्णनारमक पंक्ति लिखी गई है :-

तस्मिन् महोत्सवे गाम्भोर्षादायं, धर्मं धर्मोर्षिकं विदुष्य बचित्क, वागिमत्क, सत्य, शीघ्रद्वित्य
ज्ञान दर्शन आरिष्य विशद पटु त्रिसात्पूरि गुण गण मणि विपणि ना. पं. तरुणशीति गणिनाम्।—
इस पंक्तिगत उल्लेख में तरुणप्रभाचार्य को विगिष्ट गुणरता का आभाम भिन्नता है।

उसके बाद आनेवाला चानुसांग जिनकुशल मूरि ने उसी देवराजपुर में खनीत किया और श्री तरुणप्रभाचार्य तथा सन्धिनिदान उपाध्याय को सम्मति तक और स्वयंसेवा रत्नाकर जैसे महान् ज्ञान नरक शास्त्रों का गभीर अध्ययन कराया, फिर माघ शुक्ल में गाढ़ ज्वर और श्वाम आदि व्याधि प्रकोप बढ़ जाने पर तरुणप्रभाचार्य और सन्धिनिदान उपाध्याय को आगने आदेश दिया कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे पट्ट पर पद्ममूर्ति नामक १५ वर्षीय बाल मुनि की पद स्थापना की जाय।

यह पद्ममूर्ति मुनि आचार्य श्री जिनकुशल मूरि के स्वहस्त दीक्षित गिण्य थे। वे पद्ममूर्ति सधनोदर गेट के पुत्र साधुराज आम्बा के पुत्ररत्न थे। इनको माता का नाम कीटा था। इनकी दीक्षा सं. १३८४ में इसी देवराजपुर में हुई। इनके पिता साधुराज सा. आम्बा बड़े धनिक व्यक्ति थे। उस साल के माघ सुदी पंचमी के दिन बड़ा भारी प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ, जिसमें विष के कई स्थानों में मूर्तियाँ बिराजमान करने की दृष्टि से अनेक प्रनिमार्य वहाँ लाई गई और जिनकुशल मूरि के कर कर्मियों द्वारा वह सारा प्रतिष्ठा कार्य सुगम्यत्र हुआ।

उसी महोत्सव पर साधुराज आम्बा के पुत्र-रत्न को भी दीक्षा दी गई और उनका नाम पद्ममूर्ति रखा गया। उनके साथ आठ अन्य शुल्करों को भी दीक्षित किया गया। इन शुल्करों के नाम इस प्रकार हैं :-मावमूर्ति, मोदमूर्ति, उदयमूर्ति, विजयमूर्ति, हेममूर्ति, भद्रमूर्ति, मेघमूर्ति और हृमंमूर्ति। इनके साथ बुलधर्मा, विनयधर्मा, शीलधर्मा नामक तीन शुल्किताएँ भी दीक्षित हुईं।

श्री जिनकुशल मूरि के हाथों से गिण्य में यह सब से बड़ा महोत्सव सम्पन्न हुआ। सभव है पद्ममूर्ति बालसाधु जो उस समय श्री जिनकुशल मूरि की सेवा में विद्यमान थे। एक तो वे बहुत धनिक गृहस्थ के पुत्र थे और सोभाग्यादि गुणों में भी प्राग्ग्याली दिखाई देने थे। इसलिये मूरिजीने उनको अपना गदीधर गच्छ मायक बनाना योग्य समझा और अपनी यह इच्छा उन्होंने तरुणप्रभाचार्य जैसे गच्छ के बहुत बड़े मुनि के सम्मुख प्रकट की।

इस के बाद संवत् १३९० के फाल्गुन मास की कृष्ण पंचमी की रात्रि को जिनकुशल मूरि का स्वयंसेवा हुआ। दूसरे दिन बहुत विस्तार के साथ उनका अग्निर्तकार किया गया। इस प्रसंग का विस्तृत वर्णन बृहद्गुरुवाली में दिया गया है।

इस के बाद संवत् १३९० के जेठ महीने की शुक्ल छठ सोमवार के दिन श्री तरुणप्रभाचार्य ने जयधर्म-महोपाध्याय तथा सन्धिनिदान-महोपाध्याय आदि तीस मुनि तथा अनेक साध्वी मंडल के साथ श्री जिनकुशल मूरि की अन्तिम शिशा के अनुसार उनके पट्टपर पद्ममूर्ति शुल्कर की पदस्थापना कर जिनपद्म मूरि के नाम से उद्घोषित किया।

सूरि की वृद्धावस्था का प्रभाव बढ रहा था। उनकी शारीरिक स्थिति क्षीण हो चली थी तब वे अपना अन्तिम समय नजदीक जानकर से सं. १३८८ में देवराजपुर आ गये। वहाँ के श्रावक जनों ने उनका बड़ा प्रवेशोत्सव किया। उस समय उनकी सेवा में जो यति, मुनि आदि विद्यमान थे उनमें मुख्य श्री तरुणप्रभ गणि और सच्चिनिदान गणि थे। उस वर्ष के मार्गशीर्ष शुक्ल दसवी के दिन एक बड़ा महोत्सव मनाया गया और उस महोत्सव में पं. तरुणकीर्ति गणि को आचार्य पद प्रदान किया गया और तरुणप्रभाचार्य ऐसा नाम उद्घोषित किया। पं. सच्चिनिदान गणिको महोपाध्याय के पद पर अभिषिक्त किया। उसी प्रसंग पर दो क्षुल्लक और दो क्षुल्लिकाओं का भी दीघोत्सव हुआ। उन क्षुल्लकों के नाम जयप्रिय मुनि और पुण्यप्रिय मुनि रखे गये। क्षुल्लिकाओं के नाम जयश्री और धर्मश्री थे। उस प्रसंग पर दस श्राविकाओं ने धर्ममालाएँ धारण की तथा अनेक श्रावक, श्राविकाओं ने कई प्रकार के व्रत ग्रहण किये। वृहद् गुर्वावली में इस प्रसंग का उल्लेख करने हुए तरुणकीर्ति गणि के लिये निम्नलिखित मुण्यवर्णनात्मक पंक्ति लिखी गई है :-

'तस्मिन् महोत्सवे गाम्भीर्योदायं, धैर्यं स्वैर्याजं च विद्वत्त्व कवित्व, वाग्मिन्त्व, सत्त्व, सौविहित्य ज्ञान दर्शन चारित्र विशद षट् त्रिसप्तसूरि गुण गण गणि विपणि नां. पं. तरुणकीर्ति गणिनाम्।'—
इन पंक्तिगत उल्लेख से तरुणप्रभाचार्य को विशिष्ट गुणवत्ता का आभास मिलता है।

उसके बाद आनेवाला चातुर्मास जिनकुशल सूरि ने उसी देवराजपुर में व्यतीत किया और श्री तरुणप्रभाचार्य तथा सच्चिनिदान उपाध्याय को सम्मति तक और स्वादवाद रत्नाकर जैसे महान् जैन तर्क शास्त्रों का गंभीर अध्ययन कराया, फिर माघ शुक्ल में गाढ़ ज्वर और श्वास आदि व्याधि प्रकोप बढ जाने पर तरुणप्रभाचार्य और सच्चिनिदान उपाध्याय को आपने आदेश दिया कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे पट्ट पर पद्ममूर्ति नामक १५ वर्षीय बाल मुनि की पद स्थापना की जाय।

यह पद्ममूर्ति मुनि आचार्य श्री जिनकुशल सूरि के स्वहस्त दीक्षित शिष्य थे। ये पद्ममूर्ति लक्ष्मीधर सेठ के पुत्र साधुराज आम्बा के पुत्ररत्न थे। इनकी माता का नाम कोका था। इनकी दीक्षा सं. १३८४ में इसी देवराजपुर में हुई। इनके पिता साधुराज सा. आम्बा बड़े धनिक व्यक्ति थे। उस साल के माघ सुदी पंचमी के दिन बड़ा भारी प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ, जिसमें सिंध के कई स्थानों में मूर्तियाँ विराजमान करने की दृष्टि से अनेक प्रतिमाएँ वहाँ लाई गईं और जिनकुशल सूरि के कर कमलों द्वारा वह सारा प्रतिष्ठा कार्य सम्पन्न हुआ।

उसी महोत्सव पर साधुराज आम्बा के पुत्र-रत्न को भी दीक्षा दी गई और उसका नाम पद्ममूर्ति रखा गया। उनके साथ आठ अन्य क्षुल्लकों को भी दीक्षित किया गया। इन क्षुल्लकों के नाम इस प्रकार हैं :-भावमूर्ति, मोदमूर्ति, उदयमूर्ति, विजयमूर्ति, हेममूर्ति, भद्रमूर्ति, मेघमूर्ति और हर्षमूर्ति। इनके साथ कुलधर्मा, विनयधर्मा, शीलधर्मा नामक तीन क्षुल्लिकाएँ भी दीक्षित हुईं।

श्री जिनकुशल सूरि के हाथों से सिंध में यह सब से बड़ा महोत्सव सम्पन्न हुआ। सभ्य है पद्ममूर्ति बालसाधु जो उस समय श्री जिनकुशल सूरि की सेवा में विद्यमान थे। एक तो वे बहुत धनिक गृहस्थ के पुत्र थे और सौभाग्यादि गुणों से भी भाग्यशाली दिखाई देने थे। इसलिये सूरिजीने उनकी अपना गद्दीधर गच्छ नायक बनाना योग्य समझा और अपनी यह इच्छा उन्होंने तरुणप्रभाचार्य जैसे गच्छ के बहुत बड़े मुनि के सम्मुख प्रकट की।

इस के बाद संवत् १३९० के फाल्गुन मास की कृष्ण पंचमी की रात्रि को जिनकुशल सूरि का स्वर्गवास हुआ। दूसरे दिन बहुत विस्तार के साथ उनका अग्निसंस्कार किया गया। इस प्रसंग का विस्तृत वर्णन वृहद्गुर्वावली में दिया गया है।

इस के बाद संवत् १३९० के जेठ महीने की शुक्ल छठ सोमवार के दिन श्री तरुणप्रभाचार्य ने जयधर्म-महोपाध्याय तथा सच्चिनिदान-महोपाध्याय आदि तीन मुनि तथा अनेक साध्वी मंडल के साथ श्री जिनकुशल सूरि की अन्तिम विधा के अनुसार उनके पट्टपर पद्ममूर्ति क्षुल्लक की पदस्थापना कर जिनपद्म सूरि के नाम से उद्घोषित किया।

‘पट पत्तनालंकार आदि जिनस्तवन’, ‘भीमपत्नी वीर जिनस्तवन’, ‘तारंगलंकार अजित जिनस्तवन’, आदि रचनाओं से ज्ञान होता है कि इन्हीं तीर्थस्थानवाले प्रदेश में इनका भ्रमण रहा होगा।

इनका स्वर्गवास किस वर्ष में हुआ, इसका कोई उल्लेख हमारे देखने में नहीं आया। श्री अणुरचन्द्रजी नाहटा का अनुमान है कि सं. १४२० के आपसामु इनका स्वर्गवास हुआ होगा।

श्री तरुणप्रभ मूरि की शिष्य परंपरा आदि के बारे में भी कोई विशेष उल्लेख हमारे देखने में नहीं आया।

श्री जिनोदय मूरि की पट्ट स्थापना इन्हीं के द्वारा हुई थी और इसलिये जिनोदय मूरि के सम्बन्ध में जो ‘विवाहला तथा पट्टाभिषेक राम’ नामक तत्कालीन प्राचीन भाषा रचना प्राप्त होती है। उसमें इनके विषय में लिखा है कि “तरुणप्रभ मूरिने श्री जिनचन्द्र मूरि (तृतीय) के पट्ट पर सोमप्रभ नामक विद्वान गणि की स्थापना कर उन्हें जिनोदय मूरि के नाम से उदघोषित किया।”

जिनोदय मूरि श्री जिनकुशल मूरि के बाद चौथे पट्टधर आचार्य हुए। यों वे उन्हीं के दीक्षित शिष्य थे। वे बहुत प्रभावशाली आचार्य थे। इनका रचा हुआ “विज्ञप्तिमहालेख” हमें मिला है। जिसको हमने, सिध्दी जैन ग्रंथमाला के प्रयाक ५१ के रूप में, अन्यान्य अनेक विज्ञप्ति लेखों के साथ, प्रकाशित किया है। यह ‘विज्ञप्ति महालेख’ इस प्रकार के विज्ञप्ति लेखों में एक विशिष्ट एवं उत्कृष्ट रचना है। यह लेख विक्रम संवत् १४३५ में रचा गया है। उस समय जिनोदय मूरि गुजरात के प्रसिद्ध पाटण शहर में चातुर्मास रहे हुए थे। वहाँ पर अयोध्या नगर में रहनेवाले लोकहिताचार्य द्वारा भेजा हुआ एक विशिष्ट प्रकार का विज्ञप्ति लेख श्री जिनोदय मूरि को मिला तो उसके प्रत्युत्तर रूप में जिनोदय मूरि ने भी वैसाही एक विशिष्ट लेख तैयार कर श्री लोकहिताचार्य को अयोध्या भेजा। यही उका ‘विज्ञप्ति महालेख’ है।

जिनोदय मूरि ने उस समय से पहले तीन चार वर्षों में जो तीर्थ यात्राएँ तथा प्रतिष्ठा महोत्सव आदि जहाँ जहाँ किये, उनका विशिष्ट प्रकार की अलंकारिक भाषामें वर्णन किया है। लेख बहुत ही श्रेष्ठ शब्दावली से अलंकृत संस्कृत भाषामें लिखा गया है। इस विज्ञप्ति महालेख में उन्होंने उल्लेख किया है कि; “तीराट्ट देश की यात्रा करते हुए हम मुप्रसिद्ध नवलखी बन्दरनामक स्थान पर भी गये और वहाँ के जैन मंदिर में स्थित श्री जिनरत्न मूरि, श्री जिनकुशल मूरि तथा श्री तरुणप्रभ मूरि के पाद-पत्रों को वदन नमन किया।” इससे ज्ञान होता है कि संवत् १४३१ के पूर्व ही श्री तरुणप्रभ मूरि का स्वर्गवास हो गया था।

उस समय श्री तरुणप्रभ मूरि के स्थान पर गच्छ एवं संघकी व्यवस्था का कार्यभार श्री विनयप्रभ उपाध्याय संभाल रहे थे, ऐसा जिनोदय मूरिके विज्ञप्ति महालेख से ज्ञान होता है। उन्होंने लिखा है कि—“हम यात्रा करते हुए जब घोषा नामक बन्दर में पहुँचे तो वहाँ पर नवलखंड पाण्डनाथ भगवान के दर्शन किये और वही पर गच्छका समग्र कार्यभार बहन करने वाले हमारे महासक एवं विद्या के समुद्र समान श्री विनयप्रभ महोपाध्याय का अत्यन्त आह्लादजनक संगम हुआ।” इस उल्लेख से ज्ञान होता है कि श्री जिनकुशल मूरि के स्वर्गवास के अनन्तर गच्छ समुदाय का जो कार्यभार श्री तरुणप्रभमूरि बहन करते थे। उनके अभाव में वही कार्यभार उस समय श्री विनयप्रभ महोपाध्याय बहन कर रहे थे।

ये विनयप्रभ श्री जिनकुशल मूरि के ही दीक्षित शिष्य थे। जिनोदय मूरि के माय ही इन्होंने संवत् १३८२ में दीक्षा ली थी। जिनोदय मूरि का दीक्षा नाम सोम-प्रभ था। जिनको तरुण-प्रभाचार्य ने संवत् १४१५ में आचार्यपद प्रदान कर गच्छनायक के रूप में प्रतिष्ठित किया था।

ये विनयप्रभ उपाध्याय भी तरुणप्रभाचार्य के समान ही अच्छे विद्वान् थे। इनकी ‘श्री गौतम स्वामीरत्न’ नामक एक प्राचीन भाषा-रचना मुप्रसिद्ध है। जो प्रायः, दीपावली के दूसरे दिन अनेक यति-मुनि तथा श्रावक आदि के द्वारा एक भागतिक स्तुति पाठ के रूपमें पढ़ी-सुनी जाती है। यह भी एक संयोग की बात है कि जिस दीपावली के दिन तरुणप्रभाचार्य ने अपने प्रस्तुत श्रावकसंघ प्रत्यक्षी

रचना पूर्ण की उसी दीपावली के दूसरे दिन श्री विनयप्रभ उपाध्याय ने उन गौतम रास की रचना की अर्थात् सवत १४११ के दीपावली के दिन तरुणप्रभाचार्य की रचना पूर्ण हुई। और सं. १४१२ के प्रथम दिन अर्थात् कार्तिक सुदी १ के दिन (जो गौतम गणधर का कैवल्य ज्ञान प्राप्ति का दिन माना जाता है) उस दिन उक्त रासकी रचना हुई थी। तरुणप्रभाचार्य उस समय पाटण में थे और विनयप्रभ उपाध्याय खमात में थे।

गण

जिस प्रकार तरुणप्रभाचार्य कृत् प्रस्तुत बालावबोध प्राचीन गुजराती की एक उत्तम कृति है, इसी प्रकार विनयप्रभ उपाध्याय रचित 'गौतम रास' भी प्राचीन गुजराती भाषा की एक विशिष्ट पद्य रचना है।

बहुत वर्षों पहले गुजराती भाषा के प्राचीन इतिहास की दृष्टि से विद्वानों में वादविवाद चला था और उसमें बहुतसे विद्वान गुजराती पद्य रचना के आदि कवि नृमिह मेहता को मानते थे। उस वादविवाद के प्रसंग पर स्व. श्री मनमोहनलाल किरतचन्द मेहता ने अपने एक निबन्ध में यह स्थापित करने का प्रयत्न किया था कि 'गौतम रास' गुजराती भाषा की सबसे प्राचीन तथा उत्तम कोटि की पद्य रचना है। इत्यादि—

परन्तु इसके बाद तो हमने नैमीनाथ चतुस्पदिका नामक एक सुन्दर प्राचीन गुजराती पद्य रचना प्रकट की थी जो विनयचन्द्र सूरि की बनाई हुई है, और वह गौतमरास के पूर्व साठ सत्तर वर्ष पहले रची गई थी। *इसके पत्रों का सं १२५०-१२५५ तक के मध्य में*

प्रस्तुत बालावबोध एक प्रकार से प्राचीन गुजराती गद्य रचना की एक विशिष्ट कृति मानी जाने योग्य है। परन्तु हमारे अवलोकन में इससे भी पूर्व की कुछ ऐसी बालावबोधोद्घातक गद्य रचनाएं देखने में आयी हैं। कल्प सूत्र के बालावबोध के कुछ लुप्त प्राचीन लिखित पत्र हमारे देखने में आये हैं जो सवत १३६० के आस पास के लिखे हुए थे। इससे पूर्व की एक बालावबोधोद्घातक रचना हमें जैसलमेर के एक भंडार में मिली थी जो प्रायः सवत १२८० और १० के बीच में लिखी हुई जानती है। यह रचना जिन दत्त सूरि रचित कुछ कुलकात्मक प्रकरणों पर है। इसकी भाषा शैली प्रस्तुत बालावबोध के समान है। और जो घोड़े से पत्ते इस रचनाके हमें मिले हैं उनकी लेखनशैली भी भाषाकीय दृष्टि से प्रायः व्याकरणसंगत है। हमारा विचार था कि राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माता में उसको यथावस्थित रूपमें प्रकट कर दी जाय; परन्तु समयमात्र के कारण हम जबतक उस ग्रन्थमाता के संचालक रहे तबतक वैसा न कर सके।

हमारे खयाल से यह प्राचीन राजस्थानी और गुजराती भाषा के प्राचीनतम गद्योद्घातक कृति के रूप में माने जाने योग्य है।

इस ग्रंथ का सर्व प्रथम आलेखन करानेवाले धनिक भायक बलिराज के वंश का कुछ परिचय

तरुणप्रभ सूरि के प्रस्तुत बालावबोध नामक ग्रंथ का सर्वप्रथम आलेखन कराने वाले धनिक धरमराजसिंहन बगौष ठाकुर बलिराज के गुण और यश का वर्णन करने वाली जो प्रशस्ति ग्रन्थ-कार ने रच्यमान में लिखी है उसमें ज्ञान होना है कि ठाकुर बलिराज अपने समय में बहुत बड़ा धनवान तथा राजमान्य और जनगमान्य मूर्त्युष्य था। इनके कई पूर्वजों के तथा वंश के अनेक गृहस्थों के उल्लेख पट्टनरूपी अर्थों में मिलते हैं। इसी एवं राजस्थान के कई स्थानों में भी इस वंश के अनेक शही मूर्त्युष्य रहते थे। जो समय-समय पर तीर्थयात्राएँ, प्रतिष्ठाएँ, आचार्यपद स्थापनाएँ आदि

धार्मिक उल्लसों में बहुत धन व्यय किया करते थे। इस वंश बालिकों नामों के पहले ठक्कुर शब्द का व्यवहार— हुआ है। इससे जाना जाता है कि इनके पूर्वजों में से किसी ने किमी राजसत्ता द्वारा बड़ी जागीर प्राप्त की थी और धार्मिक कार्यों में बहुत कुछ द्रव्य व्यय करने के कारण या व्यापारादि के कारण बहुत सम्पत्तिवाली होना चाहिये। यह वंश खरतर गच्छ का परम अनुरागी था। इसलिए खरतरगच्छ के प्रसिद्ध पूर्वाचार्य जैसे कि जिनकुशल सूरि, जिनकन्द सूरि आदि प्रभावशाली आचार्यों के उपदेशों से इस वंश वाले श्रावकों ने अनेक तीर्थस्थान और नगरों में जैन मंदिर बनवाये तथा उन उन आचार्यों द्वारा प्रतिष्ठादि महोत्सव कार्य सम्पन्न करवाये। खरतरगच्छ बृहद गुर्वावली नामक महत्त्व के ऐतिहासिक ग्रन्थ में (जो हमने सिध्दी जैन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत ग्रन्थांक ४२ के रूप में प्रकट किया है।) इस वंश के अनेक कुटुम्बों के परिचायक उल्लेख मिलते हैं। तरुणप्रभ सूरि के प्रस्तुत बालावबोध ग्रन्थ के आलेखन और प्रचार में जिस ठ. बलिराज का वर्णन है वह इसी मंत्रीदलवशीय एक कुटुम्ब का प्रसिद्ध पुरुष था। वह बृहद धर्मानुरागी और दानशील था। उसी की विशेष अभ्यर्थना के कारण तरुणप्रभ सूरि ने प्रस्तुत बालावबोध की रचना की और उसीने सर्वप्रथम इस ग्रन्थ की अनेक प्रतिलिपियाँ लिखवाई थी।

श्री तरुणप्रभ सूरि ने जैन ग्रंथकारों की प्राचीन परंपरा का अनुसरण करते हुए ग्रन्थ के अन्त में जो प्रशस्ति लिखी है, उसकी पद्यसंख्या ३३ है। इसमें से १२ पद्य तो उन्होंने अपने पूर्वाचार्य तथा निजके परिचयस्वरूप लिखे हैं, शेष २० पद्यों में ग्रन्थ का आलेखन कराने वाले ठ. बलिराज के पूर्वजों आदिके परिचयस्वरूप लिखे हैं। इसके पूर्वजों में मंत्रीदल के वंश में पहले एक ठ. दुर्लभ नामका मुख्य पुरुष हुआ उसका पुत्र ठ. दामर हुआ। उसका पुत्र ठ. भूपाल हुआ। उस भूपाल के ठ. देवपाल, ठ. तेजपाल, ठ. राजपाल, जयपाल, सहजपाल, ठ. नयपाल नामक ६ पुत्र हुए।

इनमें से देवपाल के हरिराज और हेमराज नामक दो पुत्र हुए। ठ. हरिराज की रासलदे नामक पत्नी थी। जिसके ठ. चाहड़ और ठ. घन्धक नामके दो पुत्र हुए। इनमें से ठ. चाहड़ बड़ा बुद्धिमान, लक्ष्मीवान, गुणवान और राजा का प्रसादपात्र था। उसने तीर्थों की उन्नति के लिये तथा गुरुओं की भक्ति के लिये और साधार्मिक भाईयों की सेवा के लिये बहुत सा धन व्यय किया। वह पड़ावश्यक कर्म करनेवाला धन्दावान पुरुष था। इस ठ. चाहड़ की पत्नी सहजलदे थी जो सुदृढ कार्य— करने में उसके समान चित्त वाली थी। इनके मयनसिंह, विजयसिंह, जवणसिंह और कर्णसिंह नामके चार पुत्र हुए।

इनमें विजयसिंह बड़ा दानी और धर्मप्रिय पुरुष था। उसने अनेक तीर्थयात्राएँ की और सातों क्षेत्रों में खूब धन व्यय किया। वह श्री जिनकुशल सूरि का अत्यन्त भक्त था। उनकी पदस्वापना का बड़ा महोत्सव जब पाटण में हुआ, तब वह दिल्ली से बड़े समुदाय के साथ वहाँ आया और बड़ी भक्तिपूर्वक आचार्य पद की स्थापना करवाई। इस विजयसिंह की वीरमदे नामक धर्म पत्नी थी जो सुप्रसिद्ध मदनपाल की पुत्री थी, उसकी पूर्णिनी नाम की द्वितीय पत्नी थी जो बरदेव की पुत्री थी उसी तरह भीरू नामक एक अन्य स्त्री थी।

वीरमदे नामक पत्नी से विजयसिंह को बलिराज और गिरिराज नामके दो पुत्ररत्न हुए। ये दोनों बड़े तेजस्वी, श्रद्धिमान और राज्यमान्य थे। इन दोनों भाइयों का परस्पर अत्यन्त गाढ़ स्नेहसम्बन्ध था। विजयसिंह की दूसरी स्त्री पूर्णिनी के उदयरज, वमलराज, अश्वराज और साधारण नामके चार पुत्र थे। बलिराज की नील, शालिन्य, कौलिन्य आदि गुरुओं को धारण करनेवाली कौलहाई नामकी बुद्धिशालिनी पत्नी थी वह जिनग्रंथ में बड़ी आस्था रखनेवाली गुरुभक्ता थी, उसकी क्षेमसिंह नामका पुत्र हुआ जिसकी हीरू नामक स्त्री थी। उनका लक्ष्मराज नामक पुत्र हुआ जो बहुत ही भाग्यशाली होकर बड़ा धर्मानुरागी था। इस प्रकार पुत्र पीत्रादि परिवारयुक्त बलिराज धार्मिक जनो के लिये कलिकाल में कल्पद्रुम के समान शोभायमान हो रहा था।

तरणप्रभाचार्य ने अन्त में लिखा है कि बलिराज ने मेरे पास बैठ कर थड़ापूर्वक इग पडावययक भाषा वृत्ति का श्रवण किया और फिर इसने अपने और अन्य जनों के हितार्थ पुस्तकरूपमें इगको लिखवाया ।

इस प्रशस्तिगत उल्लेखानुसार बलिराजने जो इस प्रस्तुत ग्रन्थ की पुस्तक के रूपमें प्रतिनिधियाँ करवाई । उन्हींमें की, कुछ प्रतियाँ बीकानेर, पूना, पाटण आदि के ग्रन्थमंडारों में आज तक विद्यमान हैं । उन्हींमें की ३, ४ प्रामाणिक प्रतियों के आधार पर भाषाशास्त्रविद् डॉ. प्रबोध पंडित ने इग ग्रन्थ का प्रस्तुत सुसंपादन किया है ।

विद्वान सपादक ने अपने सम्पादन-विषयक कार्यपद्धति का जो परिचय दिया है, उगमें उपयोग में ली गई प्राचीन प्रतियों का यथेष्ट वर्णन दे दिया है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में विलंब के कुछ कारण

जैसा कि ऊपर सूचित किया है, इस ग्रन्थ का मुद्रणकार्य आज से कोई १६, १७ वर्ष पहले चालू कराया था । परन्तु उपर्युक्त अनेक कारणों से इस ग्रन्थ का मुद्रणकार्य पूर्ण होने में काफी विलंब होता गया, चूंकि सिंधी जैन ग्रन्थमाला के संचालन एवं प्रकाशन की व्यवस्था का सम्पूर्ण भार हमारे ही ऊपर निर्भर था । सन १९५० से हमारी साहित्यिक कार्यप्रवृत्ति बम्बई और राजस्थान के जयपुर-जोधपुर के बीच विस्तृत होकर कुछ विभक्त ली हो गई । हम बम्बई में जिस तरह स्वस्थापित तथा स्वसंचालित सिंधी जैन ग्रन्थमाला का कार्यभार सम्भालते थे, उसी तरह राजस्थान में हमारे द्वारा संस्थापित तथा सरकार द्वारा संचालित प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के तत्त्वावधान में हमारे ही द्वारा प्रारंभित एवं संपादित राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला का सम्पूर्ण कार्यभार भी हमारे ही ऊपर निर्भर था । इसलिये इन दोनों ग्रन्थमालाओं के कार्य में समान रूपसे व्यस्त रहने के कारण बम्बई की ग्रन्थमाला के कुछ ग्रन्थों के प्रकाशन में अत्यधिक विलंब होता रहा ।

डॉ. श्री. प्रबोध पंडित द्वारा ग्रन्थ का सम्पादन व मुद्रणकार्य कोई ८-१० वर्ष पूर्व ही पूर्ण हो चुका था; परन्तु पिछले कई वर्षों से हमारी शारीरिक अस्वस्थता के कारण हमारा बम्बई जाना न हो सका और इसलिये इस ग्रन्थ को समय पर प्रकाशित करने की योग्य व्यवस्था हम न कर सके । ग्रन्थ छपकर आठ-दस वर्षों से बम्बई के भारतीय विद्या भवन के गोदाम में पड़ा हुआ है और हम अपनी दुर्बलता के कारण सिंधी जैन ग्रन्थमाला का यह एक विशिष्ट ग्रन्थ रत्न आजतक विद्वानों के करवमल में उपस्थित करने में असमर्थ रहे ।

डॉ. प्रबोध पंडित कुछ समय से दिल्ली मुनिवसिटी में हैं । वहाँ से ये कभी कभी पत्र लिखकर मुझे सूचित करते रहे कि प्रस्तुत ग्रन्थका जो मुख्य सम्पादकीय वक्तव्य मुझे लिखना है उसे मैं लिखकर भारतीय विद्या भवन को भेज दूँ और उगको सूचित कर दूँ कि ग्रन्थ को प्रकाशित कर देने की सम्बन्धित व्यवस्था कर दी जाय । परन्तु पिछले कई वर्षों से मैं यहाँ जिस चंडेरिया नामक ग्राम (बिबीइगड के पास) में निवास कर रहा हूँ । मेरे पास साहित्यिक विषय की कोई विशेष सामग्री उपलब्ध न होने से और मेरी आँधों की ज्योति भी प्रायः क्षीण हो जाने के कारण स्वयं लिखने-पढ़ने में क्षमार्थ हो जाने से एवं सहायक लेखक आदि का भी कोई प्रबन्ध न होने से मैं अपना संचालकीय वक्तव्य लिखने में भी असमर्थगा ही रहा । परन्तु पिछले २, ३ महीने पहले डॉ. श्री प्रबोध पंडित ने अहमदाबाद में मेरे बिरगाभी एवं परमादरणीय मित्रवर पंडित प्रवर डॉ. श्री मुखलालजी संपवी से इन विषय में कुछ निवेदन किया तो श्री पंडितजी ने मुझे सादर आग्रह एवं कुछ मीठे उपालंभ के साथ निम्ना कि मुझे इन्हीं तरह प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रधान संपादकीय वक्तव्य लिख देना चाहिये और संघ को प्रकाशित कर देने की व्यवस्था कर देनी चाहिये इत्यादि । श्रीमान पंडितजी का आदेश

पाकर मैंने किसी तरह अब यह संचालकीय वक्तव्य लिखकर ग्रन्थ के प्रकाशन की व्यवस्था का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में इस प्रकार अत्यधिक विलंब होने के कारण मैं हम विधि के किसी अज्ञात संकेत ही को निमित्त समझते हूँ। ऊपर दिये गये पूर्व इतिहास से ज्ञात होगा कि सन् १९१८-१९ में हमें इस ग्रन्थ का सर्वप्रथम परिचय हुआ और तभी से हमको इसको प्रकाशित कर देने का मनोरथ उत्पन्न हुआ। हमारे जीवन की साहित्योपासना का वह प्रारंभ काल था, उगी समय हमको उद्योगन सूरिकी प्राकृत भाषा की महाकथा 'कुवलयमाला' का प्रकाशन करने की भी अभिलाषा उत्पन्न हुई। इन दोनों अभिलाषाओं को साथ लेकर हम अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ में आये और वहाँ पर पुरातत्व मंदिर के द्वारा इन दोनों ग्रन्थों के प्रकाशन का आयोजन करने रहे तथा प्रेस में छपने के योग्य प्रेस-कोपियाँ भी तैयार करवाई। इनमें से 'कुवलयमाला' का तो सिधी जैन ग्रन्थमाला के ४५-४६ संख्याक के रूप में भारत के सुप्रसिद्ध प्राच्यविद्या विशालद और हमारे एक परम मित्र डा. ए. एन. उपाध्ये द्वारा सुगंधादिन करवा कर हमने इतः पूर्व प्रकाशित कर दी। इसके प्रथम भाग के प्रारंभ में हमने किंचित् प्रास्ताविक वक्तव्य के रूप में 'कुवलयमाला कथा के प्रकाशन का पूर्व इतिहास नाम का जो निबन्ध लिखा है उसमें उक्त कथा के प्रकाशन सम्बन्धी हमारे मनोरथ की गारी बार्ने लिख दी है। उक्त कथा के प्रकाशन की कहानी भी ठीक प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन की कहानी जैसी ही है। 'कुवलयमाला' का मुद्रणकार्य सन् १९५० में प्रारंभ हुआ और उसका प्रथम भाग मूल ग्रन्थरूप सन् १९५६ में तथा दूसरा भाग, सन् १९६९ में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।

गुजरात पुरातत्व मंदिर (अहमदाबाद) में ही बैठकर हमने 'प्रबन्ध चिन्तामणि' ग्रन्थका सम्पादन व मुद्रण चालू कर दिया था और तभी उसके साथ प्रस्तुत बालावबोध को भी प्रेस में दे देना चाहा था परन्तु उपर्युक्त कथनानुसार विदेशों में चले जाने के कारण यह काम रुक गया। 'प्रबन्ध चिन्तामणि' के कोई ४०-५० पृष्ठ छप चुके थे; पर उसका भी काम उसी कारण से आगे न चला सका। पर फिर जब शांति निवेदन में आकर सिधी जैन ग्रन्थ माला का सन् १९३१ में कार्यारंभ किया तो उसके सर्वप्रथम मणि के रूप में हमने उस 'प्रबन्ध चिन्तामणि' को पुनः निर्णयसागर प्रेस में गुन्दर रूप से छपवाने को दे दिया और १९३३ में यह ग्रन्थमाला का प्रथम ग्रन्थ स्वरूप प्रकाशित हो गया। उक्त ग्रन्थ की भूमिका में हमने उसकी भी कुछ प्रकाशनरुपा लिखी है। इस प्रकार जिस गुजरात पुरातत्व मंदिर के माध्यम से हमने इन ग्रन्थों का प्रकाशनकार्य सोचा था, उगमें से 'प्रबन्ध चिन्तामणि' सिधी जैन माला में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त कर यथाशक्य शीघ्र ही प्रकाश में आ गया और उगमें पश्चान् ग्रन्थमाला में अन्यान्य कई छोटे-बड़े ग्रन्थ प्रकाशित होने रहे। सन् १९५० तक के २० वर्षों में कोई ४०-४५ जितने ग्रन्थ प्रकाश में आ गये, परन्तु वह कुवलयमाला महाकथा ग्रन्थ जिसको प्रकाश में लाने के लिये हम सन् १९१८ से ही अत्यधिक सात्तामणि से सन् १९५० में प्रेस में दिया जा गया और कोई बीस वर्ष बाद सन् १९७० में पूर्ण होकर प्रकाशित पा गया।

उजोहा साथी यह पश्चात्कार्य बालावबोध जिसका मुद्रणकार्य हमने सन् १९५६ में चालू कराया था अब कोई १६-१७ वर्षों के बाद प्रकाश में आनेवा अवसर प्राप्त कर रहा है। हमें यह अनुभव कर मंत्रोद्य हो रहा है कि जिस एक मनोरथ को जीवन के कोई ५५ वर्ष जितने दीर्घकाल तक हम अपने मन में तपेटे फिरते रहे और न जाने कहाँ कहाँ हम जिसकी अरने अनेक किताबों के सम्मुख प्रयास करते रहे, वह अर्द्धसंश्लेष मनोरथ अब इस प्रकार प्राप्त होने का दिन देख रहा है।

सिधी जैन ग्रन्थमाला के जीवन का संक्षिप्त तिहासलोकन

इस ग्रन्थमाला का मुद्रण हमने सन् १९३१ में गुन्दर कपीट श्री रविन्द्रनाथ टागोर के विश्व-विद्यालय में शांति निवेदन स्थित विश्वविद्यालय विश्वभागी-विद्यापीठ में बँट कर

किया। गुरुदेव की महती इच्छा को लक्ष्यकर स्व. बाबू श्री बहादुरसिंहजी ने वहाँ पर हमारी प्रेरणा से सिधी जैन ज्ञानपीठ नाम से जैन शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन हेतु शिशापीठ (जैन वेयर) स्थापित किया। उसीके अन्तर्गत जैन ग्रन्थों के प्रकाशन निमित्त प्रस्तुत गिधी जैन ग्रन्थमाला का प्रकाशन-कार्य भी हमने शुरू किया। बम्बई के प्रख्यात निर्णयसागर प्रेस में ग्रन्थों के मुद्रण की व्यवस्था की। एक साथ अनेकानेक ग्रन्थों का सशोधन, सम्पादन एवं मुद्रणकार्य चालू किया गया। अहमदाबाद में गुजरात पुरातत्त्व मंदिर द्वारा प्रकाशित करने के लिये जिन ग्रन्थों को हमने प्राणमिरना दे रखी थी, उन्हीं ग्रन्थों में से कुछ को हमने सर्वप्रथम छपवाना शुरू किया। ग्रन्थमाला का पहला ग्रन्थ 'ग्रन्थ चिन्तामणि' प्रसिद्ध हुआ। बाद के 'प्रबन्ध कोष', 'विविध तीर्थ कल्प' आदि ३-४ ग्रन्थ भी उसी स्मान के नाम से प्रकाशित हुए। इन ग्रन्थों का प्रकाशन देखकर गुरुदेव भी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपना शुभाशीर्वाद भी, स्वहस्ताक्षरों से अंकित, हमें प्रदान किया।

कोई ३ वर्ष बाद स्वास्थ्य एवं कार्य की सुविधा की दृष्टि से ग्रन्थमाला का कार्यालय अहमदाबाद साया गया और वहाँ पर 'अनेकान्त विहार' नामक अपना निजीस्थान बनाकर वही से हमने 'भानुचन्द्र चरित्र', 'ज्ञानविन्दु प्रकरणादि' ग्रन्थों का सम्पादन एवं प्रकाशन कार्य किया। सन् १९४० में स्वर्गीय श्री कन्हैयालाल माध्विदलाल मुंशी के सद्प्रयत्न से बम्बई में भारतीय विद्या भवन की स्थापना हुई और उनका स्नेह एवं सौहार्दभरा आमंत्रण पाकर मैंने उनकी प्रवृत्ति में अपना यथायोग्य सहयोग देना स्वीकार किया। बाद में सिधी जैन ग्रन्थमाला के प्रकाशन सम्बन्धी व्यवस्था का प्रबन्ध भी भारतीय विद्या भवन के अधीन कर देना मैंने निश्चित किया। इस निश्चय में ग्रन्थमाला के सस्थापक एवं सर्वथा सरक्षक स्व. श्रीमान बाबू बहादुरसिंहजी सिधी तथा मित्रप्रवर श्रीमान डॉ. पंडित श्री सुपलालजी सधवी की पूर्ण सहमति प्राप्त हुई। पंडित श्री सुपलालजी इन ग्रन्थमाला के जन्मकाल से ही अन्तरंग सहायक और सत्परामर्शदायक बने हुए हैं तथा कई ग्रन्थरत्नों का इन्होंने स्वयं भी सम्पादनकार्य किया है।

स्व. बाबू श्री बहादुरसिंहजी का ग्रन्थमाला के विषय में अत्यन्त अनुराग एवं उत्साह था। उनकी इच्छा थी कि इस ग्रन्थमाला के कम से कम १०८ ग्रन्थ प्रकाशित होने चाहिये और इसके लिये जितना धन खर्च किया जाय वह करने को वे उत्सुक थे। उनकी ऐसी उत्कट ज्ञानप्रकाशन की भावना को लक्ष कर मैंने भी यथाशक्य एक साथ अनेकानेक ग्रन्थों के सम्पादन एवं प्रकाशन की व्यवस्था करने का प्रयत्न किया, परन्तु दुर्भाग्य से सन् १९४४ में उनका स्वर्गवास हो गया और उसके कारण मेरा मानसिक उत्साह भी कुछ शिथिल बन गया; परन्तु श्री सिधीजी के सन् पुत्र स्व. बाबू राजेन्द्रसिंह सिधी तथा स्व. बाबू श्री नरेन्द्रसिंहजी सिधी ने अपने पूजनीय पिता की भावना को पूर्ण करने की इच्छा से हमसे ग्रन्थमाला के सम्पादन एवं प्रकाशन कार्य को यथावत् चालू रखने के लिये गद्भावपूर्ण सहयोग देने की अपनी मनोरामना प्रकट की। हमने उनकी इच्छानुसार ग्रन्थमाला का कार्य उमी तरह चालू रखा, जिस तरह स्व. बाबू बहादुरसिंहजी की प्रेरणा से कर रहे थे। सिधीजी की मृत्यु के बाद भी प्रायः २० वर्ष तक ग्रन्थमाला का कार्य हम उमी तरह करने रहे और उसके कारण अनेकानेक मन्त्र के दण्ड प्रकाश में आये।

द्वैकी दुर्भाग्यता के कारण पिछले ५, ६ वर्षों में बाबू श्री बहादुरसिंहजी के उक्त दोनों सन्-पुत्रों का भी देहावसान हो गया।

जैसा कि ऊपर सूचित किया है, इस ग्रन्थ माला का प्रारंभ सन् १९३१ में हुआ। ४२, ४३ वर्ष के हमारे जीवनकाल के दसिंशत इसके द्वारा छोटे-बड़े कोई साठ से अधिक ग्रन्थ प्रकाश में आये। हमारे पिने स्व. सिधीजी ने और उनके बाद उनके सन्पुत्र बाबू श्री राजेन्द्रसिंहजी और श्री नरेन्द्रसिंहजी ने हमारे रहने रहने कर ग्रन्थमाला का सर्व प्रसार मणोरम किया। हमारे निमित्त भारतीय विद्या भवन को भी हमारे रहने की आर्थिक सहायता प्रदान की। साथों की कीमत की बड़ी मूल्यवान

हजारों पुस्तकें भवन को प्रदान कर उनकी सहाय्यता को सुसमृद्ध बनाया। ग्रन्थमाला का प्रकाशन सम्बन्धी प्रबन्ध भवन को सौंप कर उसकी साहित्यिक जगत में विशिष्ट प्रतिष्ठा बढ़ाई।

सिंधी जैन ग्रन्थमाला में जितने ग्रन्थ प्रकाशित हुए, वे भारतीय साहित्य भंडार के अनमोल रत्न जैसे हैं। देश और विदेश के सभी प्राच्य विद्या-अभिज्ञ विद्वानों ने मुक्त-वंटके इनकी प्रशंसा की। भारत सरकार द्वारा नियुक्त संस्कृत भाषा आयोग ने इस ग्रन्थमाला को भारत की एक सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थमाला के रूप में प्रमाणित किया। इसी ग्रन्थमाला की गुणवत्ता को लक्ष्य कर जर्मन ओरिएंटल सोसायटी जैनी विश्व के प्राच्यविदों की श्रेष्ठतम संस्थाने हमको अपनी आन्तरेयी सदस्यता प्रदान कर हम जैसे एक अनिगमन्य विद्याभ्यासी को भी वह गौरव प्रदान किया जो आज तक भारत के किसी भी अन्य विद्वान को (केवल स्व. सर रामरुष्ण भांडारकर को छोड़कर) नहीं किया गया। यह गौरव हम अपना नहीं मानने अपितु सिंधी जैन ग्रन्थमाला का गौरव समझते हैं। हमको केवल हम बान में आत्ममनोप होता है कि हम अपने दृढ़ जीवन में इस प्रकार ग्रन्थमालास्वरूप छोटीसी नौवा का आधार पाकर दुस्तर भवनशी को पार करने में प्रवृत्त हुए हैं।

ग्रन्थमाला के मूल संस्थापक और उनके पितृभक्त पुत्र भी चले गये। इसलिये ग्रन्थमाला अब एक प्रकार से निराधार दशावा अनुभव कर रही है। इसी तरह ग्रन्थमाला के एक हितैषी भारतीय विद्या भवन के कुलपति और हमारे प्रिय मित्र श्री कन्हैयालालजी मुनी भी अपनी सारी स्थूल समृद्धि और नीला-सशमी को छोड़कर बैकुंठ में वाम करने चले गये। श्री मुंगीजी के विशेष आग्रह से ही हमने ग्रन्थमाला का कार्यप्रबन्ध भारतीय विद्या भवन को सौंपा है।

अब हमारा शरीर भी क्षीण हो चुका है और हम भी अब उसी मार्ग की ओर दृष्टांक रहे हैं जिस पर से ये अपने अन्त्यान्व ग्रापी चले गये हैं।

ग्रन्थमाला के भविष्य में क्या लिखा है, वह हमें ज्ञान नहीं; पर हमारे द्वारा सम्पादित कुछ ग्रन्थ अभी अधूरे पड़े हैं। हम इनका उद्धार कर सकेगे या नहीं, यह तो वही विधाता जाने जितने प्रस्तुत ग्रन्थ को प्रकाश में लाने के लिये हमें यह अवसर दिया है। यदि वैया थोड़ा सा भी और अवसर हमें मिल गया तो हम उन ग्रन्थों को भी यथावत् प्रकाश में रखने का प्रयत्न करना चाहते हैं।

ग्रन्थ के सम्पादक विद्वान के प्रति आभार प्रदर्शन

भाषाशास्त्र के अभिज्ञ विद्वान् डा. श्री प्रबोध पंडित ने कई प्राचीन हस्तलिखित प्रतिमों के आधार पर बहुत परिश्रमपूर्वक ग्रन्थ का शुद्ध वाचन तैयार करने का जो प्रयत्न किया है और उसके साथ भाषा-विश्लेषणात्मक प्रौढ निबन्ध संकलित कर एवं विशिष्ट शब्दों का व्युत्पत्ति-दर्शक शब्द-कोष तैयार कर ग्रन्थ की उपयोगिता प्रदर्शित करने का जो श्रम उठाया है, उसके लिये मैं इनका हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

डॉ. प्रबोध मेरे एक अनन्य विद्वानमित्र पंडित श्री बेचरदासजी के सुपुत्र हैं। पंडित श्री बेचरदासजी का साहित्यिक सम्बन्ध मेरे साथ बहुत पुराना है। उतना ही पुराना जितना प्रस्तुत प्रकाशमान ग्रन्थ के साथ रहा है। सन् १९१९ में जब मैंने पूना में जैन साहित्य संशोधक नामक समिति की स्थापना की और उसके द्वारा 'जैन साहित्य संशोधक' नामक शोध-विषयक त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन करना निश्चित किया तब उस कार्य में सहायक के रूप में श्री पंडित बेचरदासजी को मैंने अपने पास बुलाया था। तभी से उनका और हमारा पारस्परिक घनिष्ठ स्नेह सम्बन्ध चलता आ रहा है। मैं जब पूना से अहमदाबाद में गुजरात पुरातत्व मंदिर का संचालन करने के लिये गया तो बाद में पंडितजी श्री बेचरदासजी को भी उस शान मंदिर में एक सुयोग्य अध्यापक तथा विद्वान

शास्त्रों के रूप में अज्ञात किया। गडित्री थी बेचरदागत्री प्राकृत भाषा एवं जैन शास्त्रों के बड़े मन्त्र विद्वान् हैं। इन्होंने कई मन्त्र के ग्रन्थों का संगोपन, गंसादन एवं आलेखन आदिका कार्य किया है। जिनो जैन ग्रन्थमाला में भी इनके सम्पादन एक-दो ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। भारत सरकार ने इनकी विद्वान्ता को उन्नत कर इनको सम्मानित किया है। इस प्रकार सिंधी जैन ग्रन्थ-माला में इन दोनों विद्वान् द्वारा युक्ति ग्रन्थ रूपी पुस्तकों का समावेश होने से, ग्रन्थमाला की को शोभापूर्ति हुई है। इनके इस प्रकार के वांगमयात्मक सहयोग के विषये मैं इनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ।

काल है उपरोक्त के मन्त्र अज्ञेयार्थ प्रस्तुत प्रकाशन को प्राप्त कर प्रमुदित होंगे।

श्री. इ. क. क. क.
 इ. क. क. क.
 वि. क. क. क. क. क. क.
 वि. क. क. क. क. क. क.

मुनि जिनविजय

PREFACE

A study of the Gujarati Language in the 14th century was undertaken by me in 1947 when I began my studies in Indo-Aryan at the University of London. A study of the language based on the narratives and illustrative stories from the text, together with a critical edition of the narrative materials and an etymological index of the text was submitted to the University of London in 1949 as partial fulfilment for the degree of Doctor of Philosophy. Later on, I edited the complete text and prepared a complete etymological index; the section on grammar required additions and alterations in light of the complete text. Instead of rewriting that section, I have tried to present an overall picture of phonological and grammatical changes in Gujarati, using mainly the data from the text, in a section on the historical phonology of Gujarati vowels. The etymological index will make up for the items which are missed in the grammar section. The continuity of the grammar section is not maintained, there are also some terminological discrepancies. For this, I crave indulgence of the learned readers. The press copy was submitted to the Singhi Series in 1956, various delays, including the change of the printing press—from Nirnayasagar of Bombay to Aryabhusan of Poona—held up the publication. The findings of the study, presented after a delay of about two decades, may, however, be of some use in reconstructing the history of Gujarati language.

After the press copy was ready, a number of manuscripts of Taruṇaprabha's ṣaḍvāśyaka vṛtti were noticed in various Bhaṇḍāras; apparently this was quite a popular text. Further collations may bring out useful data for a study of dialects of old Gujarati, and provide a fruitful exercise in textual criticism.

Here I take the opportunity of expressing my deep gratitude to Professor Sir Ralph Turner and Dr. A. Master, for valuable suggestions and guidance in the preparation of this study. My father, Pandit Becharadas Doshi cleared many points in the interpretation of the Prakrit portion and Muni Punyavijayi explained many theological terms of the text; I am indebted to them for their help. Thanks are due to Muni Jinavijayi, general editor of the Singhi Jain Series and the authorities of the Bharatiya Vidya Bhavan for including this study for publication in their esteemed series. I acknowledge my thanks to the authorities of the Bikaner, Bhandarkar Oriental Research Institute, Limbdi and Patan collections for lending me the mss.

University of Delhi
Delhi.

P. B. Pandit

A Study of the Gujarati Language in the 14th Century

1. The text and its significance

The wealth of documentary evidence for the history of the Gujarati Language is made well known by Sir George Grierson's remark in the Linguistic Survey of India. 'We have thus a complete chain of evidence as to the growth of the Gujarati language from the earliest times..... No single step is wanting. The line is complete for nearly four thousand years' (Vol. ix. part ii, p. 327). But at the same time the paucity of critical editions of early Gujarati is also remarkable. Much material still lies in Gujarati mss. and marginal glosses of Pk. mss. The earliest specimens of the Gujarati language date from 1330 V. S. There are four fragmentary prose pieces (in all, less than 200 lines) from 1330 to 1369 V. S., while this work is a detailed document containing popular narratives, written in 1411 V. S. This work is, not only the earliest detailed document of Gujarati, but one of the earliest in the New Indo-Aryan languages.

Śaḍāvaśyaka vṛtti was composed at Anahilla pattana, now Patan, then the seat of Gujarati learning and the capital of the famous Solanki dynasty. It is a Gujarati commentary on Śaḍāvaśyaka, composed by Taruṇaprabha, pupil of Jinacandrasūri of the kharatara gaccha. The praśasti at the end of the work says that it was composed under the rule of Emperor Pirojasīha (Firoz Tughlaq).

There are four mss. available, of which one from the Bikaner collection is written in 1412 V. S.; the other three are from the Bhandarkar Oriental Research Institute (not dated), the Limbdi (1419 V. S.) and the Patan (1503 V. S.) collections.

Śaḍāvaśyaka is an important Jain text, both for monks and for laymen. It includes important feature of the Āvaśyaka literature in its stock of stories which are narrated to illustrate the power of various vows to be observed by Jains. The stories were told from generation to generation in Jain temples and houses. Dry descriptions of virtues and vices were made palatable by introducing stories in a popular medium. These thirty-one popular stories, are therefore, the nearest approximation to the spoken Gujarati of the period under examination.

It is an important phenomenon that our best ms. is written just one year after the composition of the text. At the same time, the other two, the BORI and the Limbdi mss. are written between 1411-1419 V. S., thus, of the four mss. available, three are written during the first ten years succeeding the composition of the text, evidence which cannot be disregarded in the restoration of the text. So I have edited the text eclectically. By presenting the internal evidence I have been able to show the probable course of text-transmission, which has helped me judge the authenticity of various readings, and to fix the date of the BORI ms.

2. Description of the Mss.

The following Mss. have been used in preparing the text.—

(i) B. A paper ms. from Bikaner, Māhīmī-Bhakti Bhaṅḍār. This is a well-preserved ms. in good handwriting. It has 308 folios, measuring 9" x 3", margin of half inch on right and left, a little less on top and bottom; ten lines to a page; all folios 199, and 9 lines thereafter. The marginal space does not vary, and the whole ms. is by one hand. It has 40 letters to a line, except lines 3, 4, 5, 6, which have an average of 35 letters due to the space left in the middle.

A STUDY OF THE GUJARATI LANGUAGE

The colophons (see appendix) clearly say that the work was composed by Tarunaprabha on Saturday, Dipotsava day 1411 V S at Anahulla-pattana, and the present ms. was written by Pandita Mahipaka on Friday, 9th day of the bright half of Caitra, 1412 V. S. The elaborate praśasti stanzas at the end give the genealogies of the teachers of the author and the patron

The margins of the text are indicated by thick red lines on both sides, and two big red dots on the two sides, and a third red dot in the middle of the page in a 1" sq. The middle dot is perforated, and the edges of the hole are worn, indicating that the paper mss were also preserved by binding with string. The red dots and the lines together with the size of the paper indicate a palm-leaf origin (cp. Vaidya MP Vol I, p. xi, Hertel HOS Vol 12 p. 38)

The ms. is written on a thin paper and ink is well preserved. The corrections in the ms are indicated by a kākāpada in the line and the same in the margin together with the no. of the line. When some words are to be deleted from the body of the text, a yellow pigment is rubbed over the unrequired words, or marks like " ", or a wavy line is placed over those words. Usual punctuation signs i. e. of danḍa and arḍha-danḍa, are used. Vertical strokes over the words are used as a device for the punctuations. Usually pañcimātrā is used.

The ms. begins with —Arham. śhrī Gautamasvāmīne namaḥ. Surāsurādhiśamahāśā-namyaṁ praṇamya samyag pañcājavīram, subodham arham dinakṛtyasatkam likhāmy abhīḥpranbodhanaya and ends with . śīvam astu. Bhādrām bhavatu. Samasta sāḥśra-samādhayaśca Acāra-drāḥkām nandatu

The text presented by our ms. is as good as an autograph copy, but at the same time an autopsy and a comparison with other mss. shows that the haplographies and other eye-mistakes cannot be explained without the existence of a lost autograph.

Of all available mss. this is the oldest and best.

(ii) P. A paper ms. from Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona No 77 of 183-1802

Though worm-eaten at many places this ms. is preserved in a good condition, and is written in clear bold hand-writing. It has 342 folios, measuring 9½" x 4", margin of 1" to right and left, a little less on top and bottom. Ten lines to a page, 36 letters to a line. Short lines 4, 5, 6, 7 which have an average of 17 due to the space kept in the middle.

The col. phons give the same date and place of composition. The last page giving the date of copying is lost and instead, a new paragraph is added at the end, in later hand, which gives the name of the person, who, at the suggestion of his master, presented it to the bhāṣīgīta. The loss of the last page can be easily explained. As the person who possessed the ms. wanted to preserve his name, and not the name of the scribe, then why the last page, which did not contain anything by way of text, but which contained the name of the scribe and the date of copying and then inserted his name and his master's name.

The praśasti in this and the remaining two mss. is short. Stanzas 14-32, which give the genealogy of the patron in B are not given. Evidently, the patron of the B was a contemporary of the author of the other mss.

The margins are indicated by thick red lines on both sides, and two large red dots on the two sides, and a third red dot in the middle of the page in a 1½" sq. (this measure-ment is somewhat irregularly observed) kept in the centre. The central dot is perforated by very small pieces of wood, which appears that the hole was never used for tying the ms. with cord. At the edges of the hole are the marks of the wood. The red dots and the decorative lines are a pale brown (see above)

The ms. is written on a thick, nice glazed paper, and the ink is well preserved. Folios are numbered twice in the margin in different hands till pp. 134, and then till end in one hand only.

There are marginal corrections and punctuations by a later hand, the corrections are indicated in the same way as B. There are a few intralinear corrections, here and there, there are a few marginal gloss, which explain and give equivalent old Gujarati words for Sk. or Pk. words. This is the only ms. which gives marginal gloss.

Usually paḍimātrā is used.

The ms. begins with : Arham. Śrī Gāutamāsvāminē namah. Surāsurādīśāmahānāmyam.....etc. and ends in the first hand by . Śrī cāmḍragacchālamkāra Śrī Śrī kharata ragachhādhipati Śrī Jinacāmḍrasūrisyaleśa Śrī Tarunaprabhasūribhū Śrī mātrī—, and the rest is lost.

This ms. with its clear hand-writing, careful marks of punctuation, and intralinear dissolution of sandhī, with marginal gloss and careful corrections in the margin, on the whole leaves an impression of a very carefully copied ms., and though the date of copying is lost, it is an important aid in restoring the text.

(iii) L. A paper ms. from Limbdi Bhaṇḍār.

Written in slovenly handwriting, this ms. has 154 folios, measuring 11" x 4½" ; margin of about half inch on both sides, a little less on top and bottom; it has 15 lines to a page, 50 letters to a line, except lines 6, 7, 8, 9, 10, due to the space kept in the middle.

The colophons (see appendix) give the same date and place of composition, the date of copying is given as the 5th day of the bright half of Pūṣa, 1419 V. S. i. e. eight years after the composition of the text. This ms. is also copied at Patan. The praśasti stanzas 14-32 are dropped.

The margins are indicated by ordinary double black lines on both sides, and there is a space of about 1" in the shape of a parabola in the middle. The centre is perforated but it seems that it has never been used for binding the ms. as the edges are not worn.

There are no punctuation marks above the lines, and every word is separated in writing. The ms. is full of blunders like dharmma-kṣau for karma-kṣau, laddhenam for tuṭṭhenam, and frequent omissions and lacunae show that it is carelessly copied. There are very few marginal corrections, (in spite of innumerable mistakes) and whatever there are, are in very inferior hand. Corrections are mainly done by deleting the wrong words in ordinary ink, or rubbing yellow pigment over the wrong word. The ms. is written on such an inferior paper that the scribe has sometimes to leave some space for fear of spreading ink.

Use of paḍimātrā is less frequent. The ms. begins with —namah sarvajāva Namah Śrūtadevatayā. Śrī Gāutamāsvāminē namah. Surāsurādīśāmahānāmyam etc. and ends with:—śubham bhavatu śubham astu.

This ms., as it will be seen later, has its exemplar in Bh., and hence it is not useful as apparatus criticus, though the orthography of the ms. helps in studying scribal habits.

(iv) P. A paper ms. from Patan, Śrī sangh no. jain jān Bhaṇḍār, no. 601

Closely written on an ordinary paper, it contains 146 folios, a margin of 1" on the right and left, a little less on top and bottom, twelve lines to a page, 51 words to a line except lines 5, 6, 7, 8, due to the space left in the middle.

The colophons give the same date of composition, and the date of copying as 11th day of the dark half of Jeth, Tuesday, 1508 V.S., at Sarasvatī Pattana, i. e. Anandī Pattana. The praśasti stanzas 14-32 are, as in two other mss., omitted.

	B	Bh	L	P
	tihām	—	tīōha	—
	saiō	—	—	sai
§ 109.	pāraṇai	—	—	-iō
	mekhalām	—	—	-lā
	"	"	"	"
	saiō	—	—	sai
	"	"	"	"
	mekhalām	—	-lā	-lā
§ 110.	tīōhām	—	tīham	tīham
	tihām	tihā	—	—
	rahaiō	—	—	-ai
	ihām	—	—	ihām
	nahiō	nahi	—	nahi
	isauō	—	—	-au
	tīōhām	—	tīha	tīha
	tāpasahām	—	-ha	tāpasa
	hūntā	-ām	—	—
	tīhām	tīōha	tīōha	—
	nai	—	—	naiō
	Ūpanau	—	-nu	-auō
	māhi	—	—	-iō
§ 111.	-sauō	—	—	sau
	taṇau	—	—	-uō
	māhi	—	—	-iō
§ 112.	saiō	—	—	sai
	samai	—	—	-iō
	māhi	—	—	-iō
	tehe	—	—	-eō
	māgiuō	—	—	-iu
	kāiō	kāiōm	—	—
	māgiyaiō	—	—	mām-
	isauō	—	—	-au
	māgiuō	—	—	-iu
	taṇai	—	—	-iō
	āpaṇai	—	—	-iō
	hūntauō	—	—	-au
	teha	—	—	-aō
	taṇai	—	—	-iō
	āpaṇapauō	—	—	-au
	tīlām	—	—	-lā
	etaliō	—	-li	-li
	rahaiō	—	—	rai
	nīpajaiō	—	—	-ai
	nahiō	nahi	—	—
	taṇau	—	—	-auō
	isauō	—	isyau	-au
	taṇai	—	—	-iō
	āpaṇau	—	—	-auō
	ihāluō	—	—	-au
	thāi	—	—	-iō
	nahiō	nahi	nahi	—
	tīōhām	—	tīham	tīham

A STUDY OF THE GUJARATI LANGUAGE

B	Bh	L	P
citavai	cim-	cim-	—
māhi	—	—	-im
aneraī loc. sg.	—	-aiṁ	—
kini hīn	—	kuna haiṁ	—
isaum	—	—	au
dhyāyatai loc. sg.	—	-im	dhyātai
hoi	—	-im	—
ehanaū	—	- nauṁ	ehaiṁ nauṁ
anai	—	—	-im
jisām	jisā	-sā	-sā
tīhām	tīhām	tīhā	tīhāṁ
tīham	tīhā	tīhā	tīhāṁ
tīham	tīhāṁ	tīhā	tīhāṁ
tīham	tīhām	tīhā	tīhāṁ
tīham	tīhām	tīhā	tīhāṁ
tīhām	—	tīhā	tīhāṁ
solasaīm	—	—	-ai
tīhāṁ	tīhām	tīhā	—
solasaīm	—	—	-ai
ciyārisaīm	—	—	-ai
ekavīsaīm	—	—	-sā
pāncasaīm	—	—	-ai
chatrisām	—	—	-sā
etaḷām	—	—	-lā
isaum	—	—	-au
kahiūṁ	—	—	-iu
namatai	—	aiṁ	—
huyaūṁ	—	—	-au
maiṁ	—	—	mai
lādhaum	—	-au	-au
teha	—	—	-aū
sarūṁ	—	-iu	-iu
isaum	—	isyauṁ	-sau
āpanapaum	—	—	-pau
jītaum	—	—	-au
taum	—	—	-tau
ṁri	—	-im	—
tāṁ	—	omits	tai
hūmtai	—	-im	—
gāgāh	—	—	gīṁ-
"	"	"	"
raṁau	—	—	-uṁ
gāgāh	—	—	gāṁ-
āvatatai	—	—	āṁva-
pāca B'm	—	-hi	—
rahaī	-im	-im	-im
pāhaum	—	—	-au
bhaṁ	—	—	-im
vāṁḍau	—	—	-uṁ
bhaṁ	—	-im	-iṁ
petalaī	—	-im	—
saiṁ	—	—	sai
cīlyiṁ	-yā	-yā	—

§ is written for kh. Here also B does not confuse it. It carefully writes kh. In fact, it is so careful that it writes kh even when it is not attested historically, e. g. mukhaka for mūśaka (this word is found in B folios 143 recto). Also note a peculiar confusion of reading at § 526 mukhya, where P reads maṇṣya. But this does not mean that B writes kh for §, instances are available where it also writes §: e. g. sarisau, maru-ṣiari, ṣaiṇḍa. But, generally B does not interchange them to a great extent. Bh follows generally the same practice. L and P write s for kh to a much greater extent. The following are some instances where B and Bh have kh while L and P have §: pāśai, deśai, deṣi, lāṃśai, pāśaiyām, pāśāna, diśāli, olaśiyā, raṣe, olaṣi, muṣu, harṣiyā. It may be noted here that Dave's statement that "roughly Sk loanwords are written with kh and OG words are written as s" (GL p. 2), does not hold good in our text.

3-7. Thus far scribal habits But there is another factor in the structure of the text. Jain narrative literature in general, and our text in particular, derive their inspiration from the popular Pk tale. The author has Pk narrative before him, as found in Āvassaya literature, and he writes them in bhāśi for the comprehension of the ordinary householders who do not understand Pk. Thus, Pk words and idioms find their way into our OG text. It may not be out of place to mention here that as Sk in the Hindu families, Pk in the Jain families is alive even to-day. An imperative sg. with -ha ending, words like puttu, mittu, for putru, mitru, (sometimes unable to decide orthographically) are evidently Pk influences. What is more interesting is, that our author has forgotten at some places whether he is writing Pk or bhāśi, and thus in § 142-49 Pk and bhāśi combine in a peculiar mixture. It is difficult to say when Pk ends and OG begins, and thus unique piece of prose explains how much popular Pk had influenced early Gujarati prose style.

3-8. Consideration of Orthography in Critical Apparatus.

The text as a whole is preserved faithfully in these mss. Our earliest ms. is only one year later than the composition of the text, the other mss. are not much later. They all generally agree except on the point of spelling or in some cases of dialectal variation. It is unlikely that scribes would copy minor differences in spelling from their ādarśa, they would rather follow their own habits, as we saw in the nasal signs or the dir. sg. of a-stems, especially in the bhāśi texts where spelling was not considered so seriously as in the classical texts such as Sk or Pk. It was, therefore, futile to speculate about the exact spelling of the 'archetype' i. e. Codex Tarunaprabha, and I have not attempted it. What I have attempted is to present the text which appears to be nearest to the archetype, with its roughness of spelling. I have not tried to normalise the text with a uniform system of spelling as, I think, this would have given a wrong picture of the orthography of the text.

To note each variation of spelling would have burdened the text with unnecessary details, so I have followed the following scheme:—

- (a) For the paragraphs 38, 73, 85, 86, 94, 108-113, 142-149, 365 and 386, complete collations of all mss. are given in an appendix at the end of the orthography. Thereafter:—
- (b) L is completely omitted because it is a direct copy of Bh (3-12).
- (c) B is followed with respect to nasal signs, deviations from which are not recorded.
- (d) Occasional spelling mistakes e. g. final i/ī, u/ū of the mss. other than B are not recorded.
- (e) B is followed with respect to s, kh and v, b variations, deviations from which are not recorded.
- (f) As P consistently writes -tau for -itau and thakā, thakau, for thikā, thikau, its deviations on these readings are not recorded.

It will be evident from a glance at the text that this scheme has effectively lightened the text without depriving it of critical material.

A STUDY OF THE GUJARATI LANGUAGE.

	B	Bh	L	P
§ 113.	trihum	—	—	-hu
	tīṃhaṃ	—	—	teḥaṃ
	karatā	—	—	-āṃ
	tīṃhaṃ	—	—	tḥaṃ
	jeha	—	—	-aṃ
	taṇau	—	—	-uṃ
	parim	-ri	ri	-ri
	karatā	—	—	-āṃ
	tīṃhaṃ	—	—	tḥaṃ
	pāchaum	—	—	-au
	bhaṇai	—	—	-aiṃ

The instances given above are taken from a few pages only, but they do contradict the general impression given by the rest of the mss. It is evident from above that B and Bh, our best mss., do not differ much, nor do the scribes write nasal signs capriciously. Apart from slips, they followed a definite scheme of marking nasal signs rather than copy their ādarśa (exemplar) —

A few words are not spelt consistently. *nahim*, *kāṃim*, *saiṃ*, *-auṃ* (past part.), *tīṃhaṃ*. (These words *nahim*, *kāṃim* etc. are not spelt consistently in modern Gujarati also)

Loc/inst. sg. termination varies in nasal sign in some cases. L. generally nasalises the termination. It also writes *nahi* for *nahim*. (In modern Gujarati, dialectally nasalisation in pronouncing loc/inst sg. varies.)

P. largely varies from the other mss., but it has its own scheme. It does not nasalise *isau*, and past part. ending *-iu*; it nasalises *māhi*, *taṇau*, *taṇai*, and frequently, 3rd sg. *-ai*.

3.5. The variation of *-a/-u* ending in dir. sg. of unextended *a*-stems is noted in these mss. The same word in one ms. occurs often in the same page with or without the *-u* ending, a fact which cannot be explained except as an orthographic variation.

Already in later Ap. texts, mss. vary between the bare stem and the *-u* termination in dir. sg. (Jacobi SC p. xxviii, Shahidulla CM p. 38, Master JRAS 1940 p. 68, Mu and Bhayani SR § 52). In these late vernacular-coloured Ap. the increasing occurrence of the bare stem (esp. in SR) appears to be a reflection of the then current dialects. In dealing with termination of the *a*-stem in dir. sg. we should consider that the bare stem was already in use, but *-u* ending was retained in orthography as a scribal habit. Ap. from dir. sg. of the *a*-stems, scribes make a general mistake about writing *-u* where there is *-a*, on the other hand, writing *-o* where there is *-u*, latter may be due to the similarity of the two letters *-u* and *-o* in mss., and also due to Pk influence; e. g. JASB x no x 1914 p. 406-7 Pāla Inscription of Kalhaṇadeva of Naḍḍula written in Sk. in 1241 V. where Guṇadhara stands for Gaṇa-; also see Barnett BSOS vol iii p. 671 Inscription of Śhīratattva at Kharjuri, where *celu* and *celo* vary, examples can be multiplied.

Ap influence, in this case, mainly Western Ap influence, on the scribes appears to be chiefly responsible for bringing in many *-u* endings. The influence of Ap scribal habits prevailed upon our scribes to such an extent that sometimes *-u* is appended to a Sk word in a Sk couplet!

3.6. Other general scribal tendencies may be noted here: A consonant following a medial *-r-* is doubled, e. g. *karmma*, *vargga*, *dharma*, etc.

-v- is written for *-b-*. Usually B and Bh do not confuse the two, while the other two mss. write *-v-* frequently.

g is written for kh. Here also B does not confuse it. It carefully writes kh. In fact, it is so careful that it writes kh even when it is not attested historically, e.g. mukhaka for mukaka (this word is found in B folios 143 recto). Also note a peculiar confusion of reading at § 526 mukhya, where P reads manuya. But this does not mean that B writes kh for g, instances are available where it also writes s, e.g. saritrau, maru-*litari*, *śānda*. But, generally B does not interchange them to a great extent. B follows generally the same practice, L and P write s for kh to a much greater extent. The following are some instances where B and Bh have kh while L and P have s: *pāsa*, *desai*, *desi*, *lāṅśai*, *pāṅṅaiyām*, *pāṅṅa*, *diśāi*, *olaiyā*, *rave*, *clau*, *murru*, *bariyā*. It may be noted here that Dave's statement that "roughly Sk loanwords are written with kh and OG words are written as s" (GL, p. 2), does not hold good in our text.

3.7. Thus far scribal habits. But there is another factor in the structure of the text. Jain narrative literature in general, and our text in particular, derive their inspiration from the popular Pk tale. The author has Pk narrative before him, as found in Āvasaya literature, and he writes them in bhāṣī for the comprehension of the ordinary householders who do not understand Pk. Thus, Pk words and idioms find their way into our OG text. It may not be out of place to mention here that as Sk in the Hindu families, Pk in the Jain families is alive even to-day. An imperative sg with -ha ending, words like *puttu*, *mittu*, for *putru*, *mitru*, (sometimes unable to decide orthographically) are evidently Pk influences. What is more interesting is, that our author has forgotten at some places whether he is writing Pk or bhāṣī, and thus in 142-49 Pk and bhāṣī combine in a peculiar mixture. It is difficult to say when Pk ends and OG begins, and this unique piece of prose explains how much popular Pk had influenced early Gujarati prose style.

3.8. Consideration of Orthography in Critical Apparatus

The text as a whole is preserved faithfully in these MSS. Our earliest MS is only one year later than the composition of the text, the other MSS are not much later. They all generally agree except on the point of spelling or in some cases of dialectal variation. It is unlikely that scribes would copy minor differences in spelling from their *śāstra*, they would rather follow their own habits, as we saw in the nasal signs or the dir, sg. of a-stems, especially in the bhāṣī texts where spelling was not considered so seriously as in the classical texts such as Sk or Pk. It was, therefore, futile to speculate about the exact spelling of the archetype's e. Codex Taturaprabha, and I have not attempted it. What I have attempted is to present the text which appears to be nearest to the archetype, with its roughness of spelling. I have not tried to normalise the text with a uniform system of spelling as, I think, this would have given a wrong picture of the orthography of the text.

To note each variation of spelling would have bordered the text with unnecessary details, so I have followed the following scheme —

- (a) For the paragraphs 38, 73, 85, 86, 91, 105-113, 142-149, 505 and 517, complete collations of all MSS are given in all details in order to give an idea of the orthography. Thereafter —
- (b) L is completely omitted because it is a direct copy of P (1312).
- (c) B is followed with respect to nasal signs, deviations from which are not recorded.
- (d) Occasional spelling mistakes e.g. *thāṭi*, *uṭ* of the MSS, other than P are not recorded.
- (e) B is followed with respect to *kh* and *wh* variations. Deviations from which are not recorded.
- (f) As P consistently writes *ṭa* for *ṭa* and *thāṭi*, *thāṭi*, for *thāṭi*, *thāṭi*, its deviations on these readings are not recorded.

It will be evident from a glance at the text that this scheme has admirably lightened the text without depriving it of critical material.

3.9. Relations of the Mss.

As seen above, the text largely deals with popular narrative; thus the scribes could have taken more liberty with the text without altering its structure; but this is not done. The text is preserved in one coherent version, all the mss. agree generally, apart from scribal idiosyncracies. These slips of the scribes, minor omissions and agreements provide a clue to the relations of the mss. I have classified below agreements and omissions indicating the relations of the mss.

3.10. Peculiar agreements —

paragraph number	B	Bh	L	P
38	bhaṭṭivā	bharivā	(same as :) Bh	Bh
38	gamaṇāgamaṇaṇam	-gamaṇu	Bh	Bh
38	jīva rahaiṁ	jīvahaṁ-	Bh	Bh
73	sāṁmu	sumuhau	Bh	sāmahau
74	-kaṇi	-taṇi	Bh	B
74	hūṁti	hūṁtai	Bh	Bh
85	rājādi	rājādika	Bh	Bh
86	rājādika loka	-ke -loke	Bh	B
86	kiṁ vā	B	yadi vā	B
86	iṁhiku	iṁhikū	iha hū	īha loki
94	baisali	baisāri	Bh	B
94	pūrvabaddhu	pūrvabhava- -baddhu (marginal)	Bh	B
109	ūpahirā	ūpaharā	Bh	Bh
110	sagala	sagalū	Bh	-ī
144	aṁta samai	āpanai pāṭi	Bh	B
	āpanai pāṭi	aṁta samai (marginal)	Bh	
145	bhaṇai	pabhanai	Bh	Bh
146	virayacariyam ca kulaṁ nisāmeha	vīrayassa-	Bh	virayacariyaṁ kulaṁ ca-
146	pajjaliyaṁ	pajjanīyam	Bh	pajjanīyaṁ
149	tayā	taiyā	Bh	B

3.11. And a surer test is from omissions. Following are the instances of the omissions:—

Para No.	B	Bh	L	P
38	bāhiri	(same as :) B	omits	B
38	karī	B	"	B
73	isai	omits	"	"
73	tihāṁ	"	"	"
73	āpaṇi	B	"	"
71	eka	B	"	"
74	pāṁca	omits	"	"
74	ekī	B	"	"
74	dekhī	omits	"	"
74	isī pari	B	"	"
85	-guṇa	omits	"	"
85	ityāha	omits	"	"
85	jai	omits	"	"
94	citta	omits	"	"
109	omits	muktinimitta	Bh	"
113	isau	omits	omits	"

Para No.	B	Bh	L	P
113	kari	omits	"	"
113	tāpasa	B	"	"
142	kari	omits	"	"
147	bhayavam	B	"	"

Instances noted above are based on partial collations, but the general impression of the mss. does not go against the conclusions drawn from these collations.

3-12. The relation between Bh and L is obvious. Agreements are many, and the omissions a surer test of genetic relationship. They have common faulty readings, e. g. pajjanīyaṃ (for pajjaliyam), and common innovations like pabhaṅai (for bhaṅai), pūrvabhavabaddhu (for pūrvabaddhu) etc.; what is more important is that L has many more omissions than Bh. These can be explained only if L is inferior to Bh in transmission. Moreover, marginal corrections in Bh (which may have been made by someone who revised the text) are included in the text in L. All this indicates that L is a copy, most probably a direct copy, of Bh, because L is an early ms. and there is little chance of another exemplar intervening between it and the archetype. Bh, thus, should be placed between 1411 V. S. and 1419 V. S.

Bh is a very neatly and carefully written ms, while L is carelessly written, sometimes has blunders which any sensible scribe would avoid, e. g. dharmmaksau for karmmaksau, luddheṇaṃ for tuṛṇeṇaṃ, and has a number of haplographies e. g. 94, 110-111, 113., etc., which are not found in other mss.

Evidence from L, therefore, is neglected in giving the critical apparatus.

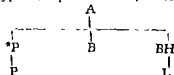
It is difficult to decide the position of P. It agrees sometimes with Bh, sometimes with B, though its affinities are more with B - as the omissions given above indicate -, and its minor agreements with Bh are general rather than peculiar to itself.

What is peculiar to P is its tendency to correct a wrong reading (which is a general tendency of late mss.) and sometimes the correction is very surable, as in the case jina-pradhāna-haṃ (for jina-pradhānaḥaṃ). But frequently its corrections are unnecessary and unwarranted. P is nearer to B rather than to Bh, though not a direct descendent of either. Its exemplar may be a ms. nearer to B.

B, on the other hand, stands by itself: according to the long praśasti at the end, its date of copying, 1412 V. S., is very near to the date of composition, 1411 V. S., and its careful writing make it the most authentic ms. of the text. B is perhaps as nearer to the archetype as Bh, but it is more reliable.

3-13. Existence of a written archetype cannot be doubted. Haplographies and dittographies in B and Bh, and various marginal corrections and additions cannot be explained unless they are copied from some original source. Moreover, some evident eye-mistakes in Bh, or a common blunder like jina-pradhānaḥaṃ for jina-pradhānaḥaṃ in B and Bh, together with their general uniformity indicate a common source.

3-14. The relations of the manuscripts can thus be explained by the following diagram where A is the archetype and *p is the exemplar of P:—



I have followed B generally, and preferred it to Bh or Bh and L. When P and Bh were against B the case is dealt with individually. I have not preferred Bh to the joint evidence of B and P.

4. Morphology

Nominal-stem Formation

4.15. Affixes:

Stem-forming suffixes:—

- paṇaūm, forms abstract nouns. e. g. balavaṇṭṭapaṇaūm
 -hāra, forms agentive nouns e. g. paisana-hāra, dekhana-hāru, dena-hāru.
 -guṇaūm, goes with numerals to show multiplicity. e. g. bi-guṇaūm, tri-guṇaūm.
 -lau/-lu, supplies the sense of 'belonging to', e. g. s milu, duheluṇu, eka-lau; it also forms adverbial adjectives showing place or time. e. g. chehi-lau, āgi-lau.

Other stem-forming suffixes are continued from Sk. e. g. -vanta, -maṇṭa, -maya (Pk. -mau).

Stem-enlarging suffixes:—

- au, this is the enlarged noun-stem in a-stem. ' svārthe kah ' (Hc ii 164). e. g. melāvau, vāpiyau, vācharau.
 -dau, sometimes indicates diminution. e. g. bhīgaḍau, ḍhūkaḍauṃ.
 Feminine substantives end in ā, i or I, and adjectives in I.

Prefixes:—

- a-and aṇa- indicate the negative sense; both are used before nominal as well as verbal forms. e. g. see index.
 sa- indicates the sense of 'together with'; used only once, probably a lw. e. g. sanēṭhāhu.

4.16 Gender.

Gender distinctions of OIA are continued in OG through Pk. and Ap, but the tendency of normalising the inflections to masc. a-stems in MIA, and which is carried further in Ap, gives rise to differences of grammatical gender in NIA. Even in OIA, neuter merged in masc. except in direct cases (nom. and acc.) and this was carried further in MIA. In Ap, distinction is much more blurred; according to Hc (iv 331) nom. sg. of masc. a-stem should end in -o or -u, neuter in -u or in extended stems -āū, nom. and acc. masc. pl. in -āī or āī, (iv 344, 353), but this distinction is not observed in hitherto available texts. Jacobi notes that in Ap, nom/acc n. termination is shared by masc. and nom/acc masc. pl. by n. (BH 422).

In OG we arrive at a stage of fairly established normalisation of m. and n. stems to -u in dir. sg. It is furthermore helped by sentence rhythm arising out of the participial construction, where the verb-participle also ends in -au > -taka. As a result, grammatical distinction between m. and n. vanishes in a large number of cases. But, on the other hand, it appears that the idea of n. was strong enough to manifest itself in a distinct morphological form, and we find some cases in our text where n. dir. is distinguished from m. dir. e. g. chukaūm, ghaṇaūm, (v. l. ghaṇum), duhelauṃ, trepaṇaūm, pāraṇaūm, tāraṇaūm, viśiṇaṇaūm; this -aūm termination goes back to Pk -kam, and Ap -āū. There is no necessity, therefore, to suspect a substratum i. e. Dravidian, influence on the formation of neuter (see however, Chatterji BL § 493, Bloch LM § 180). At least, we find, that in Guj. it has a continued existence. Neuter is absent in ḍingaḷ (Ojha NPS p. 140) and Rājasthānī (LSI vol ix part I. p. 5). Ap texts give an interesting history. SR, a later vernacular coloured Ap text, has no -āū n. forms (SR § 47). It is found in BH and SC (SC § 13, 16). It is quite prominent in HP (HP § 42). This signifies an early dialectal treatment from Ap period.

In stray *variae lectiones* in our text we get the contraction $\tilde{u} < -aum$ (ghanum), which in MG develops as a regular termination for n. At the same time, we get a stray v. l. $-o < -au$ (lādho), which later develops as a regular termination for m. Thus the process of morphological distinction is already at work in our text. Of the other NIA languages, Bhadarwāhi n. is strikingly similar to Gujarati n. (Varma, Indian Linguistics vol I part ii 'Neuter gender in Bhadarwāhi'); while Koṅkaṅ and Marāḥī n differ in terminations.

Case

4-17. Nominal flexion has disintegrated and given place to periphrastic declension and postpositions. Merging of one case into another from early MIA period has hastened this process. In Ap stage, a confusion in case terminations is already prominent. Thus, nom. and acc. sg. have $-a, -u$; inst. and loc. sg. have $-i, -ihī$; the vagaries of marking the nasal in Ap orthography further confuse inst. sg. $-i$ with pl. $-im$.

This condition necessitates the use of postpositions to indicate the *kāra*kas. In OG we find increased use of postpositions, but at the same time, orthographic tradition of Ap is strongly maintained by parallel use of case terminations. Often we get both at the same time, which indicates that postpositions, in many cases, were meaningless appendages. \tilde{a} -stems and i -stems as well as a -stems have lost flexion in majority of cases. Following are the instances, mainly of the a -stems where the bare stem is used—

Direct :—

hātha de karī, § 38.

Mahāvira sām̄mau sāta āṭha paga jāi, § 73.

atisāra alam̄kāra pahiri, § 73.

bārāha varasa āmbila cittasamādhipūrvaka, § 94

kevalī āśātanā ma karī, § 103.

ravikirana avalāmbi karī, § 110

Gautamagaṇa anumodatām, § 112.

sava i tāpasa kevalisabhā ūpari, § 113.

dhanada jīma dhanapati vidyāpati, § 480.

ravibimba jīma tumhārai mukhi, § 480.

samasta lakṣmī ... vecai, § 481.

jīnabimba karaṁḍikā upāḍī karī pāṁca parametti samaranā karatau. § 483

devagṇa karāvai, § 483.

bijī vāta jāṇai nahim, § 483.

jīma nidāgha samai jālāsaya susai tīma yadākalī sām̄nyajana dānadharmna khisaim, tadikālī pravara nī dānadharmma ghaneraum ullisaim, § 516

moha varasāvīyā, § 517.

Inst :—

sarva samyaddha sahitu, § 73.

jīna vijāna bh̄natā karī, § 94.

māya bāpa sahiti Gāgali Gautama kanhai dikṣā lidhi, § 103.

tapolabdhī karī, § 100.

tāpasa sahitu, § 100.

ām̄tra bhūkha karī dīdhi chāich, § 112.

isaum bhāryā saum iloci, § 482.

sa rājaputrikā rūpaśobhā karī, § 488.

Bhīma sarasau Simhu calāvai, § 488

jibha kari pāpu bāmdhai, § 527.

sāra parivāra sahitu, § 528

Loc :—

jana māhi, § 109

isauṁ mana mīhi citavatau, § 25

māharai pāḍi mahim, § 526

rāti rāti su coru, § 526.

bi putra lesāla padhaim, § 432.

Gen :—

samdhyā samai devagrha bahuri, § 110.

mahimā mahītmā taṇau chai, § 112.

dhana taṇaum adānu, § 481.

jāgiu huṁtau bhārya āgai, § 432.

sāudha upari āvatau, § 483.

mū rahaim rājya māhi kāryu § 48.

jina dharma nai ekātapatni, § 483.

parigraha parimāṇakarana vīai, § 484.

Declension

4.18. Direct

sg. a-stems :

bare stems e. g. dhana, samjama, putra, āmtra, locana, bhūkha, hūtha, paga

-u ending. e. g. nimittu, viveku, dānu, āju, kālu, bilu, rāju.

-au enlarged stems. e. g. māulau, melāvau, varasālau, vācharau, vāṇiyau, pāraṇaum n., visāhaṇaum n.

(i) For -a/-u variation in a-stems see 3.5.

(ii) Other vowel stems i. e. ā, i, I, u and ū have no special terminations.

(iii) In enlarged -au endings neuter is marked by nasalisation.

(iv) Dave (GL) does not record any case of -u ending in unenlarged a-stems (GL p. 7,34). It is also absent in ḍingaḷ (NPS p. 146).

pl. unenlarged. Bare stem is used e. g. āhira, oḍa, utara, kapāra, kāpaḍa
khanaka, varasa, bhāṇaja, pahara.
enlarged stems. e. g. ūbhā, kusā, kūḍā.

(i) Other vowel stems have no special plural terminations.

(ii) Once we get balākā-iṁ which is an archaism; only enlarged a-stems have a distinct pl. form [which is the same as the oblique termination.]

(iii) Of the Ap texts, SR (§ 51) gives -aha for nom. pl., which is not found in other Ap texts. BK (§ 26, Gune and Dalal) gives some instances of -ā ending of m. pl. which occur " in passages of mixed language and changed metre ".

(iv) ḍingaḷ (NPS p. 146) has ā̄ for both—enlarged and unenlarged—stems.

4.19. Oblique.

sg. unenlarged a-stems : The bare stem is used. e. g. 4-17.

enlarged a-stems : -ā. e. g. bhāḷā, lahudā, vaḍā, kusā, sagalā, hiyā, gāḷā, galā, aśīkaḷā.

pl. unenlarged a-stems :

(1) The bare stem is used. e. g. 417.

(2) -ham, e. g. khaṇakaham, janaham, netrahaṁ, pāyakaham, supātraham, tāpasaham, āhiraḥam, varttamānaham.

enlarged a-stems : -ām. e. g. kauḍām

(i) In the case of other vowel stems, the bare stem is used in sg. and pl.

(ii) In the oblique, the sense is conveyed by the postpositions.

(iii) Dingaḷ (NPS p. 147) gives -ha for oblique sg.

4.20. Instrumental.

sg. a-stems : (1) The bare stem, followed by postposition is used. e. g. 417.

(2) -i, -im. (a) followed by postposition : e. g. tapī kari, nāmi kari, abhāvi kari.

(b) not followed by postpositions. e. g. kāraṇi, mohi, nāmi, abhinavi, jinadatti.

(c) other vowel stems . e. g. khaḍgaghāi, pattumātrāi, śreṣṭhīm, maulai (enlarged a-stem).

(3) -e. (a) a-stem. e. g. gure, kalase, sūpakāre, ācārye, puliṁde.

(b) other vowel stems. e. g. mākhīe.

pl. (1) -e. e. g. paumtāre, bhīle, tehe, bāre, varase, upavāse, khaṇake, śrāvake.

(2) -ham. (a) followed by postposition. e. g.

dākṣiṇyādikaham guṇaham kari, § 425.

nāmaham kari, § 426.

komāsaham kari, § 85.

jaṅgamaṇidhāna jinaṇpradhīnaham prāsukeṇanīyaham pānānna-

ham kari, § 85.

vikārādikaham lakṣaṇaham kari, § 554.

paḡaham kari, § 545.

(b) not followed by postposition. e. g.

pāṭhakaśiṣyaham tathā sūtrārthavāṁchakaham, § 94.

milita subhāṭaham vana māhi, § 446.

teha taṇām bāṁdhavaham bhūllaham mānu, § 448.

putraḥam puchatāim kusā, § 386.

isaum bhāṇatām bhāṣṭaham parivṛtu ghaṛa

rājamaṁdira ūpari cāliu jetalai. tetalai daivam

ekaham subhāṭaham nikṣiptāsidaṁjaha

(i) All stems are treated alike, i. e. normalised to a-stem

(ii) -e in sg. and pl. is rarer than -i and -ham respectively

(iii) As the illustrations given above indicate, inst. pl. is followed or not followed by a postposition irrespective of the function (see however, Tessitori § 60).

(iv) ham as an oblique termination is followed here I am inclined to consider it as a result of its frequent use with the inst., and with the help of any postposition. Moreover, it is p. 146) which appears to be a development

(v) Dingaḷ has -i or -ii for inst. sg.

4.21. Locative.

- sg. (1) The bare stem is used. e. g. 4.17
 (2) a : -i, unenlarged a-stem e. g. ekī, mukhī, gachhī.
 b : enlarged a-stem e. g. varasālai, vāhalai, māchai, keḍai, pāraṇai, pahilai
 (3) -e. e. g. ghare, loke, pākhe.
 (4) -ihim. e. g. pūrvihim kadākālihim, tinihim.
- pl. (1) The bare stem is used. e. g. 4.17.
 (2) -e. e. g. pāe.
- (i) As in the inst. termination, here also the tendency is to normalise the paradigm to a-stem.
 (ii) Though -ihim is included above as a loc. sg. termination, I am inclined to consider it as an emphatic particle, owing to its function (see 4.33).
 (iii) Ḍingal (NPS p. 148) has -i and -e (-e especially in pl.) for locative terminations.—ihim is absent in Ḍingal.

4.22. Vocative.

The following are the instances from the text :—

- sg. rāmkaṁ, gujḥagā, koliyā.
 pl. vacchau.

- (i) The two instances of sg., cited above-gujḥagā and koliyā—are lw. from Pk.

Pronouns

4.23 Personal Pronouns First Person.—

nom.	sg.	pl.
obl.	hauṁ, hum,	amhe.
inst.	mūṁ, mū,	amha.
	maim, mai,	—

The genitive is an adjective agreeing with the noun in gender and case, and it is declined as follows.—

gen.	māharaum,	amhāraum.
obl.	māharā,	amhārā.
inst. loc.	mīharai,	amhārai.

- (i) Ap. hauṁ is found in our text together with the younger form hūṁ, which also occurs with a short -u-, which is due to its frequent use as a pronominal form.
 (ii) Ḍingal (NPS p. 153) has only hūṁ (attested in Western Hindi).

4.24 Second person:—

nom.	sg.	pl.
obl.	tauṁ, tum, tūṁ,	tumhe
inst.	tū,	tumba
	taim,	—

The paradigm of the genitive, like that of the first person, is as follows:—

gen.	tāharaṁ,	tumhāraṁ, tambhāraṁ
obl.	tāharā,	tumhārā
inst. loc.	tāharai,	tumhārai

(i) In *stray* v. l. in inst. loc. we get *thābarii*, and in obl. *thāharā* (attested in Marwari).

(ii) *Ḍingal* (NPS p. 158) has *tumbā sū* (< **tumhāñ sauñ*) for inst. sg.

4.25 Third person —

nom	sa, su, te,	ti, te, si.
obl	tihā, rehā,	rīñha, tīmhā/-hām.
inst/loc	tam.	tehe.

(i) The third person is also used as the remote demonstrative pronoun and as a correlative.

(ii) The third person has loc: the distinction of gender: *sa* is used both for f. and m. *Ḍingal* (NPS p. 159) has *sī* for f.

(iii) *ti* and *te* are generally used for pl. but sometimes for sg. also. *ti* is usually followed by a qualifying adverb *savva* or *sāghalī* *te* is rarely used.

(iv) *tihā* is sometimes used as oblique, which is *tihā-i* emphatic.

4.26. Demonstrative Pronoun *e* —

	sg.	pl.
nom	e, eha,	e, eha.
obl.	imhām, eha,	imhām, eha.
inst/loc	imi, thī,	ehe.

(i) *iu* is used to indicate proximity; once *iya* is used.

(ii) Once *imhā-ku* is used, where *ku* may be due to midland influence (mss. are reluctant to accept this reading, see index).

(iii) *thī* is used for loc. sg.

(iv) nom. pl. (honorific) is *ā* in *Ḍingal* (NPS p. 158). *ehe* is not found in *Ḍingal*.

4.27 Relative pronoun *ju* —

nom.	ju, j, je,	jī.
obl.	jeha,	jeha.
inst/loc	jini,	jeha.

(i) *j* and *je* are sometimes used for nom. sg., usually *ju* is used.

(ii) In pl. *j* is sometimes followed by a qualifying adverb or pl. of the indef. pro. *ke*.

4.28. Interrogative and Indefinite Pronouns

Inter. pro. :—

nom.	kañu, kauna.
obl.	kañā.
inst.	kañj.

Indef. pro. :—

nom.	ko, kā f.	ke.
obl.	kañi.	
inst.	kiñi.	

(i) *kañāñ* is used as inter. obl., *ko* as indef. nom., and *kiñim* as indef. inst. where *-ñāñ*, *-i*, and *-im* respectively convey an emphatic sense.

(ii) Inter. and indef. have no special pl. forms, except *kī ke* in indef. nom. pl., which is an archaic form.

(iii) There is no distinction of gender, except *kā* in indef. nom. sg, which is again, an archaism

(iv) Dave (GL p. 34) mentions distinct forms for n

(v) obl. pl of indef is generally followed by *eka*.

4.29. Reflexive Pronoun *āpanau, āpanāu paum* It is declined as a noun.

4.30. Compound Pronouns. *ji ke, koi eka, ketalā eka*

4.31. Pronominal forms The following are the pronominal adjectives formed from the pronouns :

showing manner : *isau/isaum, kisau kisaum,*
jisau, tisau

showing quantity : *jetalaum, tetalaum,*
etalaum, ketalu.

These are declined as nouns, and the latter, showing quantity, are followed by *eka* to indicate indefinite sense.

The following are the stereotyped pronominal forms, used adverbially :

showing place : *jihām, tihām, jahim, kahim, ihām, kihām* (sometimes *kahām*).

showing time : *jetivāra, tetivāra,*

showing condition : *jām, tām.*

showing manner : *ima, kima; jma, tma.*

4.32. Postpositions. The following postpositions are used in the text :

-tau -itau, *vaśaitau, kanhā, kari, vaḍai, taṇau, nau, thikau/thakau, māhi, saum,*
rahaīm.

(i) *taṇau, nau* and *thikau* are declinables.

(ii) -itau occurs alone or as *vaśaitau*.

4.33. Emphatic Particles.

i/ī . to I *āviyām*, § 94.

te i, § 142.

sagalā i karau, § 433.

pāche I bhāvisiim, § 433.

coupled with *ji* : *parimīta i ji*, § 74

havaḍā i jī āvisii, § 142.

tihām i ji, § 427, 448.

ji : *anarthadāyaka jī iya rājyarddhi*, § 74

hiṁ : *sava hiṁ jīva rahaīm, dir. pl.* § 38.

pāmca hiṁ rahaīm, dir. pl. § 108.

śreṣṭi hiṁ taṇaum, dir. pl. § 386,

putra hiṁ kanhā, dir. sg. § 446.

kiṇi hiṁ, inst. sg. § 73, 94, 112.

bhāvi hiṁ jī, inst. sg. § 430.

kiṇi hiṁ marai, inst. sg. § 446.

lābhi hiṁ atṛptu, inst. sg. § 447.

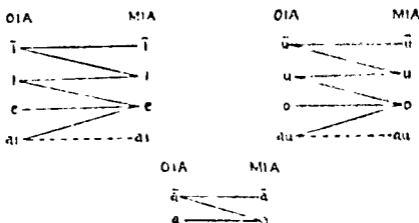
tini hiṁ jī citraki, inst. sg. § 448

teti hiṁ jī vāra, loc. sg. § 86.

pūrvī hiṁ, loc. sg. § 428.

turn, been followed by a significant change in the grammatical system, thus providing us with more reliable data on the stages in the history of the source language. Statements about changes in the consonants (p, b, m, etc.) would be more trustworthy, as there are relatively few, and they do not play a significant role in the changes in the grammatical system. Where the changes in consonants and vowels are interdependent, statements about consonant changes have been made.

5.47 Transition from OIA to MIA has been already described by Fischei, Blich, Chatterji and others. The most significant features of this change are merging of OIA *i* to MIA *a*, or *u*, reduction of OIA high vowels *i* and *u* to MIA *e* and *o*, and shortening of vowels under certain conditions. These changes (excluding *t* = *θ*, *h*, *u*) can be presented as follows:



Dotted line indicates a later MIA stage.

There are some cases where OIA *i* and *u* in closed syllables > MIA *e* and *o* in closed syllables. They merge with the *e* and *o* phonemes of MIA. These *e* and *o* have been regarded as short, but since vowel quantity is conditioned by syllable structure, no contrast between short and long *e* and *o* is visible anywhere. Hence it is not necessary to set up long *ē* and *ō* as separate phonemes.

5.48. Apparently, the changes from OIA to MIA are very few. Some long vowels have become short vowels, diphthongs have become monophthongs and some *i* and *u* of OIA have merged with *e* and *o* of MIA. But, the distribution of vowels in MIA is significantly different from OIA. Vowel length in OIA is distinctive, while in MIA it depends largely on syllable structure. Vowels in closed syllables are always short. Final vowels are mainly short. Thus we get a system where quantity of vowels is mainly conditioned by the syllable structure, while in OIA the quantity of vowels is contrastive irrespective of the nature of the syllable. A simple stop consonant did not occur intervocally in MIA; it could occur only as a homorganic geminate. Thus, in non-final position the contrast of length is reduced to cases of vowels occurring before *m*, *n*, *s*, *l*, *ʃ*, *r*, *y* and *v*.¹

¹ It is possible to interpret length of the stop consonants as allophonic in MIA, i.e. initially they occur as single and intervocally they occur geminated. For the suggestion see N. S. Treubezkov, *Principes des Phonologie* (French Translation 1949), Pp. 305. If this suggestion is followed then the consonant length would be phonemic only in cases of those nasals and spirants which can occur single or geminated intervocally: *m*, *n*, *s*, *l* and *v*, *r* and *y* do not occur geminated, *n* and *ŋ* do not contrast, since the former occurs initially and later intervocally, but *nn* and *ŋŋ* both occur intervocally and hence contrast. Length will be significant in the case of the retroflex voiced stop *ɖ*, since it occurs initially as single but intervocally it can occur single and geminated.

(Continued on page 25)

Loss of intervocalic stops in classical Prakrit creates new vowel sequences, many of which are contracted to unit vowels in the New Indo Aryan languages. This change plays a significant role in the development of the NIA languages. This also makes possible, for the MIA dialects, to borrow words from Sanskrit with the diphthongs ai and au, for which the grammarians have made a separate class (viz. *daityādi gaṇa*) of words which retain OIA diphthongs. Skt. diphthongs ai and au which became monophthongs in Pkt., as e and o, are retained in Modern Guj., while those which were borrowed later, and those which were formed in Pkt. by loss of intervening consonants develop to i and o in certain positions in modern Gujarati.

5.49. In the later MIA (mainly Apabhraṃsa) the dependence of vowel quantity on the syllable and the word becomes more manifest. All word-final long vowels are shortened, and final -e and -o change to -i and -u respectively.

In some of the early documents of MIA also, this tendency is manifest though it is worked out fully in later MIA. Shortening of some final vowels is already noticeable in Asokan Inscriptions and Pali (e. g. -ā > -a, -ī > -i). In Douteuil de Rhins documents there are instances of final -e of loc. sg. > -i, and -o of nom. sg. > -u.² Moreover, the distinction of active and middle in Sanskrit is mainly dependent on distinction between -e and -i, i. e. act. 3rd sg. -ati, 3rd pl. -anti; mid 3rd sg. -ate, 3rd pl. -ante; only the active survives in MIA which may suggest an earlier merger of -e with -i.

5.50. Development of final vowels with nasalisation is the same as that of simple vowels, i. e. they lose their nasalisation and are shortened. There is one exception. In the case of final -ām (ā = the anusvāra) there are two developments. either the nasal is lost or -ām develops to -u, the second being more predominant in late MIA. This isogloss divides Midland languages from the Western languages. Gujarati falls within the Western group, (i. e. -am > -u in old Gujarati.)

5.51. In OIA, the quantity of vowel is distinctive in all positions. Moreover, the morphophonemic alternations of guṇavṛddhi present a significant relationship between i : e : ai, u : o : au and a : ā. these relationships are lost in MIA (just as the change of Ilr. *ai and *au to OIA e and o, Ilr. *āi and *āu to OIA ai and au considerably blurred the morphophonemic relationships between the vowels in OIA).

MIA vowel system consisting of a set of short vowels and a set of long vowels³ $\left. \begin{array}{l} -i \quad u, \quad \bar{i} \quad \bar{u} \\ -a \quad \bar{a} \\ -e \quad o \end{array} \right\}$ therefore, is a significantly different vowel system, where the quantity of the vowel is mainly dependent on the structure of the syllable and the word.

5.52. The oldest Gujarati documents (i. e. dated mss. of 13th-14th century) presuppose certain developments after the MIA vowel system described above. To explain these changes we have to assume a stage, in which the vowel classes of MIA

(Continued from page 21)

If MIA consonant system is reinterpreted by the reconstruction of NIA languages, it may be possible to refine the above interpretation. Then, possibly, intervocalic [l], [d] may be assigned to d-ferent phonemes [l] [ʎ], while intervocalic geminates [ll], [dd] may be considered alloph. var. of, [l] and [d]. Initial [m] and intervocalic [m] and [n] may be assigned to the same phonemes [m], [n]. Similar reinterpretation may be possible about r and a also, so that intervocalic -rr-, -r-, -d-, -l- and -s- would be assigned respectively to [ʀ], [ʀ], [ʀ], [ʀ], [ʀ] while initials r, n, d, l, s, or intervocalic geminates rr, nn or rr, dd, ll and ss would be assigned to [m], [n], [d], [l], [s] and [ʀ]. This interpretation is only very tentative and could only be profitably discussed if various stages of the split of Indo-Aryan dialects are specified.

2. Jules Bloch "L'Indo-Aryen des Veda aux temps modernes" pp. 41 (1924).

3. For assigning MIA a set of long vowels see Chaitani A. M. "Phonetic and Phonemic in Linguistics" Indian Linguistics, Turner Jubilee Vol. pp. 147 (1954).

(result of loss of intervocalic stops) have (i) contracted and (ii) resulted as diphthongs. These changes are conditioned by the position of vowels in the word. Thus some vowel clusters which contract to a single long vowel in final position do not contract in the non-final position. The general direction of change can be summarized as follows :

(A) Sequences of the type ai, āi and au, āu remain uncontracted in all positions, final as well as non-final.

(B) In the final position, the following sequences contract to a long vowel :

īa, īu, īi > -ī

ea, eu, ei > -e

ūa, ūu, ūi > -ū

oa, ou, oi > -o

āa, > -ā

Final vowels -ī, -ū and -ā are shortened in MIA. Though in a few of the OG words MIA -ā is retained, we have assumed that the change has worked out in late MIA, and so all final -ā, -īā are interpreted as final -a, -ia.

In these sequences the final vowel behaves as a length allophone and the sequence results in a long vowel.

In the non-final position some of the above sequences do not contract to a long vowel but remain as sequences. They are iā, uā, oi, ie.

553. A few examples of each type are given below :

(A) Uncontracted ai, āi and au, āu in final and non-final positions :

(i) ai > -ai : 3rd pers. sg. of the present indicative such as karai 'acts', jānai 'knows';

loc. sg. of extended nouns such as (Sk. mastake) matthae > mīthai 'on the head'.

(ii) -ai > -āi : 3rd pers. pl. of the present indicative such as karāi ' (they) act', jānāi ' (they) know'.

Development of 2nd pers. sg. of the imperative is not regular: karahi kari ' (you) act'.

(iii) -ai > -ai : paisai 'enters', maillaā > mailāu 'dirty'.

(iv) -āi > -āi : 3rd pers. sg. of the present indicative of -ā stems such as khāi 'eats', jāi 'goes'.

3rd pers. sg. of the passive base: bharāi 'is filled', jānāi 'is known'.

(v) -āi > -āi : 3rd pers. pl. of the -ā stems, khāi, jāi. The treatment of -āi > -ā in the nom. and acc. pl. of newer nouns gharāi > gharāi > gharā

'houses' is different, either due to a different sequence -āi, or due to a dialect difference. This pl. is preserved in the dialects of Northern Gujarat.

4. For 'pass' and 'date' see also a special case in some terminational elements. Thus, -n-and-m > -n MIA and -n > -n MIA -ā (OG) -ā.

MIA -n and -m > -n > -n MIA -ā > (OG) -ā

MIA present indicative 3rd pers. pl. -āi > -āi > -āi MIA -āi > (OG) -āi (dialects of Gujarat)

In one case, however, -ia > -i- These are the occurrences of the past participles in OG. In OG, past participles of the type -iu m. and -iũ n. are common. they have developed from the late MIA -iau and -iaũ.

Historically, there is no explanation for -iau, -iaũ; it can only be explained as Sk. -itah m., -itam n., Pk. -ia m. and -ia n. further extended in late MIA period with -u and -ũ to conform to the ending of m. and n. nouns, with which these participles agree in gender, number and case. Proto-Gujarati participles -iau and -iaũ are, therefore, analogically formed.

-ĩ > i : (Sk. kānicit, Pa. kānici) kãĩ 'some',
(Sk. aṣṭi) aṣ 'eighty'.

-ĩĩ- > -i- : (Sk. vicinoti)* viĩnai > viĩnai > 'gathers'.
(Sk. dvitīyakah) biĩjau > biĩjau 'second'.

(ii) ea, eu, ei > -e

-ea > -e : (*du-veda-) duvea > duve 'one who belongs to the group of the two vedas, a surname'.
(Sk. eṣā, Pk. eṣā) ea > e. 'that-f.'

-ea > -e- : (Sk. vedanā) veṇa > veṇa 'pain'.
(Sk. devara-) *dearu > *deru.

-eu > -e : Loc. pl. of nouns, such as (Sk. deveṣu, Pk. devehu) deveu > deve. (Sk. bhāreya-) bhāreu > bhāre 'heavy'. (Sk. dva khalu, Pk. be kkhu, behu) beu > be 'two'. (Sk. meghah, Pk. meho) meu > me 'rain'.

-ei > -e : (Sk. *devebhiḥ, Pk. devehi)
*devei > deve; inst. pl. suffix is -e.

(iii) -ũā > -ũ : (Sk. yūkā, Pk. juā) jũā > jũ 'louse',
(Sk. kaṭuka-) kaḍua > kaḍũ.

-ũā- > -ũ- : (Sk. śukaḥ-) suaḍau > sũḍau 'parrot'.
(Sk. rūpam-) rūḍau > rũḍau 'proper'.

ũũ- > -ũ- : (Sk. udumbaraḥ) uumbara- > ũbara- 'Ficus glomerata'

(iv) -oa > -o : (Sk. jalaukā) jaloa > jaḷo 'leech'.

-oa- > -o- : (Sk. stokam-) thoḍau > thoḍau 'little'.

-ou > -o : (Sk. anudyogah)* aṇujjou > aṇojo 'day of rest'.

-oi > -o : (Sk. kocit) koi > ko 'some one'.

(v) -āa > -ā : (Sk. mātā) *māa > mā 'mother'.

-āa > -ā- : (Sk. bhājanam-) *bhāṇau > *bhāṇau 'receptacle'.

-āā > ā- : (Sk. bhāṇḍāgāra-) *bhaṇḍāāra- > bhaṇḍāra 'store'.

Non-final groups of the type -iā- and -uī- are not contracted in OG: hathiāru 'weapon', suārī 'having caused to sleep'. Similarly -oi- is not contracted: joist 'astrologer'. Groups such as -ie- which are permissible only non-finally, remain uncontracted in OG, naḷiera 'coconut'. Of these, -oi- is contracted to -o- in the later period, while others remain uncontracted till present-day Gujarati.

(Sk. vilagayate) vilageai > *vilagei (NG valge) intrans. 'attaches'.

(Sk. vināsyate) vinassai > *vināsai (NG vanse) intrans. 'corrupts'.
tadapphaḍai > tadaphaḍai (NG tadaphde)

intrans. 'trembles (in agony)'

The expected ā- in the second syllable has been replaced by -a-, on the model of other intransitives.

(E) Vowels in closed syllable with nasals show two types of development :

(i) (c) $\check{v}NC\bar{v}c$ — — > (c) $\check{v}c\bar{v}c$ — —

(Sk. manjūsā) manjūsa > majūsa 'box'.

This treatment is similar to B (1) above; here the nasal behaves like any other consonant. Elsewhere, the nasal remains and the vowel remains, both unaltered.

(ii) (c) $\check{v}NC\bar{v}c$ — — > (c) $\check{v}Nc\bar{v}c$ — —

(Sk. samstāra-) santhārau > santhārau 'bed'

(Sk. samsāraḥ) sansāru > sansāru 'world'. It should be noted that in all the examples of this type the syllabic in the first syllable is - a - .

These alternations may also be due to dialect mixture, since in present Gujarati dialects similar treatment of nasals is noticeable.

In one example, which is of high frequency, the nasal is lost without any lengthening of the preceding vowel; all the present participles :

(Sk. karanta -) karantau > karatau.

This change belongs to an early stage: the isogloss of - nt - > $\frac{-t}{-d}$

(nasal + unvoiced stop > nasal + voiced stop) separates Assamese, Bengali, Hindi, Gujarati, Oriya, Marathi and Singhalese from Kashmiri, Panjabi, Sindhi and Nepali (see Turner, Nepali Dictionary p xiii). Loss of nasalisation is peculiar to this participial form, but it is also shared by other Indo-Aryan languages of the - t - group.

5.56. The vowel system of this Proto-Gujarati period, though similar to MIA vowel system, has significantly different distributional features -

i	u	ɪ	ū
a			
		e	ā
			o

Short and long vowels now contrast in all positions; in the final position there are two types of diphthongs ai, āi and au, āu. In non-final positions, other vowel sequences are eu, iu; oi, ui; iā, uā. Words do not end in consonants.

5.57. Some significant grammatical changes resulting from the above phonological changes may be noted here.

5.58. In the nominal declension the m. sg. termination is - u, (apart from the few exceptional cases where the MIA termination was not - o) and the pl. termination is - a. The inst. and loc. terminations fall together as sg. - i and pl. - e. A noun like devu (SK. devah) would thus be declined as :

	sg.		pl.
nom/acc.	devu		deva
inst. loc.	devi		deve

-itavya > MIA -iavva, -ivva > OG -iva; e. g. OG karivāu (NG karvū). This is used as infinitive of purpose. The short -i- in the OG potential participle -iva cannot be explained. That it was short in OG is supported by its later development viz. change to -a- in MG and to zero in NG : OG, karivāu > MG, karavū > NG karvū. But -ivva-, iavva- > -iva- is the expected form, while we get -iva in OG. In the Western Hindh Group, Braj bhāsha and Kanauj show -ib-; in the Magadhan group, Eastern Magadhan (Bengali, Assamese, Oriya) shows -iba- and Western Magadhan (Mithili, Bhojpuri) shows -ab-. (see Chatterji §. 697). Iva ~ iva alternation, therefore, may belong to an early period.

5.62. Language of the Old Gujarati texts (about 12-15 centuries) has passed through this stage of Proto Gujarati. Proto Gujarati is invented to show that Old Gujarati texts can be explained properly if it is assumed that certain changes worked out prior to the changes noticed in the Old Gujarati texts. That prior stage is Proto Gujarati.

5.63. Some instances of this type have been noticed above (see 5.54) :

MIA		Pro. Guj.		OG.
-ii	>	-j	>	-I
		-i + ī	>	īi ⁸
		iai	>	Ii

A few other significant changes in Old Gujarati warrant the assumption of an intervening stage.

5.64. With the -o > -u as a general m. noun termination, in OG m. and n. -ū and -ū are analogically extended to nouns where it is not a historical development of -o > -u. Thus there are OG nouns such as⁹:

hāthiu (Sk. hastin MIA hastiko > hāthiu, OG hāthī)

vāñiu (Sk. vāñijaḥ MIA vāñijo > vāñiu, OG vāñi)

kaḍūu (Sk. kaṣṭu MIA kaṣṭuko > kaḍuu, OG kaḍū)

pāñiu (Sk. pāñiyam MIA pāñia > pāñiu, OG pāñī)

Sk. loanwords in OG are also extended with this -u; e. g. prasiddha -u 'famous'

Thus :

-iu	>	-I		
		-I + u	>	Iu
		-i + ī	>	īū
-ūu	>	-ū		
		-ū + u	>	ūu
		-ū + ī	>	ūī

Thus, final vowel sequences such as Ii, -iu, ūu which had contracted to unit vowels -I and -ū in Proto Gujarati are readmitted in Old Gujarati by analogical extension.

⁸ This refers to the instrumental ending -ī which is sometimes suffixed to nouns already having an instrumental suffix -i. ' + ' indicates analogical extension.

⁹ Now, these -iu, -ū become common noun forming suffixes, and they are suffixed to nouns which do not have historical -I also. (See Dave—A Study of the Gujarati Language p. 6. 1935;) e.g. maraḍiu 'ready to die', pataḅū 'bostery', etc. In a later stage, when -au > -o and thus -o becomes a predominant m. sg. termination, this -o is replaced by -u and the m. noun forming suffix is -io (in this subsequent periods, vowel length is not distinctive). In New Gujarati all the neuter nouns ending in -io are results of this analogical change. Sk. Iva; such as Sk. sukṣin, sukṣī, borrowed in OG as sukṣiu, sukṣū develop in the same pattern, i.e. as MG -io; sukṣio. Even if the OG graphic form varies about the vowel length, i. e. -iu, -ū, the vowel should be interpreted as long (I) short -iu would develop as -yu (see 5.67) in MG.

A STUDY OF THE GUJARATI LANGUAGE

5.69. Thus, the vowel system of this period is :

		u
e		o
	a	
e	ā	o

Some significant features of distribution may be mentioned. The non-final sequence -oi- > -o- : OG joist > jōsi 'fortuneteller'. Some i and u in immediate nasal environment are allophones of long i, u, and are retained, instead of merging with a : dhunai > dhune 'is in a trance'. Nasalised [ṛ̃] and [ṣ̃] (khēcai, phēkai) of the preceding period were lowered allophones of e' and /o' respectively (lowering being conditioned by nasalisation), now they become allophones of e and o, these ṛ̃ and ṣ̃ can occur in the non-initial syllable.

We have noted above that the e-e and o-o contrast is localised only in the initial syllable and in monosyllabic words. In New Gujarati also, the contrast is localised in the initial syllable, and in monosyllabic words. In final position the contrast is neutralised. Phonetically, the range of variation in tongue height covers the regions of e-e and o-o respectively. We have, however, transcribed the finals as -e and -o.

5.70. In the dialects of Western and North-Western Saurashtra, however, ai and au > e and o in all positions, and these dialects have a six vowel system :

	i	a	u
	e	ā	o

5.71. Consequential changes in the grammatical system are far reaching. With final -i and -u > -a, contrast between nom. acc. sg. and inst. loc. sg. is lost in the case of unextended nouns, while sg. pl. contrast of inst. and loc. of the extended nouns is lost. (In the nom. acc. of the unextended nouns there is no sg. pl. contrast, while there is contrast between nom. acc. sg. and pl. of the extended nouns). All this imbalance results in only two distinctions in the noun declension, dir and obl.: e. g. dir. : deva, ghoḍi; obl. deva, ghoḍā, -e as the general inst. sg. pl. suffix; -o as the general pl. suffix; both occur after oblique; -e dialectally occurs after the noun stem ghoḍ -e, which is the reflex of oblique instrumental form ghoḍai; -e after oblique i e. ghoḍā-e is analogical. All these changes are worked out in the New Gujarati period. (See below). Thus, the declensions are :

unextended nouns :	sg	pl.
nom. acc.	deva	deva
inst. loc.	deva	deve
extended nouns		
nom. acc.	ghoḍo	ghoḍā
inst. loc.	ghoḍe	ghoḍe

Inst. sg. of unextended noun is not marked; but frequently, by analogical extension it has also been marked with -e; probably analogical extension may have been from both sides : inst. pl. -e and inst. sg. -e of the extended nouns; though it is more likely to be influenced by inst. pl. -e because the contraction of final -ehi > -e is much earlier than the contraction of final -ai > -e.

Other nouns ending in -ā, -i, or -u also have the same analogically extended form for inst. sg. pl.

In New Gujarati, however, -e of the extended nouns survives only dialectally in the standard - of the mainland -, -e comes after the oblique of the extended nouns (in all other positions).

5.72. The change of -i, -u > -a obliterates the gender-number distinction in the paradigms of the relative and the demonstrative pronouns (already in the earlier period).

SI. and *o* and *e*, the pl. changing through MIA have fallen together in OG = OGr. Old Gujarati 2nd person plural forms are *pa m* sg., *pa l* sg., *pa m* pl., *pa m* and *sa l* in pl.

All these phenomena are to be found on the analogy of *e*, and gender number contrast is lost. The three phenomena are, *o*, *e*, *je* and *te*.

573 Similarly, the nominative *h* > *ba*, which is preserved in formations like *havaṅ* > *havaṅ* *ḥ*, while M. OGr. Gujarati *ba* is the result of contraction of MIA *bahu*, but (SI. *ba* *ba* *ba*) *ba* > *ba* alternation in New Gujarati may be dialectal.

OG present (SI. *vaḥ*, *vaḥ*, *vaḥ*, MIA *va*, *vaḥ* > *je* and *te*) in New Gujarati D. *va* and *vaḥ* in *va* and *vaḥ* as have been probably a result of the emphasis on the conditional meaning 'if... then'.

574 With the change of *ai* > *e*, *au* > *o* and *āu* > *o*, the inflection of *vaḥ* in the present indicative changes as follows:

	sg.	pl.
1st pers.	<i>karū</i>	<i>karū</i>
2nd pers.	<i>karā</i>	<i>karā</i>
3rd pers.	<i>karā</i>	<i>karā</i>

The above *o* of the 2nd sg. and 3rd sg. pl. is analogically extended to 2nd sg. and 3rd sg. pl. of the future and to the 3rd sg. pl. of the present. The above *o* of the 2nd pl. is analogically extended to 2nd pl. of the future and the polite imperative. Thus, the paradigm of the older stage are mainly altered analogically in the present stage.

(The replaced forms are underlined.)

		Old Guj.			Middle Guj.	
		sg.	pl.		sg.	pl.
Fut.	1st pers.	<i>karā</i>	<i>karū</i>		<i>karā</i> ¹⁾	<i>karā</i> ²⁾
	2nd pers.	<i>karā</i>	<i>karā</i>		<i>karā</i>	<i>karā</i> ³⁾
	3rd pers.	<i>karā</i>	<i>karā</i>		<i>karā</i>	<i>karā</i>
Passive	2nd pers.	<i>karā</i>	<i>karā</i>		—	<i>karā</i>
	Polite Imp.	2nd pers.	—	<i>karā</i>	—	<i>karā</i> ⁴⁾

The passive *karā* replaces active 1st pl. *karū* (passive construction aiding the process: e.g. OGr. *amho* (MIA *amho* *ah*) *karā* 'by us, it is done', MG. *amho karā* 'we do it'), thus the present indicative paradigm is

	sg.	pl.
1st pers.	<i>karū</i>	<i>karā</i>
2nd pers.	<i>karā</i>	<i>karā</i>
3rd pers.	<i>karā</i>	<i>karā</i>

575 In some dialects of Gujarati (West and North-West Saurashtra) the old passive, without the analogical influence of *e*, is used as 1st pl. of present indicative: *karā*; In some dialects of North-West Gujarat the old active 1st pl. *karū* (MIA *-imo*) is used: *karā*; in some dialects of central Gujarat fut. 1st pl. is *karā* (which is an evolutive of *karā*, with present indicative 1st pers. pl. *karā* extended to fut. 1st pers. pl.) is used, this indicates that the territory of the older *-ā* (MIA. *-imo*) could have been central and northern Gujarat.

11. OGr. *ja* is analogical. Sanskrit *yadi* and *carāḥ* > Late MIA *ja*, *tan*. In OGr. there is a considerable variation between the *pa* *ja* *tan* and *ja* *tan* (*ja* 'on the analogy of *tan*'), and a few examples of later *je* *tan* are also noticeable. But, in OGr. *ja* *tan* dominated the rest, and develop to *ja* *tan*. For different developments in other MIA languages, see Turner R. L., *Nepali Dictionary* under *ta*, *te*; Turner's derivation: *Pa* *ā*, *ta* *ā* or *ta* *ā* cannot be accepted in light of the above evidence from OGr.

12. Retention of OGr. *ā* in open syllable cannot be explained. For some special changes in the terminations of the future, see Turner R. L., 'Future stem in *ā* *tan*' BSOAS VI, 1, 1931.

Another passive (which is already recorded in OG) with *-ā-* (probably derived from old causal) becomes more current in Middle and New Gujarati : *karāi, ganāi > karāy, ganāy*.

5-76. Extended nouns which ended with *-au* or *-iu* now end with *-o* or *-io* : *-au > -o* is regular, while *-iu > -io* is due to the replacement of *-o* for *-u*; this is due to *-o* being generalised as a masculine marker. Thus, *chokarau > chokaro; vāṅṅlu > vaṅṅo* (it has been mentioned before that *-lu > -io* has become a formative suffix and numerous Gujarati nouns are formed with this suffix).

5-77. The New Gujarati inherits this vowel system. The vowel phonemes are the same, but there is a significant change in the distribution : if the final vowel is other than *-a* in a word, then the penultimate *-a-* > zero, if the final vowel is *-a*, then the final *-a > zero*. This change brings about considerable change of morphemic shapes. Words can now end in consonants. Thus:

aṭake > atke 'stops', *rāta > rāt* 'night',
bhaṭake > bhatke 'wanders', *āvata > āvat* 'if he came',
chokaro > chokro 'boy', *calāvata > calāvat* 'if caused to work',
calāvato > calavto 'causing to work', *sarasī > sras* 'excellent',
karatā > kartā > 'doing'.

But *-a-* is retained (if it is pre-penultimate) :

aṭakīe > aṭakie, bhaṭakīe > bhaṭakie.
baḷadīu > baḷadīo 'bull', *vādālīu > vādālīo* 'cloudy'.

5-78. The final *-iu* of the m. past part. > *yu*, is now replaced by *-yo*, as *-o* has already been generalised as a m. marker. Thus *cāliu > cālyu > cālyo, āpiu > āpyu > apyo*. Now *-y-* is generalised as a past marker, and is also extended analogically to such verbs as *nipjyo* 'came forth' *upjyo* 'produced' (while the older forms were *Upanau, nīpanau* Sk. *utpannaḥ, nīpannaḥ*).

5-79. A new plural suffix *-o* appears in this period; it is uniformly suffixed to all nouns m. f. n., and also to those nouns which were already inflected as pl. in the previous stage. The Middle Gujarati noun-declension could be outlined as follows :

unextended m. n. nouns, and extended or unextended f. nouns (since they do not show any difference in the declensions) such as the following are marked by the following suffixes :

			sg.	pl.
	<i>hātha</i>	m. 'hand' dir.	—	—
	<i>ghara</i>	n. 'house' inst. loc.	-e	-e
	<i>kanyā</i>	f. 'girl', obl.	—	—
	<i>tālī</i>	f. 'clap'	—	—
Extended m. n. nouns such as	<i>ghoḍo</i>	m. 'horse'	—	—

		sg.	pl.
	dir.	<i>ghoḍo</i>	<i>ghoḍā</i>
	inst. loc.	<i>ghoḍe</i>	<i>ghoḍe</i>
	obl.	<i>ghoḍā</i>	
	dir.	<i>māthū</i>	<i>māthā</i>
	inst. loc.	<i>māthe</i>	<i>māthe</i>
	obl.	<i>māthā</i>	

and *māthū* n. 'head'

The new pl. -o is suffixed to these sets. All the pl. forms of the above sets could be followed by this pl. suffix, in New Gujarati. m. pl. forms such as *ghodā-ō*, (and also the general feature of all post-positions that they could occur after the obl. form or the pl. form) led to the extension of oblique -ā- to inst. loc. also, and the inst. loc. sg. pl. altered to *ghodā-e*.

It should be noted that the usage of double plural like *ghodā-ō*, *māthā-ō* is more literary and has not spread much; pl. -o is a newly spreading innovation and is limited to parts of Northern and Central Gujarat; here also it alternates freely with its absence. Similarly, the extension of oblique -ā- to inst. loc. is also restricted to the above class and region; here also, it alternates freely with its absence.

This new pl. -o is replacing the -ā pl. from Northern Gujarat (originally a n. pl. -āni > -ā but extended to m. pl. also) and -ū pl. from the dialects of Saurashtra (the source of this pl. is doubtful; it may be an original f. pl., extended later to other genders, cf. Pk. f. nouns ending -ā with pl. inflection would be -āo > āu; but the nasal in New Guj. cannot be explained; -ū pl. is also shared, along with the dialects of Saurashtra, by Kacchi-Sindhi and Panjabi).

5.80. The entry of pl. -o can be well settled by internal evidence from New Gujarati. In new Gujarati, the alternation of a~zero is morphologically conditioned (This -a- which was penultimate -a- in the earlier stage has now become -a- in the final closed syllable). The alternation is:

-a- > zero if it is followed by a vowel

-a- > -a- if the following vowel is the pl. morpheme -o.

Thus *māgan* 'proper noun', *magno* 'derogatory form of that proper noun', *magano* pl. of *māgan*.

nāṅak 'drama' *nāṅki* 'dramatic', but *nāṅako* 'dramas', *bāṅak* '(male) child', *bāṅki* 'female child' but *bāṅako* 'children'.

Moreover, prepenultimate -a- in the earlier stages is retained, thus, in the verb paradigm *aṅke*, *atakie* the alternation *aṅk-aṅak* is phonologically systematic. But now, there are pl. forms such as *garbi* f. sg. *garbio* (OG **garabau* > *garabo* > *garbo* m. 'a ceremonial dance'), *vāṅki* f. sg. *vāṅkio* (OG **vāṅakau* > *vāṅako* > *vāṅko* m. 'cup'). In some cases of pl. there is an alternation between -a- ~ zero: *chokro* m., *chokri* f. but *chokrio* ~ *chokario*; *vādro* m., *vādri* f. but *vādrio* ~ *vādario*. This alternation suggests the analogical influence of nouns with -io suffixes which belong to the earlier stage; in these instances of nouns with -io, -a- is regularly retained because it is pre-penultimate: *sāmal-* 'darkish', *sāmalio* 'one who is dark i. e. lord Kṛṣṇa', *murat* 'auspicious hour' *muratio* 'bridegroom'.

This evidence indicates that the pl. -o is introduced after the penultimate -a- > zero has worked out. Moreover, literary evidence also shows the usage of -o pl. after 18th century.¹³

13. The source of this -o is not clear. It could have been an extension of a late MIA voc. pl. -āo, -āu which would develop in Proto Guj. to -au. It is used as a voc. pl. in Old Guj. in the following sentence: *āho harakau! bhūṅgarevi garviti cha bhāpati* 'o spleen! the king is proud due to the strength of his arms'. In New Guj. voc. pl. (though rarely used) is -o; thus -o may have extended to other case suffixes. This extension, then, must take place after the penultimate -a- > zero has worked out, (cf. Tessitori L. P. 'Notes on Old Western Rajasthan' Indian Antiquary 36:67).

581. It may be noticed that the major analogical changes during the last three centuries (during and after the Middle Gujarati period) start from the Central and Northern Gujarat, i. e. mainly the region between Ahemdabad and Pāṅṅ, and spread to Saurashtra and Southern Gujarat. NW and Western Saurashtra dialects may have separated earlier (with a six vowel system $\begin{matrix} i & a & u \\ e & \tilde{a} & o \end{matrix}$, and present indicative 1st pl. as $-\tilde{i}$); forms with pl. $-o$ are still more restricted to the northern mainland. This suggests that modern standard Gujarati is based on the dialect of this region. This is also supported by the political history of Gujarat, that, during the last five hundred years this region has dominated over the rest of the Gujarati speaking area.



षडवश्यकवालावबोधवृत्ति

॥ अहं श्रीगीतमस्मामिने नमः ॥

सुरासुराधीशमहीशनम्यं प्रणम्य सम्यग् जिनराजवीरम् ।

सुबोधमर्थं दिनकृत्यसत्कं लिखाम्यनुक्तिप्रतिबोधनाय ॥ १ ॥

§1) पदमं नागं तओ दया एवं चिट्टइ सब्वसंजए ।

अन्नापी किं कादी किं वा नाही छेय-पावयं ॥

[१]

[दशथैकालिक सू० अ. ४ गा. १०]

पदिलउं शानु 'तउ' पाछइ 'दया', जीव विषइ छुपा । 'एवं' इणि क्रमि । 'चिट्टइ' किसउ अर्थुं ? रइइ, कउग रइइ ? गुणमेणि इसउं आपइ जाणियउं । कउग माहि ? 'सब्वसंजए' सब्व ही संजत माहि । 10 'संजओ बुविहो-सब्वसंजओ साह, वैससंजओ सावओ ।' सब्वसंजत ही माहि । वैससंजत ही माहि । 'अन्नापी' किं कादी किं वा नाही छेयपावयं ति' अशानु 'किं करिष्यति' किसउं करिसिइ । 'किं वा शासति' अथवा किसउं जाणिसिइ । 'छेउं' पुण्यु । 'पावयं' पापु इति ।

§2) सु पुनि शानु योग्य रहइ दीजइ । अयोग्य रहइ न दीजइ । योग्य सुधावळु जेइ माहि

2^a एकवीस गुण हुयइ ।

धम्मरयणस्स जुग्गो अपत्तुदो १ रुववं २ पगइसोमो ३ ।

लोगण्णियो ४ अकूरो ५ भीरू ६ असठो ७ सदक्खिण्णु ८ ॥

[२]

लज्जालुओ ९ दयाळु १० मज्झत्यो ११ सोमदिट्ठि १२ गुणरागी १३ ।

सकळु सपक्खलुओ १४ सुदीहदंसी १५ विसेसण १६ ॥

[३]

युह्हाणुओ १७ विणीओ १८ कयलुओ १९ परहियत्यकारी यं २० ।

20

तह चैव लद्धलज्जसो २१, इगवीसगुणो ह्वइ सहो ॥

[४]

§3) धम्मं जु रल्ल समल्ल समीहित दानइतउ चित्तामणि धम्मरत्तु सेह रइइ योग्यु अधिकारी 'ह्वइ संठो' इसउं छेदलउं पदु ईहां जोडियइ । 'सहु' भावळु हुयइ । किसउ ? 'इगवीसगुणे' एकवीसगुणुओ । किता ति एकवीस गुण ? इत्याह-अन्याइ करी परद्वन्यापदाएळु सुद्ध इसउ न होइ । किं तु न्यायोपार्जितवित्तसंतोपी जु होइ सु 'अकलुदु' अलुदु ? । 'रुववं' रूपयंतु । अक्षयपंचेद्रिउ नीरोगु 25 रूपयान २ । इत्थामिदिं स्वस्वचित्तु प्रकृतिसौम्यु ३ । सामान्यजनवह्णु अथवा राजादिलोकसमतु लोकमित्र ४ । पर्यंचनायुद्धिरहितु अकूर ५ । भयहिटु 'अमीर' । किसउ अर्थु-धम्मं करतउ धम्मं मम्मं विषइ अजाण ति पिट्ठमाएप्रमुख लोक तीई हूतउ पीइइ नदी । यदुक्क-

होइ समत्यो धम्मं कुणमाणो जो न षीहइ परिसं ।

मायपियसामिगुरुमाइयाण धम्माणभिन्नाणं ॥

[५]

अथवा संसारदुक्खेत्रंतु । मीरु इसी परि पुणि ६ । मायारहितु अशुठु ७ । दाक्षिण्यवंतु 'सद-
विखन्नुं' धोहइसद थापणा रइइं छेदकभाविहिं यदुतर परोपकारकरणस्वभावु 'सदक्खिरभु' ८ । लोरु-
5 लोकोत्तर मार्गे विरुद्ध चोरिका परदारगमनादिक पापकार्यं तीहं तथा करण नइ विपइ लज्जाजुहु 'लज्जाळ' ९ ।
थानर जंगम जीवरक्षाकारकु दयाळ १० । अति प्रयत्न रागद्वेषरहितु मध्यस्थु ११ । यदुक्कं-

रत्तो दुट्ठो मूढो पुट्ठिं गुग्गाहिओ य चत्तारि ।

एए धम्माणरिहा अरिहो पुण होइ मज्झत्यो ॥

[६]

दर्शनमाविहिं जि सकलजनमनोनयनरजकु सीन्यट्टि १२ । गुण-यक्षपात-कारकु ज्ञान-दर्शन-चारित्र-
10 पात्र-सुगुरुवचनकारकु न पुणि निर्गुण-कुलकमायात-गुरु-कदामह-प्रस्तु जु सु गुणरागी १३ । संतप्रधान कथा
कीर्ति जेह रइइं हुयइ सु सत्कथु । अथवा संत शोभन कथा सिद्धांत रइइं अत्रिरुद्ध धम्मदेशना जु करइ
सु सत्कथु । सममाऽन्यगुणजुगुव हीनजातिकुल धम्मदेशनायोग्यु न हुयइ इणि कारणि पितृमारुलक्षणो-
भव-वंशविद्युदु 'सुपक्खु' ईही जि माहि गणित १४ । कार्यांरिभि भविष्यत्काल प्रलोकनशीलु, न पुणि
अविमर्शितकारी जु सु सुदीहदर्शी १५ ।

15 यदुक्कं-

सुगुणमपगुणं वा कुर्वता कार्यजातं परिणतिरवधार्या यत्नतः पंडितेन ।

अतिरभसकृतानां कर्मणामाचिपत्तेर्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥ [७]

§4) गुणगुणविभागद्वह्यु 'विससन्न' १६ । धर्मज्ञ दृढलोकमति उपजीवकु दृढानुगु १७ । उक्कं च-
यदि सत्संगरतो भविष्यसि भविष्यसि । उतासज्जनगोष्ठीषु पतिष्यसि पतिष्यसि ॥ [८]

20 पितृमारुगुरुप्रमुख पूज्यजन विपइ अभ्युत्थानासनदानादि विनयकाळु 'विणीउ' १८ । जिणि
कारिणि विणयमूलु जु जिणसासणु । यथा-

विणओ सासणे मूलं विणीओ संजओ भवे ।

विणयाउ विप्पमुक्कस्स कओ धम्मो कओ तवो ॥

[९]

विणओ आत्रहइ सारिं लहइ विणीओ जसं च किच्चिं च ।

न कयावि दुच्चिणीओ सकज्जसिद्धिं समाणेइ ॥

[१०]

मूलं धर्मद्वमस्य सुपतिनरपतिश्रीलताकल्पकंदः

सौन्दर्याह्वानविद्या निखिलमुखनिर्घर्वश्यतायोगचूर्णम् ।

सिद्धानामध्वतध्नाधिगममणिमहारोहणाद्रिः समस्ताऽ-

नर्थप्रत्यर्थितध्वं विजगति विनयः किं न किं साधु धत्ते ॥

[११]

30 इत्यादिकु फेतलउं एकु विनय तणउं फलु लिखियइ । अन्यकृतोपकार अविसारकु न पुणु कृत्यु
जु सु इतनु १९ । आत्मव्यतिरिक्तजन रइइं 'अमीघार्यसंपादकु अथवा राजचौरादि भयरक्षकु, अथवा
धर्मोपदेश दानि करी संसारसागर समुत्तारकु 'परहियत्थकारी' २० । राजादिसभा माहि सकल दर्शन
विचारद्वह्यु 'लढलहु' २१ । इति एकविंशति गुण विवरणु संक्षेपिहिं जाणियउं । विस्तरइतउ कथापुस्तक-
इतउ जाणियउं ।

§3) 2 note the short-u in वराहिसुभु । In the second line Bh. has a long u.

§4) 1 Bh. विनेत्तुं. 2 Bh. omits. 3 Bh. omits.

{5} अथ प्रत्युप प्रीतिनां तु कथियत् ।

माह्व सय वाता होर अहोरत्नमन्तपारमि ।

गिदिहो पुन विपरंदपु निय पंच गय वा वाता ॥ [१२]

इमा परमात्मन बचनद्वय माधु अहोरत्न मादि मान पंचरंजना करह, गृही पुनि त्रिदि अथवा
 संय अथवा मात पंचरंजना करह पंचांगिक । अथ प्रकाशद्वय पक्षितं बुधत्रिं विषाक कितियत् । ३

विमि निर्मादी १ विमि पनादिना २ विमि पेर प पनामादं ३ ।

विमिदा पूजा ४ प तदा अत्रय निय मायनं ५ पेर ॥ [१३]

विदिमि निरिगमापिरह ६ विमिं भूमिपमज्जणं पेर ७ ।

ब्रह्म विपं ८ ह्रा विपं ९ च विमिं च पणिहानं १० ॥ [१४]

ईपदर निपसंतुषं पंदनायं जो विजाना निरालं ।

इन्द्र नो डरउपो मो पादर मासयं टाणं ॥ [१५]

विनयननादि प्रवेति, आदि पदद्वय वीर्यपदाद्या प्रवेति, मन-बचन-कायद्वय पाचव्यापार विवेप
 विरहं त्रिदि निर्मादी वीर्यं । मन-बचन-कायनादि त्रिनु छद विमि कारनि त्रिदि प्रदधिना दीर्यं
 एव तु कथं मतिः । —

विजामरनादपवेने निसेहविसयां निर्मादिया विमि ।

मन-बच-नपूजमेवे त्रिधु पि ति परकिरणा तेण ॥ [१६]

मन-बचन-कायभेदि कृती त्रिदि प्रत्येक त्रिजविदरंमि मायह इत्य चर्तारि कृती जय अय जेवेति
 मन्तां वीर्यं पुनपूजा नेपपूजा मुनिपूजेति त्रिविधा पूजा । पुनपूजा सर्वसुरभिरुपपूजा रहं
 वत्तलन । नेपपूजा सर्वं दानव्य इत्युहोपलक्षण । मुनिपूजा सर्वं भाषपूजा रहं उपलक्षण । वदुप-

त्रिपनामहरणमेयं जुगं मण-बचन-कायमेणं ।

पुननामिपुहमेया विमिदा पूजा इमा होर ॥ [१७]

{6} छाप्रापव्या, समयमगलापस्या, मोभावरणा छान विदि अथसां । तत्र-

सोत्रे सोत्रे च सारे सुरभियुमनसां सन्तरे प्रस्तरे वा

स्येणं पणे च जीनें मुकचियु पणुपु स्त्रीयु यस्त्रीयु वा पि ।

अन्धो बन्धो च साम्यमुनहृदपदयो योगपीताः समूर्धे-

रहंरहंसमने इति हृदि मनुगो मे पदा यान्त्यशानि ॥ [१८]

'सोत्रे' लुचिचारक मन्त्रननिमित्तु । 'गारे सोत्रे' धारसंयुक्त सोत्रु विराणउ तेह विरह ।
 'साम्यमुनहृदपदयो' इमं पदु सारदी परहं मरमं जेदियत् । साम्यु' रागद्वैपरहितता । विमि
 कृती ह्यु नदित जेह तनां मननयन ह्ययं तु साम्यमुनहृदपदर कथियत् विमा हंवा । तथा 'सुरभि-
 युमनसां प्रस्तरे प्रस्तरे वे' ति । सुरभि युमनसव्या विरह । अथवा प्रस्तरे सारदिवा कठिन पापाण-30
 मप्या विरह । तथा 'सर्गे' सुवर्गताति विरह । 'पणे च जीनें' पुरातन पर्णमगुह विरह । तथा, 'सुरचियु
 बह्वु स्त्रीयु यस्त्रीयु वा पि ।' अथकठदिवादीमेहकंति बहु मगुह छदं स्त्री तीदं नह विरह । शक्ती
 नयोमेत्रिय ह्युती तीदं नह विरह । तथा 'अन्धो' कृय नह विरह । 'बन्धो' अमीष्टजन विरह । 'साम्यमुन-

{5} 1 Bb, omits. 2 B, विरह । {6} 1, Bb, सोत्रु मन्विद्य बह्वुपुण्णतयु । 2 Bb, तमता ।

हृदयदृशो' समचित्तलोचन तू रहसं । 'अहंनरः' इत्यं मूर्ध्निगतं त्रिनेत्रं पशु । तेह रहसं संयोगतु हे जहंन
अहंन । 'योगधोतात्ममूर्तेः' योग्य भक्तिनं समाधि निधि करी धीर पतिरीकृत आत्ममूर्ति जेह तणी हुयत
सु योगधोतात्ममूर्ति, तेह तू रहसं नमस्कार हुयत । इत्यं 'हृदि' दिगत मारि 'मनुष्यो' मन्ता हूत
'कदा' केतीवार मू रहसं दिन जाइ । इसी विंता सप्तम्यापत्ता विंता' कहियत ।

5 §7) तथा-

सर्वतः सर्वदर्शी समवस्यतिगतः प्रातिहार्यरहार्थं
रोचिष्यु, श्रीभविष्युर्भूतजनजनमोहर्तुमन्युत्सहिष्युः ।
वार्तिष्युर्द्रादसानामुपरि परिहृत् तत्त्वसिद्धी प्रमाणं
साद्वादं सप्तमश्याऽभिदधदिह मुदे मेऽस्तु देवाधिदेवः ॥ [१९]

10 सर्व्वं सूक्ष्म जीवपुद्गलनिगोदारिक वस्तु कालभ्यवहितु वेदान्वयदितु विशेषरूपि करी जाणत
इति कारणि सर्व्वतु । सर्व्वदर्शी सगळं पूर्व्वमजितु वस्तु सामान्यरूपि करी देवाइ इति मर्षदर्शी ।
सामान्य-विशेषात्मक वस्तु विषय विशेषात्मक बोधु ज्ञानु । सामान्य-विशेषात्मक वस्तु विषय सामान्यात्मक
बोधु दर्शतु । इसा ज्ञान दर्शन व्याख्यानइतत । तथा च भक्तिनं-

15 संभिन्नं पासतो, लोमलोमं च सत्यश्रो सत्यं ।
तं नतिय जं न पासइ भूयं भयं भविस्तं च ॥ [२०]

'संभिन्नं' संपूर्णु लोक चतुर्दशरत्न प्रमाणु पंचासिंशायमत । अलोक केवलकाशरूपु अनंतानंतु ।
'सन्वजो' सविदुं दिसि । 'सध्वु' मध्यामध्यविभागलक्षणु पामतत देगतत । दर्शन रहई ज्ञानोप-
लक्षणत्वइतत जाणतत हंतत सर्व्वतु सर्व्वदर्शी । सु नपी भूतु अतीतु, भव्यु वचंमातु, भविष्यु आपानि
कालभाविजं वस्तु, जु न पासइ न जाणइ इति गाथार्थः ।

20 'समवस्यतिगतः' समवसरणु रूप्य-सुवर्ण-रत्नमय बलयत्रयरूपु देवविनिर्मितु तिहां गतु वचंमातु ।
प्रातिहार्यं देवविनिर्मित अशोक वृक्षादिक अष्टसंख्य । तथा हि-

अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दिव्यो ध्वनिश्रामरमासंन च ।
भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ [२१]

सुवर्ण-रत्न-विनिर्मितु योजनविस्तारि अनमच्छायु अशोक वृक्षु चैत्यद्वुमापरनामप्रसिद्धु केवलज्ञानो-
25 त्पत्तिसमयानंतरु जिनमस्तकि देव नीपाइ ।

तिशेव गाउयाई चैपरुक्खो' जिणस्त पढमस्त ।
सेसाण बारसगुणो वीरे वत्तीसय धणुणि ॥ [२२]

शिष्यु भणइ- 'भगवन् ! आवश्यकरूपि माहि श्रीवीरशरीरहिंतै पुणि बारसगुणु अशोक
मणित । यथा-

30 असोकवरपायवं जिणउच्चत्ताओ बारसगुणं सको विउज्वइ ।

वीरसमोसरणप्रस्तावि ए चूर्णि । तउ वत्तीस धणुइ किम घटइ ? । गुरु भणइ, केवलउ अशोक
श्रीवीरही रहई बारस गुणउ धणुइ २१ छइ । तेह उपरि वीजउ धणुइ ११ साल वृक्षु छइ । विदुं तणइ
प्रमाणि मेलिइ धणुइ ३२ हुयइ । प्रवचनसारोद्धारसिद्धांत माहि ए वृच्छा अनइ उतरु सविस्तरु छइ ।
आज्ञानुमान अधोर्धुंत थहलपरिमल पंचवर्णपारिजातकुसुमवृष्टि समवसरणभूमितलि देव करइ । २ ।

मालवकैरिति रागर्गभित्तु सर्वभाषानुकारी सर्वसंशयपहारी भोजनविलारी सख्यदेशापमारी
अनुरसतावतारी रिन्नु ध्वनि देशनानादु स्वभाविरिदि केवलज्ञानोत्पत्तिममयानंतरु जिनमुग्वृतं विनरउ ।
तथा च भणितं-

वासोदगस्त च जहा वपाई हुंति भायणविसेसा ।

सन्धेसि पि सभासा जिणभासा परिणमइ एवं ॥

[२३] ३

देवा देवीं नरा नारीं श्वराभापि श्वारीम् ।

नियञ्चोऽपि हि तैरथीं मेनिरे भगवद्विरम् ॥

[२४]

रंग्रांगतरंग चंग धामर अमर भित्तुं गमे धीजइं । ४ ।

मुयर्णरत्तमयं सत्तादरपीठ चउडुं रिसि चत्तारि मिदरपीठ देव धारइं । ५ ।

केवलज्ञानानंतरममइ जिम मूर्संविदरमि करी जन्मयन रइं प्रतिपाठ हुयइ तिम जिनेद्वतनु-10
कांति करी पुनि हुयइ निनि कारणि देहकांति संपिठिन करी मूर्यमंदल परिमंदल मामंदल पृष्टिपदेसि
देव करइं । ६ ।

आकाशसंस्थित देव देवदुंदुभित्तिनादु जिननादपुष्टिकारकु करइं । ७ ।

श्रेयोभ्यापिनलसंस्विसा श्रेयानपप्रथमी जिनमसाठि देव परइं । ८ ।

'मल्लानिदुष्योनि जिनेभरानं संति' क्विसउ अर्थुं त्रिमुननातिमयापियां । प्रातिहार्यं पूजाप्रकार 15
जिनेकरइं तथा ति पुनि किमा ? अहार्यं अनेतं देवहं हरिया प्रापिमा शक्य नही, तीदं करी ।

§8) 'शेषिष्णु श्रीभविष्णु' त्रिमुनजननाम्यलक्ष्मीमीष्णु भवनसीदु । तथा च भणितं-

पदिवचनचरमतशुणो अइसइ लेसं पि जस्त ददृणं ।

भव-कुच-मणा जायंति जोगिणो तं जिणं नमइ ॥

[२५]

'मुनजननमो हतुमल्लुम्हदिष्णु' भुवनजन रइं तम आत्मान हरिया कारणि अति कस्ताहकरण-20
सीदु । 'शेषिष्णुद्वैदगानामुवरि परिपदां' आश्रयदिसि गम्भरं, वैमानिकदेवी, माधी लक्षणं त्रिन्दि
समा । नेकति दिसि ज्योतिर-व्यन्तर-भजनयति देवी समा त्रिन्दि । पायक्य दिसि तीदंना देवदं तणी
समा त्रिन्दि । देवानदिसि वैमानिक देव, नर नारी समा त्रिन्दि । इस्सि परि चउडुं विदिसि जि छइं
परइ समा तीदं माहि सात हाय उंची मणिगीठिका सेह ऊपरि करीभमाण मिहासनु तिदं समुपवेश-
माचइतउ 'उपरिवर्तिष्णु' उपरि वत्तमानु । 'तत्त्वसिद्धे' जीयाजीवादि नवतत्तन सिद्धिनिमित्तु प्रमाणु 25
स्वाद्वाशभियांतु सत्तमंगीप्रमाणमार्गप्रसिद्ध, तिपि करी अमिद्वतउ उपदिशतउ हुंतउ, 'मुदे'-परमानंदनि-
मित्तु, 'मे' मू रइइं 'अम्नु' हुउ । देवापिदेवप्रस्तायइतउ श्रीमहानीरु । इमी धिता समयसरणावस्थाधिता ।

§9) धय मोश्रावस्था लिटिपद-

संटाण-चन्न-रस-गंध-फास-वेपंग-संग-जणिरहियं ।

इहातीसुणुपासमिदं सिद्धं सुद्धं जिणं नमिमो ॥

[२६] 30

दीपं, वृत्त, त्रिकोण, चतुष्कोण, परिमंदल नामक पांच संस्थान । कृष्ण, नील, लोहित, हारिद,
सुविल नामक पांच वर्ण । तिक्क, कंडुक, कपाय, आम्ब, मधुर, नामक पांच रस । सुरभि, दुरभि नामक
वि गेय । मुक, लघु, मृदु, कठिन, श्लिग्ध, रुक्ष, उष्ण, शीत नामक आठ फरस । पुरुषवेद, स्त्रीवेद,

नपुंसकवेद रूप त्रिन्दि वेद । अंगु फायु, संगु रागु, जनि जन्मु, ईहं एकत्रीशही तणा अभाव एकत्री-
शगुण । तीहं करी समिद्धु संजुछु । अथवा पंचविधु ज्ञानावरणु । नवविधु दंसगावरणु । दंसगमोह,
चारित्रमोह रूप वि मोहनीय भेद । पांच अंतराय भेद । चत्तारि आयु भेद । शुभाशुभरूप वि नाम-कर्म
भेद । उचनीच लक्षण वि गोत्रकर्म भेद । सात-असातरूप वि वेदनीयकर्म भेद । सर्वइ मिलिया एक-
५ ग्रीस, ईहं सवही तणा अभाव एकत्रीस गुण । तीहं करी 'समिद्धु' सहितु । 'सिद्धु' किसउ अर्यु ?
पंचेतालीस लक्षणयोजन प्रमाण जिसउ ऊत्ताणउं छत्रु हुयइ इसइ आकारि स्फटिक रत्नमय छइ
सिद्धिशिखा, तेह ऊपरि एकु जोयणु आकाशदेसु तेह नइ उपेल्इ चउरीसमइ भागि' त्रिन्दिहसइ सप्रिहा
त्रेत्रीसा' घनुह प्रमाणि आकाशदेसि चरमदेह त्रिभागन्यून अमूर्त्तजीव ज्योतिःस्वरूप संग्रामु नित्यु जिहां
एक सिद्धज्योति तिहां अन्योन्य समयगाढ परशर प्रविष्ट अनंत सिद्धज्योति छइ । तथा च भणितं-

10 तत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का ।

अनुत्तसमोगाढा, चिद्धंति तर्हि सयाकालं ॥

[२७]

बुद्धु ज्ञातवत्तु । 'जिनं नमिमो' अग्दे एयं गुणविशिष्टु जितु नमउं नमस्करउं । इसी धिंता
मुक्तावस्था चिंता ।

१५ §10) नरक गति तिर्यंच गति अकर्ममूमि गति वर्जननिमित्तु ऊर्ध्वं, अधो, वाम, दक्षिण,
पृष्टि लक्षण तिर्यंगलक्षण । त्रिन्दि दिसि तिहां, निरीक्षणविरतिं जोइवा तणउ निपेधु । तथा च भणितं-

छउमत्थ समोसरणत्थ तह य मुक्खत्थ तिचि वत्थाओ ।

तिदिसि निरिक्खणविरइं, तिरि निरया कम्मभूमीसु ॥

[२८]

मन-वचन-कायलक्षण त्रिन्दि जोग तीहं नइ विपइ भेदि करी जिहां ऊमां रहियइ तिहां वस्त्रांचलि
करे त्रिन्दि वार प्रमाजंतु कीजइ । एउ त्रिविधु भूमिप्रमाजंतु कहियइ ।

20 जिणपडिमाणमवग्गहु, निदिद्धो होइ पुज्वक्षरीहिं ।

उकोस सट्टिहत्थो जहंनं नव सेसु मज्झिमओ ॥

[२९]

जिनप्रतिमा हूता उल्लूट पदि साठि हाये थिकां देव वांदिइयं । जघन्य पदि नवे हाये थिकां देव
वांदिइयं । अनेउ नव हाय ऊपरउ, साठि हाय माहि सगळ जघन्यु अवग्रहु कहियइ । संकीर्ण थानकि
पुगि अति दूकटां जिनविंथ कन्दइ थाई चैलवंदना न कीजइ । अक्षर अर्यं प्रतिमा त्रिहुं तणउं करणु
25 विधिंथ सुचयेयउं । यथा-अक्षरमात्रा थिदुसंयुक्तादि भेद' शुद्ध ऊचरिवा । अर्यु गुरुपदेशानुसारि मन
माहि चितवेवउ । प्रतिमा-जिनविंथु तिहां टट्टि करेयी । जिनमुद्रा, योगमुद्रा, मुक्ताशुक्तिमुद्रा लक्षणु
मुद्रा-त्रिहुं चैलवंदनामूर्-व्याप्यान माहि कहीसिइ । कायनिरोध, मनोनिरोध, वचननिरोध लक्षणु प्रणिधान-
त्रिहुं । अप्रतिलेखिति, दुःप्रतिलेखिति, अप्रमाजिति, दुःप्रमाजिति थानकि कायव्यापारनिवारणु । विधिपूर्व
क्षमाधमन-प्रदान प्रमाजंतादि विपइ कायव्यापारप्रयोजनु । आचं-रौद्रव्यान विपइ मनोव्यापारनिपेधनु
30 चैलवंदनापर्यंतन विपइ मनोव्यापारप्रयोजनु । राजकथादि विपइ वचनव्यापारनिपेधनु । मधुरस्वरा-
छापकोषारन संरदास्ववन विपइ वचनव्यापारप्रयोजनु । प्रणिधानत्रिहुं कहियइ । तथा च भणितं-

अक्कर अत्थो पडिमा, भणियं यस्माइ तियमेयं ।

जिणमुद-जोगमुद्रा मुक्तामुचीप निचि मुद्राओ ॥

[३०]

कायमणोवयणविरोहणं च पणिहाण तियमेयं ।

ए दश त्रिक सूचवतउ हंतउ सायधानचितु जु चैत्यवंदना करइ सु पुण्यात्मा शाश्वतस्थानु परमा-
नंदपदु लहइ । हसां दश त्रिक मन माहिं धारवां । चैत्यवंदनावसरि सूचवेवां ।

§ 11) अथ परिहारयोम्यता करी चउराशी आशातना लिखियइ ।

खेलं केलिं कलिं कलां कुललयं तंबोलं मुग्गालयं
गालीं कंगुलियां सरीरधुवणं केसें नहें लोहियं । 5

भचोसं तयें पिचें वंतें दसणे विस्सामणं दामणं
दंतें-च्छीं नहें-गंडं नासियें-सिरो सुत्तें-च्छवीणं मलं ॥ [३१]

मंतं मीलणं लिक्खियं विभज्जणं मंडारं दुट्ठासैणं
छाणी कप्पंड दौली पप्पंड वैडी विस्सारणं नोंसणं ।
अकंदं विकेहं सारत्थयडणं तेरिच्छसंटावणं
अग्गीसेवणं रयेंणं परिखेंणं निस्सीहियां भंजणं ॥ [३२] 10

छोचोवाणं सत्यं चामरं मणोणेगत्तं मच्चमणं
सच्चित्तानमचौय चार्यमजिए दिट्ठिइ नो अंजलीं ।
साडेगुत्तैरसंगमंग मउंडं मोलिं सिरो सेदरं
हुंडा जिंदुइ गिड्ठियाहरमणं जोहारं भंडकियं ॥ [३३] 15

रिंकारं धरणं रणं विवरणं बालाण पल्लत्थियं
पाऊं पायपैसारणं पुंडपुडी पंके रजो मेहुणं ।
जुंया जेमणं गुज्जं विजं वणिजं सिजं जलुम्मज्जणं
एमाईमणवअकअधुलुओ वजे जिणिंदालए ॥ [३४]

§12) 'खेलुं' प्लेष्मा । 'केलि' क्रीडा हास्यादिके । 'कलि' कलहुं । 'कला' धनुर्वेदादिके । 20
'कुललयं' मुखशुद्धिनिमित्तु गंधूपकरणुं । 'तंबोल' प्रसिद्धु । 'उग्गालयं' तंबोलसंघंधितु मुखस्थितु जु छइ
अथयवु तेह नउं चर्वणु अथया लज्जुं । 'गाली' मकार चक्रापादिके । 'कंगुलिया' लघुनीति । 'सरीरधुवणं'
हस्तपादादि प्रक्षालणुं । 'केसे' केसलंखणुं । 'नहे' नखलंखणुं । 'लोहियं' रुधिरलंखणुं । 'भचोसं' भद्र
घाम्यु चणकादि तेह तणउं चर्वणुं । 'तय' घ्रणादि चर्मणुं । 'पित्तु' नीलउं मुखनिर्गतु जलुं । 'वंतु' वंछंति ।
'दसणे' दंत तीहं तणउं लज्जुं । 'विस्सामणं' सरीरनंदनादि । 'दामणं' गोशृपमादि घंधणुं । 'दंत' दंतमलुं । 25
'अच्छी' आंखिमलुं । 'नह' नखमलुं । 'गंड' गालमलुं । 'नासिय' नाकमलुं । 'सिरो' मस्त्रमलुं । 'सुत्त'
कर्णमलुं । 'च्छवि' चर्ममलुं । 'मंयु' भूतनिमहादि निमित्तु अथया राजादि कार्यालोचणुं । 'मीलयु'
हगडादि भंजननिमित्तु शुद्धलोकमेलणुं । 'लिक्खियं' गृहलेखकं करणुं । 'विभज्जणं' गोत्रियदं रइइं गृहसार
विभाग करणुं । 'मंडारं' धसुगोपणुं । 'दुट्ठासणं' पादोपरि पादचोदनादिहुं । 'छाणी' छगणकं सूचवणुं ।
कप्पंडं दालीं पप्पंडं वैडीं तीहं नउं विस्सारणु सूचवणु । 'नासणं' गर्भगृहादि प्रवेशणुं । 'अकंदं' शोकरोधणुं । 30
'विकेहं' राजादिकया करणुं । 'सारत्थयडणं' शरशरुघटणुं । 'तेरिच्छ संटावणं' गमादिस्थापणुं । 'अग्गीसे-
वणु' शीतादौ अभिवापणुं । 'पंधणं' धान्यपाककरणुं । 'परिक्खणं' नाणकररीशणुं । 'निस्सीहिया भंजणं'
निस्सीही नउं अकरणुं । 'छोचोवाणह' छतु आतपवारणु तेह नउं धारणुं । उपानह खासदां तीहं तणउं
परिपाणुं । 'सत्यं' स्वप्नादिपरणुं । 'चामरं' तीहं नउं वीजावणुं । 'मणोणेगत्तु' नानाविध पापविकल्पना

§11) 1 Bh. बाहण । §12) 1 B. omits. 2 Bh. omits क । 3 Bh. लणक । 4 Bh. omits
विरूपणा ।

- करन्तुं । 'अच्छंगंगं' सरीर चोरदण्डे । 'सञ्चित्तानमचाय' सञ्चित्त पुष्प तांबूलादिकं तीहं तणउं
 छत्तांमुं । 'चायमजिए' अजीव-सुवर्ण रत्न मुद्रादिक तीहं तणउं त्यागु मेहिवउं^१ । तीहं
 नद त्यागि अहो भिक्षाचरदं तणउ घन्मुं इसा अवर्णवाद् वसइवउं आशातना । 'दिट्ठीद
 नो अंजनी' जिनदर्शनानंतरु हस्त जोडी मस्तकि अकरणुं । 'साडेगुत्तरसंगभंग' एकलउद-
 ६ वस उत्तरासंग अकरणुं । 'मउडं' मुकुट परिधानुं । 'मौलि' वस्त्रि करी मस्तक वेष्टुं । 'सिरो
 सेरां' तुमुममय मस्तकसिहर करणुं । 'हुडा' होडपारतुं । 'जिंदुह' दडक रमणुं । 'गिड्डियाइ रमणं'
 गेडी रमिति । 'जोहारकरणं' देव जुहारिया इति भणनपूर्वक अपूर्वपुरुष प्रति प्रणमन्तुं । 'भंड-
 मियं' भंड चेट्रां । 'रेकारं' 'रे आवि' 'रे' 'जो' इत्यादि भाषणुं । 'धरणं' लभ्यघननिमित्त पर तणउं
 ओदरुणुं । 'रणं' शस्त्रि करी युद्धकरणुं । 'विवरणं' बालाणं मस्तक ओछावणुं । 'पहत्तियं' पालठीकरणुं ।
 10 'पाऊ' फाट्टचारुडी परिधानुं । 'पावपसारणं' पादप्रसारणुं । 'पुडपुडी' दीकडी प्रदापणुं । 'पंकं' कादम
 ल्हुं । 'रओ' धूलिसेपणुं । 'मेहुणं' मैद्युनसेवणुं । 'जूया' दूतकीडी । 'जेमनं' भोजनकरणुं । 'गुञ्जं'
 पुरपणित्त प्रकारणुं । 'विज्ज' वैशकरणुं । 'वणित्तं' व्यवसायकरणुं । 'सिज्जं' शय्याकरणुं । 'जलुम्मज्जणं'
 जलभूत पुंटिका मादि जळकेलिकरणुं शीलणुं । ए चउरसी आशातना । 'एमाईमणयज्जकज्जमुजुओ वज्जे
 जिग्गिदात्ये' एवमारिक आशातना अनपराकार्य धर्मकार्य तीहं नइ विपइ 'उजुओ' उचतु उचमवतु
 12 भन्नु जीणु जिग्गिदात्ये मादि देयगृह मादि 'वज्जे' वर्जित्तु परिहरित्तु ।

§1.3) पउरामी आशातना परिदार पूर्वक देवगृहि देव आगद चैत्यवंदना करेवी । पोसाल मादि
 पुनि स्थापनाचार्य आगइ चैत्यवंदना करेवी । गुरु आगइ चैत्यवंदना न करेवियइ । गुरु आगइ चैत्यवंदना
 करिया तथा धाधिकार तथा अभावउतइ इसउ अरुं चैत्यवंदनार्थं हंतउ पुनि जाणियइ । गुरु परंपराप्राय
 हंतउ पुनि जानियइ । स्थापनाचार्य मादि पंचपरमेष्टि स्थापना कीजइ । तिगि कारणि अहंत उरिसी तिरां
 2) चैत्यवंदना कीजइ । तथा वंदनक गुणवंतगुरुप्रतिरत्तिनिमित्तु भवसिधुकुलि गुरुपादमूलि उभयकालिहिं
 दीउइ । तथा सारांतिचार विमुद्धिनित्तु उभयकालि हिं साधु जिम श्रावक हीं प्रतिक्रमणु करेयउं ।
 तथा च भगिनं-

ममपेण मायण वि,अरस्म कायव्ययं हवइ जग्हा ।

अंतो अहोनिमिम्भ, तग्हा आरस्मयं नाम ॥

[३५]

- 2) सु चैत्यवंदनादिहु ईयांपयिकी पट्टिकमी पायइ सृजइ नही । जिहां साक्षात्कारि गुरु ह्यइ तिरां
 गुरु आगइ इरिजावही पट्टिकनियइ । जिहां गुरु न ह्यइ तिरां स्थापनाचार्य स्थापना करी तेद आगइ
 पट्टिकनियइ । पहाउ-

जिनरासनपत्रकारन देनमणि विनमदगणि श्मशाश्रमज्ञशिरोमणिः ।

गुरुविरहंमि य टरणा गुरुवण्णो व दंमगत्यं च ।

निगुविरहंमि य जिगविद टरणा वंदणं मरुं ॥

[३६]

रहो वि पत्तकगम्म वि जहा मेरा मंत देवयाण वा ।

तहा पेत्त पत्तकगम्म वि गुरुणो मेरा विगपदेउं ॥

[३७]

रहो वि पत्तकगम्म वि गुरुणो मेरा विगपदेउं ॥

रहो वि पत्तकगम्म वि गुरुणो मेरा विगपदेउं ॥

तरणादणं विगानादि ॥

हत्यागमयचनानुसारि करी अन्न कपर्दक काष्ठारिभर्यं वस्तु विषय स्वापनाचार्यं स्नानना कीजइ ।
 पंच परमेष्टि स्वापनानिमित्तु स्वापनाचार्यं ध्याइ मनयचन-काय रहइ मायधाननानिमित्तु त्रिदिह पंच
 परमेष्टि नमस्कार कहियइ । अथवा जिननामने जि के कार्य कीजइ ति मरं त्रिदिह नमस्कार मगनदूरक
 कीजइ । इणि कारणि पुगि त्रिदिह नमस्कार भगियइ ।

§14) सकलजिननामनमारु चतुर्दशपूर्वममुदाह त्रिदिवगिर श्रीवर्गीधार भी पंच परमेष्टि- ३
 नमस्कार । तिणि कारणि मांगलिकचनिमित्तु पहिलुं उह नउ अधुं मंक्षेविहिं त्रिगियइ ।

(१) नमो अरुहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उपयज्ञायानं ।
 नमो लोए सधसाहूणं । एसो पंच नमुकारो । मघपायप्पणामणो । मंगलाणं पि
 सधेसिं पढमं ह्यइ मंगलं ॥

'नमो' नमस्कार हुयउ, कीहं रहइ ? 'अरुहंताणं' अरुहं रहइ । किमा कारण एगी अरुहं ? देष 10
 देवेंद्र ह्यवंदन नमस्करण सत्कारपूजा अरुहं रहइ, अथवा सिद्धिगननु अरुहं तिनि कारणी अरुहं ।
 हदुफं-

अरुहंति बंदननमंगणाइं अरुहंति पूयमकारं ।
 सिद्धिगमणं च अरुहा अरुहंता तेण पुषंति ॥

[३९]

'नमो सिद्धाणं ।' सिद्धहं रहइ 'नमो' नमस्कार हुयउ । किमा कारण एगी सिद्ध कहियं ? अह 13
 प्रकार कम्मं प्रभूतकालयद्धु सित्तु कहियइ । तु कम्मं शुद्धिआनापि बनि जेइं व्हाणु दाघं ति सिद्ध निरुद्धि
 बसाइतउ कहियइ । तथा च भगिनं-

दीहकालरयं जं तु कम्मं से सियमट्टहा ।
 सिपं धंतं ति सिद्धस्सु गिद्धचमुवजायण ॥

[४०]

'नमो आयरियाणं ।' आचार्य रहइ नमो, नमस्कार हुयउ । किमा कारण एगी आचार्य कहियं ? 20
 आपगरइं पंचविधु आचारु पालइं अनेराइं रहइं वरिसारं इति आचार्य कहियं । एया-

नाणंमि दंसणंमि य चरुपंमि तत्रंमि तह य विरिपंमि ।
 आयरणं आपारो, इय एगो पंचहा भगिओ ॥
 पंचविहं आपारं, आयरमाणा तहा एयागिना ।
 आपारं दंसिता आयरिया तेण पुषंति ॥

[४१]

[४२] 22

'नमो उपयज्ञायानं ।' उपाध्याय रहइं नमो, नमस्कार हुयउ । उपाध्याय किमा कारण एगी
 कहियं ? जीहं बग्दइ धारी द्वाइरंणु दिहपरं पटिपरं ति उपाध्याय कहियं । एया-

भारसंगो विणस्सराओ मग्गाओ परिओ इह ।
 तं उवरसंति जग्हा उवज्जताया तेण पुषंति ॥

[४३]

'नमो लोए सधसाहूणं ।' नमो, नमस्कार हुयउ । कीहं रहइं ? 'लोए सधसाहूणं' लोड्डु 33
 अनुष्णलोक, तेह मादि ति के स्वविरुद्धिआरि भेदि' तिनि सारं मग्गु दुमि हारं ति ह्यान-रुहंन-आरिइहण
 मोक्षमार्ग साधनइतउ साधु कहियइ । अथवा सारं प्राणिकी विरुह ति सार ति सानु कहियं, कीहं रहइं ।
 तथा च भगिनं-

निष्वाणसाहए जोए, जम्हा साहंति साहुणो ।
समा य सच्चभूएसु, तम्हा ते सच्चसाहुणो ॥

[४४]

ईहं पांचहीं रहई नमस्कार कीजतउ किमउ हुयइ इत्याह—‘एसो पंच नमुष्कारो’—एउ पंच नमस्कार ‘सच्च पावप्पणासो’—सवही पापहं रहई प्रणासकु फेडणहारु । ‘मंगलाणं च सच्चैस्सि’—सवहीं मांगलिक्यं 5 माहि । ‘पढमं हवइ मंगलं’—पहिलउं मांगलिक्यु हुयइ ।

§15) एह माहि जिनशासनप्रवर्त्तनादिकहं कारणहं करी अहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु लक्षण पांच नमस्कार करणाहं । यथा—

मग्गे अविप्पणासो आयारे विणयया सहायत्ते ।
पंचन्ह नमुकारं करेमि एएहिं हेऊहिं ॥

[४५]

10 ज्ञान-दर्शन-चारित्ररूप मोक्षमार्गं, तेह तणउं प्रवर्त्तनु अहंतहं तणउ धम्मं । ‘अविप्पणासो’ विणा तणउ अभावु, सु सिद्धहं तणउ धम्मं । आचारु ज्ञानाचारादिकु सु आचार्यहं तणउ धम्मं । ‘विणयया विनयभावु, द्वादशांगपाठशिक्षा सु उपाध्याय तणउ धम्मं । ‘सहायत्ते’ धम्मं सांनिध्यकरणु, सु सा तणउ धम्मं । ए पांच हेतु कारण, तीहं करी पांचही अरहंतादिकहं रहई नमस्कार प्रणामु ‘करेमि’ करउं §16) नमस्कारपाठ विपइ इहलोक परलोक फलसूचक दृष्टांत लिखियइं ।

15 इहलोयंमि तिदंडी सादिव्वं माउलिंगवणमेव ।
परलोय चंडापिंगल हुंडियजकखो य दिहंता ॥

[४६]

त्रिदंडी परिव्राजकु तेह संवंधिउ शिवनामु श्रावकपुत्रु त्रिदंडी । ‘सादिव्वं’ श्रावकपुत्रिका रह देवता सांनिध्यसि सर्पस्थानि पुष्पमालाभधनु सादिव्वु । मातुलिंगवनु वीजउरा नउं आरामु तिहां । गयउ श्रावकु सु मातुलिंगवनि करी सूचविउ । ए त्रिन्दि इहलोकफल विपइ नमस्कार तणा दृष्टांत 20 चंडापिंगलु चौर हुंडिकु यल्लु ए वि परलोकफल विपइ नमस्कार तणा दृष्टांत । पुलिंदयुगल कथानकइत ईहं नउं विदेषु स्वरुपु जाणिवउं ।

§17) स्थापनाचार्य स्थापनानंतरु चैत्यवंदना कीजइ । स पुणि चैत्यवंदना त्रिविध हुयइ । ‘जघन मध्यमा उत्कृष्टा च ।’ तथा च भणितं—

नवकारेण जहन्ना दंडगयुइ जुगल मज्झिमा नेया ।
संपुन्ना उक्कोसा विहिणा खलु चंदणा तिविहा ॥

[४७]

हाथ जोडी मायइ चढावी शिरोवनाममातु । अथवा पंचांगप्रणामु जु वीतराग रहई कीजइ । जघन्य चैत्यवंदना । ‘दंडगयुइजुगल ति’—‘अरहंत चेइयाणं’ इत्यादि दंडकु कही काउस्सगु, खु ‘जयवीयराये’त्यादिस्वरुपु दंडगयुतिजुगलु कहियइ । एतलइ मध्यम चैत्यवंदना कहियइ । शकस्तय स्वय ‘जयवीयराये’त्यादि कहियइ स पुणि मध्यम चैत्यवंदना । ‘संपुन्ना उक्कोसिति’—पंच शकस्तय चैत्यवंद 30 अथवा द्विशकस्तय चैत्यवंदना उत्कृष्टा चैत्यवंदना कहियइ ।

चंदंतो सम्मं चेइयाइं सुहसाणपगरिसं लहइ ।
तत्तो य कम्मनासं, पणट्ठकम्मो य निष्वाणं ॥

[४८]

मिच्छासंज्ञमहणं सम्मदंसपविसोहीकरणं च ।

चियवदपाइ विहिणा पन्नचं वीयराएहि ॥

[४९]

वदपाअत्यमनाऊण जइवि तं कुणइ तहवि न वि सम्मं ।

सम्मं करणाभावे न होइ कम्माण निजरणं ॥

[५०]

सम्मदिद्धिस्साअसंसवज्झिणो सुत्तभणिपविहिणाओ ।

उवउत्तस्स य घणियं सम्मं करणं न सेसाणं ॥

[५१]

पयं पएणं परिसंठवंतो पयत्यमचत्यमणुस्सरंतो ।

संवेयनिव्वेयरसं फुसंतो चियवदणं इय विहिणा करिजा ॥

[५२]

§18) इहां दिनकृत्यवियरणु लिखीसिइ । इसइ अर्थि प्रतिष्ठा तिहिं हूंतइ 'परं इरियावहियाए अपडिअंताय न कप्पइ किंचि चेइयवदण-सञ्ज्ञायार्हं ।' इसा आगमबचनइतउ पहिलउं इरियावही पडिक्कमि-10 यइ । यया 'इच्छामी'त्यादि भणी, 'समासमणु' एकु देई 'इच्छाकारेण संदिसइ भगवम् इरियावहियं पडिक्कामि ।' पाछइ गुरि 'पडिक्कमइ' इसइ फहियइ हूंतइ, 'इत्यं' इसउं, भणी करी, 'इच्छामि पडिक्कमिउं' इत्यादि पदियइ ।

§19) तिणि कारणि पहिलउं इरियावही सूत्र तणउ अयुं लिखियइ ।

(२) इच्छामि पडिक्कमिउं १ । इरियावहीयाए २ । विराहणाए ३ ।

15

पहिली संपदा । ईर्यापयु भणियइ मार्गुं, तिहां ज हुयइ स ईर्यापयिकी विराधना जीवयाथा । अथवा ईर्योपयु साधु तणउ आचारु । तथा च भणितं-

ईर्यापयो ध्यानमौनादिकं साधुव्रतं ।

तिहां अतीचारकरुणरूप विराधना । तेइ हूंतउ पडिक्कमिवा निवसिवा 'इच्छामि' वांछउं । किसइ इंदव विराधना हुयइ ? इत्याह-

20

(३) गमनागमणे ४ ।

बीजी संपदा । गमनु अनइ आगमनु गमनागमनु तिणि हूंतइ । गमनागमनि किसी परि विराधना ? इत्याह-

(४) पाणक्कमणे ५ । वीयक्कमणे ६ । हरियक्कमणे ७ ।

एतलइ बीजी संपदा । प्राण भणियइ-वे इंद्रिय त्रे इंद्रिय चअरिंद्रिय जीव, तीहं नइ आक्रमणि 25 संघट्टि हूंतइ । तथा बीज नइ आक्रमणि हरिय नइ आक्रमणि इहं विहुं आलापकइ करी बीजहं रहइं हरियइ रहइं सजीवपणउं कहिउं ।

(५) ओसा उत्तिग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ८ ।

चउयी संपदा । 'ओसाउ' त्रेहु एइ नउं मट्टणु सुक्ख ही अप्काय रहइं रखायुं, 'उत्तिग' भूमि माहि मंढलाकार विवरकारक गईभाकार जीव, अथवा कीटिकानगरं । पनक पंचवर्णफूलि, 'दगमृत्तिका' 30 अब्यागरमूमि चीखिलु कहियइ अथवा दग्गु अपकाउ, मृत्तिका पृथिवीकाउ । मकैटसंतान कोलिका जालक । तउ पाछइ ओसादिकहं सवहीं तणइ संकमणि हूंतइ । किसउं पणउं कहियइ ।

(६) जे मे जीवा विराहिया ९ ।

एतलइ पांचमी संपदा ।

§24) अत्र प्रस्तावश्च त उ मिथ्यादुष्कृतपदसंख्या लिखित्यद ।
 देवा अदनउपसर्पं १९८, चउदस नेरइय १४, तिरिय अडयाला ४८ ।

तिन्निसयाइं तित्तर भेया पुण सव्व मणुयाणं ३०३ ॥ [५५]

परमाहम्मिय पनरस १५, तिन्नि य क्खिसिय इ, जंभिया १० य दस ।

लोगतिया य नवहा ९, दस भवणा १०, मोल वंतरिया १६ ॥ [५६]

चरथिर जोइसिया दस १०, वारस कप्पा १२, अणुत्तरा पंच ५ ।

नव भेविजा ९, एए अपजत्त-पज्जचओ दुविहा ॥ [५७]

इय सत्त वि नेरइया ७, विगला ३, एगिंदिया २१, जलयलया ।

खय-उर-भूय-परिसप्पा गमय संमुच्छ अडयाला ४८ ॥ [५८]

छप्पन्नतरदीवा ५६, अकम्मभू तीस ३०, इयर पन्नरग १५ ।

गन्भय दुहा वि मुच्छिय इगजुयमय १०१, ति जुय तिन्निसया ३०३ ॥ [५९]

अभिहयावच्चिय-लेसियपमुहेहिं एएहिं ते गुणिजंति ।

छप्पन्नतया तीसा मिच्छादुकडपया' हुंति ॥ [६०]

§25) देवजातिभेद १९८ । यथा 'परमाहम्मिय पनरसे' ति - परमाचार्यमिक देवहं तथा पनर

भेद, यथा - अवे १ अंबरीखी २, इयाम ३, शबल ४, रोद ५, उररोद ६, काल ७, महाकाल ८, 13

असिपत्र ९, धणु १०, कुंम ११, घालुक १२, वेतरणी १३, मरस्वर १४, महापोय १५ । तत्र जु

परमाचार्यमिकु देवु नारकहं रहइं निहणइ पाडइ बांधइ अंबतरुतलि ले मेल्लइ सु अंबु इसी परि कहियइ ।

जु निहवहं नारकहं रहइं रंढवरंढ करी अंबरीखु भाउ तिणि पचइ पचनायोग्य करइ सु अंबरीखी

कहियइ २ । जु रज्जुहसप्रहारादिकहं करी शातन-शातनादिक कर्म्म नारकहं रहइं करइ बर्णि करी इयामु

सु इयामु ३ । जु अंत्र-वशा-हृदय-कालेयकादिक अवयव नारकहं तथा शरीर हुंता ऊपाडइ बर्णि करी 20

शबलु कावरड तिणि कारणे सु शबलु कहियइ ४ । जु शक्ति-हुंतादिकहं नारकी पोयइ' सु रोदप्पानभा

करी रोद कहियइ ५ । जु तीही जि तणां आंग भांउइ' सु अतिरोत्त्रप्पानना करी उररोदु कहियइ ६ ।

जु कुंडी कुंमी माहि घाती नारकी पचइ बर्णि करी कालउ सु कालु कहियइ ७ । जु नारकी तणा नान्दा

मांसवरंढ करी र्साइ बर्णि करी महाकालउ सु महाकालु कहियइ ८ । असि तवहु तुद तगइ आकारि

पत्र तीहं करी सहिखु यनु जु विकुर्णी करी तेइ हेठइ नारकी घाती पन्नशातादि वसि पाडी करी नारकी 23

वरंढं जु करइ सु असिपत्रु कहियइ ९ । धणुइ हुंता मेल्लियां छरं जि अर्द्धचंद्रादिक बाग तीहं करी

नारकी तणां कर्णोदिकहं अवयवहं रहइं जु च्छेदन-भेदनादिक भाव करइ सु धणु कहियइ १० । जु

हुंतादिकहं माहि घाती नारकी रहइं पचइ सु उंउु कहियइ ११ । जु कदंब हुनुमाफार अपया यशाफार

वैदिय घालुकात्त विकुर्णी करी चणकहं जिम तडकडतां हुंता नारकी रहइं तेइ माहि भूउइ सु घालुइ

कहियइ १२ । जिसतं गालिउं त्रिपउं' तिसी पिरु, जिसतं गालिउं प्रायउं त्रिपउं लोरी तीहं तनी नरी 20

विकुर्णी करी जु तेइ माहि नारकी कलकलता हुंता बरुई परि तारइ तिन्नि हाणि सु वेतरणी कहियइ १३ ।

रयबा बरुयउं तरणु जेइ तगउं स वेतरणी नदी तेइ रहइं जु करइ सु वेतरणी १३ । जु वररंठकाइउं

तलनीवृषु विकुर्णी करी तेइ ऊपरि नारकी सूयारी करी ररस्वर आणदि करता बाकपंड सु वररंठ

§24) 1 B. Bh. सिचाउर-न §25) 1 B. ले-इ । 2 B. repeats अंउ । 3 B. has originally the same reading or दिन्नं, but corrected as वररंठ ।

कहियइ १४ । जु भयभीत नारक पलायमान हुंता पशु जिम वाडइ घाती महाघोषु करतउ हुंतउ निहंघर सु महाघोषु कहियइ । इति पनरह परमाधार्मिक भेद यगलोकगाल तथा जिसा पुत्र हुयइ तिसा छइ एकु पल्योपसु आयूपउं ईहं रहइ छइ । समवायांगवृत्ति हुंतउ एउ अर्थु लिखियउ ।

§ 26) 'तिन्नि किञ्चिसिया' किल्विपिक नीचप्राय देव ति पुणि तीर्थकर गगधरहं त्रिहुं धानकहं १ भणिया । यथा-

तिन्नि पलियातिसारा तेरससारा य किञ्चिसा भणिया ।

सोहन्मीसाण सणकुमार-लंतस्म दिट्ठाओ ॥

[६१]

तत्र सौधर्मेभान देवलोकहं हेठइ जि किल्विपिक ति त्रिपल्योपमायुष्क, जि सनलुमार हेठइ ति त्रिसागरोपमायुष्क, जि लंतक हेठइ ति तेरह सागरोपमायुष्क, इति त्रिविध किल्विपिकदेव ।

10 § 27) जि सौधर्मेद्रादेशि जिनजन्मादि महोत्सवसमइ पुष्पवृष्टि सुवर्ण-रत्नादिवृष्टि महिमा करइ ति धनद-सेवक-जुंभके-देवभेद दश ।

§ 28) दीक्षासमइ जिन रहइ जि संबोधइ ति लोकांतिक देव, ति पुणि नवविध । यथा-

सारस्वय १ माइचा २ विन्ही ३ वरुणा ४ य अग्गितोया ५ य ।

तुसिया ६ अब्वावाहा ७ अग्गिवा ८ चेव रिहा य ९ ॥

[६२]

15 सारस्वत १, आदित्य २, वृष्णि ३, वरुण ४, अप्रितोय ५, सुपित ६, अन्यावाध ७, आप्रेय ८, रिहा ९, इति नवधा लोकांतिक देव ।

पठमजुपलंमि सत्तउ सयाणि विपंमि चउदस सहस्सा ।

तइए सत्त सहस्सा नव चेव सयाणि सेसेसु ॥

[६३]

20 सारस्वत-आदित्य रूपि प्रथमयुगलि सातसइ लोकांतिक देव विमान छइ । वृष्णि-वरुणरूपि बीजइ युगलि चउदससहस्स विमान छइ । त्रीजइ अप्रितोय-सुपितरूपि युगलि सातसहस्स विमान छइ । अन्यावाध आप्रेय-रिष्टरूपइ सेसइ निकायइ नवसइ छइ ।

§ 29) तथा 'दसभवणे' ति - भवनपति दसे भेदे यथा-

असुरा नागा विज्जु सुवन्न अग्गी य वाय धणिया य ।

उदही दीव दिसा वि य दस मेया भवणवासीणं ॥

[६४]

25 असुरकुमार १, नागकुमार २, विजुल्लुमार ३, सुवर्णकुमार ४, अप्रिकुमार ५, वातकुमार ६, सनिठकुमार ७, उदधिकुमार ८, द्वीपकुमार ९, विकुमार १०, इति दसविध भवनपति नामानि ।

§ 30) 'सोलवंतरिये' ति - सोल व्यंतरभेद यथा-

पिसाय १ भूया २ जक्खा ३ य रक्खसा ४ किंनरा ५ य किंपुरिसा ६ ।

महोरगा ७ य गंधव्या ८ अट्टविहा वाणमंतरिया ॥

[६५]

30 अणपन्निय १ पणपन्निय २ इसिवाइय ३ भूयवाइए ४ चेव ।

कंदिय ५ तह महकंदिय ६ कोदंडी ७ चेव पणगे य ८ ॥

[६६]

इति सोल व्यंतर भेद ।

§ 24) 4 Bh. लिखित । § 26) 1 Bh. धानक । § 27) 1 Bh. has a later addition लिखित before ३३८ । § 30) 1 B. omits the sentence.

§ 31) 'चरथिर जोइसिया दसे'ति । चंद्र-सूर्य-ग्रह-नक्षत्र-नारकलक्षण पांच जोइसी देव तणा भेद । मनुष्यलोक माहि चर मनुष्यलोक थाहिरि थिर पांच भेद । सवइ मिलिया दस जोइसी देव तणा भेद ।

§ 32) 'वारस कपे' ति-वारह देवलोक तणा वारह देवभेद । 'अणुचरा पंचे' ति विजय, बेजयंत, जयंत, अपराजित, सर्वार्यसिद्धलक्षण पांच अनुचर विमान देव । 'नव गेविजे' ति-प्रैवेयक नव, यथा-हिट्टिम-हिट्टिम पहिला प्रैवेयक रहइं सुदर्शनु नामु १ । हिट्टिम-मज्झिम बीजा प्रैवेयक रहइं सुप्रबुद्ध २ नामु २ । हिट्टिम-उवरिम त्रीजा प्रैवेयक रहइं मंगोरु नामु ३ । मज्झिम-हिट्टिम चउथा प्रैवेयक रहइं सर्ववोभेदु नामु ४ । मज्झिम-मज्झिम पांचमा प्रैवेयक रहइं सुवितालु नामु ५ । मज्झिम-उवरिम छट्ठा प्रैवेयक रहइं सुमनसु नामु ६ । उवरिम-हिट्टिम सातमा प्रैवेयक रहइं सौमनसु नामु ७ । उवरिम-मज्झिम आठमा प्रैवेयक रहइं मीतिकरु नामु ८ । उवरिम-उवरिम नवमा प्रैवेयक रहइं आदित्यु नामु ९ । तिहां जि देव ति नव प्रैवेयक देव । घुर लगी सवइ मिलिया नव नवति देव तणा भेद हुयइं । 10

§ 33) तथा जीवइं रहइं छ पर्यांति हुयइं यथा - आहारपज्जती १, सरीरपज्जती २, इवियपज्जती ३, आपणपणपज्जती ४, भासापज्जती ५, मणपज्जती ६ । तत्र आहारमहणशक्ति आहारपर्यांति १ । सरीररूपि करी आहारपरिणामन शक्ति सरीरपर्यांति २ । इंद्रियरूपि सरीरपरिणामनशक्ति इंद्रियपर्यांति ३ । आन-पानवर्गणा पुद्गलमहण आनपान भणियइं । ऊसास नीसास तींइं नइं रूपि आनपानवर्गणा पुद्गलपरिणामन व्युत्सजन लक्षण आनपानपर्यांति ४ । भापावर्गणा पुद्गलमहण भापारूपि परिणामन व्युत्सजनलक्षण ५ । भापापर्यांति ५ । मनोवर्गणा पुद्गलमहण मनोरूपि परिणामन व्युत्सजनलक्षण मनःपर्यांति ६ । तींइं माह चचारि पर्यांति पहिली एकेंद्रियजीवइं रहइं हुयइं । विकलेंद्रिय अनइ असन्नी रहइं पांच पर्यांति हुयइं । सन्नी रहइं छ पर्यांति हुयइं । तथा च भणित-

आहारसरीरिंद्रिय पज्जती आपणपण भास मणे ।

चचारि पंच छापि य एगिंदिय विगलसर्णीणं ॥

[६७] 20

इणि कारणि जि जीव पर्यांति पूरी करइं ति पर्यांत कहियइं । जि पर्यांति पूरी करइं नहीं अथवा करिसिइं ति अपर्यांत कहियइं । इणि कारणि भणितं ति पर्यांतापर्यांतभेदद्वय करी गणिया हुंता अहनऊय सउ अट्ठाणऊ सउ देवभेद हुयइं ।

§ 34) चऊद नेरइय सात नरक । यथा - चर्मा, वंसा, शोला, अंजना, रिष्टा, मषा, माषवती नामक तींइं तणा सातइ नारकी पर्यांतापर्यांत भेदद्वय करी चऊद नारकीभेद । 25

§ 35) 'तिरिय अट्टेतालीस भेद' । तिर्यंच अट्टेतालीस भेद । यथा विकलेंद्रिय - चैंद्रिय १ त्रैंद्रिय २ चउरेंद्रिय ३ भेदइतउ त्रिविध । पृथिवीकाय ४, अष्काउ ५, तेउकाउ ६, वाउकाउ ७, अंततवन-सतिहाउ ८, सूक्ष्मचावर भेदद्वय करी १३, प्रलेक वनस्पतिकोउ १४, जलचर १५, थलचर १६, सचर १७, उरपरिसर १८, मुजपरिसर १९, गर्भज-संमूर्च्छिम भेदद्वय करी जलचरादिक पांचइ दसभेद हुयइं इति चउवीसभेद २४, ति सवइ पर्यांतापर्यांत भेदद्वय करी तिर्यंच अट्टेतालीस भेद ४८ । 30

§ 36) 'तिजिसया य तितउत्तरमेया पुण सव्वमणुयाणमि'ति मनुष्यभेद ३०३ । यथा - अंतरद्वीप-मनुष्य छप्पन्न भेद, यथा-सुहृदिमवंत पवंत नी दाठ पूर्वसमुद्र माहि अनइ पश्चिमसमुद्र माहि फोणे विसारी छइं । तिहां सात सात अंतरद्वीप छइं । एयंकारइ अट्टावीस अंतरद्वीप सुहृदिमवंति छइं । इसी

हिं जि परि अट्टागीम अंतरदीर गिरती पर्वति पुणि छईं । ति सवइ मिलिया हूता ५६ अंतरदीर
द्वयइं । तिहां युगलिया मनुष्यभेद ५६ हूया । अकर्मभूमि त्रीस, यथा-जंबूद्वीप माहि छ, घातुकी संड
माहि वारह, पुष्करवर्द्धिपाई माहि वारह, एवंकारइ त्रीस अकर्मभूमि । तिहां युगलियां मनुष्यभेद
प्रीम । कर्मभूमि १५, यथा-पांच भरत, पांच ऐरवत, पांच महाविदेह तिहां पनर मनुष्यभेद । ५६, ३०,
१५ गरइ मिलिया १०१ नि पर्याप्तापर्याप्त संसृष्टिभम भेदत्रय करी गणिया हूता त्रिन्दिहसईं त्रिडोत्तर
मनुष्यभेद ह्वयइं ।

§ 37) तउ पाछइ अट्टागऊमउ देव भेद । चऊद नारकी भेद, अट्टेतालीस तिर्यच भेद,
त्रिन्दिहसईं त्रिडोत्तर मनुष्यभेद । सवइ मिलिया पांचसईं त्रिसट्ट ति सगलाई जीवभेद । संसार माहि
फिरतइ जीवि अभिघातादिकइं करी विराधिया संभवइं । इणि कारणि भणितं अभिघातादिकइं दसईं पदईं
१० करी गुणिता हूया त्रिडोत्तर मिध्यादुष्कृतपद ह्वयइं ।

§ 38) इमी परि जु मिध्या दुष्कृतपद सूचवतउ इरियावही पडिकमइ सु तेतीही जि वार
पेवतमानु ऊपादइ । यथा-

गण्डि एकि ठपु सुखउ एहु वरसाइ बाहिरि^१ बालकइं माहि याहलइ प्रेपणउं पेट हेठइ दे
अनइ तरिता एगउ । महारना धारिया, चेया तरता देसी करी^२ विहइं^३ । तेतलईं गुर आविया^४ । गुरे^५
१० बहिइं-‘महारनाउ’^६ पेटउ लहुइउ भोउउ भागउउ म चडवडावउ^७ तेतीवार चेलउ परहंसिउ । गुरे
भनिइं-‘म वणउ ! उगउ रदि को काइं नही कहइ’ । तउ चेलउ चणेउउं परहंसिउ । गलसएण भरिया^८
एगउ । गुरे मायइ हाय दे^९ करी आरगवा आगइ कीभउ । यसनि आविया । गुरे इरियावही धिर
दिसा^{१०} आररि धाररि अयुं चीनयनां हूता पडिकमी । गमणागमणउं आलोइउं^{११} । तउ पाछइ बरिप
पुनि आओइउं । पेटा आगइ गुरे कहिउं-‘वच्छ ! इरियावही पडिकमतां छपेससईं-त्रीसां मिध्या
२. दुपहन पद जली करी मवही जीर^{१२} रहईं मिच्छामि दुकुहु दीजइ ।’ तउ पाछइ चेलउ गुरयचन तगर
अनुगारि इरिवारही नउ अयुं चीनयनउ मारही जीवइं रहईं मिच्छामि दुकुहु देयतउ इरियावही पडिक-
मइ दुष्कृतपदतिरोदवउ केरज्जानु ऊपाही^{१३} अनेक भविठ लोठ प्रतियोधी करी सिद्धि गयउ ।

§ 39) तथा काटिहाचार्यं पुनि इरियावही मात्र प्रतिक्रमणि मिध्यादुष्कृत प्रदानि मुद्धा इनां
साभविइइ । तथा इहेगमाळा माहि पुनि भणिउं-

१३ पटिवजिण दोम नियए मम्मं च पायवडियाए ।
तो हिए निगाएरए उण्णं केणं नाणं ॥

[६८]

तथा अनेक वारंति भणिउं-

नियदोणे मरहंती गुरुजीवाए मिरिया पगमंती ।
भवइं मांती निगाएरं केणं पया ॥

[६९]

३. § 40) इमी परि अट्टेदे पडिकमी करी मुद्धविउ ह्वयइं हूतउ पुनरणि काउमण पापटिणि
करी मुद्धिहेरविदिउ इनां पदइ-

१. 1. L. वरसाइ; 2. L. वरसाइ; 3. L. वरसाइ; P. वरसाइ; 4. L. आविया; 5. B. वरसाइ;
6. L. वरसाइ; 7. L. वरसाइ; P. वरसाइ; 8. B. वरसाइ; 9. P. वरसाइ; 10. L.
वरसाइ; P. वरसाइ; 11. L. वरसाइ; 12. B. L. P. वरसाइ; 13. L. वरसाइ;

(९) तस्सुत्तरीकरणेणं २६, पायच्छित्तकरणेणं २७, विसोहीकरणेणं २८, विसह्रीकरणेणं २९, पावाणं कम्ममाणं ३०, निग्घायणट्ठाए ३१, ठामि काउसग्गं ३२। एतल्लह् आठमी संपदा। तेह् आलोचिन प्रतिक्रमित अविचार रत्तं उचारीरत्तानि हेतु काउमग्गु 'ठामि' करत्तं इसी परि क्रियासंबंधु करेवड।

§41) अनुत्तरु अप्रधानु, उत्तरु प्रधानु, पाळइ अनुत्तरु हंतउ उत्तरु बीइइ, उचारीरत्तु ३ ऋदियइ। पुनएपि संस्कार वमइत्तउ सुद्धतरकरणु जेत अनिचार तयत्तं पूर्विहि जायेचनारिक्खु कीधरं, तीही नि रत्तइं वली सुद्धिविसेस करणनिमित्तु काउमग्गकरणु। सु पुनि उचारीरत्तु पायच्छित्तकरणि करी हुयइ इत्याद- 'पायच्छित्तकरणेणं' प्राइहि वाहुदि करी चित्तु जीयु जग्गना मनु मोघइ इति कारनि प्रापञ्चियु; अथवा पापु ऐइइ इणि कारनि पायच्छित्तु। तेह् वरणि हेतु करी सु पुनि प्राचञ्चियु। विमुद्धि करी हुयइ इत्याद- 'विसोहीकरणेणं' विमोघनु विमुद्धि, अविचारमिर्त्तनि करी आत्ता रत्तं 10 निर्मलत्वा। तिणि हेतु करी तेऊ विमोघिकरणु विसह्वनाकरणि हंतइ हुयइ इति कारनि भग्गइ 'विमली-करणेणं' मायाशल्य, निदानशल्य, मिध्यादर्शनशल्यरूप त्रिन्दि इत्थं तीहं करी रट्ठि आत्ता त्वत्तं करणु विसह्वी करणु तिणि हेतु करी। कित्तइ कारनि? 'पावाणं कम्ममाणं निग्घायणट्ठाए' मर रत्तं हेतु एहं पापकम्मं, तीहं रत्तइं निग्घातननिमित्तु समुच्छेदनिमित्तु काउमग्गु पायच्छापापरिहाक 'ठामि' करत्तं।

* (१०) अन्नत्थ जससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डएणं, 10 याय-निसग्गोणं, भमलीए पित्तमुच्छ्राए, सुहुमेहि अंग-संचालेहि, सुहुमेहि रेतल-संचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठि-संचालेहि, एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अदिराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो। जाय अरिहंतानां भगवंतानां नमुयारिणं न पारिणि, ताय काए ढाणेणं मोणेणं द्वाणेणं अप्पाणं पोसरामि।

§42) कित्तं सर्वथा? नेत्याह- 'अन्नत्थससिएणं इथाद' उमग्गिउ पागग्गनु, नीग्गमिउ गग-ः 10 मोघनु, कांसिउ खांसकरणु, क्षुत्तु' एीइकरणु, नृभिनु पणाईकरणु, उट्ठारिनु उड्डकारणनु, पायनिग्गनु अघोनावनिस्सरणु। ईहं हंतइ अनेरइ आपादि करेवइ पाउमग्गु। उमात्तारिक अन्वचत्तरिइत्ता करी मोहल्य संवातिम जीवत्ता कारणि कांसितारिक मुग्गि सुग्गरत्तित्त एहददत्तानि उदत्ता करी वरेवा। अत्र 'आकारभमलिए पित्तमुच्छ्राए इथाद' अत्तंभावित्तु देवभग्गु भमति। वित्तमूर्त्तं विण धोमत्तउ थोदी मूच्छां तीहं नइ संभवि हंतइ वट्ठित्त्तं। सहया पानि हंतइ मंडम जत्तइ मर्पर विट्ठं रत्तं 20 विरापत्ता हुयइ। 'सुहुमेहि इथाद'। गृह्म अंगसंचार सेमसंचारिक, गृह्मनोपेत्तंकाउ मूच्छित्तकारिक, गृह्मइत्तिसंचार निमेपारिक। ईहं तउ अनेरइ प्पानि करेवड काउमग्गु। ए पाउ मोहत्ता। 'एवमाइएहि' ति। एवमाइएहि आगारेहं अत्रात्तइं करी। धारिन्दइ इत्त अग्नि बीउ उचोउ ग्गइ पूग्गइ हंतइ, मायणमहमि पावपुंठी हंतइ, वंचिद्विज्जीवि आगइ उचरत्तइ हंतइ, नेइ रट्ठित्तं, आत्ता ग्गमि हंतइ, पोत्तंभनि आपग्गता रत्तं, अथवा अनेरा रत्तं मर्त्तंइ हुयइ हुयइ, वंचरीणः 30 उमात्त तत्तइ अपूर्त्तहि, नमरत्तइ तत्तइ वमत्तहि, पाउमग्गु पात्ताई भंनु न हुयइ। इत्त भंनु अनिचड। लभग्गु सर्वथा अवत्तिनु। अवितापित्तु, थोयोइ' अविचत्तु मे' कात्तइ वत्तमग्गु 'हुज्ज' इत्त।

§41) * Ms. have omitted this portion of the text here, but they have cited it in § 75. §42) 1 Bb omits. 2 Bb. omits. 3 Bb. adds. 4 B. omits. retaining only- 5 B. has (probably) 6 B. has 7 B. has 8 B. has 9 B. has 10 B. has 11 B. has 12 B. has 13 B. has 14 B. has 15 B. has 16 B. has 17 B. has 18 B. has 19 B. has 20 B. has 21 B. has 22 B. has 23 B. has 24 B. has 25 B. has 26 B. has 27 B. has 28 B. has 29 B. has 30 B. has 31 B. has 32 B. has 33 B. has 34 B. has 35 B. has 36 B. has 37 B. has 38 B. has 39 B. has 40 B. has 41 B. has 42 B. has 43 B. has 44 B. has 45 B. has 46 B. has 47 B. has 48 B. has 49 B. has 50 B. has 51 B. has 52 B. has 53 B. has 54 B. has 55 B. has 56 B. has 57 B. has 58 B. has 59 B. has 60 B. has 61 B. has 62 B. has 63 B. has 64 B. has 65 B. has 66 B. has 67 B. has 68 B. has 69 B. has 70 B. has 71 B. has 72 B. has 73 B. has 74 B. has 75 B. has 76 B. has 77 B. has 78 B. has 79 B. has 80 B. has 81 B. has 82 B. has 83 B. has 84 B. has 85 B. has 86 B. has 87 B. has 88 B. has 89 B. has 90 B. has 91 B. has 92 B. has 93 B. has 94 B. has 95 B. has 96 B. has 97 B. has 98 B. has 99 B. has 100 B. has 101 B. has 102 B. has 103 B. has 104 B. has 105 B. has 106 B. has 107 B. has 108 B. has 109 B. has 110 B. has 111 B. has 112 B. has 113 B. has 114 B. has 115 B. has 116 B. has 117 B. has 118 B. has 119 B. has 120 B. has 121 B. has 122 B. has 123 B. has 124 B. has 125 B. has 126 B. has 127 B. has 128 B. has 129 B. has 130 B. has 131 B. has 132 B. has 133 B. has 134 B. has 135 B. has 136 B. has 137 B. has 138 B. has 139 B. has 140 B. has 141 B. has 142 B. has 143 B. has 144 B. has 145 B. has 146 B. has 147 B. has 148 B. has 149 B. has 150 B. has 151 B. has 152 B. has 153 B. has 154 B. has 155 B. has 156 B. has 157 B. has 158 B. has 159 B. has 160 B. has 161 B. has 162 B. has 163 B. has 164 B. has 165 B. has 166 B. has 167 B. has 168 B. has 169 B. has 170 B. has 171 B. has 172 B. has 173 B. has 174 B. has 175 B. has 176 B. has 177 B. has 178 B. has 179 B. has 180 B. has 181 B. has 182 B. has 183 B. has 184 B. has 185 B. has 186 B. has 187 B. has 188 B. has 189 B. has 190 B. has 191 B. has 192 B. has 193 B. has 194 B. has 195 B. has 196 B. has 197 B. has 198 B. has 199 B. has 200 B. has 201 B. has 202 B. has 203 B. has 204 B. has 205 B. has 206 B. has 207 B. has 208 B. has 209 B. has 210 B. has 211 B. has 212 B. has 213 B. has 214 B. has 215 B. has 216 B. has 217 B. has 218 B. has 219 B. has 220 B. has 221 B. has 222 B. has 223 B. has 224 B. has 225 B. has 226 B. has 227 B. has 228 B. has 229 B. has 230 B. has 231 B. has 232 B. has 233 B. has 234 B. has 235 B. has 236 B. has 237 B. has 238 B. has 239 B. has 240 B. has 241 B. has 242 B. has 243 B. has 244 B. has 245 B. has 246 B. has 247 B. has 248 B. has 249 B. has 250 B. has 251 B. has 252 B. has 253 B. has 254 B. has 255 B. has 256 B. has 257 B. has 258 B. has 259 B. has 260 B. has 261 B. has 262 B. has 263 B. has 264 B. has 265 B. has 266 B. has 267 B. has 268 B. has 269 B. has 270 B. has 271 B. has 272 B. has 273 B. has 274 B. has 275 B. has 276 B. has 277 B. has 278 B. has 279 B. has 280 B. has 281 B. has 282 B. has 283 B. has 284 B. has 285 B. has 286 B. has 287 B. has 288 B. has 289 B. has 290 B. has 291 B. has 292 B. has 293 B. has 294 B. has 295 B. has 296 B. has 297 B. has 298 B. has 299 B. has 300 B. has 301 B. has 302 B. has 303 B. has 304 B. has 305 B. has 306 B. has 307 B. has 308 B. has 309 B. has 310 B. has 311 B. has 312 B. has 313 B. has 314 B. has 315 B. has 316 B. has 317 B. has 318 B. has 319 B. has 320 B. has 321 B. has 322 B. has 323 B. has 324 B. has 325 B. has 326 B. has 327 B. has 328 B. has 329 B. has 330 B. has 331 B. has 332 B. has 333 B. has 334 B. has 335 B. has 336 B. has 337 B. has 338 B. has 339 B. has 340 B. has 341 B. has 342 B. has 343 B. has 344 B. has 345 B. has 346 B. has 347 B. has 348 B. has 349 B. has 350 B. has 351 B. has 352 B. has 353 B. has 354 B. has 355 B. has 356 B. has 357 B. has 358 B. has 359 B. has 360 B. has 361 B. has 362 B. has 363 B. has 364 B. has 365 B. has 366 B. has 367 B. has 368 B. has 369 B. has 370 B. has 371 B. has 372 B. has 373 B. has 374 B. has 375 B. has 376 B. has 377 B. has 378 B. has 379 B. has 380 B. has 381 B. has 382 B. has 383 B. has 384 B. has 385 B. has 386 B. has 387 B. has 388 B. has 389 B. has 390 B. has 391 B. has 392 B. has 393 B. has 394 B. has 395 B. has 396 B. has 397 B. has 398 B. has 399 B. has 400 B. has 401 B. has 402 B. has 403 B. has 404 B. has 405 B. has 406 B. has 407 B. has 408 B. has 409 B. has 410 B. has 411 B. has 412 B. has 413 B. has 414 B. has 415 B. has 416 B. has 417 B. has 418 B. has 419 B. has 420 B. has 421 B. has 422 B. has 423 B. has 424 B. has 425 B. has 426 B. has 427 B. has 428 B. has 429 B. has 430 B. has 431 B. has 432 B. has 433 B. has 434 B. has 435 B. has 436 B. has 437 B. has 438 B. has 439 B. has 440 B. has 441 B. has 442 B. has 443 B. has 444 B. has 445 B. has 446 B. has 447 B. has 448 B. has 449 B. has 450 B. has 451 B. has 452 B. has 453 B. has 454 B. has 455 B. has 456 B. has 457 B. has 458 B. has 459 B. has 460 B. has 461 B. has 462 B. has 463 B. has 464 B. has 465 B. has 466 B. has 467 B. has 468 B. has 469 B. has 470 B. has 471 B. has 472 B. has 473 B. has 474 B. has 475 B. has 476 B. has 477 B. has 478 B. has 479 B. has 480 B. has 481 B. has 482 B. has 483 B. has 484 B. has 485 B. has 486 B. has 487 B. has 488 B. has 489 B. has 490 B. has 491 B. has 492 B. has 493 B. has 494 B. has 495 B. has 496 B. has 497 B. has 498 B. has 499 B. has 500 B. has 501 B. has 502 B. has 503 B. has 504 B. has 505 B. has 506 B. has 507 B. has 508 B. has 509 B. has 510 B. has 511 B. has 512 B. has 513 B. has 514 B. has 515 B. has 516 B. has 517 B. has 518 B. has 519 B. has 520 B. has 521 B. has 522 B. has 523 B. has 524 B. has 525 B. has 526 B. has 527 B. has 528 B. has 529 B. has 530 B. has 531 B. has 532 B. has 533 B. has 534 B. has 535 B. has 536 B. has 537 B. has 538 B. has 539 B. has 540 B. has 541 B. has 542 B. has 543 B. has 544 B. has 545 B. has 546 B. has 547 B. has 548 B. has 549 B. has 550 B. has 551 B. has 552 B. has 553 B. has 554 B. has 555 B. has 556 B. has 557 B. has 558 B. has 559 B. has 560 B. has 561 B. has 562 B. has 563 B. has 564 B. has 565 B. has 566 B. has 567 B. has 568 B. has 569 B. has 570 B. has 571 B. has 572 B. has 573 B. has 574 B. has 575 B. has 576 B. has 577 B. has 578 B. has 579 B. has 580 B. has 581 B. has 582 B. has 583 B. has 584 B. has 585 B. has 586 B. has 587 B. has 588 B. has 589 B. has 590 B. has 591 B. has 592 B. has 593 B. has 594 B. has 595 B. has 596 B. has 597 B. has 598 B. has 599 B. has 600 B. has 601 B. has 602 B. has 603 B. has 604 B. has 605 B. has 606 B. has 607 B. has 608 B. has 609 B. has 610 B. has 611 B. has 612 B. has 613 B. has 614 B. has 615 B. has 616 B. has 617 B. has 618 B. has 619 B. has 620 B. has 621 B. has 622 B. has 623 B. has 624 B. has 625 B. has 626 B. has 627 B. has 628 B. has 629 B. has 630 B. has 631 B. has 632 B. has 633 B. has 634 B. has 635 B. has 636 B. has 637 B. has 638 B. has 639 B. has 640 B. has 641 B. has 642 B. has 643 B. has 644 B. has 645 B. has 646 B. has 647 B. has 648 B. has 649 B. has 650 B. has 651 B. has 652 B. has 653 B. has 654 B. has 655 B. has 656 B. has 657 B. has 658 B. has 659 B. has 660 B. has 661 B. has 662 B. has 663 B. has 664 B. has 665 B. has 666 B. has 667 B. has 668 B. has 669 B. has 670 B. has 671 B. has 672 B. has 673 B. has 674 B. has 675 B. has 676 B. has 677 B. has 678 B. has 679 B. has 680 B. has 681 B. has 682 B. has 683 B. has 684 B. has 685 B. has 686 B. has 687 B. has 688 B. has 689 B. has 690 B. has 691 B. has 692 B. has 693 B. has 694 B. has 695 B. has 696 B. has 697 B. has 698 B. has 699 B. has 700 B. has 701 B. has 702 B. has 703 B. has 704 B. has 705 B. has 706 B. has 707 B. has 708 B. has 709 B. has 710 B. has 711 B. has 712 B. has 713 B. has 714 B. has 715 B. has 716 B. has 717 B. has 718 B. has 719 B. has 720 B. has 721 B. has 722 B. has 723 B. has 724 B. has 725 B. has 726 B. has 727 B. has 728 B. has 729 B. has 730 B. has 731 B. has 732 B. has 733 B. has 734 B. has 735 B. has 736 B. has 737 B. has 738 B. has 739 B. has 740 B. has 741 B. has 742 B. has 743 B. has 744 B. has 745 B. has 746 B. has 747 B. has 748 B. has 749 B. has 750 B. has 751 B. has 752 B. has 753 B. has 754 B. has 755 B. has 756 B. has 757 B. has 758 B. has 759 B. has 760 B. has 761 B. has 762 B. has 763 B. has 764 B. has 765 B. has 766 B. has 767 B. has 768 B. has 769 B. has 770 B. has 771 B. has 772 B. has 773 B. has 774 B. has 775 B. has 776 B. has 777 B. has 778 B. has 779 B. has 780 B. has 781 B. has 782 B. has 783 B. has 784 B. has 785 B. has 786 B. has 787 B. has 788 B. has 789 B. has 790 B. has 791 B. has 792 B. has 793 B. has 794 B. has 795 B. has 796 B. has 797 B. has 798 B. has 799 B. has 800 B. has 801 B. has 802 B. has 803 B. has 804 B. has 805 B. has 806 B. has 807 B. has 808 B. has 809 B. has 810 B. has 811 B. has 812 B. has 813 B. has 814 B. has 815 B. has 816 B. has 817 B. has 818 B. has 819 B. has 820 B. has 821 B. has 822 B. has 823 B. has 824 B. has 825 B. has 826 B. has 827 B. has 828 B. has 829 B. has 830 B. has 831 B. has 832 B. has 833 B. has 834 B. has 835 B. has 836 B. has 837 B. has 838 B. has 839 B. has 840 B. has 841 B. has 842 B. has 843 B. has 844 B. has 845 B. has 846 B. has 847 B. has 848 B. has 849 B. has 850 B. has 851 B. has 852 B. has 853 B. has 854 B. has 855 B. has 856 B. has 857 B. has 858 B. has 859 B. has 860 B. has 861 B. has 862 B. has 863 B. has 864 B. has 865 B. has 866 B. has 867 B. has 868 B. has 869 B. has 870 B. has 871 B. has 872 B. has 873 B. has 874 B. has 875 B. has 876 B. has 877 B. has 878 B. has 879 B. has 880 B. has 881 B. has 882 B. has 883 B. has 884 B. has 885 B. has 886 B. has 887 B. has 888 B. has 889 B. has 890 B. has 891 B. has 892 B. has 893 B. has 894 B. has 895 B. has 896 B. has 897 B. has 898 B. has 899 B. has 900 B. has 901 B. has 902 B. has 903 B. has 904 B. has 905 B. has 906 B. has 907 B. has 908 B. has 909 B. has 910 B. has 911 B. has 912 B. has 913 B. has 914 B. has 915 B. has 916 B. has 917 B. has 918 B. has 919 B. has 920 B. has 921 B. has 922 B. has 923 B. has 924 B. has 925 B. has 926 B. has 927 B. has 928 B. has 929 B. has 930 B. has 931 B. has 932 B. has 933 B. has 934 B. has 935 B. has 936 B. has 937 B. has 938 B. has 939 B. has 940 B. has 941 B. has 942 B. has 943 B. has 944 B. has 945 B. has 946 B. has 947 B. has 948 B. has 949 B. has 950 B. has 951 B. has 952 B. has 953 B. has 954 B. has 955 B. has 956 B. has 957 B. has 958 B. has 959 B. has 960 B. has 961 B. has 962 B. has 963 B. has 964 B. has 965 B. has 966 B. has 967 B. has 968 B. has 969 B. has 970 B. has 971 B. has 972 B. has 973 B. has 974 B. has 975 B. has 976 B. has 977 B. has 978 B. has 979 B. has 980 B. has 981 B. has 982 B. has 983 B. has 984 B. has 985 B. has 986 B. has 987 B. has 988 B. has 989 B. has 990 B. has 991 B. has 992 B. has 993 B. has 994 B. has 995 B. has 996 B. has 997 B. has 998 B. has 999 B. has 1000 B. has 1001 B. has 1002 B. has 1003 B. has 1004 B. has 1005 B. has 1006 B. has 1007 B. has 1008 B. has 1009 B. has 1010 B. has 1011 B. has 1012 B. has 1013 B. has 1014 B. has 1015 B. has 1016 B. has 1017 B. has 1018 B. has 1019 B. has 1020 B. has 1021 B. has 1022 B. has 1023 B. has 1024 B. has 1025 B. has 1026 B. has 1027 B. has 1028 B. has 1029 B. has 1030 B. has 1031 B. has 1032 B. has 1033 B. has 1034 B. has 1035 B. has 1036 B. has 1037 B. has 1038 B. has 1039 B. has 1040 B. has 1041 B. has 1042 B. has 1043 B. has 1044 B. has 1045 B. has 1046 B. has 1047 B. has 1048 B. has 1049 B. has 1050 B. has 1051 B. has 1052 B. has 1053 B. has 1054 B. has 1055 B. has 1056 B. has 1057 B. has 1058 B. has 1059 B. has 1060 B. has 1061 B. has 1062 B. has 1063 B. has 1064 B. has 1065 B. has 1066 B. has 1067 B. has 1068 B. has 1069 B. has 1070 B. has 1071 B. has 1072 B. has 1073 B. has 1074 B. has 1075 B. has 1076 B. has 1077 B. has 1078 B. has 1079 B. has 1080 B. has 1081 B. has 1082 B. has 1083 B. has 1084 B. has 1085 B. has 1086 B. has 1087 B. has 1088 B. has 1089 B. has 1090 B. has 1091 B. has 1092 B. has 1093 B. has 1094 B. has 1095 B. has 1096 B. has 1097 B. has 1098 B. has 1099 B. has 1100 B. has 1101 B. has 1102 B. has 1103 B. has 1104 B. has 1105 B. has 1106 B. has 1107 B. has 1108 B. has 1109 B. has 1110 B. has 1111 B. has 1112 B. has 1113 B. has 1114 B. has 1115 B. has 1116 B. has 1117 B. has 1118 B. has 1119 B. has 1120 B. has 1121 B. has 1122 B. has 1123 B. has 1124 B. has 1125 B. has 1126 B. has 1127 B. has 1128 B. has 1129 B. has 1130 B. has 1131 B. has 1132 B. has 1133 B. has 1134 B. has 1135 B. has 1136 B. has 1137 B. has 1138 B. has 1139 B. has 1140 B. has 1141 B. has 1142 B. has 1143 B. has 1144 B. has 1145 B. has 1146 B. has 1147 B. has 1148 B. has 1149 B. has 1150 B. has 1151 B. has 1152 B. has 1153 B. has 1154 B. has 1155 B. has 1156 B. has 1157 B. has 1158 B. has 1159 B. has 1160 B. has 1161 B. has 1162 B. has 1163 B. has 1164 B. has 1165 B. has 1166 B. has 1167 B. has 1168 B. has 1169 B. has 1170 B. has 1171 B. has 1172 B. has 1173 B. has 1174 B. has 1175 B. has 1176 B. has 1177 B. has 1178 B. has 1179 B. has 1180 B. has 1181 B. has 1182 B. has 1183 B. has 1184 B. has 1185 B. has 1186 B. has 1187 B. has 1188 B. has 1189 B. has 1190 B. has 1191 B. has 1192 B. has 1193 B. has 1194 B. has 1195 B. has 1196 B. has 1197 B. has 1198 B. has 1199 B. has 1200 B. has 1201 B. has 1202 B. has 1203 B. has 1204 B. has 1205 B. has 1206 B. has 1207 B. has 1208 B. has 1209 B. has 1210 B. has 1211 B. has 1212 B. has 1213 B. has 1214 B. has 1215 B. has 1216 B. has 1217 B. has 1218 B. has 1219 B. has 1220 B. has 1221 B. has 1222 B. has 1223 B. has 1224 B. has 1225 B. has 1226 B. has 1227 B. has 1228 B. has 1229 B. has 1230 B. has 1231 B. has 1232 B. has 1233 B. has 1234 B. has 1235 B. has 1236 B. has 1237 B. has 1238 B. has 1239 B. has 1240 B. has 1241 B. has 1242 B. has 1243 B. has 1244 B. has 1245 B. has 1246 B. has 1247 B. has 1248 B. has 1249 B. has 1250 B. has 1251 B. has 1252 B. has 1253 B. has 1254 B. has 1255 B. has 1256 B. has 1257 B. has 1258 B. has 1259 B. has 1260 B. has 1261 B. has 1262 B. has 1263 B. has 1264 B. has 1265 B. has 1266 B. has 1267 B. has 1268 B. has 1269 B. has 1270 B. has 1271 B. has 1272 B. has 1273 B. has 1274 B. has 1275 B. has 1276 B. has 1277 B. has 1278 B. has 1279 B. has 1280 B. has 1281 B. has 1282 B. has 1283 B. has 1284 B. has 1285 B. has 1286 B. has 1287 B. has 1288 B. has 1289 B. has 1290 B. has 1291 B. has 1292 B. has 1293 B. has 1294 B. has 1295 B. has 1296 B. has 1297 B. has 1298 B. has 1299 B. has 1300 B. has 1301 B. has 1302 B. has 1303 B. has 1304 B. has 1305 B. has 1306 B. has 1307 B. has 1308 B. has 1309 B. has 1310 B. has 1311 B. has 1312 B. has 1313 B. has 1314 B. has 1315 B. has 1316 B. has 1317 B. has 1318 B. has 1319 B. has 1320 B. has 1321 B. has 1322 B. has 1323 B. has 1324 B. has 1325 B. has 1326 B. has 1327 B. has 1328 B. has 1329 B. has 1330 B. has 1331 B. has 1332 B. has 1333 B. has 1334 B. has 1335 B. has 1336 B. has 1337 B. has 1338 B. has 1339 B. has 1340 B. has 1341 B. has 1342 B. has 1343 B. has 1344 B. has 1345 B. has 1346 B. has 1347 B. has 1348 B. has 1349 B. has 1350 B. has 1351 B. has 1352 B. has 1353 B. has 1354 B. has 1355 B. has 1356 B. has 1357 B. has 1358 B. has 1359 B. has 1360 B. has 1361 B. has 1362 B. has 1363 B. has 1364 B. has 1365 B. has 1366 B. has 1367 B. has 1368 B. has 1369 B. has 1370 B. has 1371 B. has 1372 B. has 1373 B. has 1374 B. has 1375 B. has 1376 B. has 1377 B. has 1378 B. has 1379 B. has 1380 B. has 1381 B. has 1382 B. has 1383 B. has 1384 B. has 1385 B. has 1386 B. has 1387 B. has 1388 B. has 1389 B. has 1390 B. has 1391 B. has 1392 B. has 1393 B. has 1394 B. has 1395 B. has 1396 B. has 1397 B. has 1398 B. has 1399 B. has 1400 B. has 1401 B. has 1402 B. has 1403 B. has 1404 B. has 1405 B. has 1406 B. has 1407 B. has 1408 B. has 1409 B. has 1410 B. has 1411 B. has 1412 B. has 1413 B. has 1414 B. has 1415 B. has 1416 B. has 1417 B. has 1418 B. has 1419 B. has 1420 B. has 1421 B. has 1422 B. has 1423 B. has 1424 B. has 1425 B. has 1426 B. has 1427 B. has 1428 B. has 1429 B. has 1430 B. has 1431 B. has 1432 B. has 1433 B. has 1434 B. has 1435 B. has 1436 B. has 1437 B. has 1438 B. has 14

केतलउ 'कालु' ? 'जावे' त्यादि । जेतलइ 'नमो अरहंताणं नमुकारेणं न पारेमि' जां 'नमो धरहंताणं' इसउं भणी 'न पारेमि' पारिजाउं नहीं । ताव किं इत्याह — तेतलउ कालु 'कायं' काउ देहु, 'ठाणेणं', ऊर्ध्वस्थानादि फरी, 'मोणेणं' वचननिरोधि फरी, 'ज्ञाणेणं' मनःसुप्रणिधानि फरी, 'अप्पाणं' आपणउ, 'बोसिरामि' बोसिरउं परिहरउं ।

5 §43) अथ इरियावही संपदापदादि अवयव लिखियइं—

इच्छ १ गम २ पाण ३ ओसा ४ जे मे ५ एगिदि ६ अभिहया ७ तस्स ।

अडसंपय वत्तीसं एयाइं वन्नाण सहसपं ॥ [७०]

'वन्नाण य सहसयं' दउठसउ आखर इरियावही इणि मति 'तस्सुत्तरी' त्यादि पाखइ आठ संपदा । वत्रीस पद जिम हुयइं तिम कहियइं—

10 चउ १ रेग २ तिन्नि ३ पंचि ४ ग ५ पण ६ दस ७ तिन्नि ८ त्य हुंति आलावा ।
इरियाए नायच्चा तस्सुत्तर एवमाइ विणा ॥ [७१]

संपदाक्षर प्रमाणु लिखियइं—

वीसं १ छ २ सोल ३ बावीस ४ अट्ट ५ इगवीस ६ इगुणवन्न ७ ट्ट ८ ।

अडसंपय पयवन्ना इरियाए दिवठसयमाणे ॥ [७२]

15 अथ मूलमतु लिखियइं—मूलमतिहिं संपदापदादि अवयव पूर्वोक्त इ जि जाणिया ।

अथ अंतपद लिखियइं ।

पढमा विराहणाए गमणागमणंमि तह भवे वीया ।

हरियकमणे तइया, संकमणे तह चउत्थीया ॥ [७३]

जीवा विराहिया पंचमी य पंचिदिया भवे छट्ठी ।

20 मिच्छामि दुक्कडं सत्त, अट्टमी ठामि उस्सगं ॥ [७४]

इणि मति 'ओसा' इत्यादि एकु पदु । 'तरस मिच्छा मि दुक्कडं' ए त्रिन्धि पद सातमी संपदा माहि गणियइं । 'तस्सुत्तरीकरणेणं' इत्यादि 'ठामि काउस्सगं' एती सीम आठमी संपदा । इणि मति आठही संपदा तणां पद कहियइं—

चउ १ रेग २ तिन्नि ३ इग ४ पण ६ तेरस ७ दसग ८ हुंति आलावा ।

25 अट्टत्तीस पमाणा अडनउयसयं च वन्नाणं ॥ [७५]

अथ संपदाक्षरप्रमाणु लिखियइं—

वीसं १ छ २ सोल ३ बावीस ४ अट्ट ५ इगवीस ६ सत्त वन्ना ७ य ।

अट्टेतालीस ८ तहा अडवीसामाण अक्खरया ॥ [७६]

§44) अथ जाणाविया कारणि प्रस्तावइतउ काउसग्ग तणा दोप लिखियइं । यथा—

30 घोडय १ लया २ य धंभे कुट्टे ३ माले ४ य सवरि ५ वहू ६ नियले ७ ।

लंबुत्तर ८ थण ९ उट्ठी १० संजय ११ खलणे १२ य वायस १३ कविट्टे १४ ॥ [७७]

§43) 1 B. omits वर । 2 B. omits between सातमी संपदा · आठमी संपदा (inclusive)

सीसोकंपिय १५ मूर्दे १६ अंगुलिभमुहा १७ य वारुणी १८ पेहा १९ ।

एगुणवीस दोसा फाउसगस वज्जिजा ॥

[७८]

पोटक जिम विपमपरणता पोटक १, धातपालित लता जिम कंभमानकायता लता २, पानर भीति ओठंभी करी रहणु धंभहुट्टु ३, ऊपरि माथयं लगाडी करी स्यानु मालु ४, शबरी पुलिदी वेह जिम गूस देसि हाथ दे करी स्यानु सबरी ५, वधू जिम माथयं नीचयं करी रहणु वधू ६, निगडित ७ जिम पाद वे मेली करी अथवा मोरुला करी रहणु निगडु ७, नामि ऊपरि गोडा हेठइ प्रलंबमानु चोटरट्टु करी स्यानु लंयुचर ८, दंसादिरक्षायुं अथवा अज्ञानवसि हिययं धाच्छादी करी स्यानु थणु ९, इकट ऊपि जिम अंगुठा अथवा पान्नी मेली करी स्यानु सगडुद्धी १०, साथी जिम प्रावरी करी स्यानु संजता ११, रचणि कडियाली वेह जिम रजोहरणु आगइ करी रहणु खलणि १२, वायस जिम चसुगोलउं चलयवत हंतउ रहइ वायसु १३, कविहु फरडु तेह जिम परिघातु पिंडु करी स्यानु १४, भूताधिष्ठिन जिम माथयं कंभावत रहइ सीसोकंपितु १५, मूक जिम हू हू शब्दु करतउ रहइ मूक १६, आलापक गगिया-निमित्तु आंगुलि अथवा भोंपणि चलावतउ रहइ अंगुलिभमुहा १७, वारुणी सुरा तेह जिम बुडबुडा रघु करइ वारुणी १८ वानर जिम लोगसुज्योगरे चीतवतउ होठपुट चलावइ पेहा १९, ए ओगुणीस दोस फाउसग तथा जाणिवा । जाणी करी वज्जिवा ।

§45) फाउसग माहि 'चंदेमुनिम्मलया' सीम 'लोगसुज्योगरे' चीतवेवी, पारिइ हंतइ समस्तइ 15 'लोगसुज्योगरे' भगेरी । इसी परि इरियावही पडिकनी करी गोडिहिलियां थाई महंत संवेग निवेद रस संवच नमस्कार कही । तउ पाछइ

अधुनंतर अंगुलि कोसागारेहिं दोहिं हत्वेहिं ।

पिडोवरि कुणपरसंठिएहिं तह जोगमुइ चि ॥

[७९]

§46) इसी जोगमुद्रा यत्तमानु प्रणिपातदंढकु पडइ । सु पुणि एहु-

(११) नमोत्थुणं, अरहंताणं, भगयंताणं । सं० १ ।

नमस्कार हुउ, 'णं' वाक्यालंकारि अर्थि, यथा-

नम इति एस पणामो अत्थु चिय मे भवउ नमुकारो ।

विंदुसहिओ गयारो वयणस विभूसणे भणिओ ॥

[८०]

कीहं रहइं नमस्कार ? 'अरहंताणं', 'अरिहंताणं', 'अरुहंताणं' इति त्रिहुं परि पाडु ।

अरिहंति वंदण नमंसणाइं अरहंति पूसकारं ।

सिदिगमणं च अरहा अरहंता तेण बुचंति ॥

[८१]

इसा वचनइतउ देवदेवेंद्रउउ वंदण नमस्करण सत्कारपूज अरहइं अथवा सिदिगमणु अरहइं तिणि कारणि अरहंत कहियइं ।

अट्टविहं चिय कम्मं अरिभूयं होइ सव्व जीवाणं ।

तकम्म अरिहंता अरिहंता तेण बुचंति ॥

[८२]

इसा वचनइतउ अष्टप्रकार हानावरणादिकु कम्मं भावरिउ समानु हणइ तिणि कारणि अरिहंत कहियइं ।

केतलउ 'कालु' ? 'जावे' त्यादि । जेतलइ 'नमो अरहंताणं नमुकारेणं न पारेमि' जां 'नमो अरहंताणं' इमउं अणी 'न पारेमि' पारिजाउं नही । ताव किं इत्याह -- तेतलउ कालु 'कायं' काउ देहु, 'ठाणेणं', ऊर्ध्वस्थानादि करी, 'भोगेणं' वचननिरोधि करी, 'ज्ञाणेणं' मनःसुप्रणिधानि करी, 'अप्पाणं' आपणउ, 'वोसिरामि' वोसिरउं परिहरउं ।

5 §43) अथ इरियावही संपदापदादि^१ अवयव लिखियइं-

इच्छ १ गम २ पाण ३ ओसा ४ जे मे ५ एगिंदि ६ अभिहया ७ तस्स ।

अडसंपय वत्तीसं एयाइं वन्नाण सहसयं ॥ [७०]

'वन्नाण य सहसयं' दउढसउ आखर इरियावही इणि मति 'तस्सुत्तरी' त्यादि पाखइ आठ संपदा । वत्तीस पद निम हुयइं तिम कहियइं-

10 चउ १ रेग २ तिन्नि ३ पंचि ४ ग ५ पण ६ दस ७ तिन्नि ८ त्थ हुंति आलावा ।
इरियाए नायव्वा तस्सुत्तर एवमाइ विणा ॥ [७१]

संपदाअर प्रमाणु लिखियइं-

वीसं १ छ २ सोल ३ बावीस ४ अट्ट ५ इगवीस ६ इगुणवन्न ७ ट्ट ८ ।

अडसंपय पपवन्ना इरियाए दिवढसपमाणे ॥ [७२]

15 अथ मूलमतु लिखियइं - मूलमतिहिं संपदापदादि अवयव पूर्वोक्त इ जि जाणिवा ।

अथ अंतपद लिखियइं ।

पढमा विराहणाए गमणागमणंमि तह भवे वीया ।

हरियकमणे तइया, संकमणे तह चउत्वीया ॥ [७३]

जीमा विराहिया पंचमी य पंचिदिया भवे छट्ठी ।

20 मिच्छामि दुक्कंडं सत्त, अट्टमी ठामि उस्सगं ॥ [७४]

इणि मति 'ओमा' इत्यादि एकु पदु । 'तस्स मिच्छा मि दुक्कंडं' ए त्रिन्दि पद सातमी संपदा मादि मगियइं । 'तस्सुत्तरीकरणेणं' इत्यादि 'ठामि काउसगं' एती सीम आठमी संपदा । इणि मति आट्ठी^१ संपदा तनां पद कहियइं-

चउ १ रेग २ तिन्नि ३ इग ४ पण ६ तेरस ७ दसग ८ हुंति आलावा ।

25 अट्टवीम पमाणा अडनउपसयं च वन्नाणं ॥ [७५]

अथ संपदाअरप्रमाणु लिखियइं-

वीसं १ छ २ सोल ३ बावीस ४ अट्ट ५ इगवीस ६ सत्त वन्ना ७ य ।

अट्टेतालीम ८ तदा अट्टवीमामाण अक्खरया ॥ [७६]

§44) अथ ज्ञानाविद्या कारणि प्रस्तावइतउ काउमग्ग तगा दोय लिखियइं । यथा-

3) पोडय १ लया २ य धंमे कुट्टे ३ माले ४ य मवरि ५ वहू ६ नियले ७ ।

ननुत्तर ८ यन ९ उट्ठी १० संत्तय ११ गलणे १२ य वापस १३ कविट्टे १४ ॥ [७७]

[75] 1 B. omits एतः 2 B. omits between एतन्नी संतत - आठमी संतदा (inclusive)
3 B. अट्टेताली

‘चक्रुदय’। ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मार्गुं दियईं तिति कारणि ‘भग्नादय’। रोगादि भयनीत प्राणि प्राणदायकत्वइतउ ‘सरणदय’। सम्यक्त्वदायकत्वइतउ बोधिय। तीहं निमित्तु नमस्कार।

(१६) धम्मदयाणां धम्मदेसयाणां धम्मनायगाणां धम्मसारहीणां धम्मवर-
चाउरंतचकवट्टीणां । सं० ६ ।

§51) यवोचित गृहधम्मदायक इति ‘धम्मदय’। धम्मदायकत्तु धम्मदेशना करी हुयइ इति 5 धम्मदेसगा धम्मकयक। धम्मकरणइतउ, धम्मफलोपभोगइतउ, धम्मवर्द्धनइतउ, नायक ठाडुर इति ‘धम्म नायग’। धम्मरथ भव्यरथ रहईं सन्गुं दर्शन प्रवर्तन पाळन जोगइतउ सारथि ‘धम्ममारही’ तीहं सरीखा इति ‘धम्म सारहिणो’। तथा च भगवंति श्री महावीरि भेजिकधारिणीपुत्रु मेघकुमार सापुचरण-संघट्टयावितु प्रभाति संजमु मूनी घरि जाइमु इसइ अभिप्राइ वांदिवा आविउ, पूर्वभव सुमेरुभ हस्ति नाम कयनि संबोधी करी संजममार्गि थिरु कीधउ। धम्मसारथि भाय विपद संक्षेपिहं मेघकुमार कथा । 10 धम्म जु वरु प्रधातु चउगति अंतकरगइतउ चाउरंतु जिमउं चकु हुयइ तिसउं चकुं तिगि वत्तईं ‘धम्मवर चाउरंत चकवट्टिणो,’ तीहं रहईं नमस्कार।

(१७) अपपडिह्य वरनाणदंसणधराणां विपट्टउमाणं । सं० ७ ।

§52) अप्रतिहतु अस्खलितु वरु प्रधातु विरोपबोधरूपु ज्ञातु सामान्यबोधरूपु दर्शतु परईं इति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर। व्यावृत्तु निर्वासिउं छद्दु ज्ञानावरणीयादिकु कम्मं जीहं रहईं ति ‘विपट्टम्म’, 15 तीहं निमित्तु नमस्कार।

(१८) जिणाणां जावयाणां तित्ताणां तारायाणां बुद्धाणां चोहगाणां सुत्ताणां
भोयगाणां । सं० ८ ।

§53) रागादि जयकारिया जिण। अनेराईं रहईं रागादि जय करायणहार जावग। भरसमुद पारगत तीणं ‘तित्त’। अनेराईं रहईं भयसिधु पारदायक तारक ‘तारय’। शाततव ‘बुद्ध’। तत्त्वावबोधक 20 बोधक’। कम्मसुक्त ‘सुत्त’। कम्ममोचापक ‘भोयग’ तीहं रहईं नमस्कार।

(१९) सच्चवन्नूणां सच्चवदरिसीणां सिवमयलमरूपमणंनमकसयमन्वापाहम-
पुणारावित्तिं सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणां नमो जिणाणां जियभयाणां । सं० ९ ।

§54) सच्चवत्तु सामान्य विरोपाल्मकु हंतउ केवलज्ञान प्रथमसमइ विरोपरूपता करी जानईं तिगि कारणि सर्वेश कहियईं। तउ पाछइ बीजइ समइ सर्ववत्तु सामान्यात्मरुता करी देसईं तिगि कारणि 25 सर्वदर्शी कहियईं।

§55) अथ जइ किमइ धो कहइ—एक समइ जाणइ बीजइ समइ देसइ—तउ ज्ञानसमइ देसइ नरी, दर्शनसमइ जाणइ नहीं इसउ वेपु सर्वेश रहईं आयद, इसउं न कदिदू। ज्ञानदर्शनव्यि तथा सदा संभवइतउ सर्वतु सर्वदर्शी च सदा कहियइ। जीव तयउ इत्तु स्वभावु छर। जु शानोरयोगे अनइ दर्शनोपयोगे क्रमिहिं जि करी हुयइ। जिम लोक मादि पाचकादिकु विनाणी केनीदी वार पाकारिकु 30 कम्मं कइ, पुणि पाचकादि-लब्धि-सद्भावइतउ सदा पाचकु पाचकु इत्यादि प्रकारि बोलावियउं तिम श्रुनि करी जाणवू देखवू हंतउ, सदा लब्धिसद्भावइतउ सर्वतु अनइ सर्वदर्शी सदा कहियइ। अथता वेतीवार समस्त धत्तु सामान्यधम्मं उपसर्जंतु गौणु प्रतिभासइ तथा मनस दन्तु विरोपधम्मं उरन्तु

§51) I Bh. adds धम्मवरचाउरंतचकु। §53) I B. omits. §54) I सिव-अनन्-धम्म-
अणत्तम्-अवययम्-अन्वाचाइम्-अपुणराविति ।

दग्धे वीजे यथाऽत्यन्तं न रोहति यवांकुरः ।

कर्मवीजे तथा दग्धे न रोहति भवांकुरः ॥

[८३]

इसा भणनइतउ वली संसारि नही रहइं नही ऊपजइं तिणि कारणि अरुहंत कहियइं । तीहं निमित्तु नमस्कारु ति पुणि किसा छइं ? भगवंत भगु छए भेदे । तथा हि-

5 ऐश्वर्यस्य समग्रस्य रूपस्य यद्यसः धियः ।

धर्मस्वाथ प्रयत्नस्य पण्णां भग इतीह्ना ॥

[८४]

सु समग्र ऐश्वर्यादिलक्षणु भगु जीहं रहइं हुयइं ति भगवंत ।

(१२) आइगराणं, तित्थगराणं, सयंसंबुद्धाणं । सं० २ ।

10 § 47) थापणइ २ तीर्थं सर्वनीति हेतु धृतधर्मं तणउ आदि करइं तिणि कारणि आइकर । तीर्थं चतुर्विधु संबु अथवा प्रथमु गणधरु करइं तिणि कारणि तीर्थकर । स्वयं थायइं परोपदेस पासइ संबुद्ध हाततत्व तिणि कारणि स्वयंसंबुद्ध । तीहं निमित्तु नमस्कारु ।

(१३) पुरुसोत्तमाणां पुरुससीहाणां । पुरुसवरपुंडरीयाणां । पुरुसवरगंधहृत्पीणां । सं० ३ ।

15 § 48) पुरुष विशिष्टसत्त्व तीहं माहि तथा स्वभावता लगी अमाधारण गांमीयादिगुण जोगइतउ उत्तम पुरुषोत्तम । कर्मशत्रु प्रति सूरता करी सिंह सरीखा इति पुरुषसिंह । पुरुषवर पुंडरीक सरीखा । जिम पुंडरीक पंक माहि ऊपजइ, जल माहि बाधइं, पंकु जलु ये मेल्ली करी ऊपरि रहइं, तिम अरुहंत पुणि कर्मपंकि ऊपना, भोगजलि वाधिया, वेऊ मेल्ली करी ऊपरि रहइं इति पुरुषवर पुंडरीक कहियइं । पुरुषवर गंधहृत्ति सरीखा, जिम गंधहृत्ति नइ गंधि क्षुद्र गज भाजइं ऊभा न रहइं तिम तीर्थकर-विहार-वातगंधि करी इति दुर्भिक्षादिक उपद्रव गज भाजइं इति पुरुषवरगंधहृत्ति कहियइं । तीहं निमित्तु नमस्कारु ।

20 (१४) लोगुत्तमाणां लोगनाहाणां लोगहियाणां लोगपईवाणां लोगपज्जोयगराणां । सं० ४ ।

§ 49) इहां लोकु भव्यसत्त्वु कहियइं । तेह माहि सकलकल्याणता करी जु छइ तथा भव्यसत्त्व-भाबु तिणि करी उत्तम लोकोत्तम । लोग विशिष्ट भव्यसत्त्व तीहं रहइं सम्यक्त्वयीजदानि करी रागादि चोर उपद्रव रक्षणि करी, अलब्धलाभ लक्षणु योगु 'लब्धपरिपालन लक्षणु क्षेमु करइं इति लोकनाथ ।

25 लोकु मफल्लु एकेंद्रियादि प्राणिवग्गुं, तेह रहइं रक्षणादि करी हित इणि कारणि लोकहित । लोकु विशिष्ट-संज्ञि प्राणिममूह, तेह रहइं उपदेस किरणइं करी मिथ्यात्व तिमिर निवारण भावि करी लोकदीप । लोकु गणपपादिकु, तेह रहइं प्रचोतु तत्वप्रकासु करइं इति लोकप्रचोतकर । तीहं रहइं नमस्कारु ।

(१५) अभयदयाणां चक्रसुदयाणां मग्गदयाणां सरणदयाणां घोहिदयाणां । सं० ५ ।

30 § 50) 'इहपरलोयादाणमकम्हा आजीवमरणमसिलोम' इति सप्तविधु भउ कहियइ । तथा हि-स्वजाति तणउ भउ इहलोक भउ १, परजाति तणउ भउ परलोक भउ २, चोरराजादिकइं तणउ रिद्धिहरण तणउ भउ आदानभउ ३, वीजपतनादि वसइतउ धचीतवीउ भउ अकस्माद्भउ ४, दारिद्रिउ इउं किम जीविनु इसउ भउ आजीविकाभउ ५, मरिया तणउ भउ ६; अपकीर्त्ति तणउ भउ धश्लोक भउ ७, इति सप्तविधु भउ । तेह नउ अभाबु दियइं इति 'अमयदय' । तत्त्वावबोधरूप हानदृष्टि दियइं इणि कारणि

§ 48) 1 इति is a type of उपद्रव । There are six types of इति ।

‘वस्तुदय’। ज्ञानदर्शन पारिव्ररूपु मार्गुं दियइं तिणि कारणि ‘ममदय’। रोगादि भयभीत प्राणि ज्ञानदायकत्वइतउ ‘सरणदय’। सम्यक्त्वदायकत्वइतउ घोषिदय। तीहं निमित्तु नमस्कार।

(१६) धम्मदयाणां धम्मदेसयाणां धम्मनायगाणां धम्मसारहीणां धम्मचर-
चाउरंतचक्रवहीणां। सं० ६।

51) यथोचित गृहीधर्मदायक इति ‘धम्मदय’। धर्मदायकत्तु धर्मदेशना करी हुयइ इति 5 धर्मदेसना धर्मकयक। धर्मकरणइतउ, धर्मफलोपभोगइतउ, धर्मवर्द्धनइतउ, नायक ठाकुर इति ‘धम्म नादन’। धर्मरथ भग्गरथ रहइं सम्यग् दर्शन प्रवर्त्तन पालन जोगइतउ सारथि ‘धम्मसारही’ तीहं नदीरता इति ‘धम्म मारहिणो’। तथा च भगवति श्री महावीरि भेणिकधारिणीपुत्रु मेघकुमार साधुचरण-संगठनायित्तु प्रभाति संजमु मूही परि जाइसु इमद अमिप्राइ चांदिया आविउ, पूर्वभव सुमेरुप्रभ हस्ति नाम कयनि संशोयी करी संजममार्गिणि विरु कीधउ। धम्मसारथि भाव विपइ संशेपिहिं मेघकुमार कथा। 10 धम्मं तु वरु प्रधांतु चउगति अंतरुणइतउ चाउंतु निसउं चकु हुयइ तिसउं चकु¹ तिणि वत्तइं ‘धम्मवर चाउरंत चक्रवहिणो,’ तीहं रहइं नमस्कार।

(१७) अण्णडिहय चरनाणदंसणघराणां वियट्टउमाणं। सं० ७।

52) अग्रतिहतु अग्ररलितु वरु प्रधांतु विशेषनोधरुपु ज्ञांतु सामान्यबोधरुपु दर्शंतु धरइं इति अग्रतिह्वररज्ञानदर्शनधर। व्यावृत्तु निरनिर्गंतं छत्तु ज्ञानाग्ररणीयादिछु कम्मं जीहं रहइं ति ‘वियट्टछम्म’, 15 तीहं निमित्तु नमस्कार।

(१८) जिणाणां जाययाणां तित्ताणां तारयाणां बुद्धाणां वोहगाणां मुत्ताणां
मोयगाणां। सं० ८।

53) रागादि जयकारिया जिण। अनेराइं रहइं रागादि जय करणवणहार जावण। भवसमुद पारण तीर्ण ‘तित्त’। अनेराइं रहइं भवसिणु पारदायक तारक ‘तारय’। ज्ञाततत्व ‘बुद्ध’। तत्त्वावबोधक 20 बोधक¹। कम्मसुक ‘मुत्त’। कम्ममोचापक ‘मोयण’ तीहं रहइं नमस्कार।

(१९) सच्चवन्नूणं सच्चदरिसीणां सिचमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वायाहम-
पुणरावित्तिं सिद्धिगइ नामधेयं ठाणां संपत्ताणां नमो जिणाणां जियभयाणां। सं० ९।

54) सर्ववस्तु सामान्य विशेषात्मकु हंतउ केवलज्ञान प्रथमसमइ विशेषरूपता करी जाणइं तिणि आरणि सर्वज्ञ कहियइं। तउ पाछइ धीजइ समइ सर्ववस्तु सामान्यात्मकता करी देखइं तिणि कारणि 25 सर्वदर्शी कहियइं।

55) अथ जइ किमइ को कहइ—एक समइ जाणइ धीजइ समइ देखइ—तउ ज्ञानसमइ देखइ नदी, दर्शनसमइ जाणइ नदी इसउ दोपु सर्वज्ञ रहइं आवइ, इसउं न कहिवूं। ज्ञानदर्शनलच्छि तणा सदा संभवइतउ सर्वज्ञ सर्वदर्शी च सदा कहियइ। जीव तणउ इसुं तु स्वभावु छइ। तु ज्ञानोपयोगु अनइ दर्शनोपयोगु क्रमिहिं जि करी हुयइ। जिम लोक माहि पाचकादिछु विनाणी केतीही चार पाकादिछु 30 कम्मं करइ, पुणि पाचकादि-लच्छि-सद्भावइतउ सदा पाचकु पाचकु इत्यादि प्रकारि बोलावियइ तिम क्रमि करी जाणतु देखतु हंतउ, सदा लच्छिसद्भावइतउ सर्वहु अनइ सर्वदर्शी सदा कहियइ। अथवा क्रमि करी जाणतु देखतु हंतउ, सदा लच्छिसद्भावइतउ सर्वहु अनइ सर्वदर्शी सदा कहियइ। अथवा केतीवार ममस वस्तु सामान्यधर्मु उपसजंतु गौणु प्रतिभासइ तथा समस वस्तु विशेषधर्मु मुख्यु

51) 1 Bh. adds धम्मवरचाउरंतचक्रु। 53) 1 B. omits. 54) 1 सिचम-अवलम्-अरुयम्-

प्रतिफलम् तेषां च मांशु कश्चिद । जेनीवार विभोगधर्मं गीयु प्रतिभासद् सामान्यधर्मं मुमुक्षु
 प्रतिफलम् तेषां च मांशुर्न कश्चिद । दोषु को न दोषयं । ईशं यद् कश्चिदं छद् । पुगि विमलता
 कर्माणि विविक्तं नृषी । जु को विमल जोरु विगि नंरिदुनि हूत आगिपत् । ईशं मुग्धजन तर्कयतु
 नृषीं नृषी तेषु करणतः पुन विविक्तं नृषी । 'मितु' निरुदयु । अचलु चयनविचारदितु । अरुतु
 शैलीवर्द्धि । अन्यु अन्यायानुसन्तु ज्ञानमजोतयत् । अन्नत भयहेतु तया अभावइतत् । अन्यायायु
 यद्गुणव्ययत् ।

156) अनुसन्तुति आनुसन्तुते कर्म तया अभावइतत् । जद् किमद् संगारहेतु कर्म तयद्
 अन्वयिं तैदम्प विन विन तयं संगारि अरताक कश्चिद तत् दोषु योद् रत्तं कश्चिद सु जिन रत्तं
 पुं वि विव । तया वि

1) यद् विव तयतयु संगत कश्चिद यत् मरा संगत जीव रत्तं हुयद् । मोक्षु कदापि न
 तया । शंभारव्ययत्त रत्त हुयत् रत्तं मरा भावइतत् । अधया मरा संगारतयातु मोक्षु जु जीव
 रत्तं हुयत् । न पुं कश्चिदि संगत । मरातयरी वि यत्तु रत्तं कारणमभि भायु, कारण तयत् अमंभी
 अयायु हुयत् । तया अ अविन-

विद मयनतयं चरतेयोग्याननोपायु ।
 अंशुगो वि मरातां कदापिअयनिवयः ॥ [८५]

इति शैलीवर्द्धि अनुसन्तुतिव्ययत्त । विवतयत्त अविनिविनतायुति हूतत् अयुनतायुति मयाता
 तयत्त अविनत्त ।

विदमयनतयतयत्त तया वि । विविदमत्त इत्यं नामधेय नामु जेद् मया रत्तं सु विद्विगि-
 मयतयत्त अयु कश्चिद । विव वि मयन यदुता जिन तय-धेय मूढ तयकारक । 'जियभय' पूर्वीक
 अयत्त अयत्त । जे विविदु नयमकात् ।

दु-रुति अवि नृषी इत्यद् यद् मरां मयतयत्त नमकारतयमयं विविदु कश्चिदं । यरी करी
 यनतयतयत्त वि कश्चिदे पुनरवि दोषु न हुयत् । अविमयतयत्त । तया अ अविन-

मयतयत्त-काम-नृषी-नदेसु उत्तरम यत्त-यसागेषु ।
 संसुतयत्त-काम-नृषी-न देसि पुनरविदोषादौ ॥ [८६]

विद मरा इत्यन्वयिदयत्त मयत्त अयु इमी एवि मरा इति कारणे एत इत्यन्वयु कश्चिद इत्यं
 नृषी कश्चिद यद् कश्चिद इति कारणे इत्यन्वयु कश्चिद । अविमयतयत्त अविमयतयत्त अविमयतयत्त-
 इत्यन्वयु इत्यन्वयु इत्यन्वयु इति अयत्त ।

157) अयं अयत्त इत्यं नृषी नयतयत्त-इत्यन्वयु इत्यन्वयु इति अविन यद् कश्चिदं ।
 यत्तुं १ अयत्त २ अविन ३ अविन ४ अयत्त ५ अयत्त ६ अयत्त ७ अयत्त ८ अयत्त ९ ।
 नयत्त अयत्त यत्तुं-इत्यन्वयु इत्यन्वयु ॥ [८७]

अयत्त-काम-नृषी-न देसि पुनरविदोषादौ ॥ [८८]

विदमयनतयतयत्त तया वि । विविदमत्त इत्यं नामधेय नामु जेद् मया रत्तं सु विद्विगि-

बोद्धिदयाणं पणमा गच्छन्तीम तद् भवे छट्ठी ।

सत्तमिया छउमाणं अट्टमिया सुकमोपाणं ॥

[८९]

त्रियमयाणं चरमा तिसि य पूया पया य निदिट्ठा ।

जे अईया सिद्धाई संवरणे होइमा गाहा ॥

[९०]

अथ नवसंवरदा पर तत्र प्रमाणु बहियर-

दो १ तिसि २ चउर ३ पंच ४ य तद् पंच ५ य पंच ६ दुत्ति ७ चउ ८ तिसि ९ ।

सत्तपण नवसंवर आत्तामा हुंति तिसीसं ॥

[९१]

5

अथ नवसंवरदा षण्णप्रमाणु बहियर-

चउदस १ सोल २ बत्तीस ३ गुणतीसं ४ मत्तवीस ५ छत्तीस ६ ।

बावीस ७ षट्ठावीसं ८ अट्ठवन ९ नवसंपया वच्चा ॥

[९२]

10

अथ सत्तं षण्णप्रमाणु बहियर-

मत्तवेसि संकल्पे तद् वच्चा हुंति दुसप बासट्ठा ।

भाजिपत्तयप रुवे अहिगारे इत्थ पट्ठममि ॥

[९३]

[58] अथानंतरं त्रिकालवर्ति जिनरंजनामिहितु पूर्वसूरिविरचित ए गाढ कदइ-

जे अईया सिद्धा जे भविस्संति अणाणए काले ।

संपर य बट्टमाण्णा मत्तवे तिबिहेण वंदामि ॥ सुगमा ।

[९४]

15

म परं भावि जिन अनर अतीन जिन द्रव्यजिन बहियरं । यत्तमान जिन भावजिन जाणिया ।
अथ अतीन मिट्ठजिन बहियरं । यथा-केवलशानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायत्ता ४, विमल्ल ५,
मंगंतुमूति ६, सुजेत्ता इत्तं पीजत्तं नाम केई एकि कदइं, शीघर ७, दत्त ८, दामोदर ९,
सुजेत्ता १०, म्यामी ११, सुणियुत्त १२, अनेरा शिवासी इत्तं नाम कदइं, सुमति १३, २०

सिक्खणि १४, अम्माणु १५, निमीधर १६, अनिल्ल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेधर २०,
धर्माधर इत्तं पीजत्तं नाम, सुदमति २१, शिषकर २२, स्वंदत्त २३, संप्रति २४, इति अतीत
पट्ठोत्तं जिन 'जे अईया सिद्धा' इति परि करी जाणिया ।

[59] 'जे भविस्संति' जि भविष्य चउवीस जिन यथा-पद्मनासु १, सुरदेव २, सुपार्थ ३,
स्वयंभु ४, मंगंतुमूति ५, देवधुत्त ६, उदत्त ७, पेढाल्ल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्ति १०, सुत्त ११, २५

अमसु १२, निष्कपासु १३, निष्पुलाकु १४, निर्मसु १५, चित्रणु १६, समाधि १७, शंवर १८,
पयोधर १९, विज्ज २०, गद्दु २१, देवु २२, अनंतवीर्यु २३, भद्रकृत्त २४ । इति भविष्य चउवीस
जिन नाम । अथमयावांग मादि भावि जिन इसी परि वीसई यथा-महापत्त १, सुरादेव २,
सुरात्तु ३, स्वयंभु ४, मंगंतुमूति ५, देवणु ६, उदत्त ७, पेढाल्लपुत्त ८, पुट्टिल ९,
मयत्त १०, सुणियुत्त ११, अमसु, १२, निष्कपासु १३, निष्पुलाकु १४, निर्मसु १५, ३०
चित्रणु १६, ममाधि १७, शंवर १८, अनियुत्ति १९, विवात्त २०, विमल्ल २१, देवोपपात्त २२,
अनंत २३, विज्ज २४ । तथा च भणितं-

महापत्ते १ सुरादेवे २ सुपासे ३ य सयंपमे ४ ।

मत्तयाणुभू अरिहा ५ देवुमुत्ते य हुक्खइ ६ ॥

[९५]

- उदये ७ पेढालपुत्ते ८ य पुट्टिले ९ भयए १० इय ।
 मुणिसुघ्नए ११ य अरिहा सब्बभावविउ जिणे ॥ [९६]
 अममे १२ निष्कसाथे १३ य निष्पुलाए १४ य निम्ममे १५ ।
 चित्तगुत्ते १६ समाहि १७ य आगमिस्सेण हुक्खइ ॥ [९७]
 संवरे १८ अनियट्टि १९ य विवाए २० विमले इय २१ ।
 देवोवधाए २२ अरिहा अणंत २३ विजए २४ इय आगमिस्सेण हुक्खइ ॥ [९८]
 इति आगामियद कालि 'हुक्खइ' होइसइ इसउ अर्थु ।
 § 60) 'संपइ य वट्टमाणा' ऋषभादिक चउवीस जिन लोगस्सुज्जोगरे माहि कहिया छइ ।
 'संपइ य वट्टमाणा' जागिवा ।

- 10 § 61) अथवा जव्वून्य पद वर्त्तमान जिन यथा—
 सीमंधरो जुगंधरु वाहु सुवाहु महाविदेहंमि ।
 मुज्जाय सयंपहो य रिसहाणण णंतविरिओ य ॥ [९९]
 सुरप्पहो विसालो वज्जहर चंदाणणा जिणा ।
 अवरे तह चंदवाहु भुयगा ईसर नेमिप्पहा य जिणा ॥ [१००]
 15 सिरि धीससेण महभद देव-जसरिद्धि तित्थयरा ।
 पढमाणुओगदिट्ठे वीसं वंदांमि तित्थयरे ॥ [१०१]
 प्रथमानुयोग नामि सिद्धांतु तेह माहि जघन्य पद वर्त्तमान वीस जिन नाम इसी पं
 मांमलियइ । यथा श्रीसीमंधरस्वामि १, श्रीयुगंधरस्वामि २, श्रीबाहुस्वामि ३, श्रीसुवाहुस्वामि ४,
 श्रीमुजातस्वामि ५, श्रीस्वयंप्रभुस्वामि ६, श्रीऋषभाननस्वामि ७, श्रीअनंतवीर्यस्वामि ८, श्रीसु-
 20 प्रभस्वामि ९, श्रीविशालस्वामि १०, श्रीवज्जधरस्वामि ११, श्रीचंद्राननस्वामि १२, श्रीचंद्रबाह-
 स्वामि १३, श्रीमुज्जस्वामि १४, श्रीईश्वरस्वामि १५, श्रीनेमिप्रभस्वामि १६, श्रीविश्वसेनस्वामि १७,
 श्रीमहाभद्रस्वामि १८, श्रीदेवस्वामि १९, श्रीयशऋद्धिस्वामि २० ।

- § 62) अथ प्रस्तावइतउ जिसे परि वीस जिन विद्वरमाण छइ तिसी परी लिखियइ । जंबूद्वी
 माहि पूर्व विदेह तणइ उत्तरार्द्धि पूर्व लवणमसुद्र समीपि आठमउ पुष्कलावती नामि विजउ । ति-
 25 पुंउरीकिणी नामि नगरी । तिहां श्री सीमंधरस्वामि इसइ नामि तीर्थंकरु विद्वरइ । १ । तथा अवरविदे
 माहि उत्तरार्द्धि पश्चिम लवणमसुद्र समीपि पंचवीसमउ यमु इसइ नामि विजउ तिहां विजया नामि नग-
 रिहां श्री युगंधरस्वामि इसइ नामि तीर्थंकरु विद्वरइ । २ । पूर्वविदेह माहि दक्षिणार्द्धि पूर्व लवणसमु-
 द्र समीपि नरमउ यत्सु इमइ नामि विजउ तिहां सुसीमा नामि नगरी तिहां श्री बाहुस्वामि इसइ नां
 तीर्थंकरु विद्वरइ । ३ । अवरविदेह माहि दक्षिणार्द्धि पश्चिम लवणमसुद्र समीपि चउवीसमउ नलिगाव-
 30 नामि विजउ तिहां अयोध्या नामि नगरी तिहां श्री सुवाहुस्वामि इसइ नामि तीर्थंकरु विद्वरइ । ४ । त-
 धानुदी मंड द्वीप माहि रि महाविदेह छइ । एक्कु पूर्व दिसि एक्कु पश्चिम दिसि । तउ पूर्व महाविदे
 मंडर पूर्व विदेह उत्तरार्द्धि कायोद समुद्र समीपि आठमउ पुष्कलावती नामि विजउ तिहां पुंउरीकिणी
 नामि नगरी तिहां श्री मुजात इमइ नामि तीर्थंकरु विद्वरइ । ५ । तथा अवरविदेह तणइ उत्तरार्द्धि लवण-
 समुद्र पत्तार समीपि पंचवीसमउ यमु इमइ नामि विजउ तिहां विजया इसइ नामि नगरी तिहां

अंशु स्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । ६ । तथा पूर्वविदेह तगद दक्षिणादि कालोदममुद्र मनीनि
 वनत वलु इन्द्र नामि विजय विहां सुसीमा इन्द्र नामि नगरी विहां श्री ऋग्मानवस्वामि इन्द्र नामि
 तीर्थंकर विद्महे । ७ । अथर्वविदेह तगद दक्षिणादि लयगममुद्र परदार मनीनि पञ्चमीमनत्र नलिजगती
 नामि विजय विहां अयोध्या नामि नगरी विहां श्री अनन्तवीरस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । ८ ।
 तथा पश्चिम महाविदेह तगद पूर्वविदेहि उत्तरादि लयगममुद्र परदार मनीनि आठमत्र पुष्करावती नामि
 विजय विहां पुंडरीकिणी नामि नगरी विहां श्री सूर्यनस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । ९ । तथा
 अथर्वविदेह तगद उत्तरादि कालोदममुद्र मनीनि पंचमीमनत्र वनु इन्द्र नामि विजय विहां विजया नामि
 नगरी विहां श्री विशालस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । १० ।

§63) तथा पूर्वविदेह तगद दक्षिणादि लयगममुद्र परदार मनीनि नरमत्र वलु इन्द्र
 नामि विजय विहां सुसीमा नामि नगरी विहां श्री यक्षधरस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 10
 11 । तथा अथर्वविदेह तगद दक्षिणादि कालोदममुद्र मनीनि पञ्चमीमनत्र नलिजगती नामि विजय
 विहां अयोध्या नामि नगरी विहां श्री पद्मानवस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 12 ।
 तथा पुष्करावती वीरगद्वे माहि वि महाविदेह एतं । एक पूर्वदिशि एक पश्चिम दिशि । तत्र
 पूर्वमहाविदेह तगद उत्तरादि मानुषोत्तर पर्वत मनीनि आठमत्र पुष्करावती नामि विजय विहां
 पुंडरीकिणी नामि नगरी विहां श्री चंद्रबाहुस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 13 । तथा अथर्व
 विदेह तगद उत्तरादि कालोदममुद्र परदार मनीनि पंचमीमनत्र वनु इन्द्र नामि विजय विहां विजया
 नामि नगरी विहां श्री मुक्तगवामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 14 । तथा पूर्वविदेह तगद दक्षिणादि
 मानुषोत्तर पर्वतमनीनि नरमत्र वलु इन्द्र नामि विजय विहां सुसीमा नामि नगरी विहां श्री ईश्वरस्वामि
 इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 15 । तथा अथर्वविदेह तगद दक्षिणादि कालोदममुद्र परदार मनीनि
 पञ्चमीमनत्र नलिजगती नामि विजय विहां अयोध्या नामि नगरी विहां श्री नैमिषनस्वामि इन्द्र नामि
 तीर्थंकर विद्महे । 16 । तथा पश्चिम महाविदेह तगद पूर्वविदेहि उत्तरादि कालोदममुद्र परदार मनीनि
 आठमत्र पुष्करावती नामि विजय विहां पुंडरीकिणी नामि नगरी विहां श्री विशम्भनस्वामि इन्द्र नामि
 तीर्थंकर विद्महे । 17 । तथा अथर्व विदेह तगद उत्तरादि मानुषोत्तर पर्वत मनीनि पंचमीमनत्र वनु इन्द्र
 नामि विजय विहां विजया नामि नगरी विहां श्री महामद्रस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 18 ।
 तथा पूर्वविदेह तगद दक्षिणादि कालोदममुद्र परदार मनीनि नरमत्र वलु इन्द्र नामि विजय विहां
 सुसीमा नामि नगरी विहां श्री देवस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 19 । तत्र एक देवस्वामि
 इन्द्र नामि विजय विहां अयोध्या नामि नगरी विहां श्री पद्मविन्दस्वामि इन्द्र नामि तीर्थंकर विद्महे । 20 ।
 तत्र एक अमिषवीरस्वामि इन्द्र नामि इन्द्र ।

§64) वीरसिंह तिन तगद वनुनातु आजुनमातु वरुनं लंजन श्री सुजातिनि नरमत्र वलुनातु । 1
 हेर हेर विजयनायक श्री सुनबाहु, श्री महाबाहु मनुष्य वनुनातुमंत्रिपरदार वीरगद्विज एतं ।

§65) तथा पूर्वविदेहोत्तरादि अथर्वविदेहोत्तरादि पूर्वविदेह दक्षिणादि अथर्वविदेह दक्षिणादि
 संस्तिन एतं आठ आठ विजय विदेह तीर्थं माहि अथर्वविदेह विदेहनातु हेर वलुनातुमंत्रिपरदार वलुनातु व वरु
 एक तीर्थंकर रहतं परिवारात्वा वती वदियतं । इय व वलुन वरुनातुमंत्रिना । एतु व वरुनातुमंत्रिना
 वनं तीर्थं तगद परिवारि जलियतं । साधी-मरु-परिवारनातु मनीनि वती । तीर्थंकर 20

समानुसारि जाणिवउं । जि नगरी कही ति मूलभूत भणी कही छइं । अन्यत्रहिं योगिय देसि वीसइ जिन विहरइं इसउं पुणि जाणिवउं । ति पुणि वीसइ जिन 'संपइय वट्टमाण' इगि करी जाणिया ।

§66) 'सव्ये तिविहेण वंदामि' ति अतीत अनागत वचमान सगलाई जिन 'तिविहेण' मनि वचनि कायि करी 'वंदामि' यांदउं । अथ द्रव्याहंत अतीत-अनागत, भायाहंतहं जिम किसउं वंदनयोग्य ? अतिशय करी वंदनयोग्य सर्वत्र नाम-स्थापना-द्रव्याहंत भायाहंत नी अवस्था चित्ति घरी करी नमस्करणीय ।

§67) भरतचक्रवर्ति तिसीही जि परि नमस्करिया । तथा हि-

‘एकदा श्रीशुभदेवः श्रीअयोध्यानगरीपरिसरे समवसतः । भरतो वंदितुं समागतः । वंदित्वा अवसरे पृष्टवान्-भगवन् ! किं कोऽपि परिपदि जीवोऽस्ति योऽस्वामयसर्पिण्यां जिनो भविष्यति ? । भगवानाह-तव पुत्रः परिव्राजकमतप्रवर्त्तको मरीचि नामा भरते भावी त्रिष्टुष्ठाभिघः प्रथमो वासुदेवः । विदेहेषु मुक्तापुर्यां प्रियमित्रनामा चक्री । भरते अत्र श्रीवीरश्रुतुर्वीशो जिनः । इति श्रुत्वा भरतचक्री मरीचि वचंदे । आह च-न ते पारिव्राज्यं वंदे, न चक्रित्वं वंदे, आहंन्यं त्रिजगद्व्यं यत्ते भविष्यति तदधुनाप्यहं वंदे । ततः प्रदक्षिणात्रयं दत्त्वा भक्तिर्भरो भरतचक्री तं वंदित्वा गृहं गतः । एवमन्यत्र-नेरपि भावाहंतपदवीं मनसि धृत्वा नामाहंतो द्रव्याहंतः स्थापनाहंतश्च वंदनीयाः’ ।

§68) इसी परि द्रव्याहंतहं रहइं नमस्करणीयत्वइतउं पूर्वसूरि आचीर्णता भावइतउं 'जे अईया' गाहा जुगत हुई । द्रव्याहंतवंदनारूपु बीजउ अधिकारु । इति प्रथम वंदकु संपूर्णु ॥

§69) तउ पाछइ ऊठी करी-

चचारि अंगुलाई पुरओ, ऊणाइ जत्य पच्छिमओ ।

पायाणं उस्सग्गो एसा पुण होइ जिणमुहा ॥

[१०२]

एयरूप जिनमुद्रायत्तमानु चैत्यस्तवदंडकु पढइ ।

(२०) अरहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं सं० १ ।

अरहंत भावाहंत तीहं ना चैत्य चित्तसमाधिजनक प्रतिमालक्षण अरहंत चैत्य तीहं रहइं वंदनादिक प्रत्यउ काउस्सग्गु करउं इति क्रियासंबंधु करिवउ । काय नु उत्सागुं स्थान मौन ध्यान क्रिया पाखइ अपर क्रियांतर परिहारि करी त्यागु काउस्सग्गु कहियइ । सु करउं किसइ कारणि ?

(२१) वंदणवत्तियाए पूयणवत्तियाए सकारवत्तियाए सम्माणवत्तियाए घोहिलाभयत्तियाए निग्गवत्तियाए । सं० २ ।

§70) वंदनु प्रशस्त मनोवाक्यप्रवृत्ति लक्षणु । 'तत्प्रत्ययं' तेह नइ कारणि । जिसउं पुण्यु वंदनि कीयइ हुयइ जिसउं पुण्यु काउस्सगि करी हुउ इसा अर्थ नइ कारणि । पूजनु गंधमालयादिकहं करी, तत्प्रत्ययं पूर्वयत् । 'सकारवत्तियाए' सत्कारु वखाभरणादि दानु तत्प्रत्ययं पूर्वयत् । पूजासत्कार द्रव्यस्तवत्वइतउ ।

छजीवकापसंजमो दव्ययए सो विरुज्झइ कसिणो ।

तो कसिणसंजमविऊ पुप्फाइयं न इच्छंति ॥

[१०३]

पइविध जीव निरुप संजमो दया परिणामो, 'द्रव्यस्तवे' द्रव्यस्तव विपइ सु दयापरिणामु 'कसिणो' सगद्ध 'विरुप्यते' विरुद्धउ हुयइ, तिणि कारणि 'कसिणसंजमविऊ' समस्त संजमपंडित

पुष्पादिकु हाथेई लेवा न बांछई इति गद्यार्थः । 'इत्यादि' यचनइतउ साधु रहई द्रव्यस्तु किसी परि' नचितु हुयई । तथा थावकि पुणि साक्षात्कारि पूजासत्कार कीयाई जि छई इणि कारणि थायकहीं रहई किसी परि उचितु हुयइ । इसउं जेतीवार को भगइ तेतीवार कहियइ । साधु रहई द्रव्यस्व न निषेध करणरूपता करी छई । कारणु अनइ अनुमति मोकलिय जि साधु रहई छई ।

अकसिणपवचमाणं विरयाविरयाण एस खलु जुचो ।

संसारपयणुकरणे द्बवत्थाए क्वदिहंतो ॥

[१०४]

'अकसिण पवत्ता' देसविरत, 'विरयाविरय' काई विरत काई अविरत विरत्ताविरत, थायक श्रमणोपासक तीई रहई एउ द्रव्यस्तु छलु निश्चई जुगुतु करिया समुचितु । 'संसारपयणुकरणे' संसारलसुकरणे द्रव्यस्ववे 'कूप विहंतो' द्रव्यस्वव विषइ कूपु छहंतु । अथ भाथार्थः— जिम कूपि खणीतइ सह घृति भरियइ जलि नीसरियइ हंतइ सगळ मळु जळपखालि करी जाइ विम द्रव्यस्ववि कीजतइ १० जदपि हिं जीवविनासु संभवइ तथापि हिं द्रव्यस्ववि कीपइ कीजतइ अनेकहं जीवहं रहई संयोधु उपजइ । तउ पाळइ जि संयुजहई ति सगळई जीव जां जीवई तां अथया जां संसार तां हिंसा न करई । तथा थ मणितं—

पुढवाईयाण जई वि हु होइ विणासो जिणालयाहिंतो ।

तत्तिसया वि सहिट्टिस्स नियमओ अरिथ अणुकेपा ॥

[१०५] 15

एयाहितो बुद्धा विरया रक्खंति जेण पुढवाई ।

इचो निव्याणया अवाहया आभवमिमाणं ॥

[१०६]

इत्यादि उपदेस दानि करी करावणु जइ रहई संभवइ । भगवंत तगइ विशिष्टपूजा दुईनि प्रमोदानुभवदिकहं करी अनुमति पुणि संभवइ । इणि कारणि 'पूयणवत्तियाए' 'सत्कारवत्तियाए' इसउं साधु रहई भगिवा जुक्तउं ।

20

§71) तथा हि—

सुब्बइ य वयररिसिणा कारवणं पि य अणुट्टियमिमस्स ।

यायमांयेसु तहा एयमाया देसणा चेव ॥

[१०७]

'अयते वज्रस्वामिना' सांभलियइ जु वयरस्वामि रिपि 'इमस्स' एह द्रव्यस्वत तगउं कारवणु 'अणुट्टिउं' कीचउं । यथा— माहेच्छी नामि नगरी, तिहां श्री वज्रस्वामि पदुयणा पविं संच नइ उपरोपि 23 जलनप्रभ नाम व्यंतरदेव कन्हा अनइ श्रीदेवी कन्हा पुण्यलक्ष अनइ सहस्रपत्र कमलु आणी करी देवपूजा करायी प्रभावना गरुई कीची वीद्ध नी मानग्लानि रची । तथा चोक्तं—

जलणगिहाओ माहेसरीइ कुसुमाणि जेणमाणिसा ।

तच्चन्नियाण माणो मलीओ संपुब्बई विहिया ॥

[१०८]

'तच्चन्निया' शौद्ध तीई नउ मानु अहंकार मलिउ उतारिउ । रोपं सुष्टम् । थायगण्येसुं उमा-30 स्वातिवाचकविरचित प्रथमरत्नादि प्रकरणहं माहि 'एयमाया देसणा ।' द्रव्यस्वव करावण विषइ नी देसना उपदेस पढति छई । जउ इसी परि साधु रहई द्रव्यस्वव विषइ करावणु अनइ अनुमति छई तउ जिनि थायकि पूजासत्कार कीया हुयई तेह रहई भावपूजारूपता करी भकि अतिसयसंगति निमित्तु पूजामत्कार थायनालक्षण एह नउं भणलु अधिकपुण्यनिबंधलु भगनीऊ जु हुयइ ।

§72) किं च भगवंत तीर्थकर अति आदरि वांदीता ईं पूजीता ईं हूता पुणि तो ईं सर्वथा वांदिया पूजिया न हुयईं । अनंतगुण भगवंत, पूजा पुणि परिमित इ जि । तिणि कारणि एह अर्थं विपद कांडपकु

कहियई-
८-११२६-३
§73) दशाण्णंपुरु इसईं नामि नगर, तिहां दशाण्णंभट्ट नामि राजा, तिहां दशाण्णं नामि ६ गिरि । अनेरइ दिनि श्री महावीरु तिहां समोसरिउ । उद्यानपालकि श्री महावीरसमागमनि करी दशाण्णं-भट्ट राउ वधाविउ । अतिहर्षप्रकर्ष वसइतउ राउ सिंहासन हूंतउ ऊठिउ, श्री महावीर सांमउ^१ सात आठ पग जाइ उचरासंगु करी तिहां ईं जि थिकउ विधिसउ^२ वांदइ । सिंहासनि पइसी उद्यानपालक रहईं पारितोषिकु दानु दे^३ करी चित्त माहि चीतवइ । प्रभाति तिम किमइ श्री महावीरु वांदिसु जिम अनेरइ किणिहि^४ न वांविउ । इसउं ध्यायतइ^५ हूंतइ नगरसोभा करावी प्रभातसमइ स्फारु शृंगारु करी अतिसार 10 अलंकार पहिरी सर्वसमृद्धि सहितु सामंत मंत्रिमंडलेश्वर^६ परिवरि^७ सांतःपुरु हस्तिरकंधममारुदु चतुरंग कटकसमेतु आपणइ^८ लक्ष्मीमदि करी त्रिमुवनु तृण^९ जिम मनतउ^{१०} हूंतउ श्री महावीरदेव वांदिया चालिउ । पदि २ गीत नृत्य नाटक कौतुक करावतउ कनकदान रूपदान वस्त्रादिदान^{११} दियतउ हूंतउ दशाण्णंभूपर कन्हइ आविउ । गंधर्षिपुर हूंतउ ऊतरी करी समयसरण माहि त्रिन्दि प्रदक्षिणा दे करी श्री महावीरु प्रणमी करी यथास्थानि वइठउ ।

15 §74) एतलइ प्रस्तावि सौधमेंडु अवधिज्ञानि करी तेईं तणउं चित्तु जाणी करी चीतविवा लागउ । अहो ! दशाण्णंभट्ट रहईं विश्वपूज्य पूजन विपद केवढउ रागु ! अहह ! परं सु रागु ऋद्धिमददूषण कणि^१ करी कलुपितु । सर्व सुरासुररननायक जइ आपणी^२ सर्वसमृद्धि विस्तारी करी तीर्थकर रहईं समकालु पूजईं तथापि हिं सर्वप्रकर्षि करी पूजितु न होइ । अमानगुणु भगवंतु, पूजा सर्वप्रकर्षकृतईं परिमित इ जि । इणि कारणि एह नईं मानु ऊतारउं । आपणी शक्ति अन्हइ भक्ति दिखालउं । तईं पाछइ 20 आभिओगिक एरावणं देव फन्हा जिसां जंगमपर्वत हुयईं^३ तिसा चउसद्विसहस्र हाथिया कराथिया । एकै एक हाथिया रहईं पांचसईं^४ वारोचर मुख तीईं तणी संख्या त्रिन्दि^५ कोटि सत्तावीसलाख अठसद्विसहस्र ३,२७,६८०००० । एकै एकै^६ मुखि आठ आठ दांत तीईं तणी संख्या छव्वीस कोटि एकवीसलाख चउतालीससहस्र २६,२१,४४००००^७ । दांति दांति आठ आठ बावि तीईं तणी संख्या वीसईं नवोत्तरकोटि एकहुत्तरिलाख पावनसहस्र २०९,७१,५२०००० । बावि बावि आठ आठ कमल 25 तीईं तणी संख्या सोलसईं सतहुत्तरकोटि बहुत्तरिलाख सोलसहस्र १६७७,७२,१६०००० । कमलि कमलि एकु एकु लामु पत्र तीईं तणी संख्या सोलै कोडाकोडी सतहुत्तरि^८ कोडिलाख बहुत्तरिकोडिसहस्र^९ एकुसउसईं कोटि १६७७,७२,१६०,०००००००^{१०} । पत्रि पत्रि बओसवहु नाटकु । कमलि कमलि

§73) 1 Bh. L. omit. 2 Bh. L. omit. P. तिहं । 3 Bh. L. P. इसइ नामि । 4 Bh. L. वापुइउ । P. सामइउ । 5 L. तिहांईं । 6 L. तिधिसिउं । 7 L. देईं । P. omits. 8 Bh. किणिहि । L. इणइईं । 9 L. ध्यायतईं । P. प्यातइ । 10 L. मंडलेश्वर । P. मंडलेश्वरि । 11 L. परिवारिउ । 12 L. आगन P. आपणपईं । 13 P. त्रिण । 14 P. मानतउ । 15 Bh. L. वस्त्रादिकदान । §74) 1 Bh. अतिधिज्ञानि । 2 P. तेईं । 3 Bh. L. चीतविवा । P. चितविवा । 4 Bh. L. एण तणि । 5 L. omits. 6 Bh. L. पूजईं । 7 L. सर्व प्रकृत । 8 L. नईं । P. एहं नईं । 9 P. तां । 10 Bh. P. एरावण । 11 B. हुंतइ । 12 B. एहा । L. omits. 13 B. P. पांच पांच सईं । 14 P. त्रिन्दि । 15 L. omits. 16 P. ३४,०००, which is a correction over original ३४,००० । 17 L. अठ अठ । 18 P. सोलइ । 19 L. सतहुत्तरि- । P. सतहत्तरि । 20 P. बहुत्तरि- । 21 L. सतइ । 22 L. १६००० ।

एक कर्णिका तीहं तणी संख्या सोलसइं सतहुत्तरकोडि बहुत्तरिलाखें सोलसहरस १६७७,७२,
 ०००। कर्णिका कर्णिका ऊरि एकु एकु प्रासादु तीहं तणी संख्या सोलसइं सतहुत्तरकोडि बहुत्तरि^{२३}
 ३ सोलसहरस १६७७,७२,१६०००। प्रासादि प्रासादि आठ आठ अममहिपो सहितु श्री सौधर्मदु
 ५३ इंद्ररूपसंख्यें सोलसइं सतहुत्तरकोडि^{२४} बहुत्तरिलाखें सोलसहरस १६७७,७२,१६०००। इंद्राणी-
 संख्या तेरह कोडिसहरस चियारिसइं एकवीसां कोडि सतहुत्तरिलाखें अट्टावीस सहस्र १३,४२१,^{२५}
 १,२८०००। नाटकसंख्या पांचसइं छत्रीसां कोडाकोडी सत्यासीलाख कोडि^{२६} नव कोडिसहरस एकु सउ
 तउं कोडि ५३६,८७०,९,१२०,०००००००। एतलं नाटक जोयतउ हूंतउ एतले रूपे श्री सौधर्मदु
 ली ऋद्धि विस्तारी करी दशाण्णपुर नगर समीपि दशाण्णपर्वति आविउ। इसउं कथनु दशाण्णभट्ट
 गइ देवे कहिउं। त्रिन्हि^{२७} प्रदक्षिणा दे करी गजाधिरूडि श्री सौधर्मदुरि नमतइ हूंति^{२८} गज तथा अमपाद
 ल भूमि माहि खूपइं तिम पापाण माहि खूता। तिणि कारणि गजाप्रपदु इसइ नामि तेउ तीर्थु उचमु १०
 ऋद्धिगणु हूयउं। दशाण्णभट्ट राजा इंद्र तणी ऋद्धि देखी करी ऋद्धिमद रहितु हूंतउ चित्ति चीतयइ।
 हो रूपं ! अहो रूपं ! अहो लक्ष्मी ! अहो लक्ष्मी ! अहो अंतःपुरं ! अहो अंतःपुरं ! अहो भक्ति !
 हो भक्ति ! अहो शक्ति ! अहो शक्ति ! कूपमंढक जिम मइं आपणी ऋद्धि देखी^{२९} करी
 गयु ल्याउं, तिणि कारणि मू रहइं अनर्थदायक ज इय राज्यऋद्धि^{३०} तेह पाले मू रहइं सारिउं !
 तउं^{३१} ध्याइं करी पंचमुष्टिकु लोचु करी श्री महावीर समीपि दीक्षा लीयी। तउ इंद्र आपणपउं जीतउं १५
 गनतउ हूंतउ दशाण्णभट्ट राजऋद्धि ने पाए पडिउ। धनु धनु तउं जिणि तइं^{३२} दुःपूर प्रतिज्ञा पूरी
 कीयी। जिणि मोहि हउं जीतउ, तेउ^{३३} मोहु पंचमुष्टिकु लोचु करतइ हूंतइ तइं पंचावत्यु करी लूसिउ^{३४}।
 पुनरपि पुनरपि इसी परि^{३५} इंद्र दशाण्णभट्ट रहइं संस्तवी संस्तवी देवलोकि पढुतउ। दशाण्णभट्ट राजऋद्धि
 देवलेशानु ऊपाडी सकल कर्मभूउं^{३६} करी मोक्षि गयउ।

इसी परि पूजासत्कार भावस्वरूपत्वइतउ भणनीय जि। 'सम्मानवत्तियाए' सन्मानु स्तवनादिकहं २०
 करी गुणोत्कीर्तनु 'तत्प्रत्ययं' पूर्ववत्। ए वंदनादिक आशंसा किसइ कारणि इत्याह—'बोधिलाभवत्तियाए'
 बोधिलामु मवांतरि जिनधर्म नी प्राप्ति, 'तत्प्रत्ययं' बोधिलाभप्राप्ति पुणि किसइ कारणि इत्याह—'निरु-
 वसम्मानवत्तियाए' निरुवसम्मानु जन्मादिकहं उपद्रवहं रहितु मोक्षु 'तत्प्रत्ययं'। एउ काउसग्गु श्रद्धादिकहं
 पासइ बहुफलु न हुयइ इत्याह—

(२२) सद्दाए मेहाए धीए धारणाए अणुप्पेहाए चद्धमाणीए ठामि काउसग्गं।^{२५}
 सं०। ३।

§७५) 'श्रद्धया' वासना करी आपणइ भावि न पुणि बलाम्भियोगि। 'मेघया' हेयोपादेयरूप
 बुद्धिमावि करी न पुणि जडभावि करी, अथवा 'भर्यादया' मेराभावि न पुणि असमंजसभावि करी।
 'धृत्वा' मनः सुख्यताभावि न पुणि रागादिरोप कलपित भावि करी। 'धारणया' अहंतगुण अविसरणरूप
 मरिसिरता तिणि करी, न पुणि शून्य भावि करी। 'अनुप्रेक्षया' अहंत ना जि गुण तीही नि जउं पुनरपि ३०
 पुनरपि चितनु तिणि करी, न पुणि तेइ नइ अभावि करी। 'वर्द्धमानया' श्रद्धादिकहं सवही पदहं
 'वर्द्धमानया' इसउं पदु संबंधियइ। वर्द्धमान श्रद्धा करी, वर्द्धमान मेधा करी इत्यादि। एवमादिकहं
 हेतुइं करी 'ठामि काउसग्गं'।

23 P. वत्तरे। 24 L. सोलसइं सतहुत्तरि बहुत्तरि कोडि। P. सोलसइं सतहुत्तरि कोडि वदत्तरि। 25 Bh. P.
 ईदरुणु-1 L. ईदरुणि। 26 L. सतहुत्तरि। P. सतहुत्तरि। 27 P. वदत्तरि। 28 Bh. L. सतहुत्तरि। P. वदत्तरि।
 29 P. सताली-1। 30 P. त्रिणि। 31 Bh. L. P. हूंतइ। 32 P. omits. 33 P. सकिः। 34 P.
 omits. 35 Bh. L. omit. 36 L. राज्ये ऋद्धि। 37 L. इसउं। P. इत्तउ। 38 L. omits. P.
 इ। 39 P. तउ। 40 P. omits. 41. L. omits. 42 L. धर्मद्वउ।

वसुदेव तीहं रहइं पूज्यु इति वसुपूज्यु, वसुपूज्यु जु वासुपूज्यु १२ । निरुक्तिवसइतउ नीपजइ इति सामान्य अर्थु । वसुपूज्यराय नउ दीकिरउ वासुपूज्यु इति विशेषनासु । १२ ।

विमलज्ञानादिक गुण एह रहइं अथवा विमलु निर्मलु एउ इति विमलु १३ । इणि गर्भिं स्थिति हुंतइ माता नी मति मलरहित हुई, तनु पुणि विमल हुई इति विमलु । १३ ।

5 अनंतकर्म ना अंश जीता इणि इति अनंतजितू । अथवा अनंतज्ञानादिक गुण एह रहइं ह्या इति अनंतु १४ । इणि गर्भिं वर्त्तमानि अनंतु रत्नदासु माता स्वप्नि दीठउ इति अनंतु वि० १४ ।

दुर्गति पढता जंतुसंघात रहइं धरइ इति धर्मु १५ । गर्भस्थिति स्वामी हुंतइ माता दानादि धर्मपर हुई इति धर्मु । १५ ।

शांतिश्रमातन्मयत्वइतउ शांति १६ । गर्भस्थिति इणि पूर्वजात अशिव नी शांति हुई इति 10 शांति । १६ ।

§ 82) कु पृथिवी तेह माहि थिउ रहिउ इति निरुक्तिवसइतउ कुंथु १७ । इणि गर्भिं स्थिति हुंतइ मातां रत्नविचिनु^१ कुंथु जीवु दीठउ । अथवा अरि कुंथु सरीखा पिता रहइं ह्या इति कुंथु । १७ ।

भव्य जीवहं रहइं संसारपातकारि रागादि मति न राति न दियइं इति अरु १८ । गर्भिं थिकइ इणि सर्वरत्नमउ अरउ चक्रावयवु मातां स्वप्नि दीठउ इति अरु । १८ ।

15 परीपहादि महजयकरणइतउ मल्लि १९ । आर्पत्वइतउ इकारु । इणि गर्भिं स्थिति हुंतइ माता रहइं सर्वकृतु कुसुममालाशयनीय दोहलउ देवता पूरिउ इति मल्लि । १९ ।

जग रहइं त्रिकालावस्थानु मनइ इति मुनि शोभनव्रत एह नां इति सुव्रतु । जु मुनि पुणि सुव्रतु पुणि हुयइ सु मुनिसुव्रतु २० । इणि गर्भिं वर्त्तमानि माता मुनि जिम सुव्रन हुयइ इति मुनिसुव्रतु । २० ।

परीपहादि नामनु करइ इति नमि २१ । गर्भस्थिति हुंतइ इणि प्रत्यंतराय नगरविरोधक भगवंत 20 माहृदर्शनवसइतउ उपशमिया नमिया इति नमि । २१ ।

अरिपु दुरिपु तेह विपइ नेमि चक्रधारा जिसी हुयइ तिसउ इति अरिष्टनेमि । २२ । गर्भस्थिति हुंतइ परमेश्वरि माता रिष्टव्रमउ नेमि स्वप्न माहि दीठउ इति रिष्टनेमि २२ । एह हुंतउ अनेरउ रिष्टनेमि नही इति अरिष्टनेमि । २२ ।

सर्वभाय देवइ इति निरुक्तिवसइतउ पार्थु २३ । इणि गर्भिं स्थिति हुंतइ रात्रि समइ अंधकारि^२ 23 धालदारणु सणु रायइस्त पार्थि जायतउ मातां दीठउ इति पार्थु । २३ ।

उत्पत्ति लगी शानादि गुणहं करी बाघइ इति वर्द्धमानु २४ । इणि^३ गर्भिं स्थिति हुंतइ ज्ञातहुउ धनधान्यादि भावि बाधिउं इति वर्द्धमानु २४ । तथा महावीरु इसउं वीजउं नामु प्रसिद्धउं । जिम महांतु वीरु मुभउ आपणा बर्री एकलउ थिकउ जिणइ तिम अंतरंग वयरी आठकर्म जीतां तिमि कारमि मदारवीरु २४ । उन्मद्यान समइ इंद्रसंसय फेडिया कारणि महांतु अवि पर्वतु मेरु तिमि 30 वामनादांगुष्ठि धांरी करी ईरिउ कंगायिउ सु महावीरु । २४ ।

§ 83) इमी परि कीर्ती करी चित्तगुढिनिमित्तु प्रमिधानु कहइ । 'एवं मए' इत्यादि । 'एवं' पूर्वोच्यन्कारि 'मए' मरुं 'अनिपुया' अमिपुता नामे करी कीर्त्तिया कहिया । जि किसा 'विदूयपमला' जु बांथियइ छर, कर्मुं सु रजु, पूर्तिइ जु बाधउं सु मलु । अथवा जु वदु सु रजु निकाचितु जु सु मलु ।

[२] 1 Bh. मयउ । 2 Bh. मयकारे । 3 Bh. places इनि after गर्भस्थिति हुंतइ ।

अथवा ईर्ष्यापंथकर्म रज्जु संयत्तय कषाय तीहं करी जु कीषयं सु मल्ल कर्मु । ति वे रज्जु अनइ मल्ल जीहं विपूत विनष्ट कीषां ति विपूत रज्जोमल । इमिहिं जि कारणि 'पहीणजरमरण' जरामरण रहित चतुर्विंशतिरपि जिनयरा । उपशंत मोहादि जिन हंता धरत्रिणवर, तीर्थकरा 'पसीयंतु' मू रहइं प्रसादपर हुयं । जइ वीतराग तउ प्रसन्न किम हुयइं ? जिम चिंतामणि कामयेतु कल्पद्रुमादिक पदार्थ अज्ञानइ हंता रागु अनइ द्वेषु करी उपरि न करइं । तथापि हिं आराधक रहइं वांछितकारक हुयइं । इसी परि 5 तीर्थकर पुणि आराधिता हंता प्रसादपर वांछितपूरक हुयइं । चित्तशुद्धि करी पुण्यबंधु हुयइ । पुण्य-बनइतउ सर्वसमीहितसिद्धि हुयइ । वेइ रहइं कारण तीर्थकर परंपरा करी इति प्रसादपरा भवंति ।

[84] तथा 'कित्तिप'लादि । कीर्तिया' नामही जि करी भणिया वंदिया काय-चित्त-वचनइं करी च्चविया, महिया पुप्पादि मुरभिद्रव्यइं करी पूजिया 'जि ए' ऋषमादिक 'लोगस उत्तमा,' लोक प्राणिवग्गु वेइ माहि कम्ममलाभावि करी उत्तम 'लोगस उत्तमा,' 'सिद्धा' निष्ठितार्थ कृतकृत्य सांसारिक' कार्य तथा 10 अभावइतउ । अरोगु नीरोगु वेइ नउ भातु आरोग्यु मोक्षु वेइ निमित्तु बोधिलामु जिनधम्म नी प्राप्ति सु द्वियं । बोधिलामादांसनु निदानु न हुयइं । उत्तरकालि मोक्षपरिणामइतउ बोधिलामनित्तु कहइ । 'समाहिदरं' वरसमाधिं मुत्सत्तारूपमाय समाधि । सु समाधिगुणुं बहु बहुतर बहुतमादिकइं भेदइं करी अनेकप्रकारु हुयइ इत्याइ 'उत्तमं' सर्वोत्कृष्टु ।

[85] भावसमाधिगुण प्रकटीकारुं जिनदत्त श्रेष्ठि कथानकु लिखियइ । इत्याइ^१— 10
वेशालि नामि नगरी । तिहां छन्नखु श्री महावीरु एकवार उद्यानवनि वर्षाकालि देवकुल माहि छाउस्सग्गि रहिउ । तिणि नगरी परमश्रावकु जिनदत्तु नामि हंतउ श्रेष्ठिपद भ्रष्ट हंतउ जीर्णश्रेष्ठि इसइ नामि सुविल्यातु हुयउ । मिशाभ्रमण तगइ अभावि करी श्री वीरु उपोषितु जाणी करी वांदी करी धरि आविउ । इसी परि नित्तु नित्तु करतइ वरसाउत तिणि लांघिउ । आपगा मन माहि चीतवेवां छागउ । 'जइ किमइ आनु माहरइ परि श्री महावीरु पारणउं करइं तउ हउं तारिउ हुयउं' । इसउं प्यायतउ हंतउ विशुद्धमावि 20 हर्षनिचित्तु परधरि र्ही करी चीतवइं । 'जइं इहां श्री महावीरु आवइ जंगम कल्पद्रुम जिम, तउ हउं मल्लकि चंद्रांजलि हंतउ भगवंत रहइं संमुत्तु जाउं । जिन्हिं प्रदक्षिणा दे करी सपरिधार थिकउं वांदउं । तउ पाइइ धर माहि पाउ घारावउं' । जंगम निधान जिन-प्रधानइं^२ प्रासुकैपणीयइं पानान्नइं करी मच्छियसइतउ भयसिंधु तारणउं पारणउं करावउं । पुनरपि नमस्कारी करी केतलाई एकि पग भगवंत रहइं अनुगमनु करउं । पाइइ आपणउं^३ धन्यु मनतउ हंतउ आपणपइं रोपु उगरीउं^४ धान्यु हर्षितु^५ विकउ जीमिनु' ।

इसी परि मनोरवमाला जिनदत्त रहइं मन माहि करता हंता, अभिनवश्रेष्ठि नइ धरि मिश्रा-निमित्तु श्री महावीरु आविउ । अभिनवश्रेष्ठि चेडी^६ हस्तगत कोमासइं करी पाराविउ । मुपात्रदान प्रभावि पंच दिव्य तिहां ह्यां, तिहां राजादिलोक^७ मिलिया । अभिननु श्रेष्ठि प्रसांसिउं^८ । भगवंतु श्री महावीरु पारणउं करी अनेरइ धानकि विहरिउ । जिनदत्तु देवदुंदुभि निनाडु सांभली करी चीतविवा^९ छागउ, 30 'विग्गू मू रहइं । अघन्यु हउं जु माहरइ परि भगवंतु न आविउ' । इसी परि महाविपादु करवउ जिनदत्तु लोक जाणिउ । किं बहुना ! राजेंद्रि पुणि जाणिउ धन्यु जिनदत्तु जु^{१०} इसी परि भावना भावइ ।

[84] 1 B. omits. 2 Bh. संगारिक. 3 Bh. omits पुत्तु । [85] 1 Bh. L. omits माव-
2 Bh. L. omit. 3 L. चीतवेवा । P. चीतविवा । 4 P. कर । 5 L. P. चीतवइ । Bh. चेतवइ ।
6 Bh. L. omit. 7 P. जिहि । 8 Bh. कउ । P. omits. 9 P. चारउं । 10 B. Bh. L. जिम
प्रधानइं । 11 P. omits पुनरपि.....आपणउं । 12 P. उगरीउ । 13 L. वेदी । 14 Bh. L. P.
एकदिक लोक । 15 L. प्रयउ । 16 Bh. L. P. चीतविवा । 17 omits.

§86) तदा तिणि नगरी केवली आविउ । राजादिक' लोक' वांदी पूछिउ, 'भगवन् ! जिनदत्तु पुण्यवंतु किं' वा अभिनयु पुण्यवंतु ?' केवली कहइ, 'जिनदत्तु पुण्यवंतु' । लोकु कहइ, 'भगवन् ! भगवंतु अभिनवि पाराविउ जिनदत्ति न पाराविउ ।' केवली तेह नी भावना मूल लगी कही करी कहइ, 'भावइतउ जिनदत्ति पाराविउ । द्रव्यइतउ' पुणि अभिनवि । अच्युतदेवलोकयोग्यु पुण्यु ऊपार्जितं, 5 जइ देवदुंदुभिनिनादु सांभलत' नहीं तउ तेतींहीं जि यार केवलज्ञानु ऊपाडत' । भावरहिति अभिनवि' पुणि सुपात्रदान प्रभावि सुवर्णवृष्टपादिकु फलु लाधउं । समाधिरहितु जीयु इंदिकू जु फलु लइइ, समाधिसहितु पुणि स्वर्गमोक्षादिकु फलु लइइ' । तउ पाछइ जिनदत्त नी प्रशंसा करी राजादिक लोक धरे गया । समाधिविपइ जिनदत्त कथा ।

तथा च भणितं—'चउवीसत्यएणं भंते किं जणइ ।

गोयमा, चउवीसत्यएणं दंसणविसोहीं जणइ' ।

10

§87) तथा 'चंदेसु' निम्मलयरा' कर्ममलकलंक तणा अपगमइतउ चंद्रही हूता निम्मलतर विसुद्धतर । केवलालोकि करी लोकोलोकप्रकाशकारकत्वइतउ । आदित्यही तउ अधिकप्रकाशकर । तथाहि—

चंदाइच्चगहाणं पहा पयासइ परिमियं सिचं ।

केवलियनाणलंभो लोयालोयं पयासेइ ॥

[११४]

15 'सागरवरु' स्वयंभूरमणु समुद्र, तेह जिम 'गंभीर', परीपहादि क्षोभ अभावइतउ । 'सिद्ध' क्षीण अशेष कर्मसिद्धि परमपदप्राप्ति' मू रहइं 'दिसंतु' दियउं ।

§88) अडवीसपयपमाणा इह संपयवन्न दुसयलपपन्ना ।

नाम जिणत्थवरूवो चउत्थओ एस अहिगारो ॥ वीजउ दंडकु । [११५]

20 एयं चतुर्विंशतिस्तु भणी करी सर्वलोक अहंत चैत्यवंदननिमित्तु काउरसग्गु करिया कारणि इसउं पढइ । 'सच्चलोए अरहंतं चैद्याणं' इत्यादि 'योसिरामी'ति यावत् । अर्थु पूर्व जिम ।

§89) न वरं 'सच्चलोए' अधोलोक तिर्यग् लोक ऊर्ध्वलोकरूपि सर्वलोकि, तउ अधोलोकि चमपादिभवनहं माहि मातकोडि बहुत्तरि' छार संख्यहं, तिर्यग्लोकि असंख्यातहं व्यंतरनगरहं माहि, नंदीभ्रपादिद्वीपहं माहि यावननंदीसरि, चत्तारि मानुपोत्तरि चत्तारि कुंडलि चत्तारि रुचकि' तथा यपंधरादिपु तथा अष्टापदसंमेतशिखरि श्री उच्चयंतगिरि श्री शयुंजय धर्मचक्र गजाप्रपद प्रमुह 25 चैत्यहं तथा असंख्यात ज्योतिष्कविमानहं माहि ऊर्ध्वलोकि सौधर्मादि देवलोकि विमान माहि चउरासीलार सत्तांगवइसहस्र तेवीस' संप्यहं चैत्यहं वंदनादि प्रत्यउ काउरसग्गु करउं । इणि हिं जि कारणि स्तुति सर्वजिनसाधारण कहियइं । एउ सर्वलोकस्थापनाहंतस्तव नामु पांचमउ अधिकारु ।

§90) सांप्रतु जिणि करी अहंत जाणियइं, जीवाजीवादिकत्व पुणि जाणियइं, तेउ ध्रुतु स्वयणहारु हंतउ पहिलउं तेह ध्रुतु रहइं कारक तीर्थकर स्वयइ । 'पुष्करवरे' त्यादि । पुष्करवरु द्वीपु वीजउ 30 द्वीपु । तेह नइ अर्द्धि मानुपोत्तरु पवंतु तेह हंतउं उलिउं अर्द्धपुष्करवरुद्वीपाहुं । तिणि अनइ धातुकी खंडि वीजइ द्वीपि अनइ जंबूद्वीपि प्रथमद्वीपि जि मरत ऐरयत महाविदेह, एकवचनु प्राकृतवसइतउ । तउ पाछइ

§86) 1 Bh. L. राजादिके । 2 Bh. L. लोके । 3 L. बदि । 4 Bh. इयनउ । and puts पुं after अभिनवि । 5 P. संभलतं । 6 P. उपाडतं । 7 L. omits. 8 Bh. इंदिकू । L. इह इ । P. इ संभ । 9 L. इत्तर । 10 इत्तर । §87) 1 Bh. -द्रव्यइतउ- । 2 Bh. इतउ । 3 B. adds मन । §88) 1 Bh. -दत्त- । 2 B. Bh. अरहंत । §89) 1 B. Bh. बहुत्तरि । 2 B. स्वर्गि ।

गंध मरत, पांच ऐरवत, पांच महाविदेहरूप पंचदशसंख्यदं क्षेत्रदं माहि । धम्मं धुतधनुं तेह र्हइं
आदिक्ख, धम्मोदिकर तीर्थकर ति 'नमंतामि' नमस्करउं सवउं । एउ पन्नरह कम्ममूनिगत भावाहंत-
सवाभिधानु छट्टउ अधिकाक्ख ।

§91) अथ धुतधम्मं सवइ । 'तमतिमिरे' त्यादि । तमु दशनमोहनीयकर्मोदयरुपुं अहातु
तेऊ जु तिमिर्ह अंधकार तेह नउं पडलु घुंदु तेह र्हइं 'विष्यसइ' विनामइ इति तमतिमिरपडलु विष्यं- 5
सणु । तेह र्हइं वांदउं । सु पुणि किसउं छइ इत्याह-'सुरगणे' त्यादि सुरगणनरेंद्रमहितु । तथा
'सीमाथरे'ति सीमा धर्ममर्यादा तिणि जीव र्हइं धरइ इति सीमाधरु । तेह र्हइं 'वंदे' वांदउं
सवउं । अथवा तेह नउं जु माहाल्यु सु 'वंदे' वांदउं सवउं । तेऊ जु कइइ-'पप्फोडिये' त्यादि ।
प्रक्षिपि करी फोडिउं विणासिउं मोहजालु चरित्रमोहनीयकर्मोदयलक्षणु अहाननटलु सहज बोधवतदं
जीवदं र्हइं जिणि सु पुप्फोडिय मोहजालु तेह र्हइं वांदउं । 10

§92) अनी किसउं छइ ? 'जाइजरे' त्यादि । जाति जन्तु जरा वडपणु मरण परलोकीभवतु
शोछु विपादु इहं सबही जालादिकहं र्हइं 'पणासइ' विगासइ इति जाइजरामरण सोगणसाणु तेह
र्हइं नमस्करउं । अनी किसउं छइ ? 'कहाणे'ति । कल्यु आरोग्यु तेह र्हइं 'अणइ' षोळइ अथवा
'आगइ' पमादइ इति कहाणु । पुक्खलु संपूण्यु । तेऊ अल्यु नहीं किंतु विद्यालु विस्तीर्यु इमउं 15
विशेषणत्रयसहितु सुलु निरुपमानंद रूपु 'आयइइ' करइ इति कहाणपुक्खलविमालमुदायइ, तेह 15
र्हइं वंदे । अनी किसउं छइ ? 'देवे' त्यादि । देवदानयनरेंद्र गणइ करी आर्थितु पूजितु । तेह र्हइं
वंदे । पूर्वदिं सुरगणनरेंद्रमहितु इसइ भणिइ को जाणिसिइ ऊचंलोक सिर्यंम्लोकही जि माहि पूजितु
त्रैलोक्य माहि पूजितु नहीं इणि कारणि कहिउं 'देवदानयनरेंद्रगमच्चियम्म' । इहां दानवपदि करी
त्रैलोक्यपूज्यता कही । अथवा एवं विशेषण सहित धम्मं धुतधम्मं तगउं सारु सामय्युं उपलभी' जाणी
करी 'करे पमार्यं' प्रमादु कउणु करइ अपि तु को न करइं । 20

§93) एह अर्थं विपइ संप्रदायः—

एकिं गच्छि गंगातटि वास्तव्य वि भाई संयमधर हंत विहरइं । तीहं माहा' एकु बहूधुतु हंतउ
सुरि ह्यउ । पाठकशिष्यहं तथा सूत्रार्यवांछकहं सदा सेव्यमातु हंतउ विश्वासु कदाचित् लइइ नहीं ।
एधि समइ पुणि सूत्रार्य-चित्तन-प्रच्छनादिकहं करी विश्वासु न लइइं । तेह नऊ पीजउ भाई मूर्खु सदा
सुखि र्हइइ । आचार्यु तेह नउं सुलु देखी दुबुद्धिवाधितु हंतउ चिति चीतरइ, 'अहो माहरउ भाई 93
सुखिउ । ज्ञानविज्ञानहीनता करी किणिहिं ऊदेगियइ नहिं । हउं पुणि' पलासउनुम जिम' निष्कलि
शानि करी दुक्खिलु ह्यउ । तथा च किणिहिं तेह सरीरइ पंडिति पठिउं—

मूर्खत्वं हि सखे ममापि रुचिरं तस्मिन् यदद्यौ गुणाः

निश्चितो १ बहुभोजनो २ ऽत्रपमना ३ नकं दिवा शायकः ४ ।

कार्याकार्पविचारणेंऽधवाधितो ५ मानापमाने समः ६

प्रायेणामयवर्जितो ७ दृढवपु ८ मूर्खः सुखं जीवति ॥ [११६] 30

इसउं पुणि न चीतवइं—

नानाशास्त्रसुभाषितामृतसैः श्रोत्रोत्सवं कुर्वतां

येषां यांति दिनानि पंडितजनव्यापानरिक्तात्मनाम् ।

तेषां जन्म च जीवितं च सफलं तैरेव भूर्भूषिता
शेषैः किं पशुवद्विवेकविक्रमैः भूभारभूतैर्नरैः ॥

[११७]

इसी परि ज्ञानप्रद्वेषवसइतउ तिणि ज्ञानावरणीउ कर्मु निबहु प्रमाद लगी बाधउं । सु ज्ञानातिचारु
अणआलोई चारिखु पाली मुयउ । चारित्र प्रभावि देवलोकि देयु हुयउ । चवी करी भरतक्षेत्रि किगिहिं
५ आहीरकुलि पुनु हुयउ । अनुरूप कन्या परिणिउ । तेह नइ दीकिरी जाई । सुरूप तरुणपुरुपलोचन
मनोहरिउं जूयउ संप्राप्त हुई । गाढा नइ घुरि स दीकिरि वइसाली तेह नउ पिता नगरि चालिउ ।
आहीरहं सरसउं घी विक्रय करिया कारणि । तेह नउं रूपु देखतां हूता अनेरां आहीरहं तणां मनइं
जिम गाढां पुणि अपभार्मि जायतां भागां । घी रेढायं । तउ विलक्ष यिका आहीर तेह ना पिता
आगइ कहइं । 'अशकटा शकटा-पिता' । इसउं उपहासवचनु वली २ कहइं । एह नउ किसउं अर्थु ?
१० जेह नइ शकट न हुयइं स अशकटा, अथवा ए कन्या नामि करी शकटा नही इति अशकटा । तथा
अशकटापिता अशकटा नउ पिता जनकु अशकटापिता । अथवा शकटापित शकटप्रापित हूता अन्हे
इणि अशकटापित शकटरहित कीधा । इसउ अर्थु सांभली करी लघुकर्मता लगी वैराग्यप्राप्तउ हूतउ
दीकिरी कही सउं परिणावी करी घनु तेह रहइं दे करी व्रतसंप्राप्तु हुयउ । कहि आचार्य कन्हइ
योग वदता हूता आदरपरायण पढता हूता जहिंवार उत्तराध्ययनसिद्धांत नउं चउथउं अध्ययनु 'असंखउं'
१५ इसइ नामि पढिया आरंभिउं तेतीवार पूर्वबद्धु ज्ञानावरणु कर्मु उदइ आविउं । वि दीह आंविळ
करी पढतउ थाकउ तेह रहइं वृच तो ई आवियां नही । किं बहुना ? एकु पदु आविउं नही । धीजइ
दिनि अनुज्ञा समइ गुरु कहइ, 'किसा नी अनुज्ञा तू रहइं दीजइ ?' सु कहइ, 'भगवन् । किसउ तपु
एह नउ ?' गुरु भणइ, 'जां आवइ नही' तां आंविळ तपु । तउ सु भणइ 'भगवन् मू रहइं अनेरइ
तपि करी सरिउं', सिद्धांति पुणि अनेरइ सरिउं । जां एउ नही आवइ तां आंविळ इ जि करिनु । तउ
२० पाछइ निखळ चिचि हूतइ धारह वरस' आंविळ चिचिसमाधिपूर्वक' कीधां । तउ तेह कर्म्म नउ क्षउ
हुयउ' । सुखिहिं सगळं धुतु पढिउं । धुतभक्ति करी इहलोकि सुखभाजनु हुयउ । जिणि कारणि
धुतभक्ति इसी इत्याह ।

§१४) 'सिद्धे भो पयओ' इति । सिद्धु किसउ अर्थु ? अर्थवृत्ति करी नित्यु अथवा अविश्ववाद-
इतउ प्रसिनु प्रमाणप्राप्तु । तेह सिद्ध जिनमतनिमित्तु प्रयतु सावधानु हउं । 'भो' इसउं अतिशय ज्ञानवंतइं
२५ रहइं आमंत्रण । अतिशयज्ञानवंत जाणउं हउं सिद्ध जिनमत निमित्तु प्रयतु सावधानु धिकउ 'नमो' इति
नमस्कारु करउं । सिद्ध जिन प्रवचन नमस्कारि कीघइ हूतइ मू रहइं 'सया' सदा संयम चारिनु तेह

§१३) 1 P. एक. 2 L. माहि. P. माहि. 3 P. गुण. 4 P. omits. 5 L. रुचिरे. 6 L.
प्रमाद लगी निबिद्ध बाधउं । Bh. निबु प्रमादु लगी बाधउं । P. निबु प्रमाद लगी बाधउ । 7 L. नुओ । 8 L.
वर्ति- 9 P. दिक्ती । 10 L. योवनु । P. योवन । 11 L. परि । 12 Bh. L. दीकिरी । P. दिक्ती । 13
Bh. L. वसाली । 14 Bh. सरिउउ । L. सरिउ । 15 L. आहिं । P. अहिं । 16 P. घरे गया । 17 Bh.
P. वरा । 18 L. निखळ । 19 P. दीक्ती । 20 Bh. इतउं । L. सिउं । P. सउ । 21 All the mss.
have वही which has no meaning here, and which may be a result of वही in the
preceding line. 22 L. इयइ । Bh. इयइं । 23 Bh. (in the margin) ; L. पूर्वमवबद्धु । 24 B.
Bh. वेर । L. वेर । 25 L. omits. 26 P. सरिउउ ; and adds a sentence ; सिद्धांतु पुणि अनेरइ
तपि इति वरिउं । which is, evidently, a false repetition. 27 Bh. P. वरिस । 28 Bh. L.
omit विण । P. -पूर्व च । 29 L. reads तउ तेह नउ कर्म्मदय हुयउ and omits इतिहिं.....हुयउ ।
This second line is added in the margin of B.

न विना नदी वृद्धि ह्युत इत्यं आरभ्ये जगितं । 'पद्मं नाम तपो ह्या' इत्यागमरूपनइतं मुनस्मान्
 हे हि नर कश्चिदुत्तरिणात्प ह्युत । इति मुनि मुन्यधर्मं ह्युत आदिप्रथमं वृद्धि आरभ्यतु ।
 मु संयुत विनां सः । 'देवेभ्यः' । देव वैकनिक नागधारणारिक मुन्यधर्मंभोजीनापुमार किन्त-
 स्तंकरिणेन हीनं नः इत्यं समूहं सद्भाभनी की मयाभानि' की' अर्थिणु पूजिणु मु 'देवं नाममुन्य-
 सिन्धुनात्पद्मवृद्धि' कथिना । तेद निमित्तु नमस्कारः । 'देवं' ईदं अनुस्वार, 'समन्वय' ईदं वि ०
 न्वार आह्वारवदः । अथवा अर्थवदः । पुनरि मु निरोपिच विनिष्टं कीजइ । 'लोको जत्ये'ति ।
 वेवेना हीना वयु इति की इति लोदु इत्यु मु लोदु इत्यु जेद मादि प्रनिष्ठं, जेद वनि आयचना
 की वना. इया अयुं । तथा 'अन्तर्निष्ठादि । जय वेवेनायु ऊर्ध्वं अथ विवेकोरुनयणु 'ईदं' इउ,
 वेवेना की वेवेनायुना की अन्तर्निष्ठं, इति विनां मु सः । 'मयायुं' मनुज्यदेवरुपु 'आपेउ'
 पत्नीने जे वेवेना मादि सः मु 'मयायु' कथिना । 'मयायु' वचनयणु नास्करिनेमयु पुनि 10
 कथिनां । एत इया वयुं इत्ययुं वृद्धि जय । मयायु इत्ययु अर्थवृत्ति की निणु, 'विजययो'
 विजयः परादिविजयः' । 'अयुना' कथिनायुं प्राणानु जिम ह्युद विम मुन्यधर्मं 'वर्द्धता' वापउ ।

[95] एवमत्र 'पद्मो वृद्धि मागयो' ईदं वृद्धि । बीजीयार 'अयुनां वृद्धो' ईदं वृद्धि
 इति कथिने ईदं ? वेवेनायुनायुः जीयं इति इति मानवृद्धि कतेरी इया अर्थं नर कारणद
 'मुन्यन मानयो' मुन्यनयनं एतं वेदनायु इत्ययु काउमययु कथिना निमित्तु पदद, 'मुन्यन भगवयो 15
 कतेरी कथिनायु' वेवेनायुनायुः कथिना । अयुं पूर्वं विम । न नरे मुनु मयायुकारि पत्नुरंशुपूर्वयंनु
 मयायु मयायुपरंमनुदु कथिने इति पद्मयो न कथिनां इति कारणि परंमययंनु वेद एतं काउमययु
 वेदनायुनायु कथिना, इया विनायंयु कथिना । एतु पुनि ईदं मुन वनी कतेरी ।

[96] मुन्यनानयय स्यो अदिगारो एव सचमयो । [११८] 20
 इदं पद्मंयय मोनय ननुपरायय वृद्धियया ॥

अथवा इदं वृद्धि मयुं ।

[97] अथानंतरं मयंमुन्यनययभूत निद नमस्करिया निमित्तु इत्यं पदद 'सिद्धायं मुदाय-
 निष्ठादि । निद निष्ठायं विगउ अयुं ? इत्य कथं नि पुनि लोक मादि-
 कथं ? मिये २ य विजाय ३ मये ४ जोगे ५ य आगमे ६ ।
 अय ७ जगा ८ अभिप्राय ९ मये १० कथमकराए ११ इय ॥ [११९] 25
 इया मयनायय अनेकविध । यथा-वर्मासिद्ध १, शिवासिद्ध २, विद्यासिद्ध ३, मंत्रसिद्ध ४,
 वेदसिद्ध ५, आगमसिद्ध ६, अर्थसिद्ध ७, यात्रासिद्ध ८, अभिप्राय पुद्धि निनि की तिद अभिप्राय-
 सिद्ध ९, मयासिद्ध १०, कथंअयसिद्ध ११, इति । इति कारणि भगइ ह्युद हातवत्य, पारयन
 मयकरायाय, अथवा मयंमयाकरायं पारयन । परंपरायन पत्नुरंशुमुन्यनयानाधिरोदलक्षण परंपरा, अथवा
 अथवाशाशादिभ्यवयुते मययत यानयातिप्रयमरुपरंपरा स मया वेद संप्राप्त ह्युत किना ह्या इत्याह- 30
 'वेवेनायुनायय' निष्ठायेति संप्राप्त ह्या ।

[98] इयां विवेकयुं की विविष्ट जि मयंसिद्ध तीर्थसिद्धारि पंचद्वारावेद मिम ते ई जि लिटियई-
 जिप १ अजिप २ त्रिय ३ अनित्य ४ गिदि ५ अन्न ६ सलिग ७ धी ८ नर ९ नपुंसा १० ।
 पनेय ११ मयंपुद्गा १२ पुद्गोदि १३ ग १४ गिका १५ य ॥ [१२०]

[94] 1-2 Bhs. omits. 3 Bh. विजयो. 4 Bh. विजयवद. [97] 1 Bh. कथंअयो. 1
 [98] 1 Bh. कोत. 2 B. omits.

- इहां सिद्धशब्दु सचही पदहं संबंधियह । यथा ऋषभारिणं जिम जि तीर्थंर हूता सिद्धि गया ति तीर्थंकरसिद्ध १ । गौतमादिफहं जिम सामान्य केवलज्ञानिया थिका जि सिद्धि गया ति अतीर्थंकर-
सिद्ध २ । तीर्थु चतुर्विंधु, चतुर्विंधु संधु तिणि प्ररत्तमानि हूतइ जि मुक्ति गया जंगूस्वामीप्रमुनरं, जिम
ति तीर्थंसिद्ध ३ । तीर्थि अप्रवृत्ति हूतइ मरुदेवीस्वामिनी जिम जि मुक्ति गया ति अतीर्थंसिद्ध ४ ।
5 गृहलिंमि वर्त्तमान हूता मरुदेवी जिम जि मोक्षि गया ति गृहलिंमिसिद्ध ५ । सम्यक्त्व परिणामइतउ
स्वलिंमिसंप्राप्त हूता आयुःक्षयि हूतइ जि मुक्ति गया ति अन्यान्निंगसिद्ध ६ । रजोदरग मुग्गवग्गिकारुपु
द्रव्यलिंमु । ज्ञानदर्शनचारित्रप्रकर्षपरिणामरुपु भावलिंमु द्विविंधु स्वन्दिगु कहियइ । तिणि हूतइ जि मुक्ति
गया ति स्वलिंमिसिद्ध ७ । मरुदेवी जिम जि स्त्री थिका मुक्ति गया ति स्त्रीमिद्ध ८ । नर थिका जि
मुक्ति गया ति नरसिद्ध ९ । नपुंसक विहुं भेदे । जातिनपुंसक, कर्मनपुंसक भेदतउ । तत्र जातिनपुंसक
10 चारित्रपरिणाम तथा अभावइतउ मुक्ति न जाइं, कर्मनपुंसक पुणि चारित्रपरिणाम सद्भावइतउ मुक्ति
जाइं, तिणि कारणि जि नपुंसक थिका मुक्ति गया ति नपुंसकसिद्ध १० । करहंडु द्विमुख नमि नगगनि
प्रमुखहं जिम वृषभ आम्रद्रुम एकवलय महेंद्रथ्यजादि एकैकयस्तु सारासाराता विचारइतउ जातिस्मरणइतउ
प्रतिबोधु लही चारिधु प्रतिपाली केवलज्ञानु ऊपाडी जि मुक्ति गया ति प्रत्येकयुद्ध सिद्ध ११ । मयतीर्थंकर
सिद्ध १२ । गुरु कन्हा प्रतिबोधु लही करी जि मुक्ति गया ति बुद्धबोधित सिद्ध १३ । श्री महावीर
15 जिम जि एकला सिद्धि गया ति एकसिद्ध १४ । श्री ऋषभ जिम अनेकहं सउं एक समइ जि सिद्धि गया
ति अनेकसिद्ध १५ । तथा च भणितं—

उसहो उसहस्त सुया भरहेण विवजिया य नयनपईं ।

भरहस्त य अट्टसुया सिद्धा एगंमि समयंमि ॥

[१२१]

तीहं निमित्तु माहरउ सदा नमस्कारु हुउ । एउ सिद्धस्तवरुपु आठमउ अधिकारु ।

- 20 §99) अथानंतरु आसनोपकारिता लगी श्री वीरगुति भणइ । 'जो देवाण वि देवो' इत्यादि ।
जु देवभवनपत्यादिक तीहं नउ पूज्यत्वइतउ देवु 'यं देवाः प्रांजलयो नमसंति' । जेह रहइं हाथे जोडे
देव नमस्कारु करइं सु देव देवमहितु शकमहितु' । 'शिरसा' मस्तकि करी महावीरु चरमतीर्थंकरु
हउं 'वंदे' यादउं ।

- §100) नमस्कारु फलदर्शननिमित्तु भणइ । 'इकोवी' त्यादि । एकु नमस्कारु घणा नमस्कार सु
25 परहउं छउ । के हि नउ एकु नमस्कारु 'जिणवरवसहस्त वद्धमाणस' जिन उपसांत मोहादिक तीहं
माहि वर केवलज्ञानी तीहं माहि तीर्थंकर नाम कर्मोदयवसइतउ वृषभु प्रधानु जिनवरवृषभु' । तेह नउ
नमस्कारु । सु कउणु वद्धमाणु ? तेह नउ किसउं करइ ? इत्याह—'संसारे' त्यादि । संसारसागर
भवसमुद्र तेह नउ तारइ उतारइ । कहि रहइं ? 'नरं वा नारं वा'—नरु पुरुषु नारी स्त्री तीहं विहुं
रहइं धर्म रहइं पुरोत्तमत्व भणिवा कारणि नरमहणु । स्त्री रहइं तिणि हिं जि भवि मुक्तिसंभव
30 निमित्तु नारीप्रहणु कीषउं, न पुणि किहां ईं स्त्री रहइं मुक्तिगमनु निपिहु छइ । मुक्तिगमनकारणु
ज्ञानदर्शनचारित्रप्रकर्षु सु जिम पुरुष रहइं छइ तिम स्त्री रहइं पुणि छइ इति संपूर्णकारणभावइतउ
पुरुष जिम स्त्री रहइं पुणि मुक्ति ।

§101) 'छट्टिं ष इत्यियाओ' इसा वचनइतउ उत्कर्षहीतउ स्त्री रहइं छडी नरक वृथिवी
सीम गति छइ । न सत्तम नरकभूमिगमनु । तिम ऊपरि मुक्ति गति पुणि नहीं हुयइ इसउं न कहिइं,

नहि इत्तं कांई छइ । जेह रहइ हेठइ थोडी गति तेह रहइ ऊपरि पुणि थोडी गति हुयइ । मुजि करी परितर्पई दिइइ इति भुजपरितर्पे गोह नकुलादिक जीव, ति हेठइ वीजी नरकभूमि सीम उत्कर्षइतउ जाइ । पांरिया गृभादिक उत्कर्षइतउ त्रीजी सीम । सिंह चउथी सीम । उरि हियइ करी हिंइइ इति उरल साप, पांचमी सीम जाइ, 'न छट्टि, न सत्तमि बा' जाइ, तथाविष कर्मबंध तणा अभावइतउ । ऊपरि पुणि सगलाई मुजपरिमर्णादिक जीव सहस्रारु आठमउ देखलोकु तेह सीम जाइ । तिम खी 5 पुणि हेठइ छट्टी सीम जाइ ऊपरि पुणि मुक्केइ जाइ तिसइ गति विषमता भावि हंतइ खी पुरुष कर्म-न्युंसकरूप सर्वजीवहं रहइ मुक्तिगमनु सीधउ ।

§102) एउ श्री सिद्धार्थस्तवरूपु नयमउ अधिकार ।

ए त्रिन्दि स्तुति गगयरेद्रहं फीथी तिणि कारणि निश्चइसउं पढियई । 'आवइयकचूर्णिणि माहि कहिउं-सैसो जहिच्छाए' ति । 10

§103) उज्जितसेलसिहरे दिक्खानाणं निसीहिया जस्स ।

तं धम्मचक्रवर्द्धि अरिद्धनेमि नमंसांमि ॥

[१२२]

उज्जयंत देव दिशरि दीक्षादान नैषेधकी मुक्ति तद्वक्षणे त्रिन्दि कल्याणिक जेह रहइ हूयां, सु धर्मचक्रवर्ति अरिष्टनेमि 'नमंसांमि' नमस्करउं । एउ नेमिस्तवरूपु एसमउ अधिकार ।

§104) अत्राभ्यायवचनु कांई एकु लिखियइ । पूर्विहिं श्री उज्जयंत महातीर्थ दिगंबरे अधिष्ठितं 15 हूतं संघ कन्हा उदालिया आरंभिउं । संघ काउस्तग्गतुभावि आकंपिता श्री शासनदेवता राजसभा माहि दूरकृष्ट कन्यामुसि 'उज्जितसेलसिहरे' इत्यादि गाथा चेल्यंदन सूत्रमध्यगत करी आपी । तेह दिवस लग्गी संघि पढियइ । इणि कारणि ए गाह पुणि आगमरूप हुई ।

§105) तथा 'चत्तारि' इत्यादि, 'परमह निद्रियद्वा' इति परमार्थि करी तत्ववृत्ति करी, न पुणि कल्पना करी निष्ठित संपूर्ण अर्थ, संसारप्रयोजन जीहं रहइ हूयां ति परमार्थनिष्ठितार्थ कहियई । 20 बीजउं सुगमु । एउ इगारमउ' अधिहार ।

§106) इहां आभ्यायगत कांईएकु लिखियइ-

चत्तारि अट्ट दस दो बंदिया जिणवरा चउव्वीसं ।

नवगं चउवीसीणं विवरणमिह किंचि निमुणेह ॥

[१२३]

चउ अट्ट गुणा वचीस हुंति दस दुगुण हुंति वीसा य ।

एवं जीणवावन्नं वंदे नंदीसरं दीवे ॥

[१२४]

चत्ताअरिओ जेहिं चत्तारि पयस्स होइ अत्योयं ।

अट्ट दस दो य मिलिया जहन्नपय वीस वंदांमि ॥

[१२५]

चत्तारि जहापुच्चिं दस अट्टगुणा असी हवइ एवं ।

पुणा वि असी दोगुणिया सट्टिसयं नमह विजएसु ॥

[१२६]

चउ अट्ट भवे वारस दसगुणा सयं वीसं ।

सो दोहि गुणिअंतो दुधि सया हुंति चालीसा ॥

[१२७]

भरह-एरवएसु जिणा दस चउवीसी य वट्टमाणओ ।

मण-वय-काएणा तिहा तेसि वंदांमि भत्तीए ॥

[१२८]

- चउवीसं पडिमाणं अट्ठावयमेहलासु वंदामि ।
 चत्तारि १ अट्ट २ दस दो ३ उवरिम-मज्जेसु हिट्ठेसु ॥ [१२९]
 चउ उट्टुल्लोयपडिमाऽणुत्तर १ गेविज्ज २ कप्प ३ जोइसिए । [१३०]
 अट्टेव वंतरेसुं दस पडिमा भवणवासीसु ॥
 5 धरणियलम्मि य दुन्नि य सासयरूवा असासया ते उ । [१३१]
 इय चउवीसं पडिमा वंदे तियल्लोयमज्जम्मि ॥
 अट्ट दस दो वि अट्टरस ते अट्टरस चउगुणा बहुत्तरियं । [१३२]
 भूय-भविस्सा संपय तिय चउवीसीण वंदामि ॥
 चउ चउगुणिया सोलस अट्ट अट्टगुणा य हुंति चउसट्ठी । [१३३]
 10 दस दसगुणिया य सयं एवं हुयइ इगुसउ असीओ ॥
 पुण एउ दुहा सउ सत्तरी^१ य पन्नरस कम्मभूमीसु । [१३४]
 भरह-एरवए दस जिण समकालुप्पन्न वंदामि ॥

इति नवचउवीसीकुलकं समाप्तम् ॥

५५१
 15 §107) तथा चंपा विहार करतइ श्री महावीरि साल महासाल राजश्रपिइं सरसउ^१ श्री गौत
 स्वामिगणधरेदु पृष्ठचंपां मोकलिउ । तिहां गागलि राजा । पिठरु गागलि तणउ पिता । यशोमती माता । नि
 मातुल साल^२ महासाल^३ । अनइ श्री गौतम वांदिवा आविउ । वांदी धम्मं सांभली पुनु राजि बइसां
 मायथाप सद्धि ति गागलि श्री गौतम कन्हइ दीक्षा लीपी । श्री महावीर वांदिवा चंपा आवतां भाव
 भावतां मार्गि पांचही रहइं केवल्लानु उपनउं । समवसरणि श्री गौतमस्वामि त्रिन्दि प्रदक्षिणा दे व
 पाछउं जोयइ, तउ पांचइ केवलिसभा ऊपरि जायता देखइ, तउ भणइ,—‘ओरहा आवउ श्री महा^४
 20 वांदउ’ । भगवंतु भणइ, ‘गौतम ! केवलि आशतना न करि’ । तउ गौतमि स्वभाविया ।

§108) अथ श्री गौतमस्वामि जन माहि भगवंत श्री महावीर तणउं वचनु सांभलिउं—

उसहसस भरहपिउणो तियलुकपयासनिग्गयजससस ।

जो आरुहुं वंदइ चरमसरीरो य सो साहू ॥ [१३५]

जु तपोलच्चि^१ करी अष्टापदि चउवी श्री ऋषम जिन रहइं वांदइ सु चरमसरीरी तिणिहिं
 25 भवि मुक्तिगामी हुयइ । तउ जेतलइ अष्टापदयात्रा मनोरथु गौतमस्वामि मन माहि करइ तेउ
 भगवंति यात्रा विपइ आदेसु दीपउ । तउ गौतमु अष्टापदि चालिउ । जिनवचनु पूर्वभणितु सां
 करी अनेराई कौटिन्य दिन्न सेवालि नाम पांच पांच सइं तापस^२ तिहां चालियां । तीहं माहि कौटि
 कुटपति पांचसइं तापस सहितु एकोपयासकारी^३ पारणइ आरं मूल फलाहारी पहिली मेखलां^४ गय
 दिनु कुटपति पांचसइं तापस सहितु विहुं^५ उपयासकारी^६ पारणइ शुष्क^७ मूलफलाहारी बीजी मे
 30 षट्टिउ । सेवाली कुटपति पांचसइं तापस सहितु त्रिउं^८ उपयासकारी^९ पारणइ^{१०} शुष्क^{११} सेवाला
 श्रीजी मेखलां^{१२} गयउं । त्रिन्दि^{१३} कुटपति उपदिरा^{१४} चडिया असफता हुंता पूर्वहिं तिहांइं जि रं
 ३५ उं । तीहं रहइं तिहां रदियां हुंतां श्री गौतमस्वामि मूर्तिमंतु जिउउ पुण्यरासि हुयइं^{१५} ति
 वरचिनसवदेहावयु कायच्छंति करी दीपित दसदिसावकासु आविउ ।

§106) 1 B. Bh. गणो । §107) 1 L. सरेसउ 2 P. सान्नि 3 P. omits अनइ । 4 L. सप
 §108) 1 L. तपेट्ठिय । 2 Bh. L. add मुक्तिनिमित्तु । 3 L. करी । 4 P. मेखला । 5 Bh. L. P.
 P. अहरा । 6 L. चरी । 7 P. इत्थं पारणइ । 8 L. P. त्रिहु । 9 L. उपयासि करी । 10 P. om
 11 L. P. देवण । 12 L. चरिउ । 13 P. त्रिपइ । 14 Bh. L. P. अहरा । 15 P. से ।

[109] किं तस्मै मारु वीर्येण वृद्धं देवती कृति विनि भीतव्यं, 'अग्ने तमि कृति मोघिय-
 क्तव इतं कृती कृती मरुता. एत इमार गतयि' इति कृती मयावाचनभोत्री संभावनीय किमी परि
 कृतिमि ? इतं कीरि सिद्धं तस्मै वरं भीतव्यं' इति भी मीयु गनमायकु रविचिरल अवयंवी
 की कृतापरि कृती कृति। मीरं ना मनि महांतु विमत्तं' इत्यतः। तत्र पाठः मन मादि भीतव्यं
 'एत विमत्त तातः कताः कृते मादि अविमिह तत्र अग्ने एत ना तियु होदमिह' ।

[110] भी मीयममामि इति-इति संज्ञित मीयम लक्ष्मिन्मन मुमलि पद्यमम नाम पथारि तिन
 कोर। एभ्यमामि मरिह मुताये कोरम मुनिवि कीरल मेलांग वायुमुप विमत्त अनेन नाम छाठ
 तिन कोर। कृतापरि मरिह ममं मीरि वृपु अर मदि मुनिमुनन ममि मेमि वारं वीर नाम दूनं
 तिन कोर। वृतापरि संज्ञित कृतन वरिज नाम वि तिन कोर। पथारीय तिन निज निज पनी-
 इत्येभ्योऽनुमतिरि हे. एतन्न विमत्त-नरेभ्यममि' विभिमा कोरतः संभवतः' इति विनिष्ठ भावना 10
 मरुता मरुतं' इत्यतः मीय हेवपूर विहान्यथापन नाम प्रसिद्ध मादि इति। संख्या सम्य हेवपूर
 कृतिरि मुत्त विमत्तः कृतः मरुतयिमा प्रतीकमनु कृती मयाप्या कर ।

[111] हेवपूर मरुतः येनरंदास विनिज ममागु पनदु यमु भी मीयममामि देवती कृती
 मरुता' कृती मरुता कृतः' । भी मीयममामि कृताकृति साधुमुननममंगृषु' वारंममं संभवमानु
 मुनिममममनु कृतमि। एतन्न कता इत्यमामिमु मुदीकामप्यनु मीयवी कृती मुनि अनायह 15
 कृते दिवा मादि पाठः। मरुतमनु कृताकृति विनि मरुतः। मु आयुःकृति मी कृती इमपूर्वकृ'
 की पञ्चमदि इत्यतः' ।

[112] कीरः किं प्रजापतय पुनरपि पारीम तिन वीरि कृती भी मीयममामि विनिदि
 रि मरि अरुता इति तस्मै मादि मरुतः। तस्मै वीरि कृती वीरवित्त, 'मयम' प्रमात् कृती
 मरुत् एतं कीरल इति' । मीयममामि वीयवा कृती कृती मीरं वीरिरवा। पारुतापरि वृत्तिया, 20
 'कृताः किमी इत्यु मरुत् एतं तः' 'हेदे मीयवितं', 'अग्नायि आंर भूय कृती वीरि एतं ।
 एत मरुतं मीयु मया मरुतयिमु कां न मगिपयं' । इतं वीयवी' कृती परमागु मीयु
 मरुतः) । भी मीयममामि पापु मरुतयमममं मे कृती विहिरवा पदुवतः। किमिदि संनिवेति कृताः कृती
 मरुत् मरुतः मादि परमागु मीयव' इत्यं हेवपूर प्रजापि सेद तग्ग परि भी मीयममामि आवित ।
 किं कृती' अरुताः यमु मरुतं इत्यं मादि कृती भी मीयु परमागु पायपुरि' विशरुवित । 'वीरि 25
 कोरि, कीरं मुनि कृती मीरि अग्ने एतं' मीयवत् कृती । अथवा अधिनवीय महिमा महात्मा तग्ग
 एतं' इत्यं वीयवी' कृती पापु कृति मीयमि अनुमान इति पठता । अक्षरीयमाहात्मनी लक्ष्य
 मरुत् प्रजापि जे मीय आरुता मीयुत पादिरः काइह नदी मी मीय पापु ठालं थाइ नदी, विनि कारि

[109] 1 L. मी. 2 P. मी. 3 Bh. मी. 4 P. मी. 5 L. मी. 6 L. P. मी. 7 L. मी. 8 P. मी. [110] 1 Bh. instead of नाम दून, it has दून नाम. 2 L. changes the order as-अनाय कृती. 3 P. मरुती. 4 P. मीयवत्. 5 Bh. L. मरुत्. P. मया. 6 Bh. मी. 7 P. मी. [111] 1 P. मया. 2 P. omits. 3 L. मरुत्. 4 L. मीयवत्. P. मीय मीयु. The confusion of मरुत् and मीय is obvious. 5 Bh. omits मी. 6 P. मया. [112] 1 P. मी. 2 L. P. मी. 3 L. मीयवी. P. मी. 4 L. मी. P. मी. 5 L. मी. 6 P. मया. 7 P. मी. 8 P. मी. 9 L. मी. 10 L. P. मी. १० कां ६

भगवंतु गौतमु तीहं रहइं परीसइ । तउ पाछइ जि त्रिहुं उपवासे¹¹ करी पारणउं करता सेवाली तापस तीहं रहइं पारणउं करतां गौतमगुण अनुमोदतां शुक्लध्यानधारा वर्तमानहं हुंता केवलज्ञानु ऊपनउं ।

§113) जि विहुं उपवासे पारणउं करता दिन्न तापस तीहं रहइं मार्गि आवतां 'जेह तणउ गौतमु इसडे शिष्यु इसउ लब्धिपानु छइ सु गौतम तणउ गुरु किसउ छइ' इसी परि¹ चीतवतां² शुक्लध्यान⁵ धाराधिरोहइतउ केवलज्ञानु ऊपनउं । जि एकि उपवासि पारणउं करता कौडिन्य तापस तीहं रहइं समयसरणु देखी श्री महावीरदेशनाध्वनि सांभली करी शुक्लध्यान लाभइतउ केवलज्ञानु ऊपनउं³ । श्री गौतमस्वामि श्री महावीरु वांदी करी पाछउं जोयइ⁴ तउ⁵ सबइ तापस⁶ केवलिसभा ऊपरि जायता देखी भणइ⁷, 'बच्छउ ! आवव, श्री महावीरु वांदउ' भगवंतु भणइ 'गौतम, केवलि आशातना म करि' । तउ गौतमस्वामि खमावी करी⁸ यथास्थानि पढुतउ । श्री महावीरि मुक्ति पढुतइ हुंतइ गौतमस्वामि छिन्नगुरुस्नेहबंधु हुंतउ⁹ केवलज्ञानु ऊपाडी वारे¹⁰ वरसे¹¹ पाछइ मुक्ति पढुतउ ॥

चत्तारि १ अट्ट २ दस ३ दो ४ य वांदिया जिणवरा चउव्वीसं । एह विपइ श्री गौतमकथा ।

§114) एवं अनेरेइ¹ चउवीस जिनवंदना इणि गाह करी करेवी । तथा नव चउवीसी जिनवंदना पुणि करेवी । तथा चैत्यवंदना करतां वारस पूजापद जाणियां । यथा—

अईयाइ तिन्नि सकत्थयम्मि चेईण वंदणं वीए ।

15 इह सिचसंभवाणं उसभाइजिणाण तईयम्मि ॥ [१३६]

सत्तरिसयं जिणाणं सुयधम्मो तह चरिचधम्मो य ।

हुंति नमंसणजोगा तिन्नि वि एए चउत्यम्मि ॥ [१३७]

सिद्धा सिद्धत्थमुओ सुरद्ववरविसयभूसणो नेमि ।

नवगं चउवीसीणं पंचमए दंडए चउरो ॥ [१३८]

20 अतीत-अनागत-वर्तमान जिनलक्षण त्रिंहि पूजापद शकस्त्वि प्रथमि दंडकि कहियइं । स्थापनाअर्ह-तलक्षणु एकु पूजापदु 'अरहंतचेईयाणं' बीजइ दंडकि कहियइ । इह क्षेत्रसंभव भरतक्षेत्रजात ऋषभादिजिन चउवीसीलक्षणु एकु पूजापदु 'लोगसुज्जोगरे' बीजइ दंडकि कहियइ । सतरिसउं जिन धृतधर्मे-चरित्र-धर्मलक्षण त्रिंहि पूजापद 'पुक्खरवरदीवट्टे' चउथइ दंडकि कहियइं । सिद्ध सिद्धार्थमुत नेमि नव चउवीसी-लक्षण चत्तारि पूजापद 'सिद्धाणं सुद्धाणं' पांचमइ दंडकि कहियइं ।

25 संपप-पपप्पमाणा इह वीस छडुचरं च वनसयं ।

पणिवापदंडमाइसु पंचमओ दंडओ य इमो ॥ [१३९]

§115) इसी परि पंचमु दंडकु पटी करी उपचितपुण्यसंभारु हुंतउ भव्यु जीउ चैत्यवंदनानंतर उचिन विपइ अचितप्रभृत्तिनिमित्तु इसउं पडइ 'वेयावचगराणं' इत्यादि । वेयावृत्त्यकर गोमुख यक्ष चक्रेऽधी यक्षिणी प्रमुख चउवीस यक्ष यक्षिणी लक्षण श्री वीरशासन प्रतिबूळ जि निध्याट्टि तीहं रहइं निवारक 30 शांतिकर-अशिवनिपेधक, सम्पकत्व धारक लोक रहइं समाधिकर आर्ष-चौरध्यानारक्षक तीहं संपंधिउं अथवा तीहं नइ विपइ काउरसाणु 'करेमि' करउं । इहां 'वंदणवत्तियाए' इत्यादि न पडियइं । वेया-

§112) 11 P. उत्तराणि । §113) 1 Bh. L. omit. 2 B. परि । 3 Bh. चीत- । 4 L. omits the whole sentence. 5 B. जेवरइ तउ । P. had the same but a later correction makes it जेवरइ तउ । L. जेवरइ । 6 L. omits. 7 P. मनी । 8 Bh. L. omit. 9 स्थापनकि । 10 P. वारे । 11 P. वरेवे । §114) 1 Bh. omits. 2 Bh. हारता ।

वृत्तिकर' अविरतसम्यग्दृष्टिनामकि चउंथइ गुणठाणइ वर्त्तइं । श्री संघु पुणि साघु साधी तणी अपेक्षा करी अग्रमत्तनामकि सातमइ, प्रमत्तनामकि छट्टइ गुणठाणइ वर्त्तइ । श्रावक श्राविका नी अपेक्षा करी विरत्ताविरतनामकि पांचमइ गुणठाणइ वर्त्तइ । तिणि कारणि वैशावृत्यकरहं कन्हा साधु-साधी-श्रावक-श्राविकालक्षणु संघु गुणे करी अधिकु । तिणि कारणि तीहं रहइं सम्यग्दृष्टिता करी साधर्मिक भावइतउ तथा महद्वैकत्वइतउ कावस्सग्गु मानु कीअइ गीतार्थाचीर्णभावइतउ । 'अन्नत्थूससिणं' इत्यादि १ पूर्ववत् । एउ वेयावच्चगर काउस्सग्गुरू वारमउ अधिकारु ।

तथा च अधिकारआदिपदावयवसूचा-

नम् १ जे २ अरहं ३ लोगो ४

स ५ पुक्ख ६ तम ७ सिद्ध ८ जो ९ उ १० चत्ता ११ चे १२ ।

पढमा पइकदेसा अहिगाराणं सुणोयव्वा ॥ [१४०] 10

दुच्चे १ गं २ दुग्धि ३ दुग्गं ४ पंचेव ५ कमेण हुंति अहिगारा ।

सकत्थयाइसु इहं थोयव्वविसेतविसयाओ ॥ [१४१]

पढमम्मि य अहिगारे भावउरिहंताण वंदणा भणिया ।

दव्वउरिहाणं धीए तइए उवणाउरिहाणं तु ॥ [१४२]

नामउरिहाण चउत्थे उवणाउरिहाणं च पंचमे तह य ।

भावउरिहाणं छट्टे सत्तमए वारसंगस्स ॥ [१४३] 15

अट्टमए सिद्धाणं नवमम्मि य वद्धमाणसामिस्स ।

दसमम्मि य तित्थाणं चउवीसजिणाणमिगदसमे ॥ [१४४]

वेयावच्चगराण य उस्सग्गो वारसम्मि अहिगारे ।

अरिह १ सुय २ सिद्ध वेयावच्चगरा संघुया एवं ॥ [१४५] 20

इह नव अहिगारेहिं चउविह जिण संघुया सुमत्तीए ।

सुय सत्तम सिद्धउट्टम वेयावच्चा य वारसमे ॥ [१४६]

उज्जोयाइसु तिसु दंडएसु पयसंपयाउ तुल्लाओ ।

छंदाणुसारओ चिय नापव्वा बुद्धिमंतेहिं ॥ [१४७]

§116) अथ पंचपमेष्ठि नमस्कार ईर्यापथिकी सूत्र तथा चैलवन्दन सूत्र तणी जि पूर्वहिं संपदा 25 कही ति सगलीय इ एकगाथा माहि कहइ-

अट्टउट्ट नवउट्ट य अट्टवीस सोलस य वीस धीसामा ।

मंगल इरियावहिया सकत्थयपमृहदंडेसु ॥ [१४८]

अट्टेव संपयाओ मंगलगे नव पयाण तह पढणं ।

पयतुल्ल सत्त संपय दुपयल्ला होइ अट्टमिया ॥ [१४९] 30

अरहंत सत्त अक्खर पंच य सिद्धाण व्वरिणो ।

सत्त उवज्झाय सत्त अक्खर नव अक्खर संजुया साह ॥ [१५०]

अंतिम चूलाण त्रियं सोलस अद्द नव अक्खरजुयं च ।

इय अट्टसट्ठि अक्खर परिमाणो होइ नवकारो ॥

[१५१]

§117) उपधान विधान पासइ पंच परमेष्ठि नमरकार ईयांपथिकी वीसयंदनसूत्र विधिवत् समाराधित न हुयइं, तिणि कारणि प्रस्तावइतउ उपधान तपोविधान विधि पुणि लिम्पिगइ ।

5 पंचमंगल महाश्रुतरकंधि पांच वीसामा पांच अध्ययन कहियइं । धीजा त्रिन्दि वीमामा त्रिन्दि चूलिका कहियइं । तत्रापि विउं वीसामे एक चूलिका, एक वीसामइ पि चूलिका हुयइं । शक्ति हूती एकनिरंतरे पांचे उपवासे कीचे पहिली वाइणि पांच अध्ययन लाभइं । तथा एकनिरंतरे आठे आंखिले त्रिहुं उपवासे कीचे धीजी वाइणि त्रिन्दि चूलिका लाभइं । शक्ति असंभवि एकांतरे पांचे उपवासे वाइणि पहिली । एकांतरे साते उपवासे धीजी वाइणि । एवंकारइ पहिलइ पंचमंगल महाश्रुतरकंध तणइ उपधानि 10 उपवास १२ कीजइं ।

§118) वीजइ ईयांपथिकी श्रुतरकंधि आठ वीसामा आठ अध्ययन कहियइं । तत्र शक्तिसंभवि एकनिरंतरे उपवासे पांचे कीचे, शक्तिअसंभवि एकांतरिते पांचे उपवासे कीचे पहिली वाइणि पांच अध्ययन-

(२४) इच्छापि पडिक्कमिउं हरियावहीयाए विराहणाए १। गमणागमणे २। 15 पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे ३। उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ४। जे मे जीवा विराहिया ५।

एयरूप लाभइं । तथा शक्तिसंभवि एकनिरंतरे आठे आंखिले त्रिहुं उपवासे कीचे हूते, शक्तिअसंभवि एकांतरि साते उपवासे कीचे हूते-

(२५) एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ६। अभिहया 20 वत्तिया लेसिया संघाया संघट्टिया परिपाविया किलामिया उहविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि लुक्कडं ७। तस्सुत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसह्ठीकरणेणं पावाणं कम्ममाणं निग्घायणट्टाए ठामि काउस्सगं ८।

ए त्रिन्दि अध्ययन धीजी वाइणि लाभइं । एवंकारइ धीजइ ईयांपथिकी श्रुतरकंध तणइ उपधानि 25 उपवास १२ कीजइं । तथा धीजइ भावाहंतस्तव श्रुतरकंधि नव वीसामा नव अध्ययन कहियइं । शक्तिसंभवि एकनिरंतरे त्रिहुं उपवासे कीचे हूते, शक्तिअसंभवि एकांतरिते त्रिहुं उपवासे कीचे हूते-

(२६) नमोऽस्थुणं अरहंताणं भगवंताणं १। आइगराणं तित्थगराणं सयंसंयुद्धाणं २। पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं ३।

ए त्रिन्दि अध्ययन पहिली वाइणि लाभइं । तथा शक्तिसंभवि एकनिरंतरे सोले आंखिले कीचे 30 हूते, शक्तिअसंभवि एकांतरिते आठे उपवासे कीचे हूते-

(२७) लोपुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं ४। अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ५। धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ६।

ए त्रिन्दि अध्ययन धीजी वाइणि लाभइं । तथा शक्तिसंभवि एकनिरंतरे सोले आंखिले कीचे 35 हूते, शक्तिअसंभवि एकांतरिते आठे उपवासे कीचे हूते-

(२८) अप्पडिहयवरनाणदंस्सणघराणं वियट्टउत्तमाणं ७ जिणाणं जावयाणं तित्ताणं तारयाणं बुद्धाणं धोहयाणं मुत्ताणं भोयगाणं ८। सव्वत्थं सव्वदरिस्सिणं सिवमयलंमरुयमणंतमक्खयमव्वाधाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामथेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियमयाणं ९।

ए त्रिन्दि अध्ययन व्रीजी याइणि लामइं ।

§119) 'जे अईया' गाहा पुणि गीतार्थाऽऽचीर्णता करी व्रीजी याइणि दीजइ । एवंकारइ व्रीजइ नावाऽईतस्त्व धृतस्कंध तणइ उपपानि उपवास १९ कीजइं । चउथइ स्थापनाऽईतस्त्व धृतस्कंधि आठ वीसामा आठ अध्ययन कहियइं । उपवासु १ आंखिल त्रिन्दि कीजइं । एकहीं जि याइणि-

(२९) अरहंतचेइघाणं करेमि काउस्सगं १। वंदणवत्तियाए पूयणवत्तियाए सकारवत्तियाए सम्माणवत्तियाए योहिलाभवत्तियाए निरुवसगवत्तियाए २।¹⁰ सद्दाए मेहाए धीए धारणाए अणुण्येहाए वहुमार्णाए ठामि काउस्सगं ३। अन्नत्थू-ससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं दिट्ठिसंचालेहिं एवमा-इएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो ४। जाव अरहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ७। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पाणं योसिरामि ८।¹⁵

ए आठ अध्ययन लामइं ।

§120) एवंकारइ चउथइ स्थापनाऽईतस्त्व धृतस्कंध तणइ उपपानि उपवास २ कीजइं । पांचमइ नामाऽईतस्त्व धृतस्कंधि अट्ठावीस वीसामा अट्ठावीस अध्ययन कहियइं शक्तिसंभवि एकनिरंतरे त्रिहुं उपवासे कीये हूते, शक्तिअसंभवि एकांतरिते त्रिहुं उपवासे कीये हूते पट्टिणी याइणि 'जोगस्तुज्योगरे' गाहा । चत्तारि अध्ययन लामइं । तथा शक्तिसंभवि एकनिरंतरे तेरेइ आंखिले कीये हूते, शक्ति असंभवि 20 एकांतरिते छए उपवासे अनइ एकि आंखिले कीघइ हंतइ 'उसम' इत्यादि गाहा । त्रिन्दि अध्ययन वारइ वीजी याइणि लामइं । तथा शक्तिसंभवि एकनिरंतरे वारहे आंखिले कीघे हूते, शक्तिअसंभवि एकांतरिते छए उपवासे कीये हूते 'एवं मए अभित्तुया' इत्यादि गाहा त्रिन्दि अध्ययन वारइ व्रीजी याइणि लामइं । एवंकारइ पांचमइ नामाऽईतस्त्व धृतस्कंध तणइ उपपानि उपवास पनरइ आंखिले एक कीजइं । तथा छट्टइ धृतस्त्व धृतस्कंधि सोल वीसामा सोल अध्ययन कहियइं । एक उपवासु 25 आंखिल पांच कीजइं ।

§121) 'पुक्खरवर्दीवट्टे' इत्यादि गाहा । धृत्त चत्तारि अध्ययन सोल एकहीं जि याइणि लामइं । एवंकारइ छट्टइ धृतस्त्व धृतस्कंध तणइ उपपानि उपवास त्रिन्दि आंखिले एक कीजइं ।

§122) सातमइ सिद्धस्त्व धृतस्कंधि वीस वीसामा वीस अध्ययन कहियइं । जिणि दिवसि मांलाप्रदणु कीजइ तिणि दिवसि एक उपवासु कीजइ । 'सिद्धाणं बुद्धाणं' इत्यादि गाहा पांच अध्ययन 30 वीस एकहीं जि याइणि लामइं । सातमइ सिद्धस्त्व धृतस्कंध तणइ उपपानि उपवासु एक कीजइ । एतलइ अट्ठ नचइ य' इति गाहा तथा अर्थ तणइ प्रसंगि 'वन्धानतपश्चरणविचार पुणि लिखिउ । सवहीं उपधानइं तणउ तपु मेलिउ हंतउ उपवास पांचवीस आंखिल ८१ हुपइं । सर्व संख्या दिन १०६ सवहीं उपधानइं लागइं ।

§123) अथ प्रसावइतउ वाइणि देवा तणी रीति लिखियइ । एक खमासमणि वाइणि 'मुहुपत्तियं पडिलेहेमि' कहावियइ । धीजउं खमासमणु दिवारी मुहुती पडिलेहावियइ वानणा' वि दिवारियइ । पाछइ एक खमासमणि 'पंचमंगल महाश्रुतरबंध वाइणि पडिगाहणत्थं काउस्सगं करावेह' कहावियइ । धीय खमासमणि 'पंचमंगल महासुयकखंध वाइणि पडिगाहणत्थं काउस्सगं करेमि' कहा-
5 वियइ । तइय खमाममणदानपूर्वकू 'अन्नयूससिण्णं' इत्यादि कहावी काउस्सगु करावियइ । काउस्सगमा माहि 'सागरवरणीमीरा' सीम, सत्तावीस ऊसास 'लोगस्सुज्जोगरे' चीतवावियइ । पारियइ हूंतइ 'लोगस्सुज्जोगरे' संपूर्ण भणवियइ । पाछइ एक खमासमणि 'पंचमंगल महासुयकखंध वाइणि पडिगाहणत्थं चेइयाइ वंदावेह' भणवियइ । धीय खमासमणि 'पंचमंगल महासुयकखंध वाइणि पडिगाहणत्थं वासक्खेवं करावेह' भणवियइ ।

10 §124) तइय खमासमणु दिवारी वासक्षेपु कीजइ । शक्रस्तवु भणावी एक खमासमणि 'पंचमंगल-महासुयकखंध वाइणि संदिसावेमि' कहावी धीय खमासमणि 'पंचमंगलमहासुयकखंध वाइणि पडिगाहेमि' कहावी पडिलउं त्रिग्घि नमस्कार कहावियइ, पाछइ पूर्व भणित' वाइणिक्रमि वाइणि दीजइ ।

§125) अथ प्रस्तुतु कहियइ । काउस्सगिग पारियइ 'वैयावृत्तकरस्तुति' कही करी पूर्व जिम गोठिहिलियां होई करी शक्रस्तवु कहीयइ । 'जावंति चेइयाइ' इत्यादि गाह पढइ । जावंति जेतलां,
15 पैत्य ऊर्ध्वलोकि अधोलोकि तिर्यग्लोकि छइ, 'सच्चाइ' सगलाइ, 'ताइ' ति वांदउं 'इह संयो' इहां थिकउ 'तत्य संयाइ' तिहां थिकी । तउ पाछइ ऊठी करी क्षमाश्रमणु विधिवत् दे करी 'जावंति के वि साहू' इत्यादि गाह पढइ । 'जावंति के वि' जेतलां केई, 'भरह-एरयय-महाविदेहे य' पांच भरत पांच एरयत पांच महाविदेहरूप पनरह कर्मभूमि माहि, माधु ज्ञान-दर्शन-चरित्ररूप रत्नत्रय सायक छइ, 'सच्चेसु तेसु पगजो' सवही तीईं विपइ प्रणतु हउं छउं । ति पुणि किसा छइ ? 'तिविहेण' मनि
20 यचनि कावि' करी, 'तिदंडविरयाणं' जीवपात करण-कारण-अनुमतिरूप त्रिग्घि दंड तीईं हूता विरत निवर्त्तिया, तीईं रहइ हउं प्रणतु छउं ।

§126) पाछइ 'नमोऽर्हन्-सिद्धा-इत्यादि पंच परमेष्ठि नमस्कार पढइ । तउ पाछइ इशामंगलीस्वरि हंपरोमांचकंचुकिनगायु हर्पांशुविदुट्टिष्टिष्टि' हूती करतउ हूंतउ सद्गतगुणगाम्भितु श्रीरीतरागस्तवु कहइ ।

25 §127) तउ पाछइ

मुत्तामुत्तियमुद्दाममा जहिं दो वि गन्मिया हत्या ।

ते पुण निलाडदेसे लग्गा अणे अलग्ग ति ॥

[१५२]

एयंरूप मुक्तामुक्किन्कमुद्रावर्त्तमानु हूंतउ प्रणिधानु पढइ- 'जय वीरयाय' इत्यादि । 'जय' किमउ अमुं ? मयही देव दानव मानव माहि उत्कर्षि करी वरति, हे वीरयाग ! रागरदित, 'जगगुरु' जगद्गुरो !
3) त्रिमुवननरयोनेदेसदायक परमेस्वर श्री वीरयाग रहइ बुद्धिसंनिधानविधाननिमित्तु आमंत्रणु संघोषणु, 'मययं' भगरव ! ताराध धमावइतउ, 'मम' मू रहइ, 'भवनिच्चेओ' भरनिर्वंदु संसारविरागु 'होउ' इउ, 'मययं' ! इमउं बडी संघोषणु मक्कि अलिङ्गय जाणाविया निमित्तु कीचउं ।

§123) 1 Bh. काला । 2 Bh. बगवे । §124) 1 Bh. मन्दि । §125) 1 Bh. omits कर । 2 Bh. वर । §126) 1 Bh. हंपर ।

§128) तथा 'मग्नाणुसारया' मार्गानुसारिता कदाग्रह परिहारि करी तत्त्वप्रतिपत्तिलक्षणं मुक्ति-
मार्गं अनुसरणं हुउ । इसी परि सवहीं पदहं सउं 'हुउ' इसउं पदु संवेधियउं । तथा 'इदृक्कलसिद्धी'
इह्लोकफलप्राप्ति जिणि हूती जीव रहइं समाघातु हुयइ ।

§129) 'लोगविरुद्धघाओ' सर्वजनगर्हितवस्तु तणउ त्यागु परिहारु । तथा चाह-

सव्वस्स चेव निंदा विसेसओ तह य गुणसमिद्धाणं ।

उल्लुधम्मकरणहसणं रीढा जणपूयणिजाणं ॥

[१५३]

बहुजणविरुद्धसंगो देससमाचारलंघणं चेव ।

उच्चणलोगो य तहा दाणाइ वि पपडं अन्ने उं ॥

[१५४]

साहुवसणम्मि तोसो सपसामत्वम्मि अपडियारो य ।

एमाइयाइं इत्थं लोगविरुद्धाइं नेयाइं ॥

[१५५] 10

'सव्वस्स' इति । सामान्यहि सर्वजननिंदा लोकविरुद्ध । 'विसेसओ तह य गुणसमिद्धाणं' तथा गुण
ज्ञान दर्शन चारित्रलक्षण तीहं करी जि समुद्ध महर्द्धिक तीहं तणी निंदा विशेषि करी लोकविरुद्ध । 'उल्लुधम्म'
धम्मं नइ विपइ शरलचित्त जि हुयइं तीहं तणउं हसणु उपहासकरणु लोकविरुद्धु । 'रीढा जणपूयणिजाणं'
ति सामान्यजनपूजनीय जि हुयइं पात्रदेवता-गोत्रदेवतादिक अथवा हरि-हर-ब्रह्मा-आदित्यादिक देव तीहं
तणी रीढा निंदा लोकविरुद्ध । 'बहुजणविरुद्धसंगो' इति बहु प्रभूत जण साधुलोक तीहं रहइं विरुद्ध 15
अछोपादि भावि करी विवर्जित छइं, चंबाल खाटकी मुरापालादिक तीहं सरसउ संगु परिचउ लोकविरुद्धु ।
'देससमाचारलंघणं' ति जिणि देसि जु अरुं अतिनिपिद्धउ हुयइ अनइ धम्मविरुद्धउ हुयइ तही' तिणि
देसि तेह तणउं करणु देससमाचारलंघणु लोकविरुद्धु । 'उच्चणलोगो' इति उच्चु ग्रणु जेह रहइं सु उच्चणु
सच्छिद्ध लोक्कु तेह तणउं लोक्कु दर्शनु, उच्चणलोक्कु । जिम निद्रादिप्रमादपरु मृगादिकु जंतुवर्गु देखी करी
छलपरायणु नाहरादिकु जीववधकु लोकविरुद्धु तिम परच्छिद्धु चोरकादिकु' देखी करी जु राजनिप्रहादिकि 20
अनर्थि पातिया' विपइ समुयतु हुयइ सु लोकविरुद्धु अथवा तेह तणउं कम्मु लोकविरुद्धु । 'दाणाइ
वि' राजदेव भागु दाणु तेह तणउं अदानु दाणचोरिकादिकु लोकविरुद्धु । 'पयडु' प्रकडु सकललोक
विख्यातु कहियइ' । 'अन्ने उ' अनेरा पुणि । 'साहुवसणम्मि' इति । साधुलोक रहइं व्यसनि राजनिप्रहादिकि
उपनइ हूतइ जु तेह व्यसन तणइ विपइ तोसु हर्पु फीजइ सु लोकविरुद्धु इसउ कहइं तथा व्यसन
फेडिया विपइ सामार्थ्यभावि शक्तिभावि हूतइ 'अपडियारो य' इति । अप्रतीकारु व्यसन तणउं अफेहणु 25
लोकविरुद्धु इसउं कहइं । एयमादिक लोकविरुद्ध 'नेयाइं' जाणिवां । इति गाथात्रय तणउं अरुं ।

§130) तथा गुरुजनपूजा जननीजनकादिजनु गुरुजनु तेह नी पूजा गुरुजनपूजा पितर सम्मानना ।
पार्यकरणु परु साधुलोकु सेह रहइं हितकरणु वांछितार्थसंपादनु जीवितव्य तणउं सारु परसु पुरुषार्थु,
पुणि परहितार्थकरणु जु जिणि कारणि कहियइ । तथा च भणितम् -

दानं विचाइ, अन्नं वाच, कीर्ति-पुण्ये तथाऽऽयुषः ।

परोपकरणं कायाइ असारुत् सारमुद्धरेत् ॥

[१५६]

§131) 'शुभमुत्तोगो' इति । विशिष्टश्रुतचारित्र सहित आचार्य तणी प्राप्ति मुभगुरुजोणु ।
'तव्वयणसेवणा' इति तेह नउ उपदेसु तद्वचनु तेह तणी सेवना गुरुसमादिउ धर्मानुष्ठानकरणु । शुभगुरु

§129) 1 B, Bh. अन्ने ओ । 2 Bh. तही 3 Bh. नही । 4 Bh. अपम्मं चोरिकादिकु । 5 Bh.
पातया । 6 Bh. कहइं ।

कदाकालिहिं अहितु उपदिसइ नहीं इणि कारणि आभयु संसार मीम तेह गुरु तणी आण मू रइइं अखंड अविराधित हुउ । एउ प्रणिधानु नियणउं नहीं, जिणि कारणि प्राइहिं निस्संगाभिलापू जु कीधउं छइ ।

§132) छु पुणि गुरुजणपूया ससंगाभिलापु को कहिसिइ सु न कहियो, जिणि कारणि जननी-जनकमानना श्री महावीरदेवि' आपणपइं कीवी छइ । तथा च भणितम्-

5 अह सत्तमम्मि मासे गन्मत्थो चैव उग्गहं गिन्दे ।
नाऽहं समणो होहं अम्मापियरेहिं जीवंतो ॥ [१५७]

कृतकृत्यता पुणि तोई जि हुयइ जउ मावीत्र मानियइं । तथा हि-

पित्रोः आनृप्यभाग् नाऽहं भवाम्येकेन जन्मना ।

यकाम्यां सोढकष्टाभ्यां पूतरः कुंजरीकृतः ॥ [१५८]

10 ॥ इति पालावबोधचैलवंदनासूत्रवृत्ति संपूर्ण हुई ॥

॥ शुभं भवतु ॥

*

§133) अय वंदनक तणउ अर्थु लिखियइ ॥

मुहणंतय २५ देहा २५ ऽऽवस्तएसु २५ पणवीस हुंति पत्तेवं ।

छट्ठाणा ६ छच्चगुणा ६ छचेव ६ हवंति गुरुवयणा ६ ॥ [१५९]

15 अहिगारिणो य पंच ५ य इयरे पंचेव ५ पंच ५ पडिसेहा ।

एगोवग्गहु १ पंचामिहण ५ पंचेव ५ आहरणा ॥ [१६०]

आसायण तिचीसं ३३ दोसा बचीस ३२ कारणा अट्ट ।

बाणउयसयं ठाणाण वंदणए होइ नायव्वं ॥ [१६१]

'मुहणंतय' मुहुंती कहियइ, तेह नी पंचवीस पडिलेहण । देहु सरीरु तेह तणी पंचवीस पडिलेहण ।

20 आवदयक अवदयकरणीय, ध्यापारविशेष ति पुणि पंचवीस 'पणवीस हुंति पत्तेवं' एह नउ अर्थु ह्यउ ।
एयंकारइ धानक पंचहुत्तरि ह्यां ।

§134) तथा हि-

दिट्ठिपडिलेहं एगा पप्फोडा तिमि तिमि अंतरिया ७ ।

अक्खोडा पक्खोडा नव नव २५ इय पुत्ति पणवीसा ॥ [१६२]

25 पायाहिणेण तिय तिय बाहुसु सीसे मुहे य हियए य १० ।

पिट्ठीइ हुंति चउरो ४ छप्पाए ६ देह पणवीसा ॥ [१६३]

आवदयक पंचवीस यथा-

दोणयं २ अहाजायं १ किइकम्मं बारसावयं १२ ।

चउसिरं ४ तिगुत्तं ३ दुपवेसं २ एगनिकखमणं १ ॥ [१६४]

30 §135) वि अवनाम जिणि हुयइं सु 'दोणयं' कहियइ । तथा हि-'इच्छामि खमासमणो वंदितं जायनिज्जाए निसीदियाए' इसउं भणी गुरुच्छंद अणुजाणाविया कारणि एक अवनासु, एवं बीजी वार बीजउ अवनासु २ । यथाजातु जिम जातु जन्मु हुयइ तिम थिकां वांदणउं दीजइ तिणि करणि यथाजातु

§132) 1 Bh. महावीर-1 §134) 1 Bh. लेहि । 2 Bh. तिगुत्ति ।

कहियइ, विहुं जन्म नी अपेक्षा करी यथाजातु हाये जोडिए जामइ इणि कारणि हाये जोडिय वांणउं
 दीजइ, तथा ओपइ सुहुंती लीपी यति हुयइ इणि कारणि ओपइ सुहुंती लीपी वांणउं दियइ, इसउं
 'जहाजायं' एह नउ अर्थु । 'किइकम्मं' कृतिकम्मं इसउं वांणउा रइइं नामु 'वारसावयं' वारइ आवर्त्त
 करोह्वासरूप हुयइं इणि वांणइ इणि कारणि 'वारसावयं' कहियइ १२ । तीह नउं स्वरूपु जेतीवार
 'अहोकायं काय' इत्यारि आलापक तणउ अर्थु लिखीसिइ तेतीवार कहीसिइ । चत्तारि शिर जिणि हुयइं सु 5
 'चउसिं' कहियइ । यथा- 'खामेनि खमासमणो' एह आलापक तणइ भणनसमइ एकु अवनगतउं शिष्य
 तणउं शिर, बीजउं अवनमतउं गुरु नउं शिर, एवं बीजइ वांणइ पुणि वि शिर एवं शिर ४ । अथवा
 'कायसंकासं' एह आलापक भणतां एकु अवनमतउं शिर । 'खामेनि खमासमणो' एह आलावा भणतां
 बीजउं शिर । एवं बीजइ वांणइ पुणि वि शिर । एवं चत्तारि शिर शिष्यही जि संबंधियां हुयइं ४ ।
 'सिगुत्तं' मनोगुणु वचनगुणु कायगुणु ३ । 'दुपवेसं' वि प्रवेश जिणि हुयइं सु दुपवेसु कहियइ । अवमइ 10
 माहि एकु प्रवेशु एक वांणइ, बीजउ प्रवेशु बीजइ वांणइ २ । 'एगानिक्खमणं' एकु निःश्रमु जिणि हुयइ
 सु एगानिक्खमणु कहियइ । पहिलइ वांणइ अवमइ हुंतां नीसरियइ बीजइ वांणइ न नीसरियइं इणि
 कारणि एगानिक्खमणु कहियइ १ । एवंकारइ पंचवीस आवउयक हुयइं । छ स्थान ६, छ गुरुवचन ६,
 अयमहुं एकु १ । आशातना^१ त्रेत्रीस ए छइवालीस धानक सुउ सरसाईं जि वखाणीसिइं । एवंकारइ
 एकवीसउं सउ धानक कहियां ।

§136) अथ शेष धानक कहियइ-

विणओवयारु १ माणस्स भंजणा २ पूयणा गुरुजणस्स ३ ।
 तित्थयराण य आणा ४ सुयधम्माराहणा ५ अकिरिया ६ ॥

[१६५]

विनउ अभ्युत्थाना-55सनदानादिहु तऊ जु उपचारु वरीकरणु विणओवयारु १ । 'माणस्स भंजणा'
 मानु अहंकारु तेह तणी भंजना खंडना २ । 'गुरुजणस्स पूयणा' गुरुजनु ज्ञानदानकारु लोकु तेह तणी 20
 पूयणा पूजा ३ । 'तित्थयराण य आणा' तीर्थकर तणी आशा ४ । 'सुयधम्माराहणा' सुवधम्मं तणी
 आराधना ५ । अकिरियां मोक्षु ६ । ए छ वांणु तथा गुण । बंदनदानयोग्य पांच अधिकारिया ।
 यथा-

आयरिय १ उवज्जाए २ पवत्त ३ धेरे ४ तहेव राइणिए ५ ।
 एएसिं किइकम्मं कायव्वं निजरहाए ॥

[१६६] 25

आयरिय उवज्जाया पूर्वहिं जिम नमरकार माहि कहिया तिम जाणिया । प्रवर्तक तणउं स्वरूपु
 कहियइ-

तव-संजमजोएसु जो जुगो तत्य तं पवत्तेइ ।
 असइं च निपत्तेई गणतत्तिल्लो पवत्तीए ॥

[१६७]

अथ स्वविरस्वरूपु कहियइ-

धिरकरणा पुण धेरो पवत्तवावारिएसु अत्थेसु ।
 जो जत्थ सीयइ जइ संतवलो तं धिरं कुणइ ॥

[135] 1 Bh. छ (ध) नणि । 2 Bh. इइ । 3 Bh. तेत्रीस । [136] 1 B. इत्त ।
 ५- वा० ५

अथ रत्नाधिकस्वरूपु कहियइ—रत्नाधिक रहइं गणावच्छेदकु इसउं पीजउं नामु—

उद्धावणा-पहावण-सिचोवहिमगणासु अविसाई ।

सुत्तत्य-तदुभयविऊ गणावच्छेओ एरिसो^१ होइ ॥

[१६९]

उद्धावणा उद्यतविहार, पहावणा तीर्थोन्नतिकरण, स्वितु क्षेयु वसति, उपधि साधूपकरणपरंपरा
५ तीह नी मार्गेणा दोपरहितगवेपणा तीहं नइ विपइ अविसाई धालस्परहितु, एकु सुयु घरइ अर्थु न घरइं,
एकु अर्थु घरइ सुयु न घरइ, जु वे घरइ सु सूयार्थ तदुभयविऊ कहियइ इसउ जु हुयइ सु गीतार्थु
रत्नाधिकु कहियइ । 'गणावच्छेओ एरिसो^१ होइ' सु इसउ गणावच्छेदकु कहियइ—रत्नाधिकु कहियइ ।
चूर्णिं माहि कहिउं यथा "अन्ने भणति-अन्नो वि जो तहाविहो राइणिओ सो वंदियव्यो" । "राइणिओ
सो जो नाण-दंसण-चरणसाहणेसु अइउज्जुओ" अतिउत्साहवंतु ।

10 §137) अथ कारण तणइ अभावि जि वांदिवा योग्य न हुयइं पांच अनधिकारिया ति
कहियइं—

पासत्थो १ ओसत्तो २ होइ कुसीलो ३ तहेव संसत्तो ४ ।

अहच्छंदो ५ वि य एए अवंदणिजा जिणमयम्मि ॥

[१७०]

ज्ञानादिकहं तणइ पार्श्वि समीपि तिष्ठइ रहइ इणि कारणि पार्श्वस्थु कहियइ ।

15 सो पासत्थो दुविहो सव्वे देसे य होइ नायव्यो ।

सव्वम्मि नाण-दंसण-चरणणं जो उ पासम्मि ॥

[१७१]

देसम्मि य पासत्थो सिज्जायरउभिहडु रायपिंडं च ।

नीयं च अग्गपिंडं भुंजइ निक्कारणे चेव ॥

[१७२]

सिज्जायरु वसतिसामी^१ तेह तणइ घरि जु विहरइ असनादिकु सु सिज्जायरभिहडु^१ । जु राजपिंड
20 भोगवइ । तथा 'नीयं च' नीच अच्छोपकुल रजकादिक तीहं संबंधिउं पिंडु नीचपिंडु कहियइ सु नीचपिंडु
जु भोगवइ । तथा अग्रपिंडु अग्रवलि शिखाधान्यु नैवेसु कहियइ, जु अग्रपिंडु भोगवइ सु एवंविधु साधु
देशपार्श्वस्थु कहियइ ।

कुलनिस्साए विहरइ ठवणकुलाणि य अकारणे विसइ ।

संखडिपल्लोयणाए गच्छइ तह संथवं कुणइ ॥

[१७३]

25 ए माहरा कुल इसी परि जु कुलनिष्ठा करी विहरइ, आचार्यादिकहं निमित्ति स्थापित जि छइं
कुल तेहे कुले कारण पाखइ जु 'विसइ' भिक्षानिमिति पइसइ^१ । 'संखडिपल्लोयणाए' संखडि विशेषभक्त
व्यापारगुहु तेह तेणी अथलोकना करी जु विहरइ तथा गृहस्थसंस्तु जु करइ गृहस्थ सउं मैत्री जु करइ
सगळ देशपार्श्वस्थु कहियइ ।

§138) क्रिया नइ विपइ याकइ इति अवपन्नु^१ किसउ अर्थु ? शिथिलता करी मोक्षमार्ग

30 भांतु अवपन्नु । यथा—

ओसत्तो वि य दुविहो सव्वे देसे य तत्थ सव्वम्मि ।

उन्न्यद्वपीठफलगो ठवियगमोई य नायव्यो ॥

[१७४]

§136) 3 B. Bh. omit ए-1 4 B. omits-य-1 §137) 1 Bh. स्वामी । 2 Bh.-भिहुडु ।
3 B. एरणइ । §138) 1 Bh. अवपिण्डु ।

आवस्सय-सज्जाए पडिलेहण-ज्ञाण-भिक्षमचट्टे ।

आगमणे निग्गमणे ठाणे य निसीयणे तुयट्टे ॥

[१७५]

आवस्सयाईं न करे अहवा च करेइ हीणमहीयाईं ।

गुरुवयणं च विराइइ भणियो एसो य ओसवो ॥

[१७६]

§139) कुत्तिनु ज्ञानादिविराथकु शीलु स्वभावु जेइ रहइं हुयइ सु कुशीलु कहियइ । यथा- 5

कालविणयाइरहिओ नाणकुसीलो य दंसणे इणमो ।

निस्संकिपाइविजुओ चरणकुसीलो इमो होइ ॥

[१७७]

कोउय-भूर्इकम्मै पत्तिणापत्तिणे निमित्तमाजीवी ।

कककुरूप्याइलक्खण उवजीवइ विज्जमंताईं ॥

[१७८]

§140) असंविगसंगइतउ जु तन्नाजु जाइ सु संसक्तु कहियइ । यथा- 10

पासत्याईएसुं संविगोसुं च जत्थ मिलियो उ ।

तहिं तारिसउ होई पियधम्मो अहव इयरो य ॥

[१७९]

§141) 'गुरु-आगमनिरविसरो' जु गुरुनिरपेसुं आगमनिरपेसुं यिकउ सर्वकार्ये विपइ आपणी

इच्छा तणइ अनुसारि प्रवर्तेइ सु यथाच्छंदु कहियइ । यथा-

उस्सुत्तमशुवइईं सच्छंदविगप्पियं अणुणवाई ।

परतत्तिपवत्ते तंतिणे य इणमो अद्दाच्छंदे ॥

[१८०]

पासत्याई वंदमाणस्स नेव किची न निजरा होइ ।

कायकिलेसं एमेव कुणइ तह कम्मबंधं च ॥

[१८१]

दृष्टं पांच यथा-

दुच्चे भावे वंदण १ रथरणे २ वत्त ३ नमण ४ विणएहिं ।

सीयल १ खुडुय २ कन्हे ३ सवय ४ पालय ५ उयाहरणा ॥

[१८२]

§142) द्रव्यभावव्यंवन विपइ शीतलाचार्ये दृष्टांतु ।

एग राय नउ पुयु सीतलु इसइ नामि हूंतउ । सु पुणि कामभोगइ हूंतउ नवीनउ एक आचार्य समीपि दीक्षा प्रपनु ह्यउ । तेइ नी एक यद्दिन अनेरइ राइ एकि परिणी । तेइ ना चियारि पुत्र ह्या । तीई आगइ तीई नी मावा कयंतएलि कइइ 'तुम्हारइ माउलइ दीक्षा लीयी छइ' । इसी परि कइती 25 तेइ रहइ घणउ कालु गयउ । तेई अनेरइ दिवसि गुरुपादमूलि दीक्षा लेई गीतार्यं ह्या । चत्तार वि बहुस्सुया जाया । आचार्यं पूठी कपी मातुल वांदिवा गया । एकि नगरि माउलउ सांमल्लिउ तिहां गया । विकालो जाउ त्ति काउं नगरयाहिरि रहिया । श्रावकु एकु नगरि जायतउ तेहे भणितु, 'शीतलाचार्य' आगइ कइदि, तुम्हार भाणेउ तुम्ह वांदिवा आवइ छइ, विकाल भणी राति न आवियाई, प्रभाति आवि-सि 11 । आचार्य हीं नी आगमन वात सांमली कपी हरिया 12 । तीई चउइ 13 रहइ राति समइ शुभ-30 ध्यानवमइतउ फेयल्लानु उपनउं । प्रभाति आचार्य दिसायलोकुनु करइ । हवदाई 14 नि सुहूर्ति एकि

§139) 1 Bh.-आशीवा ; §141) 1 B. drops-र ; 2 B. Bh. वस्सु-र ; 3 Bh.-रठेरे ; 4 B. Bh. कीकी ; §142) 1 Bh. ह्यउ । L. ह्यउ । 2 P. एकि ; 3 P. omits. 4 L. चयारि । 5 P. ह्या । 6 Bh. त्थारइ । 7 Bh. कइसि । 8 L. ह्या । P. ह्या । 9 Bh. एक । 10 L. शीतला- । 11 L. आवियाई । 12 P. हरिया । 13 Bh. विहु । 14 Bh. L. हवदा । Bh.-ई ।

जाओ । तस्स पुत्रं लोणेणं दव्यओ वंदणं कयं पच्छा भावओ वंदणं कयं अथवा तस्स पुत्रं दव्यसंजमो
आसि पच्छा भावसंजमो । जाओ मीज्जु इष्टंतु ।

§145) आपत्तादिहूनकर्म्मविषद् कृष्णु इष्टंतु । तथा हि-

भारतवर्षे नयरीए वासार्त्ते सामी नेमिनाहो समोसदो । कन्हेण पुट्ठो, 'भयवं ! वासार्त्ते साहू
कीस न विहरति ?' सामी भगइ, 'वासामु षड्जीवा पडुवी ह्यइ वेण न चरंति साहूणो' । तओ कन्हो^१
अतेउरमज्झगओ वासार्त्तं गमेइ^२ । वीरो नाम कुर्विदो हरिमत्तो तत्थ षट्ठइ । सो अतेउरे पवेसं अलहंतो
दारं पूइय यच्चइ हरिदंसणं विणा न जिमइ । वित्ते वासार्त्ते रायाणो वीरओ य संपत्ता । हरिणा वीरओ
पुट्ठो, 'किं वीरय ! अइय दुच्चलो दीससि ?' दारवालेहिं जहावित्ते कइए अक्खलियपवेसं वीरयं काउं
सामिणो नेमिनाहस्स सपरियणो वंदणत्थं पत्तो कन्हो^३ । वंदिऊण सामिपायमूले उवविट्ठो । जइयम्मं
सोऊणं हरी एवं विन्नवेद, 'भयवं !' जइयम्मं काउं न खमो अन्दि, तह वि जे अन्ने वयं गिन्दिहस्संति'^४
तेमिं अणुमोयगं करिससामि, दिक्खामहूस्सं च करिससामि, नियपुत्तस्स वि पुत्तियाए या वयगइणनिसेहणं
न^५ करिससामि' । इयं नियमं गहिऊण गिहे आगओ । अन्नया विवाहजुग्गाओ कम्मयाओ पायवडियाओ
एवं भगइ, 'वच्छा'^६ ! सामिणीओ अहवा दासीओ हविससइ ?' ताओ भणंति 'अग्हे सामिणीओ भवि-
स्सामो' । कन्हो भगइ, 'तो नेमिपासे दिक्खं' गिन्दिह'^७ । आमं ति ताहिं भणिए निक्खमणमहामहिमं
काउं पव्वावेइ ।

18

§146) एगाए देवीए हरिपासे पेसिया निया कन्ना सिक्खविऊण, तओ सा कइइ, 'अहं दासी
भविससामि' । इमं सोऊण कन्हो चित्तेइ, 'अत्ता' वि मा कुणउ एवं, ता' तेणं सन्निओ वीरओ नियं चरियं
कइइइ कन्हस्स अगो । तक्कहियं सोऊण वीरदिणे हरी अत्थाणगओ कइइ 'भो भो सव्वे सामंता !' वीरय-
चरिसं^८ कुळं च निसामेइ ।

जेण रत्तप्फणो नामो वसंतो वदरीवणे^९ ।

आहओ पुहविसत्थेण वेमई नाम खत्तिओ^{१०} ॥

[१८३]

जेण चक्खुग्गामा गंगा वदंती कलुसोदगं ।

धारिया वामपाएण वेमई नाम खत्तिओ^{११} ॥

[१८४]

जेण धोसवई सेणा वसंती कलसीपुरे ।

निरुद्धा वामहत्थेण वेमई नाम खत्तिओ^{१२} ॥

[१८५]

20

25

वा केउमंजरीए इमाए धूयाए एस जचिओ^१ वरुंत्ति ।' इत्तं भणी करी अणिच्छमाणस्स वि
वीरयस्स^२ दिन्ना हरिणा सा^३ कन्ना । वीरो वि कन्हमीओ तं कन्नं^४ परिणीय नियगिहं गओ । तं नेऊण तीए^५
देवय च्च सपरियणो वीरो सुस्संस्स कुणइ पइदिवसं । अन्नदिणे हरिणा वीरओ पुट्ठो 'किं तुह आणं करेइ महु
धूया !' वीरओ भगइ, 'अहं तुह धूयाए आणं करेमि' । तओ रुट्ठो हरी तं भगइ, 'जइ सकम्माइ^६ न
करावेसि'^७ ता तुह नत्थि ठाणं । वीरो हरिसियचित्तो गिहं पत्तो तं भगइ, 'लहं पज्जलियं^८ कुणत्तुं । सा^९

30

§145) 1 Bh. L. P. पणइ ; 2 P. कन्हो ; 3 P. गमेइ ; 4 L. वीचई ; 5 P. कन्हो ; 6 L. सोऊ ;
7 L. मइवं ; 8 P. गिदिह- ; 9 L. अणुमोयगं ; 10 P. omits. 11 P. इयं ; 12 P. वच्छ ; 13 L. दिक्ख
सिण्णं ; P. सिण्णं ; §146) 1 P. अन्नो ; 2 Bh. P. तो ; 3 B. सामंत तो ; 4 Bh. वीरयस्स ; L. वीरियस्स ;
5 L. वदंती ; 6 L. विन्नाओ ; 7 L. Sandhi: एवविओ । P. धूयाए स ओविओ ; 8. Bh. P. वरीयस्स ।
9. P. स ; 10. P. कइइ ; 11. L. तह 12. Bh. omits स ; P. सकम्मा ; 13 Bh. करवेसि ; P. had
the same, but it is corrected later, 14 Bh. L. पज्जलियं ; P. पज्जलियं ।

पदिभगद, 'कोडिया! छपं न मुगसि'^१ वीरणं रज्जुएणं वाढं ताडिया । तओ'^२ सा रुयमाणी गिहे गंतुं कन्हम्म मच्चं साहइ । कन्हो भगद, 'तए सामित्तं मुत्तं दासत्तं मरिगयं' । मा भगद, 'ताय'^३ ! इन्दि वि मज्ज सामिचं कुणमु' । हरी भगद, 'जइ वीरओ मन्निसइ एव' । तओ तीए वाढं अचमत्थिओ कन्हो वीराओ मोडऊण तं पव्वावेउं पहुणा, निक्खमणमहूसवं'^४ वंछइ ।

८ §147) अत्रया सामी समोसरिओ । राया निगाओ । अट्टारस वि समगसाहस्सीओ वासुदेवो वंदित्तमो भट्टारयं पुच्छइ, 'अहं साहू कयरेणं वंदणेणं वंदामि' ? 'केण पुच्छसि' ? 'दव्वयंदणेणं भाव-यंदणेणं वा ? जेणं तुम्हे वंदिया होह' तेणं वंदणेणं वंदित्तं वंछामि' । सामी पभगद, 'भावयंदणेणं' । ताहै मच्चे साहूणो वारमावत्तयंदणेणं वंदइ । कन्हो बद्धसेओ जाओ । अन्नरायाओ जहा जहा परिसंता तहा गहा धंवराने घेर टिया । वीरओ वासुदेवाणुवितीए सव्वे वंदेइ । भट्टारयं पुच्छइ कन्हो, 'भयवं' ! मए 10 त्रिदि मइ' माठ मंगाम वीया, पुणि ईसउ' थाकउ नही जिसउ ह्यटा' वांदणउं देयतउ थाकउ' । सामी पभगद, 'गुमए ग्याइयं मग्गत्तं अज्जियं, एयाए सद्धाए तिथयएनामहम्मं निव्वयत्तियं, सत्तमीए' पुढवीए बद्धं आउहम्मं' निदण-गरिहणाए उव्वेउंतेणं' तइयपुढवीए' पाउगं कयं'^५ । तओ भगद, 'वीयवारमयि वंगमि जेणं तइयवरयाओ छुट्टामि' । सामी भगद, 'अओ परं दव्वयंदणं भयइ' ।

भावयंदणे कन्हो रिठ्ठेओ । दव्वयंदणे वीरओ रिठ्ठेओ ।

11 §148) शिरोवनामपूजायां सेवओ रिठ्ठेओ । यया-

एगम्म' रओ' दो सेवणा । तेमि आसन्ना गामा । सीमानिमित्तं संगमो जाओ । ताहै रायसमीरं नगरे गया । गच्छंतेदि तेदि मग्गे साहू समागच्छंतेओ विट्ठेओ । तत्थेणो भगद, 'सायुदसेने शुवा सिद्धिः' । निदवादिने काऊण वंदिया गओ । वीओ' साहू उव्वट्टयं करेइ, सो वि उव्वट्टासेणं वंदइ । गया रायसमीरे । बवहारो जाओ । पढमेणं जियं, वीएणं पराजियं । पढमसेवगम्म भावयंदणं । वीयसेवगम्म दव्वयंदणं । ११ सेवककथा ।

§149) विनरहम्मंविपउ शंभ-पालक कया । यथा भयरं नेमिनाहो वारवईए' पुणो समोमदो । वन्तम्म पाट्टे' वत्तुंगमो आगओ । तथा' हरिणा नियपुत्ता शंभ-पालका भणिया, 'जे पढमं सामि पणिससा तम्म इमं हुंगमं दावामि' । तओ संबो पमायममए मिञ्जाओ उट्ठिउं गिहे मंठिओ घेर धुर धुन-मंगारइ' भावओ सामि पगमेइ । लोमाभिमूयचित्तो पालओ राईए चउथपहरे उट्ठिऊण १२ अमरतिट्ठीओ ममवसरणे गंतुं मग्गेणं उओगेइ, कादिरविनीए' सामि वंदइ, जंपइ, 'हरिम्म पुच्छंतयम्म एतु मक्खिओ' हुआ' इय भणिकण नियणो, निक्खिओ मग्गमि केसरम्म, तओ भगद, 'मट्टु' देसु अत्तं सानी मए वंदिओ पुढं' । एया जंपइ, 'को इव्व मक्खिओ ?' सो भगद, 'नेमित्तणो मक्खिओ' । ता एया भोमरणे, एतु' वंदिकण उव्विट्ठा । हरिणा पुट्टो मामी, 'हुग्गे पढमं केण वंदिया ?' मामी भगद, 'इउवेने' एउएण वंदिया, आरेने पुण मंवेण वंदिया अउदे' । तओ हुट्टेणं' हरिणा मंचम्म रिओ १३ इरपुंगमो, अन्नमंदि मत्तंउिये एवं तम्म मय्यं । 'माव' विट्ठेणु' नि काउं पाळओ' निक्खामिओ' ।

§147) 15 L. कृष्णे । 16 B. म । L. म । 17 L. म । 18 P. अहो वारं । §147) 1 P. हे । 2 L. कृष्णे । 3 P. मक्खिओ । 4 B. कृष्णे । 5 P. एतं । 6 L. कृष्णे । 7 P. कृष्णे । 8 P. कृष्णे । 9 B. कृष्णे । 10 P. कृष्णे । §148) 1 L. कृष्णे । 2 P. कृष्णे । 3 L. कृष्णे । §149) 1 P. कृष्णे । 2 L. कृष्णे । 3 B. L. कृष्णे । 4 B. कृष्णे । 5 L. कृष्णे । 6 L. कृष्णे । 7 B. कृष्णे । 8 L. कृष्णे । 9 P. कृष्णे । 10 B. कृष्णे । 11 L. कृष्णे । 12 P. कृष्णे । 13 P. कृष्णे ।

भाय-दध्यवन्दनदिहता सव्ये संपुत्ता ॥

वन्दनकृतामानि पंच । यथा-

वन्दन १ चिद-२ किङ्कर्म ३ पूषाकर्म ४ च विणयकर्म च ५ ।

वन्दनगस्त य एए नामाई हवति पंचैव ॥

[१८६]

§ 150) वन्दनकृत्य पंच निषेधा यथा-

वकिरुत्त १ पराउत्ते २ पमत्ते ३ मा कयाइ वंदिञ्जा ।

आहारं च करंतो ४ नीहारं वा जइ करेइ ॥ ५

व्याक्षिन्नु व्याख्यान-प्रतिवेदनारिकई कती । 'पराउत्ते' पराहमुत्तु । प्रमत्तु नित्रा-शिक्षयिनिश्चादा-
नहोचरत्ता कती । सोपं ररुत्तम् ।

§ 151) दोष वग्रीस यथा-

अणाटियं १ च धदं २ च पविदं ३ परिपिडियं ।

टोलगइ ५ अंकुतां ६ चैव तथा कच्छवरिणियं ७ ॥

[१८७]

मच्छुच्वत्तं ८ मणसा पउट्टं ९ तह य वेइयावदं १० ।

मयसा चैव ११ मजंतं १२ मिची १३ गारव १४ कारणा १५ ॥

[१८८]

तेपियं १६ पडिणियं १७ चैव रुट्टं १८ तजियं १९ एव य ।

सटं २० च हीलियं २१ चैव तथा विण्णलिउंयियं २२ ॥

[१८९]

दिट्टमदिट्टं २३ च तथा सिंगं २४ च कर २५ मोयणं २६ ।

आलिद्धमणालिद्धं २७ ऊणं २८ उत्तरचूलियं २९ ॥

[१९०]

मूयं ३० च ढहरं ३१ चैव चुडलियं ३२ च अपच्छिमं ।

वणीमदोसपरिसुद्धं किङ्कर्म पउंजए ॥

[१९१]

अगादियमिति । जु आदर वासइ वांदणउं सु अनाहत्तु 'अगादियं' कहियइ १ । 'धदं' देहि मनि
विनयइहिनि जु वांदणउं सु सग्घु २ । पविद्धमिति । ओरहां परहां जायतां हूतां जु धानणउं सु
पविद्ध ३ । परिपिडियमिति । धणा जि हुइयं वंदनीय तीईं सयही रहईं समकालु जु वांदणउं सु
परिपिडित्तु अथवा संपिडित कर चरण हंतउ वांदइ अथवा अच्यक्त धर्णंसमुधारणु करतउ जु वांदइ सु
'परिपिडियं' कहियइ ४ । 'टोलगइ' इति । टोलु तीउ तेह जिम ऊछली ऊछली जु वांदइ सु 'टोलगइ' ५ २५
हाथि साही गुरु वइगाली वांदता हूतां अंकुसु ६ । माधु नी अपेक्षा रजोहरणु अंकुस जिम आगइ
करी वांदता अंकुसु ६ । काठया जिम आगइ पाठइ चालतां वांदतां 'कच्छवरिणियं' कहियइ ७ ।
मत्स जिम उठेहत्तु करतां वांदतां हूतां परायतंतु करी अथवा अनेरउ वांदतां मत्सोद्धत्तु ८ ।

§ 152) मनसा प्रदिष्टं जु गुरु ऊपरि छेपु वहतां मन माहि वांदणउं दीउइ सु मनसा
पउट्टु कहियइ ९ । वेदिकावट्टु पांच भेदे यथा-गोडा ऊपरि बाहु निवेसी करी वांदतां १, अधोनि-
वेसी २, उरुंगि कुट्टणी निवेसी ३, एकु जानु विहुं बाहु माहि करी वांदतां ४, वि जानु याहु माहि
करी वांदतां ५ वेदिकावट्टु १० । भयसा चैव संप-कुल-गच्छवहिनिश्चासनभय करी वांदतां भयवंदतु ११ ।

भजनं भजमानं 'मू र्हइं भजइ सेवइ इउ' इति बांदइ सु भजंतु १२ । 'मित्रु मू र्हइं आचारुं' इति कारणि बांदइ अथवा 'मू र्हइं एह सरसी भैत्री हुयउं' इसी बुद्धि करी बांदतां भैत्रीदोषु १३ । 'मू र्हइं ममाचारीचतुर्ह जागउं' इसी परि गर्वपूर्वकु जु बांदणउं सु गौरवदोषि दुष्टु गोरु १४ । कारण वस-पात्रलाभादिकु तेह निमित्तु बांदतां कारणदोषु १५ । लापवभय वसइतउ प्रच्छन्न होई बांदतां तैतिकु १६ ।

१५ § 153) आहारादि करंतां गुरु बांदतां प्रत्यनीकु १७ । कुहु गुरु बांदतां रुष्टु अथवा सकोपि मनि बांदतां रुष्टु १८ । 'न कोपु करिसि न पसाउ करिसि तइ बांदिइ किसउ छइ' इसउं कइतां बांदतां तर्जितु १९ । जठे विश्रामकारणि मायापूर्वकु बांदतां शठु २० अथवा ग्लानता मिसि करी असम्यग् बांदतां शठु २० । 'हीलयं' इति आचार्यं प्रवर्तक रत्नाधिक इत्यादि उपहासवचनपूर्वकु बांदतां हीलितु २१ । विदरिहुंनिनु देजादिकथा करतां बांदतां विपरिहुंचितु २२ । दृष्टादृष्ट अंधकारि आयत्तादि जिणि बांदणइ १० न करइं प्रकाशि करइ सु दृष्टादृष्टु कहियइ २३ । आवर्त्त समइ वामदक्षिण शिरःशृंग फरसतां हूतां शृंगु २४ ।

§ 154) कर राजमाशु भागु तेह दीधा पाखइ छूटियइ नहीं, बांदणउं पुणि कसुद्धि करी देयतां हूतां कर २५ । मोषणु 'बांदणा दीधा पाखइ हउं मेहिइउं नहीं' इति मोचन निमित्तु बांदतां मोषणु २६ । आश्रिष्टानाश्रिष्टु चउं प्रकारहं हुयइ-केती ही वार गुरुपादहं अथवा सुहुंती हाय १५ लगाहइ लछाटि न लगाहइ ? लछाटि लगाहइ गुरुचरणहं न लगाहइ २, केती ही वार विहुं न लगाहइ ३ विहुं लगाहइ ४ वि मांगा आश्रिष्टानाश्रिष्ट प्रीजउ अनाश्रिष्टु चउथउ रूडउ २७ । व्यंजन अक्षर आवरवक पूर्वहिं भनियां तीहं करी परिपूर्णु जु न हुयइ सु न्युनु २८ । द्वादशावर्तु बांदणउं दे बरी अनइ बरी ममामनणु दे करी जउ बांदइ तउ उत्तरचूलियं कदियइ २९ । मूयं चेति । मूक जिम अठवण बर्णं ऊपरतां जु बांदणउं दीजइ सु मूक ३० । मोटइ कठोरस्वरि जु बांदणउं दीजइ सु बडुरु ३१ । चुटियं चेति । चुटुली ऊंवाहु तेह जिम रजोहरण घरतां बांदतां चुटुलिउं अथवा हाय ऊंवाइ जिम भनाही मयइ बांदउं इमउं भनतां चुटुलिउ अपच्छिन्नं-बन्नीसमउ दोषु कदियइ ३२ । इति बर्षीम वृत्तिकर्मदोषरहितु वृत्तिकर्मु बांदणउं 'पउंजए' किसउ अर्थु ? प्रयुक्ते दियइ इमउ अर्थु ।

किपकर्मं पि कुणतो न होइ किइकर्मनिअरामागी ।

बर्त्तामादभयरे माहू टागं विरार्हितो ॥

[१९२]

२५

बर्त्तामदोमरदियं किइकर्मं जो पउंजइ गुरुणं ।

मो पाख निव्वाणं अचिरण विमाणसामं वा ॥

[१९३]

§ 155) काल आठ, यथा—

पटिकममे १ मज्जाए २ काउम्मणा ३ ऽरराइ ४ पाहुणए ५ ।

अलोपन ६ संसरमे ७ उलमट्टे य वंदणयं ॥

[१९४]

३०

सकइं अनुष्ठानु कारइं माधु उरिमी करिउं, अथवाहउं पुणि जु योगु हुयइ सु जानियउं । तथादि-
पटिकमहइ आरिहइं बांदतां देवउं । "बन्तारि पटिकमते किइकर्मनाइ" इमा आगमवचनइतउ ।
"सक्षात्रो" सिद्धेऽक्षयका अथवा माधु सार्थी योग वदतां मज्जाउ अनुष्ठानविदोषु करइ शिशां बांदणउं माधु

[153] 1. H. हउं ॥ 2. H. बडुरु ॥ 3. मज्जा ॥ [154] 1. H. drops till next पुट्टि ।
2. H. व । [155] 1. H. अठवण ।

साध्वी रहई संभवइ, आयक आविका रहई न संभवई । 'काउसग्ग' इति । विगइनियममहणादिनिमित्तु छइ कारिसग्गु तेह कारणि वांढणउं साधु रहई संभवइ, आयक रहई पुणि यथासंभवु जाणिवउं । अपराधक्षामणा आवकही रहई संभवइ इति तिहां वांढणउं आवकही रहई संभवइ । प्राधूर्णकवंदनु आलोचना वंदनु आवकही रहई घटइ । भक्तार्थी हुंतउ किणिहिं कारणि अमक्तार्थु प्रत्याख्यानु करइ सु संवरणु अथवा दिवसचरनु संवरणु तेह निमित्तु वांढणउं आवकही रहई संभवइ । उतमार्थु अंतसलेखना भवस्त चरमरूप तेह निमित्तु वांढणउं आवकही रहई घटइ ।

§156) दोष छ यथा-

माणो १ अविणय २ सिंसा ३ नीयागोयं ४ अबोही ५ भवतुही ।

अनमंतस्स छ दोसा एवं अडनउयसयमहियं ॥

[१९५]

§157) वित्त्यादिक छ गुण वांढणा तथा पूर्वहिं भणिया । अनेरउं पुणि वांढणा नउं फलु 10 उचराध्ययनसिद्धांत माहि संभलियइ । तथा हि-

(प्र-) वंदणएणं भंते ! किं जणइ ?

(उ-) गोयमा ! वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ । उयागोयं कम्मं वंधइ । सोहग्गं च णं अप्प-
दिहयं आणाफलं निव्वसेइ । दाहिणभायं जणइ ।

§158) अथ अनंतरु वंदनकसुत्रु वखाणियइ ।

15

आयप्पमाणमित्तो चउदिसिं होइ उग्गदो गुरुणो ।

अणणुत्तायस्स सया न कप्पए तत्थ पवेसिउं ॥

[१९६]

इसा वचनइतउ आत्मप्रमाणभूमि माहि गुरु तणी आहा पाखइ पइसिया कल्पइ नहीं, तिणि कारणि गुरु हुंतउ अहुटे हाथे वेगलउ आगइ ऊमउ होई 'इच्छामि खमासमणे !' वंदिउं जावणिज्जापे-
निरसीहियाए मत्थएण वंदामि' इसउं भणी 'भगवन् । मुइपत्तिं पडिलेहेमि' इसउं, कही पुनरपि 20
खमासमणे दुं कटी विधिवत् मुहुंती पडिलेहइ । तउ पाछइ ऊमउ अवनतोद्धुंगात्तु होई कटी हाथि ओषउ
मुहुंती मुइ आगइ धरी कटी भगइ 'इच्छामि' इत्यादि । 'इच्छामि' ईछउं-अभिलखउं-वांछउं : 'खमा-
समणे' क्षमाश्रमण-क्षमाप्रधान श्रमण दशविध श्रमणधर्मसहित ! इसउं वंदनीक गुरु वणउं संशोधयु, हे
क्षमाश्रमणसद्गुरो ! । 'वंदिउं' वांदिवा । किसइ कटी ? 'जावणिज्जापे' जपियइ कालु खपियइ इणि कटी इति-
ज्जापनीया उत्थान । उपवेसनकरणसमर्थी । स कउण ? 'निरसीहियाए' निपेघु वापुव्यापारपरिहाहू मूयोउनु 25
वेह रहई स नैपवकी तनु तिणि कटी । एतलइ 'इच्छ' इसउं प्रथमु स्वातु । यथा-

इच्छा य १ अणुत्तवणा २ अब्बावाई ३ च जत्त ४ जवणा य ।

अवराहखामणा ६ वि य छ द्वाणा हुंति वंदणए ॥

[१९७]

शिपिय एतलइ भणिइ हुंतइ जइ गुरु व्याखितु हुयइ तउ भगइ संक्षेपिहिं वांदि । आवइयकचरणि-
अनइ धृत्तिं माहि पुणि 'भिविधेन मनवचनकायहं कटी संक्षेपिहिं वादि' इसउं भणिउं । तउ शिप्यु 30
संक्षेपिहिं वांदिइ ।

§159) अब्बाखितु पुणि 'छंदेण' इसउं भगइ इति पहिलउं-गुरुवचनु । यथा-

छंदेण १ अणुजाणामि २ तहत्ति ३ तुन्मं पि वट्टए ४ एवं ५ ।

अहमवि खामेमि तुम्हे ६ वपणाई वंदणरिहस्स ॥

[१९८]

'छंदेण' नउ अर्थुं मूं रहई निरावाधु एउ अर्थु ।

§ 160) तउ शिष्यु योलइ 'अणुजाणह' 'मे' 'मिउग्गहं' इति वीजउं थानु । मूं रहई अवमह नी अनुज्ञा दियउ । अवमह तणउ अर्थु पूर्वहिं भणित छइ । इहां गुरुवचनु । 'अणुजाणामि' इति गुरु भणइ । अवमह तणी अनुज्ञा हउं दिउं छउं । तउ पाछइ शिष्यु अवमह माहि पइसी विधिवत् भूमि संढासा पढिलेही करी' वइसी करी गुरुवाद आपणउं ललाटु करहं करी फरसतउ हंतउ 'अहो कायं काय-' इसउं पढइ । अवश्य जाणिवा आवत्तं इति आवत्तंविधि कहियइ । मंदस्वरि 'अ' उच्चारणु करतां गुरुचरण करहं करी फरिसवा कर आवत्तावी गुरुस्वरि 'हो' उच्चारणु करतां ललाटु फरसिवउं । इसी परि 'कायं काय-' ए पुणि वि वि आखर उचरेवा आवत्तं करिवा । एवं आवत्तं त्रिन्दि । तथा 'ज' मंदस्वरि 'त्ता' मध्यस्वरि ऊचरतां कर आवत्तावी 'भे' उच्चस्वरि ऊचरतां ललाटु फरसिवउं । एवं 'जवणिजं च भे' ए पुणि त्रिन्दि त्रिन्दि अक्षर ऊचरतां आवत्तं करिवा, एवं आवत्तं छ वीजइ धानणइ । पुणि इसी परि आवत्तं छ । एवं आवत्तं वारह ।

§ 161) अधःकायु गुरुचरण तेह प्रति कायसंफानु माहरउ कायु हस्त ललाट लक्षणु तिणि करी संस्युं तेह नी पुणि अनुज्ञा दियउ । इसी परि 'अणुजाणह' पद नी योजना इहां पुणि करेवी । तउ मसक्ति अंजलि करी गुरुमुखि दत्तट्टि हंतउ भणइ 'खमणिजो भे कलामो अपकळंताण । बहु सुभेण भे दिवसो वइकंतो' । 'खमणिजो' खमेयउ-सहेवउ । 'भे' तुम्हे । ह्मु माहरां हाथ ललाट लागतां हंतो जु तुम्ह रहई कट्टु हुयइ सु सहियउ । तथा अपछांतइ निरावाधउं 'बहु सुभेण' षणइ शुभि करी 'भे' तुम्ह रहई दिवसु व्यतिक्रमिउ-नयउ । दिनमहणु रात्र्यादिकालोपलक्षणु इति वीजउं स्यानु । अत्र गुरुवचनु 'तहत्ति,—जिम तउं पूछइ तिम छइ' इसउ 'तहत्ति' नऊ अर्थु ।

§ 162) वीजउं गुरुवचनु शिष्यु देहवार्ता पूछी करी संजमवार्ता पूछइ । 'जत्ता भे' यात्रा संयम संज्ञायरूप 'भे' तुम्ह रहई समुत्सर्पइ-हुयइ इति चउथउं स्यानु । अत्र गुरुवचनु 'तुन्मं पि वट्ट' इति । मूं रहई तां संयमयात्रा वत्तइ-हुयइ-छइ तुम्ह रहई पुणि वत्तइ इसउ अर्थु 'तुन्मं पि वट्ट' एह तणउ । पुनरपि शिष्यु भणइ 'जवणिजं च भे' जापनीउ भणियइ शरीरु सु पुणि 'भे' तुम्ह तणउ इंद्रिय स्पर्शनेंद्रियादिक नोइंद्रिय मनु तीहं करी निरावाधु वत्तइ इति पांचमउं थानु । अत्र गुरुवचनु 'एवं' जिम तउं पूछइ तिम इसउ अर्थु 'एवं' एह नउ । पुनरपि शिष्यु योलइ-'खामेमि खमासमणो देवसियं वइकमं' हे क्षमाश्रमण गुरो ! देवसिकु दिवस संजातु व्यतिक्रमु-अपराधु खमावउं इति छट्टउं स्यानु । अत्र गुरुवचनु 'अहं अवि खामेमि तुम्हे', इउं पुणि अविधि' शिक्षाप्रदानादि देवसिकु व्यतिक्रमु अपराधु खमावउं । अत्र गुरु आपणयु आगइ एकवचनु शिष्य आगइ बहुवचनु भणतउ हंतउ गर्तु परिहरइ ।

§ 163) तउ विनेउ ऊठी करी 'आवस्सियाए' इत्यादिकि आलोयणायोगिय 'तस्स, खमासमणो पडिक्कामि' इत्यादिकि प्रतिक्रमयोगिय पायच्छित्ति करी आपणपउं सोधणहारु हंतउ अयमहइतउ नीसपी करी इसउं पढइ 'आवस्सियाए' इत्यादि अवदय कार्य चरणकरणसत्तरीरूप तिहां ज हुयइ स आयदयसी क्रिया तिणि करी आसेवनाद्वारि जु असाधु कीधउं तेह हंतउ पडिक्कमउं नियत्तउं इसी परि सामान्यही भणी

करी विरोधि करी भणइ, 'समासमनाजं' ह्यमासमना महासुनि भणियइ, तीई संवंधिनी जं देवसिकी आशातना तिगि करी । स पुगि किसी ? इत्याह 'तितीसमयराए' त्रेत्रीस आशातना मादृश्वतं अन्यतर एक अनामनिर्दिष्ट तिगि करी ।

§ 164) ति पुगि त्रेत्रीस आशातना ए कहियइ--

पुगजो पकरामने गंता ३ चिट्टण ३ निसीयणा ३ ऽऽयमणे १० ।

आलोपणऽ ११ पडिसुणणे १२ पुव्यालवणे १३ य आलोए १४ ॥ [१९९]

तह उचदंस १५ निमंतण १६ सद्धा १७ ययणे १८ तद्दा अपडिसुणणे १९ ।

सद्ध २० चि य तत्थगए २१ किं २२ तुम २३ तजाप २४ नो सुमणे २५ ॥ [२००]

नो सरसि २६ कइं छिचा २७ परिसं भित्ता २८ अणुट्टिपाइ कहे २९ ।

संपारपायघट्टण ३० विट्टु ३१ य ३२ समासणे ३३ आवि ॥ [२०१] 10

गुरु आगइ विहुं पअंहे पठि आसन्नगमनि' त्रिन्दि आशातना ३, स्यानि ६, निपीदनि, यइसिय-
इ ९, कहिरी गया गुरुतउ पहिलउं आचमनि १०, पहिलउं गमनागमनालोचनि ११, राति समइ
कउजु मूयइ जागइ या इसइ गुरि पठिइ हंतइ जागताई शिष्य रहइ गुरुचचन तणइ अपडिसुणणि १२,
सापु भायन्नादि समागमनि गुरुतउ पहिलउं आलपनि-आभाषणि १३, अनेरा आगइ पहिलउं भिक्षा
आलोई पाठइ गुरु आगइ भिक्षा आलोचनि १४, इसी परि उदर्शेनि १५, निमंत्रणि १६, गुरु
अणुट्टी आपनी रुचि साहु रहइ 'रखु चि' प्रचुरु देयतां १७, गुरु रहइ अरसविरसु दे करी आपणपइ
श्रिगधमघुपदिभोगइतउ अदनु १८, राति जिम पीजे ई कालि अप्रतिश्रवणि-गुरुचचन तणइ अप्रतिश्रवणि
१९, 'खद' चि गुरु प्रति निवुर भगनि २०, जिहां हुइ तिहां ई जि थिकउ गुरु रहइ प्रतियचनु देयतां
'वत्थगए' २१, गुरु प्रति 'किं' इति यचनि भणियउं 'मत्थणण थं' २२, गुरु आगइ 'तउं' कयनि
'तुग्हे' इमउं कहियउं २३, 'अमुक ग्लान तणउं वेयायुत्थादि फायुं करि' इसइ कयनि गुरि कहिइ 20
हंतइ 'तुग्हे काई न करो' इसउं भगनु तजायवचनु २४, गुरि तवजु कइतइ हंतइ शय्य चित्तकरणु
'नो सुमणु' तिगि करी २५, 'न सम्पक् समरइ तउं' 'एउ अयुं समयुं नहीं' इसा यचन तणइ भगनि
२६, आपणइ फया कयनि करी गुरुकयाच्छेदनि २७, हयदां भिक्षावेला हुइ इति समाभेदनि २८, समा
अणुट्टी हंती आपणरा रहइ यचनपाठय जाणाविवा कारणि सविशेष व्याख्यान कयनि २९, गुरुशय्यादि
रहइ पादादिचट्टनि चरणादि लगाढणि ३०, 'विट्ट' चि-गुरुशय्यादि उपवेशनि ३१, एवं उचांसनि ३२, 25
समासनि ३३, ए त्रेत्रीस आशातना भणिता ।

§ 165) हयदां जि आशातना मादि काई एक विरोधि करी भणइ 'जे किंचि मिच्छाप'
इतिस्तु आलंयनु 'यत् किंचित्' कहियइ । तद्दाहि-

'आलंयणाणि' दुहा भवंति । चडियाऽऽलंयणाणि, पडियाऽऽलंयणाणि च ।

जि सिप्यात्ववदुलजीउ हुयइं ति पडियालंयण आश्रइं । जि सम्पट्टि जीव हुयइं ति चडिया-
लंयण आश्रइं । तथा च भणिवं-

जाणिअ मिच्छदिट्ठी जे पडियालंयणाणि गिन्हंति ।

जे पुण सम्पट्टि तेसि मणो चडणपइडीए ॥

[२०२]

यत् किञ्चिन् आलंघन आश्रयं मिथ्याभातु जिगि क्रियां हुयइ स मिथ्याक्रिया-शरीरि येयायुत्वादि क्रियाकरणसामर्थिहि हंतइ अनमर्यादादि व्यपदेशि करी इत्यर्थः । तउ पाठइ अधादित्वइतउ मिथ्या ईहां छइ इगि अर्थि 'अ' प्रत्यइ कीचइ हंतइ 'मिच्छाए' एह नउ अर्थु 'मिथ्यायुक्तया' इमउ हुयइ ।

§ 166) 'मगदुकडाए' इत्यादि । मनोदुष्कृतु द्वेषकरणादिकु जेह माहि हुयइ स मगदुकडा 5 तिगि करी । असभ्यु कठिनु वचनु वाग्दुष्कृतु जेह माहि हुयइ स वाग्दुकडा तिगि करी । आसन्न-गमन-स्थानादिकु कायदुष्कृतु जेह माहि हुयइ स कायदुकडा तिगि करी । क्रोधु जेह माहि हुयइ स क्रोधा तिगि करी । मानु जेह माहि हुयइ स माना तिगि करी । माया जेह क्रिया माहि हुयइ स माया तिगि करी । लोमु जेह क्रिया माहि हुयइ स लोमा क्रिया तिगि करी । 'सञ्जकालियाए' अतीना-उनागत 10 बर्तमान लक्षणि सर्वकालि ज कीधी आशानना स सर्वकालिकी । भविष्य कालि किसी परि आशातना संभवइ ? 'आयतइ दीहि एह गुरु रहइ इसउं इसउं अनिट्टु करिसु' इति चिन्ताकरणइतउ भविष्य कालि आशातना संभवइ । तिगि करी । 'सञ्चमिच्छोवयाराए' सर्वइ मिथ्या उपचार 'विनयकरणादिक भाव 15 जेह क्रिया माहि हुयइं स सर्व मिथ्योपचारा तिगि करी । 'सञ्चयन्माइकमगाए' स सर्व धर्म अष्ट प्रवचनमातर अथवा करणीय व्यापार तीहं नउं अतिक्रमणु लंघनु जिगि क्रियां हुयइ सर्व धर्माति-क्रमणा तिगि करी जे आशातना तिगि करी जु मइं अतिचारु अपराधु कीचउ तेह अतिचार हंतइ हे 20 क्षमाभ्रमण ! ताहरी साखि पढिकमउं नियतउं अपुणकरणि करी बली नहीं करउं इमउ अर्थु । ईहां 'समाप्ति निमित्तु 'आशातना' ग्रहणु, तिगि कारणि पुनरुक्तदोषु नहीं । तथा दुष्कर्मकारु आपणपउं निंदउं भवविरक्त चित्तभावि करी । तथा गहउं तुम्हारी साखि । 'अप्याणं वोसरामि' आशातनाकारु आपणपउं वोसरिउं मेल्हउं ।

§ 167) वीजउं वानणउं' इसीहीं जि परि वीजइ । पुगि 'आवसियाए' न कहियइं । अथग्रह 20 हंतउं निःक्रमणु पुगि न वीजइं इसी परि वंदनकु दे करी शिष्यु काइं एकु ऊर्ध्वकाउ नमावी करी अथग्रहमध्यभागि वर्तमानु हंतउ आलोचणउं करणहार हंतउ गुरु प्रति इसउं कहइ, 'इच्छाकारेण संदिसइ' इत्यादि । इच्छाकारि आपणी वासना करी न पुगि घळात्कारि । 'संदिसइ' आदेशु दिवउ । 'दियसियं' दियसकृतु अतिचारु । इसउं आपहे गमियइ रात्रिकृतु पुगि जाणिवउ । 'आलोचयामि' 'आ' मर्यादा करी अथवा सामरस्यभावि करी लोचउं-प्रकटु' करउं । अत्रांतरे 'आलोचय' इसउं गुरुवचनु 25 सांमडी करी शिष्यु कहइ, 'इच्छामि' तुम्हारउं वचनु अंगीकरउं । 'आलोचयामि' इगि करी अंगीहंतु अर्थु क्रिया करी दिखालउं ।

§ 168) आलोचना ईं जि साक्षात्कारि भगइ । 'जो मे देवसिओ' जु मइं देवसिकु दिवस 30 माहि अतिचारु कीचउ सु पुगि अनेकरकारु हुयइ इत्याह 'काइओ' काय करी कीचउ । 'वाइओ' वचनि करी कीचउ । 'मागसिओ' मनि करी कीचउ । काइकु अमइ वाइकु' दिखालइ-उत्सुत्तो' 'उम्मागो' । अत्सुत्तु-सिद्धांतविरुद्ध अकारुक्रियाकरणादिकु । उन्माग्गु-अयोपशमिकभाववरूपु माग्गु लांघी करी चारित्रावाक 35 'ऊम्मोदय भावि करी कीचउ उन्माग्गु । 'अकप्पो'-अकल्पनीउ । 'अकरणिज्जो'-करिया उचिनु नहीं । जिगिहिं जि कारणि उन्मयु तिगिहिं जि कारणि उन्माग्गु, जिगिहिं जि कारणि उन्माग्गु, तिगिहिं जि

'§166) 1 Bh. प्रेर- । 2 Bh.-दुष्कृतु । 3 Bh. ज । §167) 1 Bh. frequently writes the initial syllable in this word as उ- । 2 Bh. प्रकटउं । 3 Bh. गुह नउं बवउ । §168) 1 B. omits. 2 Bh. वाचय ।

कारणि 'अकण्ठो' जिगिर्हि जि कारणि अकण्ठु विणिर्हि जि कारणि 'अकरण्णो' । इसी परि पाछिलिउं पाछिलिउं हेतु कारण, आगिलउं, आगिलउं हेतुमंतु कारुं । काइकु अनइ वाइकु भणियां ।

§ 169) ह्य मानसिकु कहइ- 'दुब्बाओ'-एकामचित्ता फरी आनै-रैद्रक्षणु दुब्बान्तु अशुमू लु चळचित्ता फरी चीतविउ सु दुर्विचितिउं । 'जं थिरे अण्ववसाणं सं ज्ञाणं, जं चळं तयं चित्तं' इति वचनात् । जिगिर्हि जि कारणि इसउं विणिर्हि जि कारणि 'अणापारो' अनाचारु । जिगिर्हि जि कारणि अनाचारु जिगिर्हि जि कारणि 'अणिच्छियञ्चो' अनेष्टव्यु-वांछिवउ नहीं । जिगिर्हि जि कारणि 'अणिच्छियञ्चो' जिगिर्हि जि कारणि 'असावगमाउगो' श्रावक रहइ योगु नही । किसा विपइ ? इत्याह- 'नाणे' ज्ञानु मतिज्ञानादिकु तेह नइ विपइ अन्नज्ञानादि करी । 'दंसणे' दर्शनु सम्यकणु तेह तणइ विपइ शंकाविकरण भावि करी । 'चरिताचरिते' चरिताचरितु देशचरितावकधम्मं तेह तणइ विपइ । ज्ञानादिकइ जि कहइ- 'सुण' छुतु सिद्धांतु तेह नइ विपइ अकालस्वाध्यायादिकि करी । 'सामाइए' 'सम्यक्त्वसामाइकु' 'सामा-10 इक' शब्दि करी ईहां कहियइ तेह नइ विपइ संशयकरणादि भावि करी ।

§ 170) चरिताचरिताविचार भेदि करी कहइ- 'तिन्हं गुत्तीणं, चउन्हं कसायाणं, पंचन्हं अणुव्य-याणं, तिन्हं गुणव्ययाणं, चउन्हं सिक्खवाचयाणं' । त्रिउं गुत्ति माहि, चउं कसाय माहि, पांच अणुव्रत माहि, त्रिउं गुणव्रत माहि, चउं शिक्षाव्रत माहि सविहुं प्रत तणइ मीलनि 'धारसविहरस सावगधम्मस' द्वादशविध श्रावकधम्मं माहि लु काई खंडिउं थोडउं सउं भागउं, लु विराधिउं घणउं भागउं सर्वया वा भागउं 'तस्स 15 निच्छा मि दुक्कडं' तेह संबधिउं, 'मे' माहरउं दुष्कलु, मिथ्या निष्कलु दुइ-इसउं आपहे गमित्यइ ।

§ 171) पुनरपि विनेउ विनतकाउ वद्धमानसवेगु मायाविदोषरहितु आपणया रहइ सर्वशुद्धि-निमित्तु इसउं पढइ 'सव्वरस वि देवसिय' इत्यादि । सर्वही देवसिकइ दुर्विचितितह दुर्भापितह दुष्चेष्टितह मनवचनकौपण्यापारह 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !' तुम्हे आपणी इच्छा आदेसु दियउ । अत्र गुरुवचनु 'पढिकंमह तस्स' पूर्वमणितव्यापारह संबधिउं 'मे' माहरउं दुष्कलु मिथ्या निष्कलु हुउ । 20

§ 172) तउ पाछइ अवग्रह हूंतउं नीसरी करी पुनरपि वंदतु दे' करी अपराधक्षामणा विपइ समुयतु हूंतउ इसउं कहइ- 'इच्छाका० संदिसह अरुमुट्टिओऽहं अन्निंतरदेवसियं खामेमि' इच्छाकारेण आपणी इच्छा करी, 'संदिसह' आदेशु दियउ, अभ्युत्थितु हउं अन्निंतर 'देवसिओ' दिवसमध्यसंभूतु अतिचारु खभाविवा निमित्तु उचयपरायणु वसंतं । तउ पाछइ 'पामह' इसउं गुरुवचनु सांभली करी पुनरपि शिष्यु भणइ- 'इच्छं' ईच्छउं भगवंत नी आण, खभावउं देवसिकु आपणउ अपराधु । तउ पाछइ 25 विधिपूर्वक, पंचांगसंस्पृष्टभूतलु मुखवक्रिका मुखदेसि दे करी इसउं भणइ- 'जं किंचि अपिचित्तियं' लु काई सामान्यादि अप्रीतिकु अप्रीतिमात्तु, 'परचित्तियं' पराऽप्रीतिकु गाढउं अप्रीतिकु, किसा विपइ ? 'भत्ते', 'पाणे' मत्त तणइ विपइ, पानक तणइ विपइ । 'वियए' विनउ अभ्युत्थानादिकु तेह नइ विपइ । 'वेयावेये' वैयावृत्तु ऊपधपध्यायष्टंभदानादिरूपु तेह नइ विपइ । 'आलावे' एकवार भाषण विपइ । 'संलावे' पुनः पुनर्भाषणकरारूप विपइ । 'उचात्तेणे' गुरुआसनतउ कंचा आसन विपइ । 'समासणे' गुरुआसनतुरुय 30 आसन विपइ । 'अंतरमासाए' गुरु बोलतां हूतां विचालभाषणरूप अंतरमापा' तेह नइ विपइ । 'उवरि-मासाए'-गुरुभाषा अनंतरु विशेषवचनपाटव जाणाविवा निमित्तु उपरिमापा तेह नइ विपइ । ईहं भक्तादिकहं नइ विपइ अप्रीति पराऽप्रीति भावि करी लु काई मू रहइ विनयपरिहीनु अमकिलुलु हयउं सुद्धु अरुपु आलोचनादिकु प्रायश्चित्तु तिणि करी लु सूझइ सु सुद्धु । बादरु पट्टाऽष्टमादिकु गुरुनाथचित्तु तिणि

करी जु सूम्इ सु बादरु । 'तुम्हे जागह' तुम्हे अतिशयसहित हानभावइतउ जाणउं । 'अहं न जाणामि' मूर्खभावता करी हउं न जाणूं । 'तस्स मिच्छा मि दुक्खे' तेह अप्रीतिकादि विषइ अतिचार तणउं दुक्खु 'मे' माहरउं मिथ्या निष्कटु हुउ ॥ छ ॥

§ 173) पुनरपि वि चानंगं दे करी यथाशक्ति प्रत्याख्यातु करइ । अत्र सात अर्थोधिकार । यथा-प्रत्याख्यान १, प्रत्याख्यानभंग २, प्रत्याख्यानाकार ३, प्रत्याख्यानसूत्रं ४, प्रत्याख्यानसूत्रार्थ ५, प्रत्याख्यानगुद्धि ६, प्रत्याख्यानफल ७ । एवं नामं तत्र प्रत्याख्यातु विहुं भेदे यथा-मूलगुणप्रत्याख्यातु १, उत्तरगुणप्रत्याख्यातु २ । तत्र मूलगुणप्रत्याख्यातु पुणि विहुं भेदे । यथा-सर्वमूलगुणप्रत्याख्यातु साधु तणां पांच महाप्रत १, देसमूलगुणप्रत्याख्यातु श्रावक तणां पांच अणुप्रत २ । उत्तरगुणप्रत्याख्यातु पुणि विहुं भेदे-सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यातु । साधु तणा उत्तरगुण धारणवैद संख्या यथा-

विंडस्स जा विसोही ४७, समिईओ ५ भावणा १२ तवो दुविहो २ ।

10 पडिमा १२ अभिग्गहा चिय ४ उत्तर गुणमो विपाणाहि ॥ [२०३]

तत्र उद्गमैयणा १६, उत्पादनैयणा १६, ग्रहणैयणा १०, मांसैयणा ५ भेद । सब्बइ मिलिया ४७ । यथा-आदाकम्पु १, औरेणिकु २, पूतिकम्पु ३, मिश्रजातु ४, स्थापना ५, प्राश्रुतिका ६, प्रादुष्करणु ७, क्रीतु ८, मासृत्यु ९, परिपरित्तु १०, अभ्याहृतु ११, उद्धिम्पु १२, मालाभ्याहृतु १३, आच्छेद्यु १४, अतुगद्यु १५, अभ्यवपूरक १६, ए सोउ उद्गमदोप नाम' कहियइ ।

15 § 174) तत्र आधाकम्पुं कहियइ-

आहाइ वियप्पेणं जइणं कम्मं असणाइ करणं जं ।

एकापारंमेणं तं आहाकम्मं आहिंसु ॥

[२०४]

माहरइ परि माधु विहरिया आविनिई इत्तइ संकटवि करी इमी मन तणी चिता करी पदकाय पृथिराद्यापारि' छ जीवनिद्याय तीई तगइ आरंभि विगसि करी कम्मं अज्ञान-मान-स्वादिम-स्वादिमरूप 10 पनुर्विध विट तणउं रंधन शानुककरणलक्षणु जु गृहस्थु करइ सु आधाकम्पुं कहियइ १ ।

§ 175) तथा-

उदेनियं अइ विमागओ य ओहे मए जं आरंमे ।

मिक्खवाउ कइ वि कम्पइ जो एही तम्म दाणट्ठा ॥

[२०५]

ओहेनिकुदेणु विहुं भेदे-ओपोहेसिकु १, विमानोहेसिकु २ । तत्र ओपोहेसिकु यथा-आपमता 25 निमित्त आरंभि हीपर हूंइ पाठइ जु को भिग्गचरु माहरइ परि आविसिइ तेह निमित्तु भिग्ग तणा केइ एहि भाग कइइ । किमउ अयुं ? आउणं घरमानुमइ तगइ अतुमारि घानि ओरियइ हूंइ पाठइ कपी तीही वि होडी माइ जियार निमित्तु अधिक्करउं घानु जु ओरियइ सु ओपोहेसिकु कहियइ । विमानोहेसिकु कइइ भेदे तिन होइ तिन कहियइ-

मंगडिमनुस्सरियं पउणं उदिमइ जं तमुदिट्ठं ।

30 वंडनमोमइ कइ, तं अग्गिउविवाइ पुण कम्मं ॥

[२०६]

अंगडि विवादिक्क दकानु कहियइ । तिन अग्गिउं मोरकपूणादिक्क अतनु, जु इयइ सु पउणं अग्गिउ-अग्गिउ अग्गिउ-अग्गिउ-अग्गिउ निमित्तु जु उरिणु सु उरिणु कहियइ । तथा वंडन कहियइ इयि-

§ 198) लम्पिप्रशंसागर्वितु¹ हंतउ जु यति गृहस्थ रहई अमिमानु ऊपजावी आहारु लियइ सु मानपिंडु ८ ।

§ 199) मायापसइतउ आहारकारणि रूपांतरु करी यति जु लइइ आहारु सु मायापिंडु ९ ।

§ 200) स्निग्ध-मधुरादिक आहार तणी एष्णा लगी जु षणउं फिरी लइइ सु लोभपिंडु १० ।
तथा च भणितम्—

कोहे घेउरखवगो १, माणे सेवई य खुहुगो नापं २ ।

माया आसाठभूई ३, लोभे केसरपसाहु ४ त्ति ॥

[२०९]

§ 201) दायक रहई दान पहिलउं स्तुति करी जु दानु लियइ सु पूर्वसंस्तुतु अथवा पाछइ स्तुति करी जु लइइ सु पश्चात्संस्तुतु । जननीजनकादि संवंधु करी जु लियइ सु पूर्वसंस्तुतु, सासु-ससुरादिवंधु करी जु लियइ सु पश्चात्संस्तुतु ११ एउ सगळ संस्तुतु पिंडु ।

10

§ 202) विद्याप्रयोगि दायक रहई जु¹ रंजवी करी दानु लियइ सु विद्यापिंडु १२ ।

§ 203) मंत्रप्रयोगि रंजवी करी जु दानु लियइ सु मंत्रपिंडु १३ ।

§ 204) अटदयीकरणादिक चूर्णुं तेह तणइ प्रयोगि जु दानु लियइ सु चूर्णपिंडु १४ ।

§ 205) सौभाग्य-दौर्भाग्यकर पादलेपादिक योग तेहे करी जु¹ दानु लियइ सु योगपिंडु १५ ।

§ 206) मंगल मूलिकाक्षानादि गर्भं विवाहकरणदि हेतु करी करावी जु दानु लियइ सु मूलकर्म-16 दोषदुष्ट पिंडु कहियइ १६ । ए सोल उत्पादनादोष साधुकीषा ऊपजइं इणि कारणि उत्पादनादोष कहियइ ।

§ 207) अथ दश एषणादोष लिखियइ—संक्रितु १, अश्रितु २, निक्षिप्तु ३, पिहितु ४, संहतु ५, दायकु ६, उन्मिद्यु ७, अपरिणतु ८, लिप्तु ९, छर्दितु १० ।

§ 208) तत्र आधाकर्ममादि दोषशंका करी अथवा संभावना हंती जु आहारु लियइ सु संक्रितु दोषु १ । जेह दोष नी शंका हंती जु आहारु करइ तेह दोष तणउं फलु लइइ इणि कारणि²⁰ निःशंक्रितु आहारु करी तउ करिवउ ।

§ 209) सचित्त पृथिवीकायादिक तीहं करी एकु अश्रितु, अचित्त अयोग्य मधुमद्यादिक तीहं करी एकु अश्रितु इसी परि विहुं भेदे अश्रितु २ अथवा पूर्वभणित वस्तु सरंठिति करि अथवा मात्रि कुडुली-दोइली-करोटी करोटकादिकि जु वस्तु लियइ सु अश्रितु दोषु २ ।

§ 210) सचित्त पृथिवीकायादिक तीहं माहि निक्षिप्तु सुहु ओदनादिकु लियइ तउ निक्षिप्तु²⁵ दोषु ३ । सु पुणि अनंतरु परंपरु परिहरिवउ ।

§ 211) जु सचित्ताचित्त पिहितु हुयइ सु पिहितु । यथा—हेठलि देउ वस्तु हुयइ, ऊपरि ढांकणउं मोटउं हुयइ, पाछइ ऊपाहतां कडाचित् भाजइ, तउ पाछइ आत्म-संजमविघातादिक दोष हुयइ तिणि कारणि पिहितु दोषु ४ ।

§ 212) अयोग्य वस्तु उत्तारी करी तिणि मात्रि योग्य वस्तु दियइ गृही, यति जु लियइ तउ³⁰ संहतु दोषु ५ ।

§ 213) अतिदुःख हाथे धूतते जु हुयइ, तथा मंदलोचनयलु जु हुयइ सु धेरु कहियइ, अशानादि धणी जु न हुयइ, सु अग्रसु कहियइ, कुष्ठरोगी पंडु कहियइ, सकंषु देहु जेह तणउं हुयइ सु वेविक

§198) 1 Bh. लम्पि प्रशंसा गर्वि करी गविंडु । §202) 1 Bh. puts it before दानु । §205) 1 Bh. इ ।

§ 184) गृहस्थि आपणा अथवा अनेरा गाम हूंतउं आंणी करी साधु रहइं जु दीजइ सु अभ्याहनु कहियइ ११ ।

§ 185) घड्ड अथवा कूडी जोगिणी माटी छाणि करी लीपीं मेरुडी हुयइ, यति वणइं कारणि ऊपाडी करी जु दीजइ सु उक्किमु कहियइ १२ ।

5 § 186) ऊपरि छींकरइ, हेठि भूमिहरि उभय त्रिहुं हेठि ऊपरि यथा मोटेरी गुडडी हुयइ तेह मादि वस्तु हुयइ सु वस्तु ऊपहरां होई हेठां हुईयइ तउ आपडियइ इणि कारणि उभउ कहियइ । तिर्यग् तिरिछउं हाथ हूंतउं वेगलउं वस्तु हुयइ करमहण अशक्यु जु ले करी विहरावइ सु मालाभ्याहनु कहियइ १३ ।

§ 187) स्वामी अथवा चोर पर कन्हा ओदाली करी साधु रहइं जु दियइ सु आच्छेयु कहियइ १४ ।

10 § 188) अनेकहं रहइं भखुं कीधउं हुयइ तीहं माहि एकु दियइ सु अनिसयु कहियइ १५ ।

§ 189) मूलारंभि आपणइ कारणि कीघइ हूंतइ पाछइ जावंतिक-यति-पावंदिकहं निमित्तु तंडुलादिकु जु ओयरइ सु अच्यवपूरु कहियइ १६ ।

इसी परि संक्षेपिहिं सोल उद्गमदोष गृहस्थकृत कहिया ॥

§ 190) अथ उत्पादनादोष' सोल लिखियइ-धत्री १, दूति २, निमित्त ३, आजीविका ४, 15 यनीपक ५, चिकित्सा ६, क्रोध ७, मान ८, माया ९, लोभ १०, पूर्वपञ्चात्संस्तव ११, विद्या १२, मंत्र १३, चुन्न १४, योग १५, मूलकर्म १६, ए सोल उत्पादनादोष नाम ।

वालसस खीर-मज्जन-मंडण-किलावणंकघाइत्तं ।

करिय कराविय वा जं लहइ जई घाइपिंडो सो ॥

[२०८]

§ 191) क्षीरधात्री १ मज्जनधात्री २ मंडनधात्री ३ क्रीडापनधात्री ४ अंकधात्री ५, वालक 20 रहइं पंचधात्री हुयइ तीहं नउं कर्मुं करी अथवा करावी यति जु अशनादिकु लहइ सु धात्रीपिंडु कहियइ १ ।

§ 192) प्रकट्ट अथवा छानउ संदेसउ कही करी यति जु पिंडु अशनादिकु लहइ सु दूतिपिंडु कहियइ २ ।

§ 193) निमित्त शुभाशुभ लाभालाभादिक कही करी यति जु पिंडु लहइ सु निमित्तपिंडु कहियइ ३ ।

25 § 194) जाल्यादिघनहं रहइं आपणपउं सजातीयदि जाणवी करी जु पिंडु यति लहइ सु आजीविकापिंडु ४ ।

§ 195) ब्राह्मणादि भक्त जि हुयइ तीहं रहइं ब्राह्मणादि भक्त आपणपउं दिखाली करी तीहं कन्हा यति जु लहइ सु यनीपकपिंडु ५ ।

§ 196) औषध-वैद्यायुपदेशदानादि चिकित्सा आहारादिकारणि करी गृहस्थ कन्हा जु पिंडु 30 यति लहइ सु चिकित्सापिंडु ६ ।

§ 197) विद्यातपःप्रभासु नृपादिपूजा शापादिकु क्रोधकट्ट देली करी यति हूंतउं यीहउं गृहस्थ जु पिंडु दियइ सु क्रोधपिंडु ७ ।

§185) 1 Bh. मेरुडी । §188) 1 Bh. मखु । §190) 1 B. उत्पादना- । §195) 1 Bh. कही ।

§ 198) अग्निप्रदांसागर्भितुं हृतं जु यति गृहस्य रदहं अग्निमानु उपजावी आहारु लियइ
सु मानसिदु ८ ।

§ 199) मायापमरवउ आहारुकारिणि रूपांतरु करी यति जु लहइ आहारु सु मायापिंडु ९ ।

§ 200) शिग्ध-मधुसुरादिक आहारु तनी एष्म लगी जु धगउं किरु लहइ सु लोभपिंडु १० ।
तथा च भनितम्-

कोहे फेउररगमो १, माये सेवई य मुद्दमो नायं २ ।

माया जानाडभई ३, लोभे फेगरपताहु ४ चि ॥

[२०९]

§ 201) दायक रदहं दान पहिउउं खुनि करी जु दानु लियइ सु पूर्वसंखनु अथवा पाछइ
खुनि करी जु लहइ सु पभात्संखनु । जननीजनकादि संखनु करी जु लियइ सु पूर्वसंखनु,
मानु-समुपारिगंखनु करी जु लियइ सु पभात्संखनु ११ एउ सगळ संखनु पिंडु ।

§ 202) विद्याभोगि दायक रदहं जु रंजनी करी दानु लियइ सु विद्यापिंडु १२ ।

§ 203) मंत्रप्रयोगि रंजनी करी जु दानु लियइ सु मंत्रपिंडु १३ ।

§ 204) एउदसोकरनादिकु पूरुं वेहे तनइ प्रयोगि जु दानु लियइ सु पूरुपिंडु १४ ।

§ 205) सौभाग्य-दर्शाभंग्यर पादलेनादिक योग वेहे करी जु दानु लियइ सु योगपिंडु १५ ।

§ 206) मंगळ गूढिद्वारादिक गन्धे विद्याकरुणारि हेतु करी करानी जु दानु लियइ सु मूलकर्म-
दोषदुष्टु पिंडु पहिउइ १६ । ए मोल उदादनादोष साधुकीया उपजई इगि कारणि उदादनादोष कहियई ।

§ 207) अथ हस एणनादोष डिस्त्रियदं-संखितु १, अशितु २, निशितु ३, पिहितु ४,
संखनु ५, दायनु ६, उनिमधु ७, अपरिखनु ८, लिमु ९, उरिखनु १० ।

§ 208) तत्र आधारुगनादि दोषशंका करी अथवा संभाषना हूती जु आहारु लियइ सु
संखितु दोषु १ । जेद दोष नी शंका हूती जु आहारु करइ तेद दोष तगउं फळु लहइ इगि कारणि²⁰
निःशंकितु आहारु करी तउ करियउ ।

§ 209) सचित्त श्रुथिरीकायादिक तीहं करी एकु अशितु, अचित्त अयोग्य मधुमद्यादिक
तीहं करी एकु अशितु इनी परि विदुं भेदे अशितु २ अथवा पूर्वभणित वस्तु सरटिति करि अथवा
मात्रि कुडुडी-जोहनी-करोटी फोटकारिकि जु वस्तु लियइ सु अशितु दोषु २ ।

§ 210) सचित्त श्रुथिरीकायादिक तीहं माहि निशितु सुदु ओदनादिकु लियइ तउ निशितु²⁵
दोषु ३ । सु पुनि अनंतरु परंपरु परिहरियउ ।

§ 211) जु मयिचाचित्त पिहितु हुयइ सु पिहितु । यथा-देउलि देव वस्तु हुयइ, ऊपरि डांकणउं
मोटउं हुयइ, पाछइ ऊसाढनां कदाचिन् भाजइ, तउ पाछइ आत्म-संजमविषातादिक दोष हुयई तिति
कारिणि पिहितु दोषु ४ ।

§ 212) अयोग्य वस्तु ऊगारी करी तिति मात्रि योखु वस्तु विचइ गृही, यति जु लियइ तउ³⁰
संखनु दोषु ५ ।

§ 213) अतिइदु हाथे धूतेतु जु हुयइ, तथा मंदलोपनयलु जु हुयइ सु धेरु कहियइ, अशनादि
धनी जु न हुयइ, सु अमसु कहियइ, कुटुगी पंडु कहियइ, संखनु देहु जेद तगउं हुयइ सु बेविक

§ 198) 1 Bh. अग्नि प्रदांसा गर्भितुं करी गर्भितुः । § 202) 1 Bh. puts it before दानु । § 203) 1 Bh. क ।

- § 184) गृहस्थ आपणा अथवा अनेरा गाम हूंतउं आणी फरी साधु रहइं जु दीजइ सु अभ्याह्तु कहियइ ११ ।
- § 185) चढउ अथवा कूडी जोगिणी मांटी छाणि फरी लीपीं मेल्ही हुयइ, यति वणइं कारणि ऊचाडी फरी जु दीजइ सु उद्धिस्तु कहियइ १२ ।
- 5 § 186) ऊपरि छींफइ, हेठि भूमिहरि उभय विहुं हेठि ऊपरि यथा मोटेरी गुडही हुयइ तेह माहि वस्तु हुयइ सु वस्तु ऊपरहां होई हेठां हुईयइ तउ आपडियइ इणि कारणि उभउ कहियइ । तिर्यगु तिरिछउं हाथ हूंतउं वेगलउं वस्तु हुयइ करग्रहण अशक्यु जु ले फरी विहरायइ सु मालाभ्याह्तु कहियइ १३ ।
- § 187) स्वामी अथवा चोरु पर कन्हा ओदाली फरी साधु रहइं जु दियइ सु आच्छेयु कहियइ १४ ।
- 10 § 188) अनेकहं रहइं भक्कु कीधउं हुयइ तीहं माहि एकु दियइ सु अनिसट्टु कहियइ १५ ।
- § 189) मूलारंभि आपणइ कारणि कीधइ हूंतइ पाछइ जावंतिक-यति-पालंडिकहं निमित्तु वंदुलादिकु जु ओयरइ सु अप्यवपूक्कु कहियइ १६ ।
- इसी परि संक्षेपिहिं सोल उद्रमदोप गृहस्थकृत कहिया ॥
- § 190) अथ उत्पादनादोप' सोल लिखियइ-धात्री १, इति २, निमित्त ३, आजीविका ४, 15 पनीपक ५, चिकित्सा ६, क्रोध ७, मान ८, माया ९, लोभ १०, पूर्वपश्चात्संस्तव ११, विद्या १२, मंत्र १३, चुन्न १४, योग १५, मूलकर्म १६, ए सोल उत्पादनादोप नाम ।
- बालस्स खीर-मज्जण-मंडण-किलावणंकघाइत्तं ।
करिय कराविय वा जं लहइ जई घाइपिंडो सो ॥ [२०८]
- § 191) क्षीरधात्री १ मज्जनधात्री २ मंडनधात्री ३ क्रीडापनधात्री ४ अंकधात्री ५, बालक 20 रहइं पंचधात्री हुयइ तीहं नउं कर्मु फरी अथवा फरावी यति जु अशनादिकु लहइ सु धात्रीपिंडु कहियइ १ ।
- § 192) प्रकट्ट अथवा छानउ संदेसउ फही फरी यति जु पिंडु अशनादिकु लहइ सु दूतिपिंडु कहियइ २ ।
- § 193) निमित्त शुभाशुभ लाभालाभादिक कही फरी यति जु पिंडु लहइ सु निमित्तपिंडु कहियइ ३ ।
- 25 § 194) जात्याविधनइ रहइं आपणपउं तज्जातीयादि जाणावी, फरी जु पिंडु यति लहइ सु आजीविकापिंडु ४ ।
- § 195) ब्राह्मणादि भक्त जि हुयइ तीहं रहइं ब्राह्मणादि भक्तु आपणपउं दिखाली फरी त कन्हां यति जु लहइ सु पनीपकपिंडु ५ ।
- § 196) औपध-त्रैचाद्युपदेशदानादि चिकित्सा आहारादिकारणि फरी गृहस्थ कन्हां जु 30 यति लहइ सु चिकित्सापिंडु ६ ।
- § 197) विधातपःप्रभायु नृपादिपूजा शापादिकु क्रोधफळु देखी फरी यति हूतउं धीहवउं गृह जु पिंडु दियइ सु क्रोधपिंडु ७ ।

§ 198) लब्धिप्रशंसागर्भितुं हंतव जु यति गृहस्थ रहई अभिमानु ऊपजावी आहारु लियइ सु मानपिंडु ८ ।

§ 199) मायावसइतव आहारकारणि रूपांतरु करी यति जु लइइ आहारु सु मायापिंडु ९ ।

§ 200) स्निग्ध-मधुरादिक आहार तणी तृष्णा लगी जु घणउं फिरी लइइ सु लोभपिंडु १० ।
तथा च भणितम्—

कीहे घेउरखवगो १, माणे सेवई य तुहुगो नार्य २ ।

माया आसाठभई ३, लोभे केसरयसाहु ४ चि ॥

[२०९]

§ 201) दायक रहई दान पहिलउं स्तुति करी जु दानु लियइ सु पूर्वसंस्तु अथवा पाठइ स्तुति करी जु लइइ सु पश्चात्संस्तु । जननीजनकादि संबंधु करी जु लियइ सु पूर्वसंस्तु, सात्-समुदादिसंबंधु करी जु लियइ सु पश्चात्संस्तु ११ एउ सगळ संस्तु पिंडु ।

10

§ 202) विद्याप्रयोगि दायक रहई जु रंजवी करी दानु लियइ सु विद्यापिंडु १२ ।

§ 203) मंत्रप्रयोगि रंजवी करी जु दानु लियइ सु मंत्रपिंडु १३ ।

§ 204) अष्टदसीकरणादिकु चूर्णु तेह तणइ प्रयोगि जु दानु लियइ सु चूर्णपिंडु १४ ।

§ 205) सौभाग्य-दौर्भाग्यकर पादलेपादिक योग तेहे करी जु दानु लियइ सु योगपिंडु १५ ।

§ 206) मंगल मूलिकान्नानादि गर्भ विवाहकरणादि हेतु करी करावी जु दानु लियइ सु मूलकर्म्म-15 दोषदुष्टु पिंडु कहियइ १६ । ५ सोल उत्पादनादोष साधुकीषा ऊपजइ इणि कारणि उत्पादनादोष कहियइ ।

§ 207) अथ दस एषणादोष लिखियइ-संकितु १, अशितु २, निशितु ३, पिहितु ४, संहतु ५, दायकु ६, वन्मिष्टु ७, अपरिणतु ८, लिमु ९, छरितु १० ।

§ 208) तत्र आमाकर्मदि दोषशंका करी अथवा संभावना हंती जु आहारु लियइ सु संकितु दोषु १ । जेह दोष नी शंका हंती जु आहारु करइ तेह दोष तणउं फळु लइइ इणि कारणि 20 निःशंकितु आहारु करी तउ करियउ ।

§ 209) सच्चित् पृथिवीकायादिक तीई करी एकु अशितु, अचित् अयोग्य मधुमचादिक तीई करी एकु अशितु इती परि विहुं भेदे अशितु २ अथवा पूर्वभणित वस्तु खरंति फरि अथवा मात्रि कुडुली-दोहली-करोटी करोटकादिकि जु वस्तु लियइ सु अशितु दोषु २ ।

§ 210) सच्चित् पृथिवीकायादिक तीई माहि निशितु सुकु ओदनादिकु लियइ तउ निशितु 25 दोषु ३ । सु पुणि अनंतरु परंपरु परिहरियउ ।

§ 211) जु सचित्ताचित् पिहितु हुयइ सु पिहितु । यथा-हेठलि देउ वस्तु हुयइ, ऊपरि टांकणउं मोटउं हुयइ, पाछइ ऊपाठतां कदाचित् भाजइ, तउ पाछइ आत्म-संजमविधातादिक दोष हुयइ तिणि कारणि पिहितु दोषु ४ ।

§ 212) अयोग्य वस्तु ऊतारी करी तिणि मात्रि योग्य वस्तु दियइ गृही, यति जु लियइ तउ 30 संहतु दोषु ५ ।

§ 213) अतिवृद्ध हाथे पूजते जु हुयइ, तथा संदलोचनमळ जु हुयइ सु धेरु कहियइ, अशानादि धणी जु न हुयइ, सु अप्रभु कहियइ, कुष्टरोगी पंडु कहियइ, सकुपु देहु जेह तणउं हुयइ सु वेविक

§ 198) 1 Bh. लब्धि प्रशंसा गर्भितुं करी गर्भितुं । § 202) 1 Bh. puts it before दानु । § 205) 1 Bh. ऊ ।

§ 184) गृहस्थि आपणा अथवा अनेरा गाम हूंतउं आणी करी साधु रहइं जु दीजइ सु
अभ्याइतु कहियइ ११ ।

§ 185) षड अथवा कूडी जोगिणी माटी छाणि करी लीपीं मेलही हुयइ, यति वगइं कारणि
ऊपाडी करी जु दीजइ सु उरिमु कहियइ १२ ।

5 § 186) ऊरि टीकउ, हेठि भूमिहरि उभय विहुं हेठि ऊपरि यया मोटेरी गुडही हुयइ तेह
मादि वस्तु हुयइ सु वस्तु ऊपहरां होईं हेठां हुईयइ तउ आपडियइ इणि कारणि उभउ कहियइ ।
विरेणु विरिछउं हाथ हूंतउं वेगळउं वस्तु हुयइ करमहण अशक्यु जु ले करी विहरावइ सु मालाभ्याइतु
कहियइ १३ ।

§ 187) स्वामी अथवा थोर पर कन्हा ओदाडी करी साधु रहइं जु दियइ सु आन्ठेसु
कहियइ १४ ।

10 § 188) अनेकरं रहइं मनुं कीधउं हुयइ तीईं मादि एकु दियइ सु अनिसुदु कहियइ १५ ।

§ 189) मूलारिणि आनगर कारणि कीयइ हूंतइ पाछइ जावंतिक-यति-पालंढिकइं निमिहु
मंहुलादिहु जु ओपरइ सु अण्यवणु कहियइ १६ ।

इती परि संशेषिदिं सोळ उद्रमदोष गृहस्थकृत कहिया ॥

§ 190) अथ पत्तादनादोष' सोळ किरियइ-धारी १, दूति २, निमित्त ३, आजीविका ४,
15 वनीरक ५, विश्रिता ६, क्रोध ७, मान ८, माया ९, लोभ १०, पूर्वपञ्चासंख्य ११, विषा
१२, मंत्र १३, पुत्र १४, योग १५, मूलकर्म १६, ए सोळ उत्पादनादोष नाम ।

पादस्म खीर-मञ्जण-मंडण-किन्नावणंकथाइत्तं ।

करिय कराविय वा जं लहइ जईं धाइपिंडो सो ॥

[२०८]

§ 191) क्षीपात्री १ मञ्जनधारी २ मंदनधारी ३ क्रीडाधारी ४ अंकधारी ५, बालक
20 एरइं पंचधारी हुयइ तीईं नउं कण्ठु करी अथवा कण्ठी यति जु अशनादिकु लहइ सु धारीविंहु कहियइ १ ।

§ 192) मकुड अथवा छानउ संदेमउ कशी करी यति जु विंहु अशनादिकु लहइ सु दूतिविंहु
कहियइ २ ।

§ 193) निमित्त सुभासुम छामाळामादिक कशी करी यति जु विंहु लहइ सु निमित्तविंहु
कहियइ ३ ।

25 § 194) जाहादियनइं रहइं आपणनं तज्जानीयादि जाणावी करी जु विंहु यति लहइ सु
आजीविकादिहु ४ ।

§ 195) ब्राह्मणादि मळ ति हुयइ तीईं रहइं ब्राह्मणादि मळु आपणनं दिहाली करी तीईं
कण्ठां वति जु लहइ सु वनीरकदिहु ५ ।

§ 196) औचध-वैणकुदंत्तानादि विष्टिमा आहातादिकारि करी गृहस्थ कशीं जु विंहु
30 वति लहइ सु विष्टिमविंहु ६ ।

§ 197) विद्यानःसंभु सुदिवसु अशनादिकु कोवकउ देसी करी यति हूंतउं कीरतउ गृहणु
जु विंहु लियइ सु कोवकदिहु ७ ।

§ 184) I. B. ११६३; § 185) I. B. ११७५; § 186) I. B. ११७६; § 187) I. B. ११७७; § 188) I. B. ११७८; § 189) I. B. ११७९; § 190) I. B. ११८०; § 191) I. B. ११८१; § 192) I. B. ११८२; § 193) I. B. ११८३; § 194) I. B. ११८४; § 195) I. B. ११८५; § 196) I. B. ११८६; § 197) I. B. ११८७.

§ 198) तन्निप्रसंतामर्षितुं हूतं जु यति गृहस्य रदहं अभिमानु उपजावी आहार लियइ
सु नानरिडु ८ ।

§ 199) मायावसरतउ आहारवराणि रूपांतरु करी यति जु लहइ आहार सु मायाविडु ९ ।

§ 200) दिग्ध-मधुसदिक आहार तगी एण्ण लगी जु धनउं किरी लहइ सु लोभविडु १० ।
तथा ९ भणिगन्-

कोहे पेउरसरगो १, मापे सेवई ५ गुडुगो नायं २ ।

माया आसाउभई ३, लोभे केसरपसाडु ४ ति ॥

[२०९]

§ 201) दापक रदहं दान वरिडउं सुति करी जु दानु लियइ सु पूर्वसंखनु अथया पाउइ
सुति करी जु लहइ सु पभात्वसंखनु । जननीजनकादि संखनु करी जु लियइ सु पूर्वसंखनु,
मानु-मनुसदिसंखनु करी जु लियइ सु पभात्वसंखनु ११ एउ सख्ख संखनु विडु ।

§ 202) विगाम्भोगि दापक रदहं जु' रंजरी करी दानु लियइ सु विद्याविडु १२ ।

§ 203) मंयदयोगि रंजरी करी जु दानु लियइ सु मंत्रविडु १३ ।

§ 204) धरदधीकरनादिडु धूनुं वेद तगइ प्रयोगि जु दानु लियइ सु धूर्णविडु १४ ।

§ 205) सोनाम्य-दर्भांग्यधर पारलेनादिक योग वेहे करी जु' दानु लियइ सु योगविडु १५ ।

§ 206) मंगउ मृत्तिकादानानादि गर्भ विवाहकरणारि हेतु करी करावी जु दानु लियइ सु मूलकर्म-
दोषदुनु विडु कदियइ १६ । ५ गोल उस्तादनादोष सापुकीया उपजई इगि कारणि उस्तादनादोष कदियई ।

§ 207) अथ दस एण्णदोष विरिपरं-संविडु १, ग्रथितु २, निश्चिनु ३, विहितु ४,
संखनु ५, दापइ ६, उन्निमु ७, अपरिणु ८, तिनु ९, उरिंतु १० ।

§ 208) तत्र आपाकमोदि दोषसंघा करी अथया संगामना हूती जु आहार लियइ सु
संखनु दोषु १ । जेद दोष नी संघा हूती जु आहार करइ वेद दोष तगउं फलु लहइ इगि कारणि
निःसंखितु आहार करी तउ करियउ ।

§ 209) मयिष वृथिषीकायादिक तीदं करी एक ग्रथितु, अयिष अयोग्य मधुमद्यादिक
तीदं करी एक ग्रथितु इनी परि विदुं भेदे ग्रथितु २ अथया पूर्वमणित वस्तु सरदिटि करि अथया
मात्रि कुडुठी-जोहनी-करोठी करोठकादिकि जु वस्तु लियइ सु ग्रथितु दोषु २ ।

§ 210) सचिन वृथिषीकायादिक तीदं मादि निश्चिनु सुखु ओदनादिडु लियइ तउ निश्चिनु ३
दोषु ३ । सु पुनि अनंतरु परंपरु परिहरियउ ।

§ 211) जु मयिषाचिन विहितु ह्यइ सु विहितु । यथा-देउलि वेउ वस्तु ह्यइ, ऊपरि डांकणउं
मोटउं ह्यइ, पाउइ ऊसाठनां कदाचिन् भाजइ, तउ पाउइ आत्म-संजमविषातादिक दोष ह्यइ तिगि
कारणि विहितु दोषु ४ ।

§ 212) अयोग्य वस्तु ऊनारी करी तिगि मात्रि योग्य वस्तु दिवइ गृही, यति जु लियइ तउ ३०
संखनु दोषु ५ ।

§ 213) अनिष्टु हाथे धूजते जु ह्यइ, तथा मंदलोपनयडु जु ह्यइ सु धेक कदियइ, अशनादि
पगी जु न ह्यइ, सु अमसु कदियइ, कुटरोगी पंडु कदियइ, सखंनु वेदु जेद तगउं ह्यइ सु वेविक

कहियइ, प्यररोगी ज्वरी कहियइ, चक्षुर्षलहीतु अंधु कहियइ, बालकु लहुडउ भोलउ अव्यक्तु कहियइ, छाकिउ मत्तु कहियइ, भूताधिष्ठितु उन्मत्तु कहियइ, कर-चरणरहितु कर-चरणलिप्तु कहियइ, गलितदेहु पगलित कहियइ, अठील पातिउ निगडितु कहियइ, हाये हथुंहुं जेह रहइ हुयइ सु अंडुउ कहियइ, चाखही जेह ने पगे हुयइ सु पाऊयारूहु कहियइ, जु खांडतउ हुयइ, जु पीसतउ हुयइ, जु विलोयतउ हुयइ, जु भूंजतउ हुयइ, जु काततउ हुयइ, जु लोढतउ हुयइ, जु चीरि यणतउ हुयइ, जु पीजतउ हुयइ, जु दलतउ हुयइ, जु जीमतउ हुयइ, ज गुर्विणी आसन्नप्रसव हुयइ, मास २-३ प्रमाण बाल ज स्त्रीस बालवत्स कहियइ, बालकु मेरुही नइ विहरणवइ, तथा जु छञ्जीवकाय फरसतउ विणासतउ लंरतउ साधारणु चोरानीतु वस्तु दियतउ हुयइ, एवमादि दायक नइ हाथि मुनि जउ दानु लियइ तउ दायकदोषु ६ ।

10 §214) योग्यु घृतादिकु अयोग्यु मधुप्रभृतिकु, योग्यायोग्य वे मेली करी दियइ तउ उन्मिष्ठ, तत्र सचित्तमिष्ठ कदाकालिहिं उत्सर्गपदि न कप्पइं, अचित्तमिष्ठि विमाया ७ ।

§215) जु द्रव्यु जलादिकु प्रासुकु हुयइं न हुयइं कांई प्रासुकु कांई अप्रासुकु हुयइ सु अपरिणतु द्रव्यु अथवा अनेकइं दायकइं माहि एक दायक तणउ भावु दानपरिणतु हुयइ धीजा दायक तणउ भावु दानपरिणतु न हुयइं सु भावाऽपरिणतु अथवा यति एक नइ मनि प्रासुकु द्रव्यु परिणमिउं धीजा नइ मनि प्रासुकु न परिणमिउं सु पुणि भावापरिणतु, सु वस्तु जउ यति लियइ तउ अपरिणतु दोषु ८ ।

§216) जिणि वस्तु करंवादिकि दधिप्रभृतिवस्तु तणउ लेषु दायक तणइ हाथि अथवा मात्रकि (पात्रकि ?) लागइ सु वस्तु जउ यति लियइ तउ लिप्तु दोषु, तिणि पञ्चात्कर्मदिक दोषु हुयइं-सचित्तजलादि करी हस्तादिप्रक्षालनादि दोषु हुयइं इसउ अर्थुं ९ ।

§217) जिणि आहारि दीजतइ परिसाडि मुई रेहणउं संभवइ भवइ वा सु आहारु यति जउ परिसाडि देरतउ लियइ तउ छरितु दोषु १० । एउ पुणि मधुविंदुउदाहरणइतउ अतिदुषु कहियइ । ए दस एणादोष गृहस्य अनइ यति विहुं मिलियां कीजइं ।

§218) अथ भोजन तणा पांच दोष कहियइं-संयोजना दोषु १, अग्रमाणु दोषु २, अंगारु दोषु ३, धूम दोषु ४ । अकारणु दोषु ५ । तत्र स्वाद तणइ कारणि द्रव्यसंयोगु करइ तउ संयोजना १ । प्रमाणाधिकु आहारु करइ तउ अग्रमाणु २ । तथा च भणितं-

35 विह-बल-संजम-जोगा जेण न हार्यति संपइ एए वा ।
तं आहारपमाणं जइस्त सेसं किलेस्तकलं ॥

[२१०]

तथा-

वर्चीसं फिर कवला आहारो वृक्खिखपूरओ भणिओ ।

पुरिसस्म महिलपाए अट्टावीसं भवे कवला ॥

[२११]

30 जेण अरबहु अरबहुमो अरुप्पमाणेण भोयणं भुत्तं ।

हादिज व वामिज व मारिज व तं अनीरंतं ॥

[२१२]

क्षिणमधुपट्टि वस्तु सणु विच्छ भोगयइ जउ तउ अंगारु दोषु ३ । कटुककपायादि वस्तु तउ मदेपु विच्छ जीमइ तउ धूम दोषु ४ ।

§213) 1 Bh. वरः । 2 B. रंरः । 3 Bh. भंरः । 4 B. Bh. वरः । §215) 1 Bh. वरः ।

छुद्विषया १ वेयावच २ संजम ३ सज्जाण ४ पाणरक्खट्टा ५ ।

इरिपं च वि सोहेउं ६ झंजइ न हु रुव-रसहेउं ॥

[२१३]

भूखवेदना निवर्त्ताविवा कारणि भोजनु, वेयावच छल करिवा कारणि तथा संजम कारणि तथा स्वाभ्याय अथवा शुभभ्यान कारणि, प्राणरक्षाकारणि,^१ ईर्यापथ सोधिवा कारणि भोजनु फरिचउं; जउ रूप-रसखादहेतु भोजनु करइ तउ अकारणु दोषु ५ ॥ पांच भोजन तथा दोष, सब्बइ मिलिया ४७ । 5 'पिंडस्त जा वितोदी' एतलउं बरजाणिउं ।

§ 219) 'समिईओ' इति । ईर्यासमिति १, भाषासमिति २, एषणासमिति ३, आदान-मांडमात्रनिक्षेपणासमिति ४, उच्चार-प्रथवण-खेल-जल्ल-सिंचाणपरिष्ठापनिका समिति ५ । ए पांच समिति नाम । ईहं नउं अर्थुं पडिकमण्यसूत्रवखाण माहि लिखीसिइ ।

§ 220) भावणा १२, यथा-

10

पढमं अणिचं १ असरणं २ संसारो ३ एगया ४ य अन्नतं ५-

असुइतं ६ आसव ७ संवरो ८ य तह निजरा नवमी ९ ॥

[२१४]

लोपसहावो १० बोही ११ दुल्लहा घम्मसहावो अरिहा १२ ।

एयाओ गय वारस-जइकमं भावणीयाओ ॥

[२१५]

प्रथमा-अनित्यभावना १, अशरणभावना २, संसारभावना ३, एकत्वभावना ४, अनित्यत्व-15 भावना-५, अद्युचित्यभावना ६, आश्रयभावना ७, संवरभावना ८, निर्जराभावना ९, लोकसद्भाव-भावना-१०, दुल्लभयोधिभावना ११, दुल्लभधम्म-साधु-अरिहभावना १२ । एवं नाम-वारह भावना-विश्वर-इह नउ अर्थुं भावनास्वरूप प्रतिपादक योगशास्त्र श्लोक हूंतउ जाणिवउ ।

§ 221) 'तयो दुविहो' इति । छप भेदे वाह्य तपु, छप भेदे अंतरंगु तपु । यथा-

अणसणं १ ऊणोसरिया २ विचीसंखेवणं ३ रसच्चाओ ४ ।

20

कायकिलेसो ५ संलीणया ६ य बज्जो तवो भणिओ ॥

[२१६]

तत्र अज्ञानत्यागुं देशइतउ सर्वइतउ जु कीनइ सु अनशनु १ ।

§ 222) ऊनोदरता विहुं भेदे-द्रव्यऊनोदरता, भावऊनोदरता^१ । तत्र द्रव्यतो भक्त-पान-उपकरण विपइ । तत्र उपकरणविषया ऊनोदरता त्रिनकल्पिकादिकइ रहइ जाणेवी, न पुणि अनेरो रहइ । तीहं रहइ उपधिअग्निवि समस्त संजमपालना तथा अभावइतउ तथा अनेरोहं रहइ अधिक उपकरणग्रहणाभाप-25 इतउ उपकरणोदरता हुयइ छइ । यत उक्तं-

जं वट्टइ उवगारे उवगरणं तं च होइ उवगरणं ।

अहरितं अहिरणं अजओ अजपं परिहरंतो ॥

[२१७]

'परिहरंतो' चि^१ आसेवतउ हूंतउ 'परिहारो परिभोगो' इसा वचनइतउ । ततः अयतन्न अजयं यतना पाखइ यत् परिमुञ्जानो भवति इत्यर्थः । भक्त-पानोदरिका तु आपणा आपणा आहार परिहारइतउ^२ जाणेवी । आहारप्रमाणु पुणि 'बसीसं किर कयल' इत्यादि । अविकृति मुखि जु समाइ सु कयल्ल प्रमाणोपेतु जाणिवउ । स पुणि 'अल्पाहार'-आदि भेदइतउ पांचे भेदे । यथा-

§218) 1 B. Bh have. प्राणि-1. §231) 1 Bb. दोइ । 2 Bh. मनशन-1. §222) 1 Bh.

भावन-1. 2 B. drops -1.

अप्पाहार १ अवह्वा २ दुभाग ३ पत्ता ४ तहेव किंचूणा ५ ।

अट्ट दुवालस सोलस चउवीस तहिकतीसा य ॥

[२१८]

तत्र एक कवल हूँती आरंभी आठमा कवल सीम जघन्य-मध्यम-उत्कृष्टभेदभिन्न त्रिविध अप्पाहारोदरिका कहियई १ । तत्र एककवला जघन्या, द्वायादिकवला सप्तम^४ कवल सीम मध्यमा, अष्टम^५ कवला उत्कृष्टा । एवं नवम^६ कवल हूँती आरंभी करी चारसम कवल सीम त्रिविध अपाद्वाहारोदरिका २ । तत्रापि नवकवला जघन्या दशादिकवला एकादशम कवल सीम मध्यमा, द्वादशकवला उत्कृष्टा । एवं तेरमा कवल आरंभी करी सोलमा कवल सीम द्विभागोदरिका ३ । तत्रापि प्रयोदशकवला जघन्या, चतुर्दशकवला पंचदशम कवलांता मध्यमा, सोल कवला उत्कृष्टा ३ । एवं सतरमा कवल आरंभी करी चउवीसमा कवल सीम प्रातोदरिका ४ । तत्रापि सतरकवला जघन्या, अष्टादशदिकवला त्रेवीसमा 10 कवल सीम मध्यमा, चउवीसकवला उत्कृष्टा । एवं पंचवीसमा कवल आरंभी करी एकत्रीसमा कवल सीम किंचूणोदरिका ५ । तत्रापि पंचवीसकवला जघन्या, छउवीसादिकवला त्रीसमा कवल सीम मध्यमा, एकत्रीसकवला उत्कृष्टा । भावत ऊनोदरिका कपायादियागु । तथा च भणितं-

कोहार्णं अणुदिणं चाओ जिणवयणमावणाओ य ।

भावेणोणोयरिया पन्नत्ता वीयरगेहिं ॥

[२१९]

15 §223) वृत्ति भिक्षाभ्रमणु तेह नउं संक्षेपणु संकोचणु वृत्तिसंक्षेपु कहियइ । सु पुणि गोचरामि-प्रहरूपु । ति पुणि गोचरामिग्रह अनेके भेदे । यथा-‘दव्यओ खित्तओ कालओ भावओ’ । यथा मइं भिक्षा गयइ हूंतइ कुंतामादिवर्त्तमानु मंडकादिकू जु लेवउं इति द्रव्यतोऽभिग्रह । खित्तओ, यथा विउं त्रिहुं गृहमध्य जु लाभइ तऊ जु लेवउं इति । कालओ, यथा विहुं पहरइं टलियां सकल भिक्षाचर निवर्त्तन-वेलां हूँती लेवउं । भावओ, यथा जइ हसतउ अथवा गायतउ रोयतउ वा अथवा निगडिणु यदु वा देसिद 20 तउ लेसु । तदुचं-

लेवउं अलेवउं वा अमुगं दव्यं च अज्ज पिच्छामि ।

अमुगेण व दव्वेणं अह दव्वाभिग्गहो नाम ॥

[२२०]

‘अमुगेण व’ इति ‘चाट्ट-करोटिकादि’ करी’ इसउ अर्थु ।

अट्टउ गोयरभूमी एलुग-विकसंभ-मत्तगहणं च ।

सग्गाम-परग्गामे एवईय घराउ खित्तम्मि ॥

[२२१]

आठ गोचरभूमि, यथा- ऋजुगतिका १, प्रत्यागतिका २, गोमूत्रिका ३, पतंगविधि ४, पेडा ५, अट्टपेडा ६, अर्द्धिभतरसंयुक्ता ७, बाहिःसंयुक्ता ८ । तथा चोक्तं-

उज्जुगगंतु १ पचागईया २ गोमुत्तिया ३ परंगविही ४ ।

पेडा ५ य अट्टपेडा ६ अर्द्धिभतर ७ बाहिःसंयुक्ता ८ ॥

[२२२]

30 तत्र यसति हूतां संलम जि के पर हुयई तेहे सविहुं विहरतां छेहि जाईयइ, पाछइ अणविहरतां यसति आवियइ जिणि वृत्तिइं स ऋजुगतिका १ । छेहला घरहूतां विहरतां जिणि यसति आवियइ स प्रत्यागतिका २ । उभयभेणिगतइं घरइं माहि यामदक्षिण क्रमि करी जिणि विहरियइ स गोमूत्रिका ३ । जिणि पतंग जिम विचि विचि केईं पर मेल्ही विहरियइ स पतंगविधि ४ । समचतुरस्रभेणिस्यितइं घरइं

विद्विन्द स वेदावृत्ति ५ । अद्वैतगन्तुस्य भेदिसिद्धं परं जिनि विद्विन्द स अद्वैतवेदावृत्ति
 जिनि मार हंतां कादिरि विद्वि लानियद म अद्वैतसंयुषा ७ । जिनि पादिर हंतां मादि विद्वि
 वेदा स वदिसंयुषा ८ । 'एतुगतिनांगमत्तगदनां ५' इति । एतुदु संयुषं तु विकरंती करी ।
 त अयुं । जं मु आगन्द मरि परमुत् हुन्द तां जिनां र्ही माप्रमदणु करद । 'सग्गामि परग्गामे'
 । एतते परे विद्विसु, आरनेदं गामि अनर एनेरेदं' गामि, एवमादि क्षेयाभिमतु ।

एतते अभिमतो युवा आई मज्जे तद्देव अवसाणे ।
 अणुणे सार एतते आई विद मज्जापं तदपं ॥

[२२३]

जिनि देति ज निशवेला प्रगिउ हुपद जिनि देति वेद भिशावेलातउ आदिदिं मथि अवसानि
 उ विपद भिशाभिमतु । तथा दि- निशाकाति अमानि हंतां भिशा भमतां हंतां पदिलउ अभिमदु,
 थि निशा मन्द मन्द हि ति निशा भमतां हंतां पीउउ अभिमदु, अंति भिशाकालावसानि भिशा 10
 मतां हंतां पीउउ अभिमदु । एवमादि पालाभिमतु ।

उस्तिराममार परगा मारजुषा एतु अभिगादा हुंति ।
 गापंतो य रुपंतो अं देद निगममाई वा ॥

[२२४]

'अविगममार परत' णि । भाउउ हंतां विदि उज्जिनि उगादियद हंतां परदं ति भिशा भमदं ति
 अविगममार वदियदं । तथा भोजनारि भान्ति निक्षिणियद विदि हंतां ति परदं भिशा भमदं ति 15
 निक्षिणियद वदियदं । तथा 'गापंतो' इत्यारि । गातु करतउ, रोदनु करतउ अथवा 'निसन्नमाई वा' निपण्णु
 वदतउ विदत 'आदि' इत्यदतउ सूतउ हंतां वा परनारिदु दायउ जु वेउ दातव्णु पसु दियद सु लियद
 एवमादि भाषाभिमतु ।

§ 224) एष दुग्धादि निगद तीद नउ लाणु पञ्चनु रसत्याणु कदियद ।
 § 225) काय तनउ हेतु शय्य तगद अविरोधिं करी पाथनु नानाप्रकार कायउहेतु ।

20

दया य मनितां-

वीरासनाउहुडगामणाइ लोपाईओ य विनेओ ।
 कायकिलेओ संसारवासाधिव्येयहेउ ति ॥
 वीरासनाइसु गुणा कायनिरोहो दया य जीवेतु ।
 परलोगमई य तदा बहुमाणो येव अघोसिं ॥
 निस्संगया य पच्छा-परकम्मविपज्जणं च लोयगुणा ।
 दुक्कमुत्तहचं नरगाइभावणाए य निव्वेओ ॥

[२२५]

[२२६]

[२२७]

§ 226) अथ संजीनना लिखियद-संजीनना गुमता, स पुणि इन्द्रिय-कसाय-योगविषया विविक्क-
 दयनाऽऽमनसा च इति पउं भेदे । तदुक्तं-

इन्द्रिय-कसाय-जोए पद्व्य संलीणया सुपोयव्वा ।
 तद य विविक्तपरिया पन्नता वीयरोगहिं ॥

[२२८]

§ 227) तत्र श्रयणेंद्रिय करी मधुताऽमधुरादि अन्वदं विषय रागद्वेष तणउं अफण्णु श्रयणेंद्रिय-

30

संजीनना । पदाद-

सद्देशु य भद्रय-पावणसु सोयं विसयमुवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया न होयञ्चं ॥

[२२९]'

रमणीयाऽरमणीयहं रूपहं विपद् रागद्वेषकरण तणउ अभायु चक्षुरात्रियसंलीनता । यदाह-

रूवेसु य भद्रय-पावणसु चक्षुर्विसयमुवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया न होयञ्चं ॥

[२३०]

सुरभि-दुरभिगंधहं विपद् रागद्वेष तणउ अभायु घ्राणेत्रियसंलीनता । यदाह-

गंधेषु य भद्रय-पावणसु घ्राणं विसयमुवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया न होयञ्चं ॥

[२३१]

स्निग्ध मधुर कटुक कषाय अम्ल लवण रसहं विपद् रागद्वेष तणउ अभायु रसर्णितियसंलीनता ।

10 तथा चाह-

शुद्धेषु य भद्रय-पावणसु जिबमं विसयमुवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया न होयञ्चं ॥

[२३२]

तथा मृदुलाऽमृदुलादिफरसहं विपद् रागद्वेषकरण तणउ अभायु फरसर्णितियसंलीनता ।

यदाह-

15 फरसेसु य भद्रय-पावणसु फरसं विसयमुवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया न होयञ्चं ॥

[२३३]'

§ 228) अथ कषायसंलीनता लिखियद्-

उदयस्सेव निरोहो उदयं पत्ताण वाऽफलीकरणं ।

जं इत्थ कसायाणं कसायसंलीणया एसा ॥

[२३४]

अणथोवं^१ वणथोवं^२ अग्गीथोवं कसायथोवं च ।

नहि भे वेससिपच्चं थोवं पि हु तं वहुं होइ ॥

[२३५]

इसा पचनइतउ कसाय पहिलउं उदर धावता राखिया, उदइ आविया हुंता उपसमनादिकई करी फलरहित करिया । यदाह-

उवसमेण हणे कोहं माणं म्दवया जिणे ।

25 मायं चऽअवभावेणं लोभं संतोसथो जिणे ॥

[२३६]

इसी परि कसायउदयागमनरक्षणु अथवा विकलीकरणु कसायसंलीनता कहियइ ।

§ 229) अथ जोगसंलीनता लिखियद्-

अपसत्थाण निरोहो जोगाणमुदीरणं च कुसलाणं ।

कज्जम्मि य विद्दिगमणं जोगे संलीणया भणिया ॥

[२३७]

अप्रशस्तमनवचनकायहं तणउं निरोधनु-निरोधु-नियारणा, प्रशस्तहं तीहीं जि तणउं ऊदीणु करणु कारियं ऊपनइ समितिसहितु गमनु जोगसंलीनता ।

आराम-उज्जाणाइसु धी-पसु-पंडुवाविवजिए टाणे ।

30 फलगाईण य गहणं तह भणियं एसणिज्जाणं ॥

[२३८]

ए विविक्तसंलीनता ॥

§ 230) अंतरंगतप तथा छ भेद लियिदं-

पापच्छिद्यं विणओ वेयावचं तहेव सज्जाओ ।

हाणं उस्सग्गो वि य अस्मितरओ तवो होइ ॥

[२३९]

तत्र प्रापश्चित्तु कदियइ-चित्तु जीवु अयवा मनु कदियइ तेउं सोपइ तिणि फारणि प्रायश्चित्तु⁵
कदियइ । सु पुणि आलोचनादिकइं दसहं भेदहं करी कदियइ । यथा-

आलोपण १ पडिकमणे २ मीस ३ विवेग ४ तथा विउसग्गे ५ ।

तव ६ छेय ७ मूल ८ अणवट्टिए ९ य पारंघिए १० चेव ॥ [२४०]

गुरु आगइ ययनि करी अतिचार तणउं प्रकटीकरणु आलोपणा १-जु आलोपणाभात्रि करी¹⁰
प्रायश्चित्तु सुइइ सु प्रायश्चित्तु पुणि उपचारइतउ आलोपणा १ ।

§ 231) तथा प्रतिक्रमणु-दोप हंतउ निवर्त्तनु-पुनरपि करण तथा अभावइतउ मिध्यादुष्कृत-
प्रदानु प्रतिक्रमणु कदियइ, तेह योग्यु प्रायश्चित्तु मिध्यादुष्कृतमात्रिहिं जि करी सुइइ न पुणि गुरु
आगइ आलोईयइ, यथा सदसाकारि अजाणभावि श्लेष्मादिकु प्रक्षिपतां ऊपनउं प्रायश्चित्तु । तथा हि-
सदसा अतुपयुक्तेन यदि श्लेष्मादि प्रक्षिनं भयति, न च हिंसादिकं दोषमापन्नः तर्हि गुरुसमक्षमालो-¹⁵
चनामन्तरेणादि मिध्यादुष्कृतमात्रेण शुद्ध्यति ततः प्रतिक्रमणाईत्यात् प्रतिक्रमणु २ ।

§ 232) त्रिणि पुणि प्रायश्चित्ति प्रतिसेवियइ जइ गुरुसमीपि आलोईयई आलोई करी
गुरुसमादेशइतउ पडिकमियइ, पाछइ 'मिध्यादुष्कृतु' इसउं कदियइ, तउ पाछइ सु आलोचना-प्रतिक्रमण-
लक्षण उभययोग्यता करी मिश ३ ।

§ 233) तथा विवेकु परिवत्ताणु, जु प्रायश्चित्तु विवेकिहिं जि कीपइ सुइइ प्रकारि न सुइइ,²⁰
यथा अज्ञानभावि आधाकर्म्मि लीपइ ज्ञानभावि तेह नइ त्यागि कीपइ पाछिलउ आहारु शुद्धइ हुयइ सु
विवेकयोग्यता करी विवेकु ४ ।

§ 234) व्युत्सर्गुं कायचेष्टानियेणु, जु व्युत्सर्गमात्रिहिं जि दुःस्वप्न-निद्रास्वलितादिकु सुइइ सु
व्युत्सर्गयोग्यता करी व्युत्सर्गुं ५ ।

§ 235) त्रिणि प्रतिसेविति निर्बिकृतिकादिकु छम्मासावसानु तपु दीजइ सु तपयोग्यता करी²⁵
प्रायश्चित्तु तपु ६ ।

§ 236) जिम सर्पदष्ट देहावयव नउ छेदु अपरशरीररक्षानिमित्तु कीजइ तिम जिणि प्रायश्चित्ति
प्रतिसेविति दूषित पूर्वपर्यायछेदु अदूषित पर्याय रक्षानिमित्तु कीजइ सु छेदयोग्यता करी प्रायश्चित्तु छेदु ७ ।

§ 237) त्रिणि प्रायश्चित्ति प्रतिसेविति सकल पूर्वपर्यायछेदु करी-थली बीजीवार महाप्रतारोपणु
कीजइ सु मूलयोग्यता करी मूल ८ ।

§ 238) त्रिणि प्रतिसेविति हंतइ पुणरवि पंचमहाप्रतारोपण रहइ योग्यु न हुयइं जां विशिष्टउं³⁰
कांइं एकु तपु कीपउं न हुयइं । विशिष्टि तपि कीपइ पाछइ तेह दोप नी निवृत्ति हुई हंतौ प्रतहं विपइ
यापियइ सु अनवस्थानयोग्यता करी अनवस्थिणु ९ ।

§ 239) जिणि प्रतिसेविति लिंग-क्षेत्र-काल-तप सविहुं नइ पारि अंचइ जाइ सु परांचितु अहंइ जु प्रायश्चित्तु तेऊ परांचितु १० । इसी परि व्ययहारसिद्धांत माहि दसविधु प्रायश्चित्तु भणितं, सु अंतरंगतप नइ पहिलउ भेदु ।

§ 240) विनउ पुणि दसविधु । यथा-

अरिहंत १ सिद्ध २ चेईय ३ सुए य ४ धम्मे य ५ साहुवग्गे य ६ ।
आयरिय ७ उवज्झाए ८ पवयणे ९ दंसणे १० विणओ ॥ [२४१]

अरहंता विहरंता सिद्धा कम्मकखए सिवं पत्ता ।
पडिमाउ चेइयाईं सुयं ति सामाइयाईयं ॥ [२४२]

धम्मो चरित्तधम्मो आहारो तस्स साहुवग्ग ति ।
आयरिय उवज्झाया विसेसगुणसंगया तत्थ ॥ [२४३]

पवयणं असेससंधो दंसणमिच्छंति इत्थ सम्मत्तं ।
विणओ दसन्धमेसिं कायव्वो होइ एवं तु ॥ [२४४]

भत्ती बहुमाणो वन्नजण नासणं अवन्नवायस्स ।
आसायणपरिहरणं उचियाण सेवणाई य ॥ [२४५]

दसमेय विणयमेयं कुणमाणो माणवो महियमाणो ।
सइइइ विणयमूलं धम्मं पि विसोहए सम्मं ॥ [२४६]

इसउ दसविधु विनउ धीजउ अंतरंगतप तणउ भेदु ।

§ 241) वेयावसु पुणि दसविधु । यथा-

आयरिय १ उवज्झाया २ धेर ३ तवस्ती ४ गिलाण ५ सेहाणं ६ ।

साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ संघ १० संगयं तं इह कायव्वं ॥ [२४७]

आचार्य, उपाध्याय, स्वविर-गृद्ध, तपस्वी- उल्लष्ट तपश्चरणकारक, गिलाण-भंडु, सेह-नवदीक्षित, साधार्मिक-एकधर्म, कुल-एकाचार्यसंतानु, गण- त्रिहं आचार्यहं नउ संतानु, संघु साधुमाध्वीश्रावकश्राविकारूपु चतुर्विधु । इहं दसही नइ विपइ वैयावसु दसविधु हुयइ । एउ त्रीजउ अंतरंगतप नउ भेदु ।

§ 242) वायणा १ पुच्छणा २ परियट्टणा ३ अणुपेहा ४ धम्मकहा ५ सज्जाउ पंचविधु ।
२५ तथा च भणितं-

वायणा^१ पुच्छणा^२ परियट्टणाउ^३ अणुपेहा^४ धम्मकहा^५ विसओ ।

सज्जाओ पंचविहो भणिओ भवभीइसुकेहिं ॥ [२४८]

अनुपेक्षा मनि परिवर्त्तइ, वचनि न ऊचरइ । धीजउं सुगमु । एउ चउथउ अंतरंगतप तणउ भेदु ।

§ 243) आर्त्तध्यानु १ रौद्रध्यानु २ धर्मध्यानु ३ शुक्रध्यानु ४ इति चतुर्धा ध्यानु । तदाहि-

कामाणुरंजियं अट्टं रुहं हिंसाणुरंजियं ।

धम्माणुरंजियं धम्मं सुकज्झाणं निरंजणं ॥ [२४९]

विपयचित्तालक्षण आर्त्तु, हिंसा-त्रोहाध्यवसायलक्षण रौद्र, धर्माध्यवसायलक्षण धर्मु, विपयवि विषरूपरूपनापहितु निरंजनु रागरोपरहितु शुक्रु एह चतुर्विध ध्यान माहे आर्त्त रौद्र परिहरिवां, धर्मु शुक्रु करिवां । एउ पंचमु अंतरंगतप तणउ भेदु ।

§ 242) 1 Bh.-न । § 243) 1 Bh. has a later alteration माहि । 2 B. omits तप ।

१ सु जिनकल्पाधिकारियउ साधु सगलाई चक्र पूर्वसूत्र 'उत्तर्यायव्याई' किमउ अर्थु! छेहला आरर हंतउ कमि क्रमि घुरिलइ आरर आवइ, घुरिला आरर हंतउ कमि क्रमि छेदइ आररि जाइ । तथा एकांतर आलापक ग्रहणि करी मूल हंतउं सूनु तां परायतइ जां छेनु । तउ आलापक हंतउं एकांतर ग्रहणि करी घुरि आवइ । इसी परि आचारनामकु नवमउं पूर्वु तेह माहि श्रीजउं वरु तेह माहि ५नु प्रकार कहिउ छइ तिणि प्रकारि करी तिम सूनु परायतइ जिम ऊसामप्रमाणु यथोक्तु जाणइ तउ मुइतं पौरुपी दिवस अहोरात्र काल विपद परिमाणु जाणइ ए कालतुलना ३ ।

§248) एकत्वतुलना कहियइ-

अन्नो देहाउ अहं नाणचं जस्स एवं उवलद्वं ।

सो किंचि आहरिणं न कुणइ देहस्स मंगे वि ॥

[२५५]

10' हउं देह हंतउ अनेरउ इसी परि नाणचं नानात्यम्-भेदु जेह रहइ उवलदु जाणितं हुयइ सु देहमंगिहिं आहरिणु उत्रासु मउ न करइ इति एकत्वतुलना ४ ।

§249) बलतुलना कहियइ-

एमेव बलं मुणिणो अभिक्खआसेवणाइ तं होइ ।

लंखग-मल्ले उवमा आसकिसोरे य जुग्गविए ॥

[२५६]

15 एवं इसी परि बलभावना करी देहु तिम सहावियउं जिम अवयकरणीयविपद बलहानि शरीरि न हुयइ । ननु तपु करतां देहबलु जाइ तउ किसी परि बलतुलना । इसउं न भणियूं^१, देहबलु घृतिबल-सूचानिमित्तु^२, बलभावना करी तिम यतना करेयी जिम देहअपचयभाविहिं घृति समुत्साहयंत हुयइ जिम परिपदोपसर्ग हेलाइं जिणइ, तथा सर्वइ भावना घृतिबलपूर्वं तिणि कारणि विशेषि करी घृतिबल-भावना भावेयी जिम अतिसबल उपसर्ग संभविहिं आपणउं कारुं साधइ, न पुणि घृति रहइं कांइ 20 असाध्यु छइ, सु पुणि तपोबलादिकु निरंतरं तपसंसेवनादि करी हुयइं ।

§250) अत्र दृष्टांतु लंखकु अनइ मल्लु अनइ अभिकिसोरु 'जुग्गविओ'^१ इसउं त्रिहुं नउं विशेषणु । तथा हि-लंखकु नदु जुग्गविओ^२ अभ्यास प्राप्तु अभ्यासप्रकर्षइतउ रांदू उपरि पुणि नाचइ । मल्लु पुणि दुक्खि करी फरणअभ्यसतउ अभ्यासप्रकर्षइतउ पाछइ सुखिहिं प्रतिमल्लु जिणइ । अभिकिसोरु पुणि हस्तिप्रभृतिफहं हंतउ वीहतउ दुक्खि करी हस्तिप्रमुखइं समीपि राहवियइ पाछइ 25 अभ्यासवशइतउ संभाम माहि तेह समीपिहिं भाजइ नहीं ।

§251) एषा दृष्टांतभावना दाष्टांतिकि मूलिगइ अर्थि जोडियइ । एवं इसी परि निरंतर तपसे-पनि करी तपि न जीपइ, सत्त्वावष्टंभु धलावलंभु तिणि करी वैवादिकहीं हंतउ वीहइ नहीं । सूत्रार्थवितन-प्रमाणि कालु दिनरात्रि गतांगतरूपु^१ जाणइ । एकत्वभावना हंतउ यथोक्तु निस्संगु हुयइ, घृतिअवष्टंभि करी प्राणत्यागिहिं आपणउं मेत्तइ नहीं । इसी परि जिम जिनकल्पी पहिलउं तुलना करइ तिम प्रतिमा 30 अंगीकरणहारु पुणि पहिलउं गच्छ माहि थिकउ तुलना करइ, तथा^२ उत्कर्षइतउ किंचूण वसपूर्वं जयन्व-इतउ नवपूर्वं श्रीजउं वरु तेह सीम सूत्रार्थधारकु जउ हुयइ उपसर्गसह एषणाभिग्रहधरु-अलेपकृत-यह-चणकादिभिज्ञाप्राहकु । किंसउ अर्थु ?-

^१ §249) 1 Bh. भणियव्वं । 2 Bh. दया- । §250) 1 B.-विउं । §251) 1 Bh. गतसु । 2 B. omits.

संसद अंससदे उद्वह तह अप्पलेवडा चैव ।

उगहिया पगहिया उजियधम्माओ सत्तमिया ॥

[२५७]

एह गाह माहि भणी छं सात भिक्षा तीह माहि पहिली वि भिक्षा वंजी करी वीजी पांच भिक्षा तीह रहइ प्राहउ । भिक्षापंचकीं माहि दिनि दिनि कृताभिमहु हुंतउ एकदसि भक्त नी एक पानक नी लिपइ । इसी परि एक मासु गच्छ माहि परिकर्मणा करइ पाछइ गच्छ वाहिरि नीसरी करी एकु मासु 5 गच्छ माहि थिकइ कीषउं सु करइ । रात्रि समइ मसणादिकि थानकि वृक्षमूलि एकमुंदेखन्यसादडे, किसंउ धरुं ? एक पुत्रल पूर्वापरपर्यायपयालोचनुं करतउ कायोत्सर्गि रहइ जिहां सूर्यु अस्ति जाइ तेह थाहर हुंतउ सिद्ध्यात्र-चित्रक-हस्तिप्रभृति महानभरि पगु मानू चालइ नहीं, प्रासुकजलादिकिहि हलादिप्रशालनु करइ नहीं । इसी परि मासु वाहिरि रही करी प्रतिमा पूर्ी करइ, प्रतिमा समामि हूती राजादिलोक संमुख समानयनपूर्वकु चतुर्विधि श्रीसंधि पंचशब्दादिवादानादि महाप्रवेशक मंहेत्संवि 10 करवीतइ नगर माहि आवइ । इसी परि विउं मासे पहिली प्रतिमा संपूर्ण नीपजइ ।

§ 252) इसीही जि परि तिणिहि जि वरसि वीजी प्रतिमा आरंभियइ । वि मास गच्छ माहि परिकर्मणा कीजइ, तउ पाछइ वाहिरि पूर्वीतिहि जि वि मास प्रतिमा कीजइ तउं पाछइ गच्छ माहि पूर्वीति करी आणियइ । इसी परि चउं मासे वीजी प्रतिमा संपूर्ण हुयइ ।

§ 253) विशेषे पुणि एतलउ वीजी प्रतिमा वि दाति भक्त नी वि दाति पानक नी हुयइ । 15 इसी परि सातमी प्रतिमा सीम एक एक दाति भक्त पानक विपइ वाचती हुयइ । एवं पहिलइ वरसि वि प्रतिमा संपूर्ण हुयइ ।

§ 254) वीजी प्रतिमा त्रिन्हि मास गच्छ माहि परिकर्मणा त्रिन्हि मास वाहिरि प्रतिमा कीजइ । इसी परि छए मासे वीजइ वरसि वीजी प्रतिमा पूजइ ।

§ 255) मांस ४ गच्छ माहि मास ४ वाहिरि एवं मासे ८ वीजइ वरसि चउवी प्रतिमा पूजइ । 20

§ 256) मास ५ गच्छ माहि पाउयइ वरसि परिकर्मणा ई जि हुयइ । पांचमइ वरसि मास ५ वाहिरि प्रतिमा हुयइ । इसी परि विहुं वरसे पांचमी प्रतिमा पूजइ ।

§ 257) मास ६ गच्छ माहि परिकर्मणा छटइ वरसि हुयइ सातमइ वरसि मास ६ वाहिरि छठी प्रतिमा पूजइ ।

§ 258) मास ७ गच्छ माहि परिकर्मणा आठमइ वरसि हुयइ, मास ७ वाहिरि नवमइ 25 वरसि सातमी प्रतिमा पूजइ ।

§ 259) इसी परि नवे वरसे छण्णने मासे सात प्रतिमा संपूर्ण कीजइ । तथा च भणितम्-

‘मासाई सत्तंवा’ इति । ‘पढमा’ इति प्रथमा । आठमी प्रतिमा साते दिवसे ‘चउं’ चतुर्थे त्रिउं आंभिले एकांतरिते करी पूजइ, चतुर्थे कीषइ पानक परिहारु करिवउं, गच्छ माहि थिकं कीजइ रावि सीम उत्तानक पाश्चिंर्त्त स्थानि सूते रहियउं । ‘विद्या’ नवमी प्रतिमा पुणि इसी परि ‘चउं’ चतुर्थे 30 त्रिउं आंभिले एकांतरिते करी पूजइ । नवमी गच्छ वाहिरि कीजइ । तथा उल्लटकासनसंस्कारं रहियइ अथवा छगंडु थांकउं लाकडु जिम हुइ तिम सुईयइ अथवा थायतदंड बट्टदंड जिम पायउं होई मायउं अथवा पगु भुइं लगाडियइ नहीं समसारावि इसी परि सूते रहियइ । एवं ‘तइया’ दसमी प्रतिमा पुणि

§ 251) 3 B. om ts - पूर्वा- 4 B. drops - मा । 5 B. विहुं । 7 Bb. adds की ।

त्रिम नवमी प्रतिमा कीजइ विम दक्षमी प्रतिमा पुणि कीजइ । इसी परि ए त्रिन्दि प्रतिमा एकबीसे रियसे संपूर्ण कीजइ । इगारमी प्रतिमा अहोरात्रिकी नामि करी कहियइ । आंखिलु करी सकलु अहोरात्रु ग्राम बाहिरि रही प्रनंविन भुज करी काउत्तगु कीजइ, पाछइ चतुर्थी' यि कीजइ । इसी परि त्रिउं रियसे इगारमी प्रतिमा पूजइ । तथा दिवसि आंखिलु कीजइ रात्रि ग्राम बाहिरि ईपव्याम्भाराभिधान 5 तिद्धिगिला वेह नइ विपइ निर्निमेपट्टि विन्यासि कीधइ ये पग मेली करी भुज लंघमान करी सकल रात्रि जिनसुद्रा वचंमानु काउत्तगि रहइ । पाछइ पानकाहाररहित त्रिन्दि उपवास करइ । इसी परि चउं दिवसे चारमी प्रतिमा पूजइ । आठमी प्रतिमा हूँती चारमी प्रतिमा सीम दाति न हुयइ । जेतिवार सर्वइ प्रतिमा संपूर्ण हुयइ तेनीवार महात्मा रहइ अनेकि लच्छि ऊपजइ इति साधुप्रतिमाविचार सिद्धांत गणइ अनुमारि मइ लिखिउ छइ । अनेरोई जु' को विधेपु हुयइ सु पुणि गीतार्थइ महंतु अनुमइ 10 करी लिखिउ ।

§ 260) 'अभिप्रह' इति । द्रव्य-क्षेत्र-कालभाव भेदइतउ अभिप्रह चउं भेदे हुयइ । यथा द्रव्यइतउ जे किमइ सन्नपंहादिकु द्रव्यु लहिसु तउ लेसु । क्षेत्रइतउ जइ धनवंतादि परि लहिसु तउ लेसु । कालइतउ जउ भिक्षाकालु अतिरुमित होइसिइ तउ लेसु । भावइतउ जउ' दायकु हसनादि किमा कतउ हेसिइ तउ लेसु । इसी परि चतुर्थिष अभिप्रह जाणिवा । अथवा पूर्वहिं विस्तारि करी अभिप्रह चतुर्थिष 15 भणिया छइ िम जाणिवा । ए पूर्वभणित विटवितोही प्रमुव सगलाई जउ मेलियइ तउ साधु तगा मइ उचारगुण बाणइ संरचात । 'मो वियाणादि' किसउ अर्थु ? शिष्य आगइ गुरु कहइ-हे शिष्य । तउं 'वियाणादि' जानि । 'मो' इहां पादपूरणनिसितु छइ । अथवा—

पापाला अट्टेव य पशुवीसा चार चार सय चैव ।

दव्याइ चउरभिगह मेवा सलु उत्तरगुणाणं ॥

[२५८]

20 इति व्यवहार-सिद्धांतानुसारि करी विटविमुद्धि तगा भेदु यइतालीस । यथा-उद्रमदोष सोल, एतनादनादोष सोल, एषयादोष दम, इइ यइतालीसही तगा परिहार । यइतालीस विटविमुद्धिभेद, समिति पांच गुणि त्रिन्दि', एरंरूप आठ समिति, भावना पंचरीम-एक एक महाव्रत प्रति पांच पांच भावना भावइतउ ।

§ 261) यथा—

25 भावनाभिर्मावितानि पञ्चभिः पञ्चभिः क्रमात् ।

महाव्रतानि नो कस्य साधपन्त्यव्ययं पदम् ॥

[२५९]

यद्यथा—

मनोगुणैश्चानाऽऽदानैर्षाभिः समितिभिः सदा ।

दृष्टाभ्रान्तप्रदोषेनाऽर्द्धैर्मां भारयेत् सुधीः ॥

[२६०]

30 अनेगुणि १ एवन्ताममिति २ आदानमांटाभ्रनिशुचताममिति ३ ईशंममिति ४ दृष्टाभ्रान्तपदम्-छउर ५ पांच भावना इचम महाव्रत तगी जाणिवी ।

§ 262) हाम्प-लोच-भय-क्रोधवत्याप्यानिर्निरन्तरम् ।

क्रान्तोष्प भावयेनाऽपि भारयेत् यन्नृनव्रतम् ॥

[२६१]

हास होम भव गोप इहं चतुर्दश वणा प्रत्याख्यान विचारण च्यारि भावना; पांचमी भावना
काठोची करी कोलिचउं; ए पांच भावना मीना महाप्रत तणी जाणेवी ।

§ 263) आलोच्याज्वग्रहयाशास्मीक्ष्णाज्वग्रहयाचनम् ।

एतावन्मात्रमैवंतदित्यज्वग्रहधारणम् ॥

[२६२]

ममानधार्मिकेभ्यश्च तथाज्वग्रहयाचनम् ।

अनुनासितपानावाद्यनमस्तेषुभावनान् ॥

[२६३]

आलोचनापूर्वं देवेंद्र-राज-गृहपतिप्रभृति अवमहयाचतु १, जिहां एक क्षण रहियद जिहां तखेवा-
पिननि अनुनासनापूर्वंक रहियद इति अभीक्ष्णाप्रहयाचतु २, एतलं ज एउ क्षेत्रादिकु नू रहई परिग्रह-
काटो मोरुदं पीजउं नरी इत्यसमधारणु ३, माधर्मिकानपहयाचतु ४, अनुनासितपानावाद्यनमोजतु ५,
इत्येवंच पांच भावना मीना महाप्रत तणी जाणेवी ।

§ 264) स्त्रीपण्ड-पशुमद्रेडमाऽऽसन-गुञ्जान्तरोज्जनात् ।

सरागश्रीकथात्यागात् प्रागृतस्मृतिवर्जनात् ॥

[२६४]

स्त्रीरम्भाङ्गेषुण-स्वाङ्गसंस्कारपरिवर्जनात् ।

प्रणीतास्त्यग्रनत्यागात् मन्त्रचयं च भावयेद् ॥

[२६५]

स्त्री नारी पंड नपुंसक पशु छात्री गाद महिनि घोडी रासमी प्रभृति जिहां हुयई जिहां न रहियई; 15
श्रीआसनि न धर्मिचउं, गुडय भणियईं भीनि तीयं तणा अंतराल जाळं तीईं करी श्रीशरीरावयव
विजोभुतु न कीजईं इति एक भावना । सरागश्रीकथा न कीजईं इति श्रीजी भावना । पूर्वोक्तभूत मैथुन
वन्दं समारणु न कीजईं इति श्रीजी भावना । स्त्री तणा रम्य सुवयसोनादिक अंग न जोईईं, स आपणा
संग रहईं संस्कार वंगन-नर-पेडा मन्त्रनादिकु न कीजईं इति चउमी भावना । प्रणीतु स्त्रिय दधि-मोडक-
पूतूर-अन्नश्री प्रभृतु आहारु तेद तयउं अविभ्रशु अविभ्रशु न कीजईं इति पांचमी भावना चउथा 20
महाप्रत तणी जाणेवी ।

§ 265) स्पर्शे रसे च गन्धे च रूपे शब्दे च हारिणि ।

पञ्चस्यपि-इन्द्रियापेषु गाढं गार्हार्थं वर्जनात् ॥

[२६६]

एतेष्वेवाऽऽमनोहेषु सर्वथा द्वेषवर्जनात् ।

आक्रियन्त्यन्नस्पर्शं भावनाः पञ्च कीर्तिताः ॥

[२६७] 25

स्पर्शे रस गंध रूप शब्द लक्षण छईं पांच मनोश्रुतिय विषय तीईं विषय अतिरागवर्जनु अथवा
इईं ति छईं अमनोश्रुतिय पांच विषय तीईं चर विषय सर्वथा द्वेषवर्जनु लु कीजईं, ए पांच, पांच
महाप्रत तणी भावना जाणेवी ।

§ 266) धार वप तथा भेद, धार प्रतिमा, च्यारि अभिग्रह सर्वई मिलिया एक सव त्रिहुं करी

अधिकु इत्तराण मासुसंविधा जाणेवा ।

§ 267) अथ श्रावक तणउं वेमोत्तराणप्रत्याख्यातु इरणनवई भेदे करी लिखियद । यथा

तिथि परि ति इगुणनवई भेद हुयईं स परिकहियद-

पद्यवखणं १०, अभिमह ४, सिन्धवा ७, तव १२, पडिम ११,

भायणा १२, सिचं ९ ।

धम्मो ४ पूया १७ य तथा गिहिटत्त(गुण इगुणनउई ॥ [२६८]

तत्र पद्यवखणु नवकार पोरिसी ए इत्यादिकु दसविधु आगद कहीसिद । अभिमह साधु तथा
६ निम अभिमह भणिया तिणि अनुसारी श्रावकही रहई जाणिवा । त्रिन्दि गुणव्रत चत्तारि शिक्षाव्रत रूप
सात शिक्षा जाणिवी । तपु वारहे भेदे निम पूर्वहिं भणितं तिमहिं ज' जाणिवडं ।

§ 268) प्रतिमा इयार । यथा—

दंसण १ वय २ सामाइयइ ३ पोसह ४ पडिमा ५ अवंम ६ अचिते ७ ।

आरंम ८ पेस ९ उच्छिट्टवज्जए १० समणभूए य ११ ॥ [२६९]

10 तत्र—

शक्का १ काह्णा २ विचिकित्सा ३ मिथ्यादष्टिप्रशंसनम् ४ ।

तत्संस्तवश्च पञ्चापि सम्यक्त्वं दूषयन्त्यमी ॥ [२७०]

इहां शंकादिकं पांचही अतीचारदं तणउं स्वरूपु पडिकमणा सूत्र माहि “संकाकंलविगंछा”—
एह गाद नइ यरगणि कहीसिद । शंकादि अतीचारपंचकरहितु सुद्धु सम्यक्त्वु मासदिवस सीम पालियइ
11 जु स प्रथम दर्शनप्रतिमा १ कहियइ ।

§ 269) पांच अणुव्रत त्रिन्दि गुणव्रत चत्तारि शिक्षाव्रत लक्षण वारह व्रत कहियइ, ति
सगडाई अतीचारपंचकरहित पूर्वदर्शनप्रतिमासमाचार' समाचरतां हुंता त्रि मास सीम जु पालियइ स
धीमी व्रतप्रतिमा कहियइ । तथा त्रिकाल देवपूजा उभयकाल प्रतिक्रमणु गुरुपादमूलि वंदनादि क्रियाक-
छाप कीजइ विधियन् सुत्तिसमित्ति यतना' करतां वसियइ इत्यादिकु समाचारु धीमी प्रतिमा मादि
20 जाणिवड २ ।

§ 270) त्रिन्दि मास प्रथम द्वितीय प्रतिमासमाचारु समाचरतां हुंतां

तिविहे दुप्पणिहाणे अणवट्टाणे तहाऽऽसयविहूणे ।

सामाए वितहकए पटमे सिन्धवावए निंदे ॥ [२७१]

इमा सामायिक तथा पांच अतीचार परिहरता हुंतां 'जाहे सगिओ ताहे सामाइयं कुञ्जा' इति
25 पपनान् सामायिकिदिं ति यत्तमाउ जु रहइ स श्रीत्री सामाइकरतिमा ३ ।

§ 271) अष्टमी चतुर्दशी पूर्णिमा अमावास्या लक्षण चतुःपथी दिवसहं कृतचतुर्विधाहार
पौषपोष्याम चत्वारि माम पूर्वत्रिमात्रय समाचारु प्रतिपालतां जु रहियइ स चतुर्थी' पौषपप्रतिमा ४ ।

§ 272) पौषध नी रात्रि एह रात्रिकादिक प्रतिमा विकउ रहइ, मास ५ अह्णानु प्रासुक
भोजनु दिवाकण्ठपारी रात्रिहवसरिमाणु पौषपहालि रात्रिदिं ब्रह्मपारी पूर्वप्रतिमाचतुष्टयसमाचारु प्रतिपालतां
30 जु एदियर स पांचनी प्रतिमा नाम ५ ।

§ 273) प्रतिमा ५ माम ६ पूर्वप्रतिमापंचक समाचारु प्रतिपालतां हुंतां सदा मसपारी
द्वंद्वर स एही अत्रम नाम प्रतिमा ६ ।

§274) पूर्वप्रतिमापट्टसमाचार प्रतिपालनापर मास ७ सीम सचिचत्तादारवर्जकु हुयइ जिणि स सप्तमी अचिचत्ता नाम प्रतिमा ७ ।

§275) पूर्वप्रतिमासप्तकसमाचारप्रवर्जकु मास ८ स्वयं आरंभयर्जकु हुयइ जिणि स अनारंभनाम अष्टमी प्रतिमा ८ ।

§276) प्रेय्यही कन्हो आरंभु न करावइं पूर्वसमाचार मास ९ जिणि करइ स प्रेय्यारंभ-^{१५} वर्जिका नाम नवमी प्रतिमा ९ ।

§277) उद्विष्टकृतादारवर्जकु । किस्उ अर्थु ? आत्मनिमित्तकृत भोजनवर्जकु जु काइं धरि सर्व साधारणु भोजनु वेह रहइं कारकु पूर्व समाचारधारकु मास इत्त उद्विष्ट भोज्यवर्जिका नाम दसमी प्रतिमा १० ।

§278) क्षुरसुंड अथवा लुंचितु रजोहरण-पात्रपरिग्रही श्रमणभूतु यतिसमाचारकारी निर्ममलु 10 स्वदातिकुल्लेहं विहरइ, भिक्षामोजी ति 'श्रमणभूता' इति नामिका एकादस मासिका एकादसी प्रतिमा ११ । इति संश्लेषि^{१६} करी श्रायकप्रतिमा विचार ।

§279) केइं एकि संप्रति प्रतिमा श्रायकइं रहइं करावइं । केइं एकि पुणि चित्तचलाचलादि भावि करी प्रतिमासमाचार रहइं निरतीचारता करी दुष्करत्वइतउ तथाविध भूतिषलसंहननादिकइं तथा अभावइतउ पुणि न करावइं । तथा निपेपयचतु पुणि तीर्थोद्गालि नाम प्रकीर्णक माहि दीसइ । यथा- 15

साहूणगोयरो बुच्छिन्नो दसमाणुभावाओ ।
अजाणं पणवीसं, सावपधम्मो य बुच्छिन्नो ॥

[२७२]

अत्र साधुमहात्मा पूर्वहिं अग्रमादप्रवृत्तिनिमित्तु 'अगोयरो' धरता, किस्उ अर्थु ? वाम कुहणी चांभी करी चोलपट्टकु राहयता जु सु 'अगोयरो' कहियइ, इसउ आम्नाउ छइ । सु अगोयरो दुक्कलमातुंभोयइतउ बुच्छिन्नउ विच्छेदि गयउ प्रमादयहल कालभावि करी साधु चोलपट्टकु दवरादिकइं 20 वगइ आयारि धारियां लाग्ग । 'अजाणं पणवीसं' ति आर्यिका साची ति पंचवीस उपकरण पहिरती, ति पुणि विच्छेदि गयां । 'सावपधम्मो य बुच्छिन्नो' इति एकादस प्रतिमारूपु श्रायकधम्मं विच्छेदि गयउ, इसा कयाख्यानइतउ एकादश प्रतिमा श्रायक तणी विच्छेदि गई इति । रातं प्रसङ्गागतम् । भावना १२-पूर्वहिं भणी जिन तिमहीं जि जाणिवी ।

§280) खितं ९ यथा-

जिणभयण १ विं २ पुत्तय ३ चउविहसंघो य ७ सत्त खित्ताइं ।
जिणुद्धरो इं ८ पोसहसाला ९ साहारणं च दत्त ॥

[२७३]

जिणुद्धार रहइं जिनभयनग्रहणि करी ग्रहणइतउ एकु जिनभयणु १, वीजउं जिनविणु २, वीजउं पुत्तक ३, साधु चउयउं ४, साधु पांचमउ ५, श्रायक छइउं ६, आविष्ठा सातमउं ७, पीपयशाळा आठमउं ८, साधारण संवलकु नवमउं ९ क्षेणु । इह नव^{१७} क्षेवहं श्रायक आणयउं वित्तपीणु 30 पावियउं । यथाह-

§278) 1 Bh. सामाचारि । 2 Bh. adds हं । §279) 1 Bh. धरता । 2 Bh. विहरती ।
§280) 1 Bh. जिणुद्धरो, omits इं । 2 Bh. नवइं । 3 Bh. श्रायकं ।

- इच्छतोऽनिच्छतो वाऽपि मामकं त्रिविधं सदा ।
 चेत्य-साधूपयोगाय भूयात् जन्मनि जन्मनि ॥ [२७४]
 सो अत्यो तं च सामत्यं तं विन्नाणमणुत्तमं ।
 साहम्मियाण कजम्मि जं विचंति गुमाग्ग ॥ [२७५]
- 5 तथा दान-शील-तपो-भावनात्पु चतुर्विधु धम्मं । देव-गुरु-धम्मंतिवभेरुत्ततत्र त्रिविध चिन्ता । यथा-
 देव-गुरु-धम्म विगया तिविहा चिन्ता हवंति कायन्वा ।
 सट्ठेहिं महट्ठेहिं अप्पट्ठेहिं च सचीए ॥ [२७६]
 विहिपूया विहिवंदण विहिचेइय दच्चनुत्तिरक्स्ता य ।
 वट्टइ अह्य न वट्टइ इय चिन्ता देवविगयम्मि ॥ [२७७]
- 10 गुरुणं कइं समाही कइ तेसिं सागणं निरावाइं ।
 सीपंति न सीपंति च इय चिन्ता होइ गुरुविगए ॥ [२७८]
 धम्मो कइं पवट्टइ निरविगयो तइ कइं भवइ एसो ।
 साहम्मियवच्छछं धम्मि पुणो एस रात्तु चिन्ता ॥ [२७९]
 इति त्रिविधचिन्ता । अथवा अतीत-अनागत-यत्तमानकालभेदि कृती धर्मचिन्ता त्रिविधा । यथा-
- 15 पुञ्चभवे सद्विओ जिणधम्मो मइं तओ इहं लट्ठो ।
 सद्वणाऽऽपरणाओ कइ लब्भे हं भविस्से वि ॥ [२८०]
 इति त्रिविधचिन्ता गता ।

§ 281) सतरभेद पूजा यथा-

- 20 न्हवणु १ विलेवणु २ अंगम्मि वत्थञ्जुपलं ३ च वासपूपा य ४ ।
 पुष्कारुहणं ५ मञ्जारुहणं ६ तइ वन्नमारुहणं ७ ॥ [२८१]
 चुन्नारुहणं ८ वत्थारुहणं ९ आहारणरोहणं १० चेव ।
 पुष्पगिह ११ पुष्पमगरो १२ मंगलगा १३ धूवउक्खेवो १४ ॥
 नइं १५ गीयं १६ वजं १७ पूयाभेया इमे सतर ॥ [२८२]

गंधकपायवस्त्रसत्क अंगलहणं १, दिव्यवस्त्रपरिधापनिका २ इति वस्त्रयुगलु तत्पूजा वस्त्रयुगल-
 ३ पूजा, माल्यं माला स पुणि विशेषरूप जाणिरी । यथा-इंद्रमालाद्यारोपणु । सामान्यमाला 'पुष्कारहणं
 पुष्पपूजा' कहियइ तिगिहिं जि करी जिणि कारणि लाभइं किसइ कारणि 'मञ्जारुहणं' इत्तं वली भणियइ ।
 वत्थारहणं महाप्यजारीषु तत्पूजा वत्थारुहणपूजा । वन्नयारुहणं शोभानिमित्तु चर्णाककरणु तत्पूजा
 वन्नयारुहणं । चुन्नारुहणं कर्पूरचूर्णादिपूजनु । मंगलगा अष्टमांगलिक्यपूरणु-वत्पण १ मदासण २
 नंदावर्त्त ३ पूर्णकलस ४ मत्स्य ५ श्रीवत्स ६ वट्टमातु शरावसंपुट्ट ७ स्वस्तिक ८ लक्षण मांगलिक्य
 30 जाणियां । वजं वायपूजा । पुष्पगृहू फूलहरणं पुष्पप्रकरं निम समवसरण माहि देव करइं तिम पुष्पप्रकर-
 पूजा । वीजां पद सुगम । इति सतरह भेद पूजा तथा ज्ञाताधर्मकथां माहि-अनइ जीवाभित्त माहि
 कहिया छइं । इति श्रावक तथा देसत उत्तरगुण इगुणनवइ संख्यात संक्षेपिहिं भणिया ।

[§280] 4 Bh. विन्नाडु । 5 Bh. वचंति । [§281] 1 Bh. has altered original आहारण-to अहोणः
 B. may be interpreted as अहोणः- । 2 B. omits the sentence.

§ 282) अथ साधु भावक विद्वं तणं सर्वोत्तर गुण प्रत्याख्यातु लिखियइ यथायोग्यु अना-
गतादिकु दसविधु । तथा-

अणागमं १ अइकंत्वं २ कोडीसहियं ३ निपंत्तिं ४ चैव ।

सामारं ५ अणागारं ६ परिमाणकडं ७ निरवसेसं ८ ॥ [२८३]

संकेयं ९ चैव अद्वाए १० पचक्खाणं च दसविद्वं होइ ।

सयं एवऽधुपालणियं दाणुपसे जह समाही ॥ [२८४]

पयुपगापचांदिकि पर्वि आवणहारि हंतइ म्लानतावैयावृत्त्यादिकारणि पर्व पहिलउं जु अष्टमादिकु
प्रत्याख्यातु कीजइ सु अनागत १ । पर्वि गयइ हंवइ जु कीजइ सु अतिकंतु २ । पूर्वतप नइ समासि
समइ बीजा तप नइ प्रत्याख्यानि लागते ति कीपइ विद्वं तप नी कीटि मिलइं तिणि कारणि कोडी-
सहितु ३ । मासि मासि उमकि दिवसि साजइ माठइ यिकइ मइं जु अष्टमादिकु अवश्यु करिववं हुयइ 10
सु निपंत्ति ४ । एउ पुणि प्रत्याख्यातु चतुईश पूर्वघर जिनकल्प सरसउं विच्छिन्नउं । महत्तरादिकहं
आकारहं सदितु साकार ५ । महत्तरादिकहं आकारहं रहितु निराकार ६ । दत्ति-कवलादिपरिमाण-
सहितु परिमाणठतु ७ । सर्वं अशनभानरहितु निरवसेपु ८ । अद्दुप-सुख्यादिकि चिह्नि करी उपलक्षितु
संकेतु ९ । 'अद्वा' कालु तिणि करी उपलक्षितु अद्वाप्रत्याख्यातु १० । सु पुणि दसविधु । तथा-

नवकार १ पोरिसीए २ पुरिमड्डि ३ कासणे ४ गठाणे ५ य ।

आंविळ ६ अमचट्टे ७ चरिमे ८ अभिगगहो ९ विगई १० ॥ [२८५]

प्रत्याख्यानद्वारु ह्ययं ।

§ 283) अथ प्रत्याख्यानभंग लिखियइं । ति पुणि सर्वं संख्या करी १४७ हुयइं । ति पुणि
इसी परि हुयइं ।

तिन्नि तिया तिन्नि दुया तिन्निक्किळा य हुंति जोगेसु ।

ति दु इकं ति दु इकं ति दु इकं चैव करणाइं ॥ [२८६]

मन वचन काय योग तीहं नइ विपइ त्रिन्दि त्रिका, त्रिन्दि द्विका, त्रिन्दि एकका करण कारण
अनुमतिलक्षण करण; ति पुणि योगहं हेठइ त्रि द्वि एक इसी परि लिखियइं । आगत फळु क्रमि करी इसउं
हुयइ-एकु एककु, त्रिन्दि त्रिका, वि नयक, एकु त्रिकउ, वि नवक इति । स्थापना इसी परि कीजइ-

३ ३ ३ २ २ २ १ १ १

३ २ १ ३ २ १ ३ २ १

१ ३ ३ ३ ९ ९ ३ ९ ९

तथा च भणितम्-

तिविईं तिविहेणिको एगपरतिगेण भंगया तिवि ।

तिगरहियए नव भंगा सब्बे पुण अउणपभासं ॥ [२८७]

पटमे इको विइए तइयचउत्थेसु भंगया तिवि ।

पंचमि छट्टे नव नव सत्तमि तिविद्वं नयमि नव ॥ [२८८]

इहं तणी भावता इसी परि कीजइ-जीवहिंसा न करइ, न करावइ, अनेए करता अनुमनइ नहीं
मनि करी वचनि करी कायि करी । एउ तिविद्वं तिविहेणिको, इणि पवि भणितु एकु भांगउ ।

§284) अत्र शिष्यु भणइ-भगवन् ! देशविरत रहइ एउ भेदु निम्न संभवइ; तेह रहइ अनु-
मतिनिषेध तथा अभावइतउ, इसउं न कहिछूं । आपणा विषयवाहिरि श्रावकहीं रहइ अनुमतिनिषेध
संभवइ, नहि स्वयंभूरमणमत्स्यादिपातविषइ अनुमति संभवइ । तदुक्तम्-

‘न करे’ इचाइतिगं गिहिणो कह होइ देसविरयस्म ।

5 भन्नइ विसयस्स वहिं पडिसोहो अणुमईए पि ॥ [२८९]

इही जि विषइ भाप्यकारु पृच्छा अनइ उतरु कहइ-

केई भणंति गिहिणो तिविहं तिविहेण नत्थि संवरणं ।

तं न, जओ निदिहं पन्नतीए^१ विसेसेणं ॥ [२९०]

तो कह निजुत्तीएऽणुमइनिसेहु त्ति सेसविसयम्मि ।

10 सामत्थेणं नत्थउ तिविहं तिविहेण को दोसो ? ॥ [२९१]

निर्युक्ति माहि आपणाई विषय माहि सामस्यभावि करी अनुमतिदान तथा अभावइतउ अनुमति-
निषेध भणितउ, अनेरइ धानकि स्वयंभूरमणादिकि तिविहं तिविहेण निषेधि किसउ देसु । तथा पुत्रादि-
संततिनिमित्तु जिणि सावद्यन्यापारु दीघउ हुयइ तेह एकादसी प्रतिमा प्रतिपन्न रहइ ‘तिविहं तिविहेण’
परिहारु संभवइ । तदुक्तम्-

15 पुत्ताइसंतइनिमित्तु सुत्तुं इकादसिं पवन्नस्स ।

अंपंति केइ गिहिणो दिक्खाभिमुहस्स तिविहं पि ॥ [२९२]

पुनरपि शिष्यु भणइ-किसी परि मनि करी करण कारण अनुमति हुयइ । आइ-

कह पुण मणसा करणं कारावणु अणुमई य^२ ।

जह वय-तणुजोगेहिं करणाई तह भवे मणसा ॥ [२९३]

20 जेतीवार काय नउ वचन नउ न्यापारु रहितु हुयइ सर्वथा तेतीवार केवलु मनव्यापारु जु हुयइ ।

तयहीणत्ता वयतणुकरणाईण अहव उं मणकरणं ।

सावज्जोगगमणं पन्नत्तं वीयरगेहिं ॥ [२९४]

कारवणं पुण मणसा चित्तेइ करेउ एस सावज्जं ।

चित्तेती उ कए पुण सुद्धु कयं अणुमई होइ ॥ [२९५]

25 एतलइ पहिलउ भंगु हुयउ ।

§285) न करइ न करावइ अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं । मनि करी वचनि करी एक ।
मनि करी कायि करी वीजउ । वचनि करी कायि करी वीजउ ३ । एउ वीजउ मूलभेदु हुयउ । अथ
अनंतरु वीजउ मूलभेदु कहियइ-न करइ न करावइ अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं । मणेणं एक,
वायाए वीजउ, काएणं वीजउ । एउ वीजउ मूलभेदु । अथ चउयउ कहियइ-न करइ न करावइ मणेणं
30 पायाए काएणं एक । न करइ अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं वीजउ । न करावइ अनेरा करता हुंता
अनुमनइ नहीं वीजउ ३ । एउ चउयउ मूलभेदु । इयाणि पांचमउ कहियइ-न करइ न करावइ मणेणं
वायाए एक । करइ नहीं अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं वीजउ । न करावइ अनेरा हुंता अनुमनइ

§284) 1 B. gl^o३९ श्रावकवृत्ति माहि । 2 B. Bh. add तह । 3 B. Bh. do not have ३ ।

नहीं प्रीजत ३ । ए त्रिभिः भांगां मणैः पायाय लडा । तथा इमीदि त्रि परि मणैः काएण न त्रिभिः
भांगां लामहं । तथा अपर पुनि त्रिभिः भांगां वायाय काएण य गामहं । एवं नर मंगा । संयम
मूळभेदु हुयत । अय छट्ट कदिवद-न करद न करावद मणैः एकु । न करद जनेत करता अनुमन
नदी मणैः वीजत । न करावद जनेत करता अनुमनद नदी मणैः प्रीजत । एवं वायाय त्रिभिः । वायाय
वि त्रिभि लभंति । एवं नर भांगा । छट्ट मूळभेदु भणित । इयानि गामनद कदिवद-न करद मणैः ३
वायाय काएण य एकु । न करावद गममा ईदि वीजत । जनेत करता हुंय अनुमनद नदी मणैः ईदि
प्रीजत । मातमउ मूळभेदु भणित । अय आठमउ मणिवद-न करद मणैः वायाय एकु । तथा मणैः
काएण य वीजत । वायाय काएण य प्रीजत । एवं न करावद इय वि त्रिभि मंग । एवं नर मंगा
आठमउ मूळभेदु भणित । अय नरमउ मूळभेदु मणिवद-न करद मणैः एकु, न करावद मणैः वीजत,
जनेत करता हुंय अनुमनद नदी मणैः प्रीजत । एवं वायाय त्रिभिः । वायाय य त्रिभिः । एवं मंगा नर १०
नरमउ मूळभेदु भणित । ईहां पहिलद भांगद एकु भांगउ, वीजत त्रिभिः भांगा ३, प्रीजत भांगद त्रिभिः
भांगा । पउवद भांगद त्रिभिः भांगा ३, पांचमद भांगद नर मंगा ९, छट्ट भांगद नर मंगा ९,
सातमद भांगद त्रिभिः भांगा ३, आठमद भांगद नर मंगा ९, नरमद भांगद नर मंगा ९, एवं मंगा
४९ । तत्र अतीत सायरा तमउं प्रतिक्रमणु, प्रमुत्पन्नवर्णमाल गारव तमउं संरगणु, अन्ततमायव
वर्णं प्रत्याग्याणु । इमी परि काव्यत्रयि की मुणित हुंय इयुत्तरंयाम भांगद एकु गउ मंगेजत हुंय । ११
तथा पाद-

लद्धफलमाणमेयं मंगा उ हवंति अउपरपातं ।
तीपा-ऽणामप-संपपमुणियं कायेण होइ इमं ॥ [२९६]
सीपालं भंगमयं कइ कावतिण्ण होइ मुणनाओ ।
तीपस्स य पडिअमणं पणुपमम्म संरगणं ॥ [२९७] ३
पचकराणस्स तदा होइ य एमम्म एर मुणनाओ ।
कावतिण्णं भणियं जिण-वागदा-वायगाईं ॥ [२९८]
सीपालं भंगमयं जस्स मुपुदीर होइ उरगदं ।
सो रानु पयकराणे इमणे मेमा मण्णे अइमया उ ॥ [२९९]

तथा एक पचकराणु करद, एकु वरावद, त्रिं दरे की वरमंगी । तत्र गामनद गामनद करद ३
करद मुनु १ । जानउउ अजगता वनद मुकु नर अभावि मुपवदुमानुदुई की मुकु एवं विदुविदुवदिद
तीद नर मणीवि वरद तउ मुनु २ । अजणु जगता मणीवि मंगेदिई मणी की वरद नर मुनु ३
अजणु अजान मणीवि वरद मणिया अमुनु ४ । एउवदमत्ता वरमंगेदिदक ।

§ 286) अथ सायु त्रिमी ' त्रिभिः त्रिभिरेव ' इति सामर्थ्यात् भेद उदाहरणत्वात् तत्र कर्त्तव्यं-
द्विगारि पंचकु सायु वरद नदी वरावद नदी जनेत करता हुंय अनुमनद नदी । तत्र ' मणैः मणैः ' ३
सामर्थ्यं' इति की पांच मणैः मणैः ' गामनं गामनं मणैः पचकराणि' इति की त्रिभिः मुं
मंगेदी । श्रीवदशारिदमुणिवद मणिवि वरमंगं, श्रीवदशारिदमुणिवद मुनि वरमंगं । तत्र वरमंगं ' मणैः
त्रिभिरेव' एकु, आठ प्रचवननार ९, वरावद की मुणिव सामर्थ्यात् सायुत्तरंयाम मंगेदी इति ।
इत्यन्तानभेदात्क इत्यं ।

[285] 1 B does not have between 1-1 2 B. m. 10 3 B. m. 10 4 B. m. 10
Alteration over final-3) 4 B. m. 10

§284) अत्र शिष्यु भणइ-भगवन् ! देशविरत रहइ एउ भेदु किम संभवइ; तेह रहइ अनु-
मतिनिषेध तथा अभावइतउ, इसउं न कहियूं । आपणा विषयवाहिरि श्रावकहीं रहइ अनुमतिनिषेध
संभवइ, नहि स्वयंभूरमणमत्स्यादिघातविषइ अनुमति संभवइ । तदुक्तम्-

‘न करे’ इचाइतिगं गिहिणो कह होइ देसविरयस्स ।
भन्नइ विसयस्स वहिं पडिसेहो अणुमईए पि ॥ [२८९]

इही जि विषइ माप्यकारु पृच्छा अनइ उतरु कहइ-

केइ भणंति गिहिणो तिविहं तिविहेण नत्थि संवरणं ।
तं न, जओ निदिट्ठं पन्नत्तीए^१ विसेसेणं ॥ [२९०]

तो कह निज्जुत्तीएऽणुमइनिसेहु चि सेसविसयम्मि ।
सामत्थेणं नत्थउ तिविहं तिविहेण को दोसो ? ॥ [२९१]

निर्युक्ति माहि आपणाई विषय माहि सामत्थ्यभावि करी अनुमतिदान तथा अभावइतउ अनुमति-
निषेधु भणउ, अनेरइ थानकि स्वयंभूरमणादिकि तिविहं तिविहेण निषेधि किसउ देसु । तथा पुत्रादि-
संततिनिमित्तु जिणि सावद्यव्यापारु दीधउ हुयइ तेह एकादसी प्रतिमा प्रतिपन्न रहइ ‘तिविहं तिविहेण’
परिहारु संभवइ । तदुक्तम्-

पुत्ताइसंतइनिमित्तु मुत्तु इकादसिं पवन्नस्स ।
जंपंति केइ गिहिणो दिवखाभिमुहस्स तिविहं पि ॥ [२९२]

पुनरपि शिष्यु भणइ-किस्ती परि मनि करी करण कारण अनुमति हुयइं । आह-

कह पुण मणसा करणं कारावणु अणुमई य^२ ।
जह वय-तणुजोगेहिं करणाइं तह भवे मणसा ॥ [२९३]

जेतीवार काय नउ वचन नउ व्यापारु रहिउ हुयइ सर्वथा तेतीवार केवलु मनव्यापारु जु हुयइ ।

तपहीणत्ता वयतणुकरणाईण अहव उं मणकरणं ।
सावज्जजोगगमणं पन्नत्तं वीयरगेहिं ॥ [२९४]

कारवणं पुण मणसा चित्तेइ करेउ एस सावज्जं ।
चित्तेती उ कए पुण सुट्ठु कयं अणुमई होइ ॥ [२९५]

२५ एतलइ पहिलउ भंगु हुयउ ।

§285) न करइ न करावइ अनेरा करता हूता अनुमनइ नहीं । मनि करी वचनि करी एक ।
मनि करी कायि करी वीजउ । वचनि करी कायि करी वीजउ ३ । एउ वीजउ मूलभेदु हुयउ । अथ
अनंतरु वीजउ मूलभेदु कहियइ-न करइ न करावइ अनेरा करता हूता अनुमनइ नहीं । मणेणं एउ,
पायाए वीजउ, काएणं वीजउ । एउ वीजउ मूलभेदु । अथ चउयउ कहियइ-न करइ न करावइ मणेणं
३० पायाए काएणं एक । न करइ अनेरा करता हूता अनुमनइ नहीं वीजउ । न करावइ अनेरा करता हूता
अनुमनइ नहीं वीजउ ३ । एउ चउयउ मूलभेदु । इयाणि पांचमउ कहियइ-न करइ न करावइ मणेणं
वायाए एक । करइ नहीं अनेरा करता हूता अनुमनइ नहीं वीजउ । न करावइ अनेरा हूता अनुमनइ

§284) 1 B. gloss आवच्छरति माहि । 2 B. Bh. add तह । 3 B. Bh. do not have व ।

नहीं प्रीति ३ । ए त्रिदि भांग' मनेन वायाए लदा । तथा इमीरी त्रि दि मनेन वायाए व त्रिदि
 भांग लामई । तथा अवर पुनि त्रिदि भांग' वायाए काएण व एमने । एवं नर मनेन । संघम
 मूलभेदु ह्यव । अथ छट्ट कदियद-न करउ न करउद मनेन एउ । न करउ अनेरा करवा अनुमन
 नहीं मनेन प्रीति । न करवाइ अनेरा करवा अनुमन नहीं मनेन प्रीति । एवं वायाए त्रिदि । वायाए
 वि त्रिदि लब्धमि । एवं नर भांग । छट्ट मूलभेदु भणित । इत्यपि सातमड कदियद-न करउ मनेन
 वायाए काएण व एउ । न करवाइ गममा इति प्रीति । अनेरा करवा हंउ अनुमन नहीं मनेन इति
 प्रीति । सातमड मूलभेदु भणित । अथ आठमड कदियद-न करउ मनेन वायाए एउ । तथा मनेन
 काएण व प्रीति । वायाए काएण व प्रीति । एवं न करवाइ इय वि त्रिदि मने । एवं नर मने
 आठमड मूलभेदु भणित । अथ नवमड मूलभेदु कदियद-न करउ मनेन एउ, न करवाइ' मनेन प्रीति,
 अनेरा करवा हंउ अनुमन नहीं मनेन प्रीति । एवं वायाए त्रिदि । वायाए व त्रिदि । एवं मने नर ।
 नवमड मूलभेदु भणित । इहं पठिलद भांगइ एउ भांगइ, प्रीति त्रिदि भांग ३, प्रीति भांग त्रिदि
 भांग । पउयइ भांगइ त्रिदि भांग ३, संघमइ भांगइ नर भांग ९, छट्ट भांगइ नर भांग ९,
 सातमड भांगइ त्रिदि भांग ३, आठमड भांगइ नर भांग ९, नवमड भांगइ नर भांग ९, एवं मनेन
 ४९ । एत अतीत सायव तगउं प्रतिअमनु, मनुष्यसंप्रसादन सायव तगउं संसणु अनामकयव
 वगउं प्रत्याग्यानु । इमी परि काउववि करी गुणि हंउ इगुलरंवाय मने एउ एउ मनेएउ ह्यव ।

तथा चाह-

- लद्धफलमायमेयं भंगा उ हवंति अउणनधारां । [२९६]
- तीया-अणाय-संपयगुणियं कायेण होइ इमं ।
- सीयालं भंगमयं कद काउविण्य होइ गुणनाओ । [२९७]
- तीयस्स य पडिअमणं पगुणनमम संवरणं ।
- पचरसापस्स वहा होइ य एमन्स एउ गुणनाओ । [२९८]
- काउतिण्यं भणियं जिण-वागइ-वायवार्इहिं ।
- सीयालं भंगमयं जम सुबुदीइ होइ उअर्यं । [२९९]
- सो एउ पचरसापे कुणो सेना मन्वे अणसा उ ॥

तथा एक पचरसापे वरत, एउ वराव, तिं वरे करी वरावो । एउ अणन अणन वरतः
 वरत गुणु १ । जगवउ अजाना वरतः गुक नर अवावि गुकवुणवुणुइ करी गुक वरं विविदिअरवि
 तीइ नर मनीधि वरत वर गुणु २ । अजगु जगवा मनीधि मनीधि अवावि करी वर वर गुणु ३
 अजगु अजगु मनीधि वरत मनीधि अगुणु ४ । एउअणन अणनविवरत ।

{286} अथ माथु परिमी ' त्रिदि त्रिदिरे' इति मन्त्रीय भेद एतत्प्रथम एव कदिय-
 रिणारि संघम माथु वरत नरी वराव नरी अनेरा करवा हंउ अनुमन नहीं । एउ अनेरा करवा
 मनेन' इति करी संघ मनेन 'वायव वरत' मनेन 'वायव वरत' इति करी त्रिदि मने
 मनेन । श्रीवृत्तमन्त्राचार्यविरचित मन्त्रि वरतः, श्रीवृत्तमन्त्राचार्यविरचित मन्त्रि वरतः । एउ अणन अणन
 त्रिदिरे' एउ, आठ मन्त्राचार्य ९, वराव वरी गुणि मन्त्रीय मनुष्यसंप्रसादन इति ।
 इत्यन्तमभंगइह ह्यव ।

[285] 1 B drops 1 line between 1-11 & 12. 2 B. 3 B. 4 B. 5 B. 6 B. 7 B. 8 B. 9 B. 10 B. 11 B. 12 B. 13 B. 14 B. 15 B. 16 B. 17 B. 18 B. 19 B. 20 B. 21 B. 22 B. 23 B. 24 B. 25 B. 26 B. 27 B. 28 B. 29 B. 30 B. 31 B. 32 B. 33 B. 34 B. 35 B. 36 B. 37 B. 38 B. 39 B. 40 B. 41 B. 42 B. 43 B. 44 B. 45 B. 46 B. 47 B. 48 B. 49 B. 50 B. 51 B. 52 B. 53 B. 54 B. 55 B. 56 B. 57 B. 58 B. 59 B. 60 B. 61 B. 62 B. 63 B. 64 B. 65 B. 66 B. 67 B. 68 B. 69 B. 70 B. 71 B. 72 B. 73 B. 74 B. 75 B. 76 B. 77 B. 78 B. 79 B. 80 B. 81 B. 82 B. 83 B. 84 B. 85 B. 86 B. 87 B. 88 B. 89 B. 90 B. 91 B. 92 B. 93 B. 94 B. 95 B. 96 B. 97 B. 98 B. 99 B. 100 B. 101 B. 102 B. 103 B. 104 B. 105 B. 106 B. 107 B. 108 B. 109 B. 110 B. 111 B. 112 B. 113 B. 114 B. 115 B. 116 B. 117 B. 118 B. 119 B. 120 B. 121 B. 122 B. 123 B. 124 B. 125 B. 126 B. 127 B. 128 B. 129 B. 130 B. 131 B. 132 B. 133 B. 134 B. 135 B. 136 B. 137 B. 138 B. 139 B. 140 B. 141 B. 142 B. 143 B. 144 B. 145 B. 146 B. 147 B. 148 B. 149 B. 150 B. 151 B. 152 B. 153 B. 154 B. 155 B. 156 B. 157 B. 158 B. 159 B. 160 B. 161 B. 162 B. 163 B. 164 B. 165 B. 166 B. 167 B. 168 B. 169 B. 170 B. 171 B. 172 B. 173 B. 174 B. 175 B. 176 B. 177 B. 178 B. 179 B. 180 B. 181 B. 182 B. 183 B. 184 B. 185 B. 186 B. 187 B. 188 B. 189 B. 190 B. 191 B. 192 B. 193 B. 194 B. 195 B. 196 B. 197 B. 198 B. 199 B. 200 B. 201 B. 202 B. 203 B. 204 B. 205 B. 206 B. 207 B. 208 B. 209 B. 210 B. 211 B. 212 B. 213 B. 214 B. 215 B. 216 B. 217 B. 218 B. 219 B. 220 B. 221 B. 222 B. 223 B. 224 B. 225 B. 226 B. 227 B. 228 B. 229 B. 230 B. 231 B. 232 B. 233 B. 234 B. 235 B. 236 B. 237 B. 238 B. 239 B. 240 B. 241 B. 242 B. 243 B. 244 B. 245 B. 246 B. 247 B. 248 B. 249 B. 250 B. 251 B. 252 B. 253 B. 254 B. 255 B. 256 B. 257 B. 258 B. 259 B. 260 B. 261 B. 262 B. 263 B. 264 B. 265 B. 266 B. 267 B. 268 B. 269 B. 270 B. 271 B. 272 B. 273 B. 274 B. 275 B. 276 B. 277 B. 278 B. 279 B. 280 B. 281 B. 282 B. 283 B. 284 B. 285 B. 286 B. 287 B. 288 B. 289 B. 290 B. 291 B. 292 B. 293 B. 294 B. 295 B. 296 B. 297 B. 298 B. 299 B. 300 B. 301 B. 302 B. 303 B. 304 B. 305 B. 306 B. 307 B. 308 B. 309 B. 310 B. 311 B. 312 B. 313 B. 314 B. 315 B. 316 B. 317 B. 318 B. 319 B. 320 B. 321 B. 322 B. 323 B. 324 B. 325 B. 326 B. 327 B. 328 B. 329 B. 330 B. 331 B. 332 B. 333 B. 334 B. 335 B. 336 B. 337 B. 338 B. 339 B. 340 B. 341 B. 342 B. 343 B. 344 B. 345 B. 346 B. 347 B. 348 B. 349 B. 350 B. 351 B. 352 B. 353 B. 354 B. 355 B. 356 B. 357 B. 358 B. 359 B. 360 B. 361 B. 362 B. 363 B. 364 B. 365 B. 366 B. 367 B. 368 B. 369 B. 370 B. 371 B. 372 B. 373 B. 374 B. 375 B. 376 B. 377 B. 378 B. 379 B. 380 B. 381 B. 382 B. 383 B. 384 B. 385 B. 386 B. 387 B. 388 B. 389 B. 390 B. 391 B. 392 B. 393 B. 394 B. 395 B. 396 B. 397 B. 398 B. 399 B. 400 B. 401 B. 402 B. 403 B. 404 B. 405 B. 406 B. 407 B. 408 B. 409 B. 410 B. 411 B. 412 B. 413 B. 414 B. 415 B. 416 B. 417 B. 418 B. 419 B. 420 B. 421 B. 422 B. 423 B. 424 B. 425 B. 426 B. 427 B. 428 B. 429 B. 430 B. 431 B. 432 B. 433 B. 434 B. 435 B. 436 B. 437 B. 438 B. 439 B. 440 B. 441 B. 442 B. 443 B. 444 B. 445 B. 446 B. 447 B. 448 B. 449 B. 450 B. 451 B. 452 B. 453 B. 454 B. 455 B. 456 B. 457 B. 458 B. 459 B. 460 B. 461 B. 462 B. 463 B. 464 B. 465 B. 466 B. 467 B. 468 B. 469 B. 470 B. 471 B. 472 B. 473 B. 474 B. 475 B. 476 B. 477 B. 478 B. 479 B. 480 B. 481 B. 482 B. 483 B. 484 B. 485 B. 486 B. 487 B. 488 B. 489 B. 490 B. 491 B. 492 B. 493 B. 494 B. 495 B. 496 B. 497 B. 498 B. 499 B. 500 B. 501 B. 502 B. 503 B. 504 B. 505 B. 506 B. 507 B. 508 B. 509 B. 510 B. 511 B. 512 B. 513 B. 514 B. 515 B. 516 B. 517 B. 518 B. 519 B. 520 B. 521 B. 522 B. 523 B. 524 B. 525 B. 526 B. 527 B. 528 B. 529 B. 530 B. 531 B. 532 B. 533 B. 534 B. 535 B. 536 B. 537 B. 538 B. 539 B. 540 B. 541 B. 542 B. 543 B. 544 B. 545 B. 546 B. 547 B. 548 B. 549 B. 550 B. 551 B. 552 B. 553 B. 554 B. 555 B. 556 B. 557 B. 558 B. 559 B. 560 B. 561 B. 562 B. 563 B. 564 B. 565 B. 566 B. 567 B. 568 B. 569 B. 570 B. 571 B. 572 B. 573 B. 574 B. 575 B. 576 B. 577 B. 578 B. 579 B. 580 B. 581 B. 582 B. 583 B. 584 B. 585 B. 586 B. 587 B. 588 B. 589 B. 590 B. 591 B. 592 B. 593 B. 594 B. 595 B. 596 B. 597 B. 598 B. 599 B. 600 B. 601 B. 602 B. 603 B. 604 B. 605 B. 606 B. 607 B. 608 B. 609 B. 610 B. 611 B. 612 B. 613 B. 614 B. 615 B. 616 B. 617 B. 618 B. 619 B. 620 B. 621 B. 622 B. 623 B. 624 B. 625 B. 626 B. 627 B. 628 B. 629 B. 630 B. 631 B. 632 B. 633 B. 634 B. 635 B. 636 B. 637 B. 638 B. 639 B. 640 B. 641 B. 642 B. 643 B. 644 B. 645 B. 646 B. 647 B. 648 B. 649 B. 650 B. 651 B. 652 B. 653 B. 654 B. 655 B. 656 B. 657 B. 658 B. 659 B. 660 B. 661 B. 662 B. 663 B. 664 B. 665 B. 666 B. 667 B. 668 B. 669 B. 670 B. 671 B. 672 B. 673 B. 674 B. 675 B. 676 B. 677 B. 678 B. 679 B. 680 B. 681 B. 682 B. 683 B. 684 B. 685 B. 686 B. 687 B. 688 B. 689 B. 690 B. 691 B. 692 B. 693 B. 694 B. 695 B. 696 B. 697 B. 698 B. 699 B. 700 B. 701 B. 702 B. 703 B. 704 B. 705 B. 706 B. 707 B. 708 B. 709 B. 710 B. 711 B. 712 B. 713 B. 714 B. 715 B. 716 B. 717 B. 718 B. 719 B. 720 B. 721 B. 722 B. 723 B. 724 B. 725 B. 726 B. 727 B. 728 B. 729 B. 730 B. 731 B. 732 B. 733 B. 734 B. 735 B. 736 B. 737 B. 738 B. 739 B. 740 B. 741 B. 742 B. 743 B. 744 B. 745 B. 746 B. 747 B. 748 B. 749 B. 750 B. 751 B. 752 B. 753 B. 754 B. 755 B. 756 B. 757 B. 758 B. 759 B. 760 B. 761 B. 762 B. 763 B. 764 B. 765 B. 766 B. 767 B. 768 B. 769 B. 770 B. 771 B. 772 B. 773 B. 774 B. 775 B. 776 B. 777 B. 778 B. 779 B. 780 B. 781 B. 782 B. 783 B. 784 B. 785 B. 786 B. 787 B. 788 B. 789 B. 790 B. 791 B. 792 B. 793 B. 794 B. 795 B. 796 B. 797 B. 798 B. 799 B. 800 B. 801 B. 802 B. 803 B. 804 B. 805 B. 806 B. 807 B. 808 B. 809 B. 810 B. 811 B. 812 B. 813 B. 814 B. 815 B. 816 B. 817 B. 818 B. 819 B. 820 B. 821 B. 822 B. 823 B. 824 B. 825 B. 826 B. 827 B. 828 B. 829 B. 830 B. 831 B. 832 B. 833 B. 834 B. 835 B. 836 B. 837 B. 838 B. 839 B. 840 B. 841 B. 842 B. 843 B. 844 B. 845 B. 846 B. 847 B. 848 B. 849 B. 850 B. 851 B. 852 B. 853 B. 854 B. 855 B. 856 B. 857 B. 858 B. 859 B. 860 B. 861 B. 862 B. 863 B. 864 B. 865 B. 866 B. 867 B. 868 B. 869 B. 870 B. 871 B. 872 B. 873 B. 874 B. 875 B. 876 B. 877 B. 878 B. 879 B. 880 B. 881 B. 882 B. 883 B. 884 B. 885 B. 886 B. 887 B. 888 B. 889 B. 890 B. 891 B. 892 B. 893 B. 894 B. 895 B. 896 B. 897 B. 898 B. 899 B. 900 B. 901 B. 902 B. 903 B. 904 B. 905 B. 906 B. 907 B. 908 B. 909 B. 910 B. 911 B. 912 B. 913 B. 914 B. 915 B. 916 B. 917 B. 918 B. 919 B. 920 B. 921 B. 922 B. 923 B. 924 B. 925 B. 926 B. 927 B. 928 B. 929 B. 930 B. 931 B. 932 B. 933 B. 934 B. 935 B. 936 B. 937 B. 938 B. 939 B. 940 B. 941 B. 942 B. 943 B. 944 B. 945 B. 946 B. 947 B. 948 B. 949 B. 950 B. 951 B. 952 B. 953 B. 954 B. 955 B. 956 B. 957 B. 958 B. 959 B. 960 B. 961 B. 962 B. 963 B. 964 B. 965 B. 966 B. 967 B. 968 B. 969 B. 970 B. 971 B. 972 B. 973 B. 974 B. 975 B. 976 B. 977 B. 978 B. 979 B. 980 B. 981 B. 982 B. 983 B. 984 B. 985 B. 986 B. 987 B. 988 B. 989 B. 990 B. 991 B. 992 B. 993 B. 994 B. 995 B. 996 B. 997 B. 998 B. 999 B. 1000 B.

§284) अत्र शिष्यु भणइ-भगवन् ! देशविरत रहइं एउ भेटु किम संभवइ; तेह रहइं अनु-
मतिनिषेध तथा अभावइतउ, इसउं न कहियूं । आपणा विरयवाहिरि आवकहीं रहइं अनुमतिनिषेधु
संभवइ, नहि स्वयंभूरमणमत्स्यादिपातविपइ अनुमति संभवइ । तदुक्तम्-

5 'न करे' इच्छातिगं गिहिणो कह होइ देसविरयस्स ।
भन्नइ विसयस्स बहिं पडिसेहो अणुमईए वि ॥ [२८९]

इंही जि विपइ भाष्यकारु पृच्छा अनइ उतरु कहइ-

केई भणति गिहिणो तिविहं तिविहेण नत्थि संवरणं ।
तं न, जओ निदिहं पन्नचीए^१ विसेसेणं ॥ [२९०]

10 तो कह निञ्जुत्तीएऽणुमइनिसेहु त्ति सेसविसयम्मि ।
सामत्थेणं नत्थउ तिविहं तिविहेण को दोतो ? ॥ [२९१]

नियुक्ति माहि आपणाई विषय माहि सामस्यभावि करी अनुमतिदान तथा अभावइतउ अनुमति-
निषेधु भणित, अनेरइ थानकि स्वयंभूरमणादिकि तिविहं तिविहेण निषेधि किस्स देसु । तथा पुत्रादि-
संततिनिमित्तु जिणि सावयव्यापारु दीधउ हुयइ तेह एकादसी प्रतिमा प्रतिपन्न रहइं 'तिविहं तिविहेण'
परिहारु संभवइ । तदुक्तम्-

15 पुत्ताइसंतइनिमित्तु सुत्तु इकादसिं पवन्नस्स ।
जंपति केइ गिहिणो दिक्खाभिमुहस्स तिविहं पि ॥ [२९२]

पुनरपि शिष्यु भणइ-किसी परि मनि करी करण कारण अनुमति हुयइं । आह-

कह पुण मणसा करणं कारावणु अणुमई य^२ ।
जह वय-तणुजोगेहिं करणाई तह भवे मणसा ॥ [२९३]

20 जेतीवार काय नउ वचन नउ व्यापारु रहिउ हुयइ सर्वथा तेतीवार केवलु मनव्यापारु जु हुयइ ।
तयहीणत्ता वयतणुकरणाईण अहव उं मणकरणं ।
सावज्जजोगगमणं पन्नत्तं वीयरगेहिं ॥ [२९४]

कारवणं पुण मणसा चितेइ करेउ एस सावज्जं ।
चितेती उ कए पुण सुहु कयं अणुमई होइ ॥ [२९५]

25 एतलइ पहिलउ भंगु हुयउ ।

§285) न करइ न करावइ अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं । मनि करी यचनि करी एक ।
मनि करी कायि करी बीजउ । यचनि करी कायि करी त्रीजउ ३ । एउ बीजउ मूलभेटु हुयउ । अथ
अनंतरु त्रीजउ मूलभेटु कहियइ-न करइ न करावइ अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं । मणेणं एउ,
वायाए धीजउ, काएणं त्रीजउ । एउ त्रीजउ मूलभेटु । अथ चउथउ कहियइ-न करइ न करावइ मणेणं
30 वायाए काएणं एउ । न करइ अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं धीजउ । न करावइ अनेरा करता हुंता
अनुमनइ नहीं त्रीजउ ३ । एउ चउथउ मूलभेटु । इयाणि पांचमउ कहियइ-न करइ न करावइ मणेणं
वायाए एउ । करइ नहीं अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं धीजउ । न करावइ अनेरा हुंता अनुमनइ

§284) 1 B. gloss आवकवृत्ति माहि । 2 B. Bh. add तह । 3 B. Bh. do not have उ ।

नहीं व्रीजउ ३ । ए त्रिन्दि भांगा' मणेणं वायाए लद्धा । तथा इसीहिं जि परि मणेणं काएण य त्रिन्दि भांगा लाभइं । तथा अपर पुणि त्रिन्दि भांगा' वायाए काएण य लाभइं । एवं नव भांगा । पांचमउ मूलभेदु हुयउ । अथ छट्टउ कहियइ—न करइ न करावइ मणेणं एकु । न करइ अनेरा करता अनुमनइ नहीं मणेणं वीजउ । न करावइ अनेरा करता अनुमनइ नहीं मणेणं व्रीजउ । एवं वायाए तिन्नि । काएण वि तिन्नि लब्धंति । एवं नव भांगा । छट्टउ मूलभेदु भणितु । इयाणि सातमउ कहियइ—न करइ मणेणं 5 वायाए काएण य एकु । न कारवइ गणसा ईहि वीजउ । अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं गणसा ईहि व्रीजउ । सातमउ मूलभेदु भणितु । अथ आठमउ भणियइ—न' करइ मणेणं वायाए एकु । तथा मणेणं काएण य वीजउ । वायाए काएण य व्रीजउ । एवं न करावइ इत्य वि तिन्नि भांगा । एवं नव भांगा आठमउ मूलभेदु भणितु । अथ नवमउ मूलभेदु भणियइ—न करइ मणेणं एकु, न करावइ' मणेणं वीजउ, अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं मणेणं व्रीजउ । एवं वायाए तिन्नि । काएण य तिन्नि । एवं भांगा नव । 10 नवमउ मूलभेदु भणितु । ईहां पहिलइ भांगइ एकु भांगउ, वीजइ त्रिन्दि भांगा ३, व्रीजइ भांगइ त्रिन्दि भांगा । चउयइ भांगइ त्रिन्दि भांगा ३, पांचमइ भांगइ नव भांगा ९, छट्टइ भांगइ नव भांगा ९, सातमइ भांगइ त्रिन्दि भांगा ३, आठमइ भांगइ नव भांगा ९, नवमइ भांगइ नव भांगा ९ सर्वं संख्या ४९ । तत्र अतीत सावच तणउं प्रतिक्रमणु, प्रत्युत्पन्नयत्तमान सावच तणउं संवरणु, अनागतसावच तणउं प्रत्याख्यानु । इसी परि कालत्रयि करी गुणित हुंता इगुणपंचास भांगा एकु सउ सतेतालु हुयइ । 15 तथा चाह—

लद्धफलमागमेयं भांगा उ हवंति अउणपन्नासं ।

तीया-ज्जागय-संपयगुणियं कालेण होइ इमं ॥ [२९६]

सीयालं भंगसयं कह कालतिएण होइ गुणणाओ ।

तीपस्त य पडिकमणं पञ्चुपन्नस्स संवरणं ॥ [२९७] 20

पचकखाणस्त तहा होइ य एसस्स एव गुणणाओ ।

कालतिएणं भणियं जिण-गणहार-वायगाईहिं ॥ [२९८]

सीयालं भंगसयं जस्स सुबुद्धीइ होइ उवलद्धं ।

सो खलु पचकखाणे कुसलो सेसा सन्वे अहुसला उ ॥ [२९९]

तथा एक पचकखाणु करइ, एकु करावइ, त्रिउं पदे करी चउभंगी । तत्र जाणउउ जानता कन्हइ 25 करइ शुद्ध १ । जाणतउ अजाणता कन्हइ गुरु नइ अभावि गुरुवहुमानयुद्धि करी गुरु छइं विट्पिट्ठव्यादिक तीइ नइ समीपि करइ तउ शुद्ध २ । अजाणु जाणता समीपि संशेपिहिं जाणी करी करइ तउ शुद्ध ३ अजाणु अजाण समीपि करइ सर्वथा अशुद्ध ४ । गृहस्थप्रत्याख्यानभंगविचार ।

§ 286) अथ साधु वरिसी ' त्रिविहं त्रिविहेण ' इति सत्तावीस भेद प्रत्याख्यान तथा मनियइ—
हिंसादि पंचकु साधु करइ नहीं करावइ नहीं अनेरा करता हुंता अनुमनइ नहीं । तत्र "करेमि भंते ! 30 सामाहयं" इणि करी पांच समिति संभही "सब्बं सावज्जं जोणं पपस्सामि" इनि करी त्रिन्दि गुति संभही । जीवरक्षादिप्रवृत्तिविषय समिति प्रवर्तइ, जीवहिंसादिनिग्रहविषय गुति प्रवर्तइ । तउ पाछइ 'त्रिविहं त्रिविहेण' एकु, आठ प्रवचनमातर ९, कालत्रय करी गुणित सत्तावीस साधुप्रत्याख्यानभंगा हवंति ।
प्रत्याख्यानभंगद्वारु हुयउं ।

§ 287) प्रत्याख्यानभंगि गरुयउ दोसु । यथा-

वयभंगे गुरुदोसो धोवस्स वि पालणा गुणकरी य ।

गुरुलाघवं च नेयं धम्मम्मि अओ य आगारा ॥

[३००]

दो चेव नमुकारे आगारा छ छ पोरिसीए उ ।

सत्तेव य पुरिमहे इयासणगम्मि अट्टेव ॥

[३०१]

सत्तेगट्टाणस्स उ अट्टेव य आयंविमम्मि आगारा ।

पंचेव अमत्तट्टे छ प्पाणे चरिम चत्तारि ॥

[३०२]

पंच चउरो अभिग्गहे निव्वीए अट्ट नव य आगारा ।

अप्पावरणे पंच य हवंति सेसेसु चत्तारि ॥

[३०३]

निव्वीए अट्ट वा नव वा आगारा कइं हवंति ? इत्याह-

नवणीओगाहिमए अहवदहि पिसियघय गुले चेव ।

नव आगारा एसि सेसदवाणं तु अट्टेव ॥

[३०४]

अप्पावरणे चोलपट्टकाकारः । आकारद्वारु ह्ययं ।

§ 288) अथ सूत्रार्थद्वारु भणियइ-

15 (३०) उग्गए सूरे नवकारसहियं पच्चक्खामि चउत्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थण्णाभोगेणं सहसागारेणं चोसिरामि ।

‘उग्गए सूरे’ उद्भवति-ऊगिइ, सूरे-सूर्यि, नवकारसहितु ‘पच्चक्खाइ’ इसउं गुरु कहइ । शिण्डु

‘पच्चक्खामि’ इसउं कहइ । इसी परि अनेरईं पच्चक्खाणे जाणियउं । एउ मुहूतू कालमानु रात्रिभोजनप्रत्या-

ख्यानतीरणरूपता करी एह रइइं मुहूतू ऊपरि जेतलइ नमस्कार कही पारउं नही तां किसउं ? ‘चउत्विहं

25 पि आहारं’ चतुर्विधू आहारु अशनु पानु खायु स्वायु । तत्र असनु ओदनु राधा चोखा सातू मूंग राव

खंडलाद्यादिपक्वान्नभेद दुग्ध दधि सूरण मंडकादिकु जाणियउ । तथा च भणितम्-

असणं ओयण सत्तुग मुग्ग जगाराइ खज्जगविही य ।

खीराइ सरणाई मंडगपभिई य विन्नेयं ॥

[३०५]

§ 289) आछणु जवोदकु तुपोवकु तंदुलोदकु उण्णोदकु शुद्ध विकट्ट अफ्फाउ सममु पान्णु

25 जाणियउं । तद्यथा-

पाणं सोवीर-जवोदगाइ चित्तं सुराईयं चेव ।

आउक्काओ सच्चो कक्कडग जलाईयं च तहा ॥

[३०६]

अत्र ‘चित्तं सुराईयं’ इति । चित्तु नानाप्रकारु काष्ठपिष्टजादिभेदभिन्नु सुरा मधु, आदिशब्दइत्यव

द्राक्षा-शर्करापानकादिकु अफ्फाउ सगळ् कर्कटी-चिर्मटी तेह नउं जल्लु तथा कालिंग जलादिकु सगळ्

30 जाणियउं ।

§ 290) नालिकेर खज्जूर द्राक्षा भ्रष्टधान्यादिकु आम्रफल रंभाफल कर्कटी फणसादिकु फल्लु

पुणि सगळ् खादिसु जाणियउं । तथा च भणितम्-

§ 288) 1 Bh. उग्ग । 2 Bh. अनेरे इ । § 289) 1 Bh. -जाति- ।

अह पेया १ दुद्धद्वी २ दुद्धवलेही ३ य दुद्धसाडी ४ य ।

पंच य विगइगयाइं दुद्धंमि य खीरिसहियाइं ॥ [३१८]

अंवल्लुपंमि दुद्धे दुद्धद्वी दक्षमीस रद्धंमि ।

पयसाडी तह तंदुलचूर्णमि सिद्धंमि अवलेही ॥ [३१९]

- 5 छासी सहितु दूधु दुद्धद्वी । किसउ अर्थु ? फेदुरि दुद्धद्वी कहियइ । द्राख माहि घाती दूधि रांधियइं तउ दुद्धसाडी कहियइ, पयसाडी पुणि कहियइं । तंदुलचूर्णु चोखा नउ लोटु तिणि दूध माहि रांधइं अवलेही दुद्धवलेही । पेया कणिक नी राव दूधि राधी । खीरि प्रसिद्ध । ए पांच दूध विगइ नां विगइगत जु पुणि केई बलही विगइ न गणइं किंतु विगइगतु गणइं तीह नउ अभिप्रायु सम्यग् न जाणियइं । नाममाला माहि श्रीं हेमसूत्रिसिद्धं भणितं—“उभे क्षीरस्य विवृती किलाटी कूर्चिकाऽपि 10 च” । अत्र किलाटी, बलही, कूर्चिका—विगठउं दूधु संभावियइ । कूर्चुं दुग्धमस्तु दधिकूचा^१ जेह माहि हुयइ स कूर्चिका इसा व्याख्यानकरणइतउ ।

§312) दहिए विगइगयाइं घोलवडा १ घोल २ सिहरिणि ३ करंबो ४ ।

लवणकण दहियमहियं ५ संगरियाइम्मि अप्पाडिए ॥ [३२०]

- 15 सिहरिणी गुड-मिश्रित दधि-विकाररूपा । दधिओलित करंबउ । लवणकणमिधु दधिमयितु विलोदितु कहियइ । “मथितं यारियजितम्” इति वचनात् । दहि जु मथितं लूणसहितु लवणकणदहियमहितु कहियइ । सु पुणि संगरिकादिकि व्यंजनि अणपट्टिहिं जि, पट्टिइ पुणि विशेषि करी हुयइ । ए पांच दधिविगइ नां विगइगत ।

§313) पक्षपयं १ घयकिट्टी २ पकोसहि उवरतरियं सपि च ३ ।

निभंजण ४ वीसंदणमाइ य घयविगइ^१ विगयगया ॥ [३२१]

- 20 ओपधपाकि करी गतस्वादु घृतु पक्षघृतु । घयकिट्टी घृत नउं कीटउं २ । घृतपक्ष ओपध ऊपरि तरिकाभूतु स्यातु घृतु पकोसहि उवरतरियसपि ३ । नीमसणु चतुर्थं घाणयोग्यु घृतु दहि नी तरि मादि पचितं । गोधूमचूर्णु गुडपंडसहितु भक्षयविशेषु वीसंदणु । पांच घृतविगइ नां विगइगत ।

§314) अद्धकट्टिउ इक्खुरसो^१ १ गुलवाणीयं च २ सकरा ३ खंडं ४ ।

पायगुलं ५ गुलविगइं विगइगयाइं च पंचेव ॥ [३२२]

- 25 अद्धकट्टिउ इक्खुरसु काकवउ १, गुल नउं पाणीउ गुलवाणी २, साकर ३, खंड प्रसिद्ध ४, मूंटी मरियादिद्रव्यसहितु निळमिधु पाकउ गुलु पायगुलु ५, । लाठी^१ रेवडी इसां नामहं करी प्रसिद्धु भक्षयविशेषु पायगुलु कहियइ । ए पांच गुलविगइ नां विगइगत ।

§315) तिळमली १, तिलकुट्टी २ ददुं तिळं ३ तहोसहुच्चरियं ४ ।

लसगाइदव्यपकं तिळं ५ तिळंमि पंचेव ॥ [३२३]

- 30 तेल नउं टाहउं तिळमली १, निळवटि २, निळपूयणु सेलीप्रभृति तिलकुट्टी २, दापउं तेलु ३, तथा ओपधराकइतउ ऊपरितं तेलु ४, लागादिद्रव्यपचितं तेलु ५ । ए पांच तेलविगइ नां विगइगत ।

§311) 4 B. omits. 5 Bh. प्रभृती । 6 B. omits. §313) 1 B. omits सिध ।
§314) 1 B. Bh. omit इ- । 2 Bh. लठी ।

एगं एगस्सुवरिं तिन्नोवरि बीयगं च जं पकं ।

तुप्पेणं तेणं चिय तद्दयं गुलहाणिया पमिई ॥

[३२४]

चउत्थं जलेण सिचा लप्पसिया पंचमं च पूपलिया ।

चुप्पडिय तावियाए परिपकाईसु मिलिएसु ॥

[३२५]

घृततैलसहित तापिका ऊपरि एक ऊपरि धीजउ जु घृतपूरादिकु तिणिहिं जि तुप्पि चोपडी पचिउ 5
सु एकु । तिन्नोवरि कडाहइ नयइ घृति अणपातिइ चतुर्थादिघार जु तलिउं सु धीजउं । गुलधानादिकु
धीजउं । जलसिक्क लापसी लिह्गटउं चउथउं । चपलक-मुद्रादि पूयडा धारडां प्रभृति चोपडी ऊमल्लंकी
तावी ऊपरि जु पचियइ सु पांचमउं । ए पांच ओगाहिम विगइगत । एवंकारइ सर्वसंख्या करी
करी विगइगत ।

§ 316) अथ अमदयविगइ कहियइं । मधु त्रिहउं भेदे-मक्षिका नउं १, कृति नउं २, भमरी 10
नउं ३ । मधु विहउं भेदे-काष्ठ नउं, पिष्ट नउं । मांसु त्रिहउं भेदे-जल-खल-खचर जुंसुसंभव भायइतउ ।
अथवा चर्म-रुधिर-मांस भेदइतउ । मांसणु चउं भेदे-पूर्विहिं जि भणिवं । एकादि विहृतिप्रत्याख्यानु
विहृतिप्रत्याख्यानु । निर्विकृतिप्रत्याख्यानु विहृतिप्रत्याख्यानिहिं जि संमहिउं । अत्र 'गिहृत्थसंसट्ठेणं' ति ।
गृहस्थि आपणइ कारणि दूध माहि ओदनु कुरु संसट्ठु धातिउ । तेह ऊपरि जु चत्तारि आंगुलप्रमाणु
दूधु सु गृहस्थसंसट्ठु सु दूधु विगइ न हुयइं । पंचमादि अंगुलप्रमाणु विगइ जि हुयइ । इसी परि 15
अनेराई गृहस्थसंसट्ठु जाणियां ।

§ 317) 'पह्चमक्खिखण्णं'ति । सर्वथा रूक्षु मंडकपोलिकादिकु थोहउं कोमलता-संपादनिसिन्नु
अथवा रक्षागंध उच्चारणनिसिन्नु आंगुली नइ भांति घृतादि ले करी चोपडिउं जु सु प्रतीत्यप्रक्षितु ।
तत्र जे किमइ आंगुली ले प्रक्षितु तउ कल्पइ, धारा करी प्रक्षितु पुणि न कल्पइ ।

§ 318) अत्र साद्धं पौरुषी अपाद्धं पौरुषी व्यासनकादिक प्रत्याख्यान आकारसंख्या करी सूत्र 20
माहि धणमणिवां ई आन्नायवसइतउ आविया । अनइ जुत्तिजुत्त तिणि कारणि पौरुषी पूर्वोद्धं एकासनक
जिम जाणियां । सूत्रार्थद्वार चतुर्थं पंचम संपूर्णं ह्यां ।

§ 319) अथ शुद्धि कहियइ । शुद्धि छए भेदे । यथा-

सा पुण सदहणा १ जाणणा २ य विणय ३ अणुभासणा ४ चैव ।

अणुपालणा ५ विसोही भावविसोही भवे ६ छट्ठा ॥

[३२६] 25

पच्चक्खाणं तु सच्चुदेसियं जं जहिं जया काले ।

तं जो सदहइ नरो तं जाणसु सदहणसुद्धं ॥

[३२७]

पच्चक्खाणं जाणइ कप्पे जं जंमि होइ कायव्वं ।

मूलगुण उत्तरगुणे तं जाणसु जाणणासुद्धं ॥

[३२८]

किइकम्मस्स विसुद्धिं पउंजई जो अहीणमहरिचं ।

मणवयणक्कायगुत्तो तं जाणसु विणयजो सुद्धं ॥

[३२९]

अणुभासइ गुरुवयणं अक्खर-पय-वज्जेहिं परिसुद्धं ।

पंजलिउडो अभिमुहो तं जाणसु भासणासुद्धं ॥

[३३०]

कंजारे दुग्भिक्रमे आर्यके वा महा समुप्यन्ने ।
 जं पालियं न मग्गं तं जाणसु पालणासुद्धं ॥ [३३१]
 रामेण व दोसेण व परिणामेण व न दूसियं जं तु ।
 तं खलु पचक्खानं भावविसुद्धं सुणेयव्वं ॥ [३३२]

5 अथवा—

फासियं १ पालियं २ चेव सोहियं ३ तीरियं ४ तथा ।
 किट्टिय ५ माराहियं ६ चेव पर-सयम्मि य पज्जइयव्वं ॥ [३३३]
 उचिए काले विहिणा पत्तं जं फासियं तं भणियं ।
 तद्द पालियं च असइं सम्मं उवओमपडियरियं ॥ [३३४]
 गुग्दत्तसेमभोयणसेवणाए य सोहियं जाण ।
 पुप्पे वि घेयकालावत्थाणा तीरियं होइ ॥ [३३५]
 भोयणकाले अमुगं पचक्खायं ति सरइ किट्टिययं ।
 आराहियं पयारेहिं सम्ममेएहिं पडियरियं ॥ [३३६]

मुञ्जिदारु छट्टं ह्यतं ।

15 § 320) अथ फलु कश्चिद । सु पुणि सामान्य-विशेषरूपता करी विद्वं भेदे । तत्र सामान्यफलु
 इत्येति धम्मिन्त इदं । परत्येति दामन्नगादिकदं इदं । यथा—

पचक्खानम्म फले इह परलोए य होइ दूविदं तु ।
 इह लोइ धम्मिद्धाई दामन्नगमाइ परलोए ॥ [३३७]

तत्र धम्मिन्त कथानकु अतिभिन्नता करी इहां न लिखितं, यमुदेवहीडिसिद्धांतं हंतउ जाणिवतं ।

० दामन्नगकथानकु पुनि मविस्तर संस्कृतवृत्ति हंतउ जाणिवतं । विशेष फलु यथा—

पचक्खानांमि कए आमवदाराइ हुंति पिहियाइं ।
 आमववुच्छेएण य तद्दावुच्छेएणं होइ ॥ [३३८]

तद्दावुच्छेएणं अउलोवममो मवे मणुस्माणं ।
 अउलोवममेण पुणो पचक्खानं हवइ सुद्धं ॥ [३३९]

20 ततो चरित्तपम्मो कम्मविवेगो अणुवक्खणं तु ।
 ततो केवत्तनां ततो सुक्खो मयासुक्खो ॥ [३४०]

तथा इत्युत्पन्ननिदानं शून्यवाच्यत माहि कश्चिदं—“पचक्खानेणं भंते । जीवे हि ज्ञेये !
 तेन ! पचक्खानेणं आमवदाराइं निरुवेइ” इत्यादि । मूलतं फलुद्वारं मग्गं । वंदतकविवरणं मग्गं ।

§ 321) अथ धम्मिन्तविविधे विविधे ।

21 पदिक्कमं देवमियं इत्थमिदिरियमावकहियं प ।
 पदिक्कमं चाइम्ममनियं मंरुच्छउ उलमहे य ॥ [३४१]

इत्थे दूय पंचविदं रिउम-विना-दक्ख-वरम-अउमामे ।
 अउमविदुदमरुं पदिक्कमं देमियं मणियं ॥ [३४२]

सुयोदपचरं जा गदपमाचसमयं च सुभीण ।
 चरदारं गंयेन पुरिमदं जाय मनियं च ॥
 पटिकमनं शिं भेरे । एक इत्यदि यावत्तुकि । सु पुनि देवगित अगइ राइउ परिगव पाउ-
 न्नामिह संनकारिइ बइयइ । अथवा उच्यमाणुं अनमणु । तेइ गगइ कारिणि जु पटिकमनं कीउइ सु
 उच्यमाणुं पटिकमनं पुनि इत्यदि बइयइ । मगज्जीतात्तनारुपु पटिकमनं यावत्तुकि कइयइ ।
 शिनि पटिकमनं मबल उंतिइय मादि ति के जतीपार कीथा दुपइ तीइ वना पटिकमनकरणइउउ ।
 अ इत्यदि-

[३४३]

मनुयेन मावण्यं च अरम्य वापन्यं हवइ उम्हा ।
 अंती अंती निमिष्मा लथा आरम्यं नाम ॥

[३४४]

अरम्यमावण्यं आचरयइ पटिकमनं कइयइ । तथा च भनिं-
 मगइइकनयो भग्नी पुरिमम्यं च पच्छिमम्यं च त्रिणाम्यं ।
 मादिहमगान विज्ञानं काणपाजाए च पटिकमनं ॥

10

[३४५]

अथ देवनाथ-अद्दु रिगु मेद नइ अंती, किमउ अयुं ? तिमइ पटिकमनमूयगुणनकादि मूयं
 कनं कंठिउनु इउइ तिमइ मगइ कीउइ । राइउ पुनि-
 सुदुगनि पोउचइय कणनिगं दुधि मिउउ रयदरपं ।
 मंपाउपावण्यो दम पेडा उग्गाए धूरे ॥

[३४६]

इमा अलउअइ तिमइ सुदुगनी १. लपइरु २. पोउअद्दु ३. मंपाउउ ४. उचरपट्टु ५. त्रिन्दि
 बन्नि च्छेइडी ६. एक लोपइ ८. दुधि मिम एक क्कांमय एक उग्गा नी निसेउ ९ एक प्रभात
 पोउअद्दु १०^१ एवं दम उरति उचरएण पटिकेहन कीपी गुंउ उगइ इमइ गगइ राइउ पटिकमनं
 कीउइ । अथवाइचरि जेतीपार बालमापना की न मकिपइं जेतीपार 'आरयणि पदमपदरं' इमा २०
 मगनराउउ राउइ इदिमा पदामीम देवगित पटिकमनं कीउइ । इगं भनिं मूयोदय आरंभी की
 इदिमा पदर इउम सीम राइउ पटिकमनं कृत्तिकथन मगइ अनुमारि की कीउइ । इयपदापरिदांत
 मगइ अनुमारि पुरिमदं जाय भनियं च । पूरांउं सीम विदुं पदरं सीम राइउ पटिकमनं कीउइ । इसी
 परि उग्गापावण्यं जाली की वेनाइं ति पटिकमनं करेकं न पुनि जेतीपार परिवारिउं जेतीदी
 वार पटिकमनं करेकं ।

15

§322) अथ मामाइक पागइ पटिकमनं कीउइ नही, इमि कारिणि पटिकं मागाइककरण
 शिनि शिनिइइ । पाठिउउ पदरि दिवम मगइ वगति सुदुंती पाटला पटिकेहन कीपी हंती सुदुंती
 गउला ले की पमंभापायं आगइ, अथवा' थापनापायं आगइ आवी पाइभूमि सुदुंती साउं त्रिन्दिवार
 शिवदानपूयं पटिकेदी की सुदुंती सुदवारि दे की हाय जोडी की त्रिन्दिवार पटिकेदिय गूमि पाटलउ
 प्साशंभं मूंदी की, इच्छामीयारि भणी एक मगामणु दे 'मामाइक सुदुपणियं पटिकेदिय' इसं कदी ३०
 मगमणु दे की' क्कां जोइ 'इच्छाति मगामणो' भणी मगामणु दे की कभरं थिकउ वेदिका
 दे कानु की सुदुंती पटिकेदी एक मगामणु 'मामाइयं संदिमावेमि' इगं भणी कीय मगामणु
 माइयं टावनि' इगं भणी मगइ मगामणु दे अदांवनमणु हंतउ त्रिन्दि नगरकार की त्रिन्दिवार

25

§321) 1 B. omits between १-१०. 2 B. omits मगामणु
 3 B. काइ । §322) 1 B. omits. 2 B. omits मगामणु

(३९) करेमि भंते सामाह्यं सावज्जं जोगं पचक्खामि । जाव नियमं पज्जु-
चासेमि । दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते !
पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि, अप्पाणं चोसिरामि ।

इसउं सामाहकसूत्रु त्रिन्दिवार कइइ गुरुवचन तणी अनुभापणा करतउ हूंतउ सामाहकाऽऽरोपविधि
5 प्रस्तावि नंदि सिद्धांत माहि त्रिन्दि नमस्कारभणनपूर्वकु सामाहकदंडक रहइ भणनभणनइतउ पाछइ
इरियावही पडिकमियइ । आवश्यकचूर्णिगवृत्ति माहि इम भणिउं छइ । यथा 'करेमि भंते सामाह्यं
सावज्जं जोगं पचक्खामि जाव नियमं दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स
भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं चोसिरामि' । जाव साहू वा पज्जुचासेमि त्ति काऊण पच्छा
इरियावहियं पडिक्कमइ । तउ पाछइ विस्तरइतउ द्वादशापत्तु वंदनकु दे करी प्रत्याख्यानु कीजइ । संक्षेपिहिं
10 तउ क्षमाश्रमणवंदनापूर्वकु प्रत्याख्यानु कीजइ । तउ पाछइ एक खमासमणि 'सज्झायं संदिसावेमि' कही
वीय खमासमणि 'सज्झायं करेमि' कही तइय खमासमणदानपूर्वक आठ नमस्कार कही पाछइ एक
खमासमणि 'कटासणं संदिसावेमि' कही वीय खमासमणि 'कटासणं पडिगाहेमि' कही तइय खमासमणि
'पांगुरणउं संदिसावेमि' कही चउत्थ खमासमणि 'पांगुरणउं पडिगाहेमि' कही करी वइसइ । एतलइ
संख्यासामाहककरणविधि हूयउ ।

15 § 323) संथारइ पुणि इरियावही पडिक्कमी पाछइ पहिलउं 'कटासणं संदिसावेमि' कहियइ ।
'कटासणउं पडिगाहेमि' कहियइ । पाछइ 'सज्झायं संदिसावेमि' कहियइ । 'सज्झायं पडिगाहेमि' कहियइ ।
आठ नमस्कार कही पाछइ 'पांगुरणं संदिसावेमि' कहियइ । 'पांगुरणं पडिगाहेमि' कहियइ । पाछइ शक्रस्तु
कहियइ । नोद्रे माहि भोजनकरण खीसमालिगनादिक हूयां, हुयइं, जि कुस्मप; तथा अरिनगरभंगकरण
मारणादिक जि हूयां, हुयइं, दुस्मप तीहं रहइं विशुद्धिनिमित्तु काउस्सग्गु कीजइ । लोगसमुज्जोयगरे चत्तारि
20 काउसग्गि चीतवियइं । पारियइ हूंतइ 'लोगसमुज्जोयगरे' भणियइ; इसउं न भणियूं । पडिक्कमणउं प्रायश्चित्त-
विसुद्धिकारणिहिं कीजिसिइ पाछइ बली काउस्सग्गु किसइ कारणि कीजइ ? जिम दिवस पडिक्कमणइ
कीवेइं छेहि प्रायश्चित्तविसुद्धिनिमित्तु काउस्सग्गु विसुद्धिविशेषकारणि कीजइ, तिम प्रभातिहिं दोपु को नहीं।

§ 324) अथ सामाहकफलसंज्ञक सिद्धांतालापकु लिखियइं ।

'सामाहएणं भंते ! किं जणइ ?'

25 'गोयमा ! सामाहएणं सावज्जजोगविरइं जणइ ।'

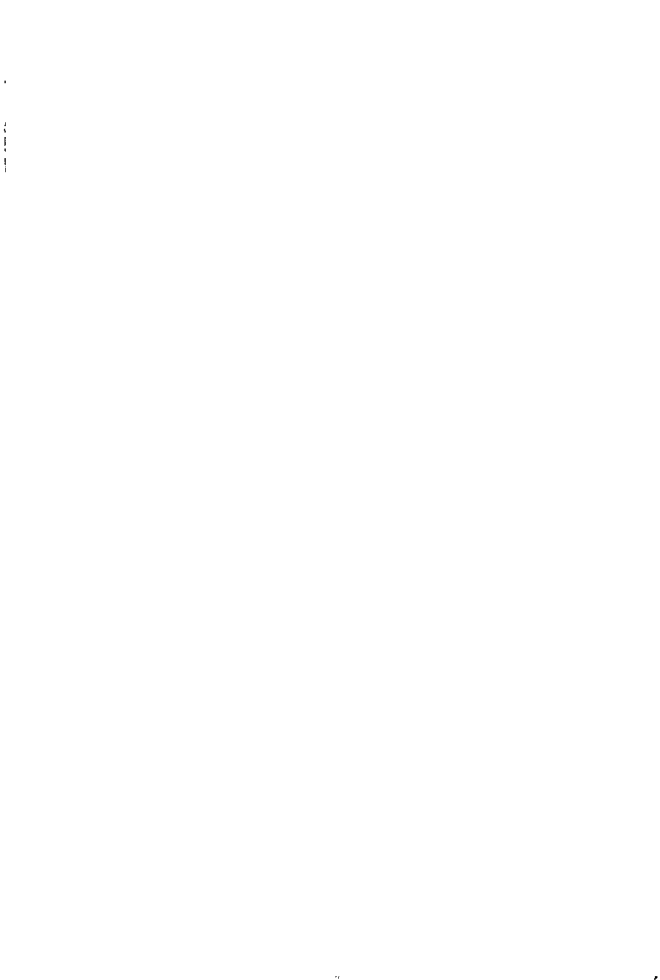
§ 325) अथ प्रस्तावइतउ पोसहविधि लिखियइ । पोपधं पर्वानुष्ठानमेवेति पूर्वश्रुतधरवचनानु-
सारि करी अष्टमी चतुर्दशी पूर्णिमाऽभावास्यापर्युपणादि पर्वदिवसही जि पोसहु सामाहकसहितु करेवउं ।
तथा च स्वयमहांगवृत्ति माहि कहिउं-

चाउइमहमुदिह पुत्रिमासिणीसु पडिपुन्नं ।

30 पोसहं सम्मं अणुपालेमाणो विहरिस्सामि ॥

[३४७]

ति सूत्रं । तेह नी श्रुति पुणि-चतुर्दश्यष्टम्यादिपु तिथिपु, उद्विष्टसु महाकल्याणिकसंबंधि
विरख्यातासु, तथा पूर्णमासीपु चतसृथथि, चतुर्मासक पर्युपणातिथिप्यित्यर्थः । तथा आवश्यकवृत्ति म
पुणि कहिउं-इह पोपधशब्दो रूढ्या पर्वसु वर्त्तते । पर्वणि चाष्टम्यादितिथयः । तथा प्रतिदिवसाउं
सामाह्य-देशयकाशिक । पोपधोपवासाऽतिथिसंविभागी तु न प्रतिनियतदिवसानुष्ठेयौ-न प्रतिदिव



बहुवेले संदिसावेमि' भणी धीय खमासमणि 'भगवन् ! बहुवेले करेमि' इसउं भणइ, तइय खमासमणि 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्जायं संदिसावेमि' भणी चउत्थ खमासमणि 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! 'सज्जायं करेमि' इसउं भणी पंचम खमासमणि 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! यइसणउं संदिसावेमि' भणी छट्ठ खमासमणि 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! यइसणउं टापमि' इसउं भणइ । तउ १ पाछइ उपधानतप तणउं द्वादशावर्त्त वांणणउं दे करी घइसी करी मुहुंती मुखि दे करी मधुरस्वरि स्वाध्यायु करइ, मनु अर्थि धरइ । पउण पहर पडिलेहणाइ अणुठाणु सगळ्ळं साधु जिम करइं जां पोसहु तां सीम । इति संक्षेपिहिं पोसहविधि लिखिउ । विस्तरइतउ श्रीनिजवल्हभसूरि विरचित पोसहविधिप्रकरणइतउ पोसहरीति जाणित्री । भणियं पसंगागयं ।

§ 326) अह अहिगयमेव लिहिज्जइ-

- 10 जिण मुणिवंदण अइयारुस्सग्गो पुत्ति वंदणा लोए ।
सुचं वंदण खामण वंदण तिन्ने व उस्सग्गा ॥ [३४८]
चरणे दंसणनाणे उज्जोपा दुत्ति इक्कइको य ।
सुय देवया दुसग्गा पुत्ती वंदण ति थुइथुत्तं ॥ [३४९]
- सामाइक करणानंतरुं 'जय तिहुयण' नमस्कार कही पाछइ-
- 15 जय महायस जय महाभाग, जय चितियसुहफल्य ।
जय समत्थपरमत्थजाणय/जय जय गुरु गरिमगुरु ॥ [३५०]
जय दुहत्थसत्ताण ताणय/धंभणयट्टिय पासजिण-।
भवियहं भीमभनुत्थुभउ/अवणितहउणंतगुण +
तुज्ज तिसंघु नमुत्थु ॥ [३५१]
- 20 जयजयवंतु था हे महायस-महांतु त्रिभुवनव्यापकु यमु पराक्रमसंभूतगुणोत्कीर्त्तनारूपु पौरुषु जेह रहइं हुयइ सु महायसा, तेह रहइं संबोधनु हे महायस । पुनरपि संबोधनु हे महाभाग-महांतु त्रिजगजंतुप्रधानु भागु पुणु जेह रहइं हुयइ सु महाभाग, तेह संबोधनु हे महाभाग, जयजयवंतु था । पुनरपि संबोधनु चितियसुहफल्यमनोवांछित फलदायक जयजयवंतु था । पुनरपि संबोधनु समत्थपरमत्थजाणय सर्वपरमार्थ-ज्ञापक सर्वविश्वजीवाजीवादितत्त्वबोधक जयजयवंतु था । पुनरपि संबोधनु जय जयगुरु जगद्गुरो, हे जगत्त्वो-
- 25 पदेशक जगज्जनक था गरिमगुरु महिममहांतु जयजयवंतु था । पुनरपि संबोधनु दुहत्थसत्ताण ताणय-दुहत्थ फट्टि वर्त्तमान छइं सत्ता प्राणिया जीव तीहं रहइं हे ताणय त्राणद शरणदायक जयजयवंतु था । सु कउणु जेह तणां पूर्वभणित जयमहायसादिक संबोधन इत्याह । हे धंभणयट्टियपासजिण स्वप्नकस्थित पार्श्वजिन त्रयोविंशतितम तीर्थनाथ । तउं पुणि किसउ छइ मीसु रौदु सांभलीतू हूंतउ महोद्गावभावकारु छइ भवु संसार तेह हूंतउं ऊठिउ सु भीमभनुत्थु कहियइ सु कउणु भउ त्रासु तेह रहइं तउं अपनेतां
- 30 फेट्ठणहारु भउ 'अवणितहउणंतगुणइ' इति पाठे एउ अर्थु । अवणितह इति पाठे अपनेतुः स्फेट्ठकस्स तुज्ज तव इसउ संबंधु करियउ । कउणु रहइं भवियहं भविकहं रहइं । पुनरपि संबोधनु हे अणंतगुण-अनंतज्ञान-दर्शनसम्यक्त्ववीर्यानंदरूप गुण जेह रहइं छइं सु अनंतगुणु तेह रहइं संबोधनु हे अनंतगुण । तुस व रहइं तिसंघु तिहुं-संघ्या प्रभाति मध्याह्नि संघ्या समइ नमुत्थु नमोऽस्तु नमस्कार हुउ' । इसउ अर्थु मन भाहि चीतयतां जयमहायस पटी पाछइ शकस्तवु कही संपूर्ण देववंदना कीजइ । तउ पाछइ जि के मुनि
- 35 पट्टिकमावता हुयइं ति सव्वे वांदियइं । अनुक्रमि थायक पुणि वांदियइं । तउ पाछइ एक खमासमणि

आचार्यमिश्र वांदियई । वीथ खमासमणि उपाध्यायमिश्र वांदियई । तइय^३ खमासमणि भगवंत वर्तमानगुर
वांदियई । चउव खमासमणि सर्वसाधु वांदियई । इसी परि चतुरादि खमासमण दे करी गोडिहिलियां
होई माधउं भुईं लगाडी मुहुंती मुदि दीधी हुंती हाये जोडिण 'सव्वस्स वि देवसिय' इत्यादि कहियइ । छेहि
'इच्छाकारेण संदिसइ' इसउं पदु न कहियई । तस्स मिच्छामि दुक्कउं कही करी ऊमां याई 'करेमि भंते'
इत्यादि आलोयणउं 'तस्सुत्तरी' इत्यादि कही काउस्सग्गु कीजइ । काउस्सग्गु माहि आजूणां चउं पइर 5
दिवस माहि जि के जीव विराधिया । एकंद्रिय वेईंद्रिय त्रैंद्रिय चउरिंद्रिय पंचेंद्रिय पृथिवीकाय अप्पाय
तेउकाय वाउकाय यत्तत्तिकाय त्रसकाय । ज्ञानदर्शनचारित्र प्रति आशातना कीयी । क्रोलु मानु माया
लोभु रागु द्वेषु मदु मत्सरु अहंकारु कीधउ । प्राणतिपातविरति मृषावादविरति अदत्तादानविरति मैथुनविरति
परिग्रहपरिमाण रात्रिभोजनविरतिव्रत अतीचारु अणाविउ हुयइ । पनरह कर्मादान आसेवना कीधी हुयइ ।
अप्पयुई परानंदा करी जु कांई कम्मं बाधउं, अनेरुं जु कांई पापु कीधउं कराविउं अनुमनिउं सांभइ न सांभइ 10
तेऊ सगळ्ळं आलोयणा माहि आलोइसु इत्यादिकु दिवसछुतु रात्रिकुतु वा अतीचारु चीतवियइ । नपुकारि करी
काउस्सग्गु पारी करी 'लोगस्सुज्जोयगरे' कही संढासा पहिलेही बइसी ऊमइ^४ थिकं मुहुंती पहिलेही सरीरु
पहिलेही वि वानणां दीजइ । आलोयणउं करी 'सव्वस्स वि देवसिय' इत्यादि 'ठाणे कमणे चंकमणे आउत्ते
अणाउत्ते हरियक्कायसंघट्टे वीथकायसंघट्टे धावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे ठाणाओ ठाणं संकाभिया' इति वा
पोसइ पहिकमणइ कही करी पाछइ 'सव्वस्स वि' इत्यादि कही, गुरुसउं पढिकमतां हुंता गुरि 'पढिकमइ' 15
इसइ कयनि कहिइ हुंतेह स्वापनाचार्य आगइ पढिकमतां गुरु 'पढिकमइ' इसउं कयलु कहइ छइ ।
इसउं मन माहि चिंतवी इच्छं 'तस्स मिच्छामि दुक्कउं' भणी संढासा पहिलेही पाउंछणउं पाटलउ
मुइं पहिलेही वइसी करी मुहवारि मुहुंती दे करी हाये जोडिण सावधानु चित्तु करी पढिकमणा
सुइ तणउ अर्थु मन माहि चिंतवतां मधुरस्वरि सुत्तु गुणियइ । पाछइ मुइं पहिलेही ऊमां होई
हाथ जोडी 'अठ्ठमुट्ठिओमि आराहणाए' इत्यादि पढी वि वानणां दे खामणउं कीजइ । पाछइ अडिया-20
वण निमित्तु किसउ अर्थु आपगपउं गुरु परंतवु करिवा निमित्तु वि वानणां दे करी 'सद्धो गाहा तिगं
पढइ' इसा प्रतिकमणसामाचारी वचनइतउ । श्रावकश्राविका

आपरिय उवज्जाए सीसे साहम्मिए कुलगणे य ।

जे मे केइ कसाया सव्वे तिविहेण खामेमि ॥

[३५२]

सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलिं करिय सीसे ।

25

सव्व खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयं^५ पि ॥

[३५३]

सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मनिहियनियचिचो ।

सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्सं अहयं^६ पि^७ ॥

[३५४]

ए त्रिंदिहाह पडइं । प्रस्तावइतउ ईह नउ अर्थु पुणि लिखियइ । ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्रा-
चार तपशाचार वीर्याचाररूप पांच आचार जि पाळइं ति आचार्य । द्वादशांगपाठक उपाध्याय । 30
जिणि जि धम्मं सीखवियां ति तेह तणा शिष्य । सम्यक्त्वमूलद्वादशव्रत प्रतिपालक समधम्मं साधर्मिक
एक गणधर तणउ शिष्यसमुदाउ परस्वर सापेह्लु सांभोगिकु कुट्टु । त्रिंदिहाह गणधर तणउ शिष्यसमुदाउ परस्वर-
सापेह्लु सांभोगिकु गणु । तउ पाछइ आचार्यविपइ उपाध्यायविपइ शिष्यविपइ साधर्मिकविपइ कुट्टविपइ

§326) 3 Bh. has instead तउ पाळइ एक । 4 B. Bh. उट्टु । cf. 322.3 5 Bh. अहिं ।
6 Bh. omits this verse. 7 B. सिचवित्तया ।

गगविपद् जि के मूं रहइं कसाय क्रोध मान माया लोभ रूप दियस माहि अथवा राति माहि एकत्र-
याससंबंधादिकहं कारणहं करी हूया ति कसाय सबवे सगलाई तिविहेण मनि वचनि काइ करी खामेमि
खमावउं । किसउ अर्थु ? जीहं सउं मूं रहइं कसाय हूया तीहं रहइं जउ मूं सउं कसाय हूया हुयइं तउ
हउं तीहं रहइं खमावउं आपणवा ऊपरि कसाय तीहं तणा उपसमावउं^१ हउं । पुणि तीहं विपइया कसाय
5 आपणवा मन माहि हूता उपसमावउं इसउ अर्थु खामेमि तणउ परमार्यवृत्ति करी जाणिवउ । विशेषइतउ
सर्वही सउं खामणउं करी न सकियइं । विशेषहं रहइं अनंतत्वइतउ । इणि कारणि सर्वसंप्रहनिमित्तु
सामान्यहिं खामणउं करइ ।

§327) सब्वस समणसंघस्सेति । सगलांइं पनरह कम्मभूमिगत भगवंत श्रमणसंघ रहइं जु
कांइं मइं अबहेलादि भावि करी अपराधस्थानु कीघउं सु सगळं 'अंजलि करिय' सीसे माथइ हाय
10 पढावी अंजलि करी 'रमावइत्ता' खमावी करी हउं पुणि खमउं ।

§328) तथा सब्वस जीवरासिस्सेति । जि पूर्वहिं इरियावही प्रस्तावि भगिया ति सगलाई
जीव तीहं तणउ राशि समुह । तेह रहइं भावइतउ आपणा श्रदानइतउ धम्मनिहियचिचो इति दयामूल-
धम्मंविपद् निक्षिप्त निजमनु हूंतउ सगळं अपराधस्थानु खमावी करी हउं पुणि खमउं । ति जीव मूं ऊपरि
रमउं कसाय न करउं । हउं पुणि तीहं ऊपरि खमउं कसाय न करउं हउं पुणि तीहं ऊपरि खमउं
15 कसाय नही करउं इसउ अर्थु ।

§329) इसउं गाथार्थु मनि चीतयतां गाथा पढी करी करेमि भेते आलयणउं तस्सुत्तरीत्यादि
क्रमि पारिप्रातिचार दर्शनातिचार शानातिचार विशुद्धिनिमित्तु काउस्समा त्रिन्दि कीजइं । पहिलइ काउ-
स्सगि वि लोगस्सुज्जोयगरे, बीजइ एक, श्रीजइ एक लोगस्सुज्जोयगरे चीतवियइं । पहिलइ काउस्सगि
पारियइ लोगस्सुज्जोयगरे, बीजइ पुक्खरखरदीयड्डे, श्रीजइ सिद्धाणं सुद्धाणं कहियइ । छेदि सुयदेवयाप
20 आराधनार्थ करेमि काउस्सगं इत्यादि भणी काउस्सगु कीजइ । नमस्कार चीतवियइ^१ । भुतदेवता स्तुति
कही पारियइ । पाछइ क्षेत्रदेवतानिमित्तं करेमि काउस्सगं इत्यादि भणी काउस्सगु कीजइ । नमस्कार
चीतवियइ । क्षेत्रदेवतास्तुति कही पारियइ । पंचपरमेष्ठि नमस्कार एक कही यइसी मुहुंती पडिलेही
मंगलादिकारणि वि धानणां दीजइं । 'इच्छामो अणुसद्धिं' इसउं कहियइ । एह नउ किसउ अर्थु ? अनुसुट्टि
शिभा इच्छामो किसउ अर्थु यांछउं । गोविहिलियां होइ नमोऽहंत् सिद्धेत्यादि कही एक धुई 'जउ गुरे'
25 कही हुई । पाहीदिनि जु^२ त्रिन्दि मुई कही हुई तउ पाछइ संसारदावेत्यादि^३ स्तुति त्रिन्दि । नमोऽणु
यदंमानापेत्यादि त्रिन्दि स्तुति^४ यदंमानच्छंदोविरचिन खरखरि उचैः खरि करी कहियइ । पाछइ एक
खनाममणु दे करी कहइ । इच्छाकारेण संदिसइ भगवन् स्तोत्र भणउं । कीजा खमासमणु दे करी भणइ
इच्छाकारेण संदिसइ भगवन् स्तोत्रु सोमलह, गुरि 'भणउ' 'सोमलउ' इसइ भणिइ हूंतइ पाछइ एक भारउ
भारमारु मधुरखरि मज्जुतगुनगर्भित्तु बीनराम खवन महंतु कहइ । कीजा गोविहिलियां पिक्का हाय
30 सोदीर गावपान पिक्का सोमलउं । सोपानंतरु एक खमासमणु दे आचारमिअ धांदियइं । कीजउं खमास-
मणु दे करी उपाप्पापमिअ धांदियइं । तइ खमासमणु दे करी सर्वसाधु धांदियइं एतलइ देवसि
परिक्कमणु संणुणुं हुपउं ।

§326) १ B. वनमवउं । §327) 1 B. अंजलि करी । §328) 1 B. ऊपरि । §329) 1 B.
२-३-४ । 2 B. हुई । 3 B. तउ । 4 B. add. वा । 5 B. स्तुति त्रिन्दि ।

§ 330) आरंभि देव वांदांतां आंतरणी न हुयइं । “सव्वस्स वि” कथनांतरु जां ‘इच्छामो अणुसहिं’ न कहियइं तां आंतरणी हुइं । पाछइ न हुइं । कुणइ “पच्छित्तउरसग्गं” इति श्री जिनयह्म-सूरी विरचित प्रतिक्रमणसमाचारी प्रकरणवचनात् । ग्यमासमणदाणपूर्वकु ‘इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । देवसिय पायच्छित्तविमुद्धिमिचितं करेमि काउरसगं’ इसउं भणियइ । गुरि ‘करउ’ इसइ भणियइ हंतइ ‘इच्छं अन्नत्थूससिएणं’ इत्यादि भणी काउरसग्गु कीजइ । लोगस्सुज्जोगरे चत्तारि चीतवियइ । पारियइ 5 हंतइ लोगस्सुज्जोगरे भणियइ ।

§ 331) अत्र सिद्धांतालापको यथा-

काउरसग्गोणं भंते ! जीवे किं जणइ ?

गोयमा ! काउरसग्गोणं तीयपडिप्पुन्न पायच्छित्ते विसोहेइ, विमुद्धपायच्छित्ते जीवे निब्बुयहियए ओहरियभरुव्व भारवहे पसत्थज्ञाणोवगए सुहं सुहेणं विहरइ । 10 इति वज्जराध्यनसिद्धांत तृतीयाध्ययनमणइतउ पुणि काउरसग्गु कीजइ ।

§ 332) तथा गीतार्थोचीर्णता करी क्षुद्रोपद्रव ओहडावणत्थु काउरसग्गु पुणि कीजइ । एक खमासमणि ‘इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! क्षुद्रोपद्रव ओहडावणत्थं करेमि काउरसग्गं’ इसउं भणी, गुरि ‘करउ’ इसइ कहइ हंतइ ‘इच्छं अन्नत्थूससिएणं’ इत्यादि भणी काउरसग्गु कीजइ । लोगस्सुज्जोगरे चत्तारि चीतवियइ । पारियइ हंतइ लोगस्सुज्जोगरे भणियइ पाछइ गोडिहिलियां होइ त्रिद्धि पंचपरमेत्ति 15 नमस्कार कही श्रीलंभनक श्रीपार्थनाथ देव नमस्कार कही शकस्तपु भणी जावंति चेइयाइ इत्यादि कही खमासमणु दे, जावंति केइ साहू इत्यादि कही नमोऽहंरिसद्वेत्यादि कथनपूर्वकु श्रीपार्थनाथ लघुस्तपु भणी जयवीररायेत्यादि कहियइ । पाछइ मायउं भुइं लगाडी मुहि सुहंती दे करी-

सिरियंमणयट्टिय पाससामिणो सेसतित्यसामीणं ।

तित्यसमुच्चइ कारण सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥

एसिमहं सरणत्थं काउरसग्गं करेमि सचीए ।

भत्तीए गुणसुद्धिय संयस्स तत्तुवइ निमित्तं ॥

एउ गाथाजुगलु कहियइ ।

[३५५] 20

[३५६]

§ 333) ईहं गाथा नउ अर्थे यथा-श्रीलंभनक श्रीपार्थनाथमी रहइं स्मरणा आराधना तेह निमित्तु । ‘तया’ ‘सेसतित्यसामीणं’ ति । ‘ज्ञेप’ याकर्तां जि केइ श्रीअष्टापत् श्रीसंमेशिखरि श्रीशत्रुंजय श्रीउज्जयंतगिरि 25 प्रमुख महातीर्थं ति सेसतित्य कहियइं । तीहं तणां स्वामी तीर्थंकर श्रीरूपभनाथादिक श्रीवर्द्धमानायसान चतुर्विंशति जिनवरेंद्र, तथा श्रीरूपभ श्रीमहावीर श्रीवासुपूज्य श्रीनेमिनाथवर्जित श्रीअजितस्वामी मुख्य श्रीपार्थनाथायसान विंशति जिननायक, श्रीआदिनाथ श्रीनेमिनाथ प्रमुख तीर्थनाथ तीहं सबहीं स्मरणार्थु आराधनाथु, तथा श्रीमहावीर देवाधिदेव तणउ संपु तीर्थु कहियइ । तेह रहइं समुन्नति अभ्युदउ तेह रहइं कारण निमित्त जि सुरसौधर्मैद्रादिक असुरधरणैद्रादिक तीहं सगलाई स्मरणार्थु स्मृतिगोचरि आणिया 30 निमित्तु तथा गुण ज्ञान-दर्शन-चारित्रादिक तीहं करी मुखियु समाधानि वचंमातु लु संपु तेह रहइं समुन्नतिनिमित्तु अभ्युदय तणइ कारण । करेमि काउरसग्गं सचीए भत्तीए-शक्ति तणइ अनुसारी भक्ति करी न पुणि बलात्कारि, काउरसग्गु करउं । इति गाथाजुगलुकार्यः ।

§ 334) 'वंदणवत्तियाए पूयणवत्तियाए' इत्यादि भणी करी काउस्सग्गु कीजइ । लोगस्सुज्जोगरे चत्तारि चीतवियइं । पारियइ हूंतइ लोगस्सुज्जोगरे भणियइ । इति श्रीअभयदेवसूरी प्रकाशित श्रीसंभन-कपार्धनाथ नमस्कार शकस्तव कायोत्सर्गकरण समाचारी श्रीअभयदेवसूरिगच्छाप्रायवसइतउ प्रवर्तइ । जय तिहुयण नमस्कार भणनपूर्वे प्रतिक्रमग प्रारंभग समाचारी च । तथा उत्तरापथि श्रीजिनदत्तसूरी समाराधन-
5 निमित्तु काउस्सग्गु पुणि खरतरगच्छ¹ समाचारीतउ कीजइ । इति दिवसप्रतिक्रमग-समाचारी संपूर्णा ।

§ 335) अथ रात्रिप्रतिक्रमणविधि लिखियइ-

एयं ता देसियं राइयमवि एयमेव नवरि तर्हि ।
पढमं दाउं मिच्छामि दुक्कडं पढइ सकथयं ॥ [३५७]
उट्ठिय करेइ विहिणा उस्सग्गं चितए य उज्जोयं ।
10 वीयं दंसणसुद्धीइ चितए तत्थवि तमेव ॥ [३५८]
तइए निसाअइयार जहक्कमं चित्तिऊण पारेइ ।
सिद्धत्थयं पढित्ता पमज्जसंडासमुवविसइ ॥ [३५९]
पुब्बं व पुत्ति पहेणवंदणमालोय सुत्तपढणं च ।
वंदणस्वामण वंदणगाहा तिगपढण उस्सग्गो ॥ [३६०]
15 तत्थ य चितइ संजमजोगाण न जेण होइ मे हाणी ।
तं पडिबज्जामि तयं छम्मासं ता न काउ मलं ॥ [३६१]
एगाइ इगुणतीक्ष्णयं पि न सहो न पंचमासमवि ।
एवं चउ तिहुमासे न समत्थो एगमासं पि ॥ [३६२]
जातं पि तेरुष्णं चउतीसइ भाइ तो दुहाणीए ।
20 जाव चउत्थं तो आयंबिलाइ जा पोरिसि नमो वा ॥ [३६३]
जं सकइ तं हियए धरिचु पारिचु पेहए पुत्ति ।
दाउं वंदणमसढो तं चिय पच्चक्खए विहिणा ॥ [३६४]
इच्छामो अणुसट्ठित्ति भणिय उवविसिय पढइ तिन्नि थुई ।
मिउसदेणं सकत्थयाइ तो चेइए वंदे ॥ [३६५]
25 एयं ता देवसियमिति ।

इमी परि पूर्वभणित परि देवसिउ पडिकमणउं कहिउं । राइयमवि एयमेवेति । राइउ पडिकमणउं एयमेव-इसीही जि परि जाणिवउं ।

§ 336) 'न वरि तर्हि' ति नवरं केवलं तिणि राइइ पडिकमणइ जु विरोपु सु कहियइ ।

तत्रलोहगोलक्रममान असंज्ञत जन तथा जीवहिंसाकारक गिलोईप्रमुख जीव जिम जागइ नहीं
3) तिनि कारनि मिउसदेणं ति श्रुदुवादि करी जिम आपणवा हूंतउ वीजउ को सांभलइ नहीं तिमइ स्वरि करी देववंदना सीम । किमउ अर्थुं ? छेइ सीम पडिकमणउं करेवउं । तत्र पूर्वभणित सामाइकशकस्तव-
दुम्यत्रादि प्रायश्चित्तविशुद्धिनिमित्त कायोत्सर्गकरणानंतरु पडिकमणा¹ ठाइवा समइ हूयइ हूंतइ जि केई

§ 334) 1 Bh.-गच्छ । § 335) 1 Bh. adds पुनि । § 336) 1 Bh.-जइ ।

[337-339). ३६५]

पदस्यमुनि सापरिमितं ह्ययं वि सर्वैश्च वादी कृती एकं स्वनाममनि आचार्यमित्र वांदिपदं । वीथ गमास-
मनि वनाध्यायमित्र वांदिपदं । तदयं रमासमनि' भगवंतं वनेमानधर्मगुरु वांदिपदं । चउपद रमासमनि
सर्वसाधु वांदिपदं । पाछट गोडिदिलियां होई सुहुंती सुद्वारि दे कृती मायउं सुई लनाडी कृती 'सलस
वि राइय' इत्यादि कहियइ । ऐदि 'इच्छाकारेण संदिसइ' इमउं पदु न कहियइ' । तस्म निरछामि दुबटं ।
करेमि भंते आलोचनउं तथा तस्मुत्तरीत्यादि कृती कृती पारिव्रातिचार' विमुद्धिनिमित्तु काउसमगु 5
कीजइ । लोगसमुजोगरे एक चीनवियइ । चंदेसु निगमलयए सीम इमी परि छनेरे काउसममि लोगसु-
जोगरे पंचवीम ऊमान पतीदी ति कळ चीनवेरी पारियइ हुंनद लोगसुजोगरे संपूर्णं स्तियइ ।

[337) पाछट सबरलोए खरहंत-चेइयांन इत्यादि कृती दशानातिचार विमुद्धिनिमित्तु वीउउ
काउसमगु कीजइ । लोगसम उजोगरे चीनवीयइ । पारियइ हुंनद पुनरखदीरुट्टे कहियइ' सुयस
भगवओ करेमि काउसमगं चंदणरनियाए इत्यादि कृती शानानिचारविमुद्धिनिमित्तु' वीउउ काउसमगु 10
कीजइ । रात्रिगु धृतिचारु चीनवियइ । इहां शिष्यु पृच्छा करइ, दिवस तनइ पठिकमगइ तिम पहिलउं
काउसमा माहि अतीचारु चीनवियइ, निम रात्रि पठिकमगइ पुनि हिसइ फारनि पहिलउं अतीचारु न
चीनवियइ ? गुरु भगइ, निद्रापूर्तिगमादिकु चित्तसमाधानु तथा सरीरालम्बभाषु तिम न होइ तिमि कारनि
वीउइ काउसममि अतीचारु चीनवियइ । पाछट सिदानं सुदानं कृती कृती संदासा पहिलेहन कृती
पहसी ऊमइ' थिकां सुहुंती पडिलेही सरीरु पडिलेही द्वादशावर्त वांदणउं दे कृती आलोचनउं कीजइ 115
पोसहि कीयइ संघारा उब्यट्टण किइं, परियट्टण किइं, आउंउण किइं, प्रसारण किइं, छणइया संपट्टण
किइं, अषकसुविसइ पाई किइं, इमउं कहियइ ।

[338) एह नउ अयुं संसारकोउपेना छला । किमउ अयुं ? वाम पाथंइउउ दक्षिणार्थि
फिरिउं अथवा दक्षिणार्थंइउउ वामपार्थि फिरिउं, तत्र ति के जीव मल्लुग मुकह्लारिक विरुधिया
हुयइं तींइ नइं कारणि संघारा उब्यट्टणरिक् आलोइयइं । एयं परियट्टण किइं परिवर्तनां वारवार 20
उभयपार्थंइ फिरणु तिउउं । आउंउण किइं आहुंयना छला निद्रा माहि पगारिया अंग तनी मंछोचना
कीपी । पसारण किइं प्रसारण छला संकोचिन अंग तनी निद्रा माहि पगारिया कीपी । छणइया संपट्टण
किइं पदपरिका संपट्टणा छला, जू तनी परिमरंन कीपी । अषकसुवियइ काई किइं दृष्टिदंन तनइ
अभावि वाइया लहुडी वडी नीति कीपी । पाछट 'सउरसम वि' कृती, वरमी सुयायुं मनि चीनरनां
हुंतां गधुरस्सि निउकळणायुत पारणा करिया पठिकमगामुणु गुनियइ । 'वसम पम्मस केवकीपमल्लम' 25
इउउं पदु भावकमतिव्रमगप्राप्ति आस्राप तना अभायइउउ वेईं एकि पडइं नहीं । केइ एकि पुनि पडइं ।
तथापि 'अम्युद्धिओमि आरहणाए विरजोमि विराहणाए' एउ पदु जुगुउ सीती ति संघेयिउं एउ, तिमि
कारनि मनि वरंमामु जानियउं । अम्युद्धिओमि भगनांगरु वि वानंनं दे कृती वसमगउं कीजइ । वसमनां-
वरु अहिनायननिमित्तु आरुणना राइं गुरु परंप्रताभयननिमित्तु वि वानंनं दे कृती वसमगउं कीजइ । पाछट 'आकरिय
उवस्याए' इत्यादि त्रिदिं माया 'करेमि भंते आलोचनउं तस्मुत्तरीत्यादि वडी काउसमगु वीउउ । 30

[339) छमासितु पीतवियइ दया-भगवंतं भीमहावीरदेव तनइ तीर्थिं छमाम उवपु तउ
वसंइ । दे जीव ! कृती सखइ ! 'अत न माहुं । 'एक दिपति कृती उला कृती सखइ ? 'न माहुं ।

[336) 1 B. drops words from अकरंनिय... 2 B. adds एउ अने दुवं करिण । 3 B. B.
3 B. B. कृती वरमी 4 [337) 1 B. drops words from एउ... 2 B. कृती वरमी 3 B. B.
कृती । cf. 322. 3, 326. 4 [338) 1 B. omits.

एवं त्रिं उणां त्रिं उणा इसी परि एक उणां तां पूछियइं जा इगुणत्रीसे दिवसे उणा छ मास हुयइं । पाछइ' पांच मास करी मरुइ, इसी परि जीय कन्हा पूछियइ । अत न मरुं । पुनरपि एक एक दिवसि उणा पांच माम तां पूछियइं जां इगुणत्रीसे दिवसे उणा पांच मास हुयइं । पाछइ चियारि मास करी मरुइ इमी परि पूछियइ पूर्ववत् जां इगुणत्रीसे दिवसे उणा चियारि मास हुयइं । पाछइ त्रिन्दि मास करी मरुइ इसी परि पूछियइ' पूर्ववत् जां इगुणत्रीसे दिवसे' उणा त्रिन्दि मास हुयइं । पाछइ वि मास करी मरुइ इमी परि पूछियइ एक एक दिवसि उणा तां जां इगुणत्रीसे दिवसे उणा वि मास हुयइं । पाछइ एक मासु करी मरुइ इसी परि पूछियइ तां एक एक दिवसि घटावीतइ पूछियइ जां तेरहे दिवसे उणात एक मासु हुयइ । पाछइ एक दिवसि हाणि कीथी हूँती शेष सोल दिवस हुयइं तीहं तणउ तपु चउत्रीमसु हुयइ । तउ पाछइ चउत्रीमसु करी मरुइ इसउं पूछियइ । अत न मरुं । तउ पाछइ वि 10 वि घटावतां घत्रीमम ग्रीसम अट्टावीसम छवीसम चउवीसम यावीसम वीसम अष्टादशम षोडशम पतुदंशम द्वादशम अष्टम पट्टसीम तां पूछियइ जां चतुर्थुं । तउ पाछइ आंविळु एकासणउं पुरिम निविय पोरिसि मीम तां पूछियइ जां नवकारसहितु । पाछइ जु सकइ सु प्रत्याख्यानु मन माहि चीतवी करी 'नमो अरुंताणं' कही काउसमग्गु पारइ' ।

§ 340) पारियइ हंगइ 'लोगमुन्नीयगरे' भणी यइसी मुहुंती सरीरु पडिहेही वि वानणां दे 10 भगदु माधारहितु हंतउ चित्तितु प्रत्याख्यानु कइइ ।

'इच्छामो अनुमट्टि' इमउं भणी गोडिदिलियां होई संसारदावा अथवा परसमयतिमिरतरणि इत्तारि' मुनि त्रिन्दि पद्धमान छंदोविरचित मंदस्वरि करी कहियइं । पाछइ 'नमोत्थुणं' कही उमां होई देव पांदियइं । गोडिदिलियां होई 'नमोत्थुणं' कही एक खमासमणि आचार्यमिश्र पांदियइं । 20 वीप खमासमणि उनाप्यायमिश्र पांदियइं । तइय खमासमणि सर्वसाधु पांदियइं । एतलइ रात्रि प्रतिक्रमणु संपूर्ण हुयउं । तउ पाछइ कम्मभूमिहिं पद्धमसंघयणि इत्यादि नमस्कार श्रीश्रवभयद्धमानक इत्यादिक स्ववन प्रतिवेस्सनाडुलकादिक 'कुणं अट्टाययनि वसहो' इत्यादि प्रभातमांगलिकयभावनाभातुडु सखाउ करी मुहुंती पट्टक पोमाल पडिहेहण प्रकासि हूयइ हंतइ कीजइ । इति रात्रिय' प्रतिक्रमणविधि ।

§ 341) अथ पाञ्चिक चातुर्मासिक सांवरत्मरिक प्रतिक्रमण विधि लिखियइ ।

मुहपुर्त्तीवंदणयं संवद्दाम्नामणं तथा लोए ।

25 वंदणपत्तेयं म्नामणाणि वंदणय मुत्तं च ॥ [३६६]

मुत्तं अच्च्मुद्दाणं उस्समग्गो पुत्तिवंदणं तइ य ।

पञ्जने म्नामणयं तइ चउरो धोमवंदणया ॥ [३६७]

पक्किणय त्तिन्नि मयाइं उत्तामा पणमया उ चउमासे ।

अट्टमइम्मं वग्गि मिज्जमुगए तट्टस्समग्गो ॥ इति । [३६८]

30 देवनिवसदिकमण्ड जउ 'वंदानि त्तिने चउत्थीमं' कदिउं हुयइ । तउ पाछइ एक म्नामणनि 'इच्छाकारेण सदिसण्ण म्नामण पक्किणय मुत्तुत्तियं पडिहेहेनि' 'चउमास चउमानिय मुत्तुत्तियं पडिहेहेनि संदमरि संवमरिय मुत्तुत्तियं पडिहेहेनि' इमउं कहियइ । वीजउं म्नामणमु दे मुहुंतीमरीरु पडिहेही

[369] 1 B. omits. 2 B. repeats. 3 B. विरजि. 4 B. कदिउं. § 340) 1 B. omits. 2 B. कदिउं. § 341) 1 B. कदिउं.

वि वानणां दीजइं । 'पाछइ संवद्वाखामणेणं अब्भुट्ठिओहं अट्ठिभतरपक्खियं खामेमि' 'चउमासइ चउमासियं खामेमि संवत्सरि संवत्सरियं खामेमि' इसउं कथनु ऊमां थिकां माथइ हाथ चढावतां भणी करी गोडिहिलियां वार्इ माथउं सुइं लगाडी मुहुंती मुहवारि देइं 'पनरसन्हं दिवसाणं पनरसन्हं राईणं' इसउं कही, 'चउमासइ चउन्हं मासाणं अट्ठन्हं पक्खाणं विसोत्तरु सउ राईदियाणं' इसउं कही, 'संवत्सरि दुवालसन्हं मासाणं चउवीसन्हं पक्खाणं त्रिन्हिसइं साठ राईदियाणं' इसउं कही, 'इच्छं जं किं वि अप्पित्थियं'⁵ इत्यादि कही जउ वि साधु उगरता हुयइं तउ पक्खियदियसि त्रिन्हि खामणां, चउमासइ पांच खामणां, संवत्सरि सात खामणां कीजइं । पाछइ ऊठी वि वानणां दे करी देवसियं आलोइयं पडिकंता प्रत्येक-खामणेणं 'अब्भुट्ठिओहं अट्ठिभतरपक्खियं खामेमि, चउमासइ चउमासियं खामेमि संवत्सरि संवत्सरियं खामेमि' इसउं कही प्रत्येक खामणां कीजइं । तदनंतरु वि वानणां दे 'देवसियं आलोइयं पडिकंतं पक्खियं पडिकमावेहं' इसउं कही करी चउमासइ 'चउमासियं पडिकमावेहं' इसउं कही संवत्सरि 'संवत्सरियं पडिकमावेहं' इसउं कही करी 'करेमि भंते' इत्यादि 'इच्छामि ठामि काउरसग्गु जो मे पक्खिओ अइयारो' इत्यादि चउमासइ 'चउमासिओ अइयारो कओ' इत्यादि संवत्सरि 'संवत्सरिओ अइयारो कओ' इत्यादि कही करी 'तस्सुत्तरीकरणेणं' कही शक्तिसंभवि सब्बही काउरसग्गु कीजइ ।

§ 342) एकु धायकु आचार्यमिथ्हं आगइ धावी एकु खमासमणु दे करी भगइ 'इच्छाकारेण'¹⁵ संदिसइ भगवन् । सूत्रु संदिसावउं, गुरि 'संदिसावहु' इसइ भणिइ हुंतइ बीजउं खमासमणु दे करी 'भगवन् सूत्रु काठउं' इसउं भणइ । गुरि 'भणउ' इसइ कहिइ हुंतइ 'इच्छं' इसउं भणी करी, ऊमउ थिकउ हाथे जोडिए मुहि मुहुंती दीपी त्रिन्हि नमस्कार कही मधुरखरि व्यक्काइरु सावधानचित्तु सुत्थारु भग्नि चीतवतउ हुंतउ पडिकमणा सूत्रु भणइ । बीजा काउरसग्गि वत्तमान सावधान थिका सांभलइं । साधु सरसां पडिकमतां हुंतं त्रिन्हिसइं साठ पक्खियसुत्थु सांभलइं । शक्तिअसंभावि वइठा थिका सांभलइं, सूत्रमांति सब्बे काउरसग्गु करइं । संपूर्णिण सुत्थि भणिइ हुंतइ नसुक्कारेण पारित्ता ऊमां थिका त्रिन्हि²⁰ नमस्कार कही पाछइ वइसी करी पूर्ववत् पडिकमणासुत्थु गुणियइ । 'पडिकमे देवसियं सब्बं' एह नइ धानकि 'पक्खियं सब्बं चउमासइ चउमासियं सब्बं, संवत्सरि संवत्सरियं सब्बं' इसउं कहियइ । सूत्र-गुणनानंतरु 'अब्भुट्ठिओमि आराहणापे' कही एकु खमासमणु दे करी कहियइ 'इच्छाकारेण संदिसइ भगवन् मूलगुण वत्तराणु धतिचारविसुक्खिनिमित्तु काउरसग्गु करइं' इसउं भणियइ । गुरि 'करउ' इसइ कहिइ हुंतइ 'इच्छं' इसउं भणी करी 'अन्नत्थूससिएणं' इत्यादि भणी काउरसग्गु कीजइ । पक्खिय²⁵ त्रिन्हिसइं ऊसास यारह लोगस्सुजोयगरे, चउमासइ पांचसइं ऊसास वीस लोगस्सुजोयगरे, संवत्सरि अट्ठोत्तरुसइस्सु ऊसास विचालीस लोगस्सुजोयगरे एकु नमस्कार चीतवियइ । न्युक्कारेण पारित्ता लोगस्सुजोयगरे संपूर्णं कहियइ । पाछइ वइसी मुहुंती सरीरु पडिलेही थि वानणां दे पर्वतखामणउं कीजइ । चत्तारि यार खमासमणु दे दे त्रिन्हि त्रिन्हि नमस्कार कहियइ । ए चत्तारि थोमवांदणां कहियइ । तउ पाछइ इच्छामो अणुसट्ठिं इसउं भणियइ । 'नित्यारण पारणा होह' इमा गुरुवचनश्रयणा-³⁰ नंतरु आपउं देवसिउ पडिकमियइ । केवलं भयनदेवता काउरसग्गु शुइ अधिक कहियइ । सोत्तु पाक्षिइ चतुर्भासक संवत्संप्रतिक्रमणि निश्चइ सउं 'अजियं जिउ' अजितज्ञांति सत्तु कहियइ । लघु सवणु 'व्यस-गहर्इ पासं' निश्चइं सउं कहेवउं । इति पाक्षिकादि प्रतिक्रमणविधि ।

§ 343) अथ प्रत्यावृत्तस्य सामाधिक्योपपादनाविधिः - पुनि लिखियइ । जघन्यपदि लघु वि पटिहा मीम उच्छृष्टपदि जेतीवार मीम वासना तेतीवार मीम सामाधिकि संपूर्णि कीचइ हूंतइ गुरु आगइ अथवा म्पानाचार्य आगइ आवी करी उच्छामीत्यादि भणी एक खमासमणि 'इच्छाकारेण संदिसइ भगवन् ! मुहुमुत्तियं पडिलेहेमि' भणी वीय खमासमणि दीचइ हूंतइ षइसी ऊमइ धिकां मुहुंती १० पडिलेटी करी पाठइ उठी करी एक खमासमणि 'इच्छाकारेण संदिसइ भगवन् ! सामादयं पारावेह' इमअं कहियइ । 'पुगेवि काययं' इमइ कथनि गुरि कहिइ हूंतइ वीय खमासमणि 'सामादयं पारेमि' इमअं मनियइ । 'आगारो न मुत्तवो' इमइ गुरि' कहियइ हूंतइ 'इच्छं' भणी तइउ खमासमणु दे करी अदांवनदगायु करी उअं धिकां हाथे जोडिए मुहुंती मुहि दीचि त्रिन्दि नमस्कार कहियइ । पाठइ मंहामा पहिलेटी मोडिलिदियां होई मस्तु मुइं षरी हाथे जोडिए मुहुंती मुहि' देखे

- 10 मयवं दसभमरो सुदंसगो धूलभद्वयरो य ।
मस्तुरीरुप गिदनाया साहू एवंविहा हुंति ॥ [३६९]
- माहूण वंदेणेन नागइ पावं अंतंकिया भावा ।
फामुपशाणे निज्ज उरमादो नाणमाईणं ॥ [३७०]
- उउमय्यो मूउमणो कित्तिपमितं पि संभइ ।
तीरो उं च न ममगमि अहं मिच्छामि ह दुकडं तस्म ॥ [३७१]
- उं उं मणेन विनियममुहं वायाइ भासियं किपि ।
अगुहं वायण कयं मिच्छामि ह दुकडं तस्म ॥ [३७२]

ए पकारि गइ कहियइ ।

§ 344) ईहं गइ नउ अथुं यथा- 'सामादयंमि वि कए' ममगो होइ य सावओ होइ उअं'

१. इमा भजतइउउ तिम महागरोचक भरिउं देवी कहियइ जाणे समुदु छइ । अथवा गुरु पुरुष देवी करी भजियइ जाणे सिद्धु छइ । अथवा महादुषमु देवी करी कहियइ जाणे हाथियउ छइ । अथवा धनरुं पुरुष देवी करी भजियइ जाणे धनदय्यु छइ । तिम समताभावि सामाधिकि यनमानु धायकु देवी करी भजियइ जाणे धननु छइ । तिमि कारणि सामाधिकारणा ममइ ति केई तिनशामनि उच्छृष्ट अमण' इया तेईं मांदि सुखभूत श्रीदगाणेंउउराउकपि श्रीमुदसंतमहासुनि श्रीरथूउभद्रसुगमध्यान श्रीरअम्यानि सुग-
२. उअण बनेइ । ति डिमा? मफरीइय गिइषाया इति । मफरीकृनु मफळु कीचउ गृह्यासु संयमु जीईं ति मफरीकृनु गृह्याण कहियइ । डिमउ अथुं ? ति वि दगाणेंउउ अउइ सुदंसो निगिदि ति भवि सुदि मण । श्रीमुदसु सुगमध्यान अउइ वज्रम्यानि सुगमध्यानु देवथोकि पठना, धीउइ भवि तेईं वे मोडि उअइइ । दया च-

उउउममउइउउउ न करंति जुगप्यशान आदरिया ।

- ३. अउउ उउउममउउउउउ तेनेउ भवे मया सुइयं ॥ [३७३]
- सपु पंरिइह हुंति । अउउउ अउउउ ति के, ति पंरिइह ईहं मरीया मायु हुयइ । इमी री मयु उउउउउ उउउउउ ।

[343] 1 B. It. का. ३. ३३३. 3. 2 B. drops words between इहं ... इहं ।
3 B. इहं - च नो between इहं इहं । [344] 1 B. ममगो न मी कए । B. ममगो न मी कए ।
2 B. ३३३. ३३३.

§ 345) तथा साधु पृथुपास्तिकफले पुणि चीतवियइ । साहूण बंदणेणं ति साधु तणइ बंदणि नमस्करणि कीजतइ हूंतइ असंकिया भावा असंकित भायइतउ संदेइ पाखइ नासइ पावं पापु नासइ । अत्र कृष्णु दृष्टांतु । तथा साधु रहइं प्रासुकेपणीय अन्नपानादि दानि कीथइ हूंतइ निज्जर पूर्ववद्द अशुभकर्मं तणी निजैरा क्षिपणा हुयइ । तथा उवमहो नाणमाहणंति हानादिक जि गुणु साधु तणइ आधारी छइं तीहं गुणहं रहइं उपमहू उपग्रंभु आधारु कीघउ हुयइ । इसी परि साधुसेवादि अनुमोदना करी भणियइ । छउमरथो इति । जिम समुद्रि कडोलसंख्या आकाशि तारकसंख्या करी न सकियइं तिम छउमत्य जीय रहइं किसउ अर्थु ? जां सूक्ष्म संपरायगुणठाणइ जीउ न जाइं तां प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानकहं वर्त्तइ, साधु नी अपेक्षा करी श्रावकु पुणि देसविरति सम्यग्दृष्टि गुणठाणइ वर्त्तइ तउ पाछइ चित्त रहइं चपलता लगी एक मुहूर्त्त माहि जि के जीव रहइं असुभ परिणाम नीपजइं तीहं नी संख्या पुणि जीउ करी न सकइं, इणि कारणि भणियइ छउमरथो छद्मस्थ जीउ किचिय मित्तं पि केतलउं पापु सांभरइ समरइ । तिणि कारणि 10 जु सांभरइ समरइ जं च न संभरामि अहं । जु पापु हउं न सांभरुं समरउं नहीं मिच्छामि इ दुकहं तस । तेइ सांभरताइ अनइ असांभरताइ पाप तणउ दुष्कृतु मिध्या विफले हुउ ।

§ 346) इसी परि सामान्यहिं सामाइकशुद्धि करी विशेष सुद्धि निमित्तु भणियइ । जं जं ति— जं काइं असुमु मनि करी चीतवियं, जं काइं अशुसु वाया करी बचनि करी भासिउं कहिउं । जं काइं असुमु काइ करी कीघउं तेह तणउं दुष्कृतु मिध्या हूउ । इसी परि सामाइक तणी विशेषसुद्धिकरणपूर्वकु 15 सामाइकु पारी करी पुनरपि प्रमादभावरिपु तणउ अविश्वासु मन माहि धरतां सर्वजीव मिध्या दुष्कृतु दे करी—

सामाइय पोसहसंठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ।

सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५

[३७४]

इत्यादि भावना भावियइं ।

20

§ 347) अथ पोसहपारणा विधि लिखियइ । संपूर्ण पौपधकृते सति एक खमासमणि भणियइ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । मुहुपत्तियं पडिलेहेमि' वीय खमासमणु दे करी मुहुती पडिलेही एक खमासमणि भणियइ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसहं पारावेह, 'पुणोवि कायव्वं' इसइ कथनि गुरि कहिइ हूंतइ वीय खमासमणि भणियइ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसहं पारावेमि' । गुरि 'आयारो न मुत्तव्वो' इसइ कहिइ हूंतइ 'इच्छं' भगनपूर्वकु तइय खमासमणु दे त्रिन्हि नमस्कार कहिइ' । 25 इति पोसह पारणाविधि ।

§ 348) पढिकमणउं सामाइकरणपूर्वकु कीजइ तिणि कारणि पहिलुं सामाइकसूत्र वखाणु लिखियइ । 'करेमि भंते सामाइयं' इत्यादि । 'करेमि' करउं शिष्य नी ए प्रतिज्ञा । 'भंते' भदंत पूव्य भगवन् वा । भवांत वा सप्तविधभय अंतकारक । भवांत वा चतुर्गतिरूप संसारनिवारक । इसी परि भंते एह नउ अर्थु सु पुणि गुरु तणउं आमंत्रणु गुरु अनुज्ञातु सर्व करिबउं । इसा अर्थ रहइं जाणविवा निमित्तु 30 पाछइ इसउ अर्थु—हे भंते ! भगवन् ! गुरो ! सन समस्तज्ञानादिकगुण तीहं नउ आयु लासु समायु कहियइ । तिणि समाधिं हूंतइ हुयइ इति मामायिकु कहियइ । यथा—

जो समो सव्वभूएसु तसेसु धावरेसु य ।

तस्स सामाइयं हुआ, इय केवलिभासियं

§ 347) 1 Bh. पारेमि । 2 Bh. कहियइ । 3 M

सु पुणि एकु सर्व सावद्ययोग प्रत्याख्यानरूपु । एकु देस सावद्यजोग प्रत्याख्यानरूपु । तत्र आवक रहइं सर्व सावद्यजोगहं नइ विपइ अनुमति निपेधु न संभवइं तिणि कारणि देस सावद्यजोग प्रत्याख्यातु हुयइ । इत्याह 'सावजं जोगं पञ्चस्वामि' । अवयु जीवहिंसाविकु पापु तेह सहितु जु योगु व्यापारु सु सावद्यु जोगु व्यापारु 'पञ्चस्वामि' निपेधउं । सु निपेधु यावजीवता अल्पकालविपयता करी विउं भेदे हुयइ इत्याह 'जावनियमं पञ्जुवासासामि' । जेतलउ कालु व्रति रहउं तेतलउ कालु पञ्जुयासउं पालउं । व्रतावस्थानकालु जघन्यपदि मुहूर्तप्रमाणु उत्कर्षइतउ जां यासना तां सीम ।

§ 349) किस्ती परि ? 'दुविहं तिविहेणं' मनि वचनि काइ करी 'तिविहेणं' सावद्यु जोगु आपदे करउं नहीं, अनेरा कन्हा करावउं नहीं 'दुविहं' । अत्र 'भंदत ! सामाइयं करेमि' इणि करी प्रत्युत्पन्नु वर्त्तमानु सावद्यु सपापु जोगु व्यापारु तेह नी विरति कही । 'सावजं जोगं पञ्चस्वामि' इणि करी अनागव सावद्यजोग नी निवृत्ति कही । अतीत सावद्य जोग प्रतिक्रमण नइ कारणि कहइ । 'तस्स भंते पडिकमामि' । इहां पढी विभक्ति द्वितीया विभक्ति नइ अर्थि छइ । तमपि तेउ अतीतु सावद्यु पडिकमउं प्रतिक्रमउं नियत्तावउं निंदामि आपणी साखि गरिहामि गुरु नी साखि । समस्तु कार्यु करी गुरु आगइ कहियउं । इसा अर्थ तणइ कारणि वीजी वार भंते पदु भणियइ । 'अप्पाणं वोसिरामि' अतीत सावद्यकारकु आपणपउं 'वोसिरामि' व्युत्सजउं । किसउ अर्थु ? वोसिरउं मेल्हउं इति सामाइक दंडक तणउ अर्थु संपूर्णु लिखिउं ।

§ 350) अय पडिकमण तणउं फलु आगमानुवादि करी कहियइ ।

'पडिकमणेणं भंते ! जीवे किं जणइ ?'

'गोयमा ! पडिकमणेणं जीवे वयच्छिदाइं पेहेइ । पिहियवयच्छिद्वे पुण जीवे निरुद्धासवे असयलचरित्ते अट्टसु पवयणमापासु उवउत्ते सुप्पणिहिण विहरइ' ।

इति उत्तराध्ययनसिद्धांत तृतीयाध्ययन माहि कहिउं । सुगमु एउ आलापकु । परं निरुद्धासवे आश्रयप्राणातिपातादिक पांच ति निरुंधइ जीवु तिणि कारणि निरुद्धासवु । एकारु प्राकृतत्वइतउ । 'असयलचरित्ते' निर्मलसंजमे इहां एकारु पूर्ववत् । सु पडिकमणउं सकलातीचारविमुद्धिकरणभावि करी विशिष्टु श्रेयःकार्यु ।

§ 351) तिणि कारणि भंगलादिकहं भणिया कारणि प्रथमगाथा प्रतिक्रमणकारु भणइ--

वंदितु सव्वसिद्धे धम्मायरिण सबसाह य ।

इच्छामि पडिकमिउं सावद्यधम्माइयारस्त ॥

[३७६]

'वंदितु' बांरी करी नमस्करी करी । कउण ? 'सव्वसिद्धे' इति सर्वु समस्तु धस्तु जि जाणइं ति सर्वं तीर्थकर । अथवा जि सर्वही जीवहं रहइं हित ति सार्वं सर्वज्ञ तीर्थकर भावाहंत कहियइं । सीइइं सर्वं कर्मअयकरणइतउ वृत्तइत्य निष्ठिनाथं हुयइं इणि कारणि सिद्ध मोक्षगत जीव । पाछइ सार्वं अनइ सिउ सव्वसिद्ध नि बांदी करी । 'धम्मायरिण य' धम्माचार्य धर्मदायक गुरुवर कहियइं । चकारइतउ उपपाया द्वादशांगशक्नानादायक । तथा 'सव्व साह य' समस्त साधु अढाई द्वीप समुद्र माहि जि के ज्ञानदर्क पारिप्रलक्ष्णु मोक्षमागुं सम्यक् माधवं ति सर्वसाधु बांदी करी विप्र विनायक उपशमाविवा कारणि ।

§ 352) इसी परि पंचरत्नेषु नमस्कारु करी प्रतिक्रमणकारु 'इच्छामी' ति भणइ । 'इच्छामि' इच्छउं बांछउं किमउं करिया ? 'पडिकमिउं' पडिकमिया निवर्त्तिवा । किस्सा हंतउ ? 'सावद्यधम्मा इयारम' । पढी विभक्ति पंचमी विभक्ति तणइ अर्थि छइ तिणि कारणि आवकधम्मु द्वादशवत् व-

स्थूलप्राणातिनातविरति १, स्थूलभूयावाद्दविरति २, स्थूलअद्त्तादानविरति ३, स्वदारसंतोष अथवा परदार परिहाररूप ४, परिग्रहपरिमाणकरण ५, पांच अपुत्रत । दिक्परिमाणकरण ६, कर्मइतउ अंगार-जीवनादिक पनरहं कर्मादान यथाशक्ति परिहाररूप भोगइतउ अभक्ष्य पंचुंवारि चउ विगई इत्यादि परिहाररूप द्विविध भोगोपभोगमानरूप ७, अनर्थदंडव्रत परिहाररूप त्रिन्दि गुणव्रत ८, सामाहिक ९, देशावकाशिक १०, पौषध ११, अतिथि संविभाररूप चत्तारि शिक्षाव्रत १२, इत्येवंरूपु आवकधर्मु १३, तेह नइ विपइ हूयउ छइ । अतीचारु सु सावगधम्माइवारु कहियइ । तेह हूंतउ निवर्त्तिवा वांछउं । इसी परि क्रियासंबंधु करिवउ ति पुणि अतीचार चउवीसउं सउ छइ । पुणि ईहां एकवचनु जातिविवक्षा करी दीषउं । इति प्रथमगाथार्थः ।

§ 353) अथ पहिलउं सामान्यहिं सर्वव्रतातिचार प्रतिक्रमणनिमित्तु भगइ-

जो मे वयाइयारो नाणे तह दंसणे चरिते य ।

10

सुहमो य वायरो वा तं निंदे तं च गरिहामि ॥

[३७७]

सामान्यहिं मे मू रहइं जु व्रतातिचारु, व्रत कहियइं स्थूलप्राणातिपातविरत्यादिक द्वादश संख्य तीह नइ विपइ जु अतीचारु वषत्रंधादिकु प्रलेकु प्रलेकु व्रत व्रत प्रति पंचसंख्यु तथा भोगोपभोगव्रतु द्विविधु । एकु भोगइतउ एकु कर्मइतउ । तत्र जु भोगइतउ तेह ना अतीचार पांच व्रतहं माहि कहीसिइं । जु कर्मइतउ तेह ना अतीचार पनरह अंगारकर्मा जीवनादिक । तउ पाछइ व्रतहं विपइ ऊपनउ १५ छइ । एवमादिकु अतीचारु सु व्रतातिचारु कहियइ । यथा 'नाणे' ज्ञानविपइ, 'दंसणे' सम्यक्त्वविपइ 'चरिते य' देसविरतिविपइ आगइ सूत्र माहि विसोपि करी के एकि अतीचार कहीसिइं के एकि व्यक्तिकरी जि न जाणियईं' ति ईहां प्रस्तावइतउ प्रकट कहियई-

काले १ विणए २ बहुमाणे ३ उवहाणे ४ तह अनिण्हवणे ५ ।

बंजण ६ अत्य ७ तदुमए ८ अट्टविहो नाणमायारो ॥

[३७८] 20

कालक्रमेण पत्तं संबच्छरमाइणा उ जं जंमि ।

तं तंमि देव धीरो वाइजा सो य कालोऽयं ॥

[३७९]

जु छुतु जिणि संवरसरदिदि कालि पढिया निमित्तु अइतहं कहिउं छइ अपुजाणिउं छइ सु छुतु उणिहीं जि कालि धीरु पढितु हूंतउ 'वाइजा' वाचिजिउ पढिजिउ ।

§ 354) सु पुणि पाठविपइ कालु इव । यथा-

25

तिवरिसपरियागस्स उ आयारपकप्पनाममज्झयणं ।

चउवरिसस्स य सम्मं स्यगडं नाम अंगंमि ॥

[३८०]

दसा-कप्प-ध्ववहारा संबच्छर-पणगस्स दिक्खियस्सेव ।

ठाणं समवाओ वि य अंगे ते अट्टवासस्स ॥

[३८१]

दसवासस्स विवाहा इकारसवासयस्स य इमे उ ।

सुट्ठिययिमाणमाई अज्झयणा पंच नायच्चा ॥

[३८२] 30

धारसवासस्स तहा अरुणुववायाई पंच अज्जयणा ।
तेरसवासस्स तहा उट्ठाणसुयाईया चउरो ॥ [३८३]

चउदसवासस्स तहा आसीविसभावणं जिणा विंति ।
पन्नरमवासगस्स य दिट्ठीविसभावणं तह य ॥ [३८४]

सोलसवासाई सु य इकुत्तरवह्निएसु जहसंखं ।
चारणभावणमह सुविणभावणा तेयगनिसग्गा ॥ [३८५]

एग्गूणवीसगस्स य दिट्ठीवाओ दुवालसममंगं ।
संपुन्नवीसवरिसो अणुवाई सच्चसुत्तस्स ॥ [३८६]

इति पंचवस्तुक सिद्धांतगाथानुसारि करी जाणिवउ ।

- 10 § 355) यथा दीक्षाग्रहणि कीधइ त्रीजइ वरसि पहिलउं आचारप्रकल्पु आचारांगु पढियइ । चउथइ वरसि सुयगज्जु धीजउ आंगु पढिवउं । 'दसा-कप्प-व्यवहारा' इति दशाश्रुतस्कंध कल्प व्यवहार ए त्रिन्दि सिद्धांत पांचमइ वरसि पढियइ । ठाणांगु समवायांगु ए वि अंग आठमइ वरसि पढियइ । दसमइ वरसि विद्यादा विद्याहप्रज्ञप्ति नामु पांचमउं आंगु पढियइ । पांचमइ आंगि पढिइ आगिलां छइ आंग ज्ञाताधर्मकथा १, उपासकदशा २, अंतगहदशा ३, अनुत्तरोपपातिकदशा ४, प्रभ्रव्याकरण ५, विपाकश्रुतनामक यथारुचि पढिया लामइ । इगारमइ वरसि सुडिया विमाणपन्नत्ती, महडिया विमाणपन्नत्ती अंगचूलिया बगचूलिया विवाहचूलिया ए पांच सिद्धांत पढियइ । धारहमइ वरसि अरुणोपपात धरणोपपात वेलंधरोपपात वेसमणोपपात देवेन्द्रोपपात नाम पांच सिद्धांत पढियइ । तेरहमइ वरसि उट्ठाणसुयं समुट्ठाणसुयं नागपारियावलिया निरयावलिया नाम चत्तारि सिद्धांत पढियइ । चउदमइ वरसि आसीविस भावणा । पनरमइ वरसि दिट्ठीविस भावणा पढियइ । सोलमइ वरसि चारण भावणा । सत्तरमइ वरसि सुविण भावणा । अटारमइ वरसि तेयगनिसग्गा पढियइ । इग्गूणवीसमइ वरसि दिट्ठीवाओ दृष्टिवादाभिधानु द्वादशसु अंगु । वीसमइ वरसि सर्वश्रुत रहइ अणुवाई पाठकु हुयइ ।

§ 356) दृष्टिवाडु चउद पूर्व, तीहं नां नाम, यथा-उत्ताडु पूर्व १, अमायणीउ पूर्व २, वीर्यप्रवाडु पूर्व ३, अस्तिनास्तिप्रवाडु पूर्व ४, ज्ञानप्रवाडु पूर्व ५, सत्यप्रवाडु पूर्व ६, आत्मप्रवाडु पूर्व ७, धर्मप्रवाडु पूर्व ८, प्रत्याख्यानप्रवाडु पूर्व ९, विद्याप्रवाडु पूर्व १०, कल्याणनामधेउ पूर्व ११, प्राण-
25 पायु पूर्व १२, क्रियाविशालु पूर्व १३, लोकविदुस्तारु पूर्व १४, इति ।

§ 357) प्रस्तावइतउ पूर्वहं तणउं प्रमाणु पुणि लिखियइ ।

उप्पाए पय कोडी १ अग्गेणीपंमि छन्नऊ लक्खा २ ।
धीरियम्मि सपरि लक्खा ३ सट्ठि लक्खा अत्थिनत्थियमि ४ ॥ [३८७]

एगापउणा कोडी नाणपत्रापंमि होइ पुच्चंमि ५ ।
एगा पयाण कोडी छच्च सया सघवापंमि ६ ॥ [३८८]

छच्चवीसं कोडीओ आपपत्रापंमि होइ पयसंखा ७ ।
कम्मपवाए कोडी असीइ लक्खोहिं अम्महिया ८ ॥ [३८९]

सुलसीइ सयसहस्सा पचक्खणंमि बन्निया पुच्चे ९ ।
इका पयाण कोडी दस सहस सहिया य विज्जाए १० ॥ [३९०]

छव्वीसं कोडीओ पयाण पुच्वे कङ्खणानामंमि' ११ ।

पाणावाए कोडी छप्पनलक्खेहिं संखाया १२ ॥

[३९१]

नव कोडीओ संखा किरियविस्सालंमि यन्निया गुरुणा १३ ।

अट्ठचैरस लक्खा पयसंखा बिट्ठुमारंमि १४ ॥

[३९२]

चतुर्दशपूर्वपद्ममाणु आगमगाथा करी भणितं, परं आस्राय तणा विच्छेदइत्तउ पदस्वरूपु सम्मग्गं जाणियइं नही ।

§358) अथ प्रस्तापइत्तउ जेह सिद्धांत माहि जु अर्थुं मणित छइ सु अर्थुं सामान्यहिं सिद्धांतगाथां करी छिलियइ-

आयार विणय गोयर सिक्खा भासाण चरणकरणाणं ।

निदिट्ठा विचीओ पदमंमि मुणीण अंगंमि ॥

[३९३] 10

पहिलइ अंगि आचारनामकि मुणीण मुनिसंबंधिनी आचार विनय गोयर शिक्षा भाषा चरणकरण एतलां सवहीं तणी घृति घ्यापार कही छइं ।

सुइजइं सुयगडे जीवाजीवाइ लोमचरणाइं ।

ससमय-परसमयाइं संखिजाओ निजुत्तीओ ॥

[३९४]

ठाणेणं ठाविजइं ससमय परसमय लोमजीवाइं ।

15

कूडा' कुंडा सेला वक्खारा आगरा मरिया ॥

[३९५]

समवाएणं जीवाजीवा लोमा य पदविज्जति ।

तह सुयखंधुदेसग कालज्जयणाइं चरणाइं ॥

[३९६]

वापरणसहरसाइं छत्तीसं हुंति पंचम सुयंगे ।

संखिजा संगदणक्खराइं तह चरणकरणाइं ॥

[३९७] 20

नायाधम्मकहाए नगरुजाणाइं चेइयवणाइं ।

राया अम्मापिपरो समोसरणं धम्मआपरिओ ॥

[३९८]

धम्मकडोभयलोगाद्धि वज्जणं भोगचाप' पयजा ।

सुयगहणं तवकरणं संलेहानियमगहणं च ॥

[३९९]

पायवोवगमणं सुहृत्तुपाओ सुचोहिय बलत्तं ।

25

वीसपयाणमिमाणं दसधम्मकदाण यग्ग ति ॥

[४००]

दसवग्ग निबद्दाए तत्थिकिकाइं धम्मसुकुशाए ।

पंचसयाइं अक्खाइयाणमिह हुंति नियमेणं ॥

[४०१]

इकिकाए अक्खराइयाइं बहुधम्मकड निबद्दाए ।

पंचसयाइं अक्खराइयाण मणिपाइं पत्तेयं ॥

[४०२] 30

उभयाणं पि तहचिय इकिकाए उ पंच उ सयाणि ।

हवइं य कदाण कोडी मयं च कोडीण पणवीसं ॥

[४०३]

सीलगुणव्यय पडिमोवसग्ग पोमह ममंतकिरियाणं ।

विहिहट्टाणाइ तहा नायव्वमुवासग्गसाण ॥

[४०४]

नगरुज्जाणवणाइं पाओगमणाइं अंतकिरियाओ ।

अंतगढाणं वोही पन्नप्पइ अट्टमंगंमि ॥

[४०५]

पंचुत्तरवासीणं चत्रणुप्पत्ति मुधम्मकइ वोही ।

अंतकिरियाउ कुसलं नवमंगं देसियं सव्वं ॥

[४०६]

अट्टुत्तरपसणसयं नागसुवन्नाण वइयरं चैव ।

पन्हावागरणंगे दिट्ठं विज्जाण माहप्पं ॥

[४०७]

दुविहं च विवागसुयं दुक्करसुकरेहिं कम्मभेण्हिं ।

नायकहादिट्ठाणं पयाण ब्रहुविह विपप्पेहिं ॥

[४०८]

§ 359) कालभणनप्रसंगि सर्वसिद्धांत नामविचारदिकु संश्लेषिहिं कइवं । एउ पूर्वाहु आगमपाठ विपइ कालु तिणि कालि पढइ तउ धुत आचारु अनेरइ कालि पढइ तउ अतीचारु अथवा कालवेला गर्जित वीजखिवणादि रहितु जु कालु सु स्वाध्यायकालु । तत्र कालवेला वि दीहसमइ वि रात्रिसमइ हुयइ । पूर्वाह्नि आठमी वडी घडी कालवेला । अपरार्थि पुणि आठमी वडी घडी कालवेला । ऋतुयद्धि कालि 15 गर्जिति हुयइ हंतइ वि पहर सग्गाउ न कीजइ । वीजोहासि एकु पहर सग्गाउ न कीजइ । तिणि कारणि कालवेलादि रहितु स्वाध्यायकालु तिणि कालि स्वाध्यायु करइ धुताचारु, अन्यथा अतीचारु १ ।

§ 360) अत्र कथा । नगरि एकि महकपि एकु रात्रिसमइ इमसातप्रदेशि' स्वाध्यायपर' वसइ । तउ रात्रि पूर्वाह्नि तणी आठमी घडी कालवेलासमइ स्वाध्यायु करतउ देसी श्रीशासनदेवतां महीयापी नइ रूपि आवी कपी प्रतिशोधिउ, अकाल स्वाध्याय हंतउ निवारिउ १ ।

20 § 361) विनउ द्वादशवर्त्त बंदनकादिकु, गुरु कन्हा नीचासनसेयनादिकु कीजइ तउ धुताचारु । अनेरइ प्रकारि अतीचारु २ । अत्र—

सीहासणे निसव्वं सोवागं सेणीओ नरवरिंदो ।

विजं मग्गइ पयओ इय साहुजणस्स सुयविणओ ॥

[४०९]

इसी परि श्रेणिक जिम गुरुविनउ करइ तउ धुतविपइ विनवाचारु । अनेरइ प्रकारि अतीचारु २ ।

25 § 362-3) बहुमानु मन तणउ अनुउरु गुरु नइ विपइ, सु बहुमानु विद्यासफलीभावकाणु जिसउ श्रीगौतमस्वामि रहइं भागवंत श्रीमहावीरविपइ हंतउ तिसउ करिवउ । तथा च भणितं—

भदो विणीय विणओ पढमगणहरो समत्थ सुयनाणी ।

जाणंतो वि तमत्थं विम्भियहियओ सुणइ सव्वं ॥

[४१०]

गरुयाणं बहुमाणो सु चिय जो माणसो पसाउ त्ति ।

वहिपडिवत्तीओ पुण मायावीणं पि दीसंति ॥

[४११]

इसी परि बहुमानु गुरुविपइ करइ तउ बहुमानाचारु, अनेरइ प्रकारि अतीचारु ३ ।

§ 364) उपधानु जेह सिद्धांत नउ जिसउ तपु छइ तिसउ तपु कपी सिद्धांतु वाचियइ । तउ सिद्धांत नउ उपधानाचारु । अनेरइ प्रकारि अतीचारु ४ ।

§365) तथा निन्द्यु गुरु तणउं अवलययुं । तेह तणउ अभायु अनिन्द्यसु । एक अक्षर जेह गुरु कन्हइ गिरिउं हुयइ तेउं गुरु लोपियउं नही । जु गुरु निन्द्यु करइ सु इहलोकिहिं लायपु लइइ । यथा-

विजाए कासवसंतीयाए^१ दगमूयरो सिरिं पचो ।

पडिओ मुसं वपंतो सुपनिन्द्यणाइय अपेच्छा ॥

[४१२] 5

कारयु^२ नावी । तेह रहइ गिरिहिं विद्यापरि^३ तूठइ हुंतइ विद्या दीपी । तेह नइ प्रभावि तेह^४ नी भांडी आकाशि पिनी तेह सरिमी^५ चालइ । अनेरइ दिवसि^६ दगसूकर भणियइ ब्राह्मणु तिणि दीठी । तउ तिनि ब्राह्मणि तेह नी सेवा कीपी । विद्या^७ तेह कन्हा ब्राह्मणि लीपी । विद्याप्रभावि तेह नी घोक्ती^८ आकाशि^९ पिनी तेह सरसी^{१०} चालइ । तउ लोकु^{११} आभयु देली करी घणेउं तेह ब्राह्मण रहइं भक्तिपूजासत्कारयहुमानु करिया त्यागउ । इसी परि ब्राह्मणु फारयप नी विद्या करी श्रीप्राप्तु हुयउ । 10 अनेरइ दिवसि अनेरइ विनिहिं पूछिउ सु ब्राह्मणु, 'भगवन् ! महंतु तुम्हारउ प्रभावु । सु तप तणउ प्रभावु, किं वा विद्या तनउ प्रभावु^{१२} ?' ब्राह्मणु भगइ, 'विद्या तणउ प्रभावु एउ ।' 'ए विद्या किहां हुंती लायी ?' विपु भगइ, 'हिमयं गिरि वत्तंमानि गरुयडं^{१३} गुरि तूसी करी आपी । इसा^{१४} कथनसमकालिहिं^{१५} नि आकाशि^{१६} हुंती घोती^{१७} भूमि पडी । पाछइ सु ब्राह्मणु लघुताप्राप्तु हुयव^{१८} । इसी परि जु गुरु-निन्द्यु करइ सु धुनविपयकु अनेरइ प्रकारि धुनारापकु । जु गुरु तणउ अनिन्द्यु सु धुतविपइ अनि-15 न्दवाचारु । अनेरइ प्रकारि निन्दवातिचारु^{१९} ५ ।

§366) 'पंचज' व्यंजन अक्षर बिंदु मात्रा लघु गुरु भेदशुद्ध जउ ऊचरइ तउ धुतविपइ व्यंजनाचारु । अनेरइ प्रकारि अतिचारु ६ ।

§367) अयुं अक्षरलावसंवंधिउं अभिधेयरुपु गुरुपादमूलि जिसउ सम्यक् सांभलिउ हुयइ विमउ जउ धीतयइ तउ धुतविपइ अयांचारु, अनेरइ प्रकारि अतीचारु ७ । 20

§368) 'तदुभय' इति । व्यंजनअर्थलक्षणु तदुभउ तेह नइ विपइ समकालु यथोक्तविधि विपइ जउ वत्तइ तउ धुतविपइ तदुभयाचारु, अनेरइ प्रकारि अतीचारु ८ ।

§369) एउ अष्टविषु ज्ञान नउ आचारु विपरीतु अतीचारु जाणियउ । एउ ज्ञानाचारु अनइ ज्ञानातिचारु जइभिहिं मुफ्ययुति करी साधुजन उदिसी कहिउ छइ तथापिहिं श्रावकजन उदिसी पुणि जिम संभवइ तिम जाणियउ । यथा कालवेलादिकि अस्थाध्यायकालि उपदेशमाला संग्रहणी कर्ममंथ क्षेत्र-25 यमागादिक सिद्धांतार्थ संस्मरणप्रकरणे पूर्वधुतधरविरचित न पइइं जउ तउ श्रायकु धुतविपइ कालाचारवंतु, अनेरइ प्रकारि अतिचारवंतु । इसी परि कालविपइ आचारातीचार श्रावकही रहइं संभवइं । तथा विनय तणइ अभावि विनइ विपइ बहुमान तणइ अभावि बहुमानविपइ । पंचपरमेष्ठिनमस्कार धुतस्कंध । ईयांपथिकी धुतस्कंध । भावाहंतस्वय धुतस्कंध । स्वपनाहंतस्वय धुतस्कंध । नामाहंतस्वय धुतस्कंध ।

§365) 1 L. अवलययु । 2 Bh. L. सीगिउ । P. सीगिउ । 3 Bh. L. P. तेउ । 4 L. कादव-1 Bh. -हंतीयाइ । 5 P. बोइ एक । 6 B. P. L. विद्यापरी । 7 L. सिह । P. वेहं । 8 Bh. सरती । L. गरिती । 9 B. L. P. दिवसी । 10 L. वया । 11 P. भोवती । 12 B. आकासी । 13 P. गरिती । 14 The mss. add आगे ब्राह्मण रहइं भक्ति करतउ तउ... which seems to be a corruption in the text. 15 P. adds: एह विद्या किहां हुंती लायी ! विपु भगइ । 16 Bh. P. युयव । L. युयइ । 17 P. इती । 18 L. समकाल हिं । 19 B. L. आकासी । P. आकाश । 20 Bh. L. भोवती । 21 Bh. हउ । 22 P. निन्दवाचारु । §367) 1 Bh.-लावय-1 §369) 1 P. -वत्तइ ।

श्रुतस्तव श्रुतस्कंध । सिद्धस्तव श्रुतस्कंध । समाराधना निमित्तु तपश्चरणकरणशक्तिसंभवि हूंतइ यथोक्त
तपश्चरण अकरणि उपधानविपइ । व्यंजन अर्थ तदुभयविपइ त्रिम साधु रहइं श्रावकहिं रहइं तिमहिं
जि संभवइं ।

§ 370) अथ दर्शनातिचारविचारु लिखियइ । इहां दर्शनु सम्यक्त्तु कहियइ । सु पुणि देवविपइ
५ देवबुद्धि गुरुविपइ गुरुबुद्धि धर्मविपइ धर्मबुद्धि लक्षणु कहियइ । तथा च भणितं-

या देवे देवताबुद्धि गुरौ च गुरुतामतिः ।

धर्मे च धर्मधीः शुद्धा सम्यक्त्वमिदमुच्यते ॥

[४१३]

देवु सु जु अष्टादशदोपरहितु ।

§ 371) ति पुणि अष्टादश दोप ए कहियइं । यथा दानांतरायु दोपु १, लाभांतरायु दोपु २,
10 वीर्यांतरायु दोपु ३, भोगांतरायु दोपु ४, उपभोगांतरायु दोपु ५, हास्यदोपु ६, रतिदोपु ७, अरतिदोपु
८, भयदोपु ९, जुगुप्सादोपु १०, शोकदोपु ११, कामदोपु १२, मिथ्यात्वदोपु १३, अज्ञानदोपु १४,
निद्रादोपु १५, अविरतिदोपु १६, रागदोपु १७, द्वेषु दोपु १८, तथा च भणितं-

अन्तराया दान-लाभ-वीर्य-भोगोपभोगाः ।

हासो रत्यरती भीतिर्जुगुप्सा शोक एव च ॥

[४१४]

15 कामो मिथ्यात्वमज्ञानं निद्रा चाविरतिस्तथा ।

रागो द्वेषश्च नो दोषास्तेषामष्टादशाप्यमी ॥

[४१५]

तथा च प्रकारांतरि पुणि अष्टादश दोपु सांभलियइं । रागु १, द्वेषु २, प्रमादु ३, अरति ४,
रति ५, भय ६, शोकु ७, जन्मु ८, चिंता ९, जुगुप्सा १०, मिथ्यात्वु ११, अज्ञानु १२, हास्यु
१३, अविरति १४, मदसु १५, निद्रा १६, विषादु १७, अंतरायु १८ । तथा चोक्तं-

20 राषद्वेषप्रमादारतिरतिभयशुक्लजन्मचिंताजुगुप्सा

मिथ्यात्वाज्ञानहास्याविरतिमदननिद्राविषादान्तरायाः ।

संसारवर्तगर्तव्यतिकरजनका देहिनां यस्य नैते

दोषा अष्टादशाऽऽप्तः स इह तदुदिते क्वाऽस्ति शंकावकाशः ? ॥

[४१६]

इति श्रीजिनवह्मसूरिविरचित आत्मपरीक्षा प्रस्तावि' अष्टादशदोप विवरणा ।

25 § 372) तथा चउत्रीसु अतिशय सहितु जु सु देवु ति पुणि चउत्रीस अतिशयस्तवन हूता चउत्रीस
अतिशय जागिवा । यथा-

घोसामि जिणवरिंदे अम्भुयमण्हिं अइसयगुणेहिं ।

ते तिविहा साहायिय कम्मक्खयया मुरकया य ॥

[४१७]

'घोसामि' यधिसु, कउग ? 'जिणवरिंदे' । जिन उपशांत मोहादिक तीहं माहि वर सामान्य केवल-
30 शाजिया । तीहं माहि' तीर्यकरनाम कम्मोदययसइतउ इंद्र जिनवरेंद्र भावाहंत ति सधिसु इसउ
क्रियासंबंधुं करियउ । किमी परि सधिसु ? 'अइसयगुणेहिं' । अनिशय ति कहियइं जि त्रेलोक्य माहि

अनेरा कही रहई हुयइ नहीं । तेई जि गुण संश्रयणीयता करी धरणीयता करी आयेय^१ अतिशयगुण जिणि कारणि अनेरा रहई न हुयइ । तिणि कारणि 'अभ्युपभूय' किसउ अर्थु ? आश्चर्यभूत चित्रता प्राप्त तीहं करी । ति पुनि अतिशय तिबिदा, त्रिहुं भेदे, तेई जि त्रिन्दि भेद कहियइ । साहावियेति । एकि स्वाभाविक जि सहजि स्वभावि हुयइ ति स्वाभाविक । कम्मक्खयया इति कम्मं ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनीय अंतराय नाम चत्तारि पातिकम्म तीहं नउ क्षउ अपुनर्भवता करी विनासु तेह हुंता जि हुयइ^२ ति कम्मक्षयज कहियइ । सुरकया येति, सुर देव तेहे छत सुरकृत कहियइ । तत्र जि स्वाभाविक ति चत्तारि, जि कम्मक्षयज ति इगार, जि देवकृत ति इगुणवीस । सब्बइ मिलिया चउतीस ।

§373) ति चउतीसइ जहकमि करी कहइ-

देहं विमलसुगंधं आमयपासेहिं वजियं अरयं ।

रुहिरं गोखीरामं निविसं पंडुरं मंसं ॥

[४१८] 10

आहारा नीहारा अदिस्सा मंसचक्खुणो सययं ।

नीसासो य सुयंधो जम्मप्पभिई गुणा एए ॥

[४१९]

देहं विमलसुगंधं इति । तीर्थकर तणउ देहु विमलु कनक जिम मलरहितु । किसउ अर्थु ? खेद दुगंध रहितु सुरभि कमल जिम सुरभि सुगंधु हुयइ । तथा 'आमयपासेहिं वजियं'-आमय रोग, तेई भणित पाशा बंधनरजु वेद तेहे करी वजितु रहितु । तथा अरयं जिम आरीसइ रजु न लागई तिम 15 तिणि रजु न लागई तिणि कारणि अरजु एवं गुणविशिष्टु देहु एकु स्वाभाविकु अतिसउ । १ । रुधिर रक्तु अनइ, आमिपु मांसु पंडुरं गोखीरामं ति^३ गाइ ना दूध सरीखवं । अनइ निविसु पच्चित्तु, किसउ अर्थु ? पूति दुगंध रहितु । एउ वीजउ स्वाभाविकु अतिसउ । २ । आहारा नीहारा अदिस्सा मंसचक्खुणो इति मंसचक्खु, छद्वारु जीवु कहियइ जु^४ आंखि करी देखइ हानदट्टि करी न देखइ सु मंसचक्खु कहियइ । तेह रहई तीर्थकर तणा आहारनीहारपानभोजनविधि लघुवृहन्नीतिविधि अदिस्सा हुंति दृष्टिगोचर 20 न हुयइ । एउ वीजउ स्वाभाविकु अतिसउ । ३ । नीसासो य सुयंधो इति । नीसासु मुखवातु सुगंधु सुगंध कमलगंधबंधुरु । एउ चउयउ स्वाभाविकु अतिसउ । ४ । ए चत्तारि^५ अतिशय गुण जम्मप्रभृति जम्म लगी हुयइ ।

§374) अथ एकादश कम्मक्षयज कहियइ^१ ।

खित्ते जोयणमित्ते जं जिय कोडीसहस्स सो माणं ।

25

सब्बसभासाणुगयवयणं धम्मावबोधयरं ॥

[४२०]

जोयण मात्र क्षेत्र माहि जु देव मनुज्य तियंच जीव कोटि सहस्र तणवं मानु समाइवउं हुयइ सु कम्मक्षयज अतिशय माहि पहिलउ अतिसउ । १ । जु वचनु सब्बसभासाणुगयं-सर्व देव मानव तियंच कहियइ तीहं नी भाषा संस्कृत प्राकृत अपभ्रंसादिक तीहं रहई अनुगतु सरीसउं । तथा धम्मावबोधकरु-धर्मतत्त्वज्ञापक । तथा च भणितं-

30

वासोदगास्स व जहा यन्नाई हुंति भाषणविसेसा ।

सब्बेसि पि सभासा जिणभासा परिणमइ एवं ॥

[४२१]

इसउं वचनु वीजउ अतिसउ । २ ।

§372) 2 Bh. drops words between ता...आयेय । §373) 1 Bh. omits. 2 Bh. omits. 3 Bh. omits. 4 Bh. चत्तारि । §374) 1 Bh. कइइ ।

1

2

3

4

प्रदक्षिणावर्त्तं चालतां पाय अधोगत आकाश सांचरियां नव हेमकमल देव करदं । एउ पांचमउ अति-
सउ । ५ । एऊ मूल रूप पूर्वामिभुसु ब्रीजां त्रिदिह रूप दक्षिणपश्चिमोत्तरामिभुसु देव करदं इति चउमुहु
भगवंतु समवसरण माहि वइसइ । एउ चउमुपतारुपु छट्टउ अतिसउ । ६ । प्राकारत्रिकु रूपमुपवर्णरत्न
निर्मितु देव करदं । एउ सातमउ अतिसउ । ७ । स्वर्णमणिमय चत्तारि सीहासण देव करदं । एउ
आठमउ अतिसउ । ८ । स्वामिवाणी पुष्टिकारणि आकाशि देवहुंदुभि देव वायइं । एउ नवमउ ४
अतिसउ । ९ । साधिकयोजनविस्तारि छायामंडलु जिनतनुप्रमाण द्वादशगुण समुख स्वर्णरत्नविनिर्मितु
अशोकयुसु देव जिन ऊपरि करदं । एउ दसमउ अतिसउ । १० । मार्गि कंटक अधोमुख देव करदं ।
एउ इगारमउ अतिसउ । ११ । लोचकरणांतक इंदु जिनमस्तकि अनइ कूर्चि बन्न फेरइ । नखे पुणि
वज्र फेरइ विणि कारणि केशनत तणी वृद्धि न हुयइं अवस्थितइ जि हुयइ । एउ चारमउ अतिसउ । १२ ।
पांचइ इंद्रियायं शब्दरूपसंगंधस्पर्श लक्षण अनुकूलइ जि हुयइं, इंद्रियदुखदायक प्रतिकूल न हुयइं । 10
एउ तेरमउ अतिसउ । १३ । हेमंतशिगिरवसंतमीष्मवर्षांशरत् इसे नामे प्रसिद्ध छईं छ क्रतु ति छ इ रिनु
तीर्थकर रहइं इंद्रियातुकू जिम हुयइं तिम सुर करदं । एउ चउदमउ अतिसउ । १४ । समवसरण-
भूमितलि गंधोदकवृष्टि मेघकुमार देव करदं । एउ पनरमउ अतिसउ । १५ । सुरभिपारिजात पंचवर्णा-
श्मुम तीहं तणी अपोयंत जानुमान वृष्टि समवसरणभूमितलि देव करदं । एउ सोलमउ अतिसउ । १६ ।
मार्गि शकुन प्रदक्षिणावर्त्त अनुकूल देव करदं । ए सतरमउ अतिसउ । १७ । पयनु वातु अनुकूल 15
वृष्टिसंमुखु वाइ देवप्रयत्नवसइतउ । एउ अठारमउ अतिसउ । १८ । मार्गि जितु बिहरइ जेतीवार
वेतीवार द्रुम वृक्ष तीहं रहइं जिन प्रति आनति प्रणायु देव करायइं । एउ इगुणीसमउ अतिसउ । १९ ।

[377) भयणवइ इति भयनपति व्यंतर ज्योतिष्क वैमानिकलक्षण चतुर्विध देव समवसरण माहि
जपन्यरदि जेतीवार अतियोदा तेतीवारही कोटिमात्र हुयइं । इतेहि य जंतेहि येति-बोधि सम्यक्त्तु तेह
निमित्तु तेह तणइ कारण आवते^१ देवे अथवा संसयतीहिं संशयार्थिभिः किसउ अर्थुं ? संशय एव अर्थुं 20
प्रयोजन आगमनकारणु जीहं रहइं ति संसयार्थी कहियइं । संसय ऊतारिया कारण आवते देवे जंतेहि य
कार्यि सरिइ हंतइ जायते तियां हंता^२ आत्मस्वानक प्रति जायते^३ देवे करी जिनपादमूलु सदा अचिरहितु
जु हुयइ । चउरो जन्मपभइं ति-चत्तारि अतिसय जन्म प्रभृति । एकादश अतिसय केवलज्ञान उपनइ
हुयइं । एकोनविंशति अतिसय देवजनित । सब्बे मिलिया चउत्रीस अतिसय जिन तणा पादंतं स्ववंतं ।
चउनीस जिगाइसया चउत्रीससंख्य जिगाइसया इति जिनसंबंधियां अतिसय महिमाप्रकार । एवं इसी परि 25
समासेणं संश्लेषिहिं मइं वन्निया मइं वर्णाविया कहिया । तीहं चउत्रीस अतिसय तणइ भग्नि करी
जिनवृषभ तीर्थनाथ मू ऊपरि संतुष्ट हंता सुयनाणु आगमार्थपरिज्ञानु अनइ भवांतरिहिं बोधिजानु
सम्यक्त्वप्रानि दिउं इति चउत्रीस अतिसय स्व विवरणं संपूर्णं ।

ईहं चउत्रीस अतिसयसहित देवविषइ देवबुद्धि । तथा ज्ञोहं-

सर्वज्ञो जितरागादिदोषसैलोभयपूजितः ।
यथास्थितार्थनादी च देवोऽर्हन् परमेश्वरः ॥
घ्यातव्योऽयमुपास्योऽयमपं शरणमिष्यतां ।
असैव प्रतिपत्तव्यं शासनं चेतनाऽस्ति चेत् ॥

[४३१]

[४३२]

30

§ 378) इती परि जिम शास्त्र माहि देवयुद्धिविधि मुखि भणी छउ निम करेवी ।

ये स्त्रीशस्त्राश्वत्रादिरागाद्यं कलंकिताः ।

निग्रहानुग्रहपरास्ते देवाः स्युर्न मुक्तये ॥

[४३३]

नाट्याट्टहाससंगीताद्युपप्लविसंस्थुलाः ।

लंभयेयुः पदं शांतं प्रपन्नान् प्राणिनः कथं ॥

[४३४]

स्त्री राग तणउं चिन्हु शम्भु आयुधु द्वेष तणउं चिन्हु, अश्वसूयु जपमालिका मोह तणउं चिन्हु, ति देव बहइं ति देव रागादिकहं अंकहं कलंकहं दोषहं करी कलंकिन दूषित तथा निग्रहानुग्रहपर प्रसाद-
5 प्रसादकर हुयइं । ति देव मुक्तिनिमित्तु न हुयइं । तथा नाट्यादिकहं सदोपपुरुषचेष्टितहं करी सहित ति देव हुयइं ति देव किसी परि सेवक प्राणियगो रहइं शांतु पदु मुक्ति लभाइइं पमाइइं ? इती परि प्रनिये-
10 मुखि जिम शास्त्रमध्यविभागी देवयुद्धि कही छइ तिम करेवी ।

§ 379) तथा प्राणातिपात सृष्यावाद अदत्तादान मैद्युन परिग्रहादि दोषवर्जितुं गुरु वेद नर विपद् गुरुबुद्धि । अथवा देसकुलादि छत्रीस गुण सहितु जु हुयइ सु गुरु कहियइ । तथा च भणितं-

देस १ कुल २ जाइ ३ रूची ४ संघयणी धिइजुओ ५ अणासंसी ६ ।

अविकल्पणो ७ अमाई ८ थिरपरिवाडी ९ गहियवको १० ॥

[४३५]

जियपरिसो ११ जियनिदो १२ मज्जत्यो १३ देस १४ कालभावजू १५ ।

आसन्नलद्धपइमो १६ नाणाविहदेसमासजू १७ ॥

[४३६]

पंचविहे आयारे जुत्तो २२ सुत्त २३ त्थ २४ तदुभयविहिजू २५ ।

आहरण २६ हेज २७ कारण २८ नयनिउणो २९ गाहणाकुसलो ३० ॥

[४३७]

ससमयपरसमयविऊ ३१ गंभीरो ३२ दित्तिमं ३३ सिवो ३४ सोमो ३५ ।

गुणसयकलिओ ३६ जुगो पवयणसारं परिकहेउं ॥

[४३८]

§ 380) आर्यदेशमध्य ऊपनउ सुखायवोधवचनु हुयइ इति देशगुणु । १ । पितृवंशु कुळ
इक्ष्वाकविकु ज्ञातकुळु मक्षप्रतभारिहिं थाकइ नहीं इति कुळुगुणु । २ । मातृकी-जाति सुद्धजाति विनयवंतु
हुयइ इति जातिगुणु । ३ । यत्राकृतिस्त्र गुणा भवंति इति रूपगुणु । ४ । संहनन धृतिसहितु
व्याख्यानदिकहं करी थाकइ नहीं इति संहननधृतिगुणु । ५ । अणासंसी श्रोतृ लोक कन्हा वस्त्रादिउं
25 काईं धांछइ नहीं । ६ । अविकल्पणु हितमितवक्ता । ७ । अमाई मायारहितु सर्वहीं बोले विद्यासपाउ
हुयइ । ८ । थिरपरिवाडी सूत्रार्थ अविस्मरणस्वभावु । ९ । प्राह्यवाक्यु अखंडितशासनु हुयइ । १० ।
जितपरिपत्त राजादिकही नी सभा माहि क्षोभि न जाइं । ११ । जितनिद्रु निद्राप्रमादवंतु शिष्य
मुखिहिं वृत्तवद । १२ । मध्यस्यु सर्वशिष्यहं रहइं समचित्तु हुयइ । १३ । देशभावजु । १४ । काल-
भावजु । १५ । मुखिहिं देसादिकहं माहि विदरइ । १५ । आसन्नलद्धपइमो परवादि उत्तरदान समर्थ
30 हुयइ । १६ । नानाविह देशभासा जाणणहार नानादेस जाति शिष्य मुखिहिं परीठवइ । १७ ।
नानायाचारपंचकवंतु श्रद्धेयवचनु हुयइ प्राह्यवचनु हुयइ इत्यर्थः । २२ । सूत्रार्थ तदुभयविधिउं
उत्सर्गपवाद् विस्तारु यथोक्तु जाणइ । २५ । हेतूदाहरण निमित्त नय प्रपंच चतुरु अनाकुळु धिकउ

§ 378) 1 B. Bh अहं । § 379) 1 Bh. - विचित्रु । 2 Bh. मासजू । 3 Bh. विदु ।
§ 380) 1 Bh. probably परीठवद । 2 Bh. जाणइ ।

हेत्वादि परवादि सभा माहि बोलइ । २९ । गाहणाकुसलो अनेक युक्तिहिं करी परीटवइ । ३० । स्वसमयपरसमयतु सुखिहिं स्वसमयस्थापना परसमयनिराकरणा करी सकइ । ३१ । गंभीरु अलक्ष्यमथ्यु । ३२ । दिशिमंतु परहं पराभवी न सकियइ । ३३ । सिय रहइं करणु इणि कारणि सिवु । ३४ । तीहं मदात्मा करी साहिदि देसि मारी प्रभुतिक उपद्रव उपसमनभावइतउ । ३४ । सौम्यु सर्वजननयनमन प्रोगनकारकु । ३५ । गुण-शतकलितु^१ विनयादिगुणशतयुक्तु । ३६ । एवंविधु सुखि प्रयचनसार कहिवा ४ योग्यु कुरातु हुयइ । एवंविध गुणयुक्त गुरु नइ विपइ गुरु बुद्धि ।

§ 381) तथा धर्मिं श्रावकधर्मलक्षणि अथवा यतिधर्मलक्षणि धर्मबुद्धि । शुद्ध निःसंशय अन्यक्तु कहियइ । तेह सम्यक्त्व तणउ आचारु अष्टप्रकारु कहियइ । यथा—

निस्तंक्रिय १ निकंक्रिय २ निव्वित्तिगिच्छा ३ अमूढदिट्ठी य ४ ।

उपबूह ५ थिरीकरणे ६ वच्छल्ल ७ प्रभावणे अट्ट ८ ॥ [४३९] 10

पूर्वेहिं नि सम्यक्तु कहिउं । तेह नइ विपइ निःशंक्तिु संदेहरहितु जउ हुयइ तउ आचारु १ संदेहरणि अतीचारु । १ । निक्कांछु किसउ अर्थु ? जिम जिनु देवता तिम ईश्वरादिकु पुणि देवता अथवा जिम तिन तगउं दर्शनु तिम अनेरउं बौद्धादिकहं तगउं पुणि दर्शनु, किसउं देवहं रहइं अनइ धर्महं रहइं को भेदु छइ इसी बुद्धि न कीजइं किंतु जिनु जु एकु मुक्तिदायकु देवु जिनधर्मु जु एकु मुक्तिदायकु इमी बुद्धि निश्चल जउं हुयइ तउ निःकांक्षताचारु २ अनेरइ प्रकारि अतीचारु । २ । निव्वित्तिगिच्छा 15 इमी बुद्धि निश्चल जउं हुयइ तउ निव्वित्तिगिच्छा आचारु ३ संदेहु कीजइ तउ अतीचारु । ३ । अथवा विचिकित्सा माणुं निरा न कीजइं तउ आचारु ३ कीजइ तउ अतीचारु । ३ । अमूढदिट्ठी जु निध्यादष्टि तणउ अतिसउ देखी करी एहु काइं साचउं तत्तु छइ इसी बुद्धि न करइं सु अमूढदष्टि । यथा—

धिज्जाईण गिहीणं पासत्थाइण वा वि दड्ढणं ।

जस्स न मुज्झइ दिट्ठि अमूढदिट्ठि तयं विंति ॥ [४४०] 20

अत्र सुलसा श्राविका नउ दृष्टांतु जाणिवउ । अमूढदष्टिभावु आचारु ४ मूढदष्टिभावु अती-
चारु । ४ । उपबूहा प्रशंसा त्रिणि समइ ति साधु श्रावक उत्कृष्ट क्रियाकारक गीतार्थ हुयइं तीहं नी अनुमोदना आचारु ५ अवगणना अतीचारु । ५ । थिरीकरणु अभिनय प्रतियुद्धहं रहइं धर्मोपदेशवाक्य-
दानादिकहं करी धर्म नइ विपइ थिरीकरणु दृढताकरणु सु थिरीकरणुआचारु ६ न कीजइं तउ अतीचारु 25 ६ । वाच्छल्लु शक्तिसंभवि हूतइ अज्ञानपानयत्नतानूलद्रव्योपद्रवं प्रदानादिकु सु करइ तउ आचारु । अत्र भरत चक्रवर्ति दृष्टांतु ७ । न करइं तउ अतीचारु । ७ । प्रभावना शक्ति अनुसारि श्रावकहीं करेवी जिम संप्रति रात्रिं कीथी । साधु पुणि प्रभावक आठे भेदे हुयइं यथा—

पावइणी १ धम्मकही २ वाइं ३ नेमित्तिओ ४ तवस्सी य ५ ।

विज्जा ६ सिद्धो ७ य कइं ८ अट्टेव प्रभावगा भणिया ॥ [४४१] 30

पावइणी सिद्धानार्थं प्रदाननिपुणु । १ । धम्मकही आक्षेपिणी विक्षेपिणी निर्वेदजननी संवेगजननी ति चतुर्विध कथाकथनि करी भव्यबोधकारकु । २ । राजसभा माहि प्रतिवादि विजयकारकु धारि । ३ । अष्टांगनिमित्तवलि अतीतानगतवर्त्तमानवस्तुकथकु नैमित्तिकु । ४ । तवस्सी प्रपञ्चमादिकोत्कृष्टवपश्चरण-

§ 380) 3 Bh. संगीणन । 4 Bh. गुणशतयुक्तु and then drops words till युक्तु ; § 381) 1 Bh. omits. 2 Bh. जिनसुनि । 3 B. omits. 4 B. वती ।

करण परायणु । ५ । विज्ञा विद्यावंतु । ६ । सिद्ध सिद्धमंत्रयेदकु । ७ । कवि कवित्वक्या करी राजादि सभारंजकु । ८ । ए आठ प्रभावक भणिया । जिगसासणि इमी परि प्रभावगा कणु आचारु ८ । प्रभावत तणइ अकरणि अतीचारु । ८ । अतीचारु पुणि सगले शक्ति संभवहिं जि जाणिवतं । ए आठ दर्शनविपइ अतीचार साधु जिम श्रावकहीं रहइ संभवइं ।

5 § 382) अथ चारित्रातिचार कहियइं-

पणिहाण जोगजुतो पंचहिं समिईहिं तीहिं गुत्तीहिं ।

एस चरिचायारो अट्टविहो होइ नायव्यो ॥

[४४२]

पांच समिति त्रिन्हि गुप्ति यथा-

जुगमिचंतरदिट्टी पर्यं पर्यं चक्खुणा विसोहितो ।

अव्वक्खिसत्ताउत्तो' इरियासमिओ मुणी होइ ॥

[४४३]

10 जुगु जूसरु तन्मात्रांतरदृष्टि किसउ अर्थु ? जेवडउं जूसरु हुयइ तेतली भुइं दृष्टि देखी करी 'पर्यं पर्यं चक्खुणा विसोहितो' परु परु चक्खु करी विमोवतउ, किसउ अर्थु ? जिहां परु भूकिसिद तिहां मुइं सोधतउ दृष्टि करी त्रसथावरजीवरहित चीतयतउ । 'अव्वक्खिसत्तु' अठ्याशिसु कार्यांतर करण रहितु 'आउत्तो' आयुहु सावधानचित्तु ईर्यासमितु मुनि हुयइ इति गाथार्यः । ए ईर्यासमिति ।

15 कजे भासइ भासं अणवज्जमकारणे न भासइ य ।

विकहविसुत्तियपरिवज्जिओ य जइ भासणासमिओ ॥

[४४४]

कार्यं ज्ञानदानादि प्रयोजनि ऊपनइ भापा 'भासइ' बोलइ । सा ई भापा अनवय पापरहित बोलइ । अकारणे 'न भासइ य' ज्ञानादिकारण पाखइ बोलइ नहीं । 'विकहविसुत्तियपरिवज्जिओ य' विकथा राजकथा भक्तकथा स्त्रीकथा देशकथा लक्षण कहियइं । तथा विश्रोतसिका दुष्टांतरजस्वरूपा तीईं 20 विकथा विश्रोतसिका करी रहितु विवर्जितु 'विकहविसुत्तियपरिवज्जिओ' कहियइ । चकारइतउ अनेपइं वचनदोपरहित वचनगुणसहितु यति भापासमितु कहियइ । ए भापासमिति ।

बायालमेसणाए भोयणदोसे य पंच सोहेइ ।

सो एसणाइ समिओ आजीवी अन्नहा होइ ॥

[४४५]

सोल उद्रमदोप, सोल उत्पादना दोप, दस एपणा दोप, पांच भोजनदोप इसा लु बइतालीस 25 एपणादोप, पांच भोजनदोप, सोधइ परिहरइ सु साधु एपणासमितु हुयइ । अन्नहा अनेरइ प्रकारि आजीवी आजीवकु हुयइ । संजसु तेइ रहइं आजीवना हेतु हुयइ, मोक्षनिमित्तु न हुयइं । ए' एपणासमिति ।

पुब्बि चक्खु परिक्खिय पमज्जिउं जो ठवेइ गिन्हइ य ।

आयाणमंडमचनिक्खेवणासमिओ मुणि होइ ॥

[४४६]

30 जिणि प्रदेसि काईं वरु मेल्हिसिइं अथवा जेइ प्रदेस हूंतउं काईं भाजनादिकु वरु लेसिइ सु प्रदेसु पूर्वहिं चक्खु करी परीखी देखी रजोहरणि करी पउंजी तउ पाळइ ठवइ वरु मेल्हइ अथवा लिपइ लु सु आदानमांडमात्र निशेपणासमितु मुनि कहियइ । ए आदानमांडमात्र निशेपणासमिति ।

उचारपासवण खेल जल्ल सिंघाण य पाणविही ।

सुविवेइए पएसे निसरंतो होइ तस्समिओ ॥

[४४७]

उच्चारं पुरीषु वडी नीति पासवणु मयु लहुडी नीति । खेलु खेध्मा । जह्लु देह तणउ मलु । सिंघाणु नासिकामलु एतलउ उच्चारदिकु वस्तु । चकारइतउ अमुद्धभक्तपानकारिकु वस्तु सु विवेचिति दृष्टि दृष्टि रजोहरण प्रतिलेखिति प्रवेसि जु निस्तजइ परिठवइ सु मुनि तस्समिओ होइ । उच्चार पासवणु खेल जह्लु सिंघाणु पारिठावणियासमितु हुयइ । ए उच्चार पासवणु खेल जह्लु सिंघाणु पारिठावणियासमिति । ए पांच समिति ।

5

§ 383) अथ त्रिन्दि गुप्ति कहियइ । मनोगुप्ति बचनगुप्ति कायगुप्ति । तत्र-

विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितं ।

आत्मारामं मनस्त्वैर्मनोगुप्तिरुदाहता ॥

[४४८]

विमुक्तकल्पनाजालु विपयवासनारहितु । समत्वि सुप्रतिष्ठितु समता वर्त्तमानु । आत्मारामु आत्माइं जि विपइ आ सामस्त्य करी रमइ आत्मारामु । मनु चित्तु । तज्जहं मनोगुप्तिपंडितहं मनोगुप्तिरुदाहरी 10 मनोगुप्ति कही । ए मनोगुप्ति ।

संज्ञादिपरिहारेण यन्मौनस्यावलंबनं ।

वाग्युत्तेः संवृतिर्था या सा वाग्युप्तिरिहोच्यते ॥

[४४९]

शिरःकंपन हल्लचालनादिक जि छइं संज्ञाविधि निषेधसूचक तीहं नइ परिहारि सहित वाग्युत्ति तणी संवृति निरोधु तेहउ जु मौन तणउं अवलंबनु स वाग्युप्ति इह ईहां जिनशासनि उच्यते 15 कहियइ । ए वाग्युप्ति ।

उपसर्गप्रसंगेऽपि कायोत्सर्गजुषो मुनेः ।

स्थिरीभावः शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते ॥

[४५०]

'उपसर्ग' देव मनुष्य पशुविहित उपद्रव । तीहं तणइ प्रसंगिहिं संबंधिहिं हुंतइ कायोत्सर्गि वर्त्तमान मुनि रहइं जु शरीर स्थिरीभावु निश्चलता सु कायगुप्ति 'निगद्यते' कहियइ । ए कायगुप्ति । 20 पांचही समिति विपइ त्रिहुं गुप्ति विपइ प्रणिधानु सावधान पणउं तेह नउ जोगु संबंधु तिणि करी जु जुलु मनु कीजइ एउ अष्टविधु चारित्राचारु । विपरीतु अतीचारु । तथा च भणितं -

एताः चारित्रगात्रस्य जननात् परिपालनात् ।

संशोधनाच्च साधूनां भातरोऽष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

[४५१]

अष्टप्रवचनमातृविधि प्रतिपालना लक्षणु अष्टविधु चारित्राचारु । अविधि-पालनालक्षणु अष्टविधु 25 अतीचारु । यदपिहिं मुखवृत्ति करी चारित्राचारु साधु रहइं कहिउ छइ तथापिहिं देसविरतही रहइं देसत समितिगुप्तिविधि पालनारुपु आचारु । अविधि-पालनारुपु अतीचारु जाणिवउ । इसी परि आठ-त्री-चउवीस अतीचार हान-दर्शन-चारित्र विपइया पूर्वभणित पंचद्वत्तरि संख्यहं अतीचारहं सउं मिलिया हुंता नवाणवइ संख्य अतीचार हूया । पाछिला 'सव्ये चरिते य,' ईहां छइ चकार तिणि करी जाणिया ।

30

§ 384) तथाहि द्वादशविधु तपु उत्तरगुणप्रत्याख्यानप्रस्तावि कहिउ नइ विपइ अविधिकरणादिलक्षण द्वादश अतीचार । त्रिन्दि बीर्यातीचार मनोवैरि । त्रिन्दि त्रिविध वीर्य रहइं धर्म नइ विपइ साम्यक-प्रयोग नइ अभावि त्रिन्दि । पांच

संलेखनातीचार । शंकादि पांच सम्यक्त्वातीचार सर्वे मिलिया पंचवीस । नवाणवइ सउं मिलिया चउवीसउं सउ अतीचार हुयइ । तथा च भणितं—

पण संलेहण ५ पन्नरस कम्म १५ नाणाइ अट्ट पत्तेयं २४ ।

वारस तव १२ विरइतियं ३ पण सम्म ५ वयाइं पत्तेयं ६० ॥ [४५२]

- 5 'सुहुमो य वायरो या' 'सुहुमु' सुक्ष्मु अजातु अथवा अल्प प्रायश्चित्तशोध्यु । 'वायरु' स्थुडु व्यक्तु ज्ञातु अथवा गुरुप्रायश्चित्तशोध्यु । 'तं निंदे' सु निंदउं आपणणइं वरुयउं' कीघउं इसी परि गरिहामि । गुरु साखि वरुउं' कीघउं इसी परि गरिहउं । २ ।

§ 385) प्राइहिं सव्वइ अतीचार परिमह हुंता संभवइं । तिणि कारणि सामान्यहिं पडिलउं परिप्रहप्रतिक्रमणु कहइ—

- 10 दुविहे परिग्गहंमि सावज्जे बहुविहे य आरंभे ।

कारावणे य करणे पडिकमे देवसियं सव्वं ॥

[४५३]

- द्विविध सचित्ताचित्त रूपपरिप्रह विपइ सावज सपाप बहुविध अनेक प्रकार आरंभ प्राणाति-
पातादिक तीहं नइ विपइ अनेरां कन्हा कारावणु तेह नइ विपइ, आपणणइं करणु तेह नइ विपइ ।
चकारइतउ किहंई अनुमतिहीनइ विपइ । 'यो मेऽतिचारु' इसउं पाछा हुंतउं आवइ । जु मूं रहइं
15 अतीचार आविउ सु निरवसेपु सगळ 'पडिकमे देसियं सव्वं' । धारपत्वइतउ देवसिकं पइ तणइ स्वानकि
'देसियं' इसउं हुयइ । 'पडिकमे' किसउ अर्थु ? तेह देवसिक सगलाइ अतीचार हुंतउ निवर्त्तउं । राइ
पडिकमणइ 'पडिकमे राइयं सव्वं' कहिवउं । पक्खिय पडिकमणइ 'पडिकमे पक्खियं सव्वं' कहिवउं ।
चउमासा नउ पडिकमणइ 'पडिकमे चउमासियं सव्वं' कहिवउं । संयच्छरिय पडिकमणइ 'पडिकमे
संयच्छरियं सव्वं' कहिवउं । अर्थु सर्वत्र पूर्व जिम, नवरं राइय अतीचार चउमासीय अतीचार
20 संयच्छरीय अतीचार हुंतउ निवर्त्तउं इति नाम भेदु करीवउ । अथवा अशुभभाव हुंतउ निवर्त्ता करी
शुभभाव प्रतिक्रमउं वली जाउं इउ प्रतिक्रमण नउ अर्थु । यदुक्तं—

स्वस्थानाद्यत् परस्थानं प्रमादस्य वशाद्गतः ।

तत्रैव क्रमणं भूयः प्रतिक्रमणमुच्यते ॥

[४५४]

- § 386) अत्र महापरिमहारंभनिवृत्तानिवृत्तहं' विहुं श्रेष्ठिहिं तणउं कथानकु गुणदोषविकासकु
25 कहियइ ।

- नाशिक्यु नामि नगर । तिहां नंद नामक शि श्रेष्ठि वाणिज्यकला-कुसल' हूया तीहं माहि एक
गृहधर्मपरायणु व्यवसायशुद्धि जुकु' हुंतउं आपणां गुणहं करी धर्मनंदु इसी ख्यातिप्राप्तु हुयउ ।
धीजउ लोभाभिभूतु फूटवाणिज्यकला लगी लोभनंदु' इसी ख्यातिप्राप्तु हुयउ । अनेरइ दिवसि सरोवरी
गणीतइ पूर्वसंगोपित सुवर्णमय कुसा नीसरिया । लोहमय' युद्धियसइतउ महंतइ खनकहं रहइं आविया ।
30 तेहे पुणि ति कुसा ले करी धर्मनंद' रहइं दिखालिया । कहिउं, 'ईहं वडइं अम्ह रहइं घृततैलधान्यादि
विसाहणउं आपि । तिणि पुणि अतिभारादि कारणि करी सुवर्णमय जाणी करी भणिउं, 'एहे मू रहइं

§ 384) 1 Bh. वरुउं । 2 Bh. वरुं । § 385) 1 Bh. adds. छइ । § 386) 1 P. omits
नरणा । 2 Bh. विरइतु । P. विद्यातु । 3 Bh.-दुवाल । 4 P.-युक्त । 5 P. लोभिदु । 6 Bh.
सोहमइ । 7 Bh. नंदि ।

काजु नहीं। तउ पाछइ तेहे ति लोभनंदं रहइं दिखालिया। तिणि पुणि ति सुवर्णमय जाणिया। पाछइ नीमु हाट माहि लांखी करी तीईं रहइं विसाहणउं षणउं दीघउं। तीईं कन्हा कुशा नी उलत्ति पृथी करी कहइ, 'मूं रहइं छोह माहि काजु छइ। तुम्हे कुशा मूंहीं जि देजिउ, हउं तुम्ह रहइं षणउं विसाहणउं देसु'। तउ पाछइ ति ओडं हट्ट तुष्ट हुंता तीईं जि रहइं नितु नितु कुशा⁹ आणी दियइं, विसाहणउं लियइं। अतिओभवसइतउ अल्पमूल्य बडइं सुवर्णकुशा¹⁰ लियतउं¹¹ रुत्त¹² न थाइं। पुत्रइं⁵ पूछताईं हुंता कुशां नउ परमार्थु कहइं¹³ नहीं। अनेरइ दिवसि कुशाप्रहणविपइ शिक्षा पुत्रइं रहइं दे करी प्रत्यासन्नप्रामि मित्र नइ विपइ प्रेसु बहतउ वीवाहि गयउ। खनके कुशा¹⁴ वि आणी करी श्रेष्ठिपुत्रइं हाथि आपिया। तेहे कोप यशइतउ आस्फाली करी फोडिया। सुवर्णमय झलहलता देखीं¹⁵ लोकु षणउ मिलिउ। तेतलइ श्रेष्ठि पुणि गाम हुंतउ आविउ¹⁶। सु वृत्तांतु जाणी करी श्रेष्ठि अति विपादवंतु¹⁷ ह्यउ रीस बसइतउ श्रेष्ठिइं आपणाईं¹⁸ जि पग पाहणि आहणी भागा किसइ कारणि जइ ए न हुउतइ तउ हउं¹⁰ गामि न जायतइ¹⁹ धिगु हुउ ईहं रहइं इति पादनिंदा करतउ आचरींद्रध्यानपरु ह्यउ। राजपुरुपइं कुशावृत्तांतु राजा आगइ सांभलिउ। राजेंद्रि खनक पूछिया। तेहे सगळ वृत्तांतु कहिउ। तदनंतरु धर्मनंदु पडिदारकन्हा तेडाविउ लोभनंदु निप्रहाविउ। कृतप्रणाम धर्मनंद आगइ राजेंद्रि कहिउं, 'कुशा किसइ कारणि तइं न लीधाईं। सुवर्ण तणा किसइ कारणि न कहियाईं।' तिणि मणिउं, 'परिप्रहृप्रमाण-व्रतमंगभयवसइतउ²⁰ तथा चोरितवस्तुप्रहणनियमइतउ न लीधाईं। असत्यचनभापणइतउ²¹ न कहियाईं।' ¹⁵

§ 387) तउ राजा श्रेष्ठिगुणंजितु हुंतउ धर्मनंद नी प्रशंसा करइ। 'अहो पापमीरुता। अहो निर्दोभता। अहो विवेकिता। श्रेष्ठिन् ! तउं सर्वही पूज्य।' इसी परि वार वार सभा माहि वर्णवी करी बसालंकारसत्कारकरणपूर्वु आवासि धर्मनंदु पाठविउ। लोभनंद आगइ राजा कहइ, 'दे पदयोदर ! अज्ञान खनक² किसइ कारणि तइं मुसिया।' इसउं भणी करी सर्वस्वदणु विहंयनादिकु करी महाकष्टि लोभनंदु राजेंद्रि मेसिहउ। धर्मनंदु लोभवर्जितु इह परत्र कीर्तिपुण्यभाजनु ह्यउ। लोभनंदु लोभाभिभूतु ²⁰ इह परत्र अकीर्त्ति अधर्मा भाजनु हुयउ।

उच्चैर्महार्मपरिग्रहस्य विपाकमेवं विरसं निशम्य ।
संसारभूमीरुहवीजभूते तदत्र भव्या दघतां निवृत्तिम् ॥

[४५५]

§ 388) अथ ज्ञानातिचारनिंदा कइइ।

जं बद्धमिदिपहिं चउहिं कसाएहिं अप्ससर्थेहिं ।
राणेण व दोसेण व तं निंदे तं च गरिहामि ॥

[४५६]

जु कर्म्यु इंद्रिए करी वाधउं आत्मासउं क्षीरनीर जिम अथवा अमिलोह जिम एकरूपता गमाडिउं। जिम सनळुमार खीरल नइ अलकसंस्पर्शि करी संभूति मावंग मुनि वाधउं। मांसरसास्वादि करी सोदासि राजकुमारि वाधउं। प्राणलोभि करी प्राणप्रियकुमारि वाधउं। रूपरागि करी मधुवागणियइ वाधउं। शब्द तणइ संगि सुमद्रा श्रेष्ठिनी वाधउं। तिम तथा चउहिं कसाएहिं क्रोधमानमायालोभ ³⁰ छक्षणइं चउं कसायइं करी जु कर्म्यु वाधउं। जिम तीन्द्रोदयमाति क्रोधि करी मंडूकी क्षपकि वाधउं।

§ 386) 7 Bh. नंदि; 8 P. उड; 9 P. कुशा; 10 B. L. P. लियइ तउ; 11 Bh. P. तूय; 12 P. omits. 13 Bh. कुशा; 14 Bh. adds करी; 15 P. omits. 16 P. omits अति; 17 P. आपणी; 18 P. जायतउ; 19 P. परिप्रहृप्रमाणचनभयवसइतउ; 20 B. L. असत्य-मापणचन-; § 387) 1 P. विवेकता; 2 P. तुं; 3 P. adds किइ ।

अतिशयोदयप्राप्तिं मानिं करी जिम पशुंरामि वाधउं । अतितीव्रोदयप्राप्तिं मायागुणि करी जिम धनत्री वाधउं । अतिरुष्णोदय संगमि करी मम्मणि वाधउं । तिम किसां इंद्रियहं अनइ कसायहं करी क्मुं वाधउं इत्याह—‘अप्यसत्येहिं’ अप्रशस्तार्हं अस्थानप्रवृत्तहं तथा रागेण वा दृष्टिरागलक्षण्यु रागु तिणि करी । यदुक्तं—

5 कामराग-स्रोहरागावीपत्करनिवारणौ ।

दृष्टिरागस्तु पापीयान् दुरुच्छेदः सतामपि ॥

[४५७]

कामरागु क्षीरतिस्वरूप । स्रोहरागु मालुपित्तपुत्रपौत्रादिरतिलक्षण । ति वे ईपत्करनिवारण, किमत्र अर्थु ? सुरानिपेधनीय धर्मरतिपरायणहं अनेक जीवहं श्रीजंबूस्वामि जिम निवारितत्वइतउ । ‘दृष्टि-
10 रागस्तु पापीयान् दुरुच्छेदः सतामपि’ दृष्टिरागु मिथ्यादर्शनानुरागु ‘सतामपि’ साधुही रहइं ज्ञानदर्शन-
पारिव्रज्यंतर्ही रहइं दुरुच्छेदु दुक्खनिपेधु कष्टनिवारणीउ । परोद्धित पुत्रमपि सुद्धसंज्ञमपरिणामिहिं
मेतार्यजीव रहइं जिनेंद्रधर्मुं समस्तू प्रशस्यु पुणि जु अशुचि शरीर थिकां रहियइ सु एकु वरुयउं । इत्त
दृष्टिरागु दुर्निवारु हुयउ तेह नइ प्रभावि नीचातिनीचिं चंडालकुलि मेयकुलि ऊपनउ । तथा रागवदि
करी कामराग स्रोहराग पुणि जाणिवा तिणि रागि करी वा ‘दोसेण वा’ अप्रीतिरूपु द्वेषु तिणि करी जिम
गोष्ठामाहिलि वाधउं तिम जु क्मुं वाधउं सु क्मुं निंदउं गरिहउं । जे किमइ को कहइ इंद्रियादिकं
15 करी जु क्मुं वाधउं सु ज्ञानातिचारु किसी परि हुयइ । तउं कहियइ ज्ञान तणउं फलु विरति स
इंद्रियादिजयकरी हुयइ । तथा थ भणितं—

तज् ज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः ।

तमसः कुतोऽस्ति शक्तिर्दिनकरकिरणप्रतः स्यात्तुम् ॥

[४५८]

इति फल तणी अवहेलना करी ज्ञानातिचारु ।

20 §389) इंद्रियहं करी द्वादशविध अविरति सूचवी । तद्यथा—‘वारसविहा अविरइं मगइंरिय
अनियमो लक्ष्मणयदो’ इति । ‘चउरहिं कसायहिं’ पंचवीसकषाय नयनोकराय भेद सूचविया ।

तथा थ भणितं—

सोलस जाण कमाया, नव मेया नोकसायाणं ।

कोदो भाणो माया लोमो, चउरो य हुंति चउमेया ॥

25 अण अपचकखाणा पचकखाणा य संजलणा ॥

[४५९]

जल-रेणु-पृढवि-पघयराईमरिसो चउव्विहो कोदो ।

तणमलपा-कठ-उट्टिप-सेलरथभोवमो भाणो ॥

[४६०]

भापावनेह-गोमुत्ति-मिदमिग-पणउंममूलममा ।

लोहो हलिह-कदम-उंजण-किमिरागमारिच्छो ॥

[४६१]

30 माया लोम वे निद्रिया रागु कहिइं । क्रोध मान वे मिलिया द्वेषु कहियइं । तउ पाठइ ‘पउरहिं
कमाउरहिं’ इतिहिं ति करी राग द्वेष वे लाया । किमइ कारणि वळी ‘रागेण व दोसेण थ’ एउ कहियइ ।
इमउं न कहियुं । पूर्वहिं एहिं एहिं करी कर्मवंधु कहिउ । ‘रागेण वा दोसेण वा’ इति करी विदुं विदुं
करी कर्मवंधु कहिउ ।

§390) अथवा 'दृष्टिरोगे वा' इति कृते मिथ्यात्वसूचा कीयी । सु पुणि मिथ्यात्वु पंचप्रकारु हुयइ । अभिप्रदि एकांति' निश्चयि कृते हुयइ सु आभिप्रदिक् । सु पुणि प्राइहिं मिथ्यादर्शनवंतहं पीशिवहिं जि रहइं हुयइ । १ । अनभिप्रदि एकांत अनिश्चयि कृते हुयइ सु अनाभिप्रदिक् । सु पुणि सामान्यमिथ्यात्वयंतहं जनहं रहइं प्राइहिं हुयइं । २ । अभिनिवेदि अहंकारि कृते हुयइ सु आभिनिवेदिक् । सु मिथ्यात्वु निन्दवहं रहइं हुयइं । ३ । संशयि कृते हुयइ सु सांशयिक् । संत जि छइं ६ जीवादिकपदार्थ तीहं नइं विपइ संशयलगी हुयइ । ४ । अनाभोगु अज्ञानु तिणि कृते हुयइ सु अनाभोगिक् । पृथिवीकायादिकहं विकलेंद्रियहं असंज्ञियहं समूर्च्छिम पंचेंद्रियावसानहं सर्वही जीवहं रहइं हुयइ सु अनाभोगिक् । ५ । तथा च भणितं-

आभिगाहियं अणभिगाहियं, तह अभिनिवेसियं चैव ।

संसदयमणाभोगं, मिच्छतं पंचहा एव ॥

[४६२] 10

तथा हास्य १ रति २ अरति ३ जुगुप्सा ४ भय ५ शोकलक्षण छ नोकसाय पुरुषवेद स्त्रीवेद सपुंसकवेद लक्षण त्रिन्दि नोकसाय सप्यइ मिलिया नव नोकसाय कहियइं । तथा आगइ 'कापण' इत्यादि कृते योग साक्षात्कारिहिं जि कहीसिइं । तउ पाछइ 'अं वद्धमिदिपहिं' इणि गाहा कृते संपूर्ण कर्मबंध-कारण भणियां । तद्यथा-

बंधस्त मिच्छ ५ अविरइ १२ कसाय २५ जोगु ति १५ हेयवो चउरो ।

पंच दुवालस पणवीस पन्नरस कमेण भेया तिं ॥

[४६३] 15

मिथ्यात्व ५ पूर्वहिं भणियां । अविरति १२ पूर्वहिं भगी । कपाय नोकसाय पंचवीस पूर्वहिं भणिया । जोग १५ भणियइं ।

सचं मोसं भीसं असचमोसं भणं तह वई य ।

उरलविउव्याहारा मीसा कम्मइग मिय जोगा ॥

[४६४] 20

जिनोक्तू जीवादितत्त्वचिंता प्रवृत्तु साचउं मनु १ । मिथ्याशास्त्रचिंता परिणतु मनु मृषामनु २ । कूडउं मनु इति पर्यायः । लोकव्यवहारचिंताप्रवृत्तु मनु सत्यमृषु मिथु मनु ३ । शून्यतापतितु असत्यामृषु मनु न साचउं न कूडउं ४ । एवं वचनु पुणि चउभेदि । जीवादितत्त्व सन्नभंग प्रतिपादकु सत्यु वचनु १ । मिथ्याशास्त्रार्थ प्रतिपादकु असत्यु वचनु २ । लोकव्यवहारभाषाप्रतिपादकु निश्चितु सत्यासत्यु वचनु ३ । स्वाभावस्थावचनु मदावस्थावचनु सर्वया शून्यतापतित मन जीव तणउं वचनु असत्यामृषु न साचउं न 25 कूडउं वचनु । ४ ।

तथा औदारिक वैक्रिय आहारक औदारिकमिश्र वैक्रियमिश्र आहारकमिश्र कर्मणलक्षण सात काय ।

एवं मन वचन काय सञ्चइ मिलिया पनरह जोग एतलइ सत्तावन कर्मबंध हेतु भणिया । ईहं माह 'अप्यस्त्येहिं' इणि कृते कीजइ । पापबंधहेतु जूजूया कृते तत्कृत कर्मबंध तणउं प्रतिक्रमणु 'तं निंदे तं च गरिहामि' इणि कृते कीजइ । ज्ञानातिचार प्रतिक्रमणु भणितं ।

30

§391) संप्रति सत्यकत्यातिचार प्रतिक्रमणु अनेइ चहुदर्शन प्रतिक्रमणु भणइ ४ ।

आगमणे निगमणे, ठाणे चंक्रमणे अणाभोगे ।

अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥

[४६५]

§ 395) धम्मा धम्मागासा तिय तिय मेया तहेय अद्धा य ।

खंघादेस पएसा परिमाणु अजीव चउदसहा ॥

[४७१]

धर्मास्तिकायद्रव्यु अमूर्तुं लोकव्यापकु परिणामिनित्यु । जीवाजीवगति करी अनुमान प्रमाण
गोचरु छद्मस्यै रद्दं । तथा हि—

लोकु धर्मास्तिकायद्रव्य सहितु । जीवाजीवगतिजुक्त्वइतउ । जु धर्मास्तिकायद्रव्य सहितु' न ६
हुयई सु जीवाजीवगति सहितु पुणि न हुयई जिम अलोकाकाशु । जीवाजीवगति जुक्त्तु लोकु तिणि
कारणि धर्मास्तिकायद्रव्य सहितु । एह जु अर्थु भणित । यथा—

जीवानां पुद्गलानां च, गत्युपटंभकारणम् ।

धर्मास्तिकायो ज्ञानस्य, दीपश्चक्षुष्मतां यथा ॥

[४७२]

तथा अधर्मास्तिकायद्रव्यु पुणि अमूर्तुं लोकव्यापकु परिणामिनित्यु जीवाजीवस्थिति करी अनुमान 10
प्रमाण गोचरु छद्मस्यै रद्दं । तथा हि लोकु अधर्मास्तिकायद्रव्य सहितु जीवाजीवस्थिति सहितत्त्वइतउ
जु अधर्मास्तिकायद्रव्यजुक्त्तु न हुयई सु जीवाजीवस्थिति सहितु पुणि न हुयई । जिम अलोकाकाशु ।
जीवाजीवस्थिति सहितु लोकु तिणि कारणि अधर्मास्तिकाय द्रव्य सहितु । तथा च भणितं—

जीवानां पुद्गलानां च, स्थित्युपटंभकारणम् ।

अधर्मः पुरुषस्यैव, तिष्ठसोरोरयनिः समा ॥

[४७३] 15

§ 396) आकाशु पुणि अमूर्तुं लोकालोक व्यापकु परिणामिनित्यु सु पुणि अवकाशलिगगम्यु ।
तथा च भणितं—

जीवानां पुद्गलानां च, धर्माधर्मास्तिकाययोः ।

चदराणां घटो यद्द्रदाकाशमवकाशदम् ॥

[४७४]

ए त्रिन्दइ द्रव्य देश प्रदेश भेदइतउ त्रिविध । तथाहि ।

धर्मास्तिकायद्रव्यु । धर्मास्तिकायदेश । धर्मास्तिकायप्रदेश । एवं अधर्मास्तिकायद्रव्यु । अधर्मा-
स्तिकायदेश । अधर्मास्तिकायप्रदेश । तथा आकाशास्तिकायद्रव्यु । आकाशास्तिकायदेश । आकाशा-
स्तिकायप्रदेश । एवं नव अजीवभेद । दशमउ 'अद्धा' कालु स्कंध । देश प्रदेश केवल परमाणुभेदई करी
पुद्गल चउं भेदे । ति पुद्गल मूर्त्तिमंत स्पर्श रस गंध वर्ण शब्द स्वभाव संघात विघात संजात जिनई
कहिया । तथा च भणितं—

स्पर्शरसगंधवर्णशब्दा मूर्त्तस्वभावजाः ।

संघातभेदनिष्पन्नाः पुद्गला जिनदेशिताः ॥

[४७५]

सर्वे मिलिता चतुर्दश अजीवभेद हुयई । एह जु अर्थु भणइ—

धम्माधम्मा पुद्गल नह कालो पंच हुंति अजीवा ।

चलसंठाणो धम्मो थिरसंठाणो अहम्मो य ॥

[४७६] 30

एह नउ अर्थु पूर्वगाह नइ अर्थि भणीतइ सगळ भणित ।

अवगाहो आगासं पुग्गलजीवाण पुग्गला चउहा ।

खंघा देस पएसा, परमाणु चेव नायव्वा ॥

[४७७]

मिच्छादंसणवित्ती ९ अपचक्खाण १० दिट्ठि ११ पुट्ठी १२ य ।

पाडुचिय १३ सामंतोवणिय १४ ज्ञेसट्ठि १५ साहत्थी १६ आणयणिय १७ ॥ [४९४]

वियारणिया १८ अणमोगा १९ अपचकंमपचइया २० ।

अन्ना पजोग २१ समुयाण २२ पिज २३ दोसे २४ इरिघावहिपा २५ ॥ [४९५]

- 5 तत्र ज कायि करी कीजइ स काइकी क्रिया १, अधिकरणि पद्धारिकि करी ज कीजइ स आयि-
करणिकी क्रिया २, प्रद्वेपि प्रकृष्टकोपि करी ज कीजइ स प्राद्वेपिकी क्रिया ३, अनेरां प्राणियां तणइ
परितापि कट्ठि करी ज कीजइ स परितापनिकी क्रिया ४, प्राणातिराति जीवविनासी करी ज कीजइ
स प्राणातिपातिकी क्रिया ५, आरंभि पृथिवीकायागुपघानि करी ज कीजइ स आरंभिकी क्रिया ६,
परिग्रहि मूच्छापरिणामि करी ज कीजइ स पारिग्रहिकी ७, मायाप्रत्यया मायानिमित्ता क्रिया ८, मिष्याल-
- 10 प्रत्यया मिष्यात्वहेतुका ९ संवमविघातकारि कपाय तणउं प्रत्याक्यानु परिहारु जिणि क्रिया कीजती हुंती
न हुयइं स अग्रप्रत्याख्यान क्रिया १०, रागद्वेषमहित दृष्टिक्रिया दृष्टि ११, रागपूर्व स्त्रीकाय संस्पशंलक्षण
सृष्टि क्रिया १२, प्रतीति पूर्वकोत्पन्न क्रोधादि क्रियास्यानु तेह आश्रया करी ज क्रिया कीधी स प्रातीतिकी
१३, समंतइतउ सामस्यइतउ उपनिपातु आगमनु स्त्री पशु प्रभृतिकहं जीवहं तणउ जिहां हुयइ सु स्वातु
समंतोपनिपातु कहियइ । तिहां ज क्रिया हुयइ स सामंतोपनिपातिकी १४, निस्सट्ठि सहजु तिणि करी ज
- 15 क्रिया हुयइ स निस्सट्ठिकी १५, चिरकाल सेवित पापानुपानविपइ जु स्वाभावइतउ अनुज्ञानु स नैसट्ठिकी
१५, आपणइ हाथि कीधी स्वाहस्तिकी अतिकोपवसइतउ अन्य पुरुषसाध्य ज क्रिया आपणइ हाथि कीजइ
स स्वाहस्तिकी १६, आनयनि करी नीपनी आनयनिकी स पुणि भगवंति वीतरागि भणियां छइं जीवादि-
तत्त्व तीहं तणउं आपणी बुद्धि करी अनेरइ प्रकारांतरि करी आनयनु प्ररूपणु तिणि करी निष्पन्न आनय-
निकी १७, विदारणु परहं रहइं अग्रकाययु हुयइ तेह नउं प्रकाशनु तिणि करी निष्पन्न वेदारणिकी १८,
- 20 अनवमोगा अग्रप्रत्युपेशित अग्रमार्जित दुःप्रमार्जित प्रदेसि अज्ञानभावि शरीरादि निक्षेप लक्षणक्रिया १९,
अनवकांश क्रिया जिनोक्तानुपान विपइ प्रमादवशवर्त्तिता करी अनादर क्रिया २०, प्रयोगु धावन बलगा-
दिहु क्वाचव्यापारु । जीवपीडाफरखु पुरुषपाक्यादिहु वचनव्यापारु । द्रोहेर्ष्याभिमानादिहु मनोव्यापारु । देह
नइ करणी करी नीपनी प्रायोगिकी २१, समुदातु इंद्रिउ तेह नी क्रिया देशसर्वोपभाररूपु व्यापारु स समुदा-
नक्रिया २२, 'पिज' प्रेम प्रत्ययक्रिया २३, 'दोसे' द्वेष प्रत्ययक्रिया २४, ईरणं ईर्यां गमनु तिणि उपलक्षितुं
- 25 पशु मार्गु ईर्यांपशु तिहां ज जीवपातादिक क्रिया स ईर्यांपथिकी क्रिया कहियइ । २५ ए पंचवीस क्रिया ।
मन वचन काय त्रिन्दि जोग कहियइं, प्राणातिपात १ सृपावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५
प्रमाणता लक्षण पांच अणुव्रत कहियइं । क्रोध मान माया लोभ नाम चत्तारि कपाय कहियइ ।
फरसन रसन प्राण चक्षुः श्रवण नाम पांच इंद्रिय कहियइं । सर्व मीलनि बइतालीस आग्रवमेद
कहियइं ।

30 § 401) अथ संव्रभेद लिखियइं ।

समिई ५ गुचि ३ परीसह २२ जइधम्मो १० भावणा १२ चरित्ताणि ५ ।

पण-ति-दुवीस-दस-चार-पंचमेण्हिं सगवन्ना ॥

[४९६]

समिति गुप्ति पृथिदि जिम भणी विमहिं जि जाणवी ।

२२५६५

सुहा १ पिजासा २ सी ३ उण्हं ४ दंसा ५ ५ चेला ६ इरु ७ त्थिय ८ ।

35

चरिया ९ निसीहिया १० सिजा ११ अकोस १२ बह १३ जायणा १४ ॥ [४९७]

अलाभ १५ रोग १६ तणफासा १७ मल १८ सत्रार १९ परीसहापत्रा २० ।

अज्ञान २१ संवत् २२ इय वाचीमे परीसहा ॥

[४९८]

अथा 'सुहा' इत्यादि । 'सुहा' भूय मर जि परीपदु तप तणइ कारणि अनेपणवि अनुसुद्धिंठ परिहार कारणि सुनिहिं परीसहियं । इति कारणि सुहा परीपदु १ । 'पिवासा' जलपान वांडा । पुणि प्रातुकमल तणइ अलाभि' सुनिहिं परिमहियइ अहियासियइ तिणि कारणि विवासा परीसहु २ । आतापना ३ निमिनु भातमदनु भात परीपदु ३ । तापमदनु उष्णपरीपदु ४ । 'दस' दांन मगसा चउरिन्द्रिय जीवविशेष वंम नि उपलक्षणु । अनेराइ जि के जूका मन्कूण मक्षिका पिपीलिका सुलहलादिक जीवि ति पुणि जाणिया इत्सादिक जीव, जेनीगर शरीरि विलगइ तेनीगर तीहं ऊररि द्वेय तणइ अकरणि पीडा तणइ अहियासनि तीहं जीवइ तणइ अजिगरणि भय तणइ अकरणि देसपरिपदु जाणियउ ५ । 'अचेल' चरत्रसंपत्ति तणइ अभावि भाविहिं शोभादि परिहार निमिनु जीर्णमलिनदि यत्नपरिधानि देन्यमाइ तणइ अकरणि आकांक्षा १० तणइ अभावि अचेल परीपदु ६ । अरिनि मोहनीय कर्मादयमइतउ चिसविकाइ तेह तणइ निपेधि अरिनि परीपदु ७ ।

स्त्री तणउं परिपदु तस्त्रिपेक्ष भावि करी रहणु ब्रह्मचर्य प्रतिपालनु स्त्री परीपदु ८ ।

चर्यां घाम गगणदिकहं अमतिबद्धभावि करी विहार करणु तेह नउं परिपदुणु चर्यां परीपदु ९ ।

नेपेधिकां स्वाध्यायमूभि धन्यगृहादिक तेह नउं परिपदुणु उपसर्गभाविहिं भय तणउं अकरणु १५ नेपेधिकां परीपदु १० ।

दाय्या वमनि तेह नउं परिपदुणु निदां जु दुक्खु तेह तणी उपेक्षा दाय्या परीपदु ११ ।

आकांक्षु दुर्घर्षनादिक तेह नउं परिपदुणु आकांक्षा परीपदु १२ ।

व्ययु अथवा संयु देहादिताटनु तेह नउं परिपदुणु यध परीपदु १३ ।

दाट्या मिहा तेह नउं परिपदुणु मानवर्जनु १४ ।

अलाभु मन्कादिकहं तणी अभापित तेह नउं परिपदुणु वीनताभाव तणउं अभाभु १५ ।

रोगु व्याधि तेह नउं परिपदुणु पीडासहनु चिकित्सापरिवर्जनु वा रोग परीपदु १६ ।

तृण इर्मादिक सीहं नउं स्पर्शुं तेह नउं परिपदुणु । संस्तरकादिनिमिनु तृणमदणु तृणस्पर्श कर्कशता महनु स्पशो परीपदु १७ ।

मर्वनी देहानो वा स्नानोद्धर्त्तनादिवर्जनु मल परीपदु १८ ।

मन्कान यत्रादिपूजापूर्वकु ररभावि कृताभ्युत्थानादिकु तेह नउं परिपदुणु तेह नइ संभविहिं आत्मोत्कर्षणिवर्जनु मन्कार परीपदु १९ ।

प्रज्ञा मनि तेह नइ अभावि उद्वेग तणउं अकरणु प्रज्ञा तणइ संभविहिं हंतइ मइवर्जनु प्रज्ञा परीपदु २० ।

ज्ञानु मत्यादिकु तेह नइ अभावि उद्वेग तणउं अकरणु विदाट्टता संभवि मइ तणउं अकरणु, अभावि ईनिता परिवर्जनु ज्ञानपरीपदु २१ ।

मन्यइत्यु तत्रअद्धानु तेह नउं परिपदुणु जिनंद्रहं विपर प्राणातिपातादि विरत शूरहं विपरं जिनोक जीवादित्रतरहं विपर अद्धानु तथा भाव तणउं अमननु तेह तणउं वर्जनु सम्यक्त्व परीपदु २२ ।

इति वाचीस परीपदु आठ अनइ वाचीस त्रीम ॥

सर्तती १ य मद्व २ उज्जव ३ मुची ४ तव ५ संनमे ६ य बोपन्वे ।

सत्त्वं ७ सोयं ८ आर्किचणं ९ च र्धं च जइपम्मो १० ॥

[४९९] ३६

ज्ञानि क्रोधीपशामु १, माद्वेनु मानोपशामु २, आर्धुनु मायोपशामु ३, मुक्कि लोमोपशामु ४, तपु हाइदाविधु ५, संजमु मत्तरमेडु ।

यथा-

पंचाश्रवाद्विरमणं पंचेन्द्रियनिग्रहः ।

कपायजयः दण्डत्रयविरातिथेति संजमः^१ ॥ सप्तदशभेदः ॥

[५००]

सुगमा ६। सत्यु सन्नूतभावमाणु ७, शोशु-संजमातिचार यजंनु ८, आर्किचिन्नु ९, निशरिपयला ९,
५ 'बंधु'-ब्रह्मचर्युं १०, इति वशविधु यतिधर्मुं १०.

श्रीस अनइ दस चियालीस, भावना १२ मीलनि ५२ ।

पांच चारित्र यथा-

सामाइयऽस्थ पदमं, छेओवदुवावणं भवे धीयं ।

परिहार विमुद्दीयं, मुहुमं तह संपरायं च ॥

[५०१]

१० ततो य अहकवायं खायं, सव्यंमि जीवन्मोगंमि ।

जं चरिऊण सुविहिया, वच्चतिऽपरामरं ठाणं ॥

[५०२]

सामायिकु चारित्तु १, छेदोपस्थापनकु चारित्तु २, परिहार तपोविशेषु तेह जु चारित्तु परिहार-
विशुद्धि चारित्तु ३, यथा परिहरणं परिहार तपोविशेषु तिणि जि चरदं ति परिहारविशुद्धिक करियदं । ति
पुणि विहुं भेदे हुयदं । एकि निर्विशमानक । एकि निर्विष्टकायिक । तीहं विहुं माहि परिहार तप रहं जि
१५ आसेवक ति निर्विशमानक । जेहे पूर्वोहं परिहार तप आसेवित कंभउ हुयदं ति निर्विष्टकायिक ।

तथाहि-नयकु साधु गणु हुयद । तीहं माहि एकु कल्पस्थित वाचनाचायुं थापियह । धीजा वत्तारि
परिहारिक निर्विशमानक हुयदं । चत्तारि निर्विष्टकायिक हुयदं ।

परिहारियाण व नवो जहन्नु मउशो तेरेव उकोसो ।

सी वन्ह वासकाले भणिओ धीरेहिं पचोयं ॥

[५०३]

२० तीहं निर्विशमानकही अनइ निर्विष्टकायिकही तणउ तपु त्रिविधु शीतकालि उष्णकालि वर्षाकालि
धीरहं तीर्थकर गणहरं कहिउ । यथा शीतकालतपु १ उष्णकालतपु २ वर्षाकालतपु एकु एकु त्रिविधु
अधन्य मध्यम उत्कृष्ट भेदइतउ हुयद-तत्र उष्णकालतपु कहर-

तत्थ जहन्नो गिम्हे चउत्तु छट्टुं तु होइ मज्झिमओ ।

अट्टममिह उकोसो इत्तो सिसिरे पवस्वामि ॥

[५०४]

२५ सिसिरे व जहन्नाई छट्टाई दसमु चरमगो होइ ।

धासामु अट्टमाइ वारसपज्जंतगो नेओ ॥

[५०५]

उष्णकालि-अतिरूक्षता भावइतउ चतुर्थे जघन्यु तपु, छट्टुं मध्यसु तपु, अट्टमु उत्कृष्टु तपु ।

शीतकालि धीन्मइतउ किंचित् साधारणि छट्टु जघन्यु । अष्टमु मध्यमु दसमु उत्कृष्टु ।

तथा वर्षाकालि-शीतकालही'कन्हा अतिसाधारणि अष्टमु जघन्यु दसमु द्वादशसु मध्यमु उत्कृष्टु

३० पारणमे आयामं पंचसु गहो दोसुऽभिग्रहो भिवखे ।

कप्पट्टिया वि पइदिण करिति एमेवायामं ॥^२

[५०६]

पारणइ उन्हाले^३ सीयाले वरसाले तीहं रहइ आंविनु हुयद ।

401) 2 Note the Prakrit form in the Skt. verse. 3 Bh. शीतकालि ही ।

4 B. drops the vers. after mentioning पारणमे आयामं । 5 Bh. उन्हालेइ ।

तथा शेरद्वाराशेरद्वय प्रथम वि भिक्षा पत्नीं करी पीनी उगुताधिक पांच भिक्षा सातं नउं मनु मल्लु । निपना निपन मउं करेवउं । पुनरपि विनि विनि विनुं भिक्षा तणउ अमहु अमहणु करेवउं । किलउ अर्थुं । एव भिक्षा माहवण विउं भिक्षा लेवा तणउं अभिपनु इच्छानुतारि करिवउ । विदे जि भिक्षा मं लेवी इसी परि विउं इ एक म उ विरद एक पातरु विरद । एउ एउयविउ परिहारकदं तणउ तनु । जि पुणि कन्वविधत्तिक एव तौदं मादि एउ पापनायायुं चत्तारि अनुचारिया । जि पुणि इमीं ही जि परि भिक्षा- निपन मल्लि हंवा मनिदिनु आदिनु करं । इमी परि उ मास सीम तनु करी पाछर जि पारिहारिक ति अनुचारक हुयं उ मास सीम । जि अनुचारक ति पारिहारिक हुयं उ मास सीम । पाछर कवस्थितु पापना- यायुं उ मास सीम परिहार तनु कर । पीया भाउ जि पारिहारिक अनुचारक हुतौ तीदं माहउतउ एउ कन्वविधु पापनायायुं हुयं पीया माहउ अनुचारक हुयं मास उ सीम । इसी परि अद्वारो मासे परिहार तनु पुण । एउ तनु तीर्थकर कन्वर कीम अयम तीर्थकर कन्वर जिणि तीर्थक हुयं तेह कन्वर कीम । 10 मासिमाधुमासंभेदि कीम २ मून्मंभेदराय इममं गुणउणउं ।

तउ नु पारिनु मून्मंभेदराय पारिनु उ जयात्पान चारिनु फेउउहातायस्थमावि ५ ए पांच कारिण तीदं म मल्लि कीम पापन अनर पांच मत्तयन भेद संवर तणा हुयं ।

§ 402) अथ निर्मल अत्र संभेद विनियतं ।

भारमरिरो मरो निजरा य संभे य चउविगणो य । 15
 एग उइ अनुभाग पपमभेएहि नापयो ॥ [५०७]

काण्यभेद उ भंरंलभेद उ । ए पाठोउद निम्बउ । प्रकृतिबंधु १, स्थितिबंधु २, अनुभाग- बंधु ३, मंभेदबंधु ४. इतिचतुर्णां बंधु ।

यथा—
 स्वभावः मळुनिः मोक्तः स्थितिः कान्दावपारणम् । 20
 अनुभाषो रमो ज्ञेयः प्रदेसो दन्तसंचयः ॥ [५०८]

जद कमं नउ भिवउ मयमायु सु निमी परि बाधियर । एउ स्वभावु बंधु ॥

यथा—
 पद पठिहार मि मज्जा ददि चित्तकुलाल भंडगारीणं ।
 नह एएमिं भावा कम्माण वि जाण नह भावा ॥ [५०९] 25

निर्मल इ एउि पठि आरदी हुंती । जिम देलर कारि नदी । जिम क्षानायरणि आभरिउ हुंतउ जीवु हालमवि हुंतौ इ जाणर कारि नदी । इणि कारणि पद सद्भावु क्षानायरणु कमुं १ । जिम पठिहार जेद रदरं मादि न मेरुदर तेह एरं राजा देवणक्षर हुंतउ देवइ मदीं । जिम वर्णनावरणि करो आवरिउ हुंतउ जीवु सर्वे यन्नु मामान्यज्ञानगद्गए हुंतउ मामान्यज्ञान रदिउ हुयइ । इणि कारणि पठिहारसद्भावु दर्शनावरणु कमुं २ । जिम मधुलित तीक्ष्ण गद्गधारा जीम करी लिहीती हुंती पहिलउं मधुरास्वाद्गयक हुयइ पाछर छेडाधान 30 हेनु करी कउद्गयक हुयइ निम सातोवेदनीय कमुं सुपदेउ अमातोवेदनीय कमुं दुम्बेदेउ हुयइ जिणि कारणि मधुलितगद्गधारासद्भावु वेदनीय कमुं ३ ।

401) G B. omits. 7 Bl. omi. वरि । 8 Bl. omits उ मास सीम ।
 § 402) 1 Bb. puts उ initially in both the cases.

जिम मधु पीधउं सचेतनावस्था फेउइ अचेतनावस्था करइ तिम मोहनीउं कर्मु जीव रहइ चारित्रं
चेतना अपहरइ । अचेतना करइ तिणि कारणि मधुगानसज्ञावु मोहनीउं कर्मु ४ ।

जिम चोद हट्टि घातिक हट्टि वियोग पारइ झूटइ नली तिम आयुःकर्म तणइ सज्ञावि जीउ
मयांतरि जाई न सकइं तिणि कारणि जिसउ हट्टि सज्ञावु निमउ आयुःकर्म सज्ञावु ५ ।

5 जिसउ चित्रकर नउ सज्ञावु तिसउ नामकर्मतणउ सज्ञावु ६ ।

जिसउ कुंभकार सज्ञावु तिसउ गोत्राकर्म सज्ञावु ७ ।

जिसउ भंडारी तणउ सज्ञावु तिसउ अंतरायकर्म तणउ सज्ञावु ।

तथा च भणितं—

10 सरउग्य ससिनिम्मलयरस्स जीवस्स छायाणं जपिह ।
नाणावरणं कम्मं पढोवमं होइ एवं तु ॥ [५१०]

जह निम्मला वि चक्खु पडेण केणावि छाइया संती ।
मंदं मंदतराणं पिच्छइ सा निम्मला जइवि नाणावरणं ॥ [५११]

जह राया तह जीवो पडिहारसमं तु दंसणावरणं ।
तेणि इ विबंधणं न पिच्छए सो घडाईयं ॥ दंसणावरणं ॥ [५१२]

15 महुलित्त निसियकरवालधार जीहाइ जारिसं लिहणं ।
तारिसयं वेयणिय सुहदुह जप्पायगं मुणइ ॥ [५१३]

महुआसायण सरिसो सायावेयस्स होइ हु विवागो ।
जह असिणा तहिं छिज्जइ सो उ विवागो असायस्स ॥ वेयणीयं ॥ [५१४]

20 जह मज्जपाणमूढो लोए पुरिसो एख सो होइ ।
तह मोहेण वि मूढो जीवो वि पक्खसो होइ ॥ [५१५]

मोहेइ मोहणीयं तंपि समासेण होइ दूविहं तु ।
दंसणमोहं पदमं चरित्तमोहं भवे चीयं ॥ [५१६]

दंसणमोहं तिविहं सम्मं मीसं च तह य पिच्छत्तं ।
सुद्धं अद्धविसुद्धं अविमुद्धं तं जहा कमसो ॥ [५१७]

25 केवलनाणुवल्लदे जीवाइ पयत्थ सदहे जेण ।
तं समत्तं कम्मं सिवसुद्धं संपत्ति परिणामं ॥ [५१८]

रागं नवि जिणधम्मो नवि दोसं जाइ जस्स उदणं ।
सो मीसस्स विवागो अंतमुहूत्तं हवइ कालं ॥ [५१९]

33 जिणधम्मंमि पओसं, वइइ य हियए ण जस्स ।
उदणं तं पिच्छत्तं, कम्मं संकिट्ठो तस्स उ विवागो ॥ [५२०]

नं पि य चरित्त मोहं तं पि हु दुविहं समासओ होइ ।
सोअस जाण फसाया नवभेया नोकसायाणं ॥ [५२१]

- कोहो माणो माया लोभो, चडरो वि हुंति चडभेया ।
अण अपचक्खवाणा, पचक्खवाणा य संजलणा ॥ [५२२]
- कोहो माणो मायालोभो, पट्ठा अणतवंधीओ ।
एयाणुदए जीवो, इह संमत्तं न पावेइ ॥ [५२३]
- कोहो माणो माया लोभो, धीया अपचक्खवाणाओ ।
एयाणुदए जीवो, विरयाविरयं न पावेइ ॥ [५२४] 5
- कोहो माणो माया लोभो तइया च पचक्खवाणाओ ।
एयाणुदए जीवो, पावेइ न सव्व विरइं तु ॥ [५२५]
- कोहो माणो माया लोभो, चरमा च हुंति संजलणा ।
एयाणुदए जीवो न लइइ अहंनखाय चारित्तं ॥ [५२६] 10
- नव नोक्कसाय भणिमो, वेया तिभेय हास उक्कं च ।
इत्थी-पुरिस-नपुंसग तेसि सख्वं इमं होइ ॥ [५२७]
- पुरिसं पइ अहिलासो, उदएणं होइ जस्स कम्मस्स ।
सो कुंकुम दाह समो इत्थी वेयस्स च विवागो ॥ [५२८]
- इत्थीए पुण उवरिं जस्सुदएणं तु रागमुप्पज्जे ।
सो तण दाह समाणो होइ विवागो च पुमवेए ॥ [५२९] 15
- इत्थी पुरिसाणुवरिं, जस्सुदएणं तु रागमुप्पज्जे ।
नगर मही दाह समो, जाण विवागो अपुमवेए ॥ [५३०]
- सनिमित्त निमित्तं वा जं हासं होइ इत्थ जीवस्स ।
सो हास मोइणीयस्स होइ कम्मस्स च विवागो ॥ [५३१] 20
- सच्चित्ता चित्तेसु य वाहिर दव्वेसु जस्स उदएणं ।
होइ रईरइ मोहे सो च विवागो पुणेयव्वो ॥ [५३२]
- सच्चित्ताचित्तेसु य वाहिरदव्वेसु जस्स उदएणं ।
अरइ होइ ह्य जीवे सो च विवागो अरइमोहे ॥ [५३३]
- भय वच्चिरयमि जीवे जस्सिह उदएण हुंति कम्मस्स ।
सत्त भयट्ठाणाइं भयमोहे सो विवागो च ॥ [५३४] 25
- सोय रहिरयमि जीवे जस्सिह उदएण होइ कम्मस्स ।
अइंइणा इ सोगो तं जाणह सोग मोहणियं ॥ [५३५]
- दुग्गंध मळिणंगेसु य अन्भितर वाहिरिसु दव्वेसु ।
जेण विलीयं जीवे उप्पज्जइ सो दुगुंच्छाओ ॥ मोदनीइ ॥ [५३६] 30
- दुक्खं न देइ आउं न वि य सुहं देइ चउसु विगईसु ।
दुक्खसहाणाभारं धरेइ देहट्ठियं जीवं ॥ आयुःकम्मं ॥ [५३७]

- जह चित्तयरो निरुणो अणेगरुवाइं कुणइं रुवाइं ।
सोइणमसोइणाइं, चुक्खानुक्खेहिं वदेहिं ॥ [५३८]
- तह नामपि य कम्मं अणेगरुवाइं कुणइं जीवस्स ।
सोइणमसोइणाइं इद्धानिद्धानि लोयस्स ॥ नामकम्मं ॥ [५३९]
- 5 जह इत्थ कुंभकारो पुटवीए कुणइं परिमं रुवं ।
जं लोयाओ पूयं पावइं उह पुन्न कल्हसाइं ॥ [५४०]
- भुंभुल्लमाइं अर्भं सुत्थिय पुटवीइं कुणउं रुवं तु ।
जं लोयाओ निंदं पावइं अरुए वि मज्जेमि ॥ [५४१]
- एवं कुलालसमाणं गोयं कम्मं तु होइं जीवस्स ।
10 उच्चा नीय विवागो जह होइं तहा निसामेइ ॥ [५४२]
- लोयंमि लहइं पूयं उच्चागोयं त यं होइं ।
सधणो रुवेण जूओ बुद्धीनिरुणो वि जस्स उदएणं ॥ [५४३]
- अधणो बुद्धिविहीणो रुवविहीणो वि जस्स उदएणं ।
लोयंमि लहइं निंदं एयं पुण होइं नीयं तु ॥ गोवुकुप्पुं ॥ [५४४]
- 15 जह राया इह भंडारिएण विणएण कुणउं दाणाइं ।
तेण उ पडिकूलेणं न कुणइं सो दाणमाइंणि ॥ [५४५]
- जह राया तह जीवो, भंडारी जह तहंतरायं तु ।
तेण उ वि बंधएण न कुणइं सो दाणमाइंणि ॥ अंतरायकम्मं ॥ [५४६]

एउ स्वभावुबंधु प्रकृतिबंधु कहियह ।

- 20 जेह कर्म नी जित्ती स्थिति छर सु कर्मुं तिसी स्थिति करी बांधियह एउ स्थितिबंधु कहियह ।
जेह कर्म नउ जितउ रसु छर सु कर्मुं तिसर रसि करी बांधियह एउ अनुभाग बंधु कहियह ।
जेह कर्म रहइं जेतला कामेण वर्गणा गृहीत पुटल कहिया छरं सु कर्मुं तेतडे कर्म वर्गणे पुटले की
बांधियह एउ प्रदेसाबंधु कहियह ।
इति सामान्यहिं चतुर्विध कर्मबंध तणउं स्वरूपु कहिउं । विशेषरतउ कर्मबंध विचार वसरतउ
25 जाणियउं ।

इति ह्यवशविध निजंरा । चतुर्विध कर्मबंध तणउं स्वरूपु भणिउं ।

§ 403) अथ मोक्षतत्त्व तणा नय भेद लिखियहं ।

संतपय परुवणया १ दव्यपमाणं २ च खिन्नफुसणा ३ य ।

फालो ४ य अंतरं ५ भाग ६ भाव ७ अप्पा ८ वहुं ९ चेव ॥ [५४७]

- 30 संतिपदानि सत्यदानि । ति पुणि गत्यादिक् । यथा-

गइ १ इंदिए २ य फापे ३ जोगे ४ वेए ५ कसाय ६ नाणे ७ य ।

संजम ८ दंसण ९ जेसा १० भवि ११ सम्मे १२ सच्चि १३ आहारे १४ ॥ [५४८]

तत्र गति चत्तारि—देवगति १, मनुष्यगति २, तिर्यक्षगति ३, नरकगति ४, पंचमी मुक्तिगति ५ ।
इंद्रिय पांच—करसन १, रसन २, प्राण ३, चक्षु ४, श्रवण ५, उपलक्षण तउ एकेंद्रियजाति, वैन्द्रियजाति

त्रोद्रीयजाति चउरिन्द्रियजाति पंचेन्द्रियजाति पुणि जाणिवी । काय छ—इथिवीकाय १ अप्काय २ तेउकाय ३ वाउकाय ४ वनस्पतिकाय ५ ज्ञासकाय ६ लक्षण । जोग— मन वचन काय रूप जिह्नि ।

वेद— पुरुषवेद स्त्रीवेद नपुंसकवेद रूप जिह्नि ।

कसाय—काथ मान माया लोभ रूप वत्तारि ।

ज्ञान—मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनःपर्यवज्ञान केवलज्ञान लक्षण पांच । तथा-

आभिनवोदीनाणं सुयनाणं चैव ओद्दिनाणं च ।

तद् मणपज्जवनाणं फेवलनाणं च पंचपर्यं ॥

[५४९]

आभिनवोधिकज्ञानु मतिज्ञानु तेह तणा अट्टाधीस भेद यथा-अर्थ अनर इन्द्रिय रहई संबंधु एउ व्यंजनावमहु कहियइ ।

सु पुणि चउं भेदे फरस फरसनेंद्रिय संबंधु १, रस रसनेंद्रिय संबंधु २, घ्राणघ्राणेंद्रिय संबंधु ३ 10
शब्द ध्रुपणेंद्रिय संबंधु ४ । चधुरिन्द्रिय अनर मन बिहुं रहई अर्थ सउं संबंधु हुयइ नही इणि कारणि व्यंजनावमहु चतुर्था हुयइ । तथा च भणितं-

पुट्टं सुणेइ सई रूवं पुण पासई अपुट्टं तु ।

गंयं रसं च फासं च वद्धपुट्टं वियागरे ॥

[५५०]

अर्थावमहु सामान्यज्ञानु सु पुणि छ ए भेदे । पांच इन्द्रिय छट्टउं मनु तीह करी अर्थ सामान्य धर्म 15
विचारणि हुंतइ ।

किंचित् रूपु । कोपि रसु, कोपि गंधु, कोपि फरसु कोपि सहु इसी परि पांचे इन्द्रिये करी हुयइ ।
मनि करी पुणि इसी परि पांचहीं विषयहं विषइ सामान्यार्थे विचारु हुयइ इति अर्थावमहु छए भेदे ।

तथा ईहा पुणि छ ए भेदे इसी ही जि परि हुयइ । नवरं ईहा^१ वितर्कुं कहियइ । सु पुणि वितर्कुं
उभयकोटि फरसी हुयइ । 20

यथा किंचित् रूपु इसउ जु छइ । अर्थावमहु तेह नउं अनंतरकालि किं पुरुषरूपं किं वा स्त्रीरूपं ।
इसी परि 'एवं रसे गंधे फरसे सहे च' यथा—कोपि रसु एह अनंतरकालि मधुरो वा कटुको वा । इसी परि
कोपि गंधु एह अनंतरकालि असुरभि वा सुरभि वा । इसी परि कोपि फरसु एह अनंतरकालि शीतो वा
उष्णो वा । इसी परि कोपि सहु एह अनंतरकालि शंस संबंधी वा भेरि संबंधी वा । इसी परि पांचहीं
इन्द्रियहं करी पंच प्रकारे ईहा हुयइ । मन एकलाई रहई सविहं विषयहं विषइ इसी परि ईहा^२ संभवइ । इति 25
ईहा^३ तणा छ भेद हुयइ । तथा अपोह पुणि छए भेदे सु पुणि एक कोटि फरसी । यथा—पुरुषहीं जिनउं रूपु
अथवा स्त्रीहीं जिनउं रूपु । इसी परि एवं मधुरु जु रसु अथवा कटुकु जु रसु । इसी परि असुकु जु गंधु
अथवा सुरह जु गंधु । इसी परि एवं शीतलु जु फरसु अथवा अशीतलु जु फरसु । इसी परि एवं शीतस्वरु^४
अथवा भेरिस्वरु इसी परि एवं मन एकलाई रहई पांचहीं विषयहं विषइ अपोहु रूपजइ इति अपोह तणा छ
भेद । एवं धारणा पुणि छए भेदे । अपोहि करी जु अर्थु निश्चितु कौधउ हुयइ सु अर्थु सज्ञा जु मन माहि 30
परियइ स धारणा । स पुणि पांच इन्द्रिय छट्टउं मनु तीहं करी छए भेदे हुयइ ।

इसी परि मतिज्ञान तणा अट्टाधीस भेद हुयइ । अर्थावमहु ईहा अपोह धारणा ईहं चउहं तणा
मत्येक प्रत्येक छ छ^५ भेद एवं चउवीस भेद ।

चत्वारि ध्यंजनात्मका तथा भेद इति अद्वयीति भेदः ।

अर्थ भ्रुवजातभेद लिखियरं ।

अथाश्रु १. अनशाश्रु २. साक्षिश्रु ३. अनाक्षिश्रु ४. सांतुश्रु ५. अनेंतुश्रु ६. गमिश्रु ७. अगमिश्रु ८. अंगमिश्रु ९. अनेंगमिश्रु १०. सम्यकश्रु ११. असम्यकश्रु १२. संश्रु १३. अनेसंश्रु १४। तथा च मज्जिने-

अश्रु मत्री सम्मं सार्थं खलु स पञ्चसिप्यं च ।

गमियं भंगमिश्रुं मत्तं नि एए स पडिचस्सा ॥

[५५१]

तदा अथा ध्वज दृशेनतं करी अर्थमेतीति निमित्तु अक्षरश्रु १ । शिरःकंप हस्तपालनादि गतं
 शिथिल भावगतं कालादि एतं निशासं एत इमी परि लु बुद्धिनिमित्तु सु अक्षर श्रु २ । सम्यक्त्वगतं
 १०. गतं भावगतं कालादि एतं ज्ञानात्मक साक्षिश्रु ३ । अज्ञानात्मक सम्यक्त्वश्रु मियाडिपि एतं साक्षि
 श्रु ४ । अज्ञानात्मक मियाडिपि एतं अज्ञानात्मक अनाक्षिश्रु ५ । सांतु सपर्यसितु मध्यतं ए
 तं अज्ञानात्मक पर्यसितभावात् एतं सपर्यसितुश्रु ६ । अत्रयतं एतं अपर्यसितुश्रु ७ । केवलत
 गात् तथा भावगतं अनेंतुश्रु पुनि तेजु लु ८ । अनेरर अनेरर अर्थे तेइ ति जि अक्षर तिहां हुपर
 गमिश्रु ९ । अगमिश्रु १० । अनाचारांसादि अंगमिश्रु ११ श्रुत् । प्रकीर्णकादि अंगमिश्रु १
 १०. श्रुत् । साक्षात् एतं अत्रयति अथवा मियाडिपि प्रणीतं मयुं श्रुत् सम्यकश्रु ११ । तेजु लु मियाडि
 एतं अत्रयति अथवा मियाडिपि प्रणीतं मयुं श्रुत् असम्यकश्रु १२ । रामतरक पंचेन्द्रिय एतं मत्तः सति
 इन्द्रियतं वरं । अश्रु श्रुत् साक्षिश्रु १३ । मनोवाहक इन्द्रिय जनित तेजु लु अनेंसंश्रु १४ । इति भ्रुवजातभेदः १५

अथ भ्रुवजातभेद लिखियरं ।

अश्रुणां तु एए भेदः । यथा-

- १. अश्रुणां स्तोत्र जिम १ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम २ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ३ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम ४ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ५ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम ६ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ७ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम ८ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ९ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १० । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ११ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १२ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम १३ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १४ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम १५ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १६ । अश्रुणां अश्रुणां स्व

अथ अश्रुणां भेद इति अत्रयति कालादि इति काशनि मन्वद्यंयानु कथिय । सु अश्रु

- १. अश्रुणां स्तोत्र जिम १ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम २ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ३ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम ४ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ५ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम ६ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ७ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम ८ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ९ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १० । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम ११ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १२ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम १३ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १४ । अश्रुणां अश्रुणां स्व
 अश्रुणां स्तोत्र जिम १५ । अश्रुणां स्वातन्त्र्यीर जिम १६ । अश्रुणां अश्रुणां स्व

तेह^{११} मनःपर्याये करी चिंतनीउ लु मूर्तुं स्तेमकुंभादिकु वस्तु छइ सु वस्तु मनःपर्यायज्ञानी अनुमानि करी जाणइ । मन तथा पर्याय साक्षात्कारि देखइ । इसइ परिणामि परिणत मनोद्वय तउ हुयइ जउ इसउं वस्तु एहे चिंतविउं हुयइ इसी परि जिम लेखाक्षर दर्शनइतउ लेखार्थ परिज्ञानु हुयइ तिम मनोद्वय-दर्शनइतउ चिंतनीयवस्तु अनुमिणइ सु इउ वात्तु अनइ अभ्यंतक त्रिपउ वहुतर स्फुटतर विरोप जोगि करी विपुलमति रहइ विपुलतर जाणिवउ इति मनःपर्यायज्ञान विचारः ।

केवलु एकु ज्ञानु केवलज्ञानु कहियइ । तेह नइ भायि छद्मस्थ सर्वज्ञ ज्ञानदर्शन तथा अभायतउ जिम मूर्धं जगिइ अनेरा प्रह नीं प्रभा ने हुयइ तिम केवलज्ञान तणइ उइइ अनेरा ज्ञान नीं प्रभा न हुयइ ॥

‘उपसंमि अणंते नट्टमि य छाउमत्थिए नाणे’

इति वचन भावइतउ ॥ इति केवलज्ञानविचारः ।

मिप्याइष्टि तणं मतिज्ञानु श्रुतज्ञानु अवधिज्ञानु ।

मत्पज्ञानु १, श्रुतज्ञानु २, विभंगवाधि ज्ञानु ३, इसी परि डिानइइ अज्ञान कहियइ । तथा संसण

संज्ञं^{१२} चत्तारि कहियइ : यथा-

चक्षुदर्शनं १ अचक्षुदर्शनं २ अवधिदर्शनं ३ केवलदर्शनं ४ ति पुणि कहींसिइ । एतलइ

नाणं पंचविहं तइ अन्नाणतिगंति अट्ट सागारा ।

चइ संसणमणगारा वारस निय लखणोवओणा ॥ [५५२] 15

इति द्वादश संख्य जीवलक्षणोपयोग जीवतन्त्र परिज्ञानकारण पुणि प्रसंगिहिं भणिया । गतं तानद्वारं । ज्ञानप्रसंगि दर्शनद्वारं च ।

अथ संजममेव लिखियइ ।

संजम सामायिकादिक ५ पूर्विहिं जिम भणिया तिमहीं जि जाणिवं । संजमशब्दि करी संजममतिपक्ष असंजमु पुणि वेदाचिरतिसंजमु पुणि जाणिवउं ।

अथ लेख्या लिखियइ ।

कृष्ण नील कापोत तेजः पद्म शुक्लरूप कर्मपुद्गलोदयवगइतउ जीय रहइं स्फटिक जिम तथा परिणामतारूप छ लेख्या कहियइ ॥ यथा । कृष्णलेख्या १ नीललेख्या २ कापोतलेख्या ३ तेजोलेख्या ४ पद्मलेख्या ५ शुक्ललेख्या ६ । तथा च भणितं-

कृष्णादि द्रव्यसाचिव्यात्परिणामो य आत्मनः ।

स्फटिकस्यैव तत्रार्थं लेख्याशब्दः भवति ॥ [५५३] 25

प्रसंगिहिं लेख्याविषय उदाहरण लिखियइ ।

जइ जयंतस्वरगो सुपक फलभार नमिय साहगो ।

दिट्ठो छहिं पुरिसेहिं ते चिंती जंजु भक्खेमो ॥ [५५४]

निइ पुण ते चित्तिको आरुहमाणण जीवसंदेहो ।

तो छिदिउण मूले पाटेउं ताई भक्खेमो ॥ [५५५] 30

वीयाऽऽइ इइहेणं किं छिन्नेणं तरुण मय्दंति ।

साहामदल्लछिइइ तइओ वेइ पसाहाओ ॥ [५५६]

गुच्छे चरत्यओ पुण पंचमओ वेइ गिन्दफलाई ।

छट्ठो वेई पाडियाई एइचिय खापदाअच्छिउं ॥ [५५७] 35

दिद्रुंनस्मोवणभो जो वेई एयच्छिदिमो मूले ।

मो चट्ट किन्हाण साल महलाइ नीलाए ॥

[५५८]

हवड पमादा काऊ मुकले तेऊ फलाइ पम्हाए ।

पडियाई मुकलेमा अहवा अन्नं इमाऽऽहरणं ॥

[५५९]

चोग गाम वडत्थं विणिग्गया एगु वेई घाएह ।

नें पासह ते मच्चं दुपयं च चउण्यं वावि ॥

[५६०]

धीभो माणुम पुरिमेय तडयभो साइहे चउत्थोय ।

पंचमभो जुज्जिने छट्ठो पुण तत्थियमं भणइ ॥

[५६१]

इंता हरह पणं वीयं मारेह मा कुणह एयं ।

वेचल हरह पणं ता उवसंसारो इमो तेसिं ॥

[५६२]

मच्चे मांहरती चट्ट सो किन्हे लेस परिणामो ।

एवं कमेणं मेमा जा चरमो मुकलेसाए ॥

[५६३]

गतं तद्व्यापारम् । अथ भव्यस्वरूपे लिलियर ।

भट्टु सिद्धिगति योग्य जीवु कहियर । तथा भव्य प्रतिपद्यु अमद्यु पुणि ईहां भव्यगति कती

११ जानियउ । एवं भव्याभट्टुद्वारम् ।

सम्यग्जीवु कहियर तेह नउ माणु मोक्षाविरोधी"प्रशस्तु परिणामु सम्यक्त्वु कहिया । सु
पुनि आत्मधर्मं सु पुनि विविधु ।

भौतगामिक, क्षार्यागामिक, क्षायिक, भेदइतउ ।

तेह ता प्रतिपद्यु मिध सामादुन पुनि जानिया । गतं सम्यक्त्वुद्वारम् ।

संज्ञी माणु भजित स्वरूपु । तेह नउ प्रतिपद्यु असंज्ञी पुनि जानियउ ॥ गतं संज्ञीद्वारम् ।

अथ आहारक द्वार कहियर ।

भोजो ह्येव प्रक्षेपरूपु आहार शु आहारइ सु आहारकु । तेह नउ प्रतिपद्यु अनाहारइ इ
जानियउ । एवं च -

विग्गहणमावसा केवल्लिणो समुदया भजोर्गा य ।

मिड्डा य भगणाराग मेमा आहारागा जीवा ॥

[५६४]

विग्रहणं । दक्षयति इ तेह मान विग्रहणतिमावसा जीव कहियर । ति मायम सम्यक्त्वं
अनाहारक इदं । केवल्लिणो समुदया इति । समुदधानु कर्म समीकरण निमित्तु केवली कर । दक्ष-

दग्म पुनः केवल्लिनः कर्म मत्तयापुपौतिरिक्ततम् ।

स समुदधानुं भगवान् अथ गच्छति तन्ममीकर्तुम् ॥

[५६५]

दक्षं वचने मन्त्रे कथयत्य धोषो तथा ।

मन्त्रे कथयत्य कृत्वापि व्योहयती चतुर्थे तु ॥

[५६६]

संज्ञते वचने संज्ञयति संज्ञयत्य पुनः पद्ये ।

मन्त्रे तु दक्षं संज्ञति कथयत्ये कथयन् ॥

[५६७]

अंतोमुहुच भित्तिपि फासियं जेहिं हुज्ज सम्भचं ।
तेसि अवड्ड पुग्गल, पेरंतो होइ संसारो ॥

[५८०]

॥ समाप्तं नवतत्त्वविवरणम् ॥

§425) तेह सम्यक्त्वगुण रहइ आविर्भावकु श्री नरवर्म महाराज कथानकु लिखियइ ॥

ईही जि जंबूद्वीप^१ माहि भरतक्षेत्र माहि मगध नामि जनपदु छइ । तिहां विजयवती नामि नगरी । तिहां नरवर्मु नामि राजा । रतिलुंदरी नामि पट्टमहादेवी हुंती । हरिदत्तु नामि पुत्रु हुंतउ । मति सागरादिक अनेक^२ महामात्य हुंता । अनेरइ द्वियसि राजेंद्र आगइ सभा माहि धर्मविचारविवयी आला नीपनउ । तत्र एकि कहिउं धर्मु दाक्षिण्यीदार्यादिकहं गुणहं^३ करी हुयइ । तथा परोपकारवतउ लोव विरुद्ध त्यागइतउ पुणि धर्मु हुयइ । बीजइं कहिउं वेदोकु अग्निहोत्रादिकु धर्मु । श्रीजइ कहिउं कुलक्रमग धर्मु । चउयइ कहिउं धर्माधर्म प्रत्यक्ष प्रमाणि करी गगनारविंद जिम वीसइं नही इणि कारणि नयी । इ परि सम्य धर्मवियाहु करता देली करी विवेकयंतु नरवर्मु राजा मन माहि चींतवइ । दाक्षिण्यादिक गुणहं करी तां धर्मु न होइ । ति दाक्षिण्यादिक गुण पुरुषवतु । वेदोकु पुणि धर्मु नही । हिंसाइं दुषितत्त्वइतउ । क्रमागत पुणि धर्मु नही । इसी परि कुण^४ रहइं धर्मु न हुयइं ।

§426) नास्तिकयचनु जगजंतु सुखदुःखलादिदर्शन भावइतउ घटइ नही । सर्वदोपरहित इ कनक जिम किसउ धर्मु हुयइ । इसउं मन माहि जेतलइ नरवर्मु राजा चींतवइ तेतलइ पडिहाइ रा रहइं वीनवइ । 'देव ! महाराज ! तम्हारउ^५ बालामितु मदनदत्तु चिरागत द्वारवेसि वरतं' । राजादे तउ मदनदत्तु माहि मेलिहउ । राजेंद्रि समांलिन सन्मानबहुमान पूर्वकु पूछिउ । 'मित्र ! एतलउ व किहां थाकउ ! किसउं उपाजिउं !' सु पुणि राजा रहइं प्रणामु करी वीनवइ । 'महाराज अनेकि अनेकि अनेकि अनेकि आश्चर्य दीठां । प्रभूत धनु उपाजिउं एउ नक्षत्रभ्रेणि-सहोदर एकावली हारु, महाए मईं लाधउ । राजा भणइ, 'मित्र एह हार नउ लाधु मू आगइ आमूलघुल कहि' । सु । 'महाराज ! तदाकालि हउं पुर' हुंतउ नीसरिउ । प्रभूत देदांतर भमतउ हुंतउ दुषदिकाडवीं गयउ । वृषाक्रीतु तेह माहि ओरहउ परहउ घणउं भमिउ । तिहां फिरतइ हुंतइ गुणधरसुरि आचार्यु भेटिउ । तेह महात्मा^६ आगइ एकावली हार सारालंकार धारकु देवु एकू देवी सहित मा तणा मुख हुंतउ धर्मु जिनप्रणितु सांभलतउ मइ वीठउ । हउं पुणि वांदी करी तिहां घइउउ । मू रहइं धर्मु सांभलता तूस सर्वथा नाठी । आपणा वांधव जिम मू देरता हुंता तेह देव रहइं मू ऊपरि प्रीति उह्मनी । तउ पाछइ तिणि देवि महात्मा पूछिउ । 'मू रहइं एह ऊपरि किंसा कारण लगी तणउ अतिनाउ' । महात्मा भणइ- 'एह भव तउ पूर्व भवि कौशांबी नगरी माहि जयराजेंद्र तणा विजय वेजयंत नामहं करी प्रसिद्ध पुत्र हुंता । तुम्हारी माता 'देवभोगइतउ' परलोकि गई । धात्री पाटीता हुंता तुम्हे यौवन प्राप्त हया । जयराजेंद्र तुम्ह रहइं यौवराज्यपदु देणहारु जाणी उधानयनि' शीटा करिया गयां हुंता माता नी सउकि विसु दिवारिउं । तत्रा कालि तिहां अदां तलि द्वियाकरु मुनि गुरुडोपपाताध्ययनु गुणतउ हुंतउ । तेह नइ प्रभावि तिहां गुरुजेंद्रु^७ अ महागुनि तेह रहइं सेवापरायणु ह्यउ । गुरुजेंद्रु^८ तणा प्रभावइतउ तुम्ह रहइं विपसु विपु प्र नहीं । गुरुद्वाराहु तेह मुनि रहइं प्रणमी करी^९ संतुमु हुंतउ गुरुडोपपाताध्ययनु^{१०} सांभलिया लागउ । विद्यापहार प्रभावइतउ विस्मित चित्त हुंता तुम्हे पुणि तेह मुनि रहइं प्रणमी करी^{११} आगइ आवी^{१२} बइता । गुरुजेंद्रु कहिउं । 'जइ दिवाकरु मुनिवरु ईहा न होयतइ तउ^{१३} तुम्हे^{१४} मूया हउत । तिणि कारणि एउ

§ 425) 1. Bh. जंबूद्वीप । 2. Bh. अनेकि । 3. B. P. omit. 4. P. कुणहं ।

§ 426) 1. Bh. दुष्पारत । 2. B. Bh. पुइ । 3. P. भ्रमणउ । 4. Bh. महात्मा । 5. P. अतिनाउ ।

6. P. देवभोगइतउ । 7. P. omits-न- । 8. B. omits-न- । 9. Bh. P. गुरुजेंद्रु । 10. Bh. गुरुजेंद्रु ।

11. P. सिन विपु प्रभावइतउ । 12. Bh. गुरुनी- । 13. Bh. drops words between प्रणमी करी । 14. Bh. omits ।

15. P. omits words between आगइ आवी.....गुरुजेंद्रु ।

॥ तुम्ह रहें जीवितज्य दाता मातापिता समानु । एह महात्मा तणी भलिपरि सेव करिजिउ ।
भणी करी मरुदेंतु आपणइ धानकि पहुतउ ।

§427) तुम्हे पुणि शाततस्व तेह गुनि कन्हर संजमु ले करी हुप्कर तप नियमपर ह्य्या । तुम्ह ज्येपु मरी करी प्रथमि देवलोकि विद्युत्प्रभाभिधानु देवु ह्ययउ । तउं लहुवउ विद्युत्सुंदरु नामि तिहां बु ह्ययउ । तिहां हुंतउ वडउ भारं चयी करी विजयवती नगरी माहि मदनदनु नामि नरवसुं राजेंद्र 5 मनु वाजिया नउ पुनु ह्ययउ । सु पुणि इउ धनकारणि फिरतउं हियडां तई कीठउं । तिणि कारणि शम्पास वमदतउ तू रहइं 6 एह विपद स्नेहातिसउ । इसउं सांभली करी तिणि देवि एउ एकायली मू रहइं दीधउ । महात्मा पृच्छिउ ' मूं रहइं निद्रादिक अपलक्षण किसइ कारणि ? ' महात्मा कहिउं, ' तई मरणु हुकउं वचंइ । तिणि भणिउं, ' ' किहां मूं रहइं उत्पत्ति किसी परि' बोधिलासु ! मा भणिउं, ' तउं नरवसुं राजेंद्र तणउं पुनु हरिदनु नामि होइरि' । एउं 7 एकायलीहार देखी मिलि । 8 इमी परि छिन्नसंशय हुंतउ मूरी नमी करी गयउ ।

§428) तउ मइं गुरु पृच्छिउ । ' भगवन् एउ हारु किसउ ? ' सुरि भणिउं, ' पूर्वहिं नवोत्पसु हुइ इंद्रस्थानि गयउ । इंद्र हाकिउ नाउउ । ' अधोगुल नासता हुंता एउ हारु गला हुंतउ ईहां हुंतउ एयातमइ ह्रीणि पठिउ । इणि देवि लाधउ । ' इमउं सांभली गुरु बांसी पंचवीस वरिस सीम देसांतरि 1 इमी धनु प्रमत्तु उपाजी करी एउं ह्यडां स्वामिन ! आविउ । स्वामिन ! सु देवु तुम्हारउ पुनु ह्ययउ किं नही ! ' त्रि कहिउं, ' मित्र ! हरिदनु रहइं हारु दिवालउ । ' होइदनु तेडी हारु दिवालउ । हारु दर्शनहतउ तेह रहइं तिमरालु अपनउं । राजेंद्रि पृच्छिइ हुंहर हाकिउ कुमारि निम हिं जि पूर्वभवसंबंधु कहिउ जिम पूर्वहिं इति' कहिउ । राजा चित्त माहि च्यांतयइ ' जु आगइ धर्मविपइ विवाडु ह्ययउ सु विवाडु एह पुत्र नइ त्रि करी उच्छेदिउ । एह विपव माहि धर्यु जिनप्रणीतु 9 हुइ भयइ रहइं भवभयइदकु मोक्षसुखवायकु । 10

§429) एतलइ प्रस्तावि उद्यानपालाकि राजेंद्रु वीणांविउ, ' देव ! आजु एत्पावतंसकि उद्यानि दिव्य परिवृतु चतुर्गानी सुरासुर-नेरुचर-नमस्कृतु श्री गुणंधरु' नामि सुगुरु समोसरिउ छइ । म मेव तणउं गजितु सांभली करी मयूर नाचइ तिम तेह नउं वचनु सांभली करी राउ हरावतउ । एतकंध ममारुडु पुत्र-मित्रादि परिवारि' परिवृतु महांत ऋद्धिसमुदय करी गुरुपाद वादिवा राउ पुहुतउ । 11 थियव बांसी करी यथास्थानि वडउ । अमृतस साराणि समान धर्मदेराना सांभलइ । 12

यया- ' भो भव्या ! सर्वधर्ममूलु दिव्यपुरद्वारु सम्यक्तु वचंइ । सु सम्यक्तु देव गुरु धर्म विपइ 1 गुरु धर्म बुद्धिस्वरूपु कहियइ । अदेव अगुरु अधर्म विपइ देव गुरु धर्म बुद्धि स्वरूपु सम्यक्तव विपरितु रव्यालु कहियइ । तत्र जित-राग-द्वेष-मोह देवु जिनु महाव्रत-धरु गुरु । दयामूलु धर्यु इति । इणि स्विकित्य लाधइ नरकगति तिर्यचगति गमनु न हुयइ । मनुष्य-देव-मोक्ष-सुख जीव रहइं स्वाधीन हुयइं । 13

आ च भणितं -

सम्पत्तमि उ लद्धे उड्याई नरयतिरियदारार्इ ।
दिव्याणि माणुसाणि य मुकलमुद्गाई सहीणाई ॥

[५८१]

§430) इतउं सांभली करी राजा पुत्र सहितु सम्यक्त्य पूर्वु बुद्धिधर्यु ले करी संतुमु हुतउं आपणइ परि गयउ । अनरद दिवसि सुधर्मा सभा माहि वडउ सौधमैनु नरवसुं राजेंद्र तणउं सम्यक्तु देवही रहइं 14

§ 427) 1. Bh.-वर्मे । 2. Bh. adds हुंतउ । 3. P. रई । 4. Bh पु (पुणि or प-) भणिउ । 5. P. omits 6. Bh.-वर्मे । 7. Bh. had होइरि, but final -इ is cancelled P. होइरि । 8. P. omits.

§ 428) 1. Bh. पृच्छिउ । 2. Bh. हवडां हइं । 3. P. omits. 4. P.-स्मरणु । 5. Bh. मन- 6. P. एह । (in B. सु appears like एह).

§ 429) 1. P

अभालनीउ कहर । तउ पाछइ सुवेगु देवु इंद्रवचन विषइ संदेहु धरतउ हंतउ वैकियकद्धिं विस्तार सहितु परीशा निमित्तु आविउ । तिणि देवि दिव्यशक्ति बलि मायागउ^१ साधु समूहु अकार्य करतउ राजेंद्र रहइ तिम दिग्यालित जिम जउ अनेरउ देराइ तउ धर्म हंतउ निशइ संउ पडवइइ । नरवमुं राजेंद्रु पुणि तिम साधुवृंदु देरी मल माहि चतियइ । 'कपादिकहं' करी हेम जिम सुसु जिन धमुं एकु छइ । किंतु ए पुग मुनि गुण कर्मभारमावि करी विनदिया^२ हंता जिन धर्म रहइ लाषवु करइ । सु लाषवु जि मतिमंत ह्यइं तेदे शक्ति हंती अयस्यु रावियउ^३ इतउं चींतयी करी साममाविहिं^४ जि करी अकार्य हंता मुनि निवारिया । देवु सम्यग्स्वविषइ निशालु जाणी करी नरवर्म राय रहइं प्रणमी करी साक्षात्कारि होइ कहइ- 'महाराज धन्यु तउं जेह तू रहइं सभा माहि बइउउ इंद्र महाराजु सम्यक्त्व तणी स्तुति करइ ।' इतउं मणी आपणउ मउहु आपी करी आपणइ थानकि गयउ । नरवमुं महाराजु सम्यक्त्वमूलु गृहिधमुं निरकाठ १० प्रतिपाली करी पुत्र मित्रादि महितु दीक्षा ले करी सुगति पनुतउ ॥

नरवर्म नरेन्द्रस्य दृष्ट्या सम्यक्त्वर्जं फलम् ।

भर्गापरार्गटं भव्याः सम्यक्त्वे सन्तु निशलाः ॥

[५८२]

[431] अथ सम्यग्स्वातिचार प्रतिक्रमणु प्रस्तुतु कहर ।

११ जीयादि तत्त्वविषइ संदेह करणु शंका कहियइ ? अहिसाविलेस दर्शनरतउ पहु धमुं जिनवजिउ पुणि धमुं इमी परि अन्य धमं तणी इट्टा आकांशा कहियइ २ । 'विगच्छित्ति धर्मकल विषइ सोइ विविचिन्ता कहियइ । विउच्छत्ति पाठि हंतइ विइइं यथास्थितु जीयादि तत्त्वु जाणइ तिणि कारणि रि साधु कहियइ ३ ।' अरं महामदिगा एव इमी परि साधु निदा विउच्छा कहियइ ३ । 'पसंस तह संवरो पुंदिगीसु' फविन्ध यचनयातुगं चेटकीगद्वयादिहु अनितउ को एकु मिष्यादृष्टि तणउ देली करी 'अठे २० महाकवि एउ' इमी परि मुनि मिष्यादृष्टि कुंदिगी तेह तणी प्रशंसा कहियइ ४ । तथा संलनु मिष्यादृष्टि पुंदिगी तेह गउं मीरी कहियइ ५ ॥

[432] इहां शंका विषइ उदाहरणु । यथा-

२३ नगरि एक संति एक^१ तगा वि पुत्र लेमाल पटइं । तीहं रहइं आरोग्य बुद्धि वृद्धि निमित्तु माणा मरभाउ ओमरी पेया एकान्तध्यानि धिकीं करावइ । तीहं माहि एक रहइं मक्षिकादि शंका इमी मदि भूण उरमइ । मानमदुक्खपूर्वकं मरोरदुक्ख इणि कारणि तेह रहइं यलमुली रोगु ऊपनउ । मूयउ । इल्लोक सुम हंतउ भूइउ । बीजउ पुनु मन माहि^२ चींतयइ 'माना अहितु कइकाळिहिं न चींतयइ' निनि कारणि निभंदेहु धिकउ^३ पेयावानहु करतउ आरोग्य बुद्धि वृद्धि सहितु चिरंजीवी ह्यउ इल्लोक^४ सुमभागी ह्यउ ।

२० इमी परि सम्यक्स्व विषइ पुनि जु जेवु संदेहपण ह्यइ सु नामयसुहु न लहर । निमंउं हंतउ नामयसुहु लहर ।

[433] आकांशा^१ विषइ उदाहरणु-

२३ राजा अरइ मगमल्यु वै जगा अस्वाराहाइरतउ अउवी माहि मया । मूनिवा हया । वनकर

[430] 1. P. विहारा (in P. वै-looks like वि) 2. B. मारवत । 3. B. हीअ बरति । P. and K. have cancelled 'क' after वान । 4. P. विरति । 5. B. P. गव- । 6. P. ५ । 7. P. दा- ।

[431] 1. The reader is reminded of the following: 'विउच्छत्ति पाठि हंतइ विइइं यथास्थितु जीयादि तत्त्वु जाणइ तिणि कारणि रि साधु कहियइ ३ ।' अरं महामदिगा एव इमी परि साधु निदा विउच्छा कहियइ ३ ।

[432] 1. P. लोके । 2. P. वउ । 3. P. मवि । 4. P. पउ । 5. P. इल्लोक ।

[433] 1. P. मरभा । 2. P. मरवेइ ।

सूपकारे कीथा । राजा आग्र आणिया । राजेंद्रि चीतविउं ' मधुरमोदक पूपकादिक भक्ष्यभेद पाछेई भाविसिउं ' इणि कारणि पहिलउं धाकुल' होकलादिक भक्ष्यभेद भरवी करी पाछइ मधुराहार भक्षणु कीधउं । किसइ कारणि जिम 'सवही आहार तणा स्वाइ लिउं ' । महंतइ' पुणि जीमी करी वमन विरिचनादिकु कीधउं । राजेंद्रि पुणि सर्वाहार भोगलुब्धि हंतइ वमनविरिचनादिकु न कीधउं । तिणि आहारदोपि राउ मूयउ । इहलोक सुख चूकउ । महामात्यु जीविउ । इहलोक सुखभागी हुयउ । तिम जीवु पुणि अन्यान्य 5 धर्मतत्त्वबुद्धि करी बांडतउ मोक्षसुख हंतउ' चूकइ । अशंउतउ', मुक्तिसुखभागी हुयइ । इणि कारणि जिम लवण अनइ कपूर रहइ, तिमिर अनइ प्रकाश रहइ, गोक्षीर अनइ अर्कक्षीर रहइ, रल' अनइ गुल रहइ समता न कीजइ तिम शिवशर्मदायक' जिनधर्म अनइ जन्मजरामरणानंतदुरंतदुःखदायक मिध्यादृष्टि धर्म रहइ समानता लक्षण आकांक्षा न कीजइ ।

§434) धर्मफल संदेह विषइ वणिय तरुण बिहुं तणउं उदाहरणु । तथाहि-यसंतपुर नामि नगर 10 जिणदासु नामि ध्रावकु । तेह तणउ महेसरदत्तु नामि मित्रु । जिणदासु आशासगामिणी' विद्या तणइ बलि नंदीश्वरि ह्रींशि' श्रावत चैत्य चांदिवा जयउ । आविउ हंतउ महेसरदत्ति भणितउ, ' मित्र ताहरइ वेदि अपुं सुगंध' गंधाद ' । तिणि नंदीश्वर यात्रावृत्तांत कहिउ । तउ महेसरदत्तु भणइ, ' मू रहइ पुणि आकाश-गामिनी विद्या आवि ' । तउ अतिनिर्वधि कीधइ हंतइ जिणदासि' महेसरदत्त रहइ विद्या' दीधी । कृष्ण चतुर्दशी रात्रि समइ इमसानि' जाई, हेउइ अग्निखंडु ज्वलइ, ऊपरि वृक्ष तणी शाला छीकउं बांधी करी 16 आपणयई तिहां चडी करी विद्या जयइ । जावि संपूर्णि हंतइ एक एक तणी खड्ग धाइ करी छेदइ । जेती-वार चउथी तणी छेदिवा वार हुयइ तेतीवार मन माहि संदेहु ऊपजइ 'विद्यासिद्धि होंसिइ' किंवा नही होइ, पुण मू रहइ मरणु निधई होइसिइ' । तउ वलीवली छीकउं बांध वलीवली संदेहु करइ । एतलइ' प्रस्तावि चोर एकु चोरी करी तिहां आविउ । केइ वाहर पुण 10 आवी । चोर इमसान वनगहन माहि पइउउ । वाहर बाहिरि वेदु करी रहीं । चोरि महेसरदत्तु चडतउ उतरतउ देखी करी बोलाविउ । 20 ' तउं अ' विद्या साधइ छइ स मू रहइ आवि । एउ माहरउं धनु तउं 12 लइ ' । तिणि चीतविउं, ' भलउ मू रहइ एतला फल तणी प्राप्ति छइ ' इसउं भणी करी विद्या चोर रहइ आपी, चोर तणउं धनु आपणयई लीधउ । चोरि निःसंदेहि थिकइ 13 एक धार रुढी परि जापु करी खड्ग नइ एक धाइ करी चियारइ तणी छेदी करी 14 आकाशि ऊपरमिउ 15 । प्रभाति चोर पगि लागी वाहर वन माहि आधी महेसर-दत्तु वस्तुसंयुक्तु चोर करी बाधउ । मारिवा लीजतउ देखी करी चोरि आकाशगति विद्यागुरु भणी 26 नगर रहइ बीहावी करी मेल्लाविउ ।

इसी परि शु धर्मफल 16 विषइ संशउ करइ सु महेसरदत्त जिम अपाइ पइइ शु संशउ न करइ सु चोर जिम सकल अनर्थ हंतउ नृदइ । मनोवांछितु लहइ । 30

§435) साधु निंदा विषइ दुर्गपा' उदाहरणु । मिध्यादृष्टि प्रशंसा परिहार विषइ सकटाल महामात्यु उदाहरणु । मिध्यादृष्टि संस्तु' मिध्यादृष्टि सउं मैत्री कहियइ ।

तेह विषइ जिणदासु उदाहरणु । यथा-

ऊज्जीणी' नामि नगरी । जिणदासु नामि सुध्रावकु' । तिहां एकादशमी प्रतिमा बहतउ मुनि सरसउ विहाइ करतउ सार्थंभ्रमु हंतउ बौद्धं तणइ सार्थि मिलिउ । मामि मूयउ । आपणउ आचार करी बौद्धे 35

433) 3. P. धाकुल । 4. Bb. महद । 5. B. has added words between तउ...तद... in the margin. 6. Bb. अशंउतु । 7. P. खलि । 8. Bb. शव- ।

§434) 1. P. भाकाल- । 2. P. दीधि । 3. P. गंध । 4. Bb. तिमि- । 5. P. omits. 6. Bb. P. इमसानि । 7. P. दीकउ । 8. P. दोखिइ । 9. P. एदइ । 10. P. पुणि । 11. Bb. P. ज । 12. P. नू । 13. P. थकइ । 14. P. omits. 15. Bb. ऊपरि- । P. ऊपर मिउ । 16. Bb. omits.

§435) 1. दुर्गपा । 2. P. स्तविउ । 3. P. इज्जेणी । 4. Bb. ध्रावकु । 5. B. बौद्ध ।

रक्तचक्र वेष्टित करी तिहां मोल्लिहउ । सु नमस्कार-रमरण-परायणु^५ मरी करी देवु ह्यउ । अवधिज्ञानि आत्मदेहु देसी बौद्धभक्तु^६ ह्यउ । शनि कारण मिथ्यादृष्टि परिचउ न कीजई । बौद्धहं रहई रत्न स्वर्ण-लंकारालंकृति हाथि करी अद्भुत हुंतउ भोजनु दियइ । लोकमध्यभागि इमउ अतिसउ बौद्धहं रहई ह्यउ । 'अहो धन्नु बौद्धशासनु !' श्रायकु लोकु लोके अवलेहियउ ।

५ अनेरइ दिवसि श्रीधर्मघोषमूर्ति नाम' आचार्यमिश्र तिहां आविया । धायके वांढी करी तिहां नउ वृत्तांतु कहिउ । आचार्ये उपयोगि दीधर सगत वृत्तांतु जाणी करी एकु माधु संघाटउ मोकलिउ । भणिउं " बौद्ध देव कन्हा भिक्षा दिवारिसिई, पुाण तुम्हे म लोजिउ^{१०} । हाथु सादी रसउं भणिजिउ गुज्जमा ! गुज्ज, गुज्ज, मा गुज्ज । " इसउं तेहे कीधउं । देव रहई सुभ कर्मोदेय लगी प्रतिबोधु ऊपनउ, भयांतक जाणिउ । गुरुपादमूलि आवी ' मिथ्या दुःकृतु ' कीधउं । घली माधु रहई भक्ति करिया लागउ । ईहं सम्यक्त्वातिचार तणइ आचरणि जु कम्मु वांधउं सु ' पटिकग्गे देसियं मत्थं ' पूर्ववत् ।

§436) सम्यक्त्व प्रकर्षइतउ तीर्थकर नामकर्म' तणी उपाजना जीव रहई ह्यइ । सम्यक्त्व प्रकर्षु पुण वीस थानक संसेवना करी ह्यइ । तिणि कारणि वीस थानक विचार लिखियइ ।

अहंकाराधनु १, सिद्धाराधनु २, प्रवचनाराधनु ३, गुर्वाराधनु ४, स्थविराराधनु ५, धृतधाराधनु ६, तपस्विशुश्रूपा ७, अभीक्ष्णज्ञानोपयोगु ८, सम्यक्त्वनिरतीचारता ९, विनयनिरतिचारता १०, आवश्यकनिरतिचारता^{११}, मूलोत्तरगुण निरतिचारता १२, क्षणलयसंशिक्षालिहिं अर्तरीन्द्रपरिहार धर्मध्यानासेवना^{१३}, तपश्चरणकरणता १४, सुपात्रदानता १५, वैयावृत्त्यकरणता १६, मनःसमाधि संपदना १७, नवज्ञानप्रदणता १८, धृतभक्तिकरणता १९, प्रवचनप्रभावना^{२०} ।

§437) तत्र-अरहंतहं रहई त्रिहुं काले विधिवत् पूजा सद्भूतगुणस्तयन यथादर्शनप्रणमनार्थि

२० करण अहंकाराधनु पहिलउं थानकुं ।
लोकाप्रमात प्रक्षीणाशेषकर्मजाल अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतसम्यक्त्व अनंतवीर्य अनंतनैत छई सिद्ध तीहं तणइ विषइ एकाग्रता मन माहि ज कीजइ स बीजउं थानकु ।
चतुर्विध श्रीसंघरूपु प्रवचनु अथवा द्वादशांग लक्षाणु प्रवचनु तेहं विषइ शक्ति' तणइ अनुसारी

आज्ञाप्रतिपालनु जु कीजइ सु बीजउं थानकु ।

२५ पंचमहाव्रत प्रतिपालक शुद्धधर्मोपदेशदायक गुण तणइ विषइ परतंत्रता करी सर्व धर्म कर्म विषइ जु प्रवर्त्तनु सु गुर्वाराधनु चउथउं थानकु ।

समवायांगधर अथवा वयोवृद्ध जि छई रथधिर तीहं तणइ विषइ जु निश्चल भक्तिकरणु सु

३० स्थविराराधनु पांचमउं थानकु ।
सूत्रधर कन्हा अर्थधर प्रधानु अर्थधर कन्हा सूत्रार्थधर प्रधानु इसी परि बहुश्रुतहं तणइ विषइ सारेतर भावि करी जु भक्तिकरणु सु बहुश्रुताराधनु छटुउं थानकु ॥

तीव्रतपु जि करई तीहं तणइ विषइ श्रद्धानपरायण होई करी जु शुश्रूपा कीजइ सु तपस्वि

३५ समाराधनु शातमउं थानकु ॥
सिद्धांत तथा पाठ विषइ गुणन विषइ प्ररूपण विषइ बारवार जु सावधानता भवनु सु अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगु आठमउं थानकु ॥

§435) C. P. वनर । 7. Bh. अविधि । 8. Bh. मण । 9. Bu. omits. 10. P. भिजिउ । evidently confusing the preceding म with देविउ ।

§436) 1. Bh. omits-कर्म । 2. Bh. adds कीलननिरतिचारता १२ । 3. Bh.-परमैयानदुध्यानासेवना ।

4. Dh. add. ईसाता ।

§437) 1 Bh. adds तणइ । 2 Bh. मद्धि ।

पदायस्फकवालायबोधवृत्ति

[§139-411]. ५८५-५८६

हर्ष रोमांचितगात्र तोर्ड करी सिद्धांत विपट न भक्ति कीजइ गिद्धांत पुस्तक लिखावियं
सउं सारवियइ लु सु श्रुतभक्ति लक्षण गुणयोममउं थानकु ।
धर्मव्याख्यान प्रतिवादि निराकरण कविता कलादिकहं करी लु तीर्थ प्रभावना कीजइ सु प्रमा-
तमकु वीसमउं थानकु ।

§439) तथा च भणितं -

अरहत १ सिद्ध २ पत्रयण ३ गुरु ४ धेर ५ बहुस्सुण ६ तवस्सीमु ७ ।
वच्छल्लयाइ एणुं अभित्त नाणोवओणे य ८ ॥
दंसण ९ विणए १० आयससए ११ सीन्व्यए १२ निरइयारो ॥

[५८५]

खण लव १३ तव १४ वियाए १५ वंयावणे १६ समाडी १७ य ॥
अपुण्वनाणगणे १८ सुयभत्ती १९ पवयणे पभावणया २० ।

[५८६]

एएहिं कारणेहिं तित्ययरत्तं लइ जीवो ॥

§440) अथ चारित्र्यातिचार प्रतिक्रमणु करिवा वांछतउ हंतउ पहिलउं सामान्यहिं आरंभ

[५८७]

निंदा निमित्तु भणइ ।

15

छकाय सपारंभे पपणे पयावणे य जे दोसा ।
अत्तट्टा य परट्टा उभयट्टा चेव तं निंदि ॥

[५८८]

शुधिवी सलिल अनल अनिल वनस्पति वस लक्षण जि छइं पट्टकाय तीहं नइ समारंभि
परितापनि तथा संरंभि आरंभि इसउं पुणि जाणिवउं । तत्र संरंभु संकल्पु आरंभु विद्यावणु ।
इहं छकाय जीव संवेधिया समारंभ संरंभ आरंभ हुंता जि दोप पाप समाचरण न पुण
अतीचार अंगीकरण तणइ अभावि हुंतइ मालिन्य तणा अभावइतउ किसइ हुंतइ । दोस इत्याह-
20 'पपणे' पचनि हुंतइ 'पयावणे य' अनइ पचावनि हुंतइ चकारइतउ अनुमति हुंती पुण जाणिवउं ।
कउण निमित्तु 'अत्तट्टा य परट्टा' आपणया निमित्तु, प० प्राणुणकु तेह निमित्तु । 'उभयट्टा' आप पर
आप पर उभयलक्षण छइं तिन्हि पक्ष तीहं हुंतउ चउथउ पथु नही इणि कारणि । अथवा अतिमुग्घता
विहुं निमित्तु । चकार अनर्थक राग द्वेषादि दोप संसृचकु । ए चकार प्रकारहं रहरं ईयत्ता सूचकु
आप पर उभयलक्षण छइं तिन्हि पक्ष तीहं हुंतउ चउथउ पथु नही इणि कारणि । अथवा अतिमुग्घता
लगीं साधु रहरं असनि पचिइ दू रहरं पुण्यु होइसिइ इसीं परि 'परट्टा' परनिमित्तु । पुणि अट्ट विहुं रहरं साधु निमित्तु पचनादिकि
25 तीहं रहरं पुण्यु होइसिइ इसीं परि 'परट्टा' परनिमित्तु । पुणि अट्ट विहुं रहरं साधु निमित्तु पचनादिकि
कीजतइ हुंतइ पुण्यु होइसिइ इसीं परि उभयट्टा उभयनिमित्तु पुणि । अथवा छकाय समारंभादिकहं विष
संचित पुट्टिकाय लवणादिक । अत्तकाय संचित जलादिक । वाउकाय अग्नि संधुपणादि कारणि वात-
करणादिक । तेउ काय अग्नि प्रज्यालनादिक । वनइतिकाय वनछेदन क्षेत्र नींदाण करण सृष्टन करणा-
दिक । प्रसकाय कौटिकादि गृहप्रमार्जन संढन पेवण अणछाणियां जल व्यापारणादिक पट्टकाय जीव
30 सायदव्यागर । तेहे करी अनेराइ जि के जीव आरंभु करतां विणसइं तीहं करी जि के पाप कीर्थां ति
पाप निंदउं । पूर्ववत् ।

§441) अथ सामान्यहिं चारित्र्यातिचार प्रतिक्रमणु भणइ ।
पंचदमपुण्वयाणं गुणवयाणं च तिन्दमइयारो ।
सिक्खसाणं च चइइं पदिके देसियं सव्वं ॥ सुगमा ॥

§438) 5 Dh. ३५ ।

विशेष्ये पुणि इत्तु सम्पत्त्वइत्तु अणु पाछइ कीजई । इणि कारणि अणुव्रत कहियई ॥
अथवा महाव्रतहं हुंता अणु लड्डुवां इणि कारणि अणुव्रत पांच कहियई ॥
तथा च भणितं -

धूला मुहुमा जीवा संकप्पारंभओ य ते दुविहा ।

सावराह' निरवराहा साविकखा चेव निरविखा ॥

[५९०] ५

अत्र धूल जीव वैद्वियादिक सूक्ष्म एकेंद्रिय पृथिवीकायादिक । तत्र श्रावक रहई एकेंद्रिय जीव-
रक्षा सर्वथा पलइ नहीं तिणि कारणि दशविशा जीवदया । थूट जीव वैद्वियादिक संकल्पिहं करी
विणासिया नहीं । आरंभिहं करी विणासिया नहीं । तत्र आरंभइत्तु विनासरक्षा श्रावक रहई सर्वथा
पलइ नहीं । तिणि कारणि पांच विशा ।

तथा ति सापराधद राखिवा निरपराधद राखिवा । तत्र सापराध नी रक्षा श्रावक रहई सर्वथा 10
पलइ नहीं तिणि कारणि अटई विशा ।

सापेक्षबुद्धि करी पुण न दुहवेवा निरपेक्षबुद्धि करी पुण न दुहवेवा । तत्र श्रावक रहई सापेक्ष-
बुद्धि करी दुहवण निषेधु न संभवइ तिणि कारणि सवाडु विज्ञाउ एकु जीवदया श्रावक रहई हुयइ ।
तिणि कारणि मेरुसमान महाव्रत तणी अपेक्षा करी श्रावकव्रत अणुव्रत कहियई ति पांच मूल गुण
कहियई । तीहं जि रहई विशेष गुणकारिता करी दिशुव्रतादिक त्रिन्हि गुणव्रत कहियई । पांच अणु-
व्रत विन्हि गुणव्रत यावज्जीव पालनीय हुयई । शिक्षाव्रत पुणि च सारि सामायिक वैशावकाशिकादिक
कदाचित्पालनीय । जिम दिश्य रहई विद्या पुनपुन अभ्यासयोग्य । तिम तिम स.मायिकदिक अभ्यास-
योग्य । तथा च भणितं —

'जहे खणिओ ताहे सामाश्यं कुञ्जा' इणि आलावइ 'खणिओ' इत्तइ पाठि जेतीवार गृह-
काजु काई न हुयई सेतीवार श्रावकु क्षणिकु धर्मावसरवंतु हुंताउ सामायिकु करिजिउ । इत्तउ अर्थु । 20

'खणियं' इत्तइ पाठि जेतीवार क्षणु प्रस्तावु हुयइ तेतीवार सामायिकु 'कुञ्जा' कुर्याव
करिजिउ न पुण दिनावसानिहिं जि' अथवा निशावसानिहिं जि ।

§442) अथ प्रथमव्रत प्रतिकमणु भणइ ।

पढमे अणुव्यर्थमी धूलग पाणाइवाय विरईओ ।

आयरियमपसस्थे इथ पमायप्पसंगेणं ॥

[५९१] 25

प्रथमि सर्वव्रत माहि सारता करी घुरि वत्तमानि अणुव्रति महाव्रत तणी अपेक्षा करी लघुतरि ।
'धूलग पाणाइवाय विरईओ' गत्यादिकहं स्पष्टहं लिगहं करी बाह्यही रहई जीवत्व बुद्धि करी परिहात
रधूल द्वीन्द्रियादिक जीव धूलगगण कहियई । तीह नउं मांस रुधिर इंत नल अस्थि शृंग चर्मादिकहं
तणइ कारणि अतिपानु विनासु तेह नी विरति निवृत्ति धूलग पाणाइवाय विरति तेह सकासरतउ
'आयरियमपसस्थे' । 'अतिचरिउं' अतिक्रमिउं किसई हुंताइ । अपशक्ति भावि हुंताइ । क्रिस्तउ अणु । 30
क्रोधादिकि उदयमाति हुंताइ । 'इथ पमायप्पसंगेणं' अत्र प्राणातिशत विषद प्रमाद मयादिक पांच' तीह
नइ विषद प्रसंजनु प्रकपि करी प्रवर्तनु प्रमाद प्रसंजु तिणि करी प्रमाद प्रसंग ग्रहणि करी सजातीय
आकुल्यादिक जि छई तीह नउं पुणि ग्रहणु हुयइ ॥ इति शायार्थः ।

§441) 1. B. Bh. सवराह । 2 Bh. omits.

§442) 1. Bh. वंच । 2. Bh. साजातीय ।

(448) गर्भुन्मय राजा मूरपुत्र विपद समत्सर थिकउ मरी वन माहि चित्रकु इतः
 बभक्तकमानर्षी मृग पुणि देमांतर फिरतउ हंतउ जिणि वनि वापजीवुं चित्रकु छरिं
 तिमि चित्रउ शीउउ। अनउ पूर्वमय धैरउतउ मारिउ। तिहाई जि मरी करी भीतु हय।
 कानउ हंतउ तिणिहिं जि चित्रकि वीर्जा वार पुणि मारिउ। सु चीउउ तेह ।
 तितां ई जि पवन वन माहि ये जीव यूकर हया। त्रिहुं वरसहं तणां हंता आपणा
 त्रिहुं मारिया। तउ पाछउ अनेरउ तिणिहिं वनि मृग ऊयना। समत्सर हंता भलिं माहि
 मरुत्तुधि लज्जाल हया। श्रुतु करता यूथभ्रष्ट हंता भलिं वांधी करी चंद्रराजेंद्र तम्य तने
 वचि। तितां ई युद्धु करता हतां पजंतारे महाकाष्टि राखियईं। एक दिवसि तिहा
 मुरमंनमुनि मारिउ। भक्तिभारभासुरु मातःपुरु चतुरंग सेना परिवृत्तु चंद्रु नरेंद्रु आवी करी
 १: इमज्जमने नीं नीं त्रिहुं वाणतं नणउं दारुणु धैर कारणु पूछद। केवली सकतु तंहे म
 त्रिहुं हय। सु मति तउं चरिवु मांभली करी चंद्रु राजेंद्रु अति धैरागय सवेगवंतु हंगु
 त्रिहुं मरी करी पतिल्लइ नरकि गया। तिहां हंता उद्धुत्ति करी पापजोनि माहि
 त्रिहुं हय। त्रिहुं मरी करी मुद्धु मनुष्यभयु लही करी

न्यासापहार कूटसाक्षि विमुं अज्ञादान माहि संभविहि हंतद । ईहां यचन राहं प्रधान भावना करी
अरुंनक यचन भायना लगी ईहां तीहं नउं' भणनु कीजइ । लभ्यदेययस्तु विपद जु मानिउं छइ द्रष्टु
तेह नइ विपद राग ह्यप भावना लगी अलभ्य अज्ञातव्यना भणनु कूटी साक्षि कहियइ ५ । ए ये द्विपदा-
लीक माहि आउं । पुणि लोक माहि ए वे अनिनिंदित इनि जुयउं भणनुं ईह नउं कीधउं । एह पंचविध
अलीक तणी ज विरति तेह तउ ' आपरिणत्यादि पूर्वयत् ॥

एह प्रन नां अर्नाचार नउं प्रतिक्रमणु कहइ ।

सहसा महसदागे भोमुवपसे य कूटलेहे य ।

वीयवपस्मऽ इयारे, परिशमे देसियं सत्वं ॥

[६०३]

तय' म्नु भूचक्रु ह्यद तिणि कारणि सहसापादि करी सहसात्कारि अणआलांवा करी ' चोम
तउं ' पारदारिकु तउं' इमी परि कही एक रहइ अभ्याग्यानु अणहंता दोष तणउं रोपणु महसाभ्या-
त्यानु जाणियउं ३ ।

तथा एतः शब्दि करी रहोमंभेदु जाणियउं-सु पुण इमी परि । रहसु एकांतु तिणि एकांति
मंडु आलोपु करनां देसि । करी इमउं इमउं राजविन्दु आलोचइ छइ । २ ' दार' इति वि-वास' लगी
स्यदाराहं इरकिय कलबदं जि कथन कहियां ह्यदं तीहं नउं ह्यदतउ अनेरा आमिलइ गमइ कथनु
दारमंभेदु कहियइ । उपलक्षणस्यइतउ मिमंभेदु पुण दारमंभेदि करी जाणियउ ३ । 18

अणजाणिया ओमह-मंवादिक्कं तणउं कथनु मुषोपदेसु ४, कहियइ । ' कूटलेहे य' ति ।
कूटा अर्थ नउं लेहनु कूटलेहु कहियइ ५ ।

' वीयवपस्से' त्यादि पूर्व जिम ।

§ 451) अत्र मृषावादा परिहारविषय हैमराजेंद्र कथा लिखियइ ।

अणुग्रनं द्वितीयं तयद्रोच्यं क्वापि नाऽभूत् ॥

भू-कन्या-गोधनन्यास-साक्ष्येणु न विज्ञेयतः ॥

[६०४]

जन्तुनामदिनं यचन चार्च्यं सत्पमप्यहो ।

मुषीभिर्धीमिपत्रेण बोधनीयोऽत्र पृच्छकः ॥

[६०५]

इदं सत्यगिरां वक्ता यथा राजपुरीपतिः ।

वैभवं विभरामाम हंसः संश्रूयतां तथा ॥

[६०६] 25

राजपुरी नामि पुरी । हंतुं राजा । मय्यकन्यमूल ध्रावकथमपुरा धीरेयता परतउ अनेरइ
द्विषमि मास घन' लंघ्यमार्गि रन्नुंगगिरि पूर्वजकारिति श्रीऋषभदेव देवमूदि तीर्थयात्रा करिया
मरुल्लोक माहितु मय्यवचनमाहितु गवैरहितु हंतउ थालिउ । अहंमार्गि संधि गयइ हंतउ पाछा हंतउ
चम एक आविउ । राजेंद्र राहं धीनवउ, " महाराज ! तुम्ह थालियां पाछइ दसअर द्विषमि अर्जुनु' नामि
मीमातु पुरी लेवा आविउ । तुम्हे जि के रदापाल मेल्हया हतां ति मये तिणि जीता । राजपुरी 30
आपणी करी घट्टउ । भयमीतु लोचु वेमानी करी तुम्हाराइ सिहासनि उपविष्टु चर्चइ । अनेरा नइ' धरि
पाठउ छइ सुमिष्टु नामि भंधी तिणि हंतुं तुम्ह कन्धर मोकलिउ । इणि कारणि जु फई युक्तु ह्यद सु
कीजउ ।" तदाकालि समीपगत जि छइ सुप्रभ तेहे कहिउं, " महाराज ! हयउं पाछं वलिइइ । अम्ह
हंता कउणु' ताहरद पुरि चिस्फुरइ " । तीहं आगइ राजा कहइ-

§ 450) 5. Bh. omits. 6. B. omits. 7. Bh. विभागं ।

§ 451) 1 Bh. adds नामि । 2 Bh. gloss: दित । 3 P. अर्जुनु. 4 P. इ । 5 P. कथन ।

6 P. पाठः । 7 P. नवैना सिद्धि ।

संपदो विपदोऽपि स्युः पूर्वकर्मवशाद्भृशम् ।

मूढो मुदं विशादं वा तत्संपत्तिषु तन्वते ॥

[६०७]

पुण्यप्रातिनिबंधनु यात्राकरणु मेल्ली करी पुण्यलभ्य राज्य तणइ कारणि पाछउं वलनु युक्तं नहीं । तथा सर्वनासिंहिं यात्रा अकरी हउं वलउं नहीं । यद्वाहुः-

5 प्राग्भ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्राग्भ्य विघ्नचकिता विरमान्ति मध्याः ।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्राग्भ्यमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥ [६०८]

§452) इसउं' भणी करी हंसु राजा आघउ चालिउ । परिवारन क्रमि क्रमि सगदं पाछउ वलिउ । एकु छत्रधरु आपणपा पासि देखी करि वखालंकार तुरंगमादि वस्तु समस्तु दे करी पाछउ मोकलिउ । जउ पतलउ लोकु आवत तउ पुणि पुण्यविभागुं लियत । लोकु पाछउ गयउ तउ ह्य 10 मू एकलाई जि रहई पुण्यु होइसई । इसउं मन माहि हर्षितु थिकउ' चीतयतउ हंतउ तीर्थाभिमुषु एकलउ पादचारिंहिं जि चालिउ ।

§453) कहीं' एक अठयी माहि महीपति रहई देखतई जि हंतु मृगु एकु परा हंतउ नाठउ । आयी करी लतायितान माहि पइठउ । तेह नइ पगि लागउं भीलु एकु धनुकि चडाविद सरि सांधिइ आविउ । राजेंद्र कन्हा पृछइ । " महापुरुष ! इणि पत्रछात्रिं वनि मृग तणउ पगु दीसइ नही । सु पुणि 15 मृगु माहरउं भक्षु' किहां गयउ ? " तउ पाछइ राजा चित्ति चीतवइ । ' साचइ कहिइ मृगविनासु' हुयइ, कूबइ कहियइ द्वितीयव्रत भंगु हुयइ । तिणि कारणि बुद्धि करी एउ विप्रतारिउउं । ' इसउं चीतयी करी राजा भणइ, " अहो माहरउं स्वरुपु पृछइ । मार्गभ्रमु हउं रैहां आविउ । " भीलु भणइ, " मूढ ! प्राठउ मृगु किहां गयउ ? " राजा भणइ, " हउं सु हंसु नामि पुरुषु " । अहिई गटई स्वरि कहइ, " मृग नउं मार्गुं मूर्ख मू रहई कहि " । राजा भणइ, " राजपुरी माहरउं थानकु । " आहिई कोपि चडिउं भणइ, " जु तू रहई बधिरता व्याधि गटउ छइ सु गटैरउ होइजिउ । " इसउं भणी करी भीलु अनेरइ मार्गिं गयउ । मृग रहई मतिप्रयोगि छोडवी करी आपणउं व्रतु अलीक्यचनपरिहारलक्षणु अखंडु प्रतिपालइ ।

§454) तिहां हंतउ आघउ चालिउ । सामुहा आयता मुनि रहई वांदी करी मार्गुं मेल्ली करी 20 आघउ चालिउ । यम किंकर सरिखा भीलु वि कोषारण लोचन धणुहिं चडाविद सरि सांधिई आयी करी राजेंद्र आगइ कहई । " चिरकालइतउ चौरीनिमित्तु मृगु नामि पट्टीपति नीसरिउ । दूरइतउ एह वन माहि मुंड पाखंडि एक रहई देखी करी, अयुकुनु एउ, इणि कारणि तेह माराविया कारणि अम्हे मोकलिया । सुपाखंडिकु जइ तई दीउउ तउ अम्हे आगइ कहि " । तउ राउ मनि चीतयइ । जउ हउं मीनु करी रहिसु अथवा व्याज वचन भणिसु तउ भीलु सरलइ' मार्गिं जायता हंतु मुनि रहई विनासहेतु' होइसई । तिणि कारणिं सांप्रतु असत्यु जइ कहियइ तउ सत्य कन्हा अधिक 25 पुण्यकारकु हुयइ । इति द्वाद छलइतउ सत्यु असत्यु राजा कहइ । " जिणि मार्गिं तुम्हे जाउ छउ, तेह मार्गुं हंतउ जु वामउ मार्गुं तिणि मार्गिं महात्मा जाइ छइ " । विश्व जंतु जात रक्षणि' करी दक्षिण मुनि तणउ दक्षिणु, मार्गुं मेल्ली करी ति भीलु वामइ, सकल जीव विघात भावि करी वामइ मार्गिं जिम-पूर्विइ ति भीलु जायता हंतु तिमाहई जि गया । मुनि कुशलि क्षेमि पहुतउ । ति भीलु विहुं प्रकारई करी अमार्गिं गया ।

§452) 1 P इतिउं । 2 P. पुण्यभागु । 3 P. थदइ ।

30 §453) 1 mss. चदी । 2 Bh. सागु । 3 P. -छत्र । 4 P. मगु । 5 Bh. मृगु- । 6 P. वरी । 7 P. पानधि ।

§454) 1 B.Bh. घणइ । 2 Bh. सरल । 3 P. विनास - । 4 Bh. रक्षिणि ।

§455) राजा वचनसुभासेक समुल्लासित कीर्त्ति कल्पलतावितानु हंतउ आघउ चालिउ ।
संध्यासमइ महाडुम एक अधोभागि वासइ रहिउ । “संधि समुद्रि धनवंति चउथइ दिवासि पडिसियां ।
धनसलिल माहि थिलसियां । वारिद्वयधुलि ऊतारिसियां ” इसी वात करता वनांतरित' चोर राजेंद्र
तिहां जाणिया 'किसी परि ए चोर संघ विघात कारक नही ह्यइ' जंतलइ मन माहि राजेंद्रु इसी
परि चीतवइ तेतलइ वीपिकाव्रीपिताशावकाया उदारपुध महायोध तिहां आविया । राजेंद्र आगइ भणइ, 5
“तउ कवणु ? के' एकि चोर संघ विघातकारक हेरकहं अम्ह आगइ ईहां कहिया छइ । जइ तउ जाणइ
तउ कहि । जिम ति चोर मारी करी संघ रक्षा करी यशु' अनइ पुण्य वि वस्तु ऊपार्जा' । जिणि कारणि
श्रीपुर नगर नायकि श्रीगाधि नामकि जिनशासन भक्ति तीहं चोरहं मारिया निमित्तु अम्हे मोक-
लिया छं । ” राजा पुनरपि चिन्ति चीतवइ । “साचइ भणिइ चोर घात पातकु लागइ । कूडइ' भणिइ
संघ लुंठन दूपणु लागइ । ” इसउं चीतवी करी राउ भणइ । “तुम्हे संघि जाऊ' । तिहां गया हूंतां रहइ 10
संघरक्षा पुण्य अनइ यशु वे बोल होइसिइ । ति पुरुष राजा नइ वचनि करी रंजिया संघ माहि गया ।
लतावितानु हूंता चोर नीसरिया राजेंद्र ने पगे आर्य करी' पडिया । इसउं वीनवइ, “अहो महापुरुष !
तइ अम्हे ईहां छता जाणिया पुण अन्हारी दया करी तइ न कहियइ । तिणि कारणि तउं अम्ह रहइं
जीवितव्यदाता परमोपकारी पिता । ” इसउं भणी प्रणमी करी बली गया ।

§456) प्रभाति राजा आघउ चालिउ । केतली कल गया हूंता ऊतायला असघार के पकि 15
राय रहइं मिलिया । राय आगइ कहइ, “जिणि अम्हारउ ठाकुर वुंठिउ सु हंसु ईहां किहोई वीठउ । जइ
वीठउ तउ कहि, जिम सु मारी करी आपणा' ठाकुर तणउं वैरु सोधउं ” इसउं संभली करी राजा मन माहि
चीतवइ । “आपणा जीवितव्य तणइ कारणि कउणु त्रिचक्षणु कूडउं बोलइ' ? इसउं चीतवी राउ भणइ,
“हउ सु हंसु राजा ” ! आयुध ले करी आगइ ऊभउ ह्यउ । तउ एक गमइ अनेकि अश्वाधिकुद प्रौड'
सुभट', वीजइ गमइ एकु हंसु राजा । तउ पाछइ धर्मप्रभावइतउ युद्धु कउतउ राजा घणेइ असवारै 20
पाछउ करी न सकिउ । किंतु पंचपरमेष्ठि महामंत्र समरण परायणु तेऊ उ एकु सर्वे निजिणी करी
संद्राम भूमि पीठि रहिउ ।

§457) 'सत्ययादिन जयजयेति वादपूर्वकु देवहुंडुभि नाद करण समकाल पंचवर्ण कुसुम नी
वृष्टि राजेंद्र नइ मस्तकि करतउ तेह वन तणु अघ्यधु द्ययु नामि यशु प्रन्यशु आगिलइ गमइ ह्यउ ।
ताहरइ सत्ययादि करी प्रसन्नचित्तु हउं द्यक्षाख्यु' यशु ताहरा वइरी सव्ये निजिणी करी तू आगइ इसउं 25
कहउं, “रत्नदुंगाभिधानि गिरि जिणि त्रिणि यात्रा हुयइ, आजु सु दिवसु, तिणि कारणि इणि विमानि
माहरइ चडि, जिम ह्यडाई जि तिहां जाइयइ । तउ राउ विमानि चडिउ । आपणपउं दिव्यालंकार
गुंगारधारकु देखइ । आगलिइ गमइ दिव्य संगीतकु स्वकीय गुण तणइ गानि करी मनोहरु सांभलइ ।
गुलक नइ अर्द्धासनि समासीनु हंतउ हंसु देवगृहि अविउ । दिव्य कुसुम गंधसार घनसार कस्तुरिका 30
गुरुवारहं करी जिनाईसहं रहइं महापूज करी यात्रा संपूर्ण करइ । विमानाधिकुद राजपुरी' परिसंरंधानि
आधिउ । यक्षि अजुंतु' रिपु बांधी करी पगे आर्या घातिउ । सु रिपु दया परिणाम वसइतउं मेलही करी
हंसु राजा राजपुरी माहि आर्यी राजि वइठउ । “दिव्यभोग राजेंद्र रहइं तुम्हे पुरिया ” इसउ
आइसु दे करी चत्तारि यक्ष हंसु रहइं अंगरक्ष द्यक्षयजु मेलही करी राउ मोकलवापी आपणइ धानकि
पहुतउ । हंसु राजेंद्रु राजपुरीजन रहइं महाहर्षु ऊपजावतउ सत्यप्रभावि पुरेंद्र जिम प्राज्यु राज्यु
प्रतिपाली करी देवलोकि गयउ ।

35

§455) 1 Bh. P. थिलसिया । 2 P.-रिता । 3 P. कइ । 4 P. वा घु । thus confusing it
with previous वरी । 5 P. ऊपार्जा । 6 P. वइ । 7 Bh. जायउ । 8 Bh. होभिइ । 9 P. omits.

§456) 1 P. आपणा । 2 Bh. added in margin. 3 Bh. omits.

§457) 1 P. ह्यउ । 2 P. प्रयाद्यु । 3 Bh. adds-यति, but it is cancelled later.
4 B. P. अजुंतु । 5 P.-वसइतउ । 6 P. omits.

हंमरा नयनंसम्य सत्यवादफलं कलम् ।

श्रुत्वा भव्यजनाः सत्यं ब्रूथ याथ महोन्नतिम् ॥

[६०९]

द्वितीयाणुव्रत विषय हंमराजेंद्र कथा समानं ॥

§458) अथ व्रजिजं व्रत भणत ।

गडम् अणुव्ययमी धूलम परदव्यहरण विरडंओ ।

आयगियमणसत्यं इत्थपमायणसंगेणं ॥

[६१०]

व्रजिद अणुवनि स्थूलकु राजनिमहादि हेतु जु छद परदव्यु तेह नउं हरणु घहणु थूलम परदव्य हरणु कहियद । तेह तणी विरनि निवृत्ति तेह सकासशतउ इत्यादिकु पूर्यं जिम जाणियउं । परदव्यापहणु मात्तापातकु । यदुक्तं -

10 एकस्यैकं क्षणं दुःखं मार्यमाणस्य जायते ।

सपुत्रप्राप्तस्य पुनर्यावज्जीवे हृते धने ॥

[६११]

तथा-

सम्बन्धयपि निगृयेत चौर्यान्माण्डिकवन्दुपः ।

चौरोंऽपि त्यक्तचौर्यैः म्यान् स्वर्गभाग् रोडणेयवत् ॥

[६१२]

15 §459) अथ अनिचार प्रतिकमणु कहर ॥

तेनाइडण्ययोगे तण्पादिरुपे य विरुद्धमणो य ।

कूडनुल कूडमाणे पडिइमे देसियं सव्वं ॥

[६१३]

स्तेन चोर तेह आहत्त देनांतर समानीतु वस्तु स्तेनाटत्त वस्तु कहियद । अथवा आपणार्इ जि थानइ हुंत्तं आणितं वस्तु तेनाहत्तु कहियद । तेह नउं मरणु ? स्तेन प्रयोगु १ ।

20 चौरदं रहदं उधारि वस्तुनामु तिणि करी चौरदं रहदं चोरी विषय घेरणु स्तेन प्रयोगु २ ।

• तण्पादिरुपे य * । तण्पादिरुपु घृतादि माहि यसादि गेलनु तण्पादिरुपु कहियद ३ ।

• विरुद्ध मणो य * । विरुद्ध पुरतं तणइ राजिय ममनु विरुद्ध राज्यं ममनु * ४ राजा देवा पावत धनलाभ लोभि करी ममनु विरुद्ध ममनु कहियद ५ ॥

• कूडनुल कूडमाणे * । तुला लोहइड जिशेणु मानु भेनिकादिनु । तीहं रहदं कूडनाहत्तइत्तं

25 अधिक वरणु अथवा ऊणवा वरणु । कूडनुल कूडमाणु कहियद ५ ।

§460) ईदं अनिचारता वणिक्कला ए चोरी नरी । इसी परि व्रत सापेक्षता ह्वी । यदाह-

श्रियं मृत्युण कर्त्तं दद्यात् कपागमं च व्रजिसं ।

जित्तिमपरि ज्ञानेनो परम्य मंनं न सिन्देड ॥

[६१४]

अनित राजनिमत रहदं अयोग्य कला लगार एक अधिक लगार एक ऊणता करण लक्ष्मण वणिक्कला करी कहियद । नेह मेन्दी करी 'कपागमं' । विवु पित्तमतादि क्रांति करी भाग्यु दयादिहू मारो करी । 'व्रजिसं' अधिकु । 'जित्तिमपरि ज्ञानेनो' । भूमि पडिउ जाणतोई हुंत्तं 'परम्य मंनं न सिन्देड' । पर मणउं तिउं नदी । तथा चोर्क-

§459) 1 B. स्तरी 2 B. लुक्ता 3 B. कियद 4

परद्वय लेवा नियमु लीधत । मू रहई महाविस्मय ह्यउ^१ । ' जोयउ न, ए वाणिग्या धनलवलाभ^२ निमित्तु सरीरु सर्वैस्यु जोखिमि घाती करी दूर विषम देशांतर पूर फिरई तीहं रहई अदत्तादानविरति नियमु^३ किंसी परि प्रतिपालइ^४ । तिणि कारणि एह तणी हउं परीक्षा करिसु^५ । इसउं चीतवी अट्टु थिकउ तू पाखती^६ फिरिउ । फिरतइ हूंतइ आनु मई अवसर लाधउं । तउ मई तू रहई स्वर्णलक्ष्य मूल्य रत्नावली पतित दिखाली । निधानु पुण^{१०} दिखालिउं । अनइ घोडउ मूयउ दिखालिउ । मई तउं पुण लोमि जीतउ 5 नहीं । वृसिया हूंत तू रहई पाणी मरी दीयडी दिखाली । शुक नइ रूपि तू रहई जलपान विषइ प्रेरणा कपी । तई पुण मोटेई प्राणरक्षणलक्षणि कार्णि उपस्थितइ हूंतइ तई अल्पु पाणीपानमात्रु अदत्तादानु करायी न सकिउ ई । "

§465) इसउं मणी करी सूर्यि विद्याधरि आपणा सेवक विद्याधर तेडिया । ति अहद्वय हूंत त सर्वे इद्वय ह्या । तीहं कन्हा मणिमाला अणायी निधानु अणाविउं । अनेरउं घणुं^१ धनु अणाविउं 110 मूयउ हूंतउ जु घोडउ सु जीवाडिउ । सार्थवाह आगइ सूर्यु विद्याधर भणइ, " सार्थवाह ! एउ ताहरउ घोडउ आपणउ साति " इसउं मणी करी सार्थ माहि आणी सार्थवाहु मेलिउ । धनु सार्थवाहु आगइ मेलिहउं । सार्थवाहु भणइ, " किसउं एउ धनु " । सु भणइ, " काईं एकु माहरउं, काईं एकु कउतिग लगी पर हूंतउं अरहरिउं^२ । तद्वाकालि राजभ्रपि विशदसुनि वचनि ज मू रहई चोरी तणी निवृत्ति न हुईयइ^३, स ह्यवडा^४ ताहरा साहसइरदानइतउ मू रहई चोरी निवृत्ति ऊपनी । तिणि कारणि तुम्ह रहई मई धर्म-15 गुरु मणी धनु पादभेट^५ कीधउं । " इसउं कहता सूर्य विद्याधर आगइ गुणधर भणइ । " जु धनु जेह नउं तई हरिउं छईं सु तेह रहई पाछउं दइ " । तिणि तिमइ जि कीधउं । " पाछिउं माहरउं धनु गुणधर । तउं लई " इसउं भणता सूर्य आगइ गुणधर कहइ, " अहो विद्याधर । तउं एउ माहरउं धनु सगद्ध^६ लइ । जिणि कारणि इसउं मई मनियुं हूंतउ ' जु को माहरउ घोडउ जीवाडइ तेह रहई सगद्ध^७ आपणउं धनु आपउं ' । तई माहरउ घोडउ जीवाडिउ, तिणि कारणि तउं माहरउं धनु लइ । किच दानु^८ पात्रि 20 दीजइ । हउं पुण दानयोग्यु पात्रु नहीं । तिणि कारणि ताहरउं धनु कथमपिहिं लिउं नहीं । "

§466) इसउं भणता गुणधर आगइ विद्याधर भणइ, " हउं ताहरा उपदेश रहई शणि भवि ऊरिणु^१ नहीं हउं । मई माया लगी ताहरउ घोडउ मूयउ दिखालिउ, तिणि कारणि किंसी परि ताहरउं धनु हउं लिउं । माहरउं धनुं तउं न लियई, ताहरउं धनु हउं न लिउं । तउ पाछइ एह धन रहई कउणु धनिकु होइसिइ ? " सार्थवाहु कहइ, " धनुं जेह रहई देसिइ तेउ^२ धनिकु होइसिइ । तिणि कारणि आवि, जिम 25 सर्वह देसिति धर्मि वेचां, लक्ष्मी कृतार्थ नीपजायां " । तेह नइ वचनि विद्याधरि अंगीकरियइ^३ हूंतइ तेह, विहुं आपणी लक्ष्मी सतक्षेत्री माहि वायी । तउ पाछइ गुणधर मरी करी तउं लक्ष्मीपुंजु ह्ययउ । हउं पुण ताहरा उपदेशइतउ सुराजि धनु दियतउ आनु पूरी करी द्यंतर ऊपनउ । ताहरई पुणिय करी हउं पुण आवजितु हूंतउ तू रहई आजनमहितु कालोचितु वस्तु पूरउं । " इसउं द्यंतरवचनु सांमली करी मूच्छां गयउ हूंतउ सीतोपचारइतउ मूच्छांपगभइतउ जातिसमरणु लही करी लक्ष्मीपुंज प्रमोदपुंजु ह्यउ^४ 130 पावज्जीवु विद्युद्धु जिनधनुं पतिपाली करी अंतकालि अनसनु^५ करी समाधिसउं मरी अच्युतदेवलोकि देवु होई पुनरपि मनुष्यभवु लही, दीक्षा ले, केवलज्ञानु ऊपाडी, मोक्ष पहुंचतु ॥

§464) 5 P. हुइ । 6 P. omite. - ल - । 7 P. नियमि । 8 B. - पडइ । 9 P. इ. (?) पा. omits-वती 10 P. पुणि.

§465) 1 Bh. पणइ । 2 P. अरहरउ । 3 P. ह्यइ । 4 P. हइ । 5 P. पादभेटि । 6 P drops words between माहरउं धनु... माहरउं धनु । though it retains गुणधर । 7 Bh. has added words between सगद्ध...सगद्ध in the margin. 8 Bh. दानु ।

§466) 1 P. ऊपनी । 2 P. तउ । 3 P. -करि । 4 Bh. वेदे । 5 P. हुइ । 6 P. अणयतु । 7 B. omits.

धन्याकुक्षिसरोहंस ! भाग्यसौभाग्ययात्र ! जनावतंस ! मणिपुरु इसइ नामि पुरु छउ । तिहां पुण्यपक
गुणपक इसइ नामि सार्थवाहु हंतउ । सु अनेरइ दिनि विप्रदाभिधान मुनि समीपि यन माहि गयउ ।

जन्तोः स्याद् दुःखदं द्रव्यहरणं मरणादपि ।

अतः सुकृतिभिः कार्यं चौर्यचर्याविमोचनम् ॥

[६१७]

5 एवमाकर्ण्य पुण्यात्मा स विद्यापरसंसादि ।

अदत्तादानविरिणि व्यधाचत्र तद्वा मुदा ॥

[६१८]

पुरु माहि आविउ हंतउ व्ययसायनिमित्तु भूरि भांडसंभार ले करी देसांतरि चालिउ । आपण
देस तणइ अंति सार्थि अटवी माहि परइइ हंतइ आपणपरं सार्थवाहु घोडइ चडिउ आगद थिकउ
जाव्या लागउ । पाछइ मार्युं मूंकी करी मीठ पदप्रचारि किणिहं दांडइ पडिउ । सुवर्णलक्ष मूह्य रत्नावली
10 एक तिहां भुइं पतित देखइ । व्रतभंग भयवशाइतउ वली शीर्षावार तिणि गमइ दृष्टि अकरतउ हंतउ
आघउ गयउ । सार्थं संचल भाव तणा अलाभइतउ ' किंजुं सार्थुं दुरि गयउ ' इसी परि मन माहि शंका
ऊपनी तउ पाछइ सार्थवाहु आपणउ वाहु आघउ उतावलउ चलावइ सुरक्षुणि मारिं स्वर्णपूर्णुं व्रांश
नउ कुंथु देखइ । व्रतभंगइतउ तिमहिं जि मूकी करी आघउ गयउ । उतायला जायता हंता सहसाकारि
वाहनवाहु मूयउ । पापभय भीतु चीतवइ ' मू वाहतां हंतं एउ मूयउ हा हतोस्मि । जु को एह रहइं
15 जीयाडइ तेह रहइं एउ तुरंगमु हउं आपउं । अनइ ऊपरि घणउं धनु आपउं ' इसउं मन माहि चीतवतउ
हंतउ सार्थवाहु पादचारिहिं जि आघउ चालिउ' । तुपाकांतु हंतउ वृक्षशाखानिवद्ध वारिपूरित दीयडीं
देखइ । तउ अदत्तादानव्रतभंग' चीहतउ ऊंचइ स्वरि करी कहइ, " कउण तणी ए दीयडीं " ! इसी परि
वार वार भणतउ हंतउ सांभली करी तीहिं जि तरु नी शाखा बाधउं छइ पांजरउं, तिहां छइ मूयउउ,
तिणि भणिउं, " यन माहि ओसही लेवा गयउ वैद्यपुत्रु तेह नी ए दीयडीं । हउं तेह आगद काई नही
20 कहउं तउ शीतलु जलु पीं ", इसउं शुक्र तणउं वचनु सांभली करी कर्ण हाथे टांकी करी शुक्र आगद
सार्थवाहु कहइ । " तुस यरि माहरा प्राण हरउ, पुण ताईं वैद्यि अणदीधउं जलु पीयउं नहीं, महापापभय
भावइतउ । " तउ पाछइ शुक्र नउं रूपु संहरी करी वृक्ष हंतउ अतरिउ को एकु वरु पुरुपु । सार्थवाह
आगद हर्षितु थिकउं' कहइ ।

§464) " वैतादिय नामि पर्यति विपुला इसइ नामि नगरी । तिहां नउ हउं सूर्युं इसइ नामि
25 विद्याधरु । अनेरइ दिनि ताहरइ मणिपूरु इसइ नामि करी प्रसिद्धि नगरि विदादाभिधानु माहरइ
जनकु विद्याचारण मुनिवह उद्यानवनि समोसरिउं हंतउ हउं तेह रहइं वांदिवा तिहां' आविउ । वांरि
करौ यथास्थानि चइठउ । तद्वाकालि भू उदिसी करी महात्मा भणिउं ।

अनादानमदत्तस्याऽस्तेयव्रतमुदीरितम् ।

वायाः माणा नृणामधो हरता तं इता हि ते ॥

[६१९]

30 तथा—

परं विभववन्धता मुजनभावभाजां नृणाम् असाधुचरितानिता न पुनरुज्जिताः संपदः ।

कृदात्यमपि शोभते सद्व्रजपापती सुंदरं, विपाकविरसा न तु श्वयधुसंभवा' स्थूलता ॥ [६२०]

ताहरइ तउ धनु घणुं आग'छइ । किसइ कारणि परद्रव्यापहाक करइ । इत्यादि चोरी
परिहरण विप्र घणउं भणिउं । तथापिहिं हउं चौर्यद्वयसनी फिटउ नही । तदं पुणि भूं देखता तद्वाकालि

§463) 3 Bh. gloss : कभावाम् । 4 P. omits. 5 Bh. अलाभयतउ । 6 Bh. फिउं । 7 Bh. गयउ ।
S P. omits -अं । 9 P. पडउ ।

§464) 1 Bh. omits. 2 Mes. स्वयधु- । 3 Bh. फणुं । P. पणउ । 4 P. आगद ।

परदृश्य लेवा नियमु लीधउ । मू रहई महाविस्मय ह्यउ^१ । 'जोयउ न, ए याणिया धनलवलाम' निमित्तु सरीरु सर्वलू जोखिमि घाती करी दूर त्रिपम देनांतर पूर फिरई तीहं रहई अदत्तादानविरति नियमु^२ किसी परि प्रतिपालइ^३ । तिणि कारणि एह तणी हउं परीक्षा करिसु । इसउं चतियी अहदु थिकउ तू पाखती^४ फिरिउ । फिरतइ हूंतइ आहु मई अवसर लाधउं । तउ मई तू रहई स्वर्णलक्ष्य मूल्य रत्नावली पतित दिखाली । निधानु पुण^{१०} दिखालिउं । अनइ घोडउ मूयउ दिखालिउ । मई तउं पुण लोभि जीतउ 5 नहीं । वसिया हूता तू रहई पाणी भरी दीयडी दिखाली । शुक नइ रूपि तू रहई जलवान विपद भरण काथी । तई पुण मोट्टेई प्राणरक्षणलक्षणि कारिय उचरिथतइ हूंतइ तई अल्पु पाणीपानमात्रु अदत्तादानु करावी न सकिउ ई ।"

§465) इसउं भणी करी नूयि विद्याधरि आपणा सेवक विद्याधर तेडिया । ति अहदय हूता सर्वे इयइ ह्या । तीहं फन्हा मणिमाला अणाथी निधानु अणाविउं । अनेरउं घणुं धनु अणाविउं । 10 मूयउ हूंतउ जु घोडउ सु जीवाडिउ । सार्थवाह आगइ सूर्यु विद्याधर भणइ, " सार्थवाह ! एउ ताहरउ घोडउ आपणउ साति " इसउं भणी करी सार्थ माहि आणी सार्थवाहु मेलिउ । धनु सार्थवाहु आगइ मेलिहउं । सार्थवाहु भणइ, " किसउं एउ धनु " । सु भणइ, " काई एकु माहरउं, काई एकु कउतिया लगी पर हूंतउं अवरिउं^१ । तदाकालि राजक्रपि विशदमुनि यचनि ज मू रहई चोरी तणी निवृत्ति न हुरईयइ, स हयडां^२ ताहरा साहसइदानइतउ मू रहई चोरी निवृत्ति ऊजनी । तिणि कारणि तुम्ह रहई मई धर्म-15 गुरु भणी धनु पाइभेट^३ कीधउं । " इसउं कहता सूर्य विद्याधर आगइ गुणधर भणइ । " जु धनु जेह नउं तई हरिउं छई सु तेह रहई पाछउं दइ " । तिणि तिमइ जि कीधउं । " पाडिलउं माहरउं धनु गुणधर ! तउं लइ " इसउं भणता सूर्य आगइ गुणधर कहइ, " अहो विद्याधर ! तउं एउ माहरउं धनु^४ सगलू^५ लइ । जिणि कारणि इसउं मई मनिउं हूंतउ " जु को माहरउ घोडउ जीवाडइ तेह रहई सगलू^६ आपणउं धनु आपउं^७ । तई माहरउ घोडउ जीवाडिउ, तिणि कारणि तउं माहरउं धनु लइ । किंच दानु^८ पात्रि^{२०} दीजइ । हउं पुण दानयोग्यु पात्रु नहीं । तिणि कारणि ताहरउं धनु कयमपिहं लिउं नहीं ।"

§466) इसउं भणता गुणधर आगइ विद्याधर भणइ, " हउं ताहरा उपदेश रहई इणि भवि ऊरिणु^१ नहीं हउं । मई माया लगी ताहरउ घोडउ मूयउ दिखालिउ, तिणि कारणि किसी परि ताहरउं धनु हउं लिउं । माहरउं धनुं तउं न लियइ, ताहरउं धनु हउं न लिउं । तउ पाछइ एह धन रहई कउणु धनिकु होइसिइ ! " सार्थवाहु कहइ, " धनुं जेह रहई देसिइ तेउ^२ धनिकु होइसिइ । तिणि कारणि आयि, जिम 25 सर्वह देसिति धर्मि वेच, लक्ष्मी कृतार्थे मीपजायां " । तेह नइ वचनि विद्याधरि अंगीकरियइ^३ हूंतइ तेह, विहु आपणी लक्ष्मी सप्तक्षेत्री माहि वायी । तउ पाछइ गुणधर मरी करी तउं लक्ष्मीपुंजु ह्यउ । हउं पुण ताहरा उपदेशइतउ सुरात्रि धनु दियतउ आयु पूरी करी दवंतइ ऊनउ । ताहरई पुणिय करी हउं पुण आवसितु हूंतउ तू रहई आजन्मलितु कालोचितु यस्तु पूरउं ।" इसउं व्यंतरवचनु सांभली करी मूच्छां गयउ हूंतउ सीतोपचारइतउ मूच्छांपगमइतउ जातिममरणु लही करी लक्ष्मीपुंज प्रमोइपुंजु ह्यउ^{३०} पावज्जीयु विदुशु जिनधमुं प्रतिपाली करी अंतकालि अनसनु^४ करी समाधिसउं मरी अच्युतदेवलोकि देवु होई पुनरवि मनुष्यभवु लही, दीक्षा ले, केवलज्ञानु ऊपावी, मोक्ष पहुंचत ॥

§464) 5 P. हू । 6 P. omits. - ७ - 7 P. निचमि । 8 B. - पटइ । 9 P. ए. (?) पा. omits - मरी 10 P. पुकि.

§465) 1 Bb. षणउ । 2 P. षणइइ । 3 P. ह्यइ । 4 P. हइ । 5 P. पारभेइ । 6 P drops words between माहरउं धनु... माहरउं धनु । though it retains एणपर । 7 Bb. has added words between हणुं.....हणुं in the margin. 8 Bb. दान ।

§466) 1 P. ऊरण । 2 P. तउ । 3 P. -ऊरिइ । 4 Bb. तेहे । 5 P. हउ । 6 P. भणउउ । 7 B. omits. प. वा. २१

निगुञ्जने इमोऽनुकं निःश्नेरुपपन्नतरम् ।

पथे विवेके' शीर्षं यः परिचिता मयाऽप्यु मः ॥

[६२८]

इमं शब्दं मया पद्येन लोभयति इति तथा निगुञ्जतु ह्ययम् । नैव शब्दं यत् आगतं तद् आगतं 'निगुञ्जने' इत्यर्थे भोज्यं यदा । सोऽप्यु पदार्थावयुजि कर्त्ता परीतुः सती । चाध्यायेवुजि कर्त्ता परीतुः ।

§470) निर्दिष्टे नि मदिर् मादित्तु मातं तुपार्थे' इत्युत । । सु पुलि कर्त्ता कर्त्ता तिमर कंइतुं ह्युत्त तिमर उत । नि नि मादिति अनेश विनि अनेकि संघन करी तिग्याप्यु' धानु आरत्तिध' हंत' मयापु ह्यत इत । " अतो नय माति " । नि नि अतिरे, " अय ततं मू रतं मृत्त तत तिमर' वृत्तु मंडा इत उत तिमर वृत्तु मं' म्भदर परि धा " परि कति " ह्येहसु " । म यतुः सगममधेति तिमर परि अर्त्त करी मंदा मयः । धेति मयः, " मंदा तिमर वृत्तु मयः तिमर वृत्तु अय धत्ति' परि ह्युत्त त' १० मंडा मयः " । नि नि अतिरे, " आरी मयः परि मयः " । धेति मयः मय तिमरि नि परि वृत्तु मयः । मंदा त' रतं परि मयः । पद्येन मयि इति कंइतुं भात । मयं मय मयः । मयि मंडा तिमर वृत्तु' इति वा कयति' करी तिमरं इति ह्यतः । सु पुल मादित्तु म तिमरं तुपपन्नतय मयि कः मदिरे करी तुपपन्नत मती निगुजि म कतः । तिम तिम धनु हात तिम तिम मंदा मयः मती मयपुः धेति' ह्यः । अर्त्त' धनु हात' धादिरे अय पद्येन मय मं' परि मयः मय । मयि नि मंडा मयं १, धतं शब्दं रतं पद्येन क' इत यतुः मादित्तु आगतं मयि मीतयः । " इतं पद्य रतं विज' मती' । मू रतं रतं अयति मू रतं' मय' म कतः' ।

§471) अनेश विचरि नि नि मादित्तु पयं धनु हातं । तिमरं कतः मातुं वन मादि वतः । मयि मयं मयि मयि मयं मयि मयि मयि मयि । मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि । " मयं मयं मयं मयं । मयं मयं मयं मयं मयं मयं मयं मयं । इत पृष्ठे हंतं मया मयि मीतयः २० ' मयं उत । मयं मयि मयि मयि । नि नि कर्त्ता मयं मयि कतः । " मयि मयि कर्त्ता कर्त्ता' पुल' मयि मयं मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि । सु मयं मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि । मयं मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि ।

निगुपनेऽनुने माया मयमयमयमयमयमय ।

मनेरुपपन्नतरं यथा मयमयमयमयमयमय ।

[६२९]

मंदा मयं मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि । मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि । मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि । मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि । मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि मयि ।

4 P. विवेकः 5 P. मयः

§470) 1 Dh. मयि 2 P. तिमरः 3 P. मयि 4 P. मयः 5 B. मयः (-3 appears to have been cancelled). 6 P. मयः 7 P. मयि 8 Dh. मयः 9 P. मयः 10 P. मयः 11 B. मयि 12 P. मयः 13 Dh. मयः

§471) 1 P. मयि 2 P. मयः 3 B. drop words between धनु.....धनु ।

§472) धरि आर्या स्नानु करी विधिवत् देवपूजा करइ । सुग्राहं रहइं दानु प्रवर्तावइ । यथेच्छा कामसुख भोगवइ । तउ पाछइ विवेकवंतु कोनु देखीं करी नंदा सानंदा हुंती भणइ, “शील सलिल परितिक हुंती जिनमकि कललता आनु मू रहइं सफल हुई । कांत जु मईं तउं विवेकवंतु दीउत ।” नागिलु भणइ, “प्रियनाम ! जु मईं व्यसनु मेलही करी विवेकु अंगीकरिउ’ तेह अर्थविषइ गुरु नउ आदेशु’ कारणु । यत उक्तं-

मनो न निधलं तावद्यावत्तत्वं न विंदति ।

विदिते तु परे तत्त्वे मनो नौरूपकाकवत् ॥

[६३०]

तेह दियम हुंती तीहं रहइं एकचित्तता हुई । नागिल नंदा विहुं आधिरहितहं समाधिसहितहं समान धर्म-रूप-कला-योगनवंतहं तीहं तणी कायकांति अतिशय प्राप्त हुई ।

10 §473) अंतरइ दिनि किणिहिं पविं नंदा पीहरि गई । नागिलु आपणा घर तणी सातमीं भुईं नर मणिकुट्टिमि देवपत्यंकोपमान शयनीय उपरि मृतउ चंद्रविंवि दत्तलोचनु वत्तइ । कइं एक^३ विद्याधरी विप विरतिणी^४ आकाशमार्गि जायती नागिल रहइं देखीं करी सकाम हुईं हुंती नागिल^५ आगइ आयी करी भणइ । “कामाग्नि-भंनत-गात्र^६ हुंती हउं अहो महापुरुष । तू रहइं शरणइ^७ आयी । स्वामिन् ! स्वामिसंग-सुधातरंगरंगकेलीसुग^८ मू रहइं करावि । हउं पुण विद्याधरशिरोमणि छइ हंसु विद्याधरु तेह नी गेलिनी, 1 मईं दीउइ तेह हंनउ माहरउ गनु ऊधीउउं हयउं । चंद्र नाम स्वैचरीश्वर नी हउं दीकिरी नामि करी आगइ लीलावती, तउं आदगी तउ हउं कर्मिहिं करी लीलावती होइसु । अथ मू रहइं जइ किमइ नही अंगीकरइ तउ तउं नही हुयइ अथवा हउं नही हउं । तेतीवार धर्मज्ञ तउं किसउं स्त्रीहत्यापातकी^९ हुयइ । पनि तणी विद्या पिना तणी विद्या हउं सद्य^{१०} ति^{११} जाणउं ति विद्या तू रहइं देसु, पति अनर पिना तू रहइं साधकरिसु । तिणि कारणि तुंउं^{१२} मू रहइं अंगीकरि । माहरउं वचनु अन्यथा म करिसि ” । 2 इमउं भणी करी तेह ना पाइ आपणइ मस्तकि धरिवा कारणि जेतलइ घाईं तेतलइ ‘परस्त्री संस्पर्श^{१३} माहरां पगहीं रहइं म हुउं’ इणि कारणि नागिलि जिम दहन हुंता दासता पाछा कीजइ तिम कीया ।

§474) तउ पाछइ म विद्याधरी कोपवदामत हुंती आकाशगत अतीयाऽऽत्कलोचन थिरी अभियणुं लोत्तगोलु अतिविलोलु विचुर्यां करी नागिल तणा मस्तक ऊपरि भूकर । “दाधउ रे दाधउ रे” इहां परि गगनगत हुंती याहयइ । तेह रहइं बीहयइ । तउ पाछइ नागिलु पंचपरमेष्ठि नमस्काक मन माहि 2 नमरइ । नमस्कार नर प्रभावि लोहगोलउ विलइ गयउ । म विद्याधरी पराजित हुंती लाजी करी अडइय हुई । नागिलु हर्ष रोमांच कंचुकिन गावु हयउ । “तुमइ पावइ पितृमंदिरिहिं मू रहइं रति नही ।” इमउं भणती हुंती नंदा नर कवि नंदा नर स्वरि म स्वैचरी श्रुतज्ञारि आयी । परिवार कन्हा द्वार ऊघडाया^१ नागिलु स्वरि करी नंदा आलसतू हंतउ स्वैचरी कपटाशंका^२ करी संकीर्णस्थानस्थु होई तउ नंदा बोलावइ । “ह अरविज्ञासि, दाक्षिण्यनिधे यदि त्वं नंदासि तदा मामेहि । अथाऽन्या कापि तदा धर्मव्य 3 प्रभावाद्भ्रमणनिधेव ।”

इमा कथन कथनानंतरु धर्म नर प्रभावि म स्वैचरी स्तंभिनगति हुंती तेह नर चरित्रि करी विष्मदायक हुंती विद्याधरी आगइ ऊभी रही । नागिलु कपटांताऽऽत्करी शीलरक्षा कारणि आपई प्रनु लिदइ । समनदेवनादनु^४ देसु धरगत हंतउ श्रुतस्थितु नु छइ यक्षरूपु तेह आगइ इतुं^५ कइइ । “अहो अराधय ! नंदा नर लोभि मईं तउं श्रुतस्थितो पमाडिउ^६ हंतउ । मानंतु हउं कृतकृत्यु हयउ ।

[472] 1 P. अंतःकरणः । 2 P. अग्निः । 3 P. रहइं ।

[473] 1 P. करइं । 2 P. के । 3 P. एह । 4 P. -विरतिनि । 5 P. नागिलः । 6 P. कामाग्नि-भंनत-गात्र । 7 P. -रूपः । 8 P. -सुधातरंग-केलीसुग- । 9 P. omits. 10 B. E. add नही । 11 P. कर्मि । 12 P. -तुं । 13 P. -तः ।

[474] 1 P. कविः । 2 P. -कपटाशंकाः । 3 P. omits कपटा- । 4 B. P. -कथा । 5 P. कपटा- । 6 P. -तः । 7 P. स्वर्गः ।

विरूपाक्ष्य' यक्ष । तउ आपणइ यानि पणुचि । " तउ दीप हंती भाया नीसरी, " जां तउं' जीविसि तां एउं नू सरसु' रहिसु ।" तथा शीलमहिमा देवी करी स खेचरी अतिंजितचित्त हंती प्रभात समइ महाविस्तरि^१ दीक्षा महोरसपु करायइ । सुयोदियाहं दीप्रभासु^२ जु छइ यक्षदीपु निणि अनुगम्यमानु विस्मय स्मर होचनहं^३ । लोकहं विलोक्यमानु नागिलु भयसमुद्रकूलि गुरुपादमूलि पणुतउ । नंदा सहितु दीक्षा ले करी दुस्तर^४ तपकियाकलाप^५ करतउ हंतउ गुरु सरिसउ विहरित । रातिहं^६ यक्षदीप^७ ६ तणइ प्रयांति भ्रतपाउ करतउ^८ थोडे दिवसे ज्ञात ज्ञातव्यु गीतार्थशिरोमणि ह्यउ संजमप्रहणपूर्वाहं आयुःकर्म बाधउं^९ हतउं, तिणि कारणि हृदियपक्षेत्रि कल्पवृक्षतलि नंदा स्नेह लग्गी जुगलियउ ह्यउ । सु जुगलु भाग्यशेष तणइ प्रभावि स्वर्गभाग भोगयी करी महाविदेहि क्षेत्रि मनुष्यता लही सिद्धिहं गयउ ।

शीलं स्वर्णाभरणं परीक्ष्य हीरान्वितं नागिलवशिषाय । 10
आसंमूर्तिं साररामवाप्य श्रेयाश्रियं भव्यजना लभध्वम् ॥ [६३१]

चतुर्पद्म विषय नागिलयुतकार कया समाता^{१०} ॥

§475) अथ पांचमा व्रत तणउं प्रतिक्रमणु भणइ ॥

इत्तो भणुच्यए पंचपमि आपरियमप्पसत्थंमि ।

परिमाण परिच्छेप इत्य पयाप्यसंगेणं ॥ [६३२]¹⁵

'इत्तो' इति । एह चउथा व्रत अनंतक धन १, धान्य २, क्षेत्र ३, वास्तु ४, रूप्य ५, सुवर्ण ६, कुपित ७, द्विपद ८, चतुष्पद ९, लक्षण नवविध परिग्रह तणइ इच्छापारिमाण परिच्छेदि प्रमाणकरण रूपि पांचमइ अणुव्रति जु आचरिउं अग्रस्तित लोभोदयरूपि भावि श्रद्धाविशेषि हंतइ । किंसा विषय ! इच्छा परिग्रह प्रमाण विषय । किमउ अर्थु ! प्रमाणाधिकता विषय लंपटपणउं कीधउं । 'पयाप्यसंगेण' इत्यादि पूर्वयत् । अवश्यमेव श्रावकि परिग्रह परिमाणु करिवउं । यतः 20

संसारमूलमारम्भास्तेषां हेतुः परिग्रहः ।

तस्मादुपासकः, कुर्यादल्पमल्पं परिग्रहम् ॥ [६३३]

तृप्तो न पुत्रैः सगरः, कुचकर्णो न गोधनः ।

न धान्यैस्ति लकः, श्रेष्ठी न नन्दः कनकोत्करः ॥ [६३४]

वद्विस्तृप्यानि नेन्धनैरिह यथा नाऽम्भोभिरम्भोनिवि- 25

स्तद्रन्माहयनो यनैरपि यनैर्नन्तुर्न सन्तुप्यति ।

नत्वेयं मनुते विमुच्य विभयं निःशेषमन्यं भवं

यात्यात्मा तदई मुधैव विदधान्येनांसि भूयांसि किम् ॥ [६३५]

§476) अथ एह व्रत तणां अतिचार तणउं प्रतिक्रमणु भणइ ॥

घण-घन्न-रियत्त-वत्थू-रूप-सुवचे य कुवियपारिमाणे ।

दृण्ये चउप्ययंमि य पडिक्कम देसियं सव्यं ॥ [६३६]³⁰

§477) तत्र- धनु गणिम धरिम मेय परिच्छेद्य मेदइतउ चउं प्रकारे । तत्र-गणिमु-पूर्वाकल जातीकलादिकु १, परिमु-मुठ, लंड, खजूरादिकु २. मेउ-घृत तैल मध्यादिकु ३. पारिच्छेद्यु-हीरक

§674) 8 P. विरूपाक्ष । 9 Bh. द्। 10 Bh. गरितउ । 11 P. विस्तरि । 12 P. सुयोदियाहं दीप प्रभा सु । 13 Bh. -विजोचन - । 14 P. दुस्तर । 15 P. तण- । 16 P. तिहं । 17 P. वशि- 18 P. repeats ले कती.....करतउ । ditto-graphy. 19 P. बांधनउ । 20 P. omits.

माणिक्यादिकु ४ । धान्यु ग्रीहि-माधूमययादिकु अनेक विभु । ईतं धनधान्य विभुं नः अनिकमि अतीचारं । तत्र धनधान्य रहईं प्रमाणप्राप्ति ह्येती अधिक लाभ भावि ह्येत्त जेतलः आगिलः वेचः तंतलः मंच काराणि दानि करी धनधान्य आपणां करी बीजा नः घरि अथवा क्षेत्रि त्वलः मृत्-जादिकि वधायी राहयः । आगिलः वीकिइ ह्येत्त आपणः घरि आगः । इसांपरि धनधान्यातिक्रम रूपु प्रथम अतीचारः ।

5 § 478) क्षेत्रु सेतुकुतुतर्म-सु भुवंडविभेयु । यागु त्वातु मरोयः यार्पी कृपादिकु । उच्छिःतु गृह हृष्ट भांडशालादिकु । तउ पाछः सेतु पालि कलियः । केतु स्तंभादिः कर्हायः ।

सु सेतु ऊतारी करी केतु ऊतारी करी विहुं क्षेत्रहं तणः थानकि एक क्षेत्र तणउं करणु । अंतरमिति ऊतारी करी विहुं घर अथवा विहुं हाट थानकि एक घर तणउं एक हाट तणउं करावणु तु कीजः सु क्षेत्र वास्तु अतिक्रमलक्षणु बीजउ अतीचार २ ।

10 रूप्यु-रजत सुवर्णु कनकु तीहं तणः प्रमाणि आगः पृगः ह्येत्त भार्यादि निमित्ति । भूषणमिणां तारि करी अवधि सीम दानि ह्येत्तः । रूप्य सुवर्णातिक्रम लक्षणु बीजउ अतीचार ३ । कुपित-थाल कञ्जोलादिकु नीहं नः लाभनिमित्तु म्यूलना कारावणु कुपितातिक्रमलक्षणु चउथउ अतीचार ४ ।

15 § 479) 'दुष्पण चउप्ययं' ति-द्विषदादि दास्य दास्यादिकु । चतुष्पदु गो महिपी वृषम कर्म तुरंगमादिकु । द्विषद चतुष्पदावाधि पूरण निमित्तु पाछेरउं गवर्भमणु करावः । तिणि करी द्विषद चतुष्पद-मानातिक्रमु पांचमउ अतीचार ५ । 'पडिक्रमे देसियं मच्चं' पूर्ववत् ।

§ 480) परिग्रह परिमाण करण विषद विद्यापति महीपति कथा लिखियः ।

परिग्रहमाणाख्यव्रतकल्पदुरद्भुतः ।

निषिध्यमानमप्यर्थं दद्याद्विद्यापतेरिव ॥

[६३७]

20 पांतनपुरि नगरि धनद जिम धनपति विद्यापति इतः नामि श्रेष्ठि अति विख्यात ह्ययः । तेह नः गृंगारसुंदरी इतः नामि श्रेष्ठिनी, रूपि करी जिसी सुरसुंदरी ह्ययः तिसी । ति वे जिनभक्त अनंतकल लाभ-यांछा करी सतक्षेत्रीतलि । धनवीजु वावतां ह्येतां यथाकामु वृषपोषणु करइं । धनु उपार्जतां जिनधर्मु विधियत् करतां सुवर्णय हर्षमय विस्मयमय समय नीगमतां ह्येतां तीहं रहई अनेरः दिवासि रात्रि समः स्वप्न माहि विद्यापति रहईं का एक स्त्री कहः, " हउं ताहरा घर नी लक्ष्मी एतला दिवस ताहराः पुण्यि गुणि करी वापी ह्येती तू रहईं वदा ह्येती । हव' हउं देवि मोकली तिणि कारणि आज ह्येती दसमः दिवासि ताहरा घर ह्येती जाइसु " । इसउं दुभ्रयु वचनु तेह नः विद्यापति सांभली करी जागिः । ' द्रिष्टु हउं होइसिउ' इसांपरि चितावस्थु ह्ययः । प्रभातसमः गृंगारसुंदरी विद्यापति चितापतिः देसी भणः । " कांत ! रवित्रिंज जिम तुम्हारः सुखि मालिन्यु अदृष्टपूर्वकु किसईं कारणि आजु दीसई ? "

30 § 481) स्वप्न स्वरूपि विद्यापति भणिइ ह्येत्त पुनरपि गृंगारसुंदरी भणः, " निर्वाणनगर-संपादकु तुम्ह कन्हा म जाइजिउ । तथा धन तणउं फलु सुग्रावदानु तुम्हे भव्य परि' एतला दिवस सीम लीधउं । मोक्षमार्ग भंगविषय वाडि ए लक्ष्मी जइ भाग्यवति भागी तउ ताहरी पुण्यवृत्ति जागी । तिणि कारणि हर्षस्थानि' किसईं कारणि विषाडु करउ ? किसीपरि ए लक्ष्मी दसमः दिवासि जाइसिइ । आत्मा यत्त ह्येती आजु तु सतक्षेत्री माह वावउ । परिग्रह परिमाणु व्रत करउ । असुभकाल तणउं हरणु करउं " ।

§ 478) 1 Bh. केतु ऊतारी करी विहुं हाट थानकि एक घर तणउं करणु । 2 Mss. काराणु ।

§ 480) 1 P. तानि । 2 P. कपानं । 3 Bh. P. गुण- । 4 Bh. वसि । a Later correction over वः । 5 P. दिव । 6 Bh. होसु । 7 Bh. adds वरी ।

§ 481) 1 Bh. -प्रदेशि । P. प्रदेशि । 2 P. सामीदिन । 3 P. -पदि । 4 P. हवि-

निको
मुक्ति
निमित्त
मायं
वादि

अधि
चाम
मायं

इसी प्रियतमभाषा सांभली करी ह्यपितु हंतत प्रभातिहिं जि समस्त लक्ष्मी सतक्षेत्रीं वेचइ । देह माश्रोप-
योग्य स्वल्पु धनु राहवी करी मध्यदिनि जिनपूजा करी इसउं कहइ, “एक शृंगारसुंदरी भार्या, एक शय्या,
वि वस्त्र पात्रु एकु, आहारु, दिन भोजन माडु घुंकी करी अपर समस्तवस्तु परिग्रहकरण नियमु । जिनैद्र
सेवा निमित्तु घणूं वस्तु धरउं” । इसी परि परिग्रहप्रमाणु करी समस्त दिवसु धमेध्यानपरायण थिकउं
नीगमइ । ‘धन पाखइ प्रभाति किसी परि याचकमुख देखीसिइं ? इणि कारणि रात्रि समइ लोकि सूतइ ३
हंतइ देशांतरी गमनु करिया युक्तु’ इसउं शृंगारसुंदरी सउं आलोची करी सूतउ । रात्रि प्रहरद्वय समइ
देशांतरी चालिया जउ ऊटिउ तउ घरु तिमहीं जि धन भरिउं देखइ । तउ विस्मयापलु हंतउ विद्यापति
नियतमा प्रति भणइ, “इसमइ विनि आकर्षितइ” जि हूँती श्री जाइसिइ, दस’ दिवस सीम दीयमानइ हूँती
माहरा पर हूँती नहीं जाइ । तिणि कारणि ‘धनदानु धनक्षयहेतु धन तणउं अदानु धनसंचय हेतु’
इसउं^{१०} सुग्धजन सुधा षोळइ—

न याति दीयमानापि श्रीभेदीयत एव तत् ।

तिष्ठत्यदीयमानापि नोचेदीयत एव तत् ॥

[६३८]

[482] इसी वार्त्ता तणइ विस्मयरति वर्त्तमानहं हूँतं तीह रहइं सुरुं उगिउ । बीजइ दिनि
पुणि तिमहिं जि लक्ष्मी सुपात्रि दे करी परिग्रह परिमाणु करी सूतउ । प्रभाति तिमहिं जि श्री देखइ ।
वली तिमहिं जि ऋद्धि सुक्षेत्रि वाचइ । इसी परि नव दिवस सीम करइ । इहुं कांई एकु सुगानु दानु प्रवर्त्ता-
१६ विउं जिसइ कल्पद्रुमाधि देवी रहइं पुण विस्मउ ऊननउ । ‘पूर्वपुण्यपयः पंकु’ मुक्तिकारं रहइं दूपकु श्री
नउ पुरु भू रहइं प्रभाति शोपि जाइसिइ’ इसी परि हर्षपूरितु हंतउ रात्रि सूतउ । स्वप्न माहि श्री आर्वी
करी अइ । “अहो महापुरुष ! ताहारं दानधर्महं करी दुष्टु वैभु दूरि कीधउं हउं’ जायती वली
थाहरावी ।

अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते ।

इति सूक्तं त्वया कारि मातिसार यथातथम् ॥

[६३९]

फदानन न सुश्रामि तदहं सदनं तव ।

यथेच्छं भाग्यभङ्गीभिरुत्सङ्गीकृतं मुंक्ष्वं माम् ॥ ”

[६४०]

तदाकालिहिं जि जागिउ हंतउ भार्या आमइ आमिलइ गमइ स्वप्नविचारु कहइ । प्रतिज्ञा
निर्वाहनिमित्तु कहइ, “प्रियतम ! भोगमात्रफलि श्री दानव्यसनिहिं जि हा ! माहरउ जन्मु जाइसिइ !^{२५}
मुक्तिकलिं तापि किसी परि प्रवर्त्तिसु ! कदाकालिहिं लोमलोलितु मनु नियम भंगु पुणु’ कराविसिइ ?
तिणि कारणि श्री-पुण्यपूरितु मंदि रु मूकी करी किणिहिं देशांतरी जाइइइ । तउ श्री ग्रहतर’ छुदियइ” । इसउं
भार्यासउं आलोची करी जिनविच करंडिका ऊपाडी करी शृंगारसुंदरीमात्र परिवार हंतउ घर’ हंतउं
वाहिरउ नीसारिउ । पंचपरमेष्ठि नमस्कार समरणा करतउ नगरइतउ चालिउ ।

[483] नगरी एकि जाई करी सूतउ । तिहां अणुनु राउ विणठउ । प्रधानपुरुषे पांच दिव्य^{३०}
अधिवासियां, जिहां विद्यापति हंतउ तिहां आवियां । शोडई हेवारु कौधउ, छत्रु आवी माथइ रहिउं,
शामर विहुंगमे ढलिया छायां, पट्टहस्ति गलगजिकरणपूर्वु तीर्थजलपूर्ण कलसे’ करी राज्याभियेकु करी
भार्यासहितु ऊपाडी’ करी शुडादंडि’ करी कुंभस्थलि चडाविउ । तउ पाछइ मंजि सामंत मंडलेष्वर
विसरपरिवृत्त’ राजा’ सौध ऊपरि आवतउ मन माहि खीतवइ । ‘जिम पूनिम नउ चंद्रमा मेहपदल’ हंतउ

§ 481) 5 P. omits. 6 P. चहइ । 7 P. दसइ । 8 P. आकर्षितइ । 9 P. दइ । 10 B. omits.

§ 482) 1 B.-पवा- । 2 B. adds it in the margin. । 3 B. omits P. दु । 4 P. सुव ।
5 B. omits. 6 P. पुणि । 7 P. भीमहंतउ । § Bh. omits.

§ 483) 1 P. कइसे । 2 P. उपाडी । 3 P. शुंकादंडि । 4 B. gloss over विसरः समूह । 5 B. Bh.
राज । 6 P. पइउ ।

नीसरिउ राहुप्रस्तु हुयइ, तिम हउं अल्पधनपंक हंतउ' कथमपिहिं नीमारिउ, प्राज्यराज्य मत्तपंक माहि पडिउ' । भद्रामनि बइसाली करी मलामात्य राज्याभिषेकु करावइ । विद्यापति भणइ, " मूं रहं राज्य माहि कार्युं नहीं " प्रधान कहइ, " इम किम हुयइ ? देवता तू राइं राज्य दिवइ " । विद्यापति भणइ, " तथापिहिं मूं राज्य कार्युं नहीं " । इसीपरि वार वार राज्याभिषेक निषेधु करतइ हंतइ आकाश-
 5 भाषा ऊछली, " अजी ! भोगफलु प्रभुतु कर्मुं छइ तिणि कारणे राज्यलक्ष्मी पाणिपीवनु करि " इमं निम भाग्यदेवता वचनु सांभली करी मिंसासनि जिनेंद्रप्रतिमा बइसाली करी तेह नइ पादुपीठि आपणपइं वइसी करी जिनप्रतिमा रहइं राज्याभिषेक तणइ ध्याजि आपणवा रहइं त्रियुयनाधिपत्यनिमित्तु अभिसींचावइ । जेतलउं अंगीकरिउं छइ तेतलउं आपणइ लेवइ करी बीजउं गमस्तु धस्तु शस्तु हरिण तुंगमं भांडागारादिकु जिन नामांकितु करइ । सदा तीर्थयात्रादि प्रभावना करावइ । ध्रुवग्रह करा-
 10 वइ । जिनिबंध भरावइ । अमयघोषणा अमारिघोषणा करावइ । लोक कन्हा कग न लियइ । कहइ, " अहो लोकउं तु राजु " भागु आवइ सु धनु धर्मिहिं जि वेचउ " । तउ पाछइ जिनधर्म नइ एकातपि राज्य प्रवर्त्तइ' हंतइ 'मार' 12 इसा अक्षर दंडवर्णनाम मूकी करी अनेरइ थानकि, न केवलं जीवविपद कोइ' 13 न कहइ, अजीव छइं जि छूत माहि तारि तींहीं आगइ को न कहइं मारि । जिम जिम विद्यापति-राजा धनु वेचइ तिम तिम तेह नी भाग्यदेवता राजमेंदिरि धनु वरमइ । अनेरइ विनि समीपगत राजेंद्र
 15 मिली करी तेह ना राज्य रहइं लेवा आविया । विद्यापति धर्म मूकी बीजी यात जाणइ नहीं । जिनाधिष्ठा-यक छइं यक्ष तेहे तींहे रहइं रोग ऊपजावी करी नामाविया । विद्वंपियां तणउं विकरु कटक देवी करी विद्यापति चित्ति चीतवइ ।

§484) " अहो ! शक-विक्रमवंत शत्रु राजेंद्र छइं, तेई धर्म तणइ प्रमावि भाजी गया । मूं रहइं अल्प परिग्रहता देखी करी महापरिग्रह शत्रुलोक जिगिया कारणि आपणा सेवक' भर्णा' धर्मिं 20 निश्वइं साहाय्यु कीधउं ।

तदहं यद्यमुं सेवे, त्यवत्याशेषपरिग्रहः ।

तदन्तरायभङ्गेऽपि, भवत्ययमुपक्रमः ॥

[६४१]

इसउं चीतवी करी शृंगारसुंदरी संभवु शृंगारसेनु सूनु राज्य बइसाली करी संजमसूरि समीपि संजमु ले करी कल्याणमउ आपणउ आत्मा तपोनि तापि नृद्धवी करी विद्यापति राजक्रपि देवलोकि 25 गयउ । मनुष्य देव भव पंचकि ह्यइ हंतइ मुक्ति गयउ ।

विद्यापातिकृतपरिग्रहमानयामं

श्रुत्वा बुधा भवत सम्पादि निस्पृहा भोः ।

येन स्वयंपरवचधुः शिवसम्पदेपा

जातस्पृहा क्षिपति वः स्रजमाशु कण्ठे ॥

[६४२]

इति परिग्रह परिमाण करण व्रतफलविषइ विद्यापति राजक्रपि कथा समाप्ता' ।
 §485) अथ त्रिन्हि गुणव्रत कहियइ ।

तत्र प्रथम गुणव्रत प्रतिक्रमण निमित्तु भणइ—

गमणास्त य परिमाणे दिसासु ब्रह्मं अहे य तिरियं च ।

युद्धि-सद-अंतरद्धा पदमंपि गुणव्यप निदे ॥

[६४३]

गमनु भणियइ गति तेह तणइ परिमाणि पतलां जोयण जाइनु इसीपरि छोदि प्रमाणि अंगी-
 करिइ हंतइ । किला नइ विपद ?

§ 483) 7 P. इंतउ । 8 B. P. वस्तु । 9 P. तुंग । 10 B. राज । 11 B. later corrected to प्रवर्त्तइ । P. प्रवर्त्तइ । 12 B. मारि । 13 B. छो ।

§ 484) 1 P. नेच । 2 P. तणी । 3 P. omits.

पूर्वा दक्षिणा पश्चिमा उत्तरा लक्षणासु दिसासु । तथा आग्नेय वैश्वानरि वायव्य वेदानां लक्षणासु विदिगासु तथा 'उद्धृ'- उद्धृदिशि 'अहे' अधोदिशि विपद जु अतिक्रमिउं सु अतीचारु तदेवाह— ।

'उद्धृ' ऊर्ध्वं योजनद्वय मानि कीधर हंतइ अनाभोगाद्विपदाइतउ अधिक गमनि हंतइ उर्ध्वदिक्परिमाणातिकमु प्रथमु अतीचारु १ ।

एवं अधोदिक्परिमाणातिकमु धीजउ अतीचारु २ ।

तिर्यग्दिक्परिमाणातिकमु धीजउ अतीचारु ३ ।

तथा 'बुद्धि' ति एक दिशि ना जंयण धीर्जा ति ति वधारियइं प्रयोजनवदाइतउ ति ति दिशि प्रोदिपइं । यथा पूर्वपश्चिमादिषु समू जु दिक्परिमाणु कीधउं एइ पाछइ दहोत्तरभाय ऊपरि कार्यु ऊपनउं पाछइ पश्चिमदिशि नयइ योजन चैतयेी कर्ग पूर्वदिशि दहोत्तरमउ जाइ । इती परि क्षेत्रबुद्धि चउथउ अतीचारु ४ ।

§486) 'स्य अंतरदिदि' 'ति-' 'स्य' स्मृति तेह तर्णा अंतर्द्धां प्रतममाण विस्मरणु । स स्मृत्यंतर्द्धा कदिपइ । यथा पूर्वदिशि गमनि उपस्थितइ हंतइ मनि संदेह द्युइ । कितउं मू रहइं शउ अथवा पंचाश जंयण मोकलं एइ इमी परि स्मृत्यंतर्द्धांनि हंतइ अधिकममनि स्मृत्यंतर्द्धांनु पौचमउ अतीचारु ५ ।

इमी परि निगमित भूभाग मेलही करी अपर चतुर्द्धा रज्जुप्रमाण लोकागत जंमुजात रक्षालक्षण गुण निमित्तु इनु गुणप्रतु कदिपइ । ति ति प्रथमि गुणप्रति जु अतिचरिउं - इत्यादि पूर्ववत् । तत लोह-गोलक मरीचउ एइ शूर्दा तेह रहइं एउ मथानुवतु । तथा च मणितं—

तत्तापगोत्रकथां पपत्तजीवो निवारियप्पसरो ।

सच्यत्थ किं न कुञ्जा पावं तत्रारणाणुगभो ॥

[६४४]

चराचराणां जीवानां विपर्दननिपर्चनान् ।

तक्षापो गोत्रकल्पम्य सद्मनं गृहिणोऽप्यदः ॥

[६४५]

जगद्राक्रममाणस्य प्रसरत्तोभवाम्भिः।

स्वल्पनं विदधे तेन, येन दिग्भिरनिः कृता ॥

[६४६]

§487) दिक्परिमाणप्रतकरण विपद सिंहकया लिखियइ ।

गनौ संकोचयन्त्येवं, यः स्वं दिग्भिरनिप्रतम् ।

संसाररत्नद्वनोत्तालकल्यारम्भाः स सिंहवन् ॥

[६४७]

वासंती' नामि नगरी । कीर्तिपाटु नामि राजा । भीष्म नामि तेह तणउ पुट्टु । पुत्रर्ही' कन्हा अतिवहइ सिन्धुनामि धीष्टि । सुपुण' परम श्रायकु जिनभक्तिवंतु वरुंइ । अनेरइ विनि सभा माहि कीर्ति-पाटु राजा सिंहधेष्टि मुयकमलु ध्रमर जिन जंयणउ हंतउ यरुंइ । सेतलइ प्रस्तावि प्रतीहाक आवी राजेंद्र रहइं वीनयइ । "महाराज ! तुम्हं रहइं देखणहारु गकु' पुरुपु' दिव्याकारु द्वारि आविउ छइ ।" राजा मणइ "माहि मेलिह" तउ पाछइ प्रतीहाक मुकु हंतउ सु पुरुपु माहि आवी राजेंद्र रहइं प्रणमी करी आगनि सभासीनु वीनयइ ।

§488) "महाराज-नागपुरु नामि नगर । तिहां चंडु नामि नरेंद्रु । रत्नमंजरी नामि राक्षी । तीहं नी गुणमाला नामि वीकिरी । स तादरा पुत्र भीम रहइं देवा कारणि स्वामिन् ! तुम्ह कन्हा इहं

§ 486 1 B. Bh. have उपस्थित ।

§ 487) 1 B. Bh. -काल- । 2 Bh. begins with तथादि । 3 B. Bh. ही । 4 Bh. पुणु । 5 Bh. has अनेर...परीइ in the margin. 6 P. omits.

नीसरिउ राहुमरतु हुयइ, तिम ताउं अल्पधनपंक हंतउ' कथमपिहिं नीमारिउ. प्राज्यराज्य मत्तंरह माहि पडिउ । भद्रामनि बइसाली करी महामात्य राज्याभिषेक करायइ । निग्रापति भणइ, " मू रतं राज्य माहि कार्यु नही " प्रधान कहइ, " इम किम हुयइ ? वेयता तू रतं राज्यु नियइ " । विद्यापति भणइ, " तथापिहिं मू राज्य कार्यु नही " । इसीपरि वार वार राज्याभिषेक निषेधु करतइ हंतइ आकाश-
 5 भाषा ऊछली, " अजी ! भोगफलु प्रभूतु कर्मु छइ तिणि कारणे राज्यलक्ष्मी पाणिपीडनु करि " इमं निज भाग्यदेवता वचनु सोभली करी सिद्धामनि जिनेंद्रप्रतिमा बइसाली करी तेह नइ पापपति आपणपइ वइसी करी जिनप्रतिमा रहइ राज्याभिषेक तणइ व्याजि आपणवा राइं त्रिभुवनाधिपत्यनिमित्तु अभिसिंचायइ । जेतलउं अंगीकरिउं छइ तेतलउं आपणइ लेगइ करी बीजउं गमस्तु परतु शस्त' हलि तुंगम' भांडागारादिकु जिन नामांकितु करइ । सदा तीर्थयात्रादि प्रभाषना कर-वइ । भेवगृह करा-
 10 वइ । जिनविच भरावइ । अभयघोषणा अमारिघोषणा करावइ । लोक कन्हा कग न लियरं । कहइ, " अहो लोकउ जु राजु¹⁰ भागु आवइ सु धनु धर्मिहिं जि वेचउ " । तउ पाछइ जिनधर्म नइ एकातपरि राज्य प्रवर्त्तइ¹¹ हंतइ 'मार'¹² इसा अक्षर दंर्षनाम मूकी करी अनेरइ थानकि, न केयलं जीवविपर कोइ¹³ न कहइ, अजीव छइं जि छूत माहि तारि तीहिं आगइ को न कहइ मारि । जिम जिम विद्यापति- राजा धनु वेचइ तिम तिम तेह नी भाग्यदेवता राजमेंदिरि धनु वरमइ । अनेरइ जिनि समीपगत राजेंद्र-
 15 मिली करी तेह ना राज्य रहइ लेवा आविया । विद्यापति धर्म मूकी बीभी यात जाणइ नहीं । जिनाधिष्ठा- यक छइं यक्ष तेहे तीहिं रहइं रोग ऊपजावी करी नामविया । विद्वेषियां तणउं विकटु कटकु देवी करी विद्यापति चित्ति चीतवइ ।

§ 484) " अहो ! शक्र-विक्रमवंत शत्रु राजेंद्र छइं, तेई धर्म तणइ प्रभावि भाजी गया । मू रहइं अल्प परिग्रहता देवी करी महापरिग्रह शत्रुलोक जिणिवा कारणे आपणा सेवक' भर्णी' धर्मि 20 निशइं साहाय्यु कीधउं ।

तदहं यद्यमुं सेवे, त्यक्त्वाशेषपरिग्रहः ।

तदन्तरायभङ्गेऽपि, भवत्ययमुपक्रमः ॥

[६४१]

इसउं चीतवी करी शृंगारसुंदरी संभवु शृंगारसेतु सनु राज्य बइसाली करी संजमसूरि समीपि संजमु ले करी कल्याणमउ आपणउ आत्मा तपोमि तापि सुश्रवी करी विद्यापति राजकृपि देवलोकि 25 गयउ । मनुष्य देव भव पंचकि ह्यइ हंतइ मुक्ति गयउ ।

विद्यापतिकृतपरिग्रहमानयामं

श्रुत्वा बुधा भवत सम्पदि निस्पृहा भोः ।

येन स्वयंवरयधुः शिवसम्पदेया

जातस्पृहा शिपति वः सजगाशु कण्ठे ॥

[६४२]

इति परिग्रह परिमाण करण प्रतफलविषइ विद्यापति राजकृपि कथा समाप्ता । 30 § 485) अथ त्रिन्हि गुणव्रत कहियरं ।

तत्र प्रथम गुणव्रत प्रतिकमणा निमित्तु भणइ—

गमणस्स य परिमाणे दिसासु जड्ढं अहे य तिरियं च ।

बुद्धि-सइ-अंतरद्धा पदमपि गुणव्यए निंदे ॥

[६४३]

गमनु भणियइ गति तेह तणइ परिमाणे एतलां जोयण जाइसु इसीपरि छोदि प्रमाणे अंगी 40 करिइ हंतइ । किसा नइ यिपर ?

§ 483) 7 P. इतउ । 8 B. P. वस्तु । 9 P. तुंग । 10 Bh. राज । 11 Bh. liter corrected to प्रवर्त्तइ । P. प्रवर्त्तइ । 12 Bh. मारि । 13 Bh. को ।

§ 484) 1 P. तेव । 2 P. तणी । 3 P. omits.

पूर्वा दक्षिणा पश्चिमा उत्तरा लक्षणासु दिसासु । तथा आग्नेय नैऋति वायव्य ऐशान लक्षणासु
विदिसासु तथा 'उहं'- उर्ध्वदिशि 'अहे' अधोदिशि विपद जु अतिक्रमिउं सु अतीचारु तदेवाह- ।

'उहं' ऊर्ध्वं योजनद्वयं मामि कीधइ हंतइ अनामोगादिवशतउ अधिकं गमनि हंतउ उर्ध्वदिक्प-
रिमाणातिकसु प्रथमु अतीचारु १ ।

एयं अधोदिक्परिमाणातिकसु बीजउ अतीचारु २ ।

तिर्यग्दिक्परिमाणातिकसु धीजउ अतीचारु ३ ।

तथा 'शुद्धि' ति एक दिशि ना जोयण धीर्जा दिशि वधारियइं प्रयोजनवशतउ तिणि दिशि
योहियइं । यथा पूर्वपश्चिमादिपु समु जु दिक्परिमाणु कीधउं उउ पाछइ दहोत्तराज्य ऊपरि कार्यु ऊपनउं
पाछइ पश्चिमदिशि नवइ योजन चीतिवी करी पूर्वदिशि दहोत्तरसउ जाइ । इसी परि क्षेत्रवृद्धि चउथउ
अतीचारु ४ ।

§486) 'सइ अंतरदि' ति- 'सइ' स्मृति तेह तर्णी अंतर्द्धां वतयमाण विस्मरणु । स स्मृत्यंतर्द्धां¹⁰
कहियइ । यथा पूर्वदिशि गमानि उपस्थितइं हंतइ मनि संदेहु हुयइ । किसउं मू रहइं ढाउ अथवा पंचाश
जोयण मोकलां छइ इसी परि स्मृत्यंतर्द्धांनि हंतइ अधिकगमनि स्मृत्यंतर्द्धांनु पांचमउ अतीचारु ५ ।

इसी परि नियमित भूभाग मेलही करी अपर चतुर्द्धां रज्जुप्रमाण लोकगत जंतुजात रक्षालक्षण
गुण निमित्तु व्रतु गुणव्रतु कहियइ । तिणि प्रथमि गुणव्रति जु अतिचरिउं - इत्यादि पूर्वयइ । तत लोह-¹⁵
गोलक सरीखउ छइ शुही तेह रहइं एउ प्रधानव्रतु । तथा च भणितं—

तत्तायगोलकूपो एमत्तजीवो निवारियणसरो ।

सव्यत्थ किं न कुञ्जा पावं तकारणाणुगभो ॥

[६४४]

चराचराणां जीवानां विपर्जननिवर्त्तनात् ।

तप्तापो गोलकल्पस्य सद्गतं शृङ्गोऽप्यदः ॥

[६४५]

जगदाक्रममाणस्य प्रसरल्लोभवाग्धिः।

स्वलनं विदधे तेन, येन दिग्विरतिः कृता ॥

[६४६]

§487) दिक्परिमाणव्रतकरण विपइ सिहकथा लिखियइ ।

गतौ संकोचयत्येवं, यः स्वं दिग्विरतिव्रतम् ।

संसारलङ्घनोत्तालफलारम्भः' स सिद्भवन् ॥

[६४७]

वासंती' नामि नगर । कीर्तिपालु नामि राजा । भीसु नामि तेह तणउ पुत्रु । पुत्रही' कन्हा
अतियहधु सिहनामि भेष्टि । सुपुण' परम आवकु जिनमनियंतु यत्तइ । अनेरइ द्विनि सभा माहि कीर्ति-
पालु राजा सिहभेष्टि मुखकमलु झमर जिम जोयनउ हंतउ यत्तइ । तेतलइ प्रस्तावि प्रतीहाक आयी
राजेंद्र रहइं धीनवर । " महाराज ! तुम्हं रहइं देवणहाक एकु' पुरुपु' दिव्याकाक द्वारि आविउ छइ ।"
राजा भणइ " माहि मेलिह " तउ पाछइ प्रतीहाक मुकु हंतउ सु पुणुपु माहि आयी राजेंद्र रहइं प्रणमी²⁰
करी आसनि सभासीनु धीनयर ।

§488) " महाराज-नागपुरु नामि नगर । तिलां चंतु नामि नरेंदु । रत्नमंजरी नामि राजी ।
तीहं नी गुणमाला नामि कीर्तिकरी । स तारा पुत्र भीम रहइं देवा कारणि स्वामिन् ! मुहं कन्हर हंउ

§ 486 I B. Bh. have उपस्थित ।

§ 487 I B. Bh. -वाज- । 2 Bb. begins with त्वदि । 3 B. Bh. १ । 4 Bb. पुणु । 5 Bb. has अनेर...पने in the margin. 6 P. omits.

नीसरेउ रागुमस्तु हुयइ, तिम एउं अल्पधनर्पक हुंतउ' कथमपिहिं नीसारिउ, प्राज्यराज्य महापंइ
 माहि पट्टिउ' । भद्रामनि बरसाली करी महामात्य राज्याभिषेकु करावइ । विद्यापति भणइ, " मूं ररुं
 राज्य माहि कारुं नहीँ " प्रधान कहइ, " इम किम हुयइ ? देवता तू रहइं राजु दियइ " । विद्यापति
 भणइ, " तथापिहिं मूं राज्य कारुं नहीँ " । इसीपरि वार वार राज्याभिषेक निषेधु करतइ हुंतइ आकाश-
 भाषा ऊछली, " अर्जी ! भोगफलु प्रभुतु कर्मु छइ तिणि कारण राज्यलक्ष्मी पाणिपीडनु करि " इतं
 निज भाग्यदेवता वचनु सांभली करी सिंहामानि जिनेंद्रप्रतिमा बरसाली करी तेह नइ पादपति
 आपणवइ घर्म्मन करी जिनवतिमा रहइं राज्याभिषेक तणइ द्याजि आपणवा रहइं त्रिभुवनाधिपत्यनिमित्त
 अभिर्गीषावइ । जिनलउं अंगीकरिउं छइ तेतलउं आपणइ लेखइ करी बीजउं समस्तु वरतु शस्त्रं हलि
 तुंगम' भांडागारादिकु जिन नामांकितु करइ । सदा तीर्थयात्रादि प्रभावना करावइ । देवगृह कर
 10 या । त्रिर्नाथि भरावइ । अमयषोषणा अमारिषोषणा करावइ । लोक कन्ह ! कण न लियइं । कह
 " अतो लोकोउ तु रातु' मायु आयइ सु धनु धर्म्मिहिं जि वेचउ " । तउ पाछइ जिनधर्म नइ एकातप
 राज्य प्रगतं " हुंतइ ' मार " इमा अक्षर दंष्टर्पनाम मूकी करी अनेरइ थानकि, न केवलं जीववि
 कोइ' न कहइं, अर्जीर एउं जि एन माहि तारि तीहीँ आगइ को न कहइं मारि । जिम जिम विद्यापति-
 राजा धनु वेचइ तिम निम तेह नी भाग्यदेवता राजमंदिरे धनु वरसइ । अनेरइ दिनि समीपगत राजेंद्र
 11 निगइ करी तेह ना राज्य रहइं लेया आविया । विद्यापति धर्म मूकी बीजी वात जानइ नहीँ । त्रिनाथि-
 धक एउं एत तेह मीहिं एउं रोग उपजायी करी नागविया । विद्वेवियां तणउं विककु कटकु देवी करी
 विद्यापति विनि पीतयइ ।

[484] - अतो! शक विक्रमयंन शशु राजेंद्र छइं, तेई धर्म तणइ प्रभावि भाजी गया । मूं
 एउं अल्प परिपटना देवी करी महापरिपट शशुलोक जिगिया कारण आपणा सेयक' अर्जी' धर्म

20 निधयं नारायणु कीधत ।

मदइं यद्यमुं सेवे, न्यन्यानेपपरिग्रहः ।
 तदनगायभङ्गेति, भन्ययमुपक्रमः ॥

[६४१]

इमउं धांनइं करी शृंगारमुंदरी संभयु शृंगारमेनु मनु राज्य बरसाली करी संजमगुर समीपि
 संजमु ले करी कन्य नमउ अलगउ आत्मा तपोति तापि मृजयी करी विद्यापति राजकपि देवलोकि
 21 नयउ । मनुप देव भव पंचाकि हुयइ हुंतइ मुकि गयउ ।

विद्यापतिकुनाग्रिदमानयामं
 श्रुत्वा कृथा भवन मयादि निगृहा भोः ।
 येन व्यायंवर्याः शिवमभ्युदेथा
 ज्ञानगृहा विपति वः शतमानु कथे ॥

[६४२]

इति परिपट्ट परिमाण करन प्रकल्पयिषइ विद्यापति राजकपि कथा समाप्ता ।
 22 485) अथ विन्दि मुगज्वल करियइं ।

अथ प्रथम मुगज्वल इतिव मना तिमिचु भणइ—
 मृदुलम य दग्मिणे रिमामु इहुं अरे य तिमियं च ।
 कृहुं मः अंशठ्ठा दसदीं मुगज्वल निदे ॥

[६४३]

अथ अन्तिम इतिव देव लला परिपट्टि कथनी जायन तजमु इगीपरि छेदि समाप्ति अं
 करिइ हुंतइ । विद्या बर विषयः

पूर्वां दक्षिणा पश्चिमा उत्तरा लक्षणासु दिसासु । तथा आग्नेय नैऋति वायव्य पेशान लक्षणासु
विदिसासु तथा 'उहं-' उर्द्ध्वदिशि 'अहे' अधोदिशि विपर जु अतिक्रमिउं सु अतीचारु तदेवाह— ।

'उहं' ऊर्द्ध्वं योजनद्वय मानि कीधइ हंतइ अनाभोगादिवशइतउ अधिक गमनि हंतइ उर्द्ध्वदिक्प-
रिमाणातिकमु प्रथमु अतीचारु १ ।

एवं अधोदिक्परिमाणातिकमु बीजउ अतीचारु २ ।

तिर्यग्दिक्परिमाणातिकमु बीजउ अतीचारु ३ ।

तथा 'बुद्धि' ति एक दिशि ना ज्येष्ठा बीजां दिशि वधारियइं प्रयोजनवशइतउ तिणि दिशि
प्रोदियइं । यथा पूर्वपश्चिमादिषु समु जु दिक्परिमाणु कीधउं छइ पाछइ दहोत्तरदाय रुपणि कार्थुं रुपनउं
पाछइ पश्चिमदिशि नवइ योजन चींतीवी करी पूर्वदिशि दहोत्तरसउ जाइ । इसी परि क्षेत्रवृद्धि चउथउ
अतीचारु ४ ।

§486) 'सइ अंतरर्द्धि' ति— 'सइ' स्मृति तेह तणी अंतरर्द्धां व्रतप्रमाण विस्मरणु । स स्मृत्यंतरर्द्धां
कहियइ । यथा पूर्वदिशि गमनि उपस्थितइ' हंतइ मनि संदेहु हुयइ । किसउं मू रहइं शउ अथवा पंचाश
ज्येष्ठा मोकलां छइ इसी परि स्मृत्यंतरर्द्धांनि हंतइ अधिकगमनि स्मृत्यंतरर्द्धांनु पांचमउ अतीचारु ५ ।

इसी परि नियमित भूभाग मेलही करी अपर चतुर्द्धां रज्जुप्रमाण लोकगत जंतुजात रक्षालक्षण
गुण निमित्तु व्रतु गुणव्रतु कहियइ । तिणि प्रथमि गुणव्रति जु अतिचरिउं— इत्यादि पूर्ववत् । तत लोह-
गोलक सरीखउ छइ गृही तेह रहइं एउ प्रधानुव्रतु । तथा च भणितं—

तत्तायगोलकण्यो पमत्तजीवो निवारियप्यसरो ।

सञ्चत्य किं न कुञ्जा पार्यं तत्कारणाणुगभो ॥

[६४४]

चराचराणां जीवानां विपर्ययनिवर्त्तनान् ।

तप्तापो गोलकल्पस्य सद्व्रतं गृहिणोऽप्यदः ॥

[६४५]

जगदाक्रममाणस्य प्रसरल्लोभवारिषेः।

स्वलनं विदधे तेन, येन दिग्भिरतिः कृता ॥

[६४६]

§487) दिक्परिमाणव्रतकरण विपइ सिंहकथा लिखियइ ।

गतौ संकोचयत्येवं, यः स्वं दिग्भिरतिव्रतम् ।

संसारलङ्घनोत्तालफलारम्भः' स सिंहवत् ॥

[६४७]

वासंती' नामि नगरी । कीर्त्तिपालु नामि राजा । भीसु नामि तेह तणउ पुत्रु । पुत्रहीं कन्हा
अतिवह्यु सिंहुनामि श्रेष्ठि । सुपुण' परम श्रावकु जिनभक्तियंतु वर्त्तइ । अनेरइ विनि सभा माहि कीर्त्ति-
पालु राजा सिंहश्रेष्ठि मुखकमलु भ्रमर जिन ज्येष्ठतउ हंतउ वर्त्तइ' । तेतलइ प्रस्तावि प्रतीहाक आवी
राजेंद्र रहइं वीनवइ । "महाराज ! तुम्हं रहइं देखणहारु एहु' पुरुषु' दिव्याकारु द्वारि आविउ छइ ।"
राजा भणइ "माहि मेलिह" तउ पाछइ प्रतीहाक मुकु हंतउ सु पुरुषु माहि आवी राजेंद्र रहइं भणमी
करी आसनि सभासीनु वीनवइ ।

§488) "महाराज—नागपुरु नामि नगरु । तिहां चंडु नामि भरेंडु । रत्नमंजरी नामि राही ।
तीहं नी गुणमाला नामि कीकिरी । स ताहरा पुत्र भीम रहइं देवा कारणि स्वामिन् ! तुम्ह कन्हेइ हउं

§ 486 1 B. Bb. have उपस्थित ।

§ 487) 1 B. Bb. —काज— । 2 Bb. begins with तथाहि । 3 B. Bb. ही । 4 Bb. पुत्र । 5 Bb. has अनेर...वत्तैर in the margin. 6 P. omits.

पाठिविउ'। तिणि कारणि, अहो महीपाल ! स राजपुत्रिका रूपशोभा करी राते रहई दत्तजयपत्रिका
 वर्त्तइ । रूपलक्ष्मी करी जितलक्ष्मीपुत्र जु छइ भीम नामि तुम्हारउ पुत्रु तेह रहई प्रमाण करउ ।" दूति
 इसइ अर्थि वीनविदइ हुंतइ सिंहप्रेषि सुख सामुहउं जोयतउ हुंतउ कीर्तिपालु राजा भणइ । " सिंहप्रेषिद !
 आपणपा रहई आगे' भेदु को' नही । तिणि कारणि माहरइ थानकि थार्इ, तुम्हे भीमु नागपुरि ले करी
 5 पट्टुचउ । बांधव ! ए संबंधु करउ ।" दिग्वरति-विरति-व्रत भंग अनइ अनर्थदंड-विरति-व्रत भंग भयभीनु
 हुंतउ सिहु अधोमुखु थार्इ रहिउ । राजेंद्र रहई उतरु न दियई । लगार एक कुपितलोचन हुंतउ राउ
 भणइ, " किसउं बांधवु ! एउ संबंधु बंधरु नही जु तउं उतरु कोई न दियई ?" आकारइनितादिकई
 चिह्नहं करी सकापो राउ जाणी करी सुधादीतलवाणी राउ जिम शीतलु थार्इ, तिणि कारणि सिहु
 बोलइ । " ईहां हुंतउ जोयण सउ अधिकेरउं नागपुरु हुयइ । इणि कारणि व्रतभंगभय वशाइतउ हउं
 10 नागपुरि न जाउं ।" इसइ भणिइ हुंतइ सिंह ऊपरि कीर्तिपालु राउ कोपि चडिउ । जिम घृतसेकि करी
 वैभानरु ज्वलइ तिम प्रज्वलिउ । तउ राउ कोपवशि हुंतउ भणइ । " जइ किमइ जोयणसय ऊपरि नही
 जाइ तउ हउं तू रहई बांधीकरी जोयणसहल ऊपरि निक्षिपाविसु ।" तउ सिहुं समुत्पन्नमति हुंतउ
 पुनरपि भणइ । " महाराज ! ताहरउ विरहु हउं सहीं सकउं नही, तिणि कारणि अहंकाररहितु हुंतउ
 ' जोयण सय ऊपरि हउं जाउं नही ' इसा उतर तुम्ह आगइ कहउं " इसइ वचनि राउ उपदांतकोपणउ
 15 हुंतउ सरसउं प्रबलु दलु दे करी भीम सरसउ सिहु चलावइ । कटक आगइ, कुमार भीमकुमार आग
 भणिउं । " जं कोई सिहु कहइ तं तुम्हे करियउं " तउ पाछइ रायाभियोगि अकामू थिकउं सिहु
 भीमकुमार भरसउं चालिउं हुंतउ कुमार आगइ संसारासारता' गुप्तवृत्ति' करी कहइ—

वहिरन्तार्थिपर्यासः स्त्रीशरीरस्य¹⁰ चेद्भवेत् ।

तस्यैव फामुकः कुर्याद्गृध्रगोमायुगोपनम्¹¹ ॥

[६४८]

20 यकृत्शकृन्मलश्चेत्प, मज्जास्थिपरिपूरिताः ।

स्नायुस्पृता वहिरंम्याः, स्त्रियधर्ममसेविकाः ॥

[६४९]

§ 489) तउ भीमकुमार रहई महोपदाम वशाइतउ भववासना बूटी गई । मुक्तिकन्यानुक
 चिनु' हुंतउ भीमुकुमार श्री' अनइ र्ही तृण ही सरीखी न देखई । जोयणशत मार्गि आविउ हुंतउ सिहुं
 आघउं पियाणउं' करइ नही । जेतीवार बीजा महता पूछई तेतीवार कूडा उतर करइ । जइ दिन ५-६
 25 हया तिरां तउ पाछइ धीजे महते भीमकुमार आगइ कहिउं । " कुमारवर ! राजेंद्रि अम्ह आगइ सिंह
 टागऊं इमउं' कहिउं छइ । ' जइ किमइ किराई गयउ हुंतउ सिंह आघउ न चालई तउ तुम्हे बलात्कारि
 सिहु बांधी करी आघउं पियाणउं करायि जिउ ' । तिणि कारणि जु तुम्हे भणउ तउ सिनु बांधी करी
 चलावियइ ।" भीमु कहइ, " आनु जउ पियाणउं आघउं' सिहु न करई तउ कालिहं तुम्हे राजादेसुं
 करिजिउ " । इसउं मंत्रियचतु एकंति भीमु सिहु आगइ कहइ । संसार निरास बुद्धि हुंतउ सिहु भीम
 30 आगइ भणइ—

न किञ्चिदत्र संसागे, निस्मारंस्त्य शरीरिणः ।

शरीरमपि न स्वीयं, स्वीयममनीइ कस्यचित् ॥

[६५०]

इत्यादि वैराग्यकारणु बहु भर्णा करी कटक हुंतउ रात्रि समइ प्राहरिक लोकि मृतइ हुंत
 नांभरिउ, कुमार पुल भरमउ नांभरिउ । " किणिहि गिरि वणोदेदि' जाई करी पादपोषणमनु अनदनु'

§ 485) 1 P. पाठिविउ । 2 P. बदरन- । 3 P. आगइ । 4 Bh. को भेदु is corrected to भेदु को ।
 5 B. adds न । 6 P. यकृत् । 7 P. बर्तियउ । 8 P. वीरारता । 9 P. मुनि । 10 P. कीरल्य
 11 P. कोमाय- ।

§ 489) 1 P. मुत्त- । 2 P. omits. 3 P. वसाणउं । 4 Bh. en. its. 5 Bh. adds it in the margin
 P. omits. 6 P. बर्तिय । 7 P. सारसिनु । 8 Bh. बरइ । 9 Bh. -देवि । 10 P. omits इ-

करिसु। तउ तिमहामात्यमाहरं कसिउं करिसिइं ! किम मूरुहइं बांधी लेसिइं ! जु शरीरु लेसिइं सु हउ पहिलउं मूकी रहिसु । इसउं भणी करी भीम आगइ आघउं¹ जाइया लागउ। भीम मणइ “ मूरुहइं तुम्हे ई जि शरणु ” । इसउं मणतउ सरसू जु चालिउ² । गिरि एकि जाई शुद्ध शिलातलि विहुं पादपोपगमनु अनशानु कीधउं । प्रभाति प्रधान महामात्य कुमार भीम सिंहश्रेष्ठि विहुं रहइं अदेखता हुंता पादानुसारि नीसरिया । घणी भुंइ गया । किणिहिं पर्वति शिलातलि गृहीतदीक्ष कृत पादपोपगमन सिंह भीम देखी 5 करी विलक्षयदन पिना प्रणमी करी चाटुका(करणपूर्वुं घणउं खभावइं । पाये³ लागी मनावइं, “ पसाउ-करी अम्हारउ अपराधु खमिजिउ । ऊभा थाउ, जिम नागपुरि जाइयइ⁴ । एउ वृत्तांतु जाणी करी तिलहं जिम घाणइ घाती राउ कींसिगालु अम्ह रहइं पीडाविसिइ । तिणि कारणि तुम्हे कृपासमुद अम्ह ऊपरि कृपा करी अम्ह सोमुहउं कांड देखउ नहीं ! कांड अम्हसउं बोलउ नहीं ? ”

§490) ‘ इत्येवमादिकु बहुधा भणी करी महामात्यहं विलक्षहं पाछा वली सु वृत्तांतु 10 कींसिपाल महीपाल रहइं जाणाविउ । ‘ सिंहु चधु, कुमार परिणाविउ¹ इसउं राउ मनि चीतवतउ हुंतउ विहलउ तिहां आविउ । इसइ महा विरुद्ध मनि² हुंतइ राउ ति महएरुप महासत्त्व सिंह व्याघ्र चित्रक शुक³ वृक प्रमुख वृम स्वापद संसेव्यपाद देखी करी मनि चीतवइ, ‘ महा सप्रभाव ए महासत्त्व, मइं ए परामवी नहीं सकियइ किंतु सेयायोग्य ए ’ इसउं ध्यायतउ राउ तीहं कन्हइ गयउ ।

श्यापदैर्दत्तमार्गं तं, मार्गन्तं वीक्षणान्यपि ।

15

नयन्तं चाटुमन्तं च नेशांचक्रतुरप्यम् ॥

[६५१]

माखोपवासावसानि सुरासुर नरार्थीना संसेव्यमान शुक्रध्यानानल इग्ध कम्मैधनयितान मुक्तिपद प्राप्त ह्यय ।

न यांजनशतादूर्ध्वं यापीति तव निश्चयः ।

असङ्ख्यैर्योजनैर्मित्र मां भुवत्वा किमगाः शिवम् ।

[६५२] 20

§491) इसी परि विलपतउ हुंतउ राउ सिंह अनइ भीम विहुं रहइं संस्कार करी आपणइं शोकानल इक्षमानमानसु हुंतउ देवे संबोधिउ, भणिउं, “ महाराज शोकु तीहं नउ कीजइ जि अकृतकृत्य हुयइं । ए महात्मा स्तुत्यपाद ” । इसी परि तउ पाछइ, पाछउ चली राउ वासेतीनगरी गयउ ।

सङ्कोच्यसिंह इवसौवर्गति यथाऽऽप

श्राद्धाग्रणीर्भगिति भीमयुतः स सिंहः ।

25

उच्चैः पदं प्रमदमन्दिरमिद्धशर्म

भव्यास्तयैव विलसन्तु वसन्तु तत्र ॥

[६५३]

विग्धतविपदं सिंहभावककथा समाप्ता¹ ।

§492) अथ द्वितीउ¹ गुणव्रतु मणइ ।

सु पुण द्विविधु-भोगइतउ, कर्मइतउ । भोग पुण द्विविधु-उपभोग परिभोग भेदइतउ । तत्र उप 30 किसउ अर्थु ! एक वार जेह तणउ भोगु हुयइ सु आहार, माल्य, तांबूलादिकु उपभोगु कहियइ ।

परि किसउ अर्थु ! वार वार जेह तणउ भोगु हुयइ सु मयनांगना वसनादिकु परिभोगु कहियइ । तथा उपभोगु भोगु पुण कहियइ । तथा च भणितं-

§ 489) 11 P. आषड । 12 Bh. चालियउ । 13 P. पाए । 14 Bh. जाइइ ।

§ 490. 1 P. परिणाविवा । 2 B. P. put it after हुंतइ । 3 P. मूरु । 4. Bh. adds in the margin हुंतउ । 5 P. किमपः ।

§ 491) 1 P. omits.

§ 492) 1 Bh. द्वितीय । 2 B. Bh. have सय मुञ्चियति । 3 Bh. प्रावृत्ति । 4 Bh. कासु ।

सद् भुज्जइत्तिभोगो सो पुण आहारपुष्पमाइओ ।

परिभोगो य पुणो पुण परिभुज्जइ भवणविलयाई ॥

[६५४]

तथा—भोगोपभोगव्रतपक्षि जिसउ अर्थुं परिभोग तणउ तिसउ उपभोग तणउ पुण जाणिवउ ।
तथा च हेमाचार्यमिश्राः प्राहुः—

सकृदेव भुज्यते यः स भोगोन्नसगादिकः ।

पुनः पुनः पुनर्भोज्य इपभोगोऽङ्गनादिकः ॥

[६५५]

तथा—उत्सर्गइतउ श्रावकि प्रासुकं वस्तु भोजकि होइवउं । किसउं अर्थुं ? जि आपणइ भावि फासुं ह्यइं तीहं रहइं भोजकि होइवउं । प्रासुक नइ अभावि सच्चित्त परिवर्जकि होइवउं । किसउ अर्थुं ? आपणया निमित्तु फासु करी अथवा करावीतउ तीहं रहइं भोजकि होइवउं । तीहं नइ अभावि 10 इतइ बहु सावय जि छइं मद्यादिक तीहं रहइं परिवर्जकि होइवउं ॥ तथा च भणितं—

निरञ्जनाऽद्वारेणं निजनीवेणं परिचमीसेणं ।

अत्ताणुसंघणपरा सु सावया एरिसा हुंति ॥

[६५६]

§493) इणि कारणि प्रस्तवइतउ जाणाविवा कारणि वर्जनीय वस्तु लिखियइं ।

मयं मांसं नवनीतं, मधुदुस्वरपञ्चकम् ।

अनन्तकायमज्ञातफलं रात्रौ च भोजनम् ॥ १

[६५७]

आमगोरससंपृक्तं, द्विदलं पुष्पितौदनम् ।

दध्यहर्द्वितीयातीतं कुथितान्नं च वर्जयेत् ॥ २

[६५८]

मदिरापानमात्रेण बुद्धिर्नश्यति दूरतः ।

वैदग्ध्यो बन्धुस्स्यापि दौर्भाग्येणैव कामिनी ॥

[६५९]

पापाः कादम्बरीपानविवशीकृतचेतसः ।

जननीं हा मियीयन्ति जननीयन्ति च मियाम् ॥

[६६०]

न जानाति परं स्वं वा मयाचलितचेतनः ।

स्वामीपति यराकः स्वं स्वामिनं किङ्करीपति ॥

[६६१]

मद्यपस्य शयस्वेव लुडितस्य चतुष्पथे ।

मूत्रयन्ति मुखे श्वानो व्यासे विवरशङ्कया ॥

[६६२]

मद्यपानरसे मद्यो नद्यः स्वपिति चत्वरे ।

गूढं च स्वमभिप्रायं प्रकाशयति लीलाया ॥

[६६३]

वारुणीपानतो यान्ति कान्तिकीर्तिमनिश्रियः ।

विचित्राधिवरचना विलुडत्कज्जलादिव ॥

[६६४]

भूतात्तवदरीनन्ति राट्टीनि ससोभवन् ।

दाहञ्चरार्जवद्भ्रमां गुराणो लोलुडीनि च ॥

[६६५]

विदपत्यङ्गुलीधिन्यं म्पयन्तीन्द्रियाणि च ।

मूर्च्छामपुच्छां यच्छन्ती हान्या हान्या हन्योपमा ॥

[६६६]

रिरेकः संयमो ज्ञानं मन्यं शौवं दया क्षमा ।

मथान्पयीपने मरुं नृणां यद्विकणादिव ॥

[६६७]

दोषाणां कारणं मयं मयं कारणमापदाम् ।
 रोगातुर इवापभ्यं तस्मान्मयं चित्रर्नयेत् ॥ [६६८]
 इति मन्त्रांशः ।

११५

§494) त्रिखादिपति यो मांसं प्राणिप्राणापहारतः ।
 इन्मूलपत्यमौ मूलं दयाऽऽरुणं धर्मशास्त्रिनः ॥ [६६९] 5
 भक्षनीयन् सदा मांसं दयां यो हि चिकीर्षति ।
 ज्वलति ज्वलने बर्ही स रोपयितुमिच्छति ॥ [६७०]
 दन्ना पलस्य विवेता संस्कर्त्ता भक्षकस्तथा ।
 त्रेताऽनुमन्ता दाना च घातका एव यन्मनुः ॥ [६७१]
 अनुमन्ता विश्रमिता निहन्ता क्रयविक्रयी ।
 संस्कर्त्ता चोपदत्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥ [६७२] 10
 नाकृत्वा प्राणिनां हिमां मांसमुत्पद्यते क्वचिन् ।
 न च प्राणिवधः स्वर्यम्नम्मान्मांसं विचर्नयेत् ॥ [६७३]
 ये भक्षयन्त्यन्यपलं स्वकीयपलपुष्टये ।
 त एव घातका यत्र वधको भक्षकं विना ॥ [६७४] 15
 मिथ्यान्वान्यपि विद्यासादभृतान्यपि मूत्रसात् ।
 स्युर्यस्मिन्नङ्गकस्यास्य कृते फः पापमाचरेत् ॥ [६७५]
 मांसाशने न दोषोऽस्तीत्युच्यते यद्दुरात्मभिः ।
 व्याधृष्टप्रवृत्तव्याघ्रशृगालास्त्रैर्गुरुकृताः ॥ [६७६]
 मां सत्त्वा दयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहादन्यदहम् ।
 पतन्मांसस्य मांसत्वे निरुक्तं मनुरधर्वात् ॥ [६७७] 20
 मांसाभ्यादनलुब्धस्य देहिनं देहिनं मति ।
 हन्तुं भवन्ते बुद्धिः शाकिन्या इव दुर्धियः ॥ [६७८]
 ये भक्षयन्ति पिशितं दिव्यभाज्येषु सत्स्वपि ।
 सुधारसं परित्यज्य भुञ्जते ते हलाहलम् ॥ [६७९] 25
 न धर्मो निर्दयस्यास्ति पलादस्य कुतो दया ।
 पल्लुच्यो न तद्रोचि विद्याद्वोपदिशेवाहि ॥ [६८०]
 फेचिन्मांसं महामोहादभ्रन्ति न परं स्वयम् ।
 देवपित्रतिथिभ्योऽपि कल्पयन्ति यद्दूषिरे ॥ [६८१]
 ऋत्वा स्वयं वाऽप्युत्थाय परोपहृतमेव वा ।
 देवान् पितॄन् समभ्यर्च्य खादन्मांसं न दुष्यति ॥ [६८२] 30
 मन्त्रसंस्कृतमप्यद्यायवालयमपि नो पलम् ।
 भवेज्जीवितनाशाय हालाहललवोपि हि ॥ [६८३]

सद्यः संमूर्च्छितानन्तजन्तुसन्तानद्रूपितम् । नरकाश्रनि पाथेयं कोऽश्रीयात्पिणितं सुधीः ॥	इति मांसदोषाः । [६८४]
§495) अन्तर्मुहूर्त्तात्परतः सुमूक्ष्मा जन्तुराशयः । यत्र मूर्च्छन्ति तत्राद्यं नवनीतं विवेकिभिः ॥	[६८५]
एकस्यापि हि जीवस्य हिंसने किमर्थं भवेत् । जन्तुजातमयं तन् को नवनीतं निषेधते ॥	इति मांसदोषः । [६८६]
§ 496) अनेकजन्तुसंघातनिघातनसमुद्भवम् । जुगुप्सनीयं लालावत् कः स्वादयति माक्षिकम् ॥	[६८७]
भक्षयन्माक्षिकं क्षुद्रजन्तु लक्षयोज्ज्वलम् । स्तोकजन्तु निहन्तृभ्यः शौनिकेभ्योऽतिरिच्यते ॥	[६८८]
एकैककुसुमक्रोडाद्रसमापीय मक्षिकाः । यद्रमन्ति मधूर्च्छिष्टं तदश्रन्ति न धार्मिकाः ॥	[६८९]
अप्यौषधकृते जग्धं मधुश्वभ्रनिबन्धनम् । भक्षितः प्राणनाशाय कालकूटकणोऽपि हि ॥	[६९०]
मधुनोऽपि हि माधुर्यमवौषेहहोच्यते । आसाद्यन्ते यदा स्वादाच्चिरं नरकवेदनाः ॥	[६९१]
मक्षिकामुखनिष्ठयुतं जन्तुघातोद्भवं मधु । अहो पवित्रं मन्वाना देवस्ताने प्रयुज्यन्ते ॥	इति मधुदोषाः । [६९२]
§ 497) इदुम्बरवटप्लक्षकाकोदुम्बरशाखिनाम् । पिप्पलस्य च नाश्रीयान् फलं कृमिकुलाकुलम् ॥	[६९३]
अमानुवन्नन्यभक्ष्यमपि क्षामो बुभुक्षया । न भक्षयति पुण्यात्मा पञ्चोदुम्बरजं फलम् ॥	[६९४]
आर्द्रः फन्दः समग्नोऽपि सर्वः किशलयोऽपि च । स्तुही लवणवृक्षत्वक् कुमारी गिरिकर्पिका ॥	[६९५]
शतावरी विरूदा निगुहची फोमलाम्लिका । पन्यङ्गोऽमृतवटी च यल्लः शूकरसंज्ञकः ॥	[६९६]
अनन्तकायाः मूत्रोक्ता अपरेऽपि कृपापरैः । मिथ्यादशापविज्ञाता वर्जनीया प्रपत्ननः ॥	इति अर्जुनकायविचारः । [६९७]
§498) स्वयं परेण वा ज्ञानं फलमयाद्विशारदः । निषिद्धे सिपकृते वा मा भूदम्य प्रवर्तनम् ॥	इति अज्ञातफलनिषेधः । [६९८]
§499) भक्षं मेवपिगाचार्यैः मंचरङ्गिर्निरङ्कुशैः । वच्छिष्टं क्रियते यत्र तत्र नाशादिनात्यये ॥	[६९९]
योग्यस्वस्वाम्नासैः पन्नो यत्र जन्तवः । नेर भोग्ये निरीक्ष्यन्ते तत्र भुञ्जीत को निधि ॥	[७००]

७०१-७१६]

मेधां पिपीलिका इन्नि यूसा कुर्याज्जलोदरम् ।
 कुरुते मसिका यान्नि कुष्ठरोगं च कोलिकः ॥
 फण्टको दाहज्वरं च वितनोति गल्लघ्न्यायाम् ।
 व्यञ्जनान्तर्निपतितमालु विधायति वृथिकः ॥
 विलप्रथ गन्धे बालः स्वरभङ्गाय जायते ।
 इत्यादयो हृष्टदोषाः सर्वेषां निशि भोजने ॥
 नाभेक्ष्य मूक्ष्यजन्तुनि निद्रयगान्पाशुकान्यपि ।
 अप्युपत्केवलज्ञानेर्नाहं निशि भोजनम् ॥
 धर्मविधौ भुञ्जीत कदाचन दिनात्पये ।
 वापा अपि निशाभोज्यं यदभोज्यं प्रचक्षते ॥
 प्रयां नेत्रोमयो भानुगिति वेदविदो विदुः ।
 नत्करः पूतपत्त्रिन् शुभं कर्म समाचरेत् ॥
 नैवाहूतिर्न च स्नानं न श्राद्धं देवतार्चनम् ।
 दानं वा विहितं रात्रौ भोजनं तु विशेषतः ॥
 दिवमम्याष्टमे भागे मन्दीभूते दिवाकरे ।
 नक्तं तदिजानीषात् नक्तं निशि भोजनम् ॥
 देवैस्तु भुक्तं पूषारिरे मध्याह्ने ऋषिमिस्तथा ।
 अपराह्ने तु पितृभिः सायाह्ने दैत्यदानवैः ॥
 मन्ध्यायां यक्षरक्षोभिः सदाभुक्तं कुलोद्दह ।
 सर्ववेला व्यतिक्रम्य रात्रौ भुक्तमभोजनम् ॥

[७०१]

[७०२]

[७०३]

[७०४]

तथा । [७०५] 10

[७०६]

[७०७]

[७०८]

[७०९]

[७१०] 20

आपूर्वेभ्यः—

ह्यसामिपमङ्कोचगण्डरोनिरपायतः ।
 अतो नक्तं न भोक्तव्यं मूक्षमनीवादनादपि ॥
 संमज्जनीवत्संघातं भुञ्जाना निशि भोजनम् ।
 राक्षसेभ्यो विशेष्यन्ते मूढात्मानः कथं न ते ॥
 वामरे च रजन्यां च यः स्वादन्नं तिष्ठति ।
 मृङ्गुच्छपरिभ्रष्टः स्पष्टं स पशुरेव हि ॥
 अदो मृतेऽवस्ताने च यो द्वे द्वे पट्टिके त्यजत् ।
 निशाभोजनदोषशोभ्रात्यसौ पुण्यभाजनम् ॥
 अहृत्वा नियमं दोषाभोजनादिनभोज्यपि ।
 फले भजेन्न निर्व्याजं न शृद्धिर्भाषितं विना ॥
 ये वासरे परित्यज्य रजन्यामिव भुञ्जते ।
 ते परित्यज्य माणिक्यं फाचमाददते जटाः ॥

[७११]

[७१२] 25

[७१३]

[७१४]

[७१५]

[७१६] 30

चासरे सति ये श्रेयस्क्राम्यया निशि भुञ्जते ।
ते वपन्त्यूपरक्षेत्रे शालीन् सत्यपि' पल्वले ॥

[७१७]

श्रूयते ह्यन्यशपथाननादृत्यैव लक्ष्मणः ।
निशाभोजनशपथं कारितो वनमालया ॥

[७१८]

करोति विरतिं धन्यो यः सदा निशि भोजनान् ।
मोऽर्द्धं पुरुषायुषस्य, स्यादवश्यमुपोषितः ॥
रजनीभोजनत्यागे ये गुणाः परितोषि तान् ।
न सर्वज्ञादने कथिदपरो ववत्तुमीश्वरः ॥

[७१९]

[७२०]

इति रात्रिभोजनपरिहारश्लोकाः ।

§500) आमगोरससंपृक्तद्विद्व्यादिषु जन्तवः ।
दृष्टाः केवल्यिभिः मूढमास्तस्मात्तानि विवर्जयेत् ॥

[७२१]

इति द्विद्वलपरिभोगनियेधः ।
तथान्यथापि मिद्धान्न माहि मण्डं ।

जड मुग्गमासपमुद्दं विदुलं कर्वामि गोरसे पड्ड ।
तो तसज्जीवुपत्ती भणिया ददिए चिति दिणुवरिं ॥

[७२२]

द्विद्वल स्वरूपु लितियदः ।

जंमि य पीण्डिज्जंते मणयं पि न नेहनिग्गमो हुज्जा ।
दुन्नि य द्याइं दीसंति मिन्धिगार्दण जह लोए ॥

[७२३]

संगरिहालिमुग्गमुदुद्दु मामसंद्द पमुवस्य विपलाइं ।
सह गोरमेण न निमे एयं गयत्तियं न करे ॥
जन्तुमिधं फलं पुणं पवं चान्यदपि त्यजेत् ।

इति द्विद्वल विचारः । [७२४]

इति श्रयेक जीवमिश्रितपुष्पफलपत्रनियेधः ।

सन्धानमपि संसक्तं जिनधर्मपरायणः ॥

[७२५]

25) संधान अध्याजं संसक्तं संसृच्छिम जीव संयुक्तं जिनधर्मपरायणं जिनधर्मतत्पक 'स्यदेव'
इमं क्रियारु इतं पुण जाडियत्तं ।

एवमादिक यजंतीयवन्तु परितानि हंतइ पाट्टइ यथागतिकं व्रतु करेवत्तं ।

§501) यथा—

भोगोपभोगयोः महत्त्वया शकन्या यत्र विधीयते ।

भोगोपभोगमानं तद्वर्तनीयकं गुणव्रतम् ॥

[७२६]

अथ इतिव्रतमालः—

[493) 1 These stanzas, commencing with the author's comment in the para-
[492)] are taken from Hemacandra's Yogaśāstra III, 5-66.

मज्जेमि य मंयमि य पुत्ते य फले य मंयमहे य ।

इयभोगरीभोगे धीरमि मुण्यवग म्दि ॥

[७२७]

अत्र चतुस्रो वेग सात्त्वता लभी वीर्यं तत्र तत्रं मत्पु कीचतं ति पुण मयदीप पूर्वलिखित योगशास्त्रोक्तं हंता जाणियं । तथा परी भणियं—

मुग्धोद-सत्य-निदा-यम्भिर-ववडा-म-रोम-मपदेऊ ।

5

मज्जे दुग्धमूर्च्छं गिरि शिम्पि-पम्पनामज्जे ॥

[७२८]

तथा—अंतु विमि तु तेज मत्ता विदनीय तेज वा ज्ञेय पूर्वलिखित योगशास्त्रोक्तं करी भणिया छं । परी भणियं—

आमांयु य पामु य रिपयमानानु मंयमीमायु ।

मनिओ निनापरीराण संभरोमंन.णीरिं ॥

[७२९]

10

मज्जे मधुमि मंयमि नवर्णायमि चउत्थय् ।

इण्णज्जेमि भग्गता तज्जदा नन्यं जंतुणो ॥

[७३०]

पंचिदियवडभूयं मंयं दुग्धमनुद् धीम-छं ।

इत्थ परिपुत्थियभग्गमापयज्जणयं कुग्धमूर्च्छं ॥

[७३१]

‘मज्जेमि य मंयमि य ।’ इति छर चक्रात् तद् अत्र शेष अमरुणभेद अगतकाय पंचोद्भविर प्रमुत्त 15
जाणियं नि पुण’ इति छर योगशास्त्रोक्तं करी कथिया छरं ति तिहं नदी कथिया ।

जिम् विप करक मर्यं वृत्तिका कर्षण पर्यग्न मयु र ति पुण जाणिया । ‘पुत्ते फले ये’ ति ।
कूट करीर पुत्तुन मत्पुयदिक चक्रारतत्र योगता पत्रादिमत्पु जाणियं ।

‘फले ये’ ति—वर्षेण संकु पीतुकादिक फल जाणियां ।

इहं मत्तादिहं तणद विपर सत्त्वयापारादि वर्त्तमाने इत्तर नं कोई कयादिकु कीचतं तद् नदं 20
विपर । तथा इहं करी अंतर्मांयु म्थियत् । वदिभोग पुण ‘मंयमहे य’ इति करी जाणियत् ।

तत्र ‘मंय’ वाच, ‘मात्य’ फलमाला मंयमात्य उपलक्षण, वीमाई जि के भोगभेद चंदन 25
कुंडम कम्पुगिका पुपति जकापि कर्षुं मंयतजामुग प्रमुत्त छरं ति जाणिया । तत्र पाछर मंयमाल्यादिकहं
मांगहं तणद विपर । उद्यभोग परीभोग इति नामि धीमर मुण्यमि जु कोई अतिक्रमिउ ‘तं मिदे’
इति पूर्ववत् ॥

[502] अत्र भोगदत्त उतिचार मतिक्रमण विमिचु भणद—

25

तथित्ते १ पडियदे २ अप्पइल ३ दुप्पोलिप्प य आहारे ४ ।

तुच्छोसदि भरखणया ५ पडियमे दोसियं सत्त्वं ॥

[७३२]

जिनि सच्चित्त नत्तं मत्त्वयायानु कीचतं हुयद अथवा सच्चित्त तणत्तं परिमाणु कीचतं हुयद तद् 30
रदरं अनामोवादि कारणत्तत्त मच्चिन्नादाह अतीचाय १ ।

एवं नाटिकेर मोलक पकाअकलादिक सच्चित्त प्रतिपदादादर कथियरं तीहं नत्त आदाह सच्चित्त 30
प्रतिपदादाह अतीचाय २ ।

एवं अत्यलित कणिकादिक अगणित अग्नि करी अंतर्लूकत अपक कथियरं तद् नत्त आदाह 35
अपकादाह अतीचाय ३ ।

एवं एतुं क दोलादिक हुगक कथियरं तीहं नत्त आदाह हुगकादाह अतिचाय ४ ।

35

[501] 1 Dh. पुमि । 2 Dh. adds ४ य ।

[502] 1 Dh. परिपुदे ।

§509-510) ७१९-७२७

श्रीतरुणप्रमाचार्यकृत

फोडीकम्मं पुढवीइ फोडणं हलकुवालमाईहिं ।
तह घण अंडुवमाईहिं पादाणार्णं जं हणणं ॥
पुढवाणाराण खणणं तइ तंवरुण सीसमाईणं ।
सिषवसोवचलमाईयाण तत्थेव य वणिज्जं ॥

इति स्फोटिकाजीविका ५ ।

§509) अय दंतवाणिज्जं ।

दंतवाणिज्जं चम्माइ तसज्जियंणण अणरवणिज्जं ।
संखणसिण्णमुत्तियवराडनइचमरमाईणं ॥

इति दंतवाणिज्जं ६ ।

अय लाक्षा वाणिज्जं—

लखवाणिज्जे लखा पाइ इय' सकहुइ तह कुमुंमाई ।
अन्नंपि य संसत्तं दब्बं तह पणियविसयंमि ॥

इति लाक्षावाणिज्जं ७ ॥

अय रसवाणिज्जं

रसवाणिज्जंमि वसा महु मज्जं मंस सोणिय विरुद्धा ।
अविरुद्धा घय-गुल-तिलमाइ वाणिज्जविसयंमि ॥

इति रसवाणिज्जं ८ ॥

अय केदावाणिज्जं ।

केसवाणिज्जं जीवाण विकर्यं मणुपं-तिरियमाइणं ।
गो-नुरय-इत्थियमाइसु नरपक्खलीणं च जं कहन्ति ॥

इति केदावाणिज्जं ९ ॥

अय विषवाणिज्जं ।

विसवाणिज्जंमि विसं थावरविस-जंगमाइ बहुभेयं ।
लोइ-इरियाल-मणसिल-सत्याइ-अणमभेयं च ॥

इति विषवाणिज्जं १० ॥

§510) अय वंज पीडणकमुं ।

जंता इह बहुभेया तिलजल उच्छृण मोहूमाईणं ।
लाभद्दा नियगेहे पीनेइ तहन्न पीलावे ॥

इति वंजकमुं ११ ॥

अय निर्लीछनकमुं ।

निळ्ळंछं च वदियंकरणं तह नक्कन्न वेयाई ।
तह सोहाइ निमिच्चं अंरुण करणाइ जीवाणं ॥

इति निर्लीछन कमुं १२ ।

§509) Dh. पाय

अथवा [७२९]

[७४०]

[७४१]

[७४२]

[७४३]

[७४४]

[७४५]

[७४६]

[७४७]

करी विहरावद् । भ्रावक पुण वय नद् अनुसारी पितृ मातृ भ्रातृ समान देवततः¹⁷ हंतउ घरदि जि रहावर¹⁸ यस्त्रभोजनादि आपणया समू जु करावद् । इमी परि सुपात्रदानैकडयमत पोपी करी अयंभु म्नु प्रविपाली करी कालयोगवशादतउ प्रवरु मरी करी देवलोकि सुरयक ह्यउ । निसउ इद्दु ह्यउ भद्वि करी निसउ इद्दु सामानिकु ह्यउ । शाश्वतार्हत यात्रादि सुकृतहं करी आयु पूरी चित्ति चीतवद् । 'प्रधानि श्रावरु नद् कुदि हउं ऊपजिजिउं । मिथ्याविकुलि राजेंद्र म होइजिउं' । तउ पाछइ ताहरा नगर मर्मापि छद् चित्रनालु इसइ नामि विचित्रनालु पुरयग¹⁹ तिहां छद् शुद्धवुद्धि इमइ नामि श्रायकु जिणि इमी दुर्भिक्ष वातां धान्य तणउ संग्रह²⁰ न कीधो । तेह नद् विमला इमइ नामि गुणहं करी अनि विमला श्रायिका । तेह नी कुक्षि संभृत सु देधु पुनु ह्यउ । तेह महाभाग²¹ तणइ जन्मि द्वाइइश यापिक दुर्भिक्ष हेतुक²² मह निजिणी करी सुभिधु²³ कीधउं । " इसउं केवली वचनु सांभली करी केवली रत्तं वींरी करी । चित्रनालि नगरी 10 जाई सु बालकु उत्संगी करी इमी परि स्तुति करइ ।

दुर्भिक्षपङ्कमग्रापि²⁴ व्याधार वीर नयोस्तु ते ।

राजा त्वमेव मे राज्ये तलाराख्योस्मि तावकः ॥

[७५४]

मूर्तिमानिव धर्मायमित्यं दुर्भिक्षपङ्कम् ।

इति तस्याभिधा धर्म इति धात्रीभृता कृता ॥

[७५५]

15 §517) तउ पाछइ सु बालकु जातमात्र हंतउ प्रसिद्धउ ह्यउ । अनेराई जि के पावतियां राजा छइ तेह पुण आपणइ राज्य धर्म नी आनि प्रवर्त्तावी करी मेह वरसाविया । समस्त राजमंडल तथा कालोचित²⁵ वयोचित प्रामृत द्विनि द्विनि तेह रहइ आवइ । जिम मंदरकंदरागत कलरपादपु निरुपद्रवु थिकउं प्रवर्द्धइ तिम सु बालकु प्रवर्द्धइ । यौयनि आविइ²⁶ हुंतइ जिम समुद्र रहइ नदी स्वयंवर आवइ तिम सबल द्विनि तथा जि छइ राजेंद्र तीहं नी दीकिरी²⁷ स्वयंवर आगत अनेकि सु धर्मबालकु परिणितउ । धर्म समस्त 20 महिमस्तक विहिताह्यु देवयुग भक्तिमंतु²⁸ धर्मवंतु नयां कर्म अवांघतउ पूर्व पुण्यफल भोग भोगवतउ प्रस्तावि मंयमु ले करी केवलज्ञानु ऊपाटी²⁹ मोक्षि³⁰ पहुतउ ॥

भोगोपभोगविरतिं प्रतिपान्य पूर्वं धर्मो यथा शिवमयाप निरस्तपापः ।

धूयं तपेद् भविकाः प्रतिपद्य सद्यः सिद्धिधियं वृणुत तिष्ठन् लोकमौलौ ॥ [७५६]

भोगोपभोग परिमाणव्रत प्रतिपालन विषय धर्मराजेंद्र कथा समाप्त³¹ ।

25 §518) अथ अनर्थदंड चिरतिलक्षणु व्रीजउं गुणवतु लिखियइ ।

तत्र अर्थ दंड स्वभगादि कार्यु, तेह नउ अभावु अनर्थु । तउ पाछइ प्राणियउ कार्य पावर पुण्य धनापहारि करी पापकर्महं दंडियइ हंडियइ जिणि करी सु अपध्यानाचरितादिकु अनर्थु दंडु कहियइ । तेह तणउ मुद्दतंदि कालायधि करी निषेधु अनर्थदंडविरति म्नु कहियइ ॥ तथा च भणितं

तदणत्पदेदविरद् अनें स चत्रव्विहो अवज्जाणे ।

पमयापरिण हिसप्याण पावो च एसे य ॥

[७५७]

तथा अनर्थदंडव्रतुधां चउं भेदे ह्यइ । यथा अपध्यानाचरितु, १ प्रमादाचरितु २, हिंस्रवस्तु प्रदाउ ३ पापोपदेनु ४ ।

516) 17 P. देवततः । 18 P. रहाविउ । 19 Bh. P. उरवइ । 20 P. संग्रहणु । 21 B महा भाग्य
22 P. omits -ए । 23 Mss have मुन्यु । 24 Bh. मयो-योपर ।
517) 1 B¹ P आणी । 2 B. Bh. द्वाइशक्ति । 3 P. पडउ । 4 P. आवियइ । 5 P. दीधरी ।
6 Bh. मन्त्रिइ । 7 P. क्राव्यी । 8 P. मोक्ष । 9 P. omits.

श्रितकणप्रभाचार्यकृत

[५१७] ७५८-७६३

तत्र अपायानु आसंयानु अनर रौद्रध्यानु, यथा—

वैरिप्रजोद्धन्वपव्यथादेविद्याभरेन्द्रत्वनरेन्द्रतादेः ।
रौद्रासं भावाकुलितम्य विन्नापध्यानमेतन्निरगदन्ति तज्ज्ञाः ॥

[७५८]

पापोपदेशो यथा—

दुःखभुजिपिह देहिशेत्रेदेरे हयाना
वृक वृषणविनासं मुञ्च सम्पु पुन्याम् ।
दमप वृषभचून्दां पातय प्रत्यर्नासा-
निनि दिगति विवेकी को हि पापोपदेशम् ॥

[७५९]

हितव्रदायु अनर प्रमादाचरितु अनर्थदंष्ट्रु विष्णु! गार्हा करी सूत्र मादि कहर ॥

[७६०]

सत्यगिमुसन्त्रतगतनकट्टे मंतमूलभेसज्जे ।
दिशे द्वाविष् वा पडिपे देसियं सच्यं ॥
दाणुवदृणवद्वगविदेवणे सद्द स्व रस मंधे ।
वत्यासणआभरणे पडिपमे देसियं सच्यं ॥

[७६१]

रात्र आति मुगल प्रमिद्ध । संव्रदाकटादिक, वृणवारि बुहारी वदुतादिक, काप्र अरपट्ट यष्टचादिक, मंजु विषाणदापादि, मूल नागवनी प्रमुनु । ज्वरायुवनाममूलिका वा । अथवा गभंदातनादि मूलकमुं 16 भेमज्जु । उघाडनादि निमित्तु द्रव्यमेलनु कहियर । एउ दास्यादिकु प्रपूत भूत संघात विघात हेतुपूत वाक्षिण्यादिहं तणइ अभावि अनेराई निमित्तु जु दीधेउ दिवारिउं तेह हुतउ 'पडिक्रमे' इत्यादि पूर्वपद ।

[५१७] स्तानु अभयंगपूयुं दारीप्रक्षालनु ।

निहां प्रमजीवाकुल भूमितलि । तथा संघातिम जीवाकुलि । अथवा कालि' अथवा अज्ञाणिह जलि अपयतना करी जु कीधेउं ऊयटणउं' तेह नी दीवलेंटी राख मादि मसली नही, भूमितलि मही नही वा' 20 तउ पाठइ ति कीटिका मशिका कटक मंजुल कृतिरे स्वाभइं अथवा लोक तणा पायहं मंदिचइं । वर्णक कर्तूरिकादि मंठनु । चंदन कुंकुमादि अंगरागु विलेयनु । संघातिम जीवाकुलि कालि अयतना करी कीधो हयरे । वर्णक वेलपन वणु चीणादि संबंधित द्रव्य कौतुकवांति रागवांति संमंलिउ हुयइ । अथवा रात्रि समइ उच्यैः स्वरि करी दानु कीधउ हुयइ । नाटकादिकहं मादि रूप अनेकविध बीडो हुयइ । रहु मधुरादिकु ननेराई एदरें त्रिम रागु हुयइ तिम वर्णविउ हुयइ । एवं मंघादिकइ जाणिया ।

ईद विरयहं तणा मरणइतउ मघादि पंचविध प्रमान्महणु पुण जाणियउं ।

पज्जे विसय कसया, निदाविगइ य पंचमी भणिया ।
एए पंच पुसाया, जीवि पाइंति संसारे ॥

[७६२]

तउ पाठइ स्तानु उद्धसंनु वर्णकु विलेयनु दानु रूप रस गंध फरस ईदं सयहीं नरे विपइ तथा मघादिकहं नर विपइ जु' आचरिउं । तथा 'वत्यासण आभरणे' । पट्ट कूलादिक वख । 'आसंवी' मूटकादिक आसन 10 'पडिक्रमे' इत्यादि पूर्वपद ।

518) 1 Bh. विं । 2 Bh. इरा— ।
519) 1 This may be अपवासदाडि । 2 B. omits. 3 Bh. erases this वा । 4 Bh. omits.

§520) अत्र अत्रिचार प्रतिक्रमण निमित्त भण्ड ॥

कदम्पे १ कुरकुरम् २ मोहरि ३ अदिगरण ४ भोग अद्रिचे ५ ।

दंडंमि अणद्वान् तदयंमि गुणव्यम् निंदे ॥

[७६३]

कदम्पुं मोहोर्द्वयिन कारकृ लामुं १ । कौकुर्यु-मैत्रादि विक्रिया गर्भित तास्यजनक विट चेत्ता २ ।
६ मीगमुं-अर्धवृद्ध यानुचनता ३ । अधिरुण उद्वृणल मुगलादिक ति संयुक्त धरियई, यथा ऊलल मुगल' धे एकटां करी धर । अथवा घर्डी मांकाडी धे एकटां करी धर ।

याणिण परं' ज्वर' एकटां करी धर । एवमादि अनेकविध संयुक्ताधिकरणता ४. तु निरेकी
पुय सु संयुक्त शकटादिकु अधिरुणु न धर । सु देली करी देयनउ हंतउ पग रागी वारी न सकियरं ।
विमंगुकि पुण हंतउ अधिरुणि आपहे निवारितु पग पुय ।

१० भोगानिष्कता-भोगोपभोगाधिकता तीहे रहरं अधिकता हंतो लोको पुण माग मूळ्यांनुद्धि पुण
पुय । 'दंडंमि अणद्वान्' अनर्थदंड धिरव्याप्तिय व्रीजद प्रति' इत्यादि पूर्ववत् ।

§521) अनर्थदंड धिरतिव्रत' धिर सुस्मेनकथा लिखिय ।

अनर्थदण्डविराम व्रतधीरा' महोदयम् ।

लभन्ते गुरसम्भारभागुराः गुरसेनवत् ।

[७६४]

१५ तथाहि —

यमुंभगयंतुरा' यंतुग इतर नामि नगरी । नि तं वीरसिरोमणि वीरमेतु नामि राजा । सुरमेन-
भासमेतु नाम वि पुय । अनरद दिन महामेतु तगी जीम मूर्गी । निम शंभनदं करी वैश्वानर प्रजापतर निम
ओपधरं' करी सु भांयु रेति वृद्धि गयउ । 'वर्म एकु एत राई भोगतु' । इयउं भणी वैयहं सु मेलिउ ।
कामिकमि से' नी जीम वृती । मागीण मधुमेदप निम थंवाली । उमु दुर्गधु इयउ उउलित जिम
२० मायु विटु भापांदिहं वैभुजनदं मंडित । मेद कन्दर भाउरई वउर को रहर नहीं । तद्वाकलि सुस्मेनु मरं
भा' नर रवेदि दुर्गधु जिमी करी कन्दर रडिउ । तथा च भणिते—

यमणे भिन्परिभ्या, दागपरिभ्या य होर दुहाले ।

विणये सीमपरिभ्या, मुहदपविभ्या'ग संगमि ॥

[७६५]

सुरमेनु महामेनु आगर कदर " धात ! जां त रहरं एउ जीमरोमु छर ती तउ प्र'वाणयानु करि
२१ एउं क ई तउ आउरं' उउ मू कइं संयु म जाउ । अनर्थया न आहक' निणि पुण निमतीं नि कथिउं । पुतरा
सुरमेनु कदर, " धात ! मगमेत ! जद तिमर दमि मथ मरानि धिरुद तउं मरिणि तउ अतमान तणउं फउ
एदिमि । " इमउं भणी करी भईं आगद' थरं सुरमेनु वग्वांवादि मागी" वींज । निअतु धिरुउ'
६ कदरमे उ नमस्कार हुण । नमस्कारानिर्मिति जिदि करी महामेतु नी जीम सींय । महामेतु कदा
नमस्कार मरकार । निम निम जीम मरिदि सु नीम परिणवर निम निम सोमोपयानु पुय ।

निर्द्वयं निर्द्वयं' नीगम् निर्द्वयं' गुणानि च ।

हृत्पान्ते' हुरं जउे वर न धमः नभ.उभाह् ॥

[७६६]

20) 1 B. 2 B. 3 B. 4 B. 5 B. 6 B. 7 B. 8 B. 9 B. 10 B. 11 B. 12 B. 13 B. 14 B. 15 B. 16 B. 17 B. 18 B. 19 B. 20 B.

21) 1 B. 2 B. 3 B. 4 B. 5 B. 6 B. 7 B. 8 B. 9 B. 10 B. 11 B. 12 B. 13 B. 14 B. 15 B. 16 B. 17 B. 18 B. 19 B. 20 B.

P. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

तणउ कालु जघन्यारिं मुहूर्त्तात्मकु छड उतरुणिं गामाथानु गीमु छड । तेणु गणउं अणुणु अयरा अनार करणु पृथुं अवस्थानु अनवस्थानु छ, गामाथिकु' वेनीगणु मुत्थयपार निना न दुयदं तेनीगणु करिवउं ।

तथा चाह चूर्णिकारः

6 'जाहे खणिओ ताहे करेद मामादये इयसो' त भंजेद 'त्ति ।

तथा स्पृतिविहीनं निद्रादि प्रमादवनामतत इत्याकारता करी कीयउं गामाथिकु स्मृतिविहीनता पांचमउ अतीचार प ।

ए पांच अतीचार आश्रया करी कीयुं' गामाथिकि पहिलर दिशावत्ति । अविनयिकृति- अविधि पूर्व विरचिति सम्यग् अकीधर जु अतिवरिउं सु भिदुं ॥

10 §524) अत्र शिष्य भणइ- 'दुविहं ति विहेणं' इयद प्रयाग्यानि भणिर हुंतइ मनोदुःप्रणिधान वर्जन रहइ अशक्य करणता करी प्रतिपेधु संभवइ नही । तउ पाछइ गामादक वन तणउं भंगु तुयइ । किती परि सामाथिकु संभवइ ? तिणि कारणि सामाथिक प्रनिपत्ति कन्हा अप्रतिपत्ति भली । इमउं न कहिं । मनि करी न करुं १. वचनि करी न करुं २. कायि करी न करुं ३. मनि करी न करामुं, ४. वचनि करी न करामुं, ५. कायि करी न करामुं, ६.

15 इति छ पद्यकरणेण तीहं माह मनोदुःप्रणिधानि करी मनि करी न करुं एह गइभंगिहं हुंतइ बीजा पांचहं तणा संभवइतउ प्रतिपत्ति इ भि भली । तथा मनोदुःप्रणिधानतउ' जु अतिवरिउं तेह रहइ मिष्या- दुःकृत मात्र भणनि करी शुद्धि तणा भणनइतउ सामाथिक तणी अप्रतिपत्ति न भलियइ किंतु प्रतिपत्ति जि भली । तथा अविधिकृत कन्हा अकृत भलउं । एह वचनु युक्तउं नही । यदुक्तं—

अविधिकया वरमकयं अणुयवयणं भणति समयचू ।

20 पायच्छित्तं जम्हा अकए गुरुयं कए लहुयं ॥

[७६९]

§525) सामाथिकमत विषइ केसरी नाम श्रावकपुत्रकथा लिखियइ ।

क्रूराचारोपि संसारकारया मुच्यतेद्भूतम् ।

केसरीव बुदकर्मदामा सामाथिकव्रतात् ॥

[७७०]

तथाहि—

25 कामपुत्र नामि पुरु तिहं विजउ नामि राजा । सिंहउत्तु नामि श्रेष्ठि । अनेरइ दिवसि सिंहउत्तु श्रेष्ठि राजेंद्र रहइ प्रणमी करी वीनउ, " महाराज ! केसरी नामि माहरउ पुत्रु चोरु छइ पाछइ मू रहइ दूणु म देजिउ । हुं तुष्ट आगइ वीनवी करी निरुत्तु हयउ ।" राजा केसरी रहइ देसवउद दियइ । सु पुण केसरी राजेंद्र तणा भय लगी नगर हुंतउ नीसरिउ, देतीतरि गयउ । श्रांत हुंतउ किणिहिं वनगहनि स्वच्छ दीतल स्वादु जल सरोवर तीरि वइउ चोतवइ । ' मइ जन्मलगी चेतना संभवि हयइ हुंतउ अचोरिउं पाणीऊं पीधउं नही अहो अकार्य ! धिग्धिग् मू रहइ ! आजु मइ सु' अचोरिउं पीवउं । 'इसउं' मन माहि

§523). 2 Bh. गामाथिकु । 3 Bh. इउगे । 4 Bh. omits.

§524) 1. Bh. मनोदुःप्रणिधानतउ ।

§525) 1 Bh. दुं । Bh. 2 P. दुअउ । 3 P. omits-ऊ । 4. P. सु मइ । 5 P. पीवउं । 6 Bh. omits.

चीतवतः हंतुः सु चोः भ्रांतुः कांतार-सरोवरि जलुः पियद । ततः पाण्डुः श्रमरहितः हंतुः सरोवरः पादिसिन्धुः चूतः ततः ऊपरि चंडिः फलः खाई^१ वृत्तः हृद्यः^२ हंतुः मनः माहिः चीतवद । 'ह हा मु रहई किम आइ नउ दिवसु चोरी पावद जादसिद' ! इसतं तिणि चीतवतः हंतुः एकुः कौं^३ योगीन्द्र मंत्रसिद्धपादुकु आकाश हंतुः सरोवर तीरिः कतरिउ । पादुका तीरि मूकी उरहउ^४ परहउ^५ जोई^६ करी भूमि लागता पगहई करी सरोवर माहिः पदठउ । तदाकालि तिणि चोरि वृक्ष ऊपरि वइउ^७ थिकई^८ इसउं^९ चीतविउं, 'एइ योगी रहई गगन गमनविपद ए पादुका ई^{१०} जि कारणु, नहीं त किम ईहै पारवद भूमिगतिहि^{११} जि होइद ! तिणि कारणि ए पादुका चोरउं, दिन सफलु करउं ।'

§526) इसउं चीतवी चूत हंतुः ऊतरी पादुका पाप^१ पहिरी गगनिगमनु करद । तउ पाण्डुः दिनु किणिहि वनगहनि रही करी रातिसमर ति पादुका पादे पहिरी आपणइ धरि गयउ । जनक सिद्धसत्रेष्टि आगइ कहइ; "राउ यीनवी करी तहै हउं नगर हंतुः कटावियउ" । इसउं भणी करी तां दंडे करी^{१०} मारद, जां मरद । मूयउ वापु मूकी करी जि जि महर्द्धिक घर तीहै तीहै हंतुः साग साग अपहरद । इसी परि त्रिन्ही पहर रात्रि सीम स्वेच्छाचारि तेह पुर माहि विचरद । रात्रि तणद चउथद पहिरी पुनरपि दुर्ग-मारण्यमंडलि तिणिहि जि सरोवरि^१ गयउ । इसी परि राति राति सु चोरु तैजु नगर विविध प्रकारहै करी लंडद । पापबुद्धि हंतुः सापु सती सुख्यलोक रहई संतावद । तउ पाण्डुः जिम जमागमु मयंकुः हुयद तिम तिणि नगरी निसागमु हुयद । तेह नउं स्वरुपु नगराधिपति जाणी करी तलाग बोलायद । तलाग^{१५} बिलस्यवदनु^१ हंतुः अधोमुख होई करी यीनवद । "महाराज ! जे भूमि मोचरु चोरु हुयद तउ माहरद पाडि हुयद । एउ खेचरु कोइ चोरु माहरद पाडि नहीं "

§527) तउ पाण्डुः राउ कोपाशितापसंतपु आपणउं मुरु, दुस्खितलोक दसोनि करी हुई छद कृपा तेह लागी, नेत्रहं हंतुः नीसरद छद जि अस्त्रजल तीहै करी, दीतलु करद । "तयोधनहं तणां जि छदं तपोधने, शिलिवती जि छदं युवती तीहै तणा छदं शिलधने, तीहै तणद प्रभाति^{३०} सु चोरु मू रहई दृष्टिगोचरु हंतुः जिउ" । इसउं भणी करी अल्पपरिवारु राउ आपणपई पुरी माहि फिरी चोरु जोयद । जि के देवकुल, जि के आश्रमपद, जि के जनसमायपद, जि के वेद्यापादक, जि के कालाप्रादक तिहां सगले जोइउ जइ न लाधउ^३ तउ राउ^३ नगर बाहिरि नीसरिउ । धापी कूप तडागा-रामादि स्थानि फिरिउ । जउ तिहाई न लाधो तउ राउ नगर बाहिरि वन माहि गयउ । तिहां दिव्यु गंधु उपलमी करी गंधानुसारि जायतउ हंतुः वनवहुमध्यि चंडिका धुवनु देवइ । तेह माहि^{२५} चंडिकाभूति चंपकादि दिव्य तुसुम संभारु^३ संपूजित देवइ । धूपीक्षेपु करतउ हंतुः पूजारउ राय कन्हैद आवियउ । राइ^३ तेह तणां दिव्य वक्ष देवी करी विस्मयपण्नि हंतुः पृष्ठिउ, "आनु किमउ उच्छवि^३ किमइ पवि, किणि भावियद इसी पूजा^३ करायी छद ? इसी विभूषा^३ देवी रहई करायी छद ? त रहई देवतृप्यावतार तार वल किणि दीर्घा ! " इसर राउ पृष्ठतइ हंतुः पूजाकारकु भणद—

§ 528) "महाराज ! मूं दुस्खित रहई देवी चंडिका तृता । प्रभाति देवीपूजा निमित्तु आवउं^{३०} अनद देवी तणां पादहं आगद वसंतान स्वर्णरत्नसंतान लहउं । तिणि कारणि त्रिहूं काले देवी रहई पूजउं । देवी प्रभाति धनद धन जयकारकु धनु लहउं" । तउ राजा चित्ति चीतवद, "निधइसउं रात्रि समर देवीपूजा निमित्तु चोरु ईहां आवद । देवी आगद सुवर्ण^३ रान मुकद^३ इसी परि चोरु संघात तिहां

§525) 7 P. चोई. 8. P. omits. 9 P. चोई. 10 B. Bh. omit. 11 P. वरउउ. 12 P. वरउ. 13 P. adds हि. 14 P. भमि- ।
 §526) 1 Bh. पादे । 2 P. गगन विपद । 3 P. सरोवररि । 4 P. कवीहं मनुष्य । 5 P. बिलसु - ।
 §527) 1 Bh.-पदक. 2. Bh. लागे । 3. B. P. omit. 4. Bh. omits. 5. Bh. वरउ । 6. B. P. omit. मंषु उपलमी करी । 7. P. omits. 8. P. राय । 9. P. उच्छवि । 10. Bh. पूज । 11. B. पूजा ।
 §528) 1 P. स्वर्ण । B. स्व on the recto and वर्ण on the verso.

संभाषी करी प्रभात समइ राउ वायरकुल्य करिया कारणि आपणइ आगामि आविउ । रात्रि समइ सार परिवार सहितु भयवहितु निज नगरहितु' राउ चंजिका देवदुलि आरिउ । धरुणु सुभटपूर' दूरदूर' रहायी करी आपणपरं स्तंभांतरितु होई करी देवदुल माहि रहिउ । त्रिहुं पदर रात्रि' गमग पादुकामिद तेह तस्कर रहई तिहुं आविषा हुंता राउ देवद । पादुका युगलु जगारी' गामि' करि लेई, देवदुल' माहि जाई, सु चोर प्रधानस्तनई करी देवीपुता करइ । पूजा करी देवी आगइ कहर, " द्यामिनि ! चोरीकारिया स्वेच्छाचारिया मू रहई प्रभूत धनदा क्षणदा सदा होइरहिउ " । इगउं भणी पाछउ यली सु मत्तवली जायतउ हुंतउ ह्वाग संधी करी रहितु हुंतउ राइ' बोलागिउ ।

§529) " रे ! जीवतउ नतीं जाइ " इमी परि राइ' धरिपु हुंतउ बोलाविउ हुंतउ सु चोग प्रस्तायोवितु हथियाग पादुका युगलु राय ना मालस्यल उद्विगी करी लोणर । तेह 10 वर प्रहारि' करी वेदनाक्रांति राइ ह्यइ हुंतउ, " एह हउं जीवतउ'जाउं' छउं " इसउं भणतउ सु चोग वाहिरि नीसरिउ क्षमांतरि राइ वेदनारहिति ह्यइ हुंतउ 'जाइ' 'जाइ' इसी परि राइ भणतइ हुंतउ पावतियां राहविया हुंता जि उज्जु' सुभट ति तेह रहई केइ धाया । आकाशगति हेतु पादुका युगलु मंत्रियचननउ ले करी राउ पुणि' चोर पुडि द्रथटिउ । सु चोग गतिवेगी करी दूरमुक झूरपूक, पुर धामांतर मार्गांतर लोकरसंचार माहि पण गोपाधिया कारणि गयउ । 15 भयवदास्तउ' काई एकु वैराग्य गयउ हुंतउ चीतयइ । " आनु गारउउं पापु निडासउं कलिउं " कही एक धाम तणइ आरामि ध्यानतत्तु उपदिगतउ छइ मुनि वेह तणउं इसउं यचनुं सांभलइ' ।

" सर्वत्र ध्यानसमतावचिमुच्येत पातकैः ।

जनः सद्योपि तिमिरैः कृतदीप इवालयः ॥ "

[७३१]

" जिम हीवर कीधइ आलउ घग तिमिरहं अंधकारहं भेलिह्यइ तिम ' जन ' लोकु, ध्यानवदा- 20 तउ सर्वत्र¹⁰ ' समतावचि' किसउ अर्थु ? सर्वभाय विपद समानबुद्धिपरिणामु, न करी विपद सरामु न कही विपद सत्रेपु जु ह्यइ सु सर्वत्र समतावचि¹¹ कहियइ । इगउ समता वर्त्तमानु जनु पातकहं पापहं ' सद्यः' किसउ अर्थु ? तैतीही जि वार ' मुच्येत ' मिलिह्यइ¹² । " इसउं ध्यानतत्तु सांभली करी सु चोर तिहंई जि रहितु सारवरतु ति असारवस्तु निदायिरहितु, मध्यस्थभावि निमगनु, दोषरात्रि, आगामिउं दिउ ध्यानस्थितु थाकउ तिम, जिम परमात्मा नइ विपद मनु दिवग ह्यउं । घातिकर्मक्षयवशतउ शुह 25 ध्यानानंतरिका वर्त्तमान हुंता संध्या समइ केवलयायानु उपनउं । तथा च भणितं—

तय तविए जय जविए बहुविह कालेण हुंति सिद्धीओ ॥

निहृदिषपुत्रपाया¹³ ज्ञाणेण तत्तुस्तणा सिद्धी ॥

तथा ध्यान समता उपहरउं रांसारिसुरु पुण¹⁴ कांड नथी । तथा च भणितं—

जं च काममुहं लोए अं च दिव्यं¹⁵ पदामुहं ।

वीयरायमुहसिहउणंतभाणं¹⁶ न अगवइ ॥

अज्जं वा फलं वा फेवलनाणं भवेइ फा तची ।

सगरस तत्ते पत्ते किं अरिहं भणमु मुकरये चि ॥

[७३२]

[७३३]

§528) 2. P. नहिटु । 3. P.-वृद् । 4. Bh. P. omit. 5. Bh. रात्रि । 6. P. कतरी । 7. P. वा 8. P. देवदुलि । 9. Mss. read : राउ तिणि बोलाविउ which is not supported by the context, hence the emendation.

§ 529.) 1. Bh. राउ । 2. Bh. प्रहारि । 3. P. जीवु- । 4. Bh. जायउं । 5. P. उदइ । 6. P. पुण 7. P. झूरपूक । 8. P. उभय । 9. P. गामिद । 10. P. सर्वत्र जीव । 11. P. समानता । 12. Bh. P. मेहिल्य 3. B. -पात । Bh.-पां । 14. P. पुण । 15. P.-दिव्ये । 16. P. सस्वेये ह- ।

‘इत्येवमप्युच्यते’ इति ।

[534] इत्येवमप्युच्यते इति शब्दो मंत्रि कथा निमित्तः ।

देशारण्यमिदं पारं दृष्टे भद्रया मूर्तिः ।

मन्त्रव्यापनां मेवाभयं धर्मं भद्रिणी ॥

[७५०]

मभातामय मन्त्रो विज्ञाः शुद्धा पनापि ।

शुभिरभयं जायते तस्य च शुभविषयः ॥

[७५१]

वर्षा—

मालदेवदेवमन्त्रेण¹ शब्दिका नामि नमसि । तारापीठे इत्येव नामि राजा त्रिभुवः राज्यं कृतम् ।
शुभियु नामि मेतः मन्त्रः मंत्रीः । सु पुत्र निजस्यमेवाभयं मन्त्रेण² मन्त्रव्यापनां पनापानु पानु³ सुभ्राह्मणम् । शाय
रत्नदेवदेवमन्त्रेण⁴ अतः तन्त्रेण⁵ इत्येवमप्युच्यते । मन्त्रो मन्त्रिः यन्त्रु इत्येव इति मन्त्रः । तारापीठे राजा नय
तारुण्येण पुण्यकर्म परामुत्तु⁶ इत्येव सुभय मन्त्रि मन्त्रि मन्त्रः, “ वसुधा सुभ्राह्मणं देवा ज्ञानादिधर्मं करी

20 किसह कारणेण सुभा आपणते जन्तु नमिभयः? म् निम निमकर्म ईते प्रार्थिते करी सुभ्राह्मणं आपणते वेनु
कउणु दण्डः” इत्यादि राह भणवर इत्येव सुभियु मंत्री निमकर्म इत्येव इत्येव रामेन्द्र प्रति मन्त्रः,
“ महाराज! इत्यादि अनुचितु वचनु तुमं वरं योऽहम्? इत्येव तुमं वरं इत्येव धर्मं विषय उच्यते करणिया
वांछते” । एतेषु पुण मूर्ति रत्नं धर्मोयुनु रागिया वांछते । ए मन्त्र विषयं मन्त्रः । सु धर्मं किम विकल
हुयद, जेत तणा प्रमाददन्त स्वयं मन्त्र तणा सुभा पुण जीवि देवदेव लाभते” ? अथ राजा प्राह “ महामात्य

25 म् रत्नं विपत्ति-निवृत्ति-संपत्ति-प्रवृत्ति लक्षणु धर्मकलु प्रत्यक्षु दिशति । ”

[535] मन्त्री प्राह: “ महाराज! तत्र राजा, अनेरा ताररा मेवक लोके, एउ प्रत्यक्षु धर्मं तणं
फलु किसते न हुयदं ? ” तउ राउ मन्त्रि प्रति भणद,

“ एकं पापाणि वि मन्त्रि कीधर इत्येव, एकं मन्त्रि देवतामूर्ति हुयद बीजद मन्त्रि गोपानु हुयद ।
भणि महामात्य ! किमते एकं मन्त्रि पुण्य कीधरं, बीजद मन्त्रि पापु कीधरं छर ? निणि कारणेण स्वभा-
30 यही जि तउ विषय रत्नं भव्याभयना व्ययथापित्री ” । इत्येव वचनि राह भणिर इत्येव मन्त्री भणद, “ राजन् !
पापाणु पापाणु अजीवु, तेह तणते छट्टांतु न हुयदं, कादं जउ धर्मो जीवु हुयद तउ धर्म पुण्य पापु हुयदं ।
तथा जद संजीवु पापाणु कहियद,

‘पुष्टि चित्तमंतमकखाया, अणेगे जीवा पुष्टे सत्ता । अप्रत्य सत्य परिणलणं’ इत्या आगमवचनं-

[533] 1 Bh. छंउ ।

[534] 1 P. मंडन देसि । B. has the same order but it is corrected later. 2 P. परमा ।
3 P. विकसित । 4 P omits वां - 5 Bh. जीव । 6 B. P. संप्रति ।

[535] 1 P. एक । 2 B. भणद । p. भणदं । 3 Bh. add' विसते । 4 p. हुद ।

तउ। तउ तीही जि आगम वचनइउउं अनेक जीव रूपु सु पापाणु, न पुनरेकजीवन्पु। तउ पाइइ तीही रहइं मन्व्याभयता धर्माधर्मं चिनिमित्तं इ जि जाणिवी।” तउ राउ भणइ, “ महामात्य ! तं हउं वचनि करीं निफत्तक कीषउ। तथापिदि प्रत्यशङ्कहिदि जि धर्मफलिं करी हउं निःसंशु धम्मु मानउं। अनेरइ प्रकरि मानउं नहीषउ।” इसी परि राउ अनइ मंवि रहइं नितु धर्मं विपर विवाहु हुयइ। तउ सु विवाहु प्रसिद्धउं हुयउ।

5

§536) एकवार सर्वं वासर कर्म गीपजायी करी पाशिक प्रतिक्रमण करिया कारणि संख्या-समइ आपणइ आवानि आविउ मंथी शुद्धायधि देशवकाशितुं¹ वतु करइ। प्रतिक्रमणु विधिवत् सामा-चारी करी शुद्ध धर्मं ध्यान परायणु पंचपरमेष्ठि नमस्कार परावत्तनु करिया लागउ। तइकालि राइ-तहीहाक आजी मंथी आगइ कहइ, “ महामात्य ! मुक्ककार्यं करिया² कारणि राउ तुहइ रहइं तेवइ” तउ मंत्रा प्रतीहार आगइ कहइ, “ प्रभाति” सीम मंथी शुद्धाहिरि जाइया नियम निव्यलचित्तुं हुंतउ¹⁰ रहिसिइ घरिदि जि। प्रभाति राजं समीपि आविसिइ”। हसउं भणी करी पडिहार रहइं मोकलइ। पंचपर-मेष्ठि महाभयमसंस्मरणु शुभासेकि करी मनुष्यजन्मु कल्पवृक्षु मंथी तदाकालि विशेषि करी संवइ। अथ पुनरपि पडिहार आजी करी भणइ, “ मंविन् ! तुम्हारउं फयनु सांभली करी आहाभंग कारकं निम तुम्ह ऊपरि राउ रूउउ। वली हउं मोकलिउ, ‘ मंथी न आवइ तउ म आवउ। तउं माहरीं सर्वाधिपत्य मुद्रा ले आवि’। इणि कारणि हउं मोकलिउ”। हसउं प्रतीहार तणउं वचनु सांभली करी हसतउं हुंतउ¹⁵ निम इन्दील दासी आपणा घर हुंती वाहिरि किअइ तिम राजमुद्रा मोकलइ।

§537) मात्र-मुद्रा कौतुकी हुंतउ करि पिदिरीं करी प्रनिहाक हर्षितु हुंतउ आपणा पायकहं आगइ कहइ, “ हउं” मंथी हुयउ। मंथी मस्तक-मुकुट दानैः दानैः पाउ धारउ” हसउं भणतां मद्रइं परिवृतु पर हुंतउ प्रतीहाक राजमंदिर ऊपरि चालिउ जेतलइ, तेतलइ देवजोगइतउ कीर्णं ए इहं सुभटइ निःक्रान्ति सासिउंइहं कृशी करी पाउइ। यममंदिरिं मोकलिउ। जि नाडा सि नाडा, जि केतलइ रहिया प्रतीहार²⁰ तणा जण हुंता तेहे वैरी पुण मारिया। ‘प्रतिहाक मारिउ’ इतउ कोलाहलु ऊडलिउ। राजा कोलाहलु सांभली करी कोपयं लोचयुं हुंतउ चिनि चीतयइ।¹ प्रतीहाक अम्हारउं कानु करतउ इष्टि मंथी मारिउ। पइ मंवि तणउं मस्तकु आपणइ हाथि छेदी करी ऊलाउउं ददा नी परि, तउ मू एहं वलवंतणउं सरलु हुयइ-निवृत्तं पुण हुयइ¹।

§538) हसउं घोलतउ कोपाटोप संयुक्त गोपति जिहं ति प्रतीहार घातक धातार्चं कंटागतदानं²⁵ पंडिया छइं तिहं आविउ। ‘ महामात्य तणा ए घातक अधया अनेरा को वैदेशिक सुभट’ होइसिइं। हसउं ध्यायतउ हुंतउ राउ दीवदीपिताशयकाशु ति देवी करी घोलतइ। “ काउणि तुम्हे! किअइ कारणि प्रतीहाक मारिउ ?” तउ पाइइ ति¹ भणइ, “ महाराज ! अम्हे धंत कंटागत भाण हुया, अम्ह रहइं किअउं-पूइइ ! देवु इराचाक पूछि, जिणि अन्हारा स्वामी तणउ मनोरणु विफलु कीषउ। जिणि कारणि धरायाम नगराधीश सूरसेन राय तणा अम्हे सेवक, तिणी अम्हे सुभिर मंथी रहइं मारिया कारणि मोकलिया हुंता।³⁰ जिणि कारणि सु मंथी सुभिवु नामि करी छइं, अन्हारा स्वामी रहइं पुण¹ अविउ, नितु देवइ वरसि वरसि। तउं अन्हारा मधु तणउ वशी तेह रहइं सुमियु सदा पोषइ। तिणि कारणि अम्हे स्वस्वामी आदेंदाइतउ सुमित्र तणउ मारुं वापिउ” हुंतउ। किहो हुंतउ एउ प्रतीहाक सिह तणइ ओइइ-अंयुक निम पाठिउ” इसी परि घोलता हुंता ति विचारइ सुभट प्रतीहारघातक पंचता प्राप्त हुया।

§535) 5 p. वचनउ। 6 p. omits 7 Bb. p. धम्म-1 8 p. प्रणिउ।
 §536) 1B.- वाचकु। 2 Bb. omits. 3 Bb. प्रमत। 4 P. रास। 5 Bb.-वचक।
 §537) 1 Bb.- P. पडिउ। 2 P. दणइ। 3 Bb. पडिउउ। 4 Bb. Bb. कोपयं-1 6 B. P.
 §538) 1 Bb. पंचगत-। 2 Bb. P. के। 3 P. हुन। 4 Bb. विअइ चारि। 5 Bb. पुणि। 7 P. मंविउउ।

§539) तत्र राजा पञ्चात्तल संयुक्तं ह्येतत् पुरलोक राजलोकं मानिन् सुमित्र मंत्रि' इति समावद । वातु सती करी इत्यत्र कतः, " मत्तमात्र ! तू तान ममान मत्रि मं पाविष्टि नु अत्रायु ची- विउ सु पराउ करी क्षिमी' । तान जे किमं तं तानु न करतः तउ न जीराउ । तू पागउ प्रगत सिभु राज्यु मू रदं न होयनः' । निनि कारणि आनु कल्याणकारक पुण्यकर्म तणउ कलु प्रत्यभु' मरं वीउतं ।

6 चिरकाल संचित्तु धर्म विरद मांनु मू रदं उतरिउ ।

सुकृतं जीविन्यं ते व्रतेनानेन पौषितम् ।

शोषितं न्यनृतेनाय दुष्कृतं दुर्गमम् ॥

[७८२]

तत्सदस्वापराधं मे प्रसीद नद् सात्त्विक ।

धर्मं कारय मां तान तारयायु भवान्गम् ॥

[७८३]

10 इति परि राद समावदत ह्येतद मंत्री भणत, " मत्तमात्र ! तु तू रदं एयउउ अनुतापु ह्यउ, तिणि करी तू रदं अपराधु को नही " । तउ पाछुद राय मूउर ह्येतद पुनरपि सर्वाधिकारमुदा सुमित्र रदं वीधी । सुमित्र प्रेरिति ह्येतद राद पूर्णचंद्र गुरु समीपि युधिधर्मं मुदा लीधी । अथवा युक्तं छदं, राय अधर्मि ह्येतद संसारंगदेदायुद्रा' मत्तमात्र्य रदं वीधी । मत्तमात्रिय धर्मि ह्येतद प्रत्युपकारकरण' वांछा करी राय रदं मोक्षांगदेश मुद्रा गुरु कन्दा द्विवारी । तउ धर्मविपद एकचित्तना मुद्रं ह्येति सीहं रदं धर्म 15 श्रोत्सर्पणा करता कालु जाद' ।

§540) सु वृत्तांतु जाणी करी अनेरद निनि शूरगेनु सुमित्रमयभीतु ह्येतउ कांभि कुहाउउ करी राय नी सेव' करिया आविउ । राद रान्मानितु ह्येतउ भक्तु भेवकु हुयउ । राजा देवार्था दान सुध्यान तीर्थयात्रा तीर्थप्रभावनादि धर्मकर्महै मंत्रि प्रज्ञासतहै करी आपणउ' जन्मु जीवितु पवित्रु करर ।

तत्र स्वामिनि बालोपि, चण्डालोपि न सो भवेत् ।

20 न यो जिनाधिनाथोक्तधर्मकर्मठतां गतः ॥

[७८४]

इत्थं मन्त्री च भूपथ, कृत्वा धर्मं विशुद्धधीः ।

महाविदेहे मत्स्यं प्राप्य लेभे शिवश्रियम् ॥

[७८५]

ततः सुमित्रदीपेन गमितेऽस्मिन् प्रकाशताम् ।

देशावकाशिकपथे सञ्चरन्तु मुखं युवाः ॥

[७८६]

25 इति देशावकाशिकव्रत विपद् सुमित्र मंत्रिवर कथा समाप्ता ।

§541) अथ पौषधव्रत भणियर ।

धर्मं तणउ पौषु पुष्टि करद तिणि कारणि पौषधु कहियर । सु पुण चतुःपर्वी विधेउ अनुवाउ विरोउ तथा चाह-

चतुःपर्व्यां चतुर्धा हि कुम्पापारानिषेधनम् ।

30 ब्रह्मचर्ये-क्रिया-स्नानादित्यागः पौषधव्रतम् ॥

[७८७]

पौषधव्रतण विधि प्रस्तावि सिद्धांतालापक पुण पर्वविस्तितिं जि पौषधु करीवउ इहा अर्थ विपद लिखिया छदं ईहां इणि कारणि न लिखियारै तेर जि ईहां समरिवा ।

§539) 1 P. omits. 2. P. सति । 3 Bh. होदतः । P. होयत । 4 B. P. omit. 5 P.-देद । 6 B P.-भारण । 7 Bh. जायद ।

§540) 1 Bh. सेवा । 2 Bh. अपणउ ।

‘पमादीति विरुपादि प्रमादि हुंतइ । ‘तत् चैव होइअभाण’ किमउ अर्थु ? ‘तथैव भगनि’
निर्माणीति परि तिम प्रमादि हुंतइ विम ‘अभाभाण’ अमाउधातता हुती । ‘पोगतविति विररीण’
इति अणु विररीं पीपथ इतं विररतिता करणु अगम्य कपालना स्वस्त्यु पांचमउ अतीचाउ हुयर ।

‘भोवराभाण’ इी पाठोत्तरावे भोजन तणउ अभोभि चिंतनि हुंतइ । उलक्षण भावराउ ।
२ इतीर म्मकाक अउअ दुःशासा पुज जणिना । तउ पाउउ तति तणउ चिंतनि हुंतइ पोगतविहि विररी-
णता पांचमउ अतीचाक कथा-

पीपथि वर्धमानु मनि पीपराड’ ‘क्षान्ति पांचियु आत्तक करामिणु, तथा स्नान मस्तक प्रोठना
दिदु कर्मिणु, काममूच अनुभाणु, शेर गेटनादि करामिणु, इमी परि पीपथ चिपरीतताअ्याक हुयर ।

[544] पीपमउ काचियड भिरणंइनाम मंत्रीअर कथा लिखियड ।

- १० वचन सुशोकसाभिखराव्याभिपालयते ।
भरोगवपभायोवां गांनि पावजिनेन्द्रियैः ॥ [७९०]
- भरोगवदःस्तेः पीपस्पीपारं वाम् ।
भरवपाभिः भिरानन्दमनियपीपिव ॥ [७९१]

पद्या-

पुत्रपुत्र इगइ नामि पुत्र । तिमि आपणो कीनि करी भानु गितउ सु’ भानु इगइ नामि विहो
११ शाखा । लइ तणउ भिराणोइ इगइ नामि मीनि अतिविशेषतु हुंतउ तिमि आपणइ सुद्विवलि करी
दुःशासनि अभाउ ।

ए० शाक मना कविः शानेइ मंत्री इतं पुण्य इयवमाय विवर विरादु हुयड ।
ए० शाक कविः “इयवमाक तु मर्धे कर्मादिन मीतकुः”

मर्धे कविः “पुत्रपु तु ममस्त मन संडइहु । तउ पाउउ मंत्रिअचलि करी गदोपु गोपनि मंत्रिपि
२२ इति कविः “एइ विरर विररणापु प्रमाणु नरी पुण्य तु प्रमाणु, तउ मदाभाउव ! पुण्यथलयति
हुंतइ मडे कालेडे कणु लइ । तिमि कोत् इतं अनुभाणु कर्मिणु’ तए ना प्राण मातरउ गडुंउ
अरु’ वी’ इ । ए० शाक मना कविः “तुचउत्तनि मंदिरे ! आणउडे वचनु प्रमाणु करी । परि तदयडे मनी, इतीर ति
हुंतइ अवेर मनादि उ । मनाउ देवु मेनि’ । इमी गय मगी प्राण लरी करी मदाभाणु आपणा वचर
२३ सुं’ इतीरे इतीरे इतीरे । ए० मनि मयिड’ मनी, एतीरउ पुण्यवमाण मदीउता तणउ कारनि वार मगी
अचरतिरे एइ मनी । ए० नर मयड, अणु पण धरडे इड । इमी परि तदअउ’ हुंतउ मधयिन मम
२४ हुंतइ मनी इतीरे हुतउ हुंतइ तिमउ अउ कदाकोटिरे करी पडिनु’ हुयर इमडे मदाभाणुग, गनु देवा ।
अउ मदाभाणु कवि मनी । ए० कसड मेडे मजिन गुडर, बोलाग, गुण हुया । आदला एइ लेक
२५ इतीरे मनी मजिन गुडर इतीरे करी मजिन बोड इतीरे मजि म्म मजिन कदवाकर पुण्य तिम इतर’
२६ ए० मजिन मनी मजिन गुडर इतीरे करी मजिन इतीरे मजिन गुडर इतीरे मजिन गुडर इतीरे मजिन गुडर इतीरे
२७ ए० मजिन मनी मजिन गुडर इतीरे करी मजिन इतीरे मजिन गुडर इतीरे मजिन गुडर इतीरे मजिन गुडर इतीरे

१२ P. १११
१३ P. १११
१४ P. १११
१५ P. १११
१६ P. १११
१७ P. १११
१८ P. १११
१९ P. १११
२० P. १११
२१ P. १११
२२ P. १११
२३ P. १११
२४ P. १११
२५ P. १११
२६ P. १११
२७ P. १११
२८ P. १११
२९ P. १११
३० P. १११
३१ P. १११
३२ P. १११
३३ P. १११
३४ P. १११
३५ P. १११
३६ P. १११
३७ P. १११
३८ P. १११
३९ P. १११
४० P. १११
४१ P. १११
४२ P. १११
४३ P. १११
४४ P. १११
४५ P. १११
४६ P. १११
४७ P. १११
४८ P. १११
४९ P. १११
५० P. १११
५१ P. १११
५२ P. १११
५३ P. १११
५४ P. १११
५५ P. १११
५६ P. १११
५७ P. १११
५८ P. १११
५९ P. १११
६० P. १११
६१ P. १११
६२ P. १११
६३ P. १११
६४ P. १११
६५ P. १११
६६ P. १११
६७ P. १११
६८ P. १११
६९ P. १११
७० P. १११
७१ P. १११
७२ P. १११
७३ P. १११
७४ P. १११
७५ P. १११
७६ P. १११
७७ P. १११
७८ P. १११
७९ P. १११
८० P. १११
८१ P. १११
८२ P. १११
८३ P. १११
८४ P. १११
८५ P. १११
८६ P. १११
८७ P. १११
८८ P. १११
८९ P. १११
९० P. १११
९१ P. १११
९२ P. १११
९३ P. १११
९४ P. १११
९५ P. १११
९६ P. १११
९७ P. १११
९८ P. १११
९९ P. १११
१०० P. १११

किमरे ?" आद्यु चिन्ति चीतवद एद मंत्री तेह आयउं काई अकहिक तु करी सु पुणु आकासि^{१०} ऊप-
रमित ॥^{११}

§545) अथानेतग चंपकादि तमवृत्तुमे चिन्तामणि पुत्री करी मित्राणंदु मानंदु संभुत हुंतउ
चतुरंगु सैन्यु करायी करी संध्याममउ गज वाजि रथ पद्मनि लक्षण चतुरंगदल सांतु प्रबलनिभ्यान
नित्यनहं करी दम दिशंसुव^{१२} सुवर करलउ आयणा पुर मनि पाछउ^{१३} आविउ । जिम महोरगु^{१४}
ऊंदिर रहइं वेदु धातर तिम पुर रहइं वेदु धानी रहइं । ' कउमी पुर^{१५} वेदु पाजिउ^{१६} ! इमउं भणी करी
राह हेरक मोकलिया हुंता, हेरक कटक माहि आविया । मित्राणीदि संविपतिं देयी करी ओलांगया ।
भणिउ, " अहो हेरकउ भुजागरे^{१७} मयितु एउ भूपति, सु तुम्हे मातर^{१८} वचनि मणउ । ' पुण्यप्रभावि संभान^{१९}
सैन्य संभार मित्राणंदु मंत्रीदु चातिनि आविउ एउ^{२०} । जइ किमउ नउं विक्रमाजनि मनुद्वान मरीतनु एउ,
तउ वदिलउ^{२१} प्रहाक कविया निमिसु हुंक । " इमी परि हेरक आभीणी करी यखालेकाहं मंभुनी करी^{२२}
राजेंद्र कन्हइ मंत्रीदि मोकलिया । ति पुण हेरक पाछा नगर माति आयी करी राजेंद्र रहइं निमिदि जि
पीगपदं । तउ पाछउ राउ अनि विम्भयरम^{२३} गंदेरितु हुंतउ सुगुण्ययनु^{२४} होइ करी केनालाई एकत^{२५} । लोकहं
परिवृष्ट हुंतउ जिहां मित्राणंदु मंत्रीदु एउ तिहां आविउ । मित्राणंदु पूयंमतिपत्तना हामी राय रहइं वामुहउ
ऊजिउ । ' इयु विरोधु तां हुयंउं जो इमंतु न होइं मंतं रहइं^{२६} । प्रणमी करी राउ गिलासन वामुहउउ
महंनइ^{२७} । महंनउ^{२८} राउ वनाहकारिहं वरमाती करी भणिउं—

वरेण्यं^{२९} पुण्यमन्वेव श्रीयादिप्यवमायतः^{३०} ।

पुण्यभानो हि नायन्ने विदूःषा व्यवसायिनः ॥

[७९२]

भवद्भार्योदयः कथिद् यस्मादिदुः पमृचयः ।

येनाहं तव भतापि भूयवत्तमि तेऽग्रतः ॥

[७९३]

§546) इमी परि राउ भणी करी वृउउ । " मणि^{३१} मंत्रीवर ! ए असांभुतिक विभुति तु रहइं^{३२}
किहो हुंता हुई ? " मंत्री भणउ, " महाराज ! पुण्यप्रभावि किमउंकिमउं न हुयरे ? " दिव्यरुण्य तनउ
बुसातु कहिउ । तउ पाछउ राउ कीलियापितु^{३३} थिउ । महामहोत्सवि मंत्रीदु साहितु राजेंद्रु साधयं पुष्पकोक^{३४}
विदोकीतउ हुंतउ पुर माहि आविउ । तेह दिव्यरुण्यी चिन्तामणि प्रभावि पुं मनेवांदिण राजेंद्रु^{३५} एउ
मित्राणंदु मंत्री, तेह राउं राय रहइं मला मंत्री हुयरे ।

§547) एक धार भानुभूयनि सउं सभा माति बडटा हुंता महामाय्य सउं उजानवालु आयी^{३६}
राय रहइं वधारा, " महाराज ! सीमंभग इमर नामि यथायांभिधानु सन्भग तुम्हारे कीटोपानि समो-
रिउ । " उजानवाल रहइं सशोकविभूयण वगु द्रुपिणाजिनरुणु करी भानुभूयनि सउं मित्राणंदु मंत्रीवद
मुनिवेदम निमिसु उजानि पणुतउ । तिहां नेत्रामुण वृष्टिकारक मुनिवर रहइं राजेंद्रु मंत्रीदु वीदी करी देवा-
नामृतधानविधान निमित्तु उजानि रथानोक बडटा । देवानारमानि राजेंद्रु मुनि बन्ना वृहइ । " भयन !
मित्राणंदु रहइं विपतिं ममउ^{३७} संवसि किंता पुण्य नइ प्रभावि हुई ? " मुनि मणउ, " महाराज ! किमी^{३८}
हउमी भादि करी भूमिपति अमराजनी हुयउ इमी पद्मपत्रा नामि पुरी हुं म पुण लोक माहि अतिनांसद
हुई । तिहां प्रभावि करी जितउ सीप्यरुणु आदिनु हुयउ इमउ अतिनु नामि मरीयति हुयउ । राजेंद्रु

§511) 20 Bk. कतरनि । P. कतरनि । 21 B. कतरि- । P. कतरि लि ।

§543) 1 B. omits-दुप । 2 P. कतर । 3. Bk. omits कतरि । 4 P. दुप । 5 P. कतरि-कतरि । 6 P.
विषय । 7 p. कतर । 8 Bk. कतर । 9 p. कतर । 10 p. कतर । 11 Bk. omits । 12 Bk. P. कतर ।
13 Bk. P. कतर । 14 P. कतर । 15 P. कतर ।

§546) 1 P. कतर । 2 P. कतर not repeat. 3 P. कतर । 4 P. कतर । 5 Bk. कतर ।

§547) 1 P. कतर । 2 P. कतर । 3 B. omits कतर । Bk. has it in the margin; P. has कतर ।

रहदं प्रतिविच समाजु सुदनु इत्यद नामि श्रेष्ठि ह्ययत् । सु पुण्य' जिणधर्मं धुरंधर ह्ययत् । पर्यविचयि पाप संताप निर्वाप' विपद महोपधु पीपधु ले करी विहुं पहर राति समद समता वचमानु युद तणद एकद्वेगि रहिउ छद । तदाकालि को एकु तरकग अवस्वापिनी-विद्या विदारुद प्रभूत भूत भैरव सुभट परिवार परिवृत्तु तेह नद घरि धाडि पठउत् । चोर नी विद्या करी बीजा लोक रहदं नीद वदि करी मूर्च्छा आवी । पंचपरमेष्ठि नमस्कार महामंत्रानुभावि सुदत्तश्रेष्ठि विपद विद्या न प्रभवियर । तेह सुदत्तश्रेष्ठि देवता रहदं अदेवता हूतं ति तरकर' गूढसाध समस्त हर्षित थिका' सुसदं । कपाट फोटिया' लाग्गा, मंजूष ऊषा-डिवा लाग्गा, द्रव्य तणदं कारणि भूमिगृह पुण फोटिया लाग्गा ।

[§518]. ७९२-७९३

अहो महात्मनस्तस्य, धर्मावष्टंभयन्त्रितम् ।
जातेषुत्पातजातेषु, न ध्यानाद्यलितं मनः ॥

अनागतोऽप्यथाऽगत्य, गृह्यत्यु धनपद्धतीः ।
तेषु यातेषु च ध्यानभेदोऽभूत्तस्य न वचचित् ॥

10

प्रभात' समद धननाशु देखी करी सकलि गृहजनि शोकु करतद हूतद श्रेष्ठि पोसटु पारी करी दिवसकृत्यविधि सउं करिया लागउ । पुण्यानुभावि तेह नद घरि वली घणारं जि धन" ह्ययां ।

[७९४]

[७९५]

§548) अनेरद दिनि सु अवस्वापविद्या-चोरु सेठि ना घर हंती ज वस्तु चोरी' हूती तेह वस्तु 10 माहिलउ एक अमूलिकु मुक्ताफल नउ हाक' ले करी तिणिहि जि नगरि वीकिया आविउ । सु हाक सुदत्त श्रेष्ठि तणद वाणउवि ओलखिउ । सु चोरु धरी करी तलार रहदं आविउ । सु चोत्परण वृत्तांतु सुदत्त जाणी करी इसउं चीतवद' ।

न सत्यमपि भाषते, परपीडाकरं वचः ।
लोकैपि श्रूयते यस्मात्कौशिको नरकं गतः ॥

इसउं चीतवी वेगि आवां चोर रहदं मेलहावद । किसी परि आपणा वाणउत्र' ऊपरि कोउ करंतउ हूतउ तलार आगद कहद, " एउ अम्हारउ वाणउनु कारं' जाणद नहीं । मरं पूर्वहिं पकि दिनि एउ हाक एह रहदं मूलि धीधउ हूतउ । एउ किसउं इसउं माणसु छद जि' सु' चोरी करद । एह यात माहि कारं छद नहीं । हुमदे एउ परहउ मेलहउ ।" तलारि चीतविउं, " जु धणी जाणइ' सु पाढोसी न जाणइ । तिणि कारणि सेठि साचउ, वाणउनु कूडउ । अनइ' द्वादशप्रतधारी श्रेष्ठि कूउउं बोलद नहीं, ' तिणि कारणि श्रेष्ठि नद कथाने तलारि चोरु मेलहउ । बुद्धिमंत तणी बुद्धि रहदं असाष्टु कारं नहीं । श्रेष्ठि चोरु आपणइ परि आणि जीमाटी कापउ पहिरावी मोकलिउ । कहिउं, " वली रणे' चोरी करतउ । मरं इया करी" मेलहाविउ छद, पुण बीजउ को" नहीं मेलहावद¹² । इसउं भणी करी घदि¹¹ मोकलिउ । श्रेष्ठि नउ उपकारि' चोरी" तणउं मनु भीनउ । तउ पाछद अकुर्यरुण भय¹⁶ तणी जाणिवा वांटा ऊपनी । यदुक्तं-

[७९६]

नो जारिसेण संयं करेद अचिरेण वारिसो हंइ ।
कुमुमेहिं संवसंता तिला वि तग्यंपया हुंति ॥

§517) 4 P. पुण । 5 P. - निरापि । 6 P. omits त- । 7 P. पचा । 8 P. फोटिया । 9 P. प्रभाति । 10 P. omits प- ।

[७९७]

§548) 1 P. कोइ । 2 P. भाइ । 3 P. चीनवी, and omits the following couplet, and continues with चोर रहदं, haplography 4 P. वाणउत्रउं । 5 E. omits 6 Bh. कितउं । P. विहुं । 7 Bh. जाणद । 8 B. P. अन । 9 B. Bh. राणे । 10 Bh. छणी । 11 Bh. बोद । 12 Bh. मेलहावमि नहीं । 13 B. P. omit 14 Bh. adds वी । 15 Bh. चोरोहो ; one expects चोरि । 16 P. -भय ।

{ 549 } नोपलभ्यते नगरं यद्विद्यते नोपलभ्यते उच्यते मासि धर्मोपदेशानुसृष्टिं करीं
भारतवाचस्पतौ शीघ्रतः सुखमभिमानीषु मेषानु सुनि श्रेयसः । धर्मो, धर्मोनामा सर्वभली, हृत्पाठकृत्य
विदेहं ज्ञानी करी, तीर्त्तं नि कच्छरं यत्तु शिशामरत्तु करः । सुतु धारिषु प्रतिपालीं करी अंतकालि
समाधिपदितु आयु पूरी शीघ्रं धर्मोपदेशं मासिं देवु ह्यतः । सुतु धर्मि पुण आवणतं आयु पूरी
करी मत्ताराज ! एतं सुहाय्यं धर्मो मित्रानुं ह्यतः ।

समन्तु द्वियमाणासु यद्भुभञ्ज न पापधम् ।

पदे पदे च मेनायं विविधाः सा मग्पदाः ॥

{ ७९८ }

म तु शीघ्रः सुरभीभूतः स्मरदुःखिनीः कृती ।

विनाशाय ददौ रत्नं मन्तारं प्राप्य मन्त्रिणे ॥

{ ७९९ }

{ 550 } राजा भोज्य भोज्य, " दली मेद देव रत्नं मेरी देविगिः ? " मुनि मण्ड, " मंत्रि 10
रत्नं जगत्कालिः श्रीशिवोः सोऽगिः तदाऽगिः मेद देव तजने जन्तु मुनि हेतु सोऽगिः । जिनि
कारनि नदीश्वरि मीयि देवदेवता मनेराधि मेरी रत्नं ह्यतः मग्पायतु सु' देवु विमानु आयु
देविगि । विनि विमानि शक्तिया मेरी रत्नं जायता हंसा सुख हृत्पाठपानानुभावि ह्यवणससुतु उपरि
धिका केरलमानजानि, आयु विर, मुनि सोऽगिः । " इत्यतं मुनि यन्तु सांभली करी राजागिःकलोःक
मराधर्मज्ञानि कालिग मास्य हंसा मादेद निज निज भेदिरि गया ।

श्री मित्रानन्दं मन्त्रिणोः भुज्जा पीपयमन्त्रणम् ।

सुमेयसः स्थिरध्यासान्धुर्वन्तु सुरासु ॥

{ ८०० }

इति पीपयमन्त्र विषय मित्रानन्द कथा ।

{ 551 } अध्यानिधि शंभुभाज्यपरिवार लिखियः ।

तत्र तिथि भणियः—सोऽग्यतार परं 'मि' जेदे मन्त्रिवा नि अतिथि कहिरे', साधु । तथा शोक्तं—20

तिथिः पशोन्मवाः सर्वे मुक्ता येन मद्वापना ।

भानिधि मे विज्ञानीपात्रेपमन्त्रागतं तदुः ॥

{ ८०१ }

सांते रत्नं 'मंत्रिभासु' कियत आयु ? निर्देपु प्रातःकालाय नि छडे अतवान सांते तजने वधा-
रुमांदि शोपयितार पशुं विमुद भज्जा प्रकारं पत्तमान मुंभा आत्मानुवत् पुक्ति करी तु दानु छु अतिथि
मंत्रिभासु कालियः ।

इति एत विधि । जिनि धायकि योगाः कौपड ह्यदर तिनि भयदरु अतिथि मंत्रिभासु आत्मे- 23

वियत, पारणतं तत्र करितुं तत्र मत्तमा रत्नं मंत्रिभासु करायित ह्यदर । अनेरतं रत्नं अनियमु । किमत्
अयुं ? यथा समाधि । यथा—

पदमे नदण द्राऊण भयना पणयिऊण पावेदु ।

अमर्दु य सुविदिपार्णं सुंजद कपादिमायोभो ॥

{ ८०२ }

{ 552 } अत्रातिचार प्रतिव्रजणनिमित्तं भणयः ।

साधने निमित्तवणे ? विधिणे २ ववपरा ३ मच्छरे ४ चैव ।

कात्यायनपदाणे ५ चउत्थे मित्रवायव निदे ॥

{ ८०३ }

{ 549 } 1 P. omits. 2 Bh. places it after मित्रानन्द । 3 P. ह्यतः ।

{ 550 } 1 P. मन्त्र- । 2 P. श्रीशिवो मुदे । 3 P. omits. 4 P. मन्त्र ।

{ 551 } 1 Bh. कहियः । 2 Bh. कहियः ।

{ 552 } 1 B. Bh. Love निकामने ।

दानयु अदानादिकुः तेह तणउं अदानयुद्धि वगदतउ सच्चि सृथियीकायादिक तीहं माहि
निक्षिपणु सच्चि स निक्षिपणता पहिलउ अतीचाण ।
साचि स करी हांकतां हंतां सच्चिसिधानता धीजउ अतीचाण ।

आपणउं अदानादिकु अदानयुद्धि करी पर तणउ कहतां परद्वय व्यपदेशु त्रीजउं अतीचाण ।
किसउं ईहं कन्हां हउं हीउु इसी परि पर हीनधनु द्वितउं देसी मच्छर लगी द्वियतां हंतां
मात्सरदानु चउथउ अतीचाण ।
साधुमिशा वेलातिकामि ह्यद हंतद मिदानिमिचु साधु निमंत्रतां हंतां कालातिकमदानु
पांचमउ अतीचाण ।

ईहं नद विपद चउथद मिशाप्रति जं कार्द पापु वांधउ सु निदउं ।
[553] अतिथिमविभागव्रत विपद सुमित्रा नामं परम ध्राविका, तेह तणी कया लिखियद ।
तथाहि—

एकावयवतोप्येन संविनं श्रद्धयाधियम् ।
सुमित्राया इयौदाय्ये जायते द्वादशं व्रतम् ॥

[८०४]

श्रीवसंतपुर इसद नामि पुर । अतिविक्रमवंतुं इसद नामि अतिविक्रमवंतुं राजा तिरां राज्य
13 करद । तेह तणउ वरु इमिदं नामि मंत्रीव्यव ह्यउं सदा विकसिति जेह तणउ बुद्धिकमलि राज्यलक्ष्मी
सुमित्राहि वर्मा । जिनदासु नामि राजा रहदं अनिवल्लभु श्रेष्ठि ह्यउं । सु पुणं जिणधम्मपुत्राधारेउ कल्याण
तणउं निधानु सकल पीरजन प्रधानु वत्तं । तिणि एनलांके सुवणं रत्न उपाजियां जेहे करी क्षिति माहि
अनेक मंगपवंत अनेक संहणपवंत उपाज्यदं । यक्षराजो नगरी वास्तव्यु धनु नामि छर सार्थवाहू तेह तणी रत्नवती
धनु जिनदासु एतु संत्तोयउ । वागारणी नगरी वास्तव्यु धनु नामि छर सार्थवाहू तेह तणी रत्नवती
20 नामि दीर्कारि कायवती लीलावती निणि परणी । जिनदास रहदं विश्वामपाउ लक्ष्मीधर इसद नामि
मात्रणु जियउ लहुउउ भाउं ह्यद उमउं परममियु ह्यउं । राजेंद अतिविक्रमवंत रहदं निम न मंत्री न
पुत्रु न कल्लु वल्लु जिम जिनदासु वदथु ।

[554] 1. एत जिनदास मित्र रहदं राउ कदाकालि संविमुद्रा पुण अपिसिदं इसी परि वरु
सावित्रेभ्यः सन माहि संभायी करी जिनदास रहदं मारिया विपद मनु करद । जिनदासु पुण इक्ष्मा
25 हवीं चधुमंतीउं हारादिकं लक्षणं करी आपणया ऊपरि विरुद्धउ जाणद । तउ पाछद राजेंद रहदं
मोकक्यारी करी नीर्ययाता व्याजंतारि भायां रत्नवती पीरारि मोकक्यारि । वसुमंतीदि पुण तेह मारावियां
कारण रात्रि तेह तणा घर तणउ माणुं आपणां जणहे कन्हा कंधावित । जिनदासु पुण माणुं बाध
जाणां करी अनि मग्भाव वदुमणु रत्न हे करी लक्ष्मीधर मित्रमत्तियु कर्मकरवेंदु करी पुरं हंतउ
नोमात्त । माणुं अजणतो भयवसाउउ निगंरु ज्ञायतउ हंतउ अरिण्यं माहि पडिउ । तिहां जउ अति
30 धांउ गुवाहंतु ह्यउं तउ यत्नांवल्लवदु मग्भाव रत्नारंररा मित्र लक्ष्मीधर करि आपद । जिमउं
सासत्कारि तेह तणउं अविचिउउ ह्यद निमां स रत्नपरवरा छर ।

[555] तउ पाछद आपणयं किणादि कृषि पार्णी ज्ञायतउ हंतउं रत्न तणउ लोभि तिभि
लक्ष्मीधर निदि सगे धरीउ पाउउ हंतउ कृषि पाउउ । पदतउ हंतउ कउणु इउ ? इहा
बोलावित हंतउ आपणी नियतमा रत्नवती बोलायी करी भणर, " जिमउं

किमी परि पदो! सु ताहदं परिषाद किं गयउ? इहा! भिम् भिम् भिम्! रिउपना रादं! " मा ई
 अरवापतिनु कोनु भंतिधि भंदात्तु देगी करी कृपिवापानुमंकर-भंतीकुं होचनु करद । प्रियतम
 मेगादकरतउ भन्नु आपणउं तिउदं मन ती हुंती भगद. " ए हुं रत्तरनी, ताद्री सुंदरी गिया । तिहा
 हुंती जापनी हुंती अउरी मादि आरी । मम दू मायुं चोरे इदिउ । सु परिअनु मागी करी गयउ । चोरे
 जेवितार माता धीगउंम करिया कारणि मनुगमु कौपउ, तेवीवार हुं भंदि करी धीलक्ष्म कारणि
 आहूनी हुंती वृत्तनुरा मनिअर एद कूर मादि पती । गुह्यार यन्ताको भोकरय कर्मदं करी जीवी ।
 कलउ न मुहद रदं एद कूर मादि किमी परि पानु ह्यउ? तिणि सधिधि पिडोत्यर हुण रदं
 विरोधतउ कोनउं कौपउं !

§556) तिनदासु कउद, " तिणि सधिधि माणोत्सुकि ह्यउ हेर एउं कर्मकरणे एकलउ
 भीमरति । निरेर विदारि हेतु आविउ । वृमिउ हेतउ एद कूर मादि पतिउ । पानी हेतउत पाद-
 10 एवदना चालतउ । निरुल तेद कूर मादि नादिमनाउ जलु ह्यउं, पुष्य प्रमादरतउ । तिनउं
 रीक हुण इणउं सु नीक पी करि ति भे रीद गुण उपगमागी करी अति सुजंतविन्त ह्यो! । अथ
 शान्तरिं मायुं एद आविउ । जीमउं मोदं तणउं पुष्यकुंभु मुष्य निवउ कुंभु रज्जु बांधं करी पानी
 कादिवा कारणि नेद कूर मादि विधिउं मूकउ । सु कुंभु मादं जेवीवार मादिउ तेवीवार तिणि
 पुर्णवि मादि मानुसुं जालीं अर पुकर भागां, भागां करी पादिदि, मिम जममुव हेता कादिदयं निम
 15 कादिनां भे नन । जेवदं नि कृपा हेतुं नांघरियां तेवदर आविलर नाम रहितु छर मायुं सु ' कृपा
 हेतुं मिपुनु नीमरिउं' इमउ कौमददु करद । तेद इधुसउ कौवुकी मायंयादु पुण तिनं आविउ ।
 मतां रतिहा इधिदि देवी करी मन मादि विशमवापनु एवउ । तिनदासु पुन ' सुखउ एउ' इवी
 परि धनमाथंसाह रदं भोदरनी करी चमइहविनु हेतउ प्रमासु करद । ' किमउं एउ' इवी परि स-
 निमस' पिशा' माथंसाह रदं पुठनी इवी तिनदासि आपणउं वृत्तौ मूल र्त्तो मगद कदिउ । तिणि
 20 रत्तरनि भंतिधि ह्यउ हेतउ एवमन तणउं हुदलउं मम दू मलां गयउं । नि मरदं पुठकुटीं मादि सुविदि
 रहियां । अथमन भिनोरि मादं कसं आदित्वि सोमं तणर आभयंकाररि इवर चररि कदियर ह्यउ
 जाले ओहवां कारणि उदयमिम भंभ्या समर दागी आविउ

§557) अथ भंद्रोदय ममर तिनदासु देवविता करिया मनुत्तन वणांनरि' गयउ । तिहा
 इवभीषक मूतउ देगी जौयद, तउ मूयउ देयद । अहाउ सु देगी करी मिश्रवच्छलु सयंभंकु तेह रदं
 25 जाली करी वृत्तियतु ह्यउ? । तेद कन्हा सवभाव' इरकीव' रत्न से करी पानी ओहलां तेह रदं पाद
 जीसादर । तउ शान्तरि सु जीविनु देवी तिनदासु मलिधायतुं विउ ।

उपहृत्युपहृवाभा भियन्ते धरया न के ।
 अथहृत्युपहृवाभा यत्नेन तु भियंते परा ॥

[८०५]

एवभीषक जीवित हेतउ तउ तिनदास रदं देवी करी लज्जानधसुतु ह्यउ? । तउ पाउह
 तिनदासुं तेद आमर कउद, " मिम ! इउं तदं कृपा मादि न पातिउ । किंतु पदरालना लगी हउं अप-
 30 दं कृपा मादि पाटउ? । तउं आणा मन मादि किमीपर लज्ज न करि । किमउं को कुणदी भत्ता' पुठि
 मरी नकर छरं मू रदं अजुना धन सायंयादु मिन्डिउ हउं तेहमउं वाणास्ती नगरी जाइसु तउं इहां

§555) 1 Bh. मारउ । 2 Bh. हा हा । 3 B. omits. 4 B. P. री । 5 P. दुअउ । 6 P. रं
 7 P. omits.

§556) 1 P. इभा । 2 Bh. abls निद । 3 B. वेवार । Bh. also has added - ती - later. 4 Bh.
 मानु । 5 P. adds की । 6 P. omits म- । 7 P. भवा । 8 Bh. ओपुषा ।

§557) 1 B. वजोरि । P. वजोरि । 2 P. adds की । 3 P. दुअउ । 4 B. रत्तमार । Bh. उपमाव
 P. रत्तमार । These transmitted unoriginal readings call for emendation. 5 Bh. omits. 6 Bh.
 इधियादु । 7 P. इगदागु । 8 P. पादिउ । 9 P. मारणी ।



नियारी। अथवा स्त्रीवशगतं निसत्त्व किसउं किसउं' न समाचरई। सुमित्रा पुण तदाकालि इसउ अभिग्रहू मन माहि करई। 'जे मू रहई प्राणमुक्ति हुयइ तो ई भोजनमात्रहीं दानि अकीधई' हउं भोजनु करउं नहीं'। आठ उपयास जउ सुमित्रा रहई ह्या, तउ पाछइ दुय्यदोवावु शकित हूँती जयां तेह नउ वृत्तांत दत्त आगइ कहिउ। तउ पाछइ बंधुवर्ग सहिदु दत्तु सुमित्रा रहई पारणा कारणि महा निर्वंधु करद। तउ सुमित्रा पारणा करिया' कारणि उपवेशित हूँती चित्ति चीतवइ। 'अमोजनविषइ पात्रदानाभाव रूपु काणथु जाणतू' हूँतउ पुत्रु मू रहई दानु दिवारई नहीं। धिगु धिगु' माहरा कर्म विडंबन रहई। जइ किमइ एह आपणा परीसिया भोजन माह कही-एक महकपि रहई अथवा दयापात्र कही-एक रहई संविभागु करावउं तउ माहरउ अभिग्रहू भाजई नहीं। अपि तु श्लाघनीउ ह्यइ। पुत्रु पुण्यवंत अश्लाघ्यु न ह्यई'।

§561) इसउं ध्यायती सुमित्रा रहई जिसउ मूर्तिमंत पुण्यराशि हुयइ इसउ महासुनि एहु 10
गृहगणि आगिहइ गमइ आविउ देखइ। तदाकालि रोमंब कंबुकित गात्र हूँती हणसुविदुवृष्टि नयन हूँती मूकती भाजनु बिहु हाथे ऊपाडी करी सागुह्री जउठी करी' महकपि आगइ भणइ, "भगवन्! महांत अनुग्रहु मू ऊपरि करउ। पात्रु धरउ। प्रासुकैणीउ' आहार विहरिउ।" महासत्तु' प्रासुकैणीउ' जाणी करी विहरइ। तउ तेह तणइ सत्थि करी संतुष्ट हूँती' श्री शासनदेवता गंधावुवृष्टि गृहगणि करी प्रत्यक्ष होई करी कहइ। "धन्ये! मासोपवासी महकपि जु तई पारणउं कराविउ, तेह ताहरा सत्त्व प्रभा- 15
वइतउ संभूत जु' दानधर्यु' तेह तणा महात्म्यइतउ दुर्मिक्ष हेतुकमह उपशांत ह्या।" इसउं गलगर्जित करी देवि' मेहु वरसाविउ। दुर्मिथु प्रवासाविउ। राजा आवी करी महामहोत्सवु करावइ। सकल लोकु सनातिकेराशतपात्र'पाणि दत्तमाता वधावइ। दत्तु जया सहित्तु पाए लागी सुमित्रा रहई समावइ। ति विन्दइ अयानंतर उत्तरोत्तर पर्यु समाचरी करी आपणपउं आयु संपूर्ण भोगवई।

§562) तीहीं' माहा सुमित्रा जीनु महाराज। तउं ह्यउ'। दत्तात्मा जिनदासु ताहरउ मित्रु 20
ह्यउ'। जयात्मा रत्नवती जिनदास तणी सुयतां हुई। दानधर्मनिरोधइतउ ताहरा मित्र रहई लक्ष्मी सांतर हुई'। इसी परि पूर्वभनु सांभली गुरु नमस्करी करी' राजादिक सकललोक भगि गया। धर्मध्यानपर अतिविकमयंत राजेइ जिनदास रत्नवती जीव तिणिई जि भवि संयमु प्रतिपाली केवल-
ज्ञानु ऊपाडी' मोक्षि गया।

पात्रार्थया रचितया रमया सुमित्रा-

श्रद्धया महानरवरोन्द्रिया सहै।

लेभे महोदयरमापि तथा भवाञ्जि-

लभ्येत हन्त भविक्ता भविकाम्यपुण्याः ॥

[८०७]

इति अतिथि संधिभाग व्रतविषय सुमित्रा कथा समाप्ता'।

§563) अथ अब विषय जु रागादि भावि करी दीधउं तेह प्रतिक्रिया कारणि भणइ। 30

सुदिपसु य दुदिपसु य ज मे असंसनएसु अणुकपा।

रागेण व दोसेण व तं निदे तं च गरिहासि ॥

[८०८]

संधिभागव्रत-प्रस्तावइतउ साधु अभाणियाई जाणिवा। तीहं साधु किसं विषइ। इत्याह—

§560) 4 P. omits. 5 Bh. adds हुँतइ। 6 P. omits. 7 P. जणउउ। 8 Bh. वइइ।

§561) 1 P. omits. 2 P. प्रासुकै- 3 B. P. -सुहू। 4 P. adds - उ। 5 Bh. omits. 6 Bh. दानु जु धर्युं। 7 P. देवे। 8 P. - पाणि -।

§562) 1 Bh. कोई। 2. Bh. हुँतउ। P. हुँतउ। 3 P. हुँतउ। 4 Bh. omits. 5 P. उपाडवीं। 6 P. omits.

'सुहितसु' य इत्यादि। सुपु अतिशय करी हितु ज्ञानादि त्रिकु जीहं रहई हुयइ ति सुहित कदि-
यरं। तीहं नर विपरः। तथा 'दुहितसु ये' ति। दुहितेपु रोगि करी तपि करी वा जि क्रांत हुयइ ति
दुक्खित कहियरं। तीहं नर विपर। अथ अमवदाइतउ मार्गि जि विचि हुयइं ति क्रांत दुक्खित कहियरं
तीहं नर विपर। तथा 'असंजणसु'। 'से' कितउ अर्थुं? आपणइ छंदि स्वच्छा करी यत उयत
5 विपारी इमा नहो, कितु गुण तणी आपण करी जि विहरई ति असंयत कहियरं। तीहं नर विपर। मरं
अनुकेरा भक्ति कीर्षी 'रागेण वे' ति-रागि पुत्रादि प्रेम्पि करी न सुद्ध साधु बुद्धि करी। तथा 'दोसेण
वे' ति-दोषि करी द्वेषु ईहां माधुनिदा स्वरुपु जाणियउ। यथा—

'अदृत्तज्ञाना मलायिलदेहा' ज्ञातिजनपरित्यक्ता क्षुधात्ताः सर्वथा निर्गतका अमी अत उपग्रंमार्हा'
इत्येवं निंदापद्ये ज अनुकेरा साधि निंदाहाः। अनुमदीयायुः कर्मवेषहेतुत्वात्।

10 [564] यज्ञगमः— 'तत्प्राकृत्ये समणे वा माहणे वा संजय विरय पट्टिहय पच्चभत्ताय
पायकम्मं हीलित्ता निंदित्ता गरहित्ता' अयमभित्ता अमणुत्थेणं अपीरकारणेणं असणपाणवादासमाहणेणं
पट्टिहात्ता अणुत्थेणं उज्जत्तयाप कम्मं पकरे'।

एद आलापक नउ अर्थु-तथासुपु साधुगुणलुणु अमणु विविध कट्टासुपाननिरुत्तु'। माहणु-ग्रहणयं
महितु। संजयु-निंदिपु। विरतु नानाविध तपविपर 'वि' विरोधि करी रतु विरतु कहियर। मतिह
15 प्रत्याग्याण पायकमां। कितउ अर्थुं। मतिहतु स्थितिहासइतउ संथियेदि करी। हेतु तथा अभायरतउ
पुनरुत्ति भावाभावरतउ प्रत्याग्याणु निराकरिउं पायकमुं चाग्निप्राचागदिदु जिणि सु मतिह
प्रत्याग्याण पायकमां कहिर'। एथ गुणयुक्त महामुनि रहई हीला अथवा स करी 'हीलित्ता' कहियर।
निंदा अदृत्तज्ञाना इत्यादि। तत्र, पूर्वार्थे एते वीषधं नहोतिणि कारणि भिक्षादानु करइं भिक्षाजीविणा।
इति अदृत्तज्ञाना तणउ अर्थुं। 'मलायिलदेहा' इत्यादि सुगमं। नवरं 'सर्वथा निर्गतका' कितउ अर्थुं।
20 सर्वहो मकारे करी इहलोक सुख हेता 'निर्गत' नीमरिया। इहलोकहिं परलोकहिं ईहं रहई सुपु
नहो इतउ अर्थुं। इमी परि परमावि निंदी करी। इमी हो जि परि आपसावि गरिही करी 'गरहित्ता'
तणउ अर्थुं। 'अयमभित्ता'। अयुत्थलादि विनय तणइ अमावि भिक्षाचर मात्र गणना करी जु इदु
सु अयमान पुत्तुं 'अयमभित्ता' कहियर। 'अमणुत्थेणं'। पयुंयित वइच्चणकादि अरस विरमाहारिं।
'अपीरकारणेणं'। गुणराग तणइ अमावि करी असणानिकि करी 'पट्टिहात्ता' विहरापी करी
25 अनुविहराणु अणुमदुकरहेतुकु इति गच्छयउं आयु कमुं ज्ञाना हेतउ 'पकरे' कितउ अर्थुं। बांध।

[565] जिम शीयदी जीवि वुद्धुकु लैयकादिदानि' कां कमुं बांधउं तेह तणउं फलु नरकादिईहं
भवई प्रणु कालु येई करी तउ छेदि तेह तथा अंतउयवदाइतउ ईमांगु येइअं।

[566] अथवा 'सुहितेपु दुक्खितेपु' कितउ अर्थुं। सातमारवादि मारव सहित सुगित चरइ
परिप्राक्कणिकि। अथवा पार्वंस्थानिकि। अगास्तां क दुक्खित। ति कणि? असंयत पदविध जीव
2. निहाय कथइ। असाधु तीहं नर विपर ज मर अनुकेरा अगनादि दानलक्षण भक्ति कीर्षी तथा च
अनुकेरा शरइ रहई भक्तिवाच्यता विपर भिन्नो न माथा।

आपायिप अनुकेरयाए गरछो अनुकेरिरे मशामागो ।

गरच्छनुकेरयाए अणुत्थिनी कया निप्ये ॥

[८०१]

* तणेण वा - माइरा मिय ए', नवगादि संवेरिया ए इमी परि, अथवा एते अणु रहई मर'
1. वि विनं-तप रितु इयंजतु इमी परि। संजय वा - बुद्धिी नर विपर जिम धमे निक्क ए तथा निरे'
ए इमी परि। पार्वंस्थानिकं विपर ।

द्वगपाणं पुष्पफलं अणोसगिजं गिहृथ्य किचचार्य ।

अजया पडिसेवंति य जइ वेसाविडंवागा नयरं ।

इसी परि तीहीं ना दोष देखी करी अप्रीतिभावइतउ जु कीजइ सु कोषेण वा' एह णउ अर्धु ।
तिणि करी जु कोइ अशुभु कर्मु बांधउं 'ते निदे' इत्यादि पूर्ववत् ।

§567) जु पुण उचित दानु सु न निदुं । जिणि कारणि तेह तणउ निषेधु तीर्थकारहीं कीषउ ४
नहीं । तथा च भणितं—

'गिहमागयाणंमुचियं पडिसिद्धं भगवयावि न हे सुत्तं' ।

§568) अथ साधुविपइ जु कीषउं नही तेह पडिकामिया निमित्तु कहइ—

साहुसु संविभागो न कओ तव-चरण-करण जुत्तसु ।

संते फासुयदाणे तं निदे तं च गरिहामि ॥

सुगमा ॥ [८१०] 10

§569) नयरं चरण करण सत्तरी लिखियइ—

वय ५ समपाधम्म १० संजम १७ वेयावच्चं १० च वंभगुत्तीआ ९ ।

नाणाइ तियं ३ तव १२ कोइ निग्गहा ४ इय चरणमेयं ॥

[८११]

प्राणतिपात विरति, मृपावाद विरति, अदत्तादान विरति, मैथुन विरति, परिग्रह विरति, नामक
पांच महाव्रत ५ ।

15

संतीय १ मद्धव २ ज्व ३ मुत्ती ४ तत्र ५ संजमे ६ य बोधव्वे ।

सच्चं ७ सोयं ८ आकिचणं च ९ वंभं च १० जइ धम्मो ॥

[८१२]

इति द्वाविधु यतिधर्मं ।

पञ्चासत्ता द्विरमणं पञ्चेन्द्रियनिग्रहः ।

कपायजयः दण्डत्रयविरतिश्चेति संजमः सप्तदशभेदः ॥

[८१३] 20

इति सप्तदशाभा संयमः ।

आयरिय १ ज्वज्झाए २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेहाणं ६ ।

साहम्मि ७ कुल ८ गण ९ संघसंगयं १० तमिइ कायव्वं ॥

[८१४]

इति द्वाविधु वेयावृत्त्यम् ।

वसाहे १ कह २ निसिज्जि ३ दिय ४ कुट्टितर ५ पुच्चकीलिय ६ ।

पणिए ७ अदमायाहार ८ विभूसणा ९ य नव वंभगुत्तीओ ॥

[८१५]

25

इति ब्रह्मचर्यं युग्मि नवकम् ।

फाले १ विणए २ बहुमाणे ३ ज्वहाणे ४ तहय निन्दवणे ५ ।

वंजण ६ अत्य ७ तट्टुमए ८ अट्टविहो नाणमायारो ॥

[८१६]

इत्यष्टाभा ज्ञानाचारः ।

निसंक्रिय १ निदंक्रिय २ निव्वित्तिगिच्छा ३ अमूहाद्विटी ४ य ।

ज्ववूह ५ थिरीकरणे ६ वच्छल्ल ७ पमावणे ८ अट्टा ॥

[८१७]

30

इत्यष्टाभा दर्शनाचारः ।

§566) 2 Bh. तेहं ।

§569) 1 B. Bh. have - य - ।

पणिश्राण जोगजुचो पंचहिं समिर्हिं तीहिं गुचीहिं ।

एस चरित्तापारो अद्रुविहो होइ नापच्यो ॥

[८१८]

इत्यष्टया चारित्र्याचारः ।

इसी परि ज्ञान वर्दान चारित्र्यं रहर्हं अष्टभेदता हुंतीहिं ईहो 'नाणाइ तिय' इत्ता भणनरतउ

५ त्रिन्हइ जि भेद लीजई ।

अणसण १ मूणोपरिया २ विचीसंखेवणं ३ रसगाओ ४ ।

कायकिलेसो ५ संलीणया ६ य वज्झो तवो भणियो ॥

[८१९]

इति षोढा बाह्य तपः ।

पावच्छिउं १ विणओ २ वेयाववं ३ त्हेव सज्झाओ ४ ॥

10 ज्ञाणं ५ जससमां वि ६ य अट्ठितरओ तवो होइ ॥

[८२०]

'कोहनिग्गहा' इति बहुवचनरतउ क्रोध मान माया लोभ रूप चत्तरि' कपाय तीहं तणा निग्गह ४ लीजई । 'इय चरणमेयं' इत्ता भणनरतउ सवही नइ मीलनि कपिअ हुंतर सत्तरि भेद चरण तणा हुयई । इसउ अर्थु ।

इति चरण सत्तरी भेदा ।

15 §570) अथ करण सत्तरी लिखियइ ।

पिंइविसोही ४ समिई ५ भावण १२ पडिमा १२ य इंदिय निरोहो ५ ।

पडिलेहण २५ गुचीओ ३ अभिग्गहा ४ चेच करणं तु ॥

[८२१]

एह नउ अर्थु यति संबंधिया छई उत्तर गुण तीहं नइ प्रस्तात्रि लिखिउ छइ तिहो हुंतउ जाणिघउ । नवरं 'इंदियनिरोहु' पांच इंदिय नउ विजउ । सर्व मीलनि करणसत्तरी करण तणा सत्तरि भेद 20 हुयई इसउ अर्थु ।

अत्र तपु चरणसत्तरी माहि आविउ छई पुण वली 'तवचरणकरण जुत्तेसु' ईहां तपग्रहण निकाचित अयस्यवेच जि हुयई कर्म तीहीं तणउ क्षउ तपि करी हुयइ । इसी परि कर्मक्षर प्रति तप रहर्हं प्रधानता जाणाविवा' निमित्तु । तथा च आगम —

पुंवि दुविघ्णानं दुष्पडिक्कंताणं वेइत्ता सुखो ।

25 नत्थि अवेइत्ता तवसा ना शोसइत्ता ॥

[८२२]

§571) अथ संखेखनातिचार परिहार रहर्हं करिअ वांछतउ हुंतउ भणइ ॥

इहलोए परलोए नीविय मरणे य आसंस पओगे ।

पंचविहो अईपारो मा मज्झं हुज्ज मरणंति ॥

[८२३]

अत्र आशंसा प्रयोग इसउं सर्वत्रहीं जोडिवउं । यथा इहलोकाशंसा प्रयोगु । माणुस रहर्हं मनुष्य- 30 लोक्क इहलोक्क तेह तणी आशंसा 'चकवतिं हउं एह अतसन तणइ प्रभावि होइजिउं' इसी परि १ । वैयल्लोक्क तेह तणी परलोकाशंसा । यथा । 'वैयु हउं होइजिउं' इसी परि २ । जीवित्तय तणी आशंसा 'जउ हउं घणउं जीवउं तउ मू रहर्हं घणी प्रभावना हुयई घणी पूजा हुयइ महिमाविख्याति हुयइ' । इसी परि । मरणशंसा 'मरं अणसणु लीघउं मू रहर्हं महिमाविकु काई नई' तिणि कारणि हिय रहिलउ जउ मरउं तउ रुढउं' इसी परि मरणाशंसा ॥ अथवा अनैरा रहर्हं रुढी महिमा अणसण समइ बेत्ती करी 35 महिमा निमित्तु अणसणु लीजइ ए पुण मरणाशंसा ४ ।

§569) 2 B. drops words between चत्तर ... भेद ।

§570) 1 Bh. जणाविवा ।

§571) 1 Bh. omite.

भितरणप्रभाचार्यकृत

वकाररतउ कामभोगादांसा । तत्र शब्दरूप काम कदियई । मेष रण स्वर्दां भोग कदियई । यथा ।
 'एह तत्र तजइ मभावि मू रहई परलर' भवि काम भोग मनोवाञ्छित होइजिउं ।' इत्तीं परि एउ पंचविधु ५
 अतिचार मू रहई मरणते आं बरसु कसासु तेतीही पार म होइजिउं ५ ॥

§572) तत्र इह लोकोदंगा विषय चित्त तणउ भारं संभूत मातंगकवि हउंउतु । परलोकादांसा
 विषय अनामिका हउंउतु लालितांग देवदानीनानुरागि जिणि नियाणउं देवी भाव विषय कीपउं । कामभोगा-
 दंगा विषय मीदिचेन कथा ।

§573) अविनासांग' मरणदांसा' विषय धर्मपेल धर्मपसा इता नामहं करी प्रसिद्ध छई मह-
 कवि तीहं तनी कथा लिखियर ॥

तीहं जि मरतसेत्र मादि कांसावी नामि नगरी दुंभी । तिहां अजितसेनु नामि राजा । धारिणी
 नामि राजी । अनेर परांमि बहुभूत गुणविभूत धर्मउतु इमई नामि आचार्य संजमगुण समाहित तिणि
 नगरी वृद्धावागि रहिया । तीहं तणा वि गिण्य एक धर्मपेयु बीजउ धर्मययु । बिनु तीहं महामत्तई 10
 मलेगना करिया' आरंभी । तिहां विगतभया इसर नामि यथायंताम' प्रवासिनी' हुंसी । तिणि संयु
 पृथी करी अजमगु हीपउं । वमकारकारिणी' तेह रहई प्रभावना मंधि करावी । तिणि देवलोकि
 गई हुंती पुनरपि तेह तणा कलेयर रहई सज्जनानंदकारिणी' पूजा पौरजनहं करावी । सु पूजाहंवर 15
 बेगी करी धर्मपेयु कवि मन मादि बीतयइ, 'धन्य धन्य ए प्रवासिनी । जोह जीवतीही मृतही रहई इत्ती
 प्रभावना हुई । एह पुरी मादि रिमा हउं पुण' हउंसा' अजमगु करउं तउ मू रहई पुण इत्ती प्रभावना
 गुर' । इसउं बीतयी करी धर्मपेयि अजमगु हीपउं ।

§574) बीजउ धर्मपसा मुनि ध्यानय 'लोकि जाणाविर' कितउं छइ ! हउं आपदे एकति 20
 जाई सापना करउं ॥ तथाच भजितं—

कि परणण बहु नागावइ वरमप्यसखियं मुकयं ।
 इह मरहचरुद्वी पसमपंदो य दिइंता ।

[८२४]

इसउं बीतयी करी पुण नी अनुमति ले करी उज्जयिनी अनर यच्छगा नदी अंतरालि गिरिकंरि
 जाई करी पादभोगमनि अनजनि रहिउ । जिम भिनु निर्माहु हुयइ तिम धारं एकाकी मुखियरधिसु
 हउउं । एतलर मरातापि उज्जयिनी नगरीमिदनु चंड प्रयोतमंडनु धारिणी-मुक्षिसंमयु पालकु इसर नामि
 अवतिपालकु हउउ । तेह नउ लघुउउ भारं गोपाल इसर नामि सुवराजा । लघुकम भावप्रतउ सु सुगु
 पादभूलि बीक्षामहयु करई । पालकु तणा अर्थतियइंन राष्ट्रवर्द्धन इसां नामहं करी विद्यात पि पुत्र हया' 23
 ति पुत्र रजिय अनर चौवराजिय थापी करी पालकि पुण बीक्षा लीपी । धारिणी नामि राष्ट्रवर्द्धन तनी
 भायां, रुवि करी जिमी काममायां हउयइ तिषी, हुई । अर्थतिसेनु इमइ नामि तेह तणउ पुनु हयउ' २५

§575) अनेर जिनि उद्यानयनि फाटा करितीं धारिणी अर्थतियइंनि ज्येष्ठि तिज नैत्रकोमुद्री
 ममनरुप हींडी । तउ पाछर सकामु थिकउ' दृतिकमुति प्राथिया लागउ । धारिणी मणिउं, " महाराज !
 जे आपनी लाज नहीं तउ किमउं भारं तनी लाज पुण' नहीं ! " तउ पाछर अर्थतियइंनि कामातुरि हउइर 30
 अरणउ भारं राष्ट्रवर्द्धनु कइ करी मारिउ । श्रयवा कामी कितउं कितउं न करई ।

§571) 2 Note the solitary example where B. and Bb. both drop the-h - and write
 परह् for पहिह् । 3 Bb. omits.

§573) 1 P. संगा । 2 P. adds जिमिगु । 3 P.-नामि । 4. P. प्रमंभी । 5 P. वमकारक- । 6. P.
 संजना- । 7. Bb. omits. 8 Bb. दिवडी ।

§574) 1 Bb. जाणाविर । P. जाणाविर । 2 P. हउसा । 3. Bb. नामहं । 4 P. हया ।

§575) 1. Bb. करी । 2. P. वरउ । 3. Bb. p. omit,

सन्मार्गे तावदाप्ते प्रभवति पुरुषस्त्वावदेन्द्रियाणां
 लज्जां तावदियत्ते विनयपरि ममानन्ते तावदेव ।
 धूचायाद्दृष्टमुक्ताः श्रवणायधनुषो नोत्पिपास्याय एते
 यावद्दीप्यावतीनां न हृदि भ्रूतिमुषो दष्टिगणाः पान्ति ॥

[४२५]

- 5 तदाकाले धारिणी गर्भधारिणी आमस्रमगर हन्ती निज दीप्यन्त न गर्भे रशतकालिणि रात्रेर्द्वे
 नाममुद्रा महति हृत्ता नाम्नी करी मेनी" जि गार" मेमि करी कीर्तांती नमदी मं । रात्र नती यान्त
 माहि रही हृत्ता महामनी तीहं कन्दर दीशा लीधी । कीशाकिपन हारणि गर्भुं कलिज नती । पाण्ड प्रसिद्धे
 गर्भेन ज्ञानियह" हंतह प्रच्छन्नवृत्ति स रहानी" ।
- 576) प्रस्तावि जिम मेरुभूमि कल्पतरु प्रमथ निम निजि पुत्र जायत । राधनी र्दं पुत्र अर्पु
 10 ज्ञानी करी जिम कोहं जाणह नही जिम राजशुलीगणि नाम मुद्रांतिपु पुत्र निजि मेरुः । प्रमत्त म्ना
 अजिनमेनु राजा जिमउ मणिपुंनु दुयह इत्तउ स यालकु कानिमेनु वै" णि करी, आयुष छह आरणी राणी" ते
 र्दहं हंतिउ विकउ" पुत्रु करी आपर । पूदगाम्नां राणी हृती इमी पति प्रकाशी" करी पुत्राज्जम मनीन्पु
 अजिनमेनु" राजेद्रु करायर । मणिप्रभु इत्तउ" यथार्थु नामु करउ । प्रसिद्धी पुत्री हृती धारिणी म्ना
 " श्रुत पुत्रु जायउ सु दिव्यदाहं जि लांसी करी हउं आवी । "
- 16 577) अथ पुत्रमेव भावहतउ राणी सउं धारिणीं प्राति करहं । अजिनमेनि दिवंगति हंत
 मणिप्रभु राजा ह्यउ" । सु अवंतियहंतु, अनुज राप्द्रवहंतु र्दहं, धारिणी तणह कारणि मारी करी
 राप्द्रवहंतु पुत्रराजेंद्र अनरं धारिणी विहं हंतउ भ्रमु ह्यउ" हंतउ अति वैराय्य भावहतउ भारं नउ पुत्रु
 अवंतिमेनु रात्रिय चहसाली करी कीर्तांती लियर । अनेरह दिनि अवंतिमेनि उज्जयिनी नायक कीर्तांती
 नायकु मणिप्रभु दूतमुलि भणाविउ", " मू र्दहं कमागतु वंनु वे करी सुविहंदि निर्भय विकउ रात्रु
 20 भोगिय । " तउ पाछर" मणिप्रभु भणावर, " सच्यानु ताहरउं रात्रु हउं लेसु " इत्तउं भणी करी तिजि
 पूषु पाछउ मोकलिउ । तउ पाछर" दूतमुपराइतउ सु अवंतिसेनु राजेंद्रु सान्मली करी जिम कलकलतं
 पूषु जलविदुपाति ह्वाल मेल्हद तिम कोपि करी प्रज्जलतउ हंतउ सर्वाभिमार" मणिप्रभु ऊपरि कटकी
 करह । त्यरितागति" आयी कीर्तांती नगरी विध्वंसवुद्धि हंतउ स विहं गमा वेनु" घाती रहिउ । मणिप्रभु
 पुण संघामराज सुभटवज्ज करी परसुभट तुणसमान मननउ" हंतउ कोट्ट मादि प्रगुण थारं रहिउ ।
 25 तदाकालि नगरलोकु परकटक भयातुह ह्यउ" । निवातोःस्वातेयिता करी व्याहलु ह्यउ" । विहारीचचार
 भूमि र्दहं संकीर्णता भावहतउ यतिलोकु असमाहितु ह्यउ" । पदि पदि संघम विरावना अतन्निद्रपम्ना
 च" होइया लागी । तउ पाछर जिजि धर्मघोषि" मुनि अणमणु" कीर्धउं हंतउं तेह र्दहं सुपतव सुख-संघम
 पार्त्तं र्दहं पूछणदास को ह्यउ" नही" । जीयितासोदी" सु धर्मघोषु मुनि पूजा प्रभावना तणा अभावहतउ
 आर्त्तध्यान वत्तमानु हंतउ म्यउ" । जिम पावाणु लीखियर तिम कोट ऊपरवाइ" ऊलाली करी
 30 लांविउ ।

575) 4 B. लज्जा । 5 B.—सुषो । G. P. omits. 7 Bh.—सुषो । P. सुषे । 8. P. सन्नु-न । 9. P. राप्द्रवहंतु । 10. P. omits नाम- । 11 B. omits. 12 Bh. P. न । 13 B. adds—य-लतर- । 14 Bh. राधनी ।

576) 1 Bh. को । 2 P. धारणी । 3 P. वरुउ । 4 P. प्रसाति । 5 P. अजिनु । 6 B. Bh. add. नाम ।

577) 1 P. ह्यउ । 2 P. omits दी- । 3 P. omits following three sentences, 4 B. drops words between तउ पाछर...तउ पाछर । 5 Bh.—मारि । 6 P.—गन । 7 B. P. add करी । 8 B. P. सयान इत्त मन्तउ । B. has afterwards tried to change—उ of हंतउ to—अ and thus confused " " गमान्द श्रवणकउ । The whole passage from विहं गमा...अणमणु कीर्धउं हंतउं in Bh. 9 P. omits. 10. Bh. P.—घोष । 11. Bh. अणमणु । 12. P. ऊपरि—

श्रीतरुणप्रभाचार्यकृत

§578-80). ८२६-८२७]

§578) अथ धारिणी मणिप्रभं वृत्तांतं मूललगी कही करी प्रवर्तिनी रहई वीनवद, "य सलोदर भारं वै अज्ञानभायदत राजकारणि विटई छई। जुउं तुम्हे भणउ तउ हउं वारउं। तउ पाछइ प्रवर्तिनी अनुनात हूँती धारिणी साधवी मणिप्रभ आगइ सवई स्वरूप कही करी भणइ। "तू रहई वडा भारं सउं युद्ध करिया न युद्धियई।" इसी परि भणिउ हूँतउ अभिमान लगी जउ नियसई नहीं तउ पाछइ धारिणी अवतितेन कहइ दीमू गई। अवतितेनि प्रणमी करी पूछी हूँती। सगइ वृत्तांत कहइ। "वच्छ! 6 आपणा अनुज लहुडा भारं सउं किसउं झुउु!" तउ पाछइ संगामु संखु मुंकी करी मणिप्रभ मिलिया निमिनु अवतितेनु सखेनु हूँतउ चालिउ। मणिप्रभु पुण अवतितेनु मिलिया आवतउं सांमली करी साम्हउं आविउ। जेतीवार दृष्टिमेलावउ हयउं तेतीवार वै वाहन हूँतां जतरौ करी आपणया माहि दिया माहि निम पदखणहार हुयई तिम सार्प आविया। महाभवेदाक महोत्सवपूरु नगरी माहि आविया। 10 केतलाई दिवस प्रेमानुबंध बरा हूँता तिरां रही करी अवती ऊपरि चालियां।

§579) तीहं समाभ्रित हूँती व्रतिनी पुण सरसी चाली। मार्गि जायतां हूँतां वच्छगा नदी नर तटि कटक बसियां। तिम महासती गिरिकंदर हूँतउ उतरतउ चडतउ लोकु अस्तोकु देसी पूछई। लोकमुहुरतउ धर्मयशामुनि तिलां पादपोषामानि अनसनि वरसमानु सांमलइ। तेहे राजेंद्रह आगइ कहिउं। तउ पाछइ राजेंद्र सहित हूँती व्रतिनी गिरिकंदरि पहुली। मुनि नमस्करिउ। महिमा महांत करावी राजेंद्र चालणहार हूँतां व्रतिनी पुण सरसी तेहई। व्रतिनी भणई, "अम्हे अनसनी मुनि मुकीं 15 करी नहीं आवउं।" तउ पाछइ राजेंद्र पुण रहिया। नितु नितु महात्मा रहई वांइइ, पूजई। रास, भास, गीत, नाच, नाद, पूजा करावई। महासती आरुपनाइपूरु पाणु करावई। पंचपरमेष्ठि महामंयु समरावई। इसी परि धर्मयशो महकवि रहई निवृहइति भाविहि हेतइ धर्मानुगावि शून्यहि स्थानि महिमा हयउ। समाधि सहितु स महाभागु स्वर्गेहउ माजनु हयउ।" जिणि धर्मयोपि महकवि पूजा तणी सृहा कौपी तेह रहई अपभ्रजना हुई। 20

छिन्नोर्ध्वरूपातवत्रिनवपुः कृत्वा मनोप्यसूई
येनैवं मुनिपुङ्गवेन विदधे प्रायो व्रतं निस्तुपम् ।
शून्येभून्महिमास्य धर्मयशसोऽन्ययाऽन्यत्र तु
शुच्येति त्रियतां तदित्यममुमानुचोर्पति लभ्यताम् ॥

[८२६]

इति जीवितमरणान्शान्दा ११ विषय धर्मयश कथा, अन्यवयिपद व्यतिरेकविषय १३ धर्मयोपकथा २५
§580) सगलौ ई अतीचाक योगत्रय हूँतउ हुयइ इनि कारणि योग उदिहनी योग ई जि करी पठिकमतउ भणइ—

पाएण काइपससा पडिवमे वाइयस वायाप ।
मपासा मापासिपससं सव्वसस नपाइयारसस ॥

[८२७]

वधबंधपादिकारकि कायि करी कीधउ व्रतातीचाक कोइकु वधं बंधादिकु अतीचार तेह रहई 30 काइहि जि तयः कायित्सगादि अनुष्ठानकारकि करी 'प्रतिकामेव' किसउ अयु? नियसिजिउ इसी परि। 'वाएण' वचनि करी यथा 'चोक तउं' परदारामनी तउं इसी परि सहसाम्यात्प्यान दानादिकरुप छइ याणी तिणि करी कीधउ जु सु वाचिकु तेह रहई याइहि जि करी यथा मिच्छामिदुकडदानलक्षण छइ याणी तिणिहि जि करी 'प्रतिकामेव' नियसिजिउ ।

§578) 1 P. मुनि- 2 P. वेइई। 3 P. जउ। 4 Bb. adds धारिणी। 5 P. बावता। 6 P. वाइइउं। 7 P. हउउ। 8 P. कलारी।

§579) 1 P. omits. 2 P. omits. 3 Bb. राजेंद्र। 4 B. Bb. गरि-। 5 Bb. P. मुंकी। 6 Bb. omits. 7. Bb. -वृत्। 8 P. महा-। 9 P. स्थान। 10 P. हउउ। 11 P. -किनि (1)। 12 P.-संका। 13 P. omits.

§580) 1 B. Bb. have-स्सा। 2 B. Bb. वंय ।

6 B. Bb. H. मू
7 P. Bb. H. मू
8 P. Bb. H. मू
9 P. Bb. H. मू
10 P. Bb. H. मू
11 P. Bb. H. मू
12 P. Bb. H. मू
13 P. Bb. H. मू

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषमत्तावदेवेन्द्रियाणां
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालंघ्यते तावदेव ।
भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथजुषां नीलपद्ममाण एते
यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुपो दृष्टियाणाः पतन्ति ॥

[८२५]

5 तदाकाले धारिणी गर्भधारिणी^१ आसन्नप्रसव हृती निज शीलरत्न सर्वस्य रक्षाकारिणी राष्ट्रवर्द्धनं नाममुद्रा^{१०} सहित हृती नासी करी तेती^{११} जि वार^{१२} वेगि करी कौशांवी नगरी गई । राय तणी यानमाला माहि रही हृती महासती तीहं कन्हइ दीक्षा लीधी । दीक्षाविघ्न कारण गर्भुं कहिउ नहीं । पाछइ प्रवर्त्तिनी गर्भम जाणियइ^{१३} हंतइ प्रच्छन्नवृत्ति स रहावी^{१४} ।

§576) प्रस्तावि जिम मेरुभूमि कल्पतरु प्रसवइ तिम तिणि पुत्र जाइउ । साध्वी रहइं पुत्र अनर्थ

10 जाणी करी जिम कोइ^१ जाणइ नहीं तिम राजगृहांगणि नाम मुद्रांकित पुत्रु तिणि मेलिउ । प्रभात समइ अजितसेनु राजा जिसउ मणिपुंजु हुयइ इसउ स बालकु कांतिमंतु देखी करी, अपुत्र छइ आयणी राणी^{१०} तेह रहइं हारिंतु थिकउ^{११} पुत्रु करी आपइ । शूद्रगर्भा^{१२} राणी हृती इसी परि प्रकाशी^{१३} करी पुत्राजन्म महोत्सवु अजितसेनु^{१४} राजेंद्रु करावइ । मणिप्रभु इसउं^{१५} यथार्थु नामु करइ । प्रवर्त्तिनी पूछी हृती धारिणी भगइ, “ मृत पुत्रु जाइउ सु दिवटाइं जि लांखी करी हउं आवी । ”

15 §577) अथ पुत्रप्रेम भावइतउ राणी सउं धारिणी प्रीति करइ । अजितसेनि द्विवंगति हंतइ मणिप्रभु राजा हुयउ^१ । सु अवंतिवर्द्धनु, अनुज राष्ट्रवर्द्धनु रहइं, धारिणी तणइ कारणि मारी करी राष्ट्रवर्द्धनु पुवराजेंद्र अनइं धारिणी विहुं हंतउ भद्रु हुयउ^१ हंतउ अति वैराग्य भावइतउ भाई नउ पुत्र अवंतिसेनु राज्य बहसाली करी दीक्षा^१ लियइ । अनेरइ दिनि अवंतिसेनि उज्जयिनी नायक कौशांवी नायकु मणिप्रभु दूतमुखि भणाविउं, “ मू रहइं क्रमागतु दंडु दे करी सुखिहें निर्भय थिकउ राज्य

20 भोगवि । ” तउ पाछइ^१ मणिप्रभु भणावइ, “ सव्याजु ताहरउं राज्यु हउं लेसु ” इसउं भणी करी तिणि दूत पाछउ मोकलिउ । तउ पाछइ^१ दूतमुखइतउ सु अवंतिसेनु राजेंद्रु सांभली करी जिम कलकलतउं पूत जलविंदुपाति झाल मेलइइ तिम कोपि करी प्रज्जलतउ हंतउ सर्वाभिसार^१ मणिप्रभ ऊपरि कटकी करइ । त्वरितगति^१ आवी कौशांवी नगरी विध्वंसयुद्धि हंतउ स विहुं गमा येहु^१ घाती रहिउ । मणिप्रभु पुण संग्रामसज्ज सुभटयज्ज करी परसुभट वृणसमान मनतउ^१ हंतउ कोट्ट माहि प्रगुण थारं रहिउ ।

25 तदाकालि नगरलोकु परकटक भयातुइ हुयउ^१ । निखातोत्खातयिता करी ध्याकुलु हुयउ । विहारोत्तवार भूमि रहइं संकीर्णता भावइतउ यतिलोकु अरामाहिउ हुयउ । पदि पदि संयम विरायणा आत्मविराधना च^१ होइया लागी । तउ पाछइ जिणि धर्मघोषि^{१०} मुनि अणसणु^{११} कीपउं हंतउं तेह रहइं सुखतप सुख-संयम पार्चा रहइं पूठणहाइ को हुयउ^{१२} नहीं । जीविताशंशी^{१३} सु धर्मघोषु मुनि पूजा प्रभावयना तणा अभावइतउ आत्तध्यानि वर्त्तमानु हंतउ मूयउ^{१४} । जिम पावाणु लांखियइ तिम कोट ऊपरवाइइ^{१५} ऊलाली करी

30 लांखिउ ।

§375) 4 B. लभा । 5 Bh.-युगे । 6 P. omits. 7 Bh.-युगे । P. मुने । 8. P. मनुं- । 9. P. राष्ट्रवर्द्धेमानु । 10 P. omits नाम- । 11 B. omits. 12 Bh. P. ५ । 13 B. adds-य-later. 14 Bh. रहवी ।

§576) 1 Bh. खे । 2 P. पारणे । 3 P. बहउ । 4 P. प्रकाशि । 5 P. अजिउ- । 6 B. Bh. add. नागु ।
§577) 1 P. इभउ । 2 P. omits दी- । 3 P. omits following three sentences. 4 B. drops words between तउ पाछइ...तउ पाछइ । 5 Bh.-गारि । 6 P.-मन । 7 B. P. add करी । 8 B. P. ममान इतउ मनतउ । B. has afterwards tried to change-उ of इतउ to-अ and thus on fusel. Bh. गमाइद अवमनतउ । The whole passage from विहुं गमा...अणसणु बीचउं इतउ is added in the margin in Bh. 9 P. omits. 10. Bh. P.-घोष । 11. Bh. अणसणु । 12. P. इउ । 13.-शंकी । 14. P. मूयउ । 15. P. ऊपरि-

[588-89] ८२९]

सम्यग्दृष्टिं श्रावयति तु अस्तु पापु कर्मुं बांधवें सु प्रतिक्रमणि छ द्विहावययकि करी सहितु स
 प्रतिक्रमणु ॥ तथा 'हा इददु कयं हा इददु चितियं अणुमयं पि हा इददु' इत्यादिकु पाप ममाचरणानंतक
 तु अनुतापु परितापु कदियर तिणि करी सहितु स परिवायं सपरितापु कदियर । तथा गुरुपात्रिय प्रापश्चित्त
 समाचरण । लक्षण छ उत्तरणुणु तिणि करी सहितु स उत्तरणुणु इतंतं सु श्रावयु 'सिपं' किसं
 अर्थु ! शीमु विहलं उपसमायद । एह अर्थे विपर उदाहरणु कदर—
 'वाहिव्य सुसिक्खिओ विज्जो' जिम सुनिक्षितु वैयु द्याधि उपसमायद तिम सुविहिं श्रायकु
 पापु उपशमायद । 'तं पि हु' इहां 'हु' शब्दु एव शब्दु तणर अर्थि छर । निज्जतापु पापु करर' हीं जि
 हसं अर्थु ।

588) इहां जि अर्थु विपर धीजउ दृष्टांत कदर—
 जहा विसं कुट्टुगयं मंतपूलविसारया ।
 विज्जा ण्णंति मंतेहिं तो तं हवइ निव्विसं ॥ ति'

[८२९]

जिम मंत्रमूल विशारद वैच मंत्रहं करी विसु कोप्रगतु शरीरगतु एणर । 'तो तं हवइ निव्विसं' ति ।
 'तो' तउ पाछर 'तं' सु विसु 'हवइ' हुयर किं' हुयर ? 'निव्विसं' अमृतरूपं । अयममिवायः । जेह पात्र
 रहइं विपु कोप्रगतु काय संक्रांत हयंउं हुयर सु पात्रु विपवेदना मूर्छितु इतंतं तीहं मंत्राक्षर नउ अर्थु
 जवपिहिं जाणर नहीं तथापिहिं 'अचित्तो मणिमंत्रोपपीनां प्रमाय' इणि कारणि अक्षरमात्र अवगिहिं 15
 विपमूर्च्छालहरीभंग लक्षणु गुणु तेह रहइं संपजद ।

589) एह अर्थे विपर डोकरी एक नउं उदाहरणु कदियर । तथाहि—
 मामि पकि अतिदरिद्रता करी इक्खित' डोकरी एक इती । हंसउं हसइं नामि तेह
 नर इकिरउ एकु इतउ । सु आजिविका कारणि धामलोक तणां वाछु करारतु' । अनेहर दिनि संध्यासमर
 उद्यान वन इतउ वाछु ले आयतउ इतउ सु सपिं दत्तिउ । मूच्छं आवी । तिहां ईं जि विपवेगसंगतु 20
 इतउ देठउ दत्तिउ । जिम काण्डु निरोधु हुयर तिम' धारं' महीपीति पठिउ । किणिहिं पकि धाम माहि
 आवी करी डोकरी आगर कदिं । "साहरउ इकिरउ सर्वि दत्तिउ । वाहिउ अचेतनु' धारं पठिउ छर" ।
 तउ पाछर स' डोकरी तेतीहां जि वार मंत्र तंत्र यंत्र पठित मेलो करी रोयती इती इकिरा कदर आवी ।
 मांत्रिक' तांत्रिकादिक सु बालकु मृतकु हसं जाणी करी जिम गया इता तिमहीं जि पाछा आयिया ।
 डोकरी पुण स एकली य जि शोकरीकु संकीलितवित्त इती तिहां रही । पुत्र तणर कर्णमूलि होइ करी जिम 25
 विगंगा राहुं पुण रुदनु आवर तिम करुणाल्यरि उच्येस्वरि "हा पुत्र ! हंस ! हंस !" इसी परि अभांत स्वांत
 बोलायती इती किणिहिं पकि महा संतपितांग इती सकल रात्रि अतिक्रमायद । "सुनयच्छ हंस ! हंस !
 ऊठि " इसी परि पुत्र आगर मणती तेह डोकरी रहइं जिम पकि" गमर पुंदिमिमुल रोमायतं सु हंस
 सहस्रकुक ऊमिउ, तिम तेह नउ पुत्रु धीजर गमर हंस पुण ऊठिउ । तउ पाछर कमलवण जिम तिणि
 समर विदसइं तिम तेह डोकरी तणां नयण पुण विहसिया । सु बालकु जीविउ हसं सोमली करी माय 30
 लोकु समलो धारं तिहां आविउ । प्रमात' समर मांत्रिक' तांत्रिकादिक पुण' तिहां आविया । मन मादि
 आभायुं हंस । "इता तेह डोकरी आगर इतंउं कदं" "तं एह रहइं किं" कीपउं ?" वृद्धा मणर, "मरं
 ती परि एह नर कर्णमूलि" जरती रोयती" थिकी रात्रि नीगमी ।" गाकदमंत्र मादि "हंस
 एह छर, तीहां नर प्रमात' इतंउं गाकदिके जाणंउं । तउ पाछर जिम तिणि"
 अजाणमीती पुत्र अ

ति ।

विमं

1) 3 B. P. चारत । 4 P. निवि । 5 P. चार । 6 P. संपेत्ता । 7 P.
 10 P. एक । 11 P. प्रमात । 12 P. नादिका । 13 P. puts it after ति ।
 16 P. repeats. 17 B. omits.

b. B. omits.

इह भरहे फेइ जिया मिच्छदिट्ठीइ भइया भव्या ।

जे मरिऊणं नवमे वरिसे होहिंति केवलिणो ॥

[८३५]

इसी परि जि कृष्णतर कृष्णतम मिध्यात्वकर्म प्रकृति छइं तीहं तणी अपेक्षा जि जि शुद्ध शुद्धतर शुद्धतम मिध्यात्व कर्मप्रकृति छइं तीहं वर्त्तमान जि छइं जीव तीहं रहइं ज्ञानादिगुण शुद्धि प्रकृति अशुद्धि अपकर्षु ' स्यान् ' शब्द तणउ अर्थ सुलभु छइ ।

§585) तत्र मिध्यात्व गुणस्थानु १, सास्वादन गुणस्थानु २, मिश्रगुणस्थानु ३, अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानु ४, देशविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थानु ५, प्रमत्तसंयत गुणस्थानु ६, अप्रमत्त संयत-गुणस्थानु ७, निवृत्त वादरगुणस्थानु एह रहइं अपूर्वकरणु इसउं वीजउं नामु पुण कहियइ अपूर्वकरणु, गुणस्थानु ८, अनिवृत्त वादरगुणस्थानु ९, सूक्ष्म संपराय गुणस्थानु १०, उपशांत मोह गुणस्थानु ११, क्षीणमोह-गुणस्थानु १२, संयोगिकेवलि गुणस्थानु १३, अयोगिकेवलि गुणस्थानु १४, इति चतुर्दश गुणस्थानक नाम जाणियां । ईहं तणउं स्वरुपु सविस्तरु कर्मग्रंथहं हंतउं जाणिवउं ।

§586) अथ प्रकृतं जु कहियइ । मिध्यादृष्टि गुणस्थान तणी अपेक्षा करी सास्वादन गुणस्थानि थोडउ कर्मबंधु सास्वादन गुणस्थान तणी अपेक्षा करी मिश्रगुणस्थानि स्तोकु कर्मबंधु । मिश्रगुणस्थान तणी अपेक्षा करी अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानि अल्पु^१ कर्मबंधु । अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तणी अपेक्षा करी देशविरति सम्यग्दृष्टि गुणस्थानि स्वल्पु कर्मबंधु हुयइ । सु पुण थोडउ कर्मबंधु अनुभु शुभु पुण पूर्व पूर्व गुणस्थान कन्हइ । सूक्ष्म संपराय गुणस्थान सोम घणउ घणउ हुयइ । जां सरागसंयमु अराग-संयमु गुणस्थानि वर्त्तमानु शुभाशुभकर्म सयहीं तणउ क्षउ करइ, बंधु एक सातवेदनीय कर्म तणउ करं । अनइ तपायइ पुण सातवेदनीय कर्मु तिणि कारणि कहिउं सम्यग्दृष्टि रहइं अल्पु कर्मु बंधु हुयइ । तथा च भणितं-

नाणं पइइ नाणं गुणइ नाणेण कुणइ किचाइं ।

नाणी नवं न बंधइ नाणाविणीओ इवे तम्हा ॥

[८३६]

अथ को एकु इसउं कहइ, जिम नीचा हंतउ पढिउ थोडउं इहवियइ प्रायिहिं । ऊंचा हंतउ पढिउ पुण^२ घणउं इहवियइ । तिम अजाणु पापु करतउ थोडउं कर्मु बांधइ सु जाणु घणउं कर्मु बांधइ । पाछइ मिध्यादृष्टि सास्वादन मिश्रगुणस्थान नी अपेक्षा करी सम्यग्दृष्टि गुणस्थानि अल्प कर्मु बंधु किम^३ घटइ ! हाथल ज्ञानशुद्धि भायरतउ तेह रहइं पापयिपयर प्रवृत्ति इ जि न जोयइं । इसउं न कहिबूं । जिम ज्ञानशुद्धिवंत जीव बहु^४ सायय कृप्यादिक कर्म पावे निरहइं ति कृप्यादिकु करइं नहीं । जि पुण अनिरहता हंता^५ अकच्छंयबुद्धि करी करइं ति तथाविह कर्मबंधक न हुयइं । जिम भयदत्तसहोकरि भाय-हेवि भायकि गृह धर्म सेवा करनेइ अकृतगृह धर्म सेयकि हयउं । जु ज्ञानवंत तत्त्वबुद्धि करी पापु करइ सु घणउं कर्मु बांधइ । सु पुण परमार्थवृत्ति करी ज्ञानवंत जु न हयर जु पापु तत्त्वबुद्धि करी करइ । तदुक्तं-

तदज्ञानमेव न भवति यम्मिन्नुदिने विभाति रागगणः ।

तपसः कुतोऽपि नातिर्दिनेऽकृत्तरागप्रतः स्यात्तुम् ॥

[८३७]

§587) थोडाइं विम तणी जिम विममगति तिम थोडाइं कर्म तणी विममगति । इणि कारणि

भयर-

मंरि इ सु सम्यग्दृष्टमणं मपरिपारं सउत्तरगुणं च ।

गिरुं उवमामेइं बाइं प्य गुमिगिरुओ रिजो ॥

[८३८]

§586) 1 B. drops words after १११५. 2 B. omits. 3 B. omits.

4 R. omits. 5 R. omits.

§588-89) ८३९]

सम्यग्दृष्टिं श्रावयति शु अल्प पाप कर्मुं बांधुं सु प्रतिकमणि छ द्विहायस्यकि करी सहितु स प्रतिकमणु ॥ तथा 'हा इददुं कयं हा इददुं चितियं अणुमयंपि हा इददुं' इत्यादिषु पाप समाचरणानंतरं शु अनुतापु परितापु कथियर तिणि करी सहितु स परियावं सपरितापु कथियर । तथा शुभपदिष्ट प्रायश्चित्त समाचरणे । लक्षण छर उत्तरगुणु तिणि करी सहितु स उत्तरगुणु हुंतउं सु श्रावकु 'तिवणुं' किसउं अयुं ? शीपु विहलउं उपसमायइ । एह अर्थे विपइ उदाहरणु कहर—

'वाहिष्ठ्य सुनिक्खिओ विज्जो' जिम सुनिाक्षिउ वैयु ध्याधि उपसमायइ तिम सुविहिं श्रावकु पापु उपसमायइ । 'तंपि हु' इहां 'हु' शब्बु एव शब्बु तणइ अधि छर । निःप्रतापु पापु करर' हीं जि हसउं अयुं ।

§588) इहां जि अयुं विपइ वीजउ दृष्टांत कहर—
जहा विसं कुट्टमयं मंतमूलविसारया ।
विज्जा हणति मंतंइ तो तं हवइ निव्विसं ॥ ति'

जिम मंत्रमूल विरारइ वैय मंत्रहं करी विस्स कोप्रगत शरीरगत हणइ । 'तो तं हवइ निव्विसं'ति । 'तो' तउ पाछइ 'तं' सु विस्स 'हवइ' हुयइ किउं हुयइ ! 'निव्विसं' अमृतहणं । अयमभिभाषु । जेह पात्र रहरं विपु कोप्रगत काय संक्रांत ह्यउं हुयइ सु पापु विपयेदना मुच्छिउ हुंतउं तीहं मंत्राक्षर नउ अयुं जयपिहिं जाणइ नहीं तथापिहिं 'अचित्तयो मणिमंत्रोपपीनां प्रभाव' शणि कारण अक्षरमात्र अवणिहिं 16

विपमूर्च्छांलहरीमंग लक्षण गुणु तेह रहरं संपजइ ।

§589) एह अर्थे विपइ डोकरि एक नउं उदाहरणु कथियइ । तथाहि—
यामि पकि अतिदरिद्रता करी दुक्खित' डोकरि एक हुंती । हुंसउं हसइं नामि तेह नइ वीकितउ एकु हुंतउ । सु आजीविका कारणि ग्रामलोकतणां वाछइ चारु' । अनेरइ दिनि संध्यासमइ उद्यान वन हुंतउ वाछइ ले आवतउ हुंतउ सु सर्पिं हसिउ । मूच्छां आवी । तिहां ई जि विपवेगसंगत 20 हुंतउ हेउउ दलितु । जिम काण्डु निशेण्डु हुयइ तिम' थारै' महीपतिउ पठिउ । किणिहिं पकि ग्राम माहि आवी करी डोकरी आगइ कहिउं । "ताहरउ वीकितउ सर्पिं वसिउ । बाहिरि अचेतनुं थारै पठिउ छइ" । तउ पाछइ स' डोकरी तेतीहीं जि वार मंत्र तंत्र यंत्र पठित मेली करी रोयती हुंती वीकिरा कन्हइ आवी । मांत्रिक' तांत्रिकादिक सु बालकु मृतकु हसउं जाणी करी जिम गया हुंता तिमहीं जि पाछा आविया । डोकरी पुण स एकली य जि शोकसोक-संकीलितयिउ हुंती तिहां रही । पुत्र तणइ कर्णमलि हारै करी जिम 25 दिगंगना रहइ पुण कदुपु आवइ तिम करणस्वरि उच्चैस्वरि "हा' पुत्र ! हुंस ! हुंस !" इसी परि अत्रांत स्वांत बोलायती हुंती किणिहिं पकि महा संतापितांग हुंती सकल रात्रि अतिक्रमायइ । "सुतवच्छ हुंस ! हुंस ! कउि" इसी परि पुत्र आगइ मणती तेह डोकरि रहइं जिम पकि" 30 मंडर पूर्वदिशिमुख शोभावतं सु हुंस सहस्रकरुव जगिउ, तिम तेह नउ पुत्रु वीजइ गमइ विहसिया । सु बालकु अविउ हसउं संमली करी ग्राम-30 समइ विहसइं तिम तेह डोकरि तणां नयण पुण हसुहसिया । सु बालकु अविउ हसउं संमली करी ग्राम-30 लोछु सगलो थारै तिहां अविउ । प्रमात' समइ मांत्रिक' तांत्रिकादिक पुण' तिहां आविया । मन माहि आश्रयुं करता हुंता तेह डोकरि आगइ हसउं कहरं "तं एह रहइं किउं" कीधउं ?" वृद्धा मणइ, "मइ हुंस ! हुंस ! इसी परि एह नइ कर्णमूलि" जसती रोयती" 16 यिकी रात्रि नीगमी ।" गाहवमंत्र माहि "हुंस हुंस" ए वीजाक्षर छर, "तीहं नइ प्रमायि विपु उपपामिउं, हसउं माहडिक जाणिउं, तउ पाछइ जिम तिणि" डोकरी मंत्रायुं अजाणतीहीं पुत्रु अचेतनु विपाकांतु सचेतनु निर्विपु कीधउ । अक्षरहो जि तणा प्रमावइतउ 135

[८३९]

10

[८३]

[८३]

[८३]

§587) 1 B. Bb. have करी जि ।
§588) 1 Bb. omits 2 Bb. किउं
§589) 1 p इविचता । 2 P. हुं 13 Bb. P. चारतउ । 4 p. तिमि । 5 p. थारै । 6 p. अचेतना । 7 p. मा । 8 p. मांत्रिकादिक । 9 P. हो । 10 P. एक । 11 P. प्रमात । 12 P. मांत्रिका । 13 P. puts it after तिहां । 14 Bb. किउं । 15 Bb. कर्णि- । 16 P. repeats. 17 B. omits.

§590) दार्ष्टान्तं मण्ड-

एवं अद्विविहं कम्मं रागदोस समज्जियं ।

आलोप्यतो य निदिंतो खिप्पं हणइ सु सावओ ॥

[८४०]

‘एवं’ इसी परि कित्तउ अर्धु ।

5 जिम सु बालकु विपमूर्च्छित मंत्राक्षरार्थु अजाणतो हंतउ मंत्राक्षर प्रभावजनउ निर्विपु ह्यउ तिम मुग्धजनु जदापिहिं प्रतिकमण सूत्रार्थु जाणइ नही तथापिहिं एकि के जीव इमा भद्दापरायणं हुयइं जि अजाणताई आपणपउ चुद्धउं करइं । न पुण सव्वे । इण्हिं जि कारणि अतिप्रमंगनिपेध निमित्तु ‘सु सावओ खिप्पं हणइ’ न पुण श्रावकमात्तु इसउं कहिं । इमी परि दार्ष्टान्त भावना करी हउ गाथा-क्षरार्थु लिखियइ ।

10 ‘एवं अद्विविहमि’ति स विप बालक निर्विप भवन जिम । श्री गौतमस्वामि श्रीसुधर्मस्वामि नाम श्रीगणधरदेव विरचित सलक्षण सूत्राक्षर महाप्रभावयशाइतउ अष्टविधु ज्ञानावरणीयादिकु कम्मं ‘रागदोस समज्जियं’ रागद्वेषहं करी उपाज्जिउं । दिन समइ अनइ रात्रि समइ गुरु आगइ आलोयतउ वचन करी प्रकासतउ । कित्तउ अर्धु । जिम बालकु कार्थु अकार्थु बोलतउ हंतउ काई विमरसइ नहीं जु काई मन माहि हुयइ सु कहइ तिम जु पापु जिम कीघउं हुयइ सु पापु तिमहीं जि कहइ, गुरु आगइ प्रकाशइ ।
15 ‘कथनीयमिदमकथनीयमिदं’ इसी परि विमासइ नहीं । तथा ‘निदंतो’ आपणा आत्मा आगइ ‘हा दुदुकयं, हा दुदु चित्तियं अणुमयंयि हा ‘दुदु’ इत्यादिकि कम्मि करी निदंतउ शोचतउ । ‘सु सावओ’ सु श्रावकु प्रकृष्ट गुणविशिष्टु गृहस्थु न पुण नाम श्रावकमात्तु । प्रकृष्ट गुणविशिष्टु पुण सु जु पट्स्थान युक्तु हुयइ । छ स्थानक पुण ए कहियइं । यथा—

कृतव्रतकर्मा १, शीलवान् २, गुणवान् ३, ऋजुव्यवहारी ४, गुरुशुभ्रपाकरु ५, प्रवचनकुशल ६ ॥

20 तथा च भणितं—

कयवयकम्मो १ तह सीलवे २ च गुणवे ३ च उज्ज व्यवहारी ४ ।

गुरुसुसूसो ५ पवयणकुसलो ६ खलभावसदृत्ति ॥

[८४१]

क्षिमु शीघ्र हणइ निस्सारु करइ इति गाथाक्षरार्थः ।

§591) अत्र अष्टविधु कम्मं कहिउं सु पुण कहिया पाखइ जाणियइ नहीं तिणि कारणि संक्षेपिहिं

25 मुग्धजन जाणाविया कम्मविचारु लिखियइ—

फीरइ जओ जिणं मिच्छत्तार्हिं चउगइमणं ।

तेणिह भन्नइ कम्मं अणाइयं तं पवाहेणं ॥

[८४२]

देव मनुष्य तिर्यच नरकगति लक्षण चत्तारि गति, तिहां वसेंमानि जीवि प्राणियइ मिध्यात्वादिकहं हेतुहं करी जिणि कारणि कीजइ तिणि कारणि । इह कित्तउ अर्धु ! जिनशासनि कम्मं कहियइ, सु पुण
30 धीजांकुरु जिम प्रवाहि करी अनादि कित्तउ अर्धु ! जिम धीज हंतउ अंकुरु अंकुरु हंतउ धीजु हुयइ इसी परि अनादि छइ, तिम पूर्ये कम्मं लगी संसारु हुयइ संसार लगी कम्मं हुयइ । इसी परि अनादि कम्मं छइ । एह जु अर्धु भणितउ ‘अणाइयं तं पवाहेणं’ । तेह कम्मं नउ बंधु चतुर्विधु हुयइ । यथा—

§592) ‘पगइबंधो डिइबंधो अणुभागबंधो पपसबंधो तत्थ पगइबंधो अद्विविहो । तंजहा—

नाणावरणीयं १, दंसणावरणीयं २, वेयणीयं ३, मोहणीयं ४, आउयं ५, नामं ६, गोयं ७

31 अंतराईयं ८, मूलभेया इमे, एसिं उत्तर भेया । तंजहा— नाणावरणीयं पंचविहं— तंजहा—

§590) 1 L. e. रदात् । 2 B. — विरचिते । 3 i. e. निदंतो । Bh. 4 भद्दानवरायण. 5 Bh. सुभ्रावक ।
§591) 1 Bh. adds, in the margin, प्रवृत् ।

§593-600)

श्रीतरुणप्रभाचार्यकृत

मणुपञ्चवनाणावरणीयं,

केवलनाणावरणीयं ।
मदनाणावरणीयं,
सुयनाणावरणीयं, ओहिनाणावरणीयं,

§593) वृंसणावरणीयं नदविहं तंजहा-चक्रबुदंसणावरणीयं, अचक्रबुदंसणावरणीयं, ओहिदं-
सणावरणीयं, केवलदंसणावरणीयं, निहा निहानिहा पयला पयलापयला धीणद्धी ।

§594) वेयणीयं डुविहं, तंजहा सायवेयणीयं असायवेयणीयं ।
§595) मोहणीयं अट्टावीसविहं, तंजहा-

तत्र - दंसणमोहणीयं तिविहं, मिच्छत्तं सम्ममिच्छत्तं सम्मत्तं च, चरित्रमोहणीयं डुविहं कसाय
चारित्रमोहणीयं नोकसाय चारित्रमोहणीयं । तत्थ कसाय चारित्रमोहणीयं सोलसविहं तंजहा-

अणंताणुवंधि कोहकसाय चारित्रमोहणीयं, अप्पच्चकखाण कोहकसाय चारित्रमोहणीयं, सपच्च-
कखाण कोहकसाय चारित्रमोहणीयं, संजलण कोहकसाय चारित्रमोहणीयं, अणंताणुवंधि माणकसाय 10
चारित्रमोहणीयं, अप्पच्चकखाण माणकसाय चारित्रमोहणीयं, अणंताणुवंधि माणकसाय चारित्र-
मोहणीयं, संजलणमाणकसाय चारित्रमोहणीयं, पच्चकखाण माणकसाय चारित्रमोहणीयं,
अप्पच्चकखाण मायाकसाय चारित्रमोहणीयं, अणंताणुवंधि मायाकसाय चारित्रमोहणीयं,
मायाकसाय चारित्रमोहणीयं १२, अणंताणु लोभकसाय चारित्रमोहणीयं, संजलण
चारित्रमोहणीयं, पच्चकखाण लोभकसाय चारित्रमोहणीयं, अप्पच्चकखाण लोभकसाय
नोकसाय चारित्रमोहणीयं, नवविहं तंजहा-

हास नोकसाय चारित्रमोहणीयं, रति नोकसाय चारित्रमोहणीयं, २ अरति नोकसाय चारित्र-
मोहणीयं ३, भय नोकसाय चारित्रमोहणीयं ४, सोम नोकसाय चारित्रमोहणीयं, दुग्च्छा नोकसाय
चारित्रमोहणीयं, सविदं नोकसाय चारित्रमोहणीयं, पुरुषवेद नोकसाय चारित्रमोहणीयं ८, नपुंसक
वेद नोकसाय चारित्रमोहणीयं ९ ।

§596) आउयं चउडिविहं तंजहा-
नरयाउयं, तिरियाउयं, मणुयाउयं, देयाउयं, ४ ।

§597) नामं वायालीसविहं तंजहा-
गदनामं १, जाइनामं २, सरीरनामं ३, अंगोवंगनामं ४, विहायोगतिनामं ५, बंधणनामं
६, संघयणनामं ७, संडाणनामं ८, संघायणनामं ९, फरसनामं १०, रसनामं ११, गंधनामं १२, वल्लनामं १३
१३, आणुणुव्वीनामं १४, अणुणुलहुनामं १५, उवयावनामं १६, परावायनामं १७, आयवनामं १८, उज्जीय-
नामं १९, उस्सासनामं २०, निम्माणनामं २१, पत्तेयसरीरनामं २२, साहाण सरीरनामं २३, तसनामं
२४, थावरनामं २५, सुभगनामं २६, दुमगनामं २७, सुतत्तनामं २८, दूसरनामं २९, सुदनामं ३०, असुहनामं
३१, सुदुमनामं ३२, वायरनामं ३३, पज्जत्तनामं ३४, अपज्जत्तनामं ३५, थिरनामं ३६, अथिरनामं ३७,
आइज्जनामं ३८, अणाइज्जनामं ३९, जसनामं ४०, अजसनामं ४१, तित्थयरनामं ४२ ।

§598) गोयं डुविहं, तंजहा उच्चगोयं १, नीचगोयं २ ।

§599) अंतरादयं पंचविहं, तंजहा-
दणंतरादयं १, लामंतरादयं २, भोमंतरादयं ३, उयभोगंतरादयं ४, वीरियंतरादयं ५, 1 पगद-
बंधो संमत्तो ।

§600) अहं डिद्वंधो भसद - नाणावरणीयस्स दंसणावरणीयस्स वेयणीयस्स अंतरादयस्स
तीतं कोडाकोडीओ सागरोयमाणं । उकोसा डिदं पत्तना - मोहणीयस्स सत्तारि सागरोयम कोडाकोडीओ

§595) 1 Bh. omits ६-1

Handwritten notes in the left margin, including the word 'अणंताणुवंधि' and other illegible text.

नामस्स गोयस्स य वीस सागरोयम कोडाकोडीओ आउयस्स तितीमं सागरोयमा पुच्चकोटी तिमाग-
सहिया । नामगुत्तानं जह्वा ठिई अट्टमुत्ता वेयणोयस्स धारसमुत्ता अंतोमुत्ता मेमाणं । डिइवंधो
सम्मत्तो ।

सुभासुभकर्मपुद्गलेसु जो रसो सो अणुभागो युच्चइ । तत्थसुभेसु महुरो रमो, असुभेसु अमहुरो
५ रसो, तरस्स वंधो अणुभागबंधो ।

अणुभागबंध विचारु गहनु छइ तिणि कारणि विस्तरी करी लिखिउ नहीं ।

अणुबंधो सम्मत्तो ।

§601) पणसा कम्मवग्गणा, खंधा तीहं तणउ बंधु, जीवप्रदेसहं सउं यद्धि लोह संबंध जिम
अथवा खीर नीर संबंध जिम जु एकरूपता भवन्नु सु प्रदेसबंधु कहियइ । तथा च भणितं—

१० जीविकर्मप्रदेशानां यः सम्बन्धः परस्परम् ।

कृशानुलोहवद्रेतोस्तं बन्धं जगदुर्वुधाः ॥

[८४३]

सु पुण सृष्ट बद्ध निपत्त निकाचित करणभेदइतउ चतुर्विधु हुयइ । समूहगत सूचिका समयाय
जिम सृष्ट कर्मबंधः । दवरकबद्ध सूचिका संबंधइद्ध कर्मबंधः । वर्षीतारित दवरकबद्ध सूचिका संबंध-
वसिद्धत्त कर्मबंधः । अभिध्मात सूचिका समयायमेलयन्निकाचित कर्मबंधः । अथवा कौरी भीति ऊपरि
१५ चूर्ण पूर्ण पुट्टलिका खोटियइ तउ चूर्ण तणउ परागु भीति लागइ तिम जीवप्रदेसहं अनइ कर्मप्रदेशहं
रहइ जु संबंधु हुयइ सु सृष्ट कर्मबंधु कहियइ १ ।

भीनी भीति चूर्ण पुट्टलिका पखोडणि कीधइ हंतइ भीति सूकी हुंती जु चूर्ण संबंधु भीति
रहइ तेहं सरीखउ जीवप्रदेस कर्मप्रदेस संबंधु जु जुयइ सु बद्ध कर्मबंधु कहियइ २ ।

छोह दीप सरीखउ जीविकर्म प्रदेसहं रहइ जु संबंधु सु निपत्त कर्मबंधु कहियइ ३ ।

२० सर्वं घोल छोह सरीखउ जीविकर्म प्रदेसहं रहइ जु संबंधु सु निकाचित कर्मबंधु कहियइ ४ ।

एउ सगलू पूर्वभणितु संक्षेपिहिं प्रवेशबंधु कहियइ । एह तणउं सविस्तरु स्वरूपु गहनु छइ तिणि
कारणि लिखिउं नहीं । 'पणसबंधो सम्मत्तो' ।

इति संक्षेपिहिं कर्म तणउ विचारु लिखिउ छइ । जु को विस्तरि करी कर्म विचारु जोयइ तिणि
कर्मबंध पटी, गुरु कन्हइ यखाणावी, अर्थु हिया माहि अवधारी करी सदा चीतविवउ । अनेरार्इ भद्धा
२५ नयंतहं भविकलोकरं आगिलइं गमइं सु निश्चितु जाणतां हंतो कहिवउ । संशइ हंतइ पुण कहिवउ नहीं-
मिप्यात्व प्ररूपणा भयइतउ ।

§602) अय 'एवं अट्टविहं' इत्यादि गाथा करी जु अर्थु कहिउ सोई जि अर्थु विशेषि करी
कहइ ।

कयपावो वि मणूसो आलोइय निदिओ गुरुसगासे ।

३० होइ अदरेगलहुओ ओहरियभरुव भारवहो ॥

[८४४]

'कय पावो वि' ईहां 'अपि' शब्दु अकृत पाप रहइ संयहार्यु । तउ पाछइ इसउं अर्थु-जिणि
थोटउं सउं पापु कीधउं हुयइ सु जिम 'अनुदरा कन्या' इसइ भणियइ' उवर पातरइ कन्या गमियइ । स
पुण संभवइ नहीं तिणि कारणि 'तुच्छोदराकन्या' गमियइ तिम संसारि भासिहिं अकृतपाप पुरुप संभवइ
नहीं । पाछइ अकृतपापु इसइ भणियइ' तुच्छपापु पुरुप लाभइ । तउ पाछइ न पुण अकृतपापु तुच्छपापु
३५ पु६पु कृतपापु विरचिन प्रधुरपापु पुरुपु पुण गुरुसगासे आलोचितु । किसउ अर्थु ! जिम पापु कीधउं

हृदय तिमाहि जि जे किमइ कृतालोचुगु हृदय । तथा आपणो सावि निंदितु किसउ अर्थु ? 'हा हृदु कयं' इत्यादि प्रकरि करी कृतात्मनिंदु हृदय । तउ जिम 'ओहरिय भरुव्य भारवहो' । किसउ अर्थु ? 'भारवहु' भणियइ भार उपाडणहाग पुरुपु । 'ओहरियमरो' किसउ अर्थु ? मुक्तभारु हुंतउ 'होइ' हृदय, किसउ हृदय ! 'अहरो लहुओ' । अति हलयउ हृदय, तिम श्रायक पुण पापमार रहितु हुंतउ अतिरेकलपु । अति हलयउ तुंवक जिम ऊर्द्धगामी हृदय । अत्र 'मणुसो' ईहां मनुष्य महणु मनुष्यही जि रहई प्रति-⁵ क्रमण योग्यता जाणाविया निमित्तु कीचउं ।

§(603) अथ एकद्वारपरमयंत ही श्रायक ही' रहई आवश्यकि करी मुक्ति हृदय । इसा अर्थ प्रकटिया कारणि कहइ—

आवस्सएण पएण सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।

दुक्खाणपंतकिरियं काही अचिरेण कालेण ॥

[८४५] 10

श्रायकु गृही 'अइ वि बहुरओ होइ' जइपिहिं बहुपाप कर्मांतु हृदय । तथापिहिं 'सामाअयं चउवीसत्यो' वेदणं' पडिक्रमणं काउस्सगो पचक्खणं' इत्येयरुपु जु छइ छविह्नु भावावश्यकु तिणि करी, न पुण दंत मुख शालनरुपु छइ द्रव्यावश्यकु तिणि करी 'दुक्खाणमंत किरियमि'ति । सारीर मानस लक्षण छइ दुक्ख कए तीह नीं 'अंतकिरिया' विनासु । 'काही अचिरेण कालेणेति । अचिरि थोइइ कालि समइ करी करिसइ । दुक्ख नी अंतकिरिया मुक्ति कहियई । तेह रहई अनंतइ हेतु यथाख्यातु चारिउ¹⁵ परंपरा हेतु एउ आवश्यकु पुण हृदय जिम श्रेष्ठि सुश्रीन रहई हृदय ।

§(604) अथ जि के धीसरिया छइ अतीचार तीह रहई पडिक्रमिया निमित्तु कहइ—

आलोयणा बहुविदा नयसंभारिया पडिक्रमणकाले ।

मूलगुण उत्तरगुणे तं निंदे तं च गरिहामि ॥

[८४६]

एक दिवस माहि अथवा रात्रि माहि जु जु वस्तु ईदिय मनोभिरामु अथवा अणाभिरामु जीवु²⁰ देखइ सांमलइ अणुहवइ । तेह तेह वस्तु विपइ आर्त्तध्यानरौद्रध्यानवस्तु हुंतउ जेतला विकल्प कल्पइ तेतला वली चलता सांभरई नही । अत आइ—

आलोयणा बहुविदा । आलोचनीय गुण आगइ प्रकाशनीय पापस्थान बहुविध प्रभूतप्रकार ति पुण मूलगुण पांच अणुगत उत्तरगुण त्रिंदिह गुणगत चत्तारि शिक्षागत तीह नइ विपइ पडिक्रमणकालि आलोचनादि निंदा गरिहावसरि सांभरी नही चित्ति आवी नही । चित्तशून्यतादि प्रमादवसइतउ 'इ²⁵ निंदे तं च गरिहामि' । पूर्ववत् ।

§ 6) 'एयं इसां परि प्रतिक्रमण कारकु आलोचना निंदा गरिहा करी धर्माधना निमित्तु काइ करी अम्युत्थित हुंतउ । 'तसइ धम्मस्स केयलि पसत्तस' इअउं मन माहि करतउ हुंतउ भाव-मंगल गर्ह्यु ।

अम्युत्तिओमि आराहणाए विरओ मि विराहणाए ।

तिविहेण पडिकंतो वंदांमि जिणे चउवीसं ॥

[८४७]

केवलप्रज्ञता सर्वज्ञभापित तेह धर्म, किसउ अर्थु ?

श्रायकधर्म तणी आराधना पूर्णलाभु तेह निमित्तु 'अमिह' हउं अम्युत्थित उद्यमवंतु तेह तणी विराधना खंडना तेह हुंतउ विरतु निवसितु । 'तिविहेण पडिकंतो' इति मन वचन फाय लक्षण छइ त्रिंदिह

करण तिणि तिथिहि करणं करौ पडिकंतु प्रतिक्रान्तु पापकर्म हंतउ निवृत्तु 'वंवामि जीणि चउत्थीमं' ति ।
जिन ऋषभादिकं श्री महावीरावसान चउथीस वांइउं इति अंतभाव मंगलं ।

तथा च भणितं-मंगलादीनि मंगलमध्यानि मंगलांतानि शास्त्राणि श्रेयस्कराणि भवंति—
इसी परि भाषजिन वांदी करी स्थायनाजिन वंदना निमित्तु भणइ—

जावंति चेइयाई उदुय अहे य निरिय लोए य ।

सव्वाइं ताई वंदे इह संतो' तत्थ संताइ' ॥४४॥ सुगमा [८४८]

नवरं इह संतो' ईहां हंतउ हउं तत्थ संताइ' तिहां त्रैलोक्य माहि हंता जेतलां चैत्य ऊद्धूलोकि
अधोलोकि तिर्यंगलोकि छइं तेतलां सउवे वांइउं ।

§606) अत्र प्रस्तावइतउ त्रैलोक्यगत चैत्यसंख्या विषयमंख्या च स्तवनि करी लिखियइ—

श्री ऋषभवर्द्धमानकचन्द्राननवारिपेण्यजिनचंद्रान् ।

तद्भवनिचिम्बमानानुकीर्त्तननेप संस्तौमि ॥ [८४९]

भवनपातिवानमन्तरतारकयैमानिकालयेपु वराः ।

त्रिद्वाराः श्रुतभणिताः प्रत्येकं पञ्चपञ्चसभाः ॥ [८५०]

जन्माभिषेकभूषा व्यवसिति सौधर्मनामिकास्तास्तु ।

मुखमण्डपादि मण्डपमणिपीठस्तूपवद्वाराः ॥ [८५१]

स्तूपे स्तूपे दिशि दिशि प्रतिमैकैकास्तिस्तदनु पीठगतौ ।

धर्मध्वजचैत्यतरु प्रवरजला तदनु पुष्करिणी ॥ [८५२]

§607) भवनपतीनां मध्ये माणितोरणकलसकेतनछत्रैः ।

चैत्यानि सन्ति कोट्याः सप्तदासप्ततिर्लक्षाः ॥ [८५३]

त्रिद्वाराणि सुरत्नस्तम्भसहस्रोच्छ्रितानि चैत्यानि ।

एषु मुखमण्डपार्थं सभावदुक्तं श्रुते सर्वं ॥ [८५४]

द्वारिंशदुच्चभावे पञ्चाशद्योजनानि दीर्घत्वे ।

माथिम्नि च पञ्चविंशतिरेतेषां मानमसुरेषु ॥ [८५५]

तन्नेमिप्रमितानि तु नागादिषु नवसु तानि भणितानि ।

तन्मध्ये प्रत्येकं भातिमा अष्टोत्तरं च शतम् ॥ [८५६]

पष्टिः सभामु पञ्चसु विंशं शतमस्ति जिनगृहेष्वेवं ।

भवने भवने वन्दे प्रतिमानां शतमशीत्यधिकम् ॥ [८५७]

अधिकानि च दशकोटीं शतानि सैकोननवति कोठीनि ।

लक्षाणि पष्टिमैवं नमामि भवनेषु विम्बानाम् ॥ [८५८]

§608) क्रोशाधिकं पद्मयोजनं पृथूनि तद्विगुणितायतानि तथा ।

नवयोजनोन्नतानि व्यन्तरनगरेषु चैत्यानि ॥ [८५९]

त्रिमूर्त्तान्यामितानि पुनर्वदन्ति चैत्यानि पूर्वमुनिवृषभाः ।

ज्योतिर्व्यन्तरकाशां सुराजधानीषु चेदंशि ॥ [८६०]

§605) 1 B. Bl. संयो । 2 B. Bl. संया-1

§607) 1 B. Bl. कलस । i. e. कलस ।

ज्योतिष्केषु विसंख्या जिनालयासिद्धशालया महिताः ।
तेष्वप्यसंख्यसंख्याः संख्यावाद्भिः स्तुताः प्रतिमाः ॥

[८६१]

§609) दगकल्पनिवासीन्द्राभत्वार्श्रच्च लोकरपालमुराः ।

[८६२]

शषेदानमाहिव्यः षोडश तद्राजधानीषु ॥

दिदंश भवनपतीन्द्रास्तदेव्योष्टादशोत्तरं च शतम् ।

[८६३]

तदशीति लोकरपालस्तेषामपि राजधानीषु ॥

नन्दीश्वर रुचकादिषु शतद्वयं चतुरशीति संयुक्तम् ।

[८६४]

स्वविमानश्रवनाजिनशृङ्खलमानर्षचापि चैत्यानाम् ॥

नन्दीश्वरे द्विपञ्चाशदुचके कुण्डले च चत्वारि ।

[८६५]

योजनगनपञ्चाशद्रासप्तति दीर्घशृणुलोच्चाः ॥

जिनश्रवणपाष्टिरेषा चतुर्मुखा तदपरे त्रिमुखा ।

[८६६]

बभयत्र प्रतिवक्त्रं मुखमण्डप मुख्यपदकं च ॥

त्रिमुखे चतुर्मुखे च चैत्ये बन्देऽष्टशतमिताः प्रतिमाः ।

[८६७]

स्तूपार्थितास्तु वक्त्रे द्वादशषोडश यथासंख्यम् ॥

§610) प्राच्यां सप्तविंशतिरर्वा क्रुपभस्य चान्यतीर्थेशाम् ।

[८६८]

अन्यदिशासु ऋमनस्तर्पकशः स्तूपगाः प्रतिमाः ॥

मेरुष्यशीतिरैका वषष्ठशारेष्वशीतिरपरा च ।

वर्षनेगेषु त्रिंशद्विंशतिरिभदन्तकेषु तथा ॥

[८६९]

चत्वारि चेषुकारा चन्द्रेषु मनुजोत्तरे च चत्वारि ।

द्विशतीमष्टादश वा नमामि चैतानि चैत्यानि ॥

[८७०]

एतेषामिदमुक्तं ममाणमिदं योजनानि पञ्चविंशत् ।

पश्चानदद्वपञ्चाशदुच्छ्रया यामपृथुतासु ॥

[८७१]

§611) दिग्गजचत्वारिंशत्सु मेरूच्छ्रयासु पञ्चसु^१ दीर्घेषु ।

चैतान्येषु च सप्तविंशतं च जम्बूतराविकम् ॥

[८७२]

तत्परिवेपे जम्बूशिवरिष्यष्टोत्तरं शतं च तथा ।

तद्वाये वनपण्डे चाष्टौ दिग्निदिग्बन्धानात् ॥

[८७३]

अन्येषु नवसु चैतच्छाल्पलिमुत्पेषु निखिलमवसेयम् ।

सप्तत्यार्थिककादशशतानि चैत्यानि कुरु दशके ॥

[८७४]

काञ्चनगिरिषु सदस्रं त्रिंशती सानीतिरस्ति कुण्डगता ।

विंशतिरिह पयकस्था मुष्टचर्चताद्वयगा सैव ॥

[८७५]

पद्मादिषु वाशीतिर्यङ्गनादिषु सप्ततिश्च चैत्यानि ।

स्थानकदशकस्वान्यपि समानि मानेन चैमानि ॥

[८७६]

§609) 1 B. तदरुमे । Dh. तदपरेरुमे ।

§611) 1 Dh. omits. -यु ।

चत्वारिंशत्समाधिकधनुश्चतुः पूर्वद्दशशतसमुच्चाः ।
 क्रोशायामाक्रोशाद्दे पृथुला चैत्यमालेयम् ॥ [८७७]
 पञ्चशती त्रिसहस्री चैत्यानां सप्तदशयुता भूमौ ।
 द्वाविंशतिः सहस्रा लक्षचतुष्कं शतद्वितयम् ॥ [८७८]
 साश्रीनि च विम्बानां तिर्यग्लोके मयाचर्यते भक्त्या ।
 कल्पेषु जिनावासा नन्दीश्वरचैत्यसमतुल्याः ॥ [८७९]

§612) सप्तनवतिः सहस्राथैत्यानां चतुरशीतिलक्षाश्च ।
 त्रिपुक्तविंशत्यधिकः सुरलोके तेषु विम्बानाम् ॥ [८८०]
 फोटीशतं द्विपञ्चाशत्फोटीयो लक्षकाश्चतुर्नवतिः ।
 स सहस्रचतुश्चत्वारिंशत्पष्टयधिकसप्तशती ॥ [८८१]
 फोटयोष्ट सप्तपञ्चाशद्विंशतिः पञ्चकं शतानां च ।
 चत्वारिंशत्सहितं त्रिभुवन चैत्यावालिं चन्दे ॥ [८८२]
 कनकमयी तनुयष्टिः करचरणनखादिकाः परेश्वयवाः ।
 शाश्वतजिनविम्बानां रक्तादिकवर्णरत्नमयाः ॥ [८८३]
 मणिर्षोडशपरि देवच्छन्दः सिंहासनं च तस्योर्ध्वम् ।
 पर्यङ्गनासनसंस्था ऋषभसमाः शाश्वतप्रतिमाः ॥ [८८४]
 पृष्टे च्छत्रधराचर्या पार्श्वे द्वे चामरग्रदे प्रतिमे ।
 नागौ भूतौ यक्षौ कुण्डधरौ द्वौ प्रति प्रतिमम् ॥ [८८५]
 फोटिशतपञ्चदशकं द्विकचत्वारिंशताभिनाः फोट्याः ।
 लक्षाष्टा पञ्चाशत्साहस्री सप्तपष्टिश्च ॥ [८८६]
 चत्वारिंशत्कण्ठिना त्रैलोक्ये शाश्वतीरिमाः प्रतिमाः ।
 नित्यं नमामि भक्त्या पराणि तीर्थान्यपि प्रमदान् ॥ [८८७]
 मानः प्रमोदपुलकाङ्गुलि फाययष्टि-
 स्तोपासुवाहविमर्त्याहृतमृष्टदृष्टिः ।
 यः स्तोभ्यते सकलशाश्वतीर्थराज-
 स्तोमं गमिष्यति रमां स जिनाधिराजः ॥ [८८८]
 इत्थं स्तुताः भुतममादितगान्निचित्त-
 विद्यापरिणोत्तमगुरैः सुरैश्च ।
 श्रेयोवपशाश्वतजिनप्रतिमाः गमन्ता
 मर्षं दिग्गन्तु तद्व्युत्प्रभयाहनं स्वाम् ॥ [८८९]

इति श्रेयोवपशाश्वतजिनप्रतिमाःप्रमाणस्तवर्णनं समाप्तमिति ।

[613] आठकोटि मत्तवतजान फांयमर्षं विद्याय शाश्वतधैत्य श्रेयोवपगत पत्त स्तवत मारि
 करिती एतं । पत्तद कोटिमर्षं वतनार्थम कोटि अज्ञान ज्ञान मत्तवतद्विगतम विद्यालीने आगला शाश्वत
 जिनिय कर्षं संलया करो पत्त स्तव मारि करी एतं । तय मत्त कोटि पदत्तरिगय मत्तवत भयतयपि मारि
 मत्तवत धैत्य एतं । तथा—

[614]. ८२०]

श्रीतरुणप्रभाचार्यकृत

[८१०]

अमुरा १ नागा २ विज्जू ३ सुवन्न ४ अग्नी य ५ वाय ६ यणिया य ७ ।
 बर्ही ८ दीव ९ दिसा १० वि य दस भेया भवनवासिणं ॥

तत्र-असुर निकाय माहि चउसट्टिलाव, नागकुमार निकाय माहि चउरासीलाव, १ सुवर्ण-
 कुमार निकाय माहि बहुत्तारि लाव, वायुकुमार निकाय माहि छत्रद्वारलाव, २ द्वीपकुमार, विसाकुमार
 उदधिकुमार, वियुत्कुमार, स्तनितकुमार अशिकुमार नामक छंडे छ निकाय तीहे माहि छहत्तारि छहत्तरि ५
 लाव शाश्वत चैत्य छंडे । एवंकारे पूर्वोक्त सात कोडि बहुत्तारिलाव शाश्वतचैत्य भवनपति माहि इसी परि
 हुयरे । वानमंतर माहि असंप्यात शाश्वतचैत्य हुयरे जो इसी माहि अमंज्यात शाश्वतचैत्य हुयरे । पृथ्वी-
 तल्लि त्रिन्दि सहस्र पांचसडे सतरह शाश्वतचैत्य भणिया छंडे । ऊर्ध्वलोकिक चउरासीलाव सत्ताणवर
 सहस्स त्रेयोसे करी अधिक शाश्वत चैत्य छंडे । तत्र सौधर्म देवलोकिक बन्नीसलाव । ईदान देवलोकिक
 अद्रावीसलाव । सनत्कुमार देवलोकिक चारहलाव । माहेरे देवलोकिक आउलाव । ब्रह्म देवलोकिक चत्तारि-१०
 लाव । लांतक देवलोकिक पंचास सहस्स । महाशुक देवलोकिक चियालीस सहस्स, । सहस्राह देवलोकिक छ
 सहस्स । आनत देवलोकिक प्राणत देवलोकिक त्रिहुं चत्तारिसडे । आरण देवलोकिक अच्युत देवलोकिक
 विहुं त्रिन्दिहसडे ।

सिद्धिमगे विज्जतिगे एकु सउ इमारोत्तर मार्ज्जमगे विज्जतिगे एकु सउ सतोत्तर । उवरिमगे विज्ज-
 तिगे एकु सउ विजय वेज्जयत जयंत । अपराजित सर्वाय नामसिद्धि नामसु पंच पंचोत्तरेसु पंच सासय-१५
 चेवाणि ।

एवंकारे पूर्वोक्त चउरासी लाव सत्ताणवर सहस्स त्रेयोसे करी अधिक शाश्वतचैत्य ऊर्ध्वलोकिक छंडे ।
 एकिके एकिके चैत्य गर्भमण्डल माहि अद्रोत्तरसउ अद्रोत्तरमउ जिनादेव छंडे । एकिके त्रिद्वार चैत्य, एकिके चउत्तर
 चैत्य छंडे । द्वारि द्वारि रूपगत चत्तारि चत्तारि जिनाप्रतिमा छंडे । एवं सना पुण त्रिद्वार छंडे । द्वारि द्वारि स्तूपगत
 चत्तारि चत्तारि जिनाप्रतिमा छंडे । एवंकारे असीसउ असीसउ जिनादेव भवनि भवनि विमानि विमानि २०
 छंडे । तथा पृथिवीगत पुण जि शाश्वत चैत्य छंडे तिहां पुण पूर्वोक्त साठि चैत्यगत चउवीसउ सउ चउवीसउ
 सउ जिनादेव छंडे । बीजे सविहुं वीसउ सउ वीसउ सउ जिनादेव छंडे । एवंकारे सर्वत्रैलोकियगत पनरह
 कोडि सडे बहतालीस कोडि अष्टावनलाव सत्सट्टि सहस्स चियालीसे करी अधिक जिनाप्रतिमा छंडे ।

इति संक्षेपिहिं त्रैलोक्य शाश्वतचैत्य जिनादेव संख्या कही । विस्तर प्ररूपणा स्ववनाचार्यसउ २५
 जाणिवी । यथा—

‘श्रिक्रपमे’ति । श्रीक्रपम वर्द्धमान २ श्री चंद्रानन ३ श्री वारिरेण ४ इनां नामहं करी सर्वत्र
 जिनादेव शाश्वतो वांसी करी । तीहे तणां भवन देवपूए । अनर विव प्रतिमा । तीहे तणउं मानु संख्यानु ।
 तेह तणह अनुकीर्त्तनि सिद्धांतानुवादि करी ति जिनचंद्र एए सउं । संस्तौमि संस्तवउं कहउं ।

‘भवनपती’ति । भवनपति व्यंतर ज्योतिष्क वैमानिक चतुर्विध देवानिकाय निवासहं माहि ।
 उपपात १ अभिपेक २ अलंकार ३ व्यवसाय ४ सौधमोसिधान पांच पांच सम्य छंडे । तत्र उपपात समा ३०
 माहि छंडे उपपातदाट्या तीहे ऊपरि देव ऊपरज । अभिपेकसमा माहि स्वर्णरत्न सिंहासनोपविष्ट देव रहरे
 सेवक देव तीर्थोदक स्नाणजलपूर्ण स्वर्णरत्नकलसहं करी अभिपेकु कररे । व्यवसायसमा माहि रमणीय हर्षण-
 रिज पुण्यानुवादि स्वर्णरत्नयुक्तालंकार स्ववांछानुवादि पहिररे । व्यवसायसमा माहि समा पूरी देव स्वकीया
 नितमय शाश्वत पुस्तक वाचरे, देव नी स्थानि देव जाणरे । सुधर्मोसमा माहि समा पूरी देव स्वकीया
 क्षिपत्यु भोगयरे । एक एक समा पूर्वदक्षिणोत्तर द्वारजय सहित छर । द्वारि द्वारि मुखमंडपु १, अलाटा-३५
 मंडप सहित प्रेक्षा मंडपु २, मणिपीठस्यु ३, मणिपीठ धर्मधनु ४, मणिपीठ चैत्यतक ५, पुष्करिणी ६,
 एवं नामक छ छ वस्तु छरे । स्तूपि स्तूपि चत्तारि चत्तारि जिनादेव चतुर्द्विगमामावास्थित छरे ।
 इत्यायी चउ नउ अर्थुं ॥ ४ ॥

[614] ‘भवनपतीनां मध्ये’ इति । इत्यपि पूर्वमंगित अष्टादिक छंडे भवनपति । तीहे तणां
 विज्जतिगे विज्जतिगे एकु सउ इमारोत्तर मार्ज्जमगे विज्जतिगे एकु सउ सतोत्तर । उवरिमगे विज्ज-
 तिगे एकु सउ विजय वेज्जयत जयंत । अपराजित सर्वाय नामसिद्धि नामसु पंच पंचोत्तरेसु पंच सासय-१५
 चेवाणि ।

नतमहम् । संनिविष्ट विनिष्ट भक्त धारण छाजायलि मकरमुख सिंहमुख गजमुख वृषभमुख तुरगमुख
मृगमुखादि रूपकवर्णकामिराम^१ । सातकोटि बहुत्तर लाख चैत्यशाश्वतां छईं । ति सर्वई त्रिद्वार मुखमंड
पादिक समोक स्थानक पदू सहित छईं ॥६

‘द्वात्रिंशद्भुजभावे’ इति । तत्र असुरनिकाय माहि चैत्यप्रमाणु । यथा वर्तीस जोयण ऊंचपणि ।

5 पंचाम जोयण लांबपणि । पंचवीस जोयण पिहुलपणि ॥७

‘तक्षेमी’ति- तीहं असुरकुमार निकाय माहि चैत्यहं तणउं नेमि अर्थु ।

तेह समान ‘तक्षेमि प्रमित’ कहियइं । ‘नागादिपु नवसु’ इति ॥

नागकुमार १, विद्युत्कुमार २, सुवर्णकुमार ३, अन्निकुमार ४, वायुकुमार ५, स्तनितकुमार ६,
उदधिकुमार ७, ड्रीपकुमार ८, दिशाकुमार ९, नामक छईं नव भवनपाति निकाय तीहं माहि ‘तक्षेमि प्रमित’
10 छईं । किमउं अर्थु ! सोल जोयण ऊंचपणि ‘तानि भणितानी’ ति ति चैत्य भणियां तीर्थकर गणधरहं
कहियां ॥ तथा पंचवीस जोयण लांबपणि, सार्द्ध द्वादश जोयण पिहुलपणि छईं । तीहं सवहो माहि
अष्टोत्तरगत अष्टोत्तरसउ जिनप्रतिमा छईं ॥८॥

‘एष्टिः सभासु पंचसु’ इति । पूर्वोक्त जि छईं पांच पांच सभा तीहं तणां द्वारहं त्रिन्हि त्रिन्हि
जि छईं रूप तिहां छईं द्वादश द्वादश प्रतिमा । धार पंचउं साठि ति साठि प्रतिमा । अनइ वीसउं सउ
15 दिव जिमभवन माहि । यथा-

अष्टोत्तर गमारा माहि, बारह विंश स्तूप त्रय तणां सर्वई मिलीयां वीसउंस्तउ । अनइ साठि सभा
तणां इमी परि भयनि भयनि प्रतिमा तणउं असीसउ वांडउं ॥९॥

अथ भवनपाति विंश प्रमाणु कहियइ-
‘द्व्यधिकानि च दशकोटी शतानी’ति । त्रिहुं करी अधिकदश कोटि सईं । किसउ अर्थु ! तेह

20 कोटिमरं, इयुणतपर कोटि, साठि लाख विंश, सर्व भवनगत छईं ॥१०॥

§615) अथ द्यंतर नगरगत चैत्यमानु कहियइं । नव जोयण ऊंचपणि, सार्द्धद्वादश जोयण
लांबपणि, छ जोयण पदू गाऊ पिहुलपणि, द्यंतर नगरहं माहि चैत्य छईं ॥११॥

‘त्रिमुशानी’ नि सुगमा ॥१२॥

‘ज्योतिष्केष्विति । ज्योतिर्निकाय माहि, ‘विसंख्य’, किसउ अर्थु ! असेग्यात जिनालय छईं नि
25 पुष त्रिदशमाला देवनिकाय तेह ‘महित’ पुजित छईं । ‘तेष्वप्यसंग्यसंग्या’ इति । ‘अपि’ शम्भु
समुधार अर्थु । न केवलं द्यंतरगत असेग्यात छईं तीहं माहि असीसय असीसय जिनप्रतिमा मायि करी
जिनप्रतिमा पुन असेग्यात संग्यासंगहं महाबुद्धिमंतहं पंडितहं ‘स्तुताः’ किसउ अर्थु ! कथिनाः ॥१३॥

§616) अथ वृषिर्वास्थिनी चैत्य वादियइं । ‘दशकल्पे’ति । ‘त्रिर्वीरे’ति । ‘नंदीश्वरे’ति
मौषमेद १, ईगानेद २, सनकुमारोद ३, माहेद ४, व्रजोद ५, लांतकेद ६, महाशुकेद ७, महेश्वरोद ८,
30 शालनेद ९, अश्वपुनेद १०, इमां नामहं छईं दशकल्प त्रियामीदं दश देवलोक तणा दश इंद । तीहं दशही
इंदहं तणा चकारि चकारि लोकपाल सुरदेहउचकरं चियालीम लोकपाल देव । तथा ‘शक्रेमान
मरिच्य’ इति । मौषमेद ईगानेद तणां आउ आउ अदमहिणी । आउ दूणउं सोल तीहं इंद्रादिकहं तणी
यथाभेद दश विद्यार्थीम सोलम संख्यात छईं शकधारी नि पुन सर्व संख्या करी छामट्टि छईं तीहं
महं । १४॥

25 ‘द्विदश’ वि दश दश. वीमसंख्य भवनवर्तीद धर्मोद १, वार्थोद २, धरजोद ३, मृतानेद ४,
वेणुनेद ५, वेणुनावेद ६, हरिकानेद ७, हरिकानेद ८, अग्निनेद ९, अग्निनाथेद १०, पूर्णेद ११.

[514] 1 R. 4. 1. 1. 2 R. 1. 1. 3 R. 1. 1. 4 R. 1. 1.

[516] 1 R. 1. 1. 2 R. 1. 1. 3 R. 1. 1.

{616} ८९१-८९४

विशिष्ट १२, जलकोट १४, जलप्रभेद १४, अमितगतींद्र १५, अमितयाहनेंद्र १६, बेलेंद्र १७, प्रभंजनेंद्र १८, घोषेंद्र १९, महाघोषेंद्र २०, इसां नामहं करी प्रसिद्ध । अनर अटारोत्तरसुत तीहं नी अग्रमहिणी देवी । यथा असुरेंद्रहं चमखालि बिहु रहइ पांच पांच अग्रमहिणी । शीकां अटारहोत्तर रूइ छ छ अग्रमहिणी । सर्व मीलनि एकुसुत अटारोत्तर । तथा तीहं तणा असी लोकपालदेव । सर्वमीलनि विसइ अटारोत्तर तीहं तणी राजधानी हुयइ । पाडिली छासटि राजधानी । अनइ विसइ अटारोत्तर राजधानी ए एकडी ४ माहि जि देवलोक तणा देव तीहं तणी राजधानी माहि चैत्य पुण देवलोक चैत्यसमान । जि भयनपाति देव तीहं तणी राजधानी माहि पुण जेवडां भयन माहि चैत्य छइ तेवढाई जि छइ । तिणि कारण किहं ' स्व विमान भवनजिनयुद्ध समान ' स्व आपणां छइ विमान अनइ भयन तिलां छइ जिनि कारण किहं ' स्व कीरि समाप्तु ' अंचामि ' चैत्यानां सयडुणु चउरासी करी संयुक्तु चैत्यहं तणं ' अंचामि ' भायपुजा स्तोत्र १० स्तुति कर्णनादिक तिणि करी पूजउं । तथा विद्याधर नरेसर सुरसर विराचज्जमान छइ दिव्यकुसुम कुंकुम कर्पूर कृष्णगुण मृगमद चंद्रनाना दैवद्यादिकहं करी दिव्यपूजा तेह तणइ अनुमोदनि अनुभवनि रूप दिव्यपूजनि करी पुण पूजउं । १६ ॥ ' नंदीश्वर ' इति-नंदीश्वर नामि आउमइ द्वीपि भावनचैत्य । यथा—

पुन्रदिशि देवमणो १ निच्युजोओ य २ दाहिणदिसाप ।
अवरदिसाइ सयंपभु ३ रमणिज्जो ४ उत्तरे पासे ॥

{८९१} 15

इसा वचनइतउ पूर्वदिशि देवमणु इसर नामि देवकां चउरासी सहस्र जोयण ऊंचउ दुससहस्र जोयण मूलविक्षखंधु अंजनगिरी छइ । एवडां ई जि दक्षिण दिशि नित्यायोतु इसर नामि अंजनगिरी छइ । इस् जु पश्चिमदिशि स्वयंपभु इसइ नामि अंजनगिरी छइ । उत्तरदिशि रमणिज्जु इसर नामि तेवढाई जि अंजनगिरी छइ । चउहं अंजनगिरी चउहं दिशि देवकां लातु लातु जोयण जउ जाइय तउ तिलां लास लास जोयणप्रमाण चंद्रमंडलाकार सहस्र जोयणावगाह चत्तारि पुष्करिणी छइ । एवकार सोल २० पुष्करिणी । यथा—

नंदिसेणा य १ मोहा य २ गोयुग्मा य ३ सुनंदा ४ ।
नंदुचरा य ५ नंदा ६ सुनंदा ७ नंदिबद्धणा ८ ॥
महा ९ विसाला १० कुमुया ११ वारसी पुंडरीगिणी १२ ।
विजया य १३ वेत्रयंती १४ जयंती १५ अपराजिया १६ ॥

{८९२}

नंदिसेणा १, अमोघा २, गोस्तमा ३, सुदरंता ४, नंदीचरा ५, नंदा ६, सुनंदा ७, नंदिबद्धंता ८, महा ९, विदाला १०, कुमुदा ११, पुंडरीकिणी १२, विजया १३, वेत्रयंती १४, जयंती १५, अपराजिता १६, इसां नामहं करी 'आजवी' । तीहं सवहीं पुष्करिणी हुंता चउहं दिशि पांच पांच मइ जोयण जउ जाइय तिलां पांच पांच सइ जोयण बिहुलां लातु लातु जोयण लांभा एक एक भावि करी चत्तारि वन खंड छइ । तत्र पूर्वदिशि' अशोकवयु १, दक्षिणदिशि' सतपर्णवयु २, पश्चिमदिशि' वंपकवयु ३ उत्तरदिशि २० सर्वांतचूतवयु ४ तथा च भणित—

{८९३}

पुण्येण असोमगवणं दाहिणउ ताण सत्तवत्तवणं ।
चंपावणमपरेणुत्तरेण सत्वाणुपुपवणं ॥
तीहं सोलहीं पुष्करिणी मध्यि एकु एकु दक्षिणुतु पत्थाकार देवकां चउमडिसहस्र जोयण ऊंचउ दुससहस्र जोयण मूलविक्षखंधु पर्वत छइ । एवकार सोल दक्षिणुतु पर्वत छइ । तउ पाछइ चउं अंजनगिरी ३५ पर्वतहं सोल दक्षिणुतुपर्वतहं ऊपरि एक एक चैत्यभावि करी मीम चैत्य छइ । चउहुं विदिमि पुष्करिणी अंतगलि वि वि रतिकर पर्वतहं सहस्र सहस्र जोयण ऊंचपनि झालरी नर आकाति छइ । तीहं ऊपरि पुण

एक एक चैत्यभावि करी घृषीस चैत्य छइं । इमी परि गीम अना घृषीम पावन घृषीम नंभरी छइं । रुचकु इसइ नामि तेरमउ द्वीपु छइ । बुंउलु इमा नामि इगारमउ द्वीपु छइ । जिनं चैत्य छइं । एवं सर्व संमीलनि कीधइ साठि घृषीय नुयइं । ए माठि चैत्य मउ मउ जोयण पंचास पंचास जोयण विहुलपणि बहत्तारि बहत्तारि जोयण जंनपणि छइं ॥ १७ ॥

‘जिन भवने’ ति-जिनभवन तगी माठि चतुर्मुंगा चतुर्गार । गीमां गि के जदुं गीमिने अधोलोकि चैत्य छइं ति सर्वइं त्रिमुख त्रिद्वार छइं । ‘उभयज’ ति-त्रिमुगिदिं, चतुर्मुगिदिं । सुखि सुखि । मुखमंडप १, अशाटकमंडप महिन प्रेशामंडप २, मणिपीठ न्यूर ३, मणिपीठ चैत्यतरु ५, पुष्कारिणी लक्षण ६, छ छ पदार्थ छइं ॥ २८ ॥

‘त्रिमुखे’ इति । त्रिमुखिदिं चतुर्मुगिदिं चैत्य अद्रोत्तरगत अद्रोत्तरगत जिनप्रतिमा नमस्करउं । ‘रूपप्राप्ति’ इति । रूपगत त्रिद्वारि चैत्य द्वाग प्रतिमा चतुर्गारि चैत्य माल प्रतिमा नमस्करउं । ‘यथासंख्यं’ ॥ अनुकामि करी ॥ १९ ॥

§617) ‘प्राच्यामि’ ति । जि के शाश्वत चैत्य विन्ध्य माहि छइं तीहं सविहुं गमार पूर्वाभिमुख सत्तावीस श्रीरूपम नाम जिनप्रतिमा छइं । दक्षिणाभिमुख सत्तावीस श्रीवर्द्धमान नाम प्रतिमा छइं । पश्चिमाभिमुख सत्तावीस श्रीचंद्रानन नाम जिनप्रतिमा छइं । उत्तराभिमुख १६ धारिपेण्य नाम जिनप्रतिमा छइं । एवं सत्तावीस चउकु अद्रोत्तर मउ जिनप्रतिमा गडभंगुहयन तथा तिणिहिं जि प्रकारि ‘स्तूपगत’ स्तूप वर्त्तमान प्रतिमा पुण जाणिवी । किसउ अर्थुं पूर्वाभिमुख क्रपमजिनप्रतिमा । दक्षिणदिशि श्रीवर्द्धमान जिनप्रतिमा । पश्चिमदिशि श्रीचंद्रानन जिनप्रतिमा । दिशि श्रीधारिपेण्य जिनप्रतिमा एक एक जाणिवी ॥ २० ॥

‘मेरुपर्वशीतरेके’ ति-एकु जंघुद्वीपि वि धातुकी खंडि, विपुष्कारवर द्वीपार्द्ध, एवं पांव मेरु पर्वत छइं ! एक एक मेरुपर्वति चत्तारि चत्तारि वन छइं यथा—

भूमिइं भद्रशालं मेहलजुपलंमि दुन्नि रम्माइं ।
नंदण सोमणसाइं पंडगपरिमंडियं सिहरं ॥

[८९५]

भूमितलि भद्रशाल इसइ नामि वनु मेहल जुयालि किसउ अर्थुं ? मेखला पर्वत मध्यभाग कहियं । तिहां नंदनवन सोमनस्यवन इसां नामहं करी वि वन छइं । ‘पंडगपरिमंडियं सिहरमि’ ति । पंडकु इमा नामि वनु मेरुशिखरि छइ । तीहं चउहं भद्रशालादेकहं वनहं माहि चउहं दिशि एक एक चैत्य भावि चत्तारि चत्तारि चैत्य छइं । एवंकारइ एक मेरुप्रतिवद्ध सोल चैत्य छइं । एवं अन्य मेरुचउक संख्यं सोल सोल चैत्य छइं । इति सोल पंचउं असी इसी परि पंचनेपगत असी चैत्य हुयइं । इसीपरि एक अने चैत्यहं तणी । ‘मेरुपर्वशीतरेके’ इति । महाविदेह क्षेत्र माहि विजयांतराल वर्त्तमान सोल वक्षस्का री । विदेहगत माल पंचउं असी इति असी वक्षस्कार पर्वत हुयइं । तिहां एक एक चैत्य भावि चैत्यहं तणी । ‘वर्षे नगेपु त्रिंशदि’ ति ।

हिमवंत १ महाहिमवंत २ पञ्चयानि सद ३ नीलवंता य ४ ।
रुपी ५ सिहरी ६ एते वा सहरगिरी गुणेपच्वा ॥

[८९६]

उद्वलसोभयपांत सुवर्णमय देवकां जोयणसय समुच्चु हिमवंत पर्वतु भरतक्षेत्र ए

एण समुच्चु सुवर्णमयु पूर्वापरसमुद्वलसोभयपांत महाहिमवंत पर्वतु हेमवत क्षेत्र पर

१ दिमि । २ B. B'. इमी ।

पूर्वापरसमुद्रलम्बोभयप्रांत चत्तारिसदं जोयण समुच्चु रक्तरत्नमयु निपधु नामि पर्यंत हरिर्वर्ष-
क्षेत्र परभागवर्त्ती छंद । महाविदेदक्षेत्र परभागवर्त्ती निपध समानु नीलमणिमयु नीलवंतु पर्यंत छंद ।
महाहिमवंत समानु रम्यकक्षेत्र परभागवर्त्ती रुक्मी पर्यंत छंद । हिमवंत समानु ऐरण्यवतक्षेत्र परभाग-
वर्त्ती शिपरी पर्यंत छंद ।

इति हिमवंत १, महाहिमवंत २, निपध ३, नीलवंत ४, रुक्मी ५, शिपरी ६, इसां नामहं छ वर्ष-
धर पर्यंत जंबूद्वीप माहि बार धातुकी खंड माहि छंद । बार पुष्करवर द्वीपार्द्ध माहि छंद । एवं कारइ वीस
वर्षधर पर्यंत सर्व संख्या करी हुयइं । तिहां एक एक चैत्यभावि करी वर्षनगहं वर्षधर पर्यंतहं वीस चैत्य
हुयइं । ' विंशतिरिमदंतकेयु तथे गति । एक एक मेरु पर्यंत विविदिशि वर्त्तमान गजदंतकार चत्तारि चत्तारि
गजदंत पर्यंत छंद । पंचमेरुप्रतिबद्ध वीस गजदंत पर्यंत हुयइं । तिहां एक एक चैत्यभावि करी वीस
चैत्य गजदंत पर्यंतहं हुयइं ॥ २२ ॥

10

' चत्तारी ' ति-धातुकीखंड अनद पुष्करवर द्वीपार्द्ध रहइं द्विखंडकिरण हेतुक जिसा ' इयु ' बाण
हुयइं इसा सत्याभिधान चत्तारि इयुकार पर्यंत छंद । तिहां एक एक चैत्यभावि करी चत्तारि चैत्य छंद ।
' मनुजोत्तरे च चत्तारी ' ति - मानुषक्षेत्र बलयाकार छइ मानुषोत्तर पर्यंतु तिणि चउहुं दिशि एक एक
चैत्यभावि करी चत्तारि चैत्य छंद । ' मेरुप्यदीतिरेका ' ईहां लगी जि के चैत्य कहियां तीहं सवहीं तणी
संख्या बिसईं अटारोत्तर चैत्य हुयइं ति हउं ' नमामि ' भावि करी वांइउं ॥ २२ ॥

15

' एतेषामो ' ति - ईहं बिहुं सईं अटारोत्तरहो तणउं प्रमाणु इसउं सिद्धांत माहि उक्तउं कहिउं ।
छत्रीसजोयण ऊंचपणि, पंचासजोयण लांचपणि, पंचवीसजोयण पिहुलपणि ॥ २३ ॥

अथ स्थानक दशक चैत्यसमानता निमिन्नु कहियइ ।

§618.) ' दिग्गज चत्वारिंशदि ' त्यादि ॥ आर्या पांच ॥

एक एक मेरु प्रतिबद्ध भद्रशालवन वर्त्तमान गजसमान शिशि'विदिशि' भावि करी आठ आठ 20
दिशि विदिशि रहइं प्रभय उत्पत्ति हेतु दिग्गजपर्यंत छंद । ति सव्यइ मिलिया आउपंचउं चियालीस
दिग्गजपर्यंत हुयइं । तिहां एक एक चैत्यभावि करी चियालीस चैत्य हुयइं ॥ १ ॥

' सुमेरु बृलासु पांच ' पांच मेरुपर्यंत खंडंधिनी पांच बृला तिहां एक एक चैत्यभावि' करी
पांच चैत्य हुयइं ' दीर्घेषु वेतादयेषु वे ' ति । दीर्घ वेतादय सतरिसउ यथा । सादु सउ विजयगत
भरतेवतगत दस दस सव्यइ मिलिया सतर सउ । तिहां तिहां एक चैत्यभावरसउ सतर सउ चैत्य हुयइं 25

' जंबूतपत्रेक ' ति उक्तकुं माहि पृथिवीविकाररूपु जंबू इसइ नामि सुवर्णरत्नमउ वृषु छइ । जेह नइ
नामि जंबूद्वीपु कहियइ । तेह ऊपरि एकु चैत्यु छइ । तेह जंबू नइ परिवेषि पावतियां अटोत्तर सउ
जंबू वृषु छइ । तीहं ऊपरि पुण एक एक चैत्यभावि करी अटोत्तर सउ चैत्य हुयइं । तीहं जंबू बाहिदि
परिवेपाकार वनखंडु छइ । तेह वनखंड माहि दिशिविदिशि एकैकभावि करी आठ चैत्य छंद । एवं कारइ
एक जंबू परिवेपरि एकु सउ सतरदोत्तर सउ चैत्यहं तणउं छइ । ' शाल्मलिमुख्येषु निखिलमवसथं ' ति 30
एवं इसीं परि देवकुं प्रभुतिकहं माहि शाल्मलिमुख्य जंबू सरीखा नयवृक्ष नयकुं गत छइं जिम उत्तरकुं
माहि पेशानदिशि जंबूवृषु छइ तिम देवकुं माहि नैऋतदिशि शाल्मली वृषु छइ इसीं परि धातुकीखंड
पुष्करवर द्वीपार्द्ध माहि वि वि मेरु प्रतिबद्ध कुं छंद । एवं आठ ए, वि पाछिलां, सव्यइ मिलिया दस
कुं हुयइं । तिहां एक एक वृक्षभावि करी आठ वृक्ष ति हुयइं । तिहां पुण जंबूवृक्ष जिम सतरदोत्तरसउ
सतरदोत्तरसउ चैत्य छंद । एवं कारइ कुं दसाकि श्गारसईं सतर चैत्य छंद । ४ ॥ २६ ॥

35

‘कांचनगिरिषु सहस्रामि’ति—महाविदेह माहि सीता सीतोदा नाम नदी मध्यभाविष्या देवकु
उत्तरकुरु गत पांच पांच द्रह छई ॥ तथा च भणितं—

सीया सीओयाणं बहुमज्जे पंच पंच हरयाओ ।

उत्तरदाहिण दीहा पुञ्जावरवित्थडाइ णमो ॥

[८९७]

5 सीता सीतोदा बहुमध्य उत्तरकुरु माहि सीता बहुमध्य भाविष्या पांच द्रह । देवकुरु माहि सीतोदा बहुमध्य पांच द्रह । तत्र उत्तरकुरु माहि नीलयंत इसइ नामि छइ गजदंत परंतु तेह तणा समीप हंता नीलयंत द्रहु १, उत्तरकुरुद्रहु २, चंद्रद्रहु ३, ऐरावतद्रहु ४, माल्यवंतद्रहु ५, इसां नामहं प्रसिद्ध पांच द्रह छई । तथा देवकुरु माहि विद्युत्प्रभाभिधान गजदंतपर्यंत समीप हंता निपधद्रहु १, देवकुरु द्रहु २, सूरद्रहु ३, सुलसद्रहु ४, विद्युत्प्रमद्रहु ५, इसां नामहं प्रसिद्ध पांच द्रह छई । ए वसइ द्रह उत्तर 10 वृक्षिण वृषिर्घ, पूर्व पश्चिम वृधुल छई । ईहं वसहो द्रहहं हंता वसे वसे जोयणे पूर्वदिशि पश्चिमदिशि वसादन्न कांचनगिरि छई । सर्व एक महाविदेह माहि विसई कांचनगिरि छई । पांचहो महाविदेह तणा मेलिया हंता सहस्र संख्य कांचनगिरि हुयई । तिहां तिहां एक एक चैत्य भावइतउ सहस्र कांचनगिरिगत चैत्यहं तणउ हुयइ ॥ ५ ॥

‘त्रिशतीसाशीतिरस्ति कुंडगता’ । साठि सय विजय माहि वि वि नदी छई जेहे करी विजय 15 पट्टवंड नीपजई । ति सव्यइ मेलित हंती त्रिन्हि सई वीसां महानदीय तणां नीपजई । तथा—पांच महा-विदेह माहि बारबार विजयांतरालगत महानदी छई । बारपरंबउ साठि नदी हुयई त्रिन्हि सई वीसां अनह साठि, त्रिन्हि सई असी, नदी हुयई तीहं तणा प्रपात कुंड त्रिन्हि सई असी हुयई । तिहां एकैक चैत्यभावइतउ त्रिन्हि सई असी चैत्य हुयई ६ ।

‘विंशतिरिह यमकस्थे’ति—

देवकुराए गिरिणो विचित्रकूडो य चित्रकूडो य ।

दो जमगपव्ययवरा विइंसया उत्तरकुराए ॥

[८९८]

विचित्रकूट १ चित्रकूट इसां नामहं करी प्रसिद्ध देवकुरु माहि वि यमकपर्यंत छई । उत्तरकुरु माहि पुण वि यमकपर्यंत छई । पर्यं अपर सर्व देवकुरुत्तरकुरु माहि वि वि यमक पर्यंत छई सर्व संख्या करी वीस यमक पर्यंत छई । तिहां एकैक चैत्यभावइतउ वीस चैत्य हुयई । ७ ।

25 ‘सुवृत्तवैताड्यगासैवे’ ति । हैमवत १, हरिवर्ष २, रम्यक ३, ऐरण्यवत ४, नाम जंबूद्वीपगत चत्तारि गुमलिया नां क्षेत्र छई तीहं माहि एक एक भावि करी वृत्ताकार चत्तारि वृत्तवैताड्यपर्यंत छई । धातुकीखंड पुष्करवर द्वीपार्द्धगत वि वि हिमवंत वि वि हरिवर्ष वि वि रम्यक वि वि ऐरण्यवत क्षेत्र छई । तिहां पुण एकैक वृत्तवैताड्य भावि करी सोल वृत्तवैताड्य छई । चत्तारि जंबूद्वीपगत वृत्तवैताड्य अनइ सोल धातुकीखंड पुष्करवर द्वीपगत एवं कारइ वीस वृत्तवैताड्य पर्यंत छई । तिहां एकैक चैत्यभावइ- 30 तउ वीस चैत्य छई । ८ ।

‘पद्मादिषु चेति—पद्मद्रहु १, महापद्मद्रहु २, तिमिच्छिद्रहु ३, केसरीद्रहु ४, महापुंढरीकद्रहु ५, पुंढरीकद्रहु ६, छ द्रह ए । अनइ दस द्रह पूर्वहि महाविदेह माहि कहिया, सव्यइ सोल द्रह जंबूपट्टी माहि छई । तथा धातुकीखंड पुष्करवर द्वीपार्द्ध माहि वृत्तवैताड्य द्रह छई, सव्यइ मिलिया असी द्रह पद्मादिषु हुयई तिहां एकैक चैत्यभावइतउ वृथिवीविकार कमलोपरि वर्तमान असी चैत्य छई ॥ ९ ॥

'गंगाद्रिपु सप्ततिश्च चैत्यानी' ति । गंगा १, सिंधु २, रोहितांसा ३, रोहिता ४, हरिकांता ५, हरिसलिला ६, सीतोदा ७, सीता ८, नारिकांता ९, नरकांता १०, रूप्यकूला ११, सलिला १२, सुवक्त्रकूला १३, रकयती १४, 'इसां नामहं करी प्रसिद्ध चक्रद महानदी जंबूद्वीप माहि छईं । पातुकांतं पुष्करवर द्वीपान्तं माहि इसां ईं जि नामहं अडावीस महानदी छईं । सट्टर मिलिया गंगादिक सत्तरि महानदी हुयईं तीहं तणां छईं प्रपातकुंड तीहं माहि प्रथिथी विकार छईं कमल । तीहं ऊपरि ऊपरि एकैक चैत्यमावि करी गंगादिकहं महानदीयहं माहि सत्तरि चैत्य हुयईं । स्थानक वृदाकस्थान्यपि 'समानि मानेन चैमानि' दिग्गजचत्वारि इहां हुंता जि अनुकामि करी दस स्थानक तणां चैत्य कहियां ति सगलाईं मानि प्रमाणि करी समान छईं ॥ २८ ॥

तेजु जु समानु मानु कहियइ । 'चत्वारिंदादि' ति - चक्रदसईं चियाल धणुह ऊंचपाणि, एकु कोसु आयाभि छांचपाणि, अर्द्धकोसु पिहुलपाणि । ए दसहीं स्थानहं तणी चैत्यमाला देवघूह परंपरा 10 प्रमाणि करी छईं ॥ २९ ॥

अथ नंदीश्वरे द्वि पंचाशत् ईहां लग्नी जि के भूमिगत चैत्य कहियां तीहं तणी सर्ग संख्या कहियइ । 'पंचदासी' त्यादि । त्रिंदि सहस्र पांच सईं सतरहोत्तर संख्या करी भूमिगत चैत्य हुयईं । अथ भूमिगत चैत्यसंख्या संख्याकरणपूर्वक आंचियईं । 'द्वाविंशतिरि' ति । चत्तारि लाख बावीस सहस्र वि सईं असी विंब । तिर्यंग्लोक माहि सईं भक्तिमावि करी आंचियईं पूजियईं । अथ ऊर्ध्वलोक चैत्यमानु नंदीश्वरचैत्य 15 समानता करी कहियइ । 'कल्पेयु जिनावासा' इति । सौधर्मादिकहं बाटहीं कल्पहं देवलोकहं 'जिनावासा' जिनमवन । नंदीश्वरि द्वीपि जेययां पूर्वहिं कहिया तेवढाईं जि जिनावासा छईं ॥ ३१ ॥

{619} अथ देवलोक चैत्यसंख्या कहियइ ।

'सतनवतिरि' ति—चउरासी' लाख सत्ताणयद सहस्र त्रेवीने करी अधिक जिम पूर्वहिं व्यक्ति करी मणियां तिम सुल्लोके ऊर्ध्वलोकि वारेईं देवलोकें नवर्मायेयके पांचे पंथुत्तरे चैत्य छईं । अथ तीहीं 20 जि चैत्यहं तणा जि छईं विंब तीहं तणउं प्रमाणु कहियइ ॥ ३२ ॥

'कोटीशतमि' ति—एकु कोटिसउ घायनकोटि चउराणवइ लाख चउरासी सहस्र सातसईं साठि करी अधिकविंब ऊर्ध्वलोकि सर्वसंख्या करी हुयईं ॥ ३३ ॥

अथ त्रिभुवनचैत्यसंख्या कथनपूर्वक वांचियईं । 'कोट्योष्टे' ति—आठ कोटि सत्तावन लाख 25 पांचसईं चियाल त्रिभुवन चैत्यावलि । त्रैलोक्यचैत्यपरंपरा सर्वसंख्या करी वांचउं ॥ ३४ ॥

{620} अथ प्रतिमास्वरूपु निरूपियइ ।

'कनकमयी' ति—शाश्वतजिनप्रतिमा तणी गात्रयाष्टि कनकमयी जात्य सुवर्णमयी सहजि हिं छईं, इसउं नहीं किणहिं घडी । 'करवरणनखादिकापरेऽव्यया' इति । 'आदि' शब्दरतउं' बीजाईं अथयव जाणिया । 'रक्षादिक वर्णरत्नमया' इति । आदि शब्दरतउं कृष्णादिक वर्ण जि छईं रत्न तन्मय जिसा हुयईं तिसा सत्तहिं हिं छईं । यथा कनकमयी गात्रयाष्टि, लोहिततास रत्नपरिमेक अंक, रत्नमय मन्त्र, 30 तपनीयमय पाणिपादतल, रिष्टरत्नमय रोमराजि, तपनीयमय नाभिचूचक, श्रौतस जिडा तापु तल,

618) 4 Bh. combines गलिला सुवक्त्रकूला and adds रक्षा as the fourteenth; it may be more appropriate. It is a later marginal addition in Bh. 5 Bh. स्थान ।

{619} 1 Bh. चउरासी । 2 Bh. वारे ।

{620} 1 Bh. drops words between आदिशब्दरतउं । 2 B. omits हिं ।

रिष्टरत्नमय मगधु^१, शिलाप्रयाल^१ मणियई परवालां तन्मय ओष्ठ, स्फटिकरत्नमय दंत, लोहिताक्ष रत्न-
 पत्रिंशः कमकमय नासिका,^१ रिष्टरत्नमय अक्षिपत्र, रिष्टरत्नमय नेत्रतारिका, रिष्टरत्नमय मूषह्व-
 पत्तमयी शीर्षपटी, कमकमयी केदाभूमि, रिष्टरत्नमय भस्तककेश, एवं इती परि सवोवयव स्वरूप
 सिद्धतामिति ज्ञानियते ।

§(621)^१ ईता मि अर्थं सूचकु रत्यनु लिखियं ।

शीर्षाधिनापमृपुर्षं विश्व यद्दमानं,
 चन्ताननं रामगिनम्य च वारिपेण्यम् ।
 तेषां सनातनगिनायतेषु विम्व-
 रूपस्वरूपपरिवीर्षनमादधामि ॥

[८९९]

विम्बाणि पंचशतचापगितानि तेषा-
 म्भुक्तभवेति विम्वयानि सुरस्थितानि ।
 प्रपैकमासतगितानि पराणि सप्त-
 ईर्त्तांश्चिभूताति स्वरिततरदई स्तुयानि ॥

[९००]

तन्भुक्तभाभल्लिहा कमकात्मिकास्ति
 मौलेधेदी प्रवत्रं जपथी चकारि ।
 केशाननी कमककास्थमयी मसस्ता
 केशावशिष्टररिष्टमयाः सपस्ताः ॥

[९०१]

भुगारिकाशिष्टिकाः कलिरेष्टमभ्यः
 जोगामयिभ्रकनकाण्ययी च वासा ।
 एतेऽङ्गमात्राश्चकृन्ममयाध दन्ता
 इत्येवम् ॥ ममयिष्टुमरम्यरूपाः ॥

[९०२]

सर्वानि विष्टयणिमर्ममयानि निजा-
 त्कामनास्तुतयपूवकनाभिदेशाः ।
 इत्येवम् ॥ नतयावल्लयध दीना
 ममयिष्टुमरम्यरूपाः तेषाम् ॥

[९०३]

ममयिष्टुमरम्यरूपाः कलिरेष्टमभ्य-
 ममयिष्टुमरम्यरूपाः श्रुमन्ति ।
 रोमारथी श्रुपि गिष्टमयी गिष्टा
 रिष्टाजने ममयिष्टुमरम्यरूपाः ॥

[९०४]

इष्टु ममयिष्टुमरम्यरूपाः
 दे पारपेर्त्ता

(620) 3 le. मय्यु
 (621) 1 Bh. 233

द्वे स्वर्णकुण्डपरयोः करिणोरपि द्वे
द्वे यक्षयोश्च पुरतो वरभूतयोर्द्वे ॥

[१०५]

इत्थं शाश्वतचैत्यविम्बपटलीरूपस्वरूपं मया
मूत्रे साधुमताङ्घ्रिकाभिराभितः संकीर्तितं फीर्तितम् ।
येऽद्भः श्रद्धधते सदाभिदधते तेषां भवत्यतिके
तूर्णं श्रीतर्हणप्रभाभिरुचितं श्रेयः परमदुर्गम् ॥

[१०६]

॥ इति शाश्वत जिनविम्ब स्वरूप निरूपकं स्तवनं समाप्तमिति ॥

‘मणिपटि’ ति आयाद्वयं सुगमं ॥ नवरमत्र सर्वं प्रतिमापरिकर स्वरूप कहिउं छइ ॥३५॥

§622) अथ सर्वं त्रैलोक्यगत प्रतिमाप्रमाणु कहियइ ॥

‘कोटिप्रते’ ति । पनरुकोटिसई बइतालीस कोटि अट्टायनलाल सन्नसङ्घिसहस्स चियालीसे करी 10
अधिक त्रैलोक्य माहि प्रतिमा ‘सम’ समस्त ‘नित्य’ सदा भक्ति करी नमस्करउं अनेरई जि के तीर्थ
छइं ति सगलई नमस्करउं ‘प्रमदात्’ अतिसमाधि संपन्न परमानंद वशाइतउ ॥ ३९ ॥

‘प्रातरि’ ति- ‘प्रातः’ प्रभात समइ प्रमोदइतउ समाधि महानंइइतउ ‘पुलकांकित’ रोमांचित
छइं ‘काययष्टि’ हर्ष रोमांङ्कुरित सनुलता जेह तणी सु ‘प्रातः प्रमोद पुलकांकित काययष्टि’ पुरुष
कहियइ । पुंनरपि किसउ ‘तोषास्तुवाह’ ति- ‘तोषास्तुवाह’ कहियई हर्षास्तु जलप्रवाह तीहं करी 15
‘विमलीकृत’ पवित्रीकृत ‘हृष्ट’ विकसित ‘हृष्टि’ लोचनु जेह तणी तोषास्तुवाह विमलीकृत हृष्ट हृष्टि
कहियं । इसउं हतेउं सु भव्यु जीवु ‘स्तोष्यते’ स्तायिसिइ । कउण रहई । इत्याह- ‘सकल शाश्वततीर्थ
राजस्तोम’ समस्तशाश्वततीर्थकर विवकईनु । सु जिनाधिराज तणी ‘रमा’ लक्ष्मी ‘गमिष्यति’
लहिसिइ ॥ ४० ॥

‘इत्थं स्तुते’ ति- ‘इत्थं’ इगि प्रकारि ‘स्तुत’ संकीर्तित कियइ । ‘धृते’ ति - धृत सिद्धांत 20
तेह नंद विपद समाहित सावधानु, इणिई जि कारणि शांत कपायोदय रहितु चिनु मनु जीहं तणउं हुयइ
ति ‘धृतसमाहितशांतचित्तं’ कहियइ । ति कउणि? ‘विद्याधरै गणधरै’ ति - विद्याधारण जंघा-
चारणादिक महकंषि । तथा गणधर गच्छधारी श्रीगौतमादिक अथवा गीतार्थ विद्याधर धरणीधर ।
विद्याधर गणधर सूरिवर । तेहे न केवलं पुण कउणि? तेहे ‘असुरैः सुरैश्च’ ति देवहं दानवहं ‘स्तुत त्रैलोक्य-
शाश्वत जिनप्रतिमाः’ ॥ सुगमं ॥ ‘मद्यं दिदांतु तदुपमभयाइदो स्वां’ । ‘तदुप’ नवी छइ ‘प्रभा’ 25
कांति, तिणि करी उपलक्षित ‘स्व’ आपणी हृष्टि ‘मद्यं’ मू निमित्तु ‘दिदांतु’ दियउं ॥ ४१ ॥

॥ इति शाश्वतचैत्यजिनविम्बमानस्तवनविवरणं समाप्तं ॥

§623) अथ सर्वसाधु वंदननिमित्तु कहइ-

जावति फेइ साहू भरदेरवए मदाविदेहे य ।

सन्नेसु तेसु पणओ तिविहेण तिदेह विरयाणं ॥

[१०७ सुगमा ॥] 30

नयरं ग्रथम संहनानि उक्कृष्टपदि । पनरह कम्मभूमि, पांच भरत, पांच पेरयत, पांच महाविदेह,
लक्षण तीहं माहि नवकोटि केवलदानि साधुसंपदा, नवकोटिसहस्स वर हानदर्शनचरणधर साधु
संपदा । जंघन्यपदि विंकोटि केवलदानि साधुसंपदा, विंकोटिसहस्स वरसाधुसंपदा कहियइ ।

§622) 1 Bh. सातचित्त । 2 Bh. कउण as a correction over original कउणि । 3 Mss. place पुण
कउणि after देवहं दानवहं ।

§623) 1 Bh. omits वर ।

§624) इसी परि सर्वं चैत्यं सर्वं साधु वंदन्तु करी प्रतिक्रमणकाराः भ्रायकु आगमिद कालि सुभु
आसंसतउ हंतउ भणद ।

चिरसंचिय पावपणासणिय भवसयसहस्त मरणीए ।

चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ वोळंतु मे दियहा ॥

[१०८]

जिम बीज हंतउ अंकुर नीसरद, सूर्य हंतउ प्रभापूर विस्तरद तिम चउवीस जिण ऋणम
प्रसुल श्रीमहावीरायसान तीहं हंती कथा नीरारी । तीर्यं कर नामोच्चारण गुणोत्कीर्त्तन लक्षण यनन
पद्धति नीसरी 'चउवीसजिण विणिग्गय कहा' कहियइ । तिणि करी मे मूर रहइ वीह अहोरात्र योलउं
जायउं । ज चउवीस जिण कथा किसी छइ । 'चिरे' ति - चिरकालि प्रभूतममर संचित्तु ऊपाजिउं तु पाउ
तेह रहइ प्रणासिका केवणहारि । तिणिहिं जि कारणि ' भउसयसहस्त मरणीए ' भवलक्ष भ्रमणनिवारक ।

§625) अथ जन्मांतरिहि समाधिबोधि तणी भाशंसा कहइ ।

मम मंगलमरहंता सिद्धा साह सुयं च धम्मो य ।

सम्मादिट्ठी देवा दित्तु समाधिं च बोधिं च ॥

[१०९]

अहंत सिद्ध साधु श्रुत द्वादशांशु धर्मु चारिज्जपर्यु ए पांचर 'मम' मूर रहइ मंगल मांगलिक्य-
कल्प वत्तइ । 'सुयं च' ईहा च कारु छइ तेहतउ न पुण ए मूर रहइ मांगलिक्यद जि छइं लोकोत्तम पुण
छइं, शरण पुण छइं, इसउं जाणिवउं । ईहां धर्म माहि श्रुतलाम छइं पुण 'नाणकिरियाहिं मुक्खो' इसा
यचनतउ ज्ञानक्रिया विहुं मिलियाई जि हंता मोखु इसा अर्थे जाणाविया कारणि श्रुतग्रहणु पृथक् बोधउं ।
तथा' सम्यग्दृष्टिदेव अहंतभक्त सौधमंदादिक । अथवा चतुर्विंशति यज्ञयक्षिणी लक्षणा' 'दित्तु' दियउं
किसउं दियउं ! समाधि चित्त स्वस्थता कहियइ । बोधि भवांतरि सम्यक्त्वप्राप्ति सु समाधि अनइ बोधि
चि वस्तु दियउं । इति गाथार्थः ॥

§626) ईहां शिष्यु पूछइ । समाधि बोधि दानविपर सम्यग्दृष्टि देव समर्थ छइं कि नयी ! जइ
समर्थ नयी तउ प्रार्थना निरर्थक । अथ समर्थ तउ अभव्य दूर भव्य जि छइं तीही रहइं समाधिबोध
दियउं । अथ इसउं कहिसु' जि योग्य हुयइं तीहीं जि रहइं दियइं अयोग्य रहइं न दियइं । तउ योग्यता
ई जि समाधि बोधि कारणु छइ । इसउं एकांतवादी कहइं, स्याद्वादवादी भगवंतु । तय-एक एक नय तणउ
एकांति करी वाडु एकांतवाडु । यथा-योग्यता ई जि हंतउं काउ हुयइ । इसी परि सर्वं नयमयता करी
स्याद्वाद रहइं न योग्यता ई जि कारणु एकांतिहिं किंतु योग्यता कारणु इसउं कहियइ । तथा च 'स्याद्वाद-
शुद्धा सामग्री वै जनका' इति । जिम घट निष्पत्ति विपद माटी रहइं योग्यता हंतीहीं कुंभकार चक्र चीवर
द्वारक दंडादिक सहकारि कारण पुण हुयइं तिम जीव रहइं समाधि बोधि योग्यता हंती विज्ञविनासकता
भावि करी यक्षावादिक देव पुण भेतायीदिकहं जिम समाधि बोधिकारण हुयइं । इणि कारणि सम्यग्दृष्टि
देव तणी प्रार्थना निरर्थक नही ।

§627) अथ जीहं कारण लगी प्रतिक्रमणु कीजइ ति कारण कहइ ।

पडिसिद्धाणं करणे किञ्चाणमकरणे य पडिक्रमणं ।

अस्सइहणे य तहा विवरीयपरूवणाए य ॥

[११०]

प्रतिपिद्ध निवारित छइं सम्यक्त्व तणा शंकादिक अतीचार अणुव्रतादिकहं तणा बंधादिक
अतीचार तीहं तणइ करणि हंतइ । कृत्य छइं सामाईकादिक दिनकृत्य अथवा देवपूजा करणादिक नियम

§625) 1 Bh. omits. 2 Bh. omits.

§626) 1 Bh. कहिसिउ । 2 Bh. जनिहा ।

सीद्धं तज्ज अकस्मिन् हृत्त । तथा ' अस्मदात्ते '-निर्वाहं दुष्टं परावर्तयति शुभं विचारं तज्ज अस्मदात्ते' अयमप्यहं अकस्मिन् मासि हृत्त ' विवर्तय परावर्तय ' य' उन्मुखायै कदाचन विवर्तय प्रकृत्या न पुन मसीति जिम भूति भय परिग्राम काले हुय । जिम विवर्तय प्रकृत्या अस्मात्प्रादिना कर्त्तव्यं हृत्त प्रविशयतु कर्त्तव्यं हुय ।

5628) इति शिष्यु पुत्र-भायक इतं पमोदोदा देवा वा अपिहाय एत कि मीः एतः 5 इतं कर्त्त । जिम भायकि मीपायं मुन कन्दा म्वाभुं मय्यक मीमति हुय, मय्यक दिवा माहं अय धारय हुय, अलि तु निमित्तु कर्त्तव्य हुय अना मदा मुन परमंयु हया, मेत इतं पमोदपन विव किमय मायु अपिकाय कर्त्त ।

' एत हुय शिष्ये य जगता धर्मं पविशेह ' इत्यादि आद्य तन्ना अनुवाङ्मय तया भूर्त्त माहि पुन मीति । ' भो जिमहाय मायभो अह्मी पयइतं तु उतयार्त्त कर्त्त । पुत्रपै पाय ' ति । 10

5629) अय संभाररागपर परिग्राम परावर्तं जीवते इतं मसी ओरं मं देव संमदा । जिमि कारणि मयं जीय क्षामया जिमिमु भय-

सामेमि सत्ये जीरा मी जीरा मयंयु मे ।

मिपी मे सत्य भूयतु, वेवं मयन्न न केनाः ॥

[१११]

सय्यर जीय स्वभावं जिमि किर्त्तयि मु ऊरति परावर्त्त कर्त्तव्यं एत एतं मयः, कर्त्तव्यं अकस्मिन् 10 कर्त्त मयत्त' इत उभु । अस्मानिमिरावृत्तकीचनि हृत्त मं मयत्तं जीवते इतं पुर्वि विदा कर्त्तव्यं एत । सय्यर जीय म् दुह पेद्रि इतं मयत्तं मयत्त' । कोयु मु ऊरति म कर्त्तव्य । इत उभु मयः विव । कारणु कर्त्त - ' मिमी मे सय्य भूयतु ' मसी जीवते मं म् इतं मेवी सुतकपुटि ' वेवं मयन्न न केना' ' देव म् इतं कर्त्त मं मी । किमय उभु ' जि मीमताम इतं देवपुन एतं इत कर्त्त ' कारि ति आयपी सति तज्ज अनुवादि तीह इतं परावर्त्त । आयता इतं विदायकार्त्त सीह विव 10 पैद न कर्त्त । जिमि कारणि कयत्त मयमूनि मभुनिहं जिम भूतिमंमयत्तकार्त्तुमं कर्त्त हुय ।

5630) अय मनीकमजापयवतु उवर्त्तवत्त हृत्त अयगातमंदा विवर्त्तयत्त कर्त्त ।

पयमानोदय निर्दिय मरदिय दुर्गाति ।

निर्विण पदिंमो बंधावि जिने पयनीमं ॥

[१११]

इति परि आतं कर्त्त मयत्तमंकार मुन आद्य परावी कर्त्त मी कर्त्त कर्त्त कर्त्त हुयत्त' 10 कर्त्त मयत्तुदियुत्त - ' निर्विण पदिंमो ' इति विव, मनि मयत्त कर्त्त कर्त्त पाय हृत्त मयत्तु निवर्त्त हृत्त ' वेदावि जिने पयनीमं ' पायंम जिम कयभादि कर्त्तव्यत्तवत्त कर्त्तव्य कर्त्तव्य मयत्तवत्त कर्त्तव्य ॥

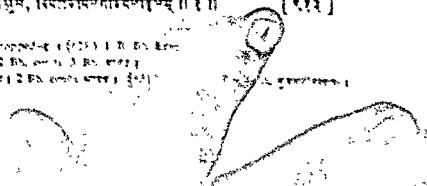
॥ इति भायकविबकमयुव विवर्त्त' मयत्त ॥

5631) जयति पयत्तुत्तं मुयत्तुत्तं, हुयत्तुत्तुत्तं कयत्तुत्तुत्तं ।

मुयत्तुत्तुत्तं कयत्तुत्तुत्तं, विवर्त्तुत्तुत्तं कयत्तुत्तुत्तं ॥ १ ॥

[१११]

(527) 1 R. BN. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.



- यः स्तम्भनाधीश्वरपार्श्वेनाथप्रसादमासाय नवाङ्गवृत्तिम् ।
 लब्धा वचन्धेह किमत्र चित्रं, सोऽत्राजनिष्ठाभयदेवमूरिः ॥ २ ॥ [११४]
- तदीयपादद्वयपत्रसेवामधुवतः श्रीजिनवल्लभोऽभूत् ।
 यदङ्गरङ्गे व्रतनर्त्तकेन किं वृत्तयता कीर्तिधनं न लेभे ॥ ३ ॥ [११५]
- तत्पट्टशैलेऽजनि योगराजः, सुरानतः श्रीजिनदत्तमूरिः ।
 तदन्तिपाद्यैक वदंत्कलावान्, विनाकलङ्कं जिनचन्द्रमूरिः ॥ ४ ॥ [११६]
- शिष्योऽस्य जज्ञे जिनपत्यभिरुयः, प्रवादिनागेन्द्रजये मृगेन्द्रः ।
 जिनेश्वरख्योस्य वभूव शिष्यः, प्रभावनोद्भावनसिद्धिरामः ॥ ५ ॥ [११७]
- जिनप्रबोधामिध मूरिरासीत् तत्पट्टपूर्वाचलचण्डभानुः ।
 पदे तदीये जिनचन्द्रमूरिरभून्पनोभू जयकारिमूर्तिः ॥ ६ ॥ [११८]
- येषां युगप्रधानानां प्रसन्न पदैवतं ।
 दीक्षाचिन्तामणीं मह्यं ज्ञानतेजस्विनीं ददा ॥ ७ ॥ [११९]
- पितृभ्योप्यतिवात्सल्यं येनाप्रापितरां मयि ।
 यशःकीर्तिगणिमां स पूर्वं विद्यामभाणयत् ॥ ८ ॥ [१२०]
- राजेन्द्रचन्द्रमूरिन्द्रैविद्या फाचन फाचन ।
 जिनादिकुशालाख्यै^{१०} आदाय्याचार्यपदं च मे ॥ ८ ॥^{११} [१२१]
- अम्भोरुष्मकरन्दविन्दुनिकराल्लात्वा यथा पदपदः
 स्वां वृत्तिं तनुते तथा श्रुतकणानादाय रच्यैः पदैः ।
 मूरिः श्रीतरुणप्रभः प्रमितये मुग्धातिमुग्धात्मना
 पोद्वावदयकमूत्रवृत्तिमलिखत्सौख्यावबोधप्रदाम् ॥ ९ ॥ [१२२]
- यन्मिथ्याभिदधे मया मतिमहामोधादसम्यग्निदा^{१२}
 व्याप्तेपादयथा तदत्र सुधियः संशोध्य निर्मत्सराः ।
 व्यातन्वन्तु तथेमिकां गतधियो निःसंशयाना यथा
 पोद्वावदयककर्मकर्मणि^{१३} परं सम्योघमाविभ्रते ॥ १० ॥ [१२३]

§631) 3 P. नर्त्तनेन । 4 L. योगीराज । 5 L. -चंद्रभानुः । 6 L. omits -मनोभू- leaving blank space for three letters. 7 L. adds सह्यं । 8 B. has added this verse in the margin. 9 L. कंचन । 10 B. जिनादि- । 11 Bh. P. number this verse as 9, and repeat the same number in the following verse, thus avoiding numbering different from B; L. changes the numbering by one. 12 Bh. L. विदो । 13 Bh.-सम्यग्नि । L.-सूत्रकर्मणि ।

अबुधबोपदशेन्धनदीधितेदिनकृतेर्विष्टतेर्यदुपार्नपम् ।^{११}

उपाचितं सुकृतं सुकृतेप्सितं भवतु तेन भवी सुकृती कृती ॥ ११ ॥ [१२४]

शाश्वि-शाश्वि-वेदेन्दु-मिते संबति सति पत्तने महानगरे ।

दीपोत्सवे च लिखिते सुगमा दिनकृत्यत्रिष्टचिरियम् ॥ १२ ॥ [१२५]

[632] जयत्यसौ मान्तिदलीयवर्षशकः, सुगोत्रधात्रीवलयावतंसकः ।

चतुर्दिगन्तस्थगुणपतिष्ठिते न नाचिं यत्राद्भूतकीर्तिनर्चकी ॥ १३^१ ॥ [१२६]

तत्राभूत्पुण्यभूमिस्तोपमष्टक्कुर दुर्लभः ।

तद्भङ्गभूद्गमिराज्यश्रामरामलसद्गुणः ॥ १४ ॥ [१२७]

तस्याऽर्षादात्पभूर्मालः उकुरः सुकृताङ्कुरः ।

इष्टसाधनसाधिष्ठः फीर्चिकर्पूरसौरमी ॥ १५ ॥ [१२८] 10

देवपालो गुरुस्तेनपालोऽपरोनयतपालः तथा राजपालः सुधीः ।

सह्यपालो नचात्पाल एतेऽभवन् स्तवनस्तस्य पद्भारताज्ञा इव ॥ १६ ॥ [१२९]

[631] 14 Bb. gloss on दस्येनः प्रदीप ।

[632] 1 Bb. omits verses 13-31 (both inclusive).

L. P. omit verses 13-32 (both inclusive).

Bh. after writing verses 32-33, begins: स. १४११ वदे दीपोत्सवे श्रीमदणहिल्लपत्तने शनिवारे... and goes on like B. till सत्रि-where the page ends abruptly. Later hand, in the margin below, writes: उप. श्री ठाकुरसौत्री गणिभिः स्वपुण्यार्ष भाग्दामारार्य कृतमिदं पुस्तकं धृत च गुरुणामादेशात् शिष्य धनजोकेन वि. अमरसौ कर्पूरादि सदृशेन वाच्यमानं चिरं नंदतादिति श्रेयः ॥ श्री ॥

(and continues in the margin of the recto)

भट्टारक श्री जिनरात्रगुणिसिष्यो० (i. e. उपाध्याय) श्रीज्ञानकुशलगणिसिष्यो० श्री शान्तिसिद्धगणिसिः स्वपुण्य-संचयार्थं श्री कृष्णार्ष भाग्दामारार्य कृतमिदं पुस्तकं बोधा० श्री धनजोके वि. अमरसौकर्पूरादि शिष्यसहितैः स्वगुरुणामा-देशाच्च गुरुणा पुण्यसंचयार्थं ॥ श्रेयः ॥

L. after writing verse 13 (= B. 12), writes: संवत् १४१९। पोप बुदि ५। then verse 33; words -वत्- in 33b are missing. It continues: संवत् १४१९ वर्षे दीपोत्सवदिवसे शनिवासरे श्रीमदणहिल्लपत्तने... लिखिता like B. Then ends with : शुभ भवतु । शुभमस्तु । लेखकवाचकगुभावकवार्णस्य । अनुष्टुभं सहस्राणि...etc.

P. after writing verse 12, continues with verses यादवं पुस्तक... and अनुष्टुभं सहस्राणि... numbering them 13 and 14 respectively; and continues : लोम् न्हा श्री ह्नु उ अस्मिपा उता नमः । लपु नमस्कारम् । अथ श्री नृप विष्णुमादिश्यागार्ये संवत् १५०८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ मंगलवाररे उत्तराभाद्रपदनक्षत्रे श्री सरस्वती-पत्तनाम्बरे श्री धरतरणच्छिव... the last words ' धरतर ' are superimposed on some other words. Later hand continues: श्री उद्योतनमूर्तगान्धर्व (sic) पू. श्री जिनदत्तसूरिः । तगान्धर्व (i. e. तस्याऽप्ये) श्री जिनकुशलसूरिः तदने श्री जिनरेवरसूरिः । जिनोपमसूरिः । श्री जितधर्मसूरिः । श्री जिनचन्द्रसूरिः । उ. (i. e. उपाध्याय) श्री पार्वचंद्रप्र-दिलकभूषण उ. श्री देवचंद्रप्रद्रे भागवास्कर उ. श्री श्री श्री धर्मार्थुदरमिथैः ग. देव कल्लोड पुण्यार्ष ।

- हरिराज-हेमराजौ, देवपालस्य नन्दनौ ।
 जज्ञाते हरिराजस्य, रासलदे च गेहिनी ॥ १७ ॥ [१३०]
- शुक्ताविव मुक्ताभौ तत्कुशावभवतां प्रचुरष्टचौ ।
 पुत्री ख्यातौ चाहड-धन्वकारुण्यौ च ठक्कुरौ ॥ १८ ॥ [१३१]
- राजानुग्रहशालिना गुणवता लक्ष्मीवता धीमता
 स्थाने चाहडठक्कुरेण विदधे तीर्थोन्नतिः सद्गुरौ ।
 देवे चार्हति भक्तिरद्भुततमा साधर्मिकोपक्रिया
 पोडाऽवश्यककर्मकर्मठदृदां ह्येतद्विकर्मोचितम् ॥ १९ ॥ [१३२]
- तत्पत्नी सहजलदे समचित्ता समजनिष्ट मुकृतेषु ।
 अनयोस्तनयाः सिंहानयनविजयजवणकर्णेभ्यः ॥ २० ॥ [१३३]
- व्यधितविजयसिंह स्तीर्थयात्रादिकार्ये,
 स्वधनमानिधनं राक्ष सप्तश्रेण्यां वपन् यः ।
 अणद्विलपुरमध्येऽभ्येत्य भक्तिं व्यकासी-
 जिजनकुशलगुरुणां स्थापनावादरोधात् ॥ २१ ॥ [१३४]
- मदनपाठ तनया वीरमदे विजयसिंह दयिताऽजनि धुर्या ।
 पूर्णिनीनि वरदेव तनूजा तस्य भीरुरपरापि पराङ्गी ॥ २२ ॥ [१३५]
- रत्नगर्भं च पुंरत्ने गुप्तौ प्रामूत चादिमा ।
 राजमानसु तेजस्कौ महार्यौ त्रासवर्जितौ ॥ २३ ॥ [१३६]
- बन्धिराजस्तयोर्गर्भेष्ठी, गिरिराजः कनिष्ठकः ।
 शुभावुभावपि स्निग्धावाधिनीतनयाविव ॥ २४ ॥ [१३७]
- उदयकमन्दाभपरतौ, राजाः साधारणश्च चत्वारः ।
 पूर्णिन्या धार्मिन्याः पुत्रा राजन्नि गुणविदिताः ॥ २५ ॥ [१३८]
- श्रीलम्बाश्रीन्यकौश्लीन्याप्रमाश्रीन्यगुणमाश्रीनी ।
 बन्धिराजस्य भार्याऽभूत् कौन्दावी धीविनाश्रीनी ॥ २६ ॥ [१३९]
- त्रिनभर्मानुगताया भक्त्यायाः पत्न्युत्तमः ।
 शेमापिङ्गः गुनम्नस्य जेठे शीरू च तन्त्रिया ॥ २७ ॥ [१४०]
- व्यसंगतः गुनम्नस्य गर्भध्यावकनाभुनः ।
 अनुसूतेव यद्वृत्तिर्त्रिनभर्मेण राजने ॥ २८ ॥ [१४१]

पराईतस्य तस्यासौ बलिराजस्य हृद्रथः ।
 कल्पारामेऽर्दतां धर्मं भ्राम्यन् स्वलति नाञ्च यः ॥ २९ ॥ [१४२]
 कलौ कल्पादि वैकल्ये औदार्यं तत्र किं महत् ।
 करे प्रमाकरे यस्य, कुवलयं वलयं च यत् ॥ ३० ॥ [१४३]
 सर्ताथेशानि तीर्थानि विम्बितानि मनोमर्षा ।
 नित्ययात्रात्सर्वं यस्य वितन्वन्ति मनीषिणः ॥ ३१ ॥ [१४४]
 श्यङ्कति बलिराजो लेखयामास भासां
 परिद्वन्द्व इव पोदावश्यकीयां सुयोधाम् ।
 सुविवृतिमिमिकां प्राङ् मच्छकाशात्स्वयं च
 स्वपरनरहितार्थं पुस्तके लीलित्वथ ॥ ३२ ॥ [१४५] 10
 भरतामिवसूदं शं त्रायमाणोजङ्घिकायं
 विदशदशनासैःश्लाघ्यमानार्घ्यधामा ।
 चरमानिनवरश्रीशासनं सावर्भौमं [१४६]
 मभवति भुवि यावत्तावदेषा सुयुक्तिः ॥ ३३ ॥

§633 संवत् १४११ वर्षे दीपोत्सवद्विधसे शनिवारे श्रीमदणहिल्लपत्तने महाराजाधिराज 15
 पातसाहि श्रीपिरोजसाहि विजयराज्ये प्रवर्तमाने श्रीचन्द्रगच्छालंकार श्रीखरतरगच्छापति श्रीजिनचंद्-
 स्तुरिगिष्यलेस श्रीतरुणप्रभारिभिः श्रीमंत्रिदलीयवंशावतंस ठक्कुर चाहदसुन परमार्हत ठक्कुर
 विजयार्मिहसुन श्रीजिनदासनप्रभावक श्रीदेवसुवार्थाचितामणिविभूषितमस्तक श्रीजिनधर्मकाचकूपूरपूर-
 सुभिनसतधातुपरमार्हत ठक्कुर बलिराजकृत गाढाभ्यर्थनया पढावश्यकवृत्तिः सुगमा बालावबोध-
 कारिणी मकलसन्धोपकारिणी लिखिता ॥ शुभमस्तु ॥ 20

अनुपूर्वां सहस्राणि सप्तान्वसंरसहस्रयम् ।

ज्ञेयानि विवृतावत्र साधिकानि मनीषिभिः ॥ [१४७]

॥ संवत् १४१२ वर्षे चैत्र शुद्धि ९ शुके श्रीमदणहिल्लपत्तने श्रीगच्छराज श्रीखरतरगच्छे श्रीपडा-
 वश्यकवृत्ति लिखिता पं० महिपाकेन ।

यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया । 25

यादि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥ [१४८]

ममपृष्ठिकादिग्रीवा ऊर्ध्वदृष्टिरधोमुखी ।

कष्टेन लिखितं शाल्मं यत्नेन परिपालयेत् ॥ [१४९]

दिव्यमस्तु ॥ मद्रं भवतु ॥ समस्त श्रीसाधु श्रीसमुदायस्य ॥ आचन्द्रार्कं मन्दतु ॥

The Index

Repeated occurrences of the same form are not noted, except in cases of words of rare occurrence.

Sk. and Pk. loanwords are generally omitted, except in cases of loanwords which show significant phonological or grammatical features of Old Gujarati.

Proper nouns from the illustrative narratives are entered in the index.

Different grammatical forms of the same word are grouped together under a convenient form.

The order of the Nāgarī alphabet is observed; vowels followed by anusvara are entered after simple vowels. Reference to the text is given by number of the paragraph.

References to the Nepali Dictionary by R. L. Turner and Formation de la Langue Marathe by Jules Bloch are given respectively, by citing the Nepali and the Marathi word.

अडडेवेवज् *auḍḍevēvaj* "to embezzle" ger. n. dir. sg. 450. cf. MG. *oḷav-vū* "to embezzle, to gain by unlawful means", cf. Sk. *spa-lap-* "to deny, to conceal", *spa-lapita-* "embezzled", Pk. *ava-lava-* "to hide truth". OG. vowel-sequence *au-* should give us a lower O- in MG, (see Turner, E and O in Gujarati), Ashuloh Jubilee vol.; Pandit, 'E and O in Gujarati' *Indian Linguistics* vol. XV, 1956), while we have the higher o in MG; moreover, -le- cannot be explained.

अकरणि *akarani* "in not doing" sub. n. loc. sg. 369. Sk. *akarana-* Pk. *a + karana-* n.

अकरण्ड *akaratau* "not doing" pres. part. m. dir. sg. 46; *akari* abs. 451; v. s. v. *karai*.

अकालि *akāli* "not at the proper time" sub. loc. sg. 519. lw. Sk. *akāla-* + OG. loc. sg. suffix -i

अकीयद् *akīdhai* "not done, not accomplished" past part. loc. sg. 523, 560. v. s. v. *kīdhantū*.

अक्रूर *akrūra* "gentle" adj. dir. sg. m. 3. lw. Sk. *akrūra-*.

अक्षुद्र *akṣudra* "contented, not mean" adj. dir. sg. m. 3. lw. Sk. *akṣudra-*.

अक्षयामंदप *akṣāyāmaṇḍapa* "pavilion" sub. sg. 614. *akṣāla + maṇḍapa*. Sk. **akṣa-vāṭah* Pa. *akṣhavāto*, Pk. *akṣhādaga*, *akṣhādāya*. Sk. *maṇḍapa-* lw. in OG. Sk. *akṣa-* "an axle, the beam of a balance, the collar-bone"; Sk. *vāṭah* "fence, a piece of enclosed ground"; Pa. *ak-* "fence".
as the same meaning, and

also "gamblers' den, seats for audience in a pavilion". Most of the NIA languages have the meaning "a place for wrestling, meeting place for sadhus", in the latter sense of "meeting place", it has a derogatory meaning. Bloch (*under ās*) and Turner (*under akṣāra*) give a Gujarati evolute *ks 'axis'*. One more probable Gujarati (and Marathi, Hindi) evolute of Sk. *akṣa-* 'collar-bone' is *hāṣṭi* 'an ornament worn round neck'. This is probably a more suitable derivation than Sk. *auṣa-* 'shoulder-blade' > *hāṣṭi*, especially because this ornament is worn round the neck. The -*ks* > -*s* development, passing through -*oh* - is a notable Marathi feature (Bloch § 104). Nasalisation is also explained by *aitch* and -*ṣ-*.

अक्षयिण *akṣhīṇa* "not diminishing, not perishing" adj. sg. 113; Sk. *akṣhīṇa* Pk. *akṣhīṇa-*; lw. Pk.

अचलनिष्ठ *acālanisṭha* "firm, immovable" adj. sg. 430. lw. Sk. *acālanīṣṭha*; v. s. v. *calai*.

अचोरिडे *acōriṇi* "not stolen" past part. n. dir. sg. 525; v. s. v. *coraun*.

अछायिद् *acchāyī* "unfiltered" past part. loc. sg. 519. MG. has three other words which deserve to be noted here: *chīṇvū*, *chanvū*, "to cut in small pieces"; *chinavvū* "to snatch, separate". The first is comparable to Sk. *chīṇōti*, *ḷḷanōti* "to hurt, to injure"; source for the second is Sk. *chinna-* -*i-* in *chīṇvū* is retained, probably due to the following nasal, *chāyū* "to

- filter' is not traceable, though many NIA dialects have similar cognates. Turner suggests (under *chānu*) **kāpāyati*, cf. Sk. *kān-ōti*, Pk. *chāna* - n. 'to sift grain,' *chāpāna* 'to filter'. Since filtering is frequently done by tying a coarse cloth over a vessel (e. g. curds or sugarcane juice) connection with Sk. *chādanam* n. 'covering' is worth considering.
- अधोपादि** *adhopādi* inst. sg. 129. Meaning and derivation not known
- अज्ञान** *ajāna* "ignorant" sub. dir. pl to 3; *ajāna* adj. dir. sg. m. 285 586; Sk. *ajānat*, Pk. *a + jāna* - .
- अज्ञानतः** *ajānataḥ* "not knowing" pres. part. m. dir. sg. 462; also *ajānato* 554, 590; *ajānati* i f. emphatic; *ajānata* i pl. 590; v. s. v. *jāna*, *ajāna*.
- अजित** *ajita* proper noun m. dir. sg. 110.
- अजितवनु** *ajitavanu* proper noun m. dir. sg. 573.
- अजि** 'aji' particle of address. 483.
- अजी** 'aji' 'yet, still' adv. 297. Sk. *adya* api Pk. *ajja* vi; note in MG. *hajj* 'even now'.
- अष्टानवत्यः** *aṣṭānavatyāḥ* sau "one hundred ninety eight" num. dir. sg. 33, 37; In the context *śānaḍya* sau *aṣṭhānaḍ* sau 33, the former does not convey the meaning very clearly. cf. Sk. *aṣṭānavatyāḥ*, Pk. *aṣṭhānaḍ*; Turner *aṣṭānabe*.
- अष्टाविंशति** *aṣṭāvīṣṭi* "twenty eight" num. dir. sg. 74. Sk. *aṣṭāvīṣṭi*, f. Pk. *aṣṭhāvīṣa*. Turner *aṣṭhāis*.
- अष्टोत्तरीयः** *aṣṭōtṭarīyaḥ* "forty eight" num. 35. v. s. v. *aṣṭhātālisa*.
- अष्टोत्तरः** *aṣṭōtṭaraḥ* sau "one hundred and eight" num. dir. sg. m. 613; *aṣṭōtṭara* sau 421, also *aṣṭōtṭara* *śaya* 424. Sk. *aṣṭa + uttara + śata* - Pk. *aṣṭōtṭara* *śaya*; lw Pk.
- अष्टोत्तरस्य** *aṣṭōtṭarasya* "one thousand and eight" num. dir. m. 312. lw Pk.
- अष्टसप्त** *aṣṭasapta* "sixty eight" num. dir. sg. 74. cf. Sk. *aṣṭasapti* f; Pa. *aṣṭasapthi*, Pk. *aṣṭhasapthim*. Bloch *ap-*, Turner *asapth*.
- अष्टोत्तरीयः** *aṣṭōtṭarīyaḥ* "forty eight" num. 421. cf. Sk. *aṣṭōtṭarīyaḥ* Pk. *aṣṭhātālisa*, MG. *aṣṭāla* Turner *aṣṭhācala*.
- अष्टि** *aṣṭi* probably some type of chain to bind a prisoner etc.; meaning and derivation not clear; the context in *aṣṭi* *ghāti* *nigāti* 313.
- अष्टनवत्यः** *aṣṭanavatyāḥ* "one hundred ninety eight" num. 24; lw. Pk. v. s. v. *aṣṭhānaḍ* sau; also note Sk. *aṣṭan*, Pk. *aṣṭha*, *aṣṭha*, *ala*.
- अष्टयालः** *aṣṭayāla* "forty eight" num. 24. Pk. lw. v. s. v. *aṣṭhātālisa*.
- अर्धार्ध** *aṣṭhārdha* "two and a half" num. 351, 403, 441 Sk. *ardhatṭiyāḥ*, Pa. *adhatṭiyo*, *Aś. adhatṭiya* -, Pk. *adhatṭija*, *adhatṭiya*. MG. *adhi*, *adhi* Bloch *aric*, Turner *aṣṭhā*.
- अष्टारमः** *aṣṭhāramā* "eighteenth" ord. loc. sg. 355. *aṣṭhārahe* *māse* inst. pl. 401; "after eighteen months" probably such usage explains the extension of -e pl. to -e sg. Sk. *aṣṭād-āśan* Pk. *aṣṭhārasa*, *aṣṭhāra*; also cf. Pk. *aṣṭhārasama* "eighteenth" MG. *adhar*, Bloch *athārā*, Turner *aṣṭhāra*.
- अष्टोत्तरः** *aṣṭōtṭaraḥ* sau "one hundred and eighteen" num. 615. v. s. v. *aṣṭhāramā*
- अथामयमिदम्** *athāmayamidaṃ* "when not set, not ended" past part. loc. sg. 325. Sk. *āstam* *ēti*, perfect part. *āstamita* Pk. *aṣṭhāmiya* OG. *ana + athāmi*. MG. verbal base *ātham-* 'to set, to decline'.
- अथालोचि** *athāloci* "without atoning" abs. 4'0, also *anālo*. Sk. *ālocate*, OG. *ana + āloci* *ana + āloi* (-i); v. s. v. *āloci*um.
- अथानु** *athānu* "while not got up, not dispersed" past part. loc. sg. 164 OG. *ana + āthi* + loc. suffix *in*. v. s. v. *āthi*um.
- अथानु** *athānu* "not throwing" past part. loc. sg. 315. OG. *ana + ghāti*, v. s. v. *ghāti*um.
- अथानु** *athānu* "not filtered" adj. past part. n. pl. 440. OG. *apa + chāniyā* m. v. s. v. *achāni*um.
- अथानु** *athānu* "not known" adj. past part. pl. m. 150, OG. *ana + jāniyā*, v. s. v. *jāni*um.
- अथानु** *athānu* "not given" adj. past part. n. dir. sg. 463. OG. *ana + didhā* m. v. s. v. *dei*.
- अथानु** *athānu* "not fallen" past part. loc. sg. (ji emphatic) 312; cf. *paṭhi* 312; OG. *ana + palihim*, v. s. v. *palai*.
- अथानु** *athānu* "not reaching farther" past part. loc. sg. 296. OG. *ana + pūgā* m. v. s. v. *pūgā*um.
- अथानु** *athānu* "without asking" abs. 164. OG. *ana + pūchi* v. s. v. *pūchai*.

अणविवरतां *apa viharatāni* "in not moving out" pres. part. obl. gen. 223; OG. *apa + viharatāni* v. s. v. viharati.

अणसयु *anamyu* "fact" sub. n. dir. sg. 573. Sk. *anāstamam*. Pk. *apasana*.

अणहोता *anahōtā* "not having" past part. pl. 450; OG. *apa + hōtā*, v. s. v. hōi.

अणवित *anavita* "brought on to oneself" caus. past part. m. dir. sg. 326. Note that though the causal base is used, the meaning is not causal, the context is: *atīcāraṁ apāvitaḥ huṁai. ānivā inf. of purpose* 339. Sk. *ānyati* Pk. *ānei*. MG. *ānūr*.

अणुप्रयु *anuḥpāyu* "religious practice" sub. dir. sg. n. 325. Sk. *anusthānam* Pk. *anusthānam*; note the short -u- in OG, before a long vowel in the succeeding syllable.

अणुवाद् *anuvā* "one who studies" sub. dir. sg. m. 355. Sk. *anuvācin*, Pk. *anuvāi, anuvāi*.

अत्र *atra* "now, here" used as a particle, as a response to a question 339; meaning and derivation are not clear. cf. however, Sk. *atra*, Pk. *atta*. Bloch *atā*.

अतिप्रमादद् *atīkramāra* "causes to pass, passes" v. caus. pres. 3rd sg. 461 462, 559. lw. Sk. *atīkram-* 'to cross over'.

अतिचरिते *atīcāritam* "transgressed" past part. dir. sg. n. 523 lw. Sk. *atīcār-* 'to transgress'.

अतिविप्रमर्षनु *atīcīkramamāṁsu* proper noun m. dir. sg. 553.

अतिसद् *atīsau* "excess, peculiarity" adj. m. dir. sg. 435; *atīsau* (v. l. *atīsau*) 426; lw. Sk. *atīśaya-*.

अतिनी *atīsi* "linseed" sub. f. 311. cf. Sk. *atīsi* "flax linum-usitatissimum, linseed"; MG. *alsi*. Bloch *alsi*, Turner *ālas, lisi*.

अण्यङ्गे *añḅaṅgaṁ* "pickles" sub. dir. sg. n. 500. cf. MG. *athānū* n. pickles; it refers to pickles in general, each special variety e.g. mango pickle, has its own name. These pickles are made once in a year, and then preserved, and consumed during the year. Considerable amount of fermentation precedes before it is ready for consumption. Hence its relation with fermentation may be noted. cf. MG. *āthvū* v. trans. 'to ferment', *ātho* sub. m. 'fermentation'. *athānū* can be a nominal derivative. Source of these words is not known; relation with Sk. base *ā + sthā* in the sense of 'coagulation' may be considered.

अदेखता *adekhatā* "not seeing" pres. part. m. pl. 489, 547, OG. *a + dekhatā*. v. s. v. *dekhai*.

अधिकेरेत् *adhikereṁ* "more and more" adj. dir. sg. n. lw. Sk. *adhika + OG. -eraṁ*, Sk. -*tara-*, Pk. -*yara*.

अधिविचिता *adhivicāyitā* "worshipped-by means of perfumes-" past part. n. dir. pl. 483. lw. Sk. *adhivāśita-*.

अनह् *anah* "and" conj. 38, 74; also *anī* 93, Sk. *anya-* stereotyped loc. in OG.; MG. *anE*. Pk. *anna-*; Bloch *āni*, Turner *adi*.

अनुमनद् *anumanai* "approves" v. pres. 3rd sg. 284, 285; *anumanam* past. part. dir. sg. n. 326. lw. Sk. *anumanate, anumanyate*.

अनुमिणद् *anumiyai* "infers" v. pres. 3rd sg. 403. cf. Sk. *anumimāna-* 'inferring' *anumāna-* 'inference'.

अनुमोदतां *anumodātāṁ* "supporting, agreeing" pres. part. obl. pl. 112. lw. Sk. *anumodayati*.

अनेक *aneka* "many" adj. 33; *aneki* loc. sg. 426; *aneko prakāre* inst. pl. 411; prob. lw. Sk. *aneka-*.

अनेरद् *anerau* "another, different" adj. dir. sg. m. 430, also *anero* 259, *anerum* n. 326; -*rai* inst. sg. 535, also -*rei*, -*rai* inst. pl. 442; -*aim*, -*ai*, loc. sg. 73; -*rā* obl. pl. m. 532, 538; -*rām* n. pl. Sk. *anyatarāḥ* Pk. *anayaro, apayaro*, ext. in OG. *anera + u*.

अनेत् *aneta* proper noun m. dir. sg. 110.

अपहरद् *apaharai* "robs, snatches" v. pres. 3rd sg. 526; *apaharisii* (v. l. *apaharasii*) fut. 3rd sg. 544; *apaharim* past part. n. dir. sg. 465. lw. Sk. *apaharati*; Pk. *apahāri* 'robber'.

अपद् *apā* "in trouble, in misery" sub. n. loc. sg. 431. lw. Sk. *apāya-*.

अपूरयु *apūrayu* "non-fulfilment" sub. dir. sg. n. 523; lw. Sk. *pūrāna-* 'fulfilment'. OG. *a + pūrapu*.

अप्युद् *appathū* "one's own praise" sub. dir. sg. f. 328. lw. Pk.; Sk. *ātma-stūtiḥ*, Pk. *appa-thū*; note the long *i*.

अपेक्षयु *apēkṣayū* "absence of destruction" sub. dir. sg. n. 123; OG. *a + phelanu*; v. s. v. *pheliva*.

अबोधयद् *abōdhayau* "not binding" pres. part. m. dir. sg. 517. OG. *a + bāndhatau*. v. s. v. *bāndhai*.

अभिनेद् *abhinēdau* proper noun m. dir. sg. 110.

- अभिप्रायः *abhiprāya* "opinion" sub. m. dir. sg. 471. v. l. *abhiprāya* 144; lw. Sk. *abhiprāyah*.
- अभिसिंचाद् *abhisincāvai* "besprinkles" v. caus. pres. 3rd sg. 483; lw. Sk. *abhisincati*, caus. *abhisincayati*, *abhisincayati*, Pk. *abhisincāvei*.
- अभीरुः *abhīrū* "fearless" sub. dir. sg. m. lw. Sk. *abhīru*, Pk. *abhīru*.
- अभ्यसद् *abhyasai* "studies" v. pres. 3rd sg. 245 lw. Sk. *abhyasyati*, Pk. *abbhasai*.
- अमुकः *amuka* "particular (without specification)" pro. dir. sg. 164. lw. Sk. *amuka-*; Pk. *amua*.
- अमूलिकुः *amūlika* "invaluable" adj. dir. sg. 548. lw. Sk. *amūlya-ka-*; Pk. *amolla-*.
- अमेलहृतः *amelhatau* "not leaving" pres. part. m. dir. sg. 516; OG. a + *melhatau*. v. s. v. *melhal*.
- अम्हः *amha* "we" pers. pro. obl. pl. 110, 533; *amhe* nom. pl. 94, 110, 579, also *amhi* 605; Sk. *asmād*, *asmān*; Pa. Pk. *amhe*. Bloch *āmhi*, Turner *hami*.
- अम्हाराँ *amhāraun* "our" pers. pro. sg. n. 537; also *amhārau* sg. m. 456, *amhāru* sg. m. 499; *amhāra* pl. m. 461, 538. *amhāri* pl. f. 112, 455; *amhārai* loc. sg. n. 461. v. s. v. *amha*. Pk. *amhāra-*, Turner *hāmra*.
- अरः *ara* proper noun m. dir. sg. 110.
- अरणेटः *araṇetau* "a kind of white clay" sub. dir. sg. m. 20; MG. *arṇeta*. Der. not known; the word is recorded in Des.; -*ṭa-u*, are, apparently, suffixes.
- अरण्यः *aranyā* "forest" sub. n. sg. (v. l. *arīnyā*) 554. lw. Sk. *aranyā-*; for -*a/-i-* see Burrow BSOS. vol. p. 131.
- अर्जुनुः *arjanu* proper noun (v. l. *arjuna*) m. dir. sg. 451.
- अवलवयुः *avalavayū* "concealing-truth-" sub. n. dir. sg. 365. Sk. *apa-lavana-*. Pk. *avalavana-*; v. s. v. *aulevevaui*.
- अवलम्बीः *avalambī* "depending, resting upon" abs. 110; Sk. *avalambya*, Pk. *avalambiya*.
- अवहेलियद् *avaheliyai* "is insulted, not respected" v. pass. sg. 436; Sk. *avahelyate*, Pk. *avahela-*.
- अवतिवर्द्धनः *avaticarddhana* proper noun m. dir. sg. 574.
- अवतिसेनुः *avaticisenu* proper noun m. dir. sg. 574.
- अवचिञ्चतः *avacchatau* "not desiring" pres. part. m. dir. sg. 433. OG. a + *vāchatau*. v. s. v. *vāchatau*.
- अशक्तः *asakta* "one who does not possess a" sub. f. dir. sg. 94. lw. Sk. a + *fakata*.
- अशुः *ashu* "honest" sub. dir. sg. m. 3. lw. Sk. *asatha-*.
- अशुक्लः *asukla* "ill-omen" sub. m. dir. sg. v. *asakuna* 450; lw. Sk. a + *fakuna-*. Note the change *fakuna* to *fakuna-*.
- असक्ताः *asaktā* "not able, incapable" pres. p. m. dir. pl. 109; OG. a + *sakata*. v. s. v. *sakal*.
- असन्नीः *asanni* "not having consciousness (a theological term—one who is not a Jain)" m. dir. sg. m. 33. Sk. *asatjñin*, Pk. *asapni*.
- असवारः *asavara* "rider, horsemen" sub. m. pl. 456. Sk. *asvavārah*; cf. Pers. *asvār*.
- असंभरताईः *asambharatāi* "while not remembering" pres. part. pl. m. 345; I emphatic OG. a + *sāmbharatā*. v. s. v. *sāmbharai*.
- असितः *asitau* "hundred and eighty" num. 61. Sk. *śatām*, Pk. *saya-*, OG. *sau* 'one hundred' For OG. *asī*, cf. Sk. *asīti*, f. Pa. *asiti*, Pk. *asī* Bloch *asī*, Turner *assi*.
- असुभः *asubha* "inauspicious" adj. dir. sg. 481; lw. Sk. *asubha-*.
- अश्रुजलः *asrujala* "tears" sub. n. dir. pl. 527. lw. Sk. *asru-jala-*.
- असंख्यः *asankhya* name of a chapter in the 6th *rādhyayana sūtra*. 94.
- अर्द्धे *ardha* "by three and half" num. inst. sg. 158. Sk. *ardha-* *caturtha-*, **ardha turtha-* (Pischel §450, Katre NIA I. 6. pp. 401); also cf. later Sk. back formation *adhyuṣṭa-*, Pk. *adhuṣṭha-*. Note the exceptional -*ddh-* > *h-*. MG. *ūthū* n.
- अंगद्वहणः *angadvalhana* "cloth used for wiping the body" sub. dir. sg. n. 281. Sk. *lṅgati* 'decorates' Pk. *lūhai*, *lūhai* 'wipes'. cf. MG. *lavū* 'to wipe'.
- अंगारः *angāra* "burning charcoal" in the compound *angārājivana-* 'those who make living by selling charcoals for burning' 552. Sk. *āngāra-* Pk. *angāra-*.
- अंगुष्ठः *angūṣṭha* "thumb" sub. m. dir. sg. 112, *angūṭhai* inst. sg. 461; *angūṭhā* obl.; Sk. *angūṣṭhā*, Pk. *angutṭha-* ext. Bloch *angūṣṭhā* Turner *aūṭho*.
- अंगीकरद् *angikarai* "accepts" v. pres. 3rd sg. 473 (used in the sense of fut.); *angikare* imp. 2nd sg. 473; *angikariyai* past part. loc. sg. 465.

ambikariam past part. n. dir. sg. 472, Sk. ambikarotī, Pk. ambikareī.

अम्बुडु am̐buḥ "one who has a hammer in his hands" sub. m. dir. sg. 213; also abhḥaya 'hammer' 503; der. not known.

अंधारतः andhāraṇā "darkness" sub. obl. pl. n. 529; Sk. andhakāra-, Pk. andhayāra-. Bloch andhār, Turner ābhyaro.

अंबु तरु am̐ba taru "mango tree" sub. n. 25; lw. Pk; Sk. āmrāḥ, Pk. amba taru lw. Sk. Pk.

*

आकर्षणं ākarṣaṇi "attracts, drags" v. pres. 3rd sg. 25. lw. Sk. ākarṣayati, ākarṣa-.

आकुल्य ākulyas "resting against a wall" sub. in a comp. 442. lw. Sk. kulyas n. 'wall'.

आक्रमिवा ākrāmīc "to attack" inf. obl. 81. lw. Sk. ākramayati, ākrāma + OG -ivā (obl. of inf.).

आक्षर ākhara "word, letter" sub. dir. sg. m. 160. Akhari inst. sg. 1; Sk. akṣara-, Pk. akkhara, cf. Viśvadeva Rāso (ed. Varma) p. 2: ākhara, this word is not used in MG, where it is replaced by the Sk. lw. (for a discussion of -kh- < -ks- see Turner BSOAS viii p. 795).

आगत्य āgatyā "in front" adj. dir. sg. m. 456, āgai loc. sg. 38, 74, āge (v. l. āgai) 488, "in future" 454, Sk. āgra-Pk. agga-OG. ext; later used adverbially (as a stereotyped loc.) in the dialects of Rajasthan. Bloch agyā, agalā, Turner aghi, āge.

आगत्यः āgātmyā "former, previous" adj. dir. sg. n. 168, āgīlām pl. n. 355, āgīlai loc. sg. 456, -lāin loc. sg. 501, āgāli f. 634; v. s. v. āgan; with MI extension -llaka-, OG. -llau; MG. āgai 'in front' adv. is derived from āgra- with OG. ext. -lau. Bloch agalā, Turner aghillo.

आगत्यः āgātmyā "forthcoming, approaching, relating to future" adj. dir. sg. n. 529; āgāmī loc. sg. 624, cf. MG. āgāmī. Sk. āgamin, āgāmīn, Pk. āgami, āgāmi, Sk. ext. in OG.

आगत्यः āgātmyā "flying in the sky, an occult vidyā" adj. f. dir. sg. 434; Sk. ākāśagāminī-; lw., cf. Pk. āgāsāgāmi-.

आग्निः āgni "fire" sub. dir. sg. f. 20. Sk. agnī, m. Pa. aggi m. Pk. aggi- m. f. MI change in gender is due to analogy of -i ending nouns. MG. āg is f. Bloch āga, Turner āgo.

आगत्यः āgātmyā "farther" adj. adv. dir. sg. n. 489, 645; āghau dir. sg. m. 452; āghai loc. sg. 446.

Sk. āgra-, Pk. agga, later probably suffixed by Ap. terminations -hu, him, gives OG. -gh-. MG. āgho m. 'far, distant', has a slightly altered meaning. Of the Indo-Aryan languages, N. alone has this -gh- form, but the meaning is "in front, previously" see Turner aghāṣi, aghi, aghi, aghillo.

आचरितं ācaritam "performed," past part. dir. sg. n. 519. lw. Sk. ācaritam Pk. ācarīya- with OG. -uḥ.

आज्युः ājyū "filtered (water)" sub. dir. sg. 282. der. not known, cf. however MG. śobreḥḥ pāpi 'clear water, when dirt has settled down.'

आज्युः ājyū "to-day" adv. 85,473,525; Sk. adyā-Pk. aja. Bloch aja, Turner aja, āju.

आज्याः ājyā "now" adv. 326. Sk. adya + adhunā; but the long -ā- in OG. remains unexplained. cf. Marathi ajān for which Katre (Formation of Kōṅkaṇi s. v. ajāni) suggests adya + ahanā.

आष्टा āṣṭa "eight" num. dir. sg. 73. āṣṭa dānaḥ sola "eight multiplied by two is sixteen" 616. Sk. aṣṭau, aṣṭā Pk. aṣṭha, Bloch aṣṭ, Turner aṣṭh.

आष्टमः āṣṭama "eighth" ordinal dir. sg. m. 62. āṣṭamai loc. sg. 355, āṣṭamā obl. 222. Sk. aṣṭamā Pk. aṣṭhama, ext. in OG.

आज्ञा ājñā "command, rule" sub. f. dir. sg. 644; also āni f. (v. l. āna) 517; Sk. ājñā-, Pk. ānā. Note the MI treatment of the -jñ- nexus to -p-; it may be an early simplification. Sk. ājñā, Pk. ānā, Bloch āna.

आगत्यः āgātmyā "brings, fetches" v. pres. 3rd sg. 477; āni past part. m. dir. sg. 446; āniyā pl. 433; āniḥ n. 459; āniḥ inf. dir. sg. n. 438; āniḥ obl. inf. 333,532; āni abs.; āniḥ caus. pres. 3rd sg. 111,533; āniḥ past part. dir. sg. n. 465; āniḥ abs. 455, (v. l. āniḥ) 447. MG. ān-vū 'to bring'; also cf. MG. ānā n. 'Items—mainly ornaments and household goods—brought by the bride from her parents' house to her father-in-law's house.' Sk. ānayati Pk. āpai. Bloch ānāp.

आगत्यः āgātmyā "setting—of the sun—" sub. n. sg. 556; Sk. āstamanam (astam-āyana), Pk. atthamaṇa.

आदित्यः ādityas proper noun m. dir. sg. 547. आदित्यः ādityas "order, command" sub. m. dir. sg. 109 lw. Sk. ādeśh, Pk. ādeśa-.

- आधत्** *ādha* "half" adj. dir. sg. m. 95. Sk. *adhat*.
Pk. *addha-*. Bloch *ādha*, Turner *ādha*.
- आनपान** *ānapāna* "breathing, inhaling and exhaling" sub. Jain theological term lw. Sk. *āna + prāna*; note the second *n-* changed to *n* by the influence of *āna*.
- आपह** *āpai* "gives" v. pres. 3rd sg. 554. *Apau* 1st. sg. (in future sense) 463; *api* imp. 2nd sg. 386; *āpiu* past part. m. dir. sg. 514; *āpiyā* pl. 386; *āpi* f. dir. sg. 365; *āpiṣi* fut. 3rd sg. 554. *apāvai* caus. pres. 3rd sg. 558. Sk. *āpāyati*, Pk. *appei*.
- आपट्टियद्** *āpaṭṭiyai* "when falls together, comes together" past part. loc. sg. 186; OG. *A + paṭṭi* v. s. v. *paṭai*.
- आपणत्** *āpaṇau* "one's own" pro. dir. sg. n. 111, 556; *āpaṇā* obl. m. 85, 459, 463, 560; also *āpaṇānū* n. 554, *āpaṇi* f. 74, 622; *āpaṇai* inst. sg. 73, 559, also loc. sg. 557. Sk. *ātman*, Pk. *appāṇo*, ext. in OG. Bloch *āp*, Turner *āpṇau*.
- आपणपत्** *āpaṇapau* "one's self" pro. dir. sg. (v. l. *āpaṇapau*) 74, 85, 112; *āpaṇapā* obl. sg. 38, 440, 554; *āpaṇapān* inst. sg. 85, 551. *āpaṇa* ext. with *-paṇm* < sk. *-tvaka-*.
- आपसासि** *āpasāsī* "with self as witness" sub. inst. sg. 564. For *āpa-* v. s. v. *āpaṇau*; Sk. *sākṣya-* Pk. *sakkha n.*
- आपहे** *āpāhe* "by one's self" pro. inst. sg. 1, 47, 349, 474, 520, 557. For *āpa-* v. s. v. *āpaṇau*; *āpāhe* seems to be an archaism cf. Pk. *appa*, inst. *appehi*.
- आभिमोगिक** *ābhīogika* "a type of gods, in Jain Mythology". m. dir. pl. 74. lw. Sk. *ābhīyogika-*, Pk. *ābhīogiya*.
- आभीषी** *ābhīṣi* "having caused fear" abs. 545. lw. Sk. *ābhīṣayati*. Sk. *ābhīṣ-* + OG. *-i*.
- आयुपत्** *āyūpau* "span of life" sub. dir. sg. n. 25. Sk. *āyūh*, *āyusya*, *āyuska-*, Pk. *āu*, *āusa*, *āukka*. If the OG. *-ṣ-* may be interpreted as representing *-kh-* (cf. MG. *āykhū* n.) then the line of development is Sk. *āyuska-*, Pk. *āukka*, *āūkkha-*; otherwise it may be treated as a lw. from Sk.; cf. MG. *āyui*.
- आराहि** *ārāhi* "scream, shout" sub. f. 25, 81. Sk. *ārāste*, Pk. *ārālai*; Pk. *rāṭi*, *rāṭi*, "quarrel" cf. MG. *rār* f. (Also cf. MG. *rāvū* "to cry", *ārāvū* "to shout".)
- आरापित** *ārāpiti* "worshipped" past part. m. dir. sg. 470. lw. Sk. *ārādhitā-*, *ārādḥ-* + OG. *-i*.
- आरापद्** *ārāpiti* "in the mirror" sub. loc. sg. 373. Sk. *ārāpiti-* m. Pk. *ārāpiti*, *ārāpiti* OG. *-i* cannot be explained; it may be phonetic. MG. has *ārāpiti* m. 'a big mirror', tel. 'a small mirror'. Marathi has only *ārāpiti* form; most of the other IA languages have only the f. form. Bloch *arāi*, *arāi*, Turner *ārāpiti*.
- आरापित** *ārāpiti* "started, commenced" past part. m. dir. sg. 94; *ārāpiti* f. 573. Sk. *ārāpiti*, Pk. *ārāpiti* + OG. *-i* + *arāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "residence" sub. n. dir. sg. 529. lw. Sk. *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "recitations" sub. obl. pl. m. 12. Sk. *ārāpiti* Pk. *ārāpiti* ext. in OG.
- आरापत्** *ārāpiti* "atoned, repented" past part. m. dir. sg. (v. l. *ārāpiti*, *ārāpiti*) 34. *ārāpiti* (v. l. *ārāpiti*, *-iti*) loc. sg. 142; *ārāpiti* fut. 14 326; *ārāpiti* pass pl. 333; *ārāpiti* abs. 63. Sk. *ārāpiti* Pk. *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "having atoned, repented" abs. 1. lw. Sk. *ārāpiti* + OG. *-i* abs. v. s. v. *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "comes" v. pres. 3rd sg. 85, 469; inst. pl. 44, 450; *ārāpiti* 1st pl. (in fut. sense) 31. *ārāpiti* imp. 2nd sg. 536, *ārāpiti* 3rd sg. 103, 522, 523. *ārāpiti* fut. 3rd sg. 110, 536, *ārāpiti* pl. 110. *ārāpiti* pres. part. (unenlarged) 452; *ārāpiti* pres. part. (enlarged) dir. sg. m. 112, 483, 573, 574; obl. 454, 534; *ārāpiti* obl. 108; *ārāpiti* loc. sg. 377; *ārāpiti* past part. dir. sg. m. 73. *ārāpiti* n. 94, *ārāpiti* (v. l. *ārāpiti*) pl. 38; *ārāpiti* n. pl. 110. Also *ārāpiti* past part. m. dir. sg. 527; *ārāpiti* loc. sg. 461, also *ārāpiti* (v. l. *ārāpiti*) 517; *ārāpiti* 434, 553, 604; *ārāpiti* abs. 426, 559. Sk. *ārāpiti* cannot explain the intrusion of *-v-*; Sk. *ārāpiti*, *ārāpiti* *ārāpiti* *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "knows" v. pres. 3rd sg. 91; *ārāpiti* past part. n. dir. sg. 94; *ārāpiti* pl. 94. lw. s. v. *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "approaching" sub. loc. sg. (loc. abs.) 282. OG. *ārāpiti* agent not derived from the base *ārāpiti*; dir. s. v. *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "inclined-favourably" past part. m. dir. sg. 466. lw. Sk. *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "a very short unit of time" Jain theological term. sub. sg. f. 397. lw. Sk. *ārāpiti*.
- आरापत्** *ārāpiti* "having obeyed" abs. 523. lw. Sk. *ārāpiti* + OG. *-i* abs.
- आरापत्** *ārāpiti* "longing for praise, glory" sub. f. obl. sg. (v. l. *ārāpiti*) 573. lw. Sk. *ārāpiti*.

उपोषितु उपोषितु "abstained from food, fast"
past part. m. dir. sg. 85; lw. Sk. upōṣita-

उमकु umaku "some, particular" indef. pron.
dir. sg. n. 309; umaki loc. sg. 282, 307 lw. Sk.
amuka; cf. Sk. pronom. base amu, used in the
declension of the pronoun adās- "that" MG.
amuk.

उपारद उपारद "place where water is dragged
from the well or a pond" sub. dir. sg. m. 79;
Sk. ava-tāraka-, Pk. oṃāraga, MG. oṃāro,
higher o- in MG. suggests an early contraction
of ava; OG. reading u- should be interpreted
in that light.

उपारह उपारह with parahau, "here and there-
far and near" 525, for der. s. v.

उलिदे उलिदे past part. n. sg. 91; meaning and
derivation not known.

उल्लसति उल्लसति "shine, rise" v. pres. 3rd pl.
516; ullast past part. f. dir. sg. 426. Sk. ullas-
ati. Pk. ullasi lw. Pk

उसह उसह "medicine" sub. dir. sg. 450.
Sk. ośadhīḥ f., Pk. ośahi f., ośaha n. MG. ośar.
OG u- seems to be graphic, probably an error.

उन्दिर उन्दिर "mouse" sub. n. obl. sg. 545 Sk.
lex. undura-, unduru. Pk. undara, undura.

उ ॐ emphatic particle 41, 48, 456, 525.
sometimes precedes ju emphatic, also kadācitā
(Sk. kadācit + OG ō) 36. see Tessittori §104,
cf. Sk. ō, Pk. u.

उत्तर उत्तर "a wooden mortar" sub. sg. 520.
cf. Sk. udākhala-n. Pk. udākhala, udākhala-m.
n. also Pk. ukkhala; probably a non-Aryan
borrowing. Bloch: BSOS V. 4, Turner, okhli.

उत्तरित उत्तरित "saved, escaped" past part. dir.
n. 83, उत्तरियान् n. 175; उत्तरति (note the
-ti) pres. part. pl. m. 341. Sk. uttarati,
-ti, Pk. uttarati, uttarā, uttarā. MG
-ti, Bloch uttarero, Turner uttarā,

उत्तरित उत्तरित "gone up" past part. dir. sg.
उत्तरित, Pk. uttarā, OG uttar-

उत्तरित उत्तरित "create to utter" v. pres.
(v. l. uttarā) 171, उत्तरित
उत्तरित adj. of उत्तरित 171, 172
उत्तरित adj. of उत्तरित 171, 172
उत्तरित adj. of उत्तरित 171, 172

dāvai; cf. MG. uṃhārvā, uṃhāvālv Turner
uṃhārvā.

उत्तरित उत्तरित "speak" v. pres. 3rd sg. 325, 353.
Generaln "while uttering" 151. obl. of the pres.
part. but the nasalization may be due to the
loc. sense, see however Dave p. 51. उत्तरित
Ger. pl. m. 10, also-revā 160. Sk. uttarati Pk.
uttarā.

उत्तरित उत्तरित "sprang up, rose up" past part.
m. dir. sg. 521, -it 483. Sk. uttarati, uttar-
ita Pk. uttarā, uttarā-. Turner uttarā.

उत्तरित उत्तरित "causing to shine, illuminating"
caus. pres. part. m. dir. pl. 522. Sk. uttarati,
caus. uttarayati, Pk. uttarā-. Turner uttarā.

उत्तरित उत्तरित name of a town (v. l. uttarit) f. 455.

उत्तरित उत्तरित "got up" past part. m. dir. s. 73,
utthi abs. 163, 341. ōthium. n. sg. 326. utthāti
caus. abs. 416, ōthi imp. 2nd sg. 349. cf. Pk.
uttatthati; Sk. ut + atthā, Pk. utthāti ōthā
utthā, Turner utthā.

उत्तर उत्तर "name of a tribe of diggers", 346, for
der. s. v. ota.

उत्तर उत्तर "deficient" adj. dir. sg. m. 333, 624
pl. also uttāni (note the short a-) 332, 34.
624, Pk. 624 ext. with OG. -u. s. v. 624a.

उत्तर उत्तर "deficiency", sub-abstract noun-f.
sg. 453. Sk. 624, Pk. 624, der. with OG-tā.

उत्तरित उत्तरित "got down, came down" past
part. m. dir. sg. 453, 525, 532; उत्तरित pres.
part. m. d r. sg. 434, 529, उत्तरित abs. 73, उत्तरित
pass. 3rd sg. 266, उत्तरित caus. pres. 3rd pl.
521; उत्तरित 1st sg. 74; उत्तरित 1st pl.
455; उत्तरित abs. 525, उत्तरित obl. of 1st of the
causal base 377. Note also उत्तरित, Pk. uttarati,
Pk. uttarā. Bloch उत्तरित, Turner uttarā.

उत्तर उत्तर "reply, answer" sub. m. dir. sg. 7,
24, 45, Pk. उत्तरित, Pk. उत्तरित.

उत्तर उत्तर "heavy, hot" adj. m. dir. sg.
453, उत्तरित 453, 455, also pl. 456, Sk. uttarā
pass. 3rd pl. 521, Pk. उत्तरित - abs. 611, 612
Uttar उत्तर, Turner उत्तर

उत्तरित उत्तरित "suspended" past part. dir. sg.
उत्तरित, Pk. उत्तरित, OG उत्तरित

उत्तरित उत्तरित "sub. f. 45, 456, 457,
उत्तरित OG word books 116, उत्तरित
of the present Gaj. word, der. s. v. 456

इसतं *isauṁ* "thus, in this way" adv. adj. n. sg. (v. l. *isyan*, *isau*) 73, 74; also *isum* 474; *isai* inst. sg. 73; also *isim* 522; also *isimī* (v. l. *isai*) 533; *ise* inst. pl. 376; *iā* obl. sg. 535, 541; also pl. 573; also *isām* pl. 522; *iṣi* f. inst. sg. 74, 522. Note the short *i*- in OG. Sk. *idraśāḥ*, *idraśakāḥ*; Pk. *idisa*, *isā*. Turner uso.

इसी *isī* "eighty" num. 617. cf. OG. *astī*, for der. s. v. *asīṣaṅ*.

इन्दारी *indrāyī* "Indra's wife" f. dir. sg. 74. lw. Sk.

इदिकु "belonging to this" pro. 85 (v. l. *thiku*, *iha hū*, *iha loki*). The termination -*ku* is a borrowing from midland (unless the derivation be *śhika*-which is also likely); note the reluctance of the mss. to accept the termination; der. s. v. *imbhām*.

ई i particle of emphasis 73, 91, 432, also *īm* 541, 551 for der. s. v. *i*.

ईच्छे *icchāṁ* "I wish" v. pres. 1st sg. 158. Sk. *icchāmi*, Pk. *icchāmi*, Ap. *icchāṁ*.

ईर्ष्या *irṣyā* "jealous" (v. l. *irṣā*) m. dir. sg. 516 lw. Sk. *irṣyā*.

ईते *īṭhāḥ* "these" dem. pro. obl. pl. 336; also *imbhām* 345 Sk. *īṣāḥ* Pk. *ēṣo* Ap. *ēho* m., *ēha*, n. Note the initial short and long *i*- in OG.

ईति *īti* "in here, here" adv. 425, 573. Sk. *īthā* + OG; emphatic f. s. v. *imbhām*.

ईति *īṭhāḥ* "here" (v. l. *īṭhām*, *īthā*) adv. 85. cf. Sk. *īthā*. Turner *kshām*.

उगत *ugata* "excited, alarmed" past part. m. dir. sg. 3^d der. uncertain.

उपराज *uparāj* "being saved, remaining" pres. part. pl. m. 311. For der. s. v. *ugrājam*.

उपराज *uparāj* "in the celebration" sub. m. loc. sg. 357; Sk. *uparāj*, Pk. *ucchava*, lw. Pk. *ucchava* + OG. for termination -*ā* of MG. *Chav*.

उच्छेद्य *ucchedya* "cut off, destroyed" past part. m. dir. sg. 424 lw. Sk. *uccheda* + OG -*in* past part. *ucchedan*.

उच्छेद्य *ucchedya* name of a town f. sg. 571.

उच्छेद्य *ucchedya* "put up, grew" 424 der. s. v. *ūchya*.

उच्छेद्य *ucchedya* "act of belching" v. l. *ucchedya* 42. *ucchāra* + *caray*, cf. MG. *ucchāra*, der. *ucchāra*.

उच्छेद्य *ucchedya* "drown, smother" (v. l. *ucchāra*) v. l. m. dir. sg. 414 Sk. *ucchāra*, Pk. *ucchāra*, lw. Pk.

उदय *udai* "to the rise" sub. loc. sg. 91. lw. Sk. *udaya*-.

उदाहरी *udāhari* "gave an example" past part. f. 383. Sk. *udāharati*, Pk. *udāharai* (lw. from Sk.).

उदिमी *uddimī* "referring to" abs. 369, 461. Pk. *uddisāti*, *uddiṣya* Pk. *uddisai*, *uddisiya*, lw. from Pk. *uddis-* + OG. *i*.

उन्हाले *unhāle* "in summer" sub. m. loc. sg. 401. Pk. *uṣṇa* + *kāḥ*, Pk. *unha-*, ext. in OG. *unhālau*; MG *unālo*; Note the short *u*- in OG, probably on account of the following -*ā*- in the next syllable.

उपदिशत *upadiśat* "advising, instructing" pres. part. m. dir. sg. 529. lw. Sk. *upadiśati*, *upadiśa* + OG.-*tau*.

उपरमित *uparamit* "reached, terminated" past part. m. dir. sg. 431, 544. lw. Sk. *uparama* + OG. suffix -*it*.

उपलब्धी *upalabdhī* "having obtained" abs. 527. lw. Sk. *upalabdhate*, *upalabha* + OG. -*ī*. s. v. *lahai*.

उपरामित *uparamit* "assuaged, calmed" past part. n. dir. sg. 589, *upasamāvāṁ* caus. pres. 1st sg. 326, *upasamāv* caus. abs. 536, *upasamāviva* obl. of inf. caus. 351. lw. Sk. *upāśamyati*, *upāma-* + OG. suffixes.

उपसंहारत *upasamhārat* "while finishing" pres. part. dir. sg. m. 630. lw. Sk. *upasamhāti*, *upasamhāra* + OG. suffix -*tau*.

उपाज्याह *upājyāhāru* "one who carries a burden" sub. dir. sg. m. 602. *upājana* + *hāru*; note the short *u*-, Sk. *utpātayati* 'to tear up, pull out', *utpātana-*, Pk. *uppājāra* 'to raise up', -*hāru* is an agentive suffix; 'one who carries' cf. *karasāhāra* 'one who does'; from which MG. -*nāra* has developed. This -*āra* is probably comparable to Sk. -*kārah*, but -*h-* cannot be explained except as intrusive. *upājāra* + *haru* in OG was probably pronounced with -*gh-* (for aspirated variations such as *sāmghau*, *sāmgha*; Sk. *sām-mukha-*) developing as -*n-* in MG. An alternative suggestion is -*dhāra*, see Davd & v. *ūtāranāhāra*.

उपार्जित *upārjita* "earned, attained" past part. dir. sg. m. (v. l. *upārjita*) 424; *upārjita* pl. 533; *upārjita* pres. part. m. dir. sg. 441, *upārjitām* obl. pl. 490; *upārjita* pres. 1st pl. 455, *upārjī* abs. 424 lw. Sk. *upārjita* -*upārjita* + OG. suffixes.

उपविष्ट उपविष्ट "abstained from food, fast"
past part. m. dir. sg. 65; lw. Sk. upoṣita-

उम्बु उम्बु "some, particular" indef. pron.
dir. sg. n. 300; उम्बु loc. sg. 282, 300 lw. Sk.
amuka; cf. Sk. pronom. base amu, used in the
declension of the pronoun adas- "that" MG.
amuk.

उपगत उपगत "place where water is dragged
from the well or a pond" sub. dir. sg. m. 79;
Sk. ava-tāraka-, Pk. oṣāraza; MG. oṣāro;
higher o- in MG. suggests an early contraction
of ava; OG. reading u- should be interpreted
in that light.

उरह उरह with paraha, "here and there-
far and near" 525. for der. s. v.

उरिड उरिड past part. n. sg. 91; meaning and
derivation not known.

उरुम्बु उरुम्बु "shine, rise" v. pres. 3rd pl.
516; उरुम्बु past part. f. dir. sg. 426. Sk. ulla-
sati Pk. ullasā lw. Pk.

उम्बु उम्बु "medicine" sub. dir. sg. 450.
Sk. ośadhī lw. Pk. ośāhi L. ośāha n. MG. ośar.
OG u- seems to be graphic, probably an error.

उरिड उरिड "mouse" sub. n. obl. sg. 545. Sk.
lex. undara-, undara. Pk. undara, undara.

ॐ ॐ emphatic particle. 41, 48, 456, 525.
sometimes precedes ju emphatic, also kadāntā
(cf. Sk. kadānt + OG. u) 56. see Tessittori §101,
cf. Sk. ta, Pk. u.

उत्तल उत्तल "a wooden mortar" sub. sg. 520.
cf. Sk. utkāhala-n. Pk. utkāhala, utkāhala-m.
n. also Pk. ukhala; probably a non-Aryan
borrowing. Bloch; BSOS V. 4, Turner, okhli.

उरिड उरिड "saved, escaped" past part. dir.
sg. n. 85. ūgarīyān n. 175; ūgarātā (note the
short a-) pres. part. pl. m. 341. Sk. udgirati,
udgāra-; Pk. ugāṭai, ugāṭā, ugāṭā. MG.
ugarvān. Bloch ūgalpēn, Turner ugēlou,
ugrāna.

उरिड उरिड "arose, gone up" past part. dir. sg.
m. 482, 583. Sk. udgatah, Pk. ugga-, OG. ūg
+ past part. m. subīz-ju.

उपगत उपगत "causes to open" v. caus.
pres. 3rd sg. (v. l. ūghāṭavāi) 474; ūghāṭivā
inf. 547. ūghāṭavān adj. dir. sg. n. 309 (OG.
ūghāla-der. as n. adj.) Sk. udghāṭayati caus.
ud-ghat-. Pk. ugghāṭai; further, ūgha-

dāvai; cf. MG. ugharvū, ughrāvū Turner
ughāru.

उचर उचर "speak" v. pres. 3rd sg. 325, 366.
Ucārātān 'while uttering' 154. obl. of the pres.
part. but the nasalisation may be due to the
loc. sense; see however Dave p. 51. ucārīvā
ger. pl. m. 10, also-revā 160. Sk. ucārati Pk.
ucārāi.

उचर उचर "sprang up, rose up" past part.
m. dir. sg. 521, -li f. 483. Sk. ucchalati, uccha-
lita Pk. ucchalaṭ, ucchali-. Turner ucchraṇu.

उजल उजल "causing to shine, illuminating"
caus. pres. part. m. dir. pl. 522. Sk. ujjalati,
caus. ujjalayati, Pk. ujjala-. Turner ujjalānu.
उजलि उजलि name of a town (v. l. ujjeṭ) f. 435.

उठ उठ "got up" past part. m. dir. sg. 73;
ūth abs. 163, 341. ūthimā. n. sg. 326. ūthāṭi
caus abs. 446; ūth imp. 2nd sg. 589. cf. Sk.
utthiṭhāti; Sk. ut + sthā, Pk. utthai Bloch
utthō, Turner utthau.

उड उड "name of a tribe of diggers", 386, for
der. s. v. oḍa.

उण उण "deficient" adj. dir. m. 339, ūṇā
pl. also anāṇ (note the short u-) 339. Sk.
ūṇā, Pk. āṇa ext. with OG. -u. s. v. āṇātā.

उण उण "deficiency", sub-abstract noun-f.
sg. 459. Sk. āṇā, Pk. āṇa, der. with OG. -tā.

उतर उतर "got down, came down" past
part. m. dir. sg. 463, 525, 530; ūtarataṇ pres.
part. m. dir. sg. 434, 519; utari abs. 73; ūtārī
pass. 3rd sg. 206; ūtārāim caus. pres. 3rd pl.
521; ūtārāim 1st sg. 74; ūtārīsyām fut. 1st pl.
455; ūtārī abs. 528; ūtārīvā obl. of inf. of the
causal base 371. Note the short u-. Sk. utarati,
Pk. utarāi. Bloch utarṇē, Turner utranu.

उतर उतर "reply, answer" sub. m. dir. sg. 7,
281, 488; Sk. utara-, Pk. utara-.

उत्तल उत्तल "hasty, fast" adj. m. dir. sg.
463; ūtāvāṭi obl. sg. 463; also pl. 450. Sk. utta-
pa-ext. with -la; Pk. uttāvāla- ext. in OG.
Bloch ūtāval, Turner utāvala.

उदे उदे "is troubled" pass. sg. 94. Sk.
udvegāḥ borrowed in V. 1. idea, develops
in OG. as "collection of OG.

उदे उदे "is troubled" pass. sg. 94. Sk.
udvegāḥ borrowed in V. 1. idea, develops
in OG. as "collection of OG.
v. f. 21; cf. MG.
udh- " sanskritization
of not known.

- उपरि ūdhari** "remove, draw out" v. imp. 2nd sg. 44. Sk. uddharati, Pk. uddharas, uddharehi also -ahi imp.
- उधसई ūdhasaim** "rise, go up" v. pres. 3rd pl. 246; Sk. udharsate (ud-harṣate); cf. Pk. uddhusia, *uddhasai.
- उधारी ūdhāri** "by loan, credit", sub. inst. sg. 459; Sk. uddhārāḥ m. Pk. uddhāra m. Turner udbāro.
- उधि ūdhi** "the wooden seat in the centre of the yoke (of a cart)" sub. dir. sg. 44. Meaning is not quite clear; it may mean the vertical plank of wood fitted in the yoke, may be connected with Sk. ūrdhvā- . Doubtful.
- उपजद् ūpajai** "is produced, rises" v. pres. 3rd sg. 432; ūpajjitorā des. pres. 1st sg. 516; ūpajaim caus. pres. 3rd pl. 553; ūpajāvatau pres part. m. dir. sg. 457; ūpajāvī caus. abs. 38, 483, Sk. utpadyate, Pk. uppajjai. Bloch upajñē, Turner ubjanu.
- उपनई ūpanaumi** "produced, created" past part. dir. sg. n. 108; ūpanau 432; (v. l. ūpanu, 110) ūpanā pl. 44; ūpani f. 463. Sk. ut-pad-, utpanna-; Pk. uppanna-ext. in OG.
- उपरि ūpari** "on, above adv. 74, 557; Sk. upari. Pk. uppari. Turner upar.
- उपरवाइ ūparavāḥai** "on, above" adv. loc. sg. 577. Sk. upāri adv. ūpara: Pk. uppar- for vālau cf. MG. pachvadū pachāḥi, "back, behind" and analogically MG. agāḥi "in front" cf. also P. pachavārā; in ūpara-vāḥai, vāḥai is possibly an analogical extension of the same but etymology is not clear. Turner (s. v. pachāḥi) suggests comparison with paścārdhāḥ "hinder part".
- उपहार ūpaharas** "above, belonging to the above" adv. m. dir. sg. 10, ūpaharā (v. l. birā) obl. pl; 109 also ūpaharām obl. (gen.) 186; possibly ūpara + rahau; for der s. v. ūpari, and rahaim.
- उपहारई ūpaharaimi** "more than" comparative adj. n. sg. 443, 553. v. a. v. ūpaharau.
- उपारी ūpāri** "having lifted" abs. 482, 561; ūpāliu past part. m. dir. sg. 555. ūpātātām pres. part. obl. (gen.), 211. Sk. utpātayati, Pk. uppājei.
- उपारी ūpāri** "having attained, obtained" abs. (v. l. ūpājīvi) 34, 466; ūpālata pres. part. (uncalarged) 8; for der. s. v. ūpāli.
- उपेल ūpela** "above" adv. adj. obl. sg. 247; upelai (note the short u.) loc. sg. 9; cf. MG. uplo adj. m. 'above' probably uppa- (cf. upari) with illa; cf. Pk. uppelia 'raised'.
- उपिठई ūbithaum** "nauseated, full of aversion" past part. dir. sg. n. 473; probably Sk. *ud- vīṣta- (contrast pravīṣta-) Pk. *avvitha; even though -v. > -b- remains doubtful though cf. II. ūb ūthnā. Extremely doubtful.
- उभइ ūbhau** "raised, elevated" adj. m. dir. sg. 456; ūbhā pl. 489, also obl. 48; ūbhām obl. 322; ūbhi f. 474. Sk. ūrdhvāḥ Pk. ubbha-, uddha-, uddha-. Bloch ubhā, Turner ūbho.
- उभइ ūbhaḍū** "half standing position" dir. sg. 322, 326; Pk. ubbha ext. in OG -lau, developing as ū; der. s. v. ūbhau.
- उभई ūbhāḥai** "(fried with) a little oil, refers to chapatti put on a frying pan with a little oil" adj. f. 315; etymology not clear; cf. however MG. lukhū adj. 'dry, not buttered'; Sk. rūkṣa- Pk. lukkha-.
- उललई ūlalaumi** "cause to toss up, jump" v. caus. pres. 1st sg. (in fut. sense) 537; ūlālī abs. 577. Sk. ullalati, Pk. ullalai; also *ullalayati Pk. ullāle. Bloch ulālā, Turner urlanu.
- उपच ūpachha** "medicine" sub. dir. sg. 172. The initial u cannot be explained; lw. Sk. avādhām.
- उसास ūsāsa** "breathing" sub. m. 331; also ūsāsu 571. Sk. uchvāsah, Pk. ussāsa m. Bloch usās.
- उसु ūsu** "dew" sub. dir. sg. 20. MG. os. Sk. avasāyā f. Pk. ossā f. also Pk. ussā; also Sk. avasāyāya m. Pk. osāsa m.
- ऊंचउ ūnceau** "tall, high" adj. dir. sg. m. 616. also ūnceu 533; ūnceat loc. 463; ūnceā obl. 556. Sk. uccā Pk. ucca. Turner ūc.
- ऊंचरणि ūncecapaḥi** "due to height" sub. inst. sg. 614. ūncea + panaum, for ūncea, s. v. ūncea; Sk. -tvana, Pa. -tṛana, Pk. -ppapa, OG. ext. Pischel § 597.
- ऊन्हई ūnhāum** "hot" adj. dir. sg. n. 175. Sk. uṣnā- Pk. uṣha- ext. in OG.
- ऊंवाइ ūmbāḥai** "a burning stick, straw or faggot" sub. dir. sg. 154; ūmbāḥā obl. sg. 154. Sk. ūlmaka, Pk. umma-, ext. -dau.

ए० "this" dem. adj. pro. nom. sg. f. m. 94, 364, 424, 481, 525; also pl. 455; also remote 133. Sk. एतद् Pk. एतद्. OG. e. with the future morpheme -*ta-*: एतद्.

एतद् एतद् "will accept alms" v. fut. 3rd sg. 137. Sk. एतद् Pk. एतद्. OG. e. with the future morpheme -*ta-*: एतद्.

एतद् एतद् "this, that", dem. pro. 10. OG. e + u. u is emphatic. For der. s. v. e.

एतद् एतद् "one, some" num. indel. art. 74, also ekā 34, ekī inst. sg. 425, also loc. sg. 38. Sk. एतद्, lw. in Pk. एतद्, Bloch ek. Turner ek.

एतद् एतद् "together" adj. f. 529, 616. ekathān m. pl. 520. Sk. एतद् -*tha-* Pk. एतद् -*tha-* ext.

एतद् एतद् "thirty first" ord. obl. 222. Sk. एतद् (inst- Pk. एतद्). Note the retention of -*ta-* cluster in OG, also cf. MU ekātra.

एतद् एतद् "alone" adj. dir. sg. m. 452; also ekā 544; ekā obli. sg. m. 452; ekā f. 539. Pk. एतद् "strong, powerful"; note the retention of this meaning in the MU, compound 'ekā-vīr' 'the lone warrior'.

एतद् एतद् "once" adv. 96, 300, 492. Sk. एतद्, Pk. एतद् (also cf. Ujivāra 96).

एतद् एतद् "twentyone" num. dir. 74; ekātra pl. n. 74; एतद् inst. pl. 259. Sk. एतद्, Pk. एतद्, Turner एतद्.

एतद् एतद् "seventyone" num. dir. 74. From Sk. एतद् -*ta-* to Pk. एतद्, for Sk. -*ta-* to Pk. -*r-* see Pischel § 245. -*r-* is noted in cognate Indo-Aryan languages excepting Kashmiri and Sinhalese. Bloch sattar, Turner ek'hattar.

एतद् एतद् "eleventh" num. card. f. dir. sg. 455. lw. Sk. एतद् + O'1. -ml.

एतद् एतद् "vow of eating once" sub. dir. sg. 300. (a Jain vow) OO. एतद् + āsanam; Sk. āsanam Pk. āsana- ext. MG. एतद्.

एतद् एतद् एतद् "one hundred fortyseven" num. 285. For ekassa, v. s. v. एतद् and एतद् satatālu: Sk. एतद्, Pk. एतद्, *sattiyattālu, MG. has, however, एतद्, prob. on the analogy of एतद् (forty eight) Turner sattālu.

एतद् एतद् "one" num. dir. sg. 142 lw. Pk. एतद्; v. s. v. एतद्.

एतद् एतद् "so much, that much" adj. dir. sg. 426; एतद् obl. pl. 431, 480; एतद् m. pl. 74;

also used as एतद् ke 553; एतद् loc. sg. 74, 431; एतद् inst. pl. 74; एतद् dir. sg. f. 74, also एतद् f. 112. Sk. एतद् cf. एतद्; Pk. एतद् Bloch Itukā, Turner uli.

एतद् एतद् "the castor-oil plant, Ricinus Communis or Palma Christi", sub. sg. 311. Sk. एतद् Pk. एतद्.

एतद् एतद् "Indra's elephant" m. dir. sg. 74. Sk. एतद्, Pk. एतद्.

एतद् एतद् "so big" adj. dir. sg. m. 539; एतद् inst. sg. 470. Pk. एतद् -*ta-* ext.

एतद् एतद् "this" dem. pro. nom. sg. 74, 94, 110; एतद् inst. pl. 386, also एतद् 391, with emphatic -*u-*; v. s. v. e. 110; OG: एतद् is an archaism, Sk. एतद्, Pk. एतद्, एतद्.

एतद् एतद् "(wind) which spreads like a wave" adj. sg. 20. Sk. एतद् f. 'a wave' Pk. एतद्.

एतद् एतद् "nineteen" num. dir. 41. cf. MG. oṅṅṅ. see Pischel's suggestion *apa-guna-vimāti, § 444. v. s. v. एतद्.

एतद् एतद् "the staff carried by Jain monks" sub. dir. sg. m. 158. एतद् loc. sg. m. 153. Sk. एतद्, Pk. एतद्, ext. in OO.

एतद् एतद् "covering", sub. dir. sg. 12. Sk. एतद् -*ta-* Pk. एतद् -*ta-* note the y-changing to -*v-*, which cannot be explained.

एतद् एतद् "rolled in dust (?) " past part. pl. 22. Derivation not clear.

एतद् एतद् "having supported" abs. 44. Sk. एतद् Pk. एतद्.

एतद् एतद् "wandering tribe of workers and craftsmen" sub. m. dir. pl. 388. Sk. एतद्, Pk. एतद्. Turner or.

एतद् एतद् "in the residence, " sub. loc. sg. 538. cf. Sk. एतद् -*ta-* Pk. एतद् -*ta-*.

एतद् एतद् "having snatched" abs. 187; एतद् inf. of purpose 105. Sk. एतद् caus. एतद्, Pk. एतद्.

एतद् एतद् "by loan" sub. inst. sg. 182. also cf. एतद्. Sk. एतद्; Pk. एतद्; Turner एतद्.

एतद् एतद् "adds, puts in, refers specially to cooking when grain is put in boiling water" v. pres. 3rd sg. 189; एतद् past part. loc. sg. 175, also pass. sg. 175; MG. or-vū. Sk. एतद्

- rayatī, Pk. *oyārei; cf. Sk. avatāraka- Pk. oyā-raga-.
- ओरई *orai* "in the neighbourhood, near, prior," adv. loc. sg. 179; also *orai parai* "near and far" 391; Sk. āvarah, ext. v. s. v. parahau.
- ओरहइ *orahan* "near, forward" adj. dir. sg. m. 428; *orahā* pl. (honorific) (v. l. urahā) 108; also *orahūm* 151. cf. Sk. āvarah; s. v. *orai*.
- ओलखतु *olakhatu* "knowing, recognising" pres. part. m. dir. sg. 474; *olakhīyā* past part. m. dir. pl. 545; *olakhi* abs. 555. Sk. laksayati, poss. with Middle Indian prefix o-, Pk. o-lakkhai. Bloch *olakhō*.
- ओलगइ *olagin* "attached, stuck to" past part. m. dir. sg. 445; Sk. avalagnah, Pk. olagga, OG. olag + iu.
- ओलण *olana* "without salt" adj. dir. sg. 304 cf. Sk. lavana-, possibly *apalavana-.
- ओसह *osahu* "medicine" sub. dir. sg. n. 527, *osahi* f. 432, 463, *osadha-ham* n. inst. pl. 521. Sk. avadhān, auvadhī-, ośadhi-, Pk. osaha n. *osahi* n., *osadha* is lw. in OG.
- ओसामणु *osamanu* "which causes to dry" sub. dir. sg. m. 303. Probably connected with MG. osāv-ū 'to cause to dry, esp. to drain the water from rice' MG. osāman 'water derived from rice, a gruel'; see P. B. Pandit 'E and O in Gujrati' Ind. Lang. vol. xv p. 37. cf. Sk. avāyāta 'cooled'. Turner *osinu*.
- ओसइणु *osahinu* "removal, reduction" sub. dir. sg. n. 12, *ohalāvanatthu* lw. Pk. 'for the sake of reduction' 331. Sk. apa + ghatanam, Pk. *ohalaram.
- ओसई ओसई "having sprinkled" abs. 537 cf. Pk. phrase *amsujala-ohaliya-ganījayalo* "whose cheeks are sprinkled by tears" in Sheth's Pkt. Dictionary, under *ohaliya*, which he renders as 'darkened, lustreless'. Der. not known.
- ओसई *osai* "limit, border" (Jain theological term) sub. dir. sg. m. 325, Sk. avatīh, Pk. ch., l. all cannot be explained, prob. ext. in Pk.
- ओसइ *osai* "Feronia Elephantum and its fru." sub. dir. sg. 44; Sk. kapātha-, o kapā-*tha*-, "in which monkeys dwell"; Pk. *kavī-*tha*-, kavī²ha-*, MG. *kō²hī* Bloch *kavāth*, Turner *kaith*.
- कउदई *kauḍām* "cowries" sub. obl. pl. n. (v. l. kavadhām) 461. Sk. kaparda-m., Pk. kavallā-m. Bloch *kavṛā*, Turner *kauf*.
- कउण *kaṇa* "who" inter. pro. obl. sg. 463; *kau-* n. dir. sg. 451, 534, 555; *kuna* obl. sg. 112, 557, also *kuni* 538; elsewhere *kuni* inst. sg. 545. Sk. káh pūnah, Pk. kavaṇu. Bloch *kon*, Turner *kun*.
- कउणग *kaṇiga* "curiosity, miracle" sub. n. sg. 465. lw. Sk. kaṇtukam. -k- > -g- indicates an earlier loan.
- कउणलक *kaccolaka* "a porcelain (or glass) cup" sub. dir. sg. 478 Pk. *kaccolaya-*. In OG. final -ya is replaced by -ka. MG. *kaccolū*.
- कउहा *kaḍhā* "a large cooking pan" sub. obl. sg. m. 311. *kaḍhāi* loc. sg. 315. Sk. *kaṭāhā* Pk. *kaḍāha-*, ext. in OG. Bloch *kaḍhā*, Turner *karāi*.
- कडियाई *kaḍiyāi* 41; meaning and derivation not known.
- कडुक *kaḍuka* "bitter" adj. dir. pl. (v. l. *kaṭuka*) 516; Sk. *kaṭuka-*, Pk. *kaḍua-*, OG. *kaḍu* ext. with -ka. Bloch *kaṛū*, Turner *karawa*.
- कणिक *kaṇikka* "a smaller variety of rice" sub. (in a compound *kaṇikkāḍika*) 503; also *kaṇika* 311. Pk. *kaṇikka* der. not known. Deśināmanāla 1.37 records *kaṇika* 'wet dough for bread.' w. MG. there are two words: *kaṇka* 'smaller grain of rice' and *kaṇk*, *kaṇek* dough for bread'.
- कडडिणु *kaḍḍiṇu* "any time, some time" adv. 94 lw. Sk. *kaḍḍicit* + OG. suffix -u.
- कडडइ *kaḍḍai* "near" postpos. 94, 103, 549, also *kaḍḍā* 74, 487, 533, 554; cf. Sk. *kaṛṇ*; Turner *kana*.
- कडडक *kaḍḍaka* "cowrie" sub. dir. sg. m. 21 lw. Sk. *kapardakāh*.
- कडड *kaḍḍā* "door, panel of a door" sub. m. n. dir. pl. 547. lw. Sk. *kaḍḍā-*.
- कडड *kaḍḍā* "does, accomplishes" v. pres. 3rd sg. 85, 495; *kaḍḍā* pl. 142; *kaḍḍā* list sg. 85, 560, also *kaḍḍām* 524, 629; *kaḍḍā* fut. 1st sg. 94, 580; *kaḍḍā* 3rd pl. 489; *kaḍḍā* imp. 3rd sg. (also 2nd pl.) 433, 494, 561, also *kaḍḍā* 164; *kaḍḍā* 2nd sg. 104, 557; *kaḍḍā* pres. 3rd sg. 426; *kaḍḍā* pres. part. (unenlarged) 533; *kaḍḍā* pres. part. m. dir. sg. 85; *kaḍḍā* pl. 85, 544, *kaḍḍām* gen. pl. 440, 490; *kaḍḍā*

loc. sg. 74, 108; karati dir. sg. f. 461, also karati (v. l. karati) 575; karivā obl. of inf. 94; kari abs. 38, 73, also post pas. 91, 109, 112; kijai pass. sg. 533, kijaiṁ pl. 433; kariu past part. 403; karivaṁh ger. n. sg. 488 also karivaṁh 13, 500, also karivaṁh 541, also karivaṁ 551; karivau m. 326, also karivā 442; karavi f. 10, 249; karaviyai 13, cannot be explained, it seems to be an error for karavi.....karāvai caus. pres. 3rd sg. 432, 474; karāvaiṁ 3rd pl. 483; karāvūṁ 524; karāvi imp. 2nd sg. 473; karāviṁ fut. 1st sg. 543; karāvatau pres part. m. dir. sg. 73, also karāvitaṁ 492, karāvīu past part. m. dir. sg. 461; karāvīyā pl. 74; karāvi f. dir. sg. 73, 579; karāvivā obl. of inf. 533, 534, karāvīju pres. 3rd pl. 430. Sk. Pk. kar-; OG. kar-; Sk. karāṁ Pk. karei, karāve; Bloch karṇō, Turner garnu.

करह karaha "camels" sub. m. dir. pl. 507. Sk. karabhaḥ Pk. karaha.

करा karā "icicles (due to hail)" sub. m. pl. 20 Sk. karaka-m. 'hail', Pk. karaga-m.

करावणहार karāvṇahāra "one who causes to act" sub. m. dir. sg. 53; OG. karāvana (from the causal base kar-) + -hāra agentive suffix; -hāra may be derived from oblique ha + hāra, or -h- may be intrusive. v. s. v. upāṇahāra.

करावण karāvṇaṁ "act of causing to do" sub. dir. sg. n. Pk. karāvṇa; der. s. v. karai.

करोट karota "a pot, basin" sub. in the compound karotādiku hṣajana 305; lw. Sk. karota-m.

करोटक karotaḥ "a pot, basin" sub. in the compound karotakādi. 209. lw. Sk. karota-; s. v. karota.

करोटी karoti "a pot, basin" sub f. 209. lw. Sk. karota-; s. v. karota.

कद कदा "distance" (†) f. dir. sg. 456 der. not known.

कलकलत्त kalakalattam "burning, boiling" pres. part. dir. sg. n. 577; kalakalāṁ obl. pl. m. 23; Sk. kalakala- Pk. kalakalāṁta-. In Sk. and Pk. it means only indistinct noise; perhaps it is transferred to the noise of any boiling liquid cf. MG. kaḥkaṭṭu tel 'boiling oil'.

कलसे kalasa "by the water pot, picher" sub. m. inst. sg. 483; Sk. kalasa-, Pk. kalasa-, MG. kalāsa. Turner kalas.

कपियद् kaḥiyai "is dragged" pass. sg. 532. Sk. kaḥ- to injure, to rub. Pk. kaḥ-to stiffen, to rub. Note the -ḥ- indicating a learned habit. Bloch kasōḥ.

कहद् kahai "narrates, tells" v. pres. 3rd sg. 86; kahaiṁ (v. l. kahai) 38; kahaṁ 1st sg. 457, 463 (in fut. sense); kahiu fut. 1st sg. 526, kahi imp. 2nd sg. 426, also kabeḥi 142; kahati (v. l. kahiti) pres. part. dir. sg. f. 142. kahatāṁ gen. obl. pl. 552; kahiu past part. m. dir. sg. 386, 435 also kahiuṁ (v. l. kahiu) 38, 74; kahiu loc. sg. 453, 468; kahiyā obl. pl. 385, 591; kahiyāṁ n. pl. 450, kahi f. 349; kahivo ger. m. dir. sg. 132. Sk. kathayati, Pk. kabeḥi, kahai. Turner kahana.

कहद् kahāṁ "where, in what" adv. 628; der. s. v. kibāṁ.

कहि kaḥi "whom" interr. pro. obl. sg. 101; for der. s. v. kahi; short -i cannot be explained.

कही kaḥi "any, some" indef. pro. obl. 529; (followed by eku) 560, (followed by anuṁ) 629; (followed by ḥari) 83; Sk. kaśyāpi, Pk. kassa; OG. kahi.

कहि kaḥim "sometime" indef. pro. loc. sg. 94. der. s. v. kahi.

का kā "someone" pro. dir. sg. f. 480, 514. Sk. kā, Pk. kā.

काह् kāi "by the body" sub. inst. sg. 316; Sk. kāya-m Pk. kāya-m.

काह्या kāiyā "bodily" adj. dir. sg. f. 143; Sk. kayikā, Pk. kāi.

काद् kāid "why, what for" inter. particle 531, Ap. kāim.

काद् kāim "any" indef. pro. nom. n. (v. l. kāi, kāim) 38, 465; kāi 463. Sk. kāncit.

काउसगि kausaggi "in meditation, a form o. Jain meditation" sub. loc. sg. m. 85; Sk. kāyo, tsarga- Pk. kausaggo; lw. Pk.

काकवत् kakavatt "half extracted juice of sugarcane" sub. dir. sg. m. 314. der. not known.

काकवा kaḥava "tortoise" sub. obl. sg. m. 150. cf. Ved. Sk. kaśyāpa-, Sk. kaḥchapa- (*kaḥchapa- 'inhabiting a marsh') Pk. kaḥchava-, kaḥchabba-MG. kṣeba. Bloch kasaṁ, Turner kacchavā.

कावत् kāvat "work; assignment" sub. dir. sg. m. 325. Sk. kāya n. Pk. kāja -n. OG. kāja-ext. change in gender cannot be explained;

- unextended *kāj* has survived in MG. as neuter; also s. v. *kāju*, where it is neuter.
- काजु** *kāju* "work, assignment" sub. dir. sg. n. 336, 514, 537. Sk. *kāryam*, Pk. *kajja-* n. Bloch *kāj*, Turner *kāj*.
- काह्** *kāh* "draws out pull out" v. pres. 3rd sg. 112; *kālhaum* 1st sg. 342; *kāhīyām* past part. dir. pl. 556; *kāhū* loc. sg. 142; also *kādhite* 461; *kāhuvā* obl. of inf. 556; *kāhīyām* pass. pl. 556; *kāhāvīyau* caus. past part. m. dir. sg. 526. Pa. *kādhātī*, Pk. *kāilha*. Bloch *kāhñ*, Turner *kābhū*
- कातत** *kātata* "spinning" pres. part. dir. sg. m. 213 Sk. root *kt*, *kartana-* 'act of spinning', *kartati*; Pk. *katta-*; note the MG. base with nasalisation *kāt-vū*. Bloch *kātñ*, Turner *kātū*.
- कादम** *kādama* "mud" sub. (in a compound *kādamaśūhana*) 12. Sk. *ksrdama-* m. Pk. *kaddama-*, MG. *kādav*, perh. lw. with *-m-* to *-w-* change.
- कापड** *kāpaḍa* "garments, dress" sub. n. dir. pl. 518. Note the change of meaning in MG. *kāpa* 'cloth' and *kaprā* n. pl. 'clothes, prepared garments' Sk. *karpatā-* Pk. *kappada-*. Bloch *kāpa*, Turner *kaprā*.
- कापर** *kāpara* "variegated, spotted" adj. dir. sg. m. 25; Sk. *karburaka-*, Pk. *kabburaya-*.
- कामपु** *kāmapuru* proper noun m. dir. sg. 523.
- काय** *kāya* "body" sub. dir. pl. 110. lw. Sk. *kāya-*.
- काल** *kāla* "black" adj. dir. sg. m. 23. Sk. *kāla-*, Pk. *kāla-*, ext.
- कालेय** *kāleya* "liver" sub. dir. sg. 25. lw. > k. *kāleyam*, *kāleyaka-*.
- कालि** *kālī* "to-morrow" adv. stereotyped loc. (v. l. *kālī*) 489, 543; note the added aspiration. Sk. *kalya-*, Pk. *kālī-*.
- कायपु** *kāyapu* proper noun dir. sg. m. 365.
- कि** *ki* a particle which introduces a question or a quotation. conj. 423. (occurs only once; P. omits it) et: *svāmin! su devu tumbārau patru buyau ki nahim;* Sk. *kim*, Pk. *kim*; Bloch § 204, suggests Persian influence; but here in the context the Sk. source is sufficient. The usage is also considerably early; Bloch *ki*, Turner *ki*.
- किं** *ki* "or" conjunctive particle 626, 628. der. s. v. *ki*.
- किणि** *kiṇi* "by some one" indef. pro. inst. sg. 365; often followed by hind. 73, 94; also loc. sg. 112. Sk. *kena*, Pk. *kena*.
- किम** *kiṃ* "how" adv. 193, 523; followed by *-i*, prob. inst., changing the sense 'in any way' 73, 85, 474, 602. Ap. *kemva*.
- किरि** *kirī* "as if" particle 514. Sk. *kila*, Pk. *kira*. Bloch *kira*.
- किम** *kiṃ* "what, why, how much" adj. interr. pro. dir. sg. m. (v. l. *kiṣyau*) 94; *kiṣum* n. sg. 426, 556; also *kiṣam* 588, (v. l. *kiṣum*) 463; *kiṣā* obl. sg. 94, 559; *kiṣim* pl. n. 563; *kiṣi* inst. sg. 386, 464; *kiṣi* f. 164, 556. Sk. *kidrś-*, *kidrśika-* Pk. *kiṣa-*; note the short *-i-* in OG.
- किह** *kihā* "where" adv. 365, 426, 514, 538, also *-hā* 514; pronom. stem *ka-* with the loc. *-asmin*, Pk. *-him*; also cf. Pk. *kamhā*, the ablative form, MG. *kyā*. Turner *kahā*.
- कीजता** *kijata* "while being done" pass. pres. part. gen. pl. 460; *kijata* loc. sg. 56. Sk. *kiṣyate*, Pk. *kiṣaj*. OG. present participle *kijata* is derived from the passive base.
- कीट** *kiṭam* "dust (accumulated in ghee)" sub. dir. sg. n. 313. Sk. *kiṭtam* 'secretion, dust, rust (of iron)'; Pk. *kiṭṭa-*, ext.; MG. *kiṭṭ*. Bloch *kit*.
- कीटिक** *kiṭika* "ant" sub. f. 19 lw. Sk. *kitaka-* m. Pk. *kiṭya* f.; note the sanskritised formation.
- कीटी** *kiṭī* "ant" sub. f. 21. Sk. *kitaka-* m. Pk. *kiṭya*. Bloch *kiṭ*.
- कीध** *kiḍha* "done, accomplished" past part. dir. sg. n. 38, 567; *kiḍho* m. 516; *kiḍhaum* n. sg. 433, 435, also *kiḍhum* 523; *kiḍhā*, *kiḍhām* pl. 94; *kiḍhai* loc. sg. 434; *kiḍhī* f. 74, probably an analogical formation of the past participle of the *-dh-* type (*li-dhau*, *pidhau*, *didhau*) with *kar-* as the stem.
- कीर्ति** *kiṛti* "having praised" abs. 83. lw. Sk. *kiṛtayaṭi*, OG. *kiṛta-* + OG *-i* abs.
- कीर्तिपाल** *kiṛtipāla* proper noun m. dir. sg. 487.
- कुटुंबी** *kuṭumbī* "farmer, householder (in contrast to a monk)" sub. m. dir. sg. (v. l. *kuṇḍambī*, *kuṭambī*) 112; lw. Sk. *kuṭumbīn*.
- कुटुली** *kuṭulī* "a long and a deep spoon used for serving and stirring (while cooking)" sub. f. sg. 209. MG. *kaṛcī*, *kaṛcho*; der. not known.

- possibly the present word means 'a lotus', if so, the etymology is clearer: Sk. Pk. kamala-.
- कांगुल *kāṅgula* "A type of creeper" sub. (part of a comp) sg. 311; Sk. kaṅka. m. kaṅgu, f. kaṅgani f. 'elastrus paniculatus.' Pk. kaṅgu, kaṅgapi.
- कांशि *kāṅśhi* "on the shoulder" sub. loc. sg. 540; Sk. skandha-; Pk. kaṅdha, khaṅdha-, MG. khādh, kādha, f. It is used here in the idiom kaṅdhi kuhāḥau kari-'in all readiness' Turner kādh.
- किंचुण *kiṅcūṅa* "a little less" adv. 251. Sk. kiṅcit + ānam, Pk. kiṅca + ūṅa, OG. kiṅcūna.
- कुंडी *kuṅḍī* "a bowl-shaped vessel, basin" sub. f. 25. Sk. kuṅḍaka, kuṅḍika, Pk. kuṅḍiyā, kuṅḍi. MG. kundi.
- कुंयु *kuṅyū* proper noun m. dir. sg. 110.
- कुंयुया *kuṅyuyā* "a type of insect" sub. pl. 21; cf. Sk. kunthati, 'to hurt, to twine round.' Pk. kunthi- ext. in. OG: kunthau.
- कुंमु *kuṅmū* proper noun dir. sg. m. 446.
- कुंभी *kuṅbhī* "jar, pitcher" sub. sg. 25. Sk. Pk. kuṅbbhi.
- कृमि *kr̥mi* "insect" sub. sg. 21. lw. Sk. kr̥mi-kr̥mi.
- कृयु *kr̥yū* proper noun m. dir. sg. 145.
- क्रयणउं *kr̥ayāṅauṅ* "a purchasable object, transaction" sub. dir. sg. n. 507. Sk. krayānaka-; note the retention of -r- in OG. MG. kariṅpū.
- कृयु *kr̥yau* "annihilation, destruction" sub. dir. sg. m. 74, 94. lw. Sk. kṣaya-.
- क्षि *ks̥i* "will be annihilated, will wane" v. pres. (in fut. sense) 3rd sg. 550 Sk. kṣayati, lw. OG. ks̥i-.
- क्षि *ks̥imi* "pardon, forgive" v. imp. 2nd sg. (v. l. ks̥amā) 539; lw. Sk. ks̥amati, OG. ks̥im-; OG. -i- in the first syllable may be due to the following -i- or some dialectal habit of the scribe.
- खर *khara* "moving in the air, flying" sub. 21 lw. Sk. khacara-.
- खजूर *khajūra* "dates" sub. pl. 477. Sk. khajūra- 'phoenix sylvestris, the wild date tree'; Pk. khajjura m. Bloch khajjīr, Turner khajur.
- खारि *khāri* "chalk" sub. f. sg. 20. Sk. khatikā, Pk. khāḥi MG. khāḥi. Bloch khari, Turner khari.
- खणु *khāṅṅu* "act of digging" sub. sg. n. 503. Sk. khānanam Pk. khānaum.
- खणितु *khāṅḍitū* "being dug" pass. pres. part. loc. sg. 386. This passive formation is new in OG, it is derived from Pk. passive suffix -ia-, and -tau is the extended form of the Pk. -ānta of the present participle. Sk. khānati, Pk. khānai.
- खनक *khānaka* "diggers" sub. m. dir. pl. 397; khānakalam obl. pl. 186. lw. Sk. khānaka-.
- खपाव *khāpāvai* "causes to consume, annihilate." caus. pres. 3rd sg. 586. khāpiyai pass. 3rd sg. 15*. Sk. kṣapyate; Bloch khapoḥ, Turner khāpau.
- खमाउं *khāmauṅ* "atone, pardon" v. pres. 1st sg. 327, 629; also 1st pl. 629; also in the compound tense khāmākaum 1st pl. 629; khāmāvaum caus. pres. 1st sg. 629; khāmāvai caus. pres. 3rd sg. 539; khāmāvaiṅ pl. 489; khāmāvijā past part. m. dir. pl. 103; khāmāvi abs. 113; khāmijū precative 3rd sg. 489. MG. khamvū, khamāvū. Sk. kṣāmate, kṣāmyati; Pk. khamat, khamāvai.
- खमासणु *khāmasaṅṅu* "act of paying respect, bowing down"—originally a respectful way of addressing the teacher and the elders 'ksāmāśramaṇa', but later came to mean, among Jains, the act of paying respect, sub. n. sg. 322; also khāmāsamaṅṅu 322. khāmāsamaṅṅu inst. sg. 322, Sk. kṣāmāśramaṇa- m. Pk. khamāsamana m.
- खरवलत *kharavalatau* "scratching" pres. part. m. dir. sg. 461; der. not known.
- खरितु *kharaṅḍitū* "polluted, impure (by contact with impure object) past part. sg. 305; kharaṅḍitū loc. sg. 203. Pk. kharamta, sanskritised in OG. with Sk. participial suffix -ita; cf. Pk. kharada 'to besmear, MG. kharavū 'to besmear, to make dirty by besmearing'.
- खल *khala* "residue of the sesamum seed after the oil is pressed out, oil-cake" sub. m. dir. pl. (v. l. khali) 433; Sk. khāla-, khali-, Pk. khali; MG. khōl m. Bloch khal, Turner khali.
- खलह *khalaḥ* "in the thrashing floor, granary" sub. loc. sg. 477. Sk. khāla- m. Pk. khala-, *khalam OG. khalaum MG. khāḥi. Bloch khal.
- खाइ *khāi* "eats" v. pres. 3rd sg. 25; khājaim pass. pl. 519; khādhāim past part. n. dir. pl. 433; khāi abs. 525; Sk. khādati, Pk. khāai MG. khāvū; Bloch khāpḥ, Turner khānu.
- खाटकी *khāṭkī* "butcher" sub. m. dir. sg. 129. Sk. khattika-, Pk. khattīa, khattikka-, MG.

khāti, the transference (1) of -i cannot be explained.

गर्भि लीगि "query" sub. d.r. sg. f. 20, 309. Sk. khaṇi, f. khāni, Pk. khaṇi khāni, MG. khāni f. Bloch khāni, Turner khāni.

गमयति क्षमायामि "act of asking pardon" Jam. theological term sub. d.r. sg. n. 326. khamachā pl. 311; cf. Sk. kṣama, kṣamayāna. Pk. khāmacā f.

गमयति क्षमायामि "obs." sub. old. pl. n. 12, der. not known.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति क्षमायामि "miser. s.p." v. pres. 3rd pl. 116. MG. khaṇvī. Pk. khāṇvī, khaṇvī cf. H. khāṇvī which suggests that MI. here should be 'khaṇvī' see however, Turner khāṇvī.

गमयति गणित "counted, considered" past part. m. dir. sg. Sk. gaṇitam, Pk. gaṇitam, ext.

गमयति गणित "counted, noted" pass. 3rd pl. 405. Note the use of -ā- passive, which is rare in this period. The usual passive suffix is -īya- der. s. v. gṇat.

गमयति गणित "inner part of the shrine" sub. obl. sg. m. 617. cf. Sk. garbhagrha- n; *garbhagrha-, Pk. gabbha hera- ext.

गमयति गणित "side, direction" adv. loc. sg. 450, 457, 589, also game 483, gamā obl. 530. MG. gam, game. Sk. gamya-, Pk. gamma-, gama-, OG ext.

गमयति गणित "coming and going-bodily movement" sub. n. dir. sg. (v. l. gama-gāgamaṇam) 38, Sk. gamanāgamanam, lw. in Pk. gamanāgamaṇa- ext.

गमयति गणित "went" past part. m. dir. sg. 38, 74, gayā pl. 86, 433, 550, gat f. sg. 426, 489, 573, gayat past part. loc. sg. m. 451. Sk. galāḥ, Pk. gāya- ext. in OG. Turner gāyo.

गमयति गणित "exonerate" v. pres. 1st sg. 364, also garbaum 166; gṛitā abs. 564.

गमयति गणित "by the elder" adj. m. inst. sg. 365, garvā obl. pl. 516. Sk. gurūḥ, Pk. garu-.

गमयति गणित "big, on a grand scale" adj. f. 71. Sk. gurūḥ; Pk. garu- ext. in OO. with f. suffix -ī.

गमयति गणित "melts" v. pres. 3rd sg. 439; galim cīva past part. sg. n. 25. Sk. *galati, galayati, Pk. galatī. MG. gal-vū. Bloch galatī, Turner galna.

गमयति गणित galalanīca "a bull's dewlap" (first part of a compound: galakṣvalādikabam) sub. 443. Sk. galakambala-.

गमयति गणित galasaraṇa "sobs" sub. n. pl. 38. Sk. galasvara "noise in the throat" f. doubtful.

गमयति गणित "neck" sub. n. obl. sg. 428. cf. Sk. galaka-m, Pk. gala-m, perhaps also n. in Sk, Pk. *galanā; MG. galū. Bloch galā, Turner galo.

गमयति गणित "swallowed" (in the compound verb construction with gayau) abs. 556. Sk. galati 'swallows'.

गमयति गणित "cow" sub. sg. f. 264, 311, 325; Sk. gāvī f. Pk. gāvi, gāi f. MG. gā, gāy. Bloch gāvī, gāi Turner gāi.

गमयति गणित "two miles" (unit of measurement) sub. m. dir. sg. 616; gāyāimī n. pl. 7. Sk. gāv-

घृण्य गृह्यै "inside the fold for cattle, (goethā mātṛī), suk. oñ. sg. m. 354, lw. Sk. gṛēthā; ext. in OG. gṛēthā, ell. goethā.

घृण्य गृण्यन्ते proper noun m. dir. sg. 104.

घृण्य गृण्यै "knot" sub. (as a first member of a compound gṛāṭhivahatī) 333. Sk. gṛāṭhī Pk. gṛāṭhī m. f. MG. gṛāṭhī f. Bloch gāth, Turner gāth.

घृण्य गृण्यै "a type of worm" sub. 21, Sk. gṛāṭhī-m.

घृण्य गृण्यै "smells" v. pres. 3rd sg. 434, Sk. gṛāṭhī m. Pk. gṛāṭhī-m. Sk. gṛāṭhāvatī f.

घृण्य गृण्यै "ste, vult" v. pres. 3rd sg. 426. gṛāṭhāvatī pres. part. case. gen. oñ. pl. 339. gṛāṭhīvatī pres. part. loc. sg. 339 lw. Sk. gṛāṭhī, gṛāṭh- + OG. verb inflection.

घृण्य गृण्यै "pitcher" sub. dir. sg. m. 189. Sk. gṛāṭhī, gṛāṭhā, Pk. gṛāṭhī, gṛāṭhī. "small pitcher" MG. gṛāṭhī Bloch gṛāṭh, Turner gṛāṭh.

घृण्य गृण्यै "manufacture" sub. sg. n. 506. gṛāṭhāvatī sub. n. sg. (fr. caus. base) 'evolving to manufacture' 506. Sk. gṛāṭhāvatī Pk. gṛāṭhāvatī.

घृण्य गृण्यै "burr" sub. f. loc. sg. 325. Sk. gṛāṭhī, Pk. gṛāṭhī. MG. gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "swift, lit. travelling in the same hour" (gṛāṭhīyā jayati atvāṭhī 'a camel which runs one yojana an hour') a. l. f. sg. 354. Sk. gṛāṭhī, Pk. gṛāṭhī. Also a. v. gṛāṭhīyā.

घृण्य गृण्यै "hammer" sub. m. dir. sg. 508, Sk. gṛāṭhī Pk. gṛāṭhī m. MG. gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "moch" a. l. adv. m. dir. sg. (v. l. gṛāṭhī) 112, 586, gṛāṭhī pl. 518; gṛāṭhī n. sg. 571, also gṛāṭhī 451, 481; gṛāṭhī f. 489, 571; gṛāṭhī inst. pl. 456. Sk. gṛāṭhī - Pk. gṛāṭhī - ext. Bloch gṛāṭhī, Turner gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "much" "MOG" superlative adj. dir. sg. n. 38, 246, 516. OG. gṛāṭh- + eraum; for gṛāṭh- see gṛāṭhī, for eraum see adhikeraum.

घृण्य गृण्यै "house" sub. n. dir. sg. 85, also gṛāṭhī 529; gṛāṭhī loc. sg. 85, 430, 526, also gṛāṭhī (pl. 1) 86. For the problems of relating Sk. gṛāṭh- with MIA gṛāṭh- see Turner BROS III pp. 401. Bloch gṛāṭh, Turner gṛāṭh.

घृण्य गृण्यै "grindstone" sub. dir. sg. f. 520. Sk. gṛāṭhī m. grindstone, Pk. gṛāṭhī m.

also probably *gṛāṭhīkā 'a smaller grindstone for domestic use' MG. gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "by stroke, attack" sub. m. inst. sg. 431, Sk. gṛāṭhī, Pk. gṛāṭhī, OG. gṛāṭhī, ext. to gṛāṭhī (probably to preserve m. gender). Bloch gṛāṭhī, Turner gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "in the oil-mill" sub. m. loc. sg. 429, Sk. gṛāṭhī. Pk. gṛāṭhī - ext. in OG. gṛāṭhī; MG. gṛāṭhī m., gṛāṭhī f. s. v. gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "quantity sufficient for one time (to be put in a frying-boiling-pan)" sub. dir. sg. m. 311; also gṛāṭhī 311, cf. MG. gṛāṭhī, also gṛāṭhī m. 'oil-mill' gṛāṭhī f. Sk. gṛāṭhī, Pk. gṛāṭhī. Turner gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "thrown" past part. m. dir. sg. 457, 557, gṛāṭhī obf. of inf.; gṛāṭhī abs. 464, 489, lw. Sk. gṛāṭhī, gṛāṭh- + OG. verbal inflection.

घृण्य गृण्यै "a type of sweet prepared with ghee and sugar" sub. dir. pl. n. 316, cf. MG. gṛāṭhī, cf. Del. gṛāṭhī-m. etymology not known.

घृण्य गृण्यै "ghee, melted butter" sub. dir. sg. n. 91. Sk. gṛāṭhī n. Pk. gṛāṭhī n. Bloch gṛāṭhī, Turner gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "horse" sub. m. dir. sg. 464; gṛāṭhī inst. sg. 483; gṛāṭhī f. 264 Sk. gṛāṭhī - Pk. gṛāṭhī, Bloch gṛāṭhī, Turner gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "combination, mixture" sub. m. 601. Sk. lex. gṛāṭhī Pk. gṛāṭhī; cf. Pk. gṛāṭhī n. 'cards strained through a piece of cloth'-by constant rubbing; MG. gṛāṭhī 'to stir, mix'; Bloch gṛāṭhī, Turner gṛāṭhī.

घृण्य गृण्यै "ankle" sub. f. sg. (in the compound pāda-gṛāṭhī) 42; cf. MG. gṛāṭhī 'ankle' gṛāṭhī m. knee; (also cf. gṛāṭhī m. knee). Der. not known. g-gh- alternation may suggest a non-aryan loan.

घृण्य गृण्यै "in the quadrangle" sub. loc. sg. 246 Sk. cāṭhī - Pk. cāṭhī; MG. cāṭhī m. Bloch cāṭhī, Turner cāṭhī.

घृण्य गृण्यै cāṭhī "fortyfour" num. dir. sg. 74; Sk. cāṭhī - cāṭhīvatī Pk. cāṭhī, cāṭhī; MG. cāṭhī, cāṭhī; the OG. cāṭhī seems to be built upon a probable MI cau- and cāṭhī; the MG. form is derived from Pk. cāṭhī. Bloch §223; Turner cāṭhī.

- चत्त्रीस** *cautrisā* "thirtyfour" num. 372. also *cautisa* 372. *cautrisamu* ordinal n. 330. Sk. *catustrīṣatī* Pk. *cautisa*, MG. *cOtris*; note the retention of -tr- in MG. and OG. *cautrisa-mau* is the ordinal, -ma- is the OG. ordinal forming suffix. Sk. -mah, Pk. mo. Turner *caūtis*.
- चतुर्थ** *chautham* "fourth" num. ord. n. dir. sg. 94; *cauthā* obl. pl. 143; *cauthai* inst. sg. 423, also loc. sg. 355; *cauthī* f. 434 Sk. *caturthāh* Pk. *cautha*-ext. MG. *cOth*-. Bloch *cauthā*, Turner *cautho*.
- चतुर्दश** *caudā* "fourteen" num. 35, 247. *caūdamal* ord. loc. sg. 'on the fourteenth' 354; Sk. *cātur-dāsa*- Pk. *cauddasa* MG. *caud*. Bloch *caudā*, Turner *cauda*.
- चतुर्मासि** *caumāsī* "in the monsoon" sub. n. loc. sg. 515; *caumāsā* obl. sg. 395; *caumāsīya* adj. 'belonging to monsoon' 385. Sk. *caturmāsam* n. Pk. *caummāsa*-, ext. in OG. Sk. *cāturmāsikam* Pk. *cāummāsīa*, *caummāsīa*. Turner *caumāsā*.
- चतुर्मुखस्तूप** *caumukhatārīpu* "form of four faces" dir. sg. m. 376; *cau*- v. s. v. *cau* *huṁ* *disi*. A lw. in OG. by substituting the first part with an OG form, the rest being Sk. cf. Sk. *caturmukha*-,
- चत्वारसी** *caurāsī* "eightyfour" 421; (also in the compound *caurāsī lākha sattāpāṁhvai sahasa teṣa saṁkhyam*—84,97,023, num. obl. pl. 90) also *caurāsī* (with retention of -ś- before front vowels) 11, 84, 613. Sk. *cāturaśīṭh* Pk. *caurāsī*, *caurāsī*; MI -ā- can be explained by other MI forms with ā in the same set. cf. *ekkāśī*, *bāsīṁ*, *pañcāśīṁ* etc. Turner *caurāsī*.
- चत्वीस** *cauvīsa* "twenty four" num. dir. sg.; *cauvīśām* pl. 407; one hundred twentyfour 124, 613 *cauvīsamau* ord. dir. sg. m. 62,-mā obl. 222. Sk. *cāturviṣṭatīḥ* Pk. *cauvīsa* MG. *cOvis*. for OG. expression *cauvīśām* *sau* 'one hundred twentyfour' cf. MG. *cOvisā* sO. Turner *cauvīs*
- चत्सट्ठि** *causatṭhī* "sixtyfour" num. dir. sg. 64, 74, 613; Sk. *catuṣṣaṣṭī* f. Pk. *causatthī* f. MG. *cOsaṭh*. Turner *caūsattḥī*.
- चतुर्द्वे** *disi* *caubhū* *disi* "in four directions" sub. loc. sg. 7; MG. *cOdis* in four directions'. Sk. *catūr* Pk. *cau*; Sk. *disā* f. Pk. *disā* f; OG. *disa* f. *huṁ* is OG. emphatic particle.
- चक** *ca'aka* "a type of bird, sparrow" sub. sg. 21; lw. Sk. *cataka*- m.
- चकवावड** *caḥavaḥavau* "rebuke" v. imp. 3rd sg. (v. l. *alavadāvanu*, *daḥavaḥavānu*, *vaḥavaḥavānu*) 38; Sk. *catacatati*, onomatopoe. Ap. *calakka*, Hc. iv. 406; Sk. *catabhata* 'quarrel some soldier'; MG. *caḥḥaḥ* 'quarrel; for *alava* *dāvanu* cf. MG. *aḥāvū* 'to threaten'; for *daḥa* *baḥāvau* cf. MG. *daḥāvū* 'to threaten' see Turner *dipkaunu*, *barbarānu*; MG. *aḥāvū* is probably a causal base from *aḥvū* 'to be stubborn' and *daḥāv-* is a causal base from *dāh-* 'to press, crush'; cf. Bloch *dābhū*.
- चडिड** *caḍiḍu* "climbed" past part. m. dir. sg. 109, also *caḍiyau* 157; *caḍiyā* pl. 550; *caḍi* imp. 2nd sg. 157; *caḍisī* fut. 3rd sg. 110; *caḍistu* pres. part. m. dir. sg. 434, 579; *caḍī* abs. 109, 110; *caḍiyā* inf. of purpose 109; *caḍavatām* caus. pres. part. gen. obl. pl. 341; *caḍāvi* caus. abs.; *caḍāvīnu* past part. m. dir. sg. 483; *caḍāvi* loc. sg. 453; For various (untenable) speculations see Gray L. H. JAOS. 60; Pk. *caḍai*. In MG. there is also the alternative from *caḥvū*; same alternant -ḥ- is noticed in H. P. S. L. and O; thus it may be necessary to reconstruct a MI form **caḍha-*, *caḍḍha-*. Bloch *caḍhō*, Turner *caḥnu*.
- चणक** *capakaham* "gram, chick peas" sub. obl. pl. 25. lw. Sk. *capakah* Bloch *capā*, Turner *cauā*.
- चत्तारिसई** *caṭṭārisāṇī* "four hundred" num. 613 Sk. *catvāri śatāni* Pk. *cattāri śayāṁ*; *cattāri* is a Pk. lw. in. OG; MG. (dialectal) *cārsē*.
- चपलक** *capalaka* "a kind of green vegetable comparable in size and shape to string beans" sub. 502. MG. *cOḷā*, *cOḷi*, the OG. word seems to be a sanskritization; Sk. *capala-ka-*; and Pk. *cavala-* mean 'fickle, unsteady.'
- चमरेतु** *camareṇḍru* proper noun m. dir. sg. 428.
- चलावी** *calāvi* "to cause to move" caus. inf. 246; MG. *caḥvū*, caus. *caḥāv-vū* 'to move (from one position)'; Sk. *cārati*, *calati*, Pk. *calā*, Turner *calnu*.
- चवी** *caḥī* "having moved- transformation from one life to another- by death" abs. 94. Sk. *cyavate*, Pk. *cavai*.
- चंडमोत** proper noun m. dir. sg. 574.
- चाखरी** *cākhaḥī* "(wooden) shoes" sub. dir. sg. f. 12, 213. MG. *cākḥī*, Der. not known.
- चारतु** *cārātu* "grazing, keeping (cattle) caus. pres. part. m. dir. sg. 589; Sk. *cārati*, Pk. *caḥā*. Bloch *carḥē*, Turner *carnu*.
- चारितु** *cārītu* "character, way of life" sub. n. dir. sg. 549; Sk. *cāritra*-n. Pk. *cārīta-* n.; lw. Pk.

वाल्ह् *cālai* "walks, goes" v. pres. 3rd sg. 365; *cālain* pl. 489; *cālata* pres. part. m. dir. pl. 544; *cāliu* past part. m. dir. sg. 94, 451, 578; *cāliya* pl. 578; *cāliyām* 451; *cālt* f. sg. 579; *cāliivā* inf. of purpose 481; *cālavai* caus. pres. 3rd sg. 488; *cālvijai* pass. sg. 489; Sk. **calyati*, Pk. *cālāi*. Bloch *cālpā*, Turner *cāluu*.

चित्ति *citti* "in the mind" sub. n. loc. sg. 94. Sk. *citta-*, Pk. *citta-*; lw. Pk.

चित्र *citrau* "panther" sub. m. dir. sg. 443; *citrāi* inst. sg. 448; also *citraku*, *citrakī* 448. Sk. *citrāh* 'spotted' *citrakāh* Pk. *citta-* ext. MG. *citto*; note the retention of -tr- in OG. Bloch *cittā*, *cittā*, Turner *cituvā*.

चित्रसालु *cītrasālu* proper noun m. dir. sg. 516.

चिवालीस *ciyāliśa* "forty" num. 342, 616; MG. *cāliś*, *cāliś*; OG. *ciyā-* can be explained to suggest an initial palatal glide, **cyā-*; also cf. OG. *ciyāri*; Sk. *cstvāriṃśat*, Pk. *cattāliśam*, *cāyāliśam*. Bloch *cāliś*, Turner *cāliś*.

चिपारि *ciyāri* "four" num. dir. sg. 74, also *cattāri* 110; v. l. *cyāri* 142; *cau* hum emphatic obl. 142; also *ciyāra* i emphatic 434, 538. MG. *cār*, emphatic *cāre*. cf. Sk. *cātvārah* m, nom., *cātvāri* n. nom. acc., **cātārah*, **cātāri*, could explain the present form. Bloch *cār*, *cyār*. Turner *cār*.

चितवद्, चितवद् *cītavai*, *cīstavai* "thinks, ponders" v. pres. 3rd sg. 73, 74; *cītavān* pres. part. m. dir. sg. 38; *cītavatām* obl. pl. 33; *cītavium* past part. n. dir. sg. 112; *cītavivā* obl. of inf. 74, also *cītaveva* 85; *cītavivā* abs. 112. Absence of nasalisation in many forms is due to contamination with *citta-* Sk. *cītavayati*, Pk. *cīnteti*, *cīntavai* (causal in primitive sense).

चिन्द *ciñcuśa* "a type of small mosquito" sub. 21; MG. *cīcar*. Der. not known.

चूद् *cūkai* "misses" v. pres. 3rd sg. 433. cf. Sk. *cūyātāh*; Dhātupātha *cukk-* 'to suffer pain'. Pk. *cukka-* 'to forget, be deprived of.' Bloch *cukpā*, Turner *cuknu*.

चूद् *cūliki* "cooking place" sub. f. sg. 178. Sk. *cullī* f., Pk. *cullī* f., MG. *cūlī* f. Note the MIA -ll->-lh-development common to other NIA dialects S. P. and L. Bloch *cūl*, Turner *cūli*.

चेरी *ceṛi* "maid servant" sub. f. dir. sg. 85; Sk. *ceṛikā*; Pk. *ceṛiā*, *cedi*.

चेतु *ceṭu* "pupil" sub. m. n. dir. sg. 38, also *ceṭau* 38. cf. Sk. *ceṭa*; Def. *cilla-*; Bloch

suggests Dravidian origin. Bloch *ceṭā*, Turner *ceṭo*.

चोला *coḷhā* "rice" sub. obl. pl. m. MG. *coḷhā* 'rice' and the adj. *coḷkhū* 'pure'. Sk. *caukṣāh*, *coḷkṣāh* 'pure', Pk. *coḷkha-* Bloch *coḷh*, Turner *coḷho*.

चोपदणु *copadaṇu* "smearing (act of)" sub. n. dir. sg. 12 der. from the OG. base *copad-* a. v. *copadium*.

चोपदिडे *copadiḍu* "besmeared" past part. dir. sg. n. 317; *copadi* abs. 316. Pk. *copāi-* 'to apply oil, ghee etc. Der. not known. For various suggestions see Turner *copnu*.

चोरते *corauṭi* "steal" v. pres. 1st sg. 525; *cori* past part. f. 543. Sk. *corayati*, Pk. *coriā* 'stolen'; Turner *cornu*.

चोर *coru* "thief" sub. m. dir. sg. 522; *cori* inst. sg. n. 525, *core* inst. pl. 555. Sk. *corāḥ* m. Pk. *cora* m. Bloch *cor*, Turner *cor*.

चोरी *cori* "theft" sub. f. dir. sg. 464, 522, 525. Sk. *caurikā*, Pk. *coriā*, *cori* Turner *cori*.

चोलपट्ट *colapattau* "a piece of cloth worn round the middle of the body." sub dir. sg. m. 44; lw. Sk. *colapatta-* ext. in O .

चेद्र *camitra* proper noun m. dir. sg. 445, 488.

चेद्रम *camitrapāḥa* proper noun m. n. a . sg. 110.

चेद्रिका *canidrikā* proper noun f. dir. sg. 534.

चेरा *camipā* name of a town f. dir. sg. 108

चांचुद् *cañcuśa* "a type of small bng" sub. dir. 21. Derivation uncertain, but cf. Sk. lex. *cañcuśa-* m. 'beak-leaved, a kind of vegetable,' cf. Sk. *cañcupattra-*, MG. *cīcar* m.

चांपी *cāmpī* "having massaged, pressed, subdued" abs. 279; MG. *cāpṭi* D. *cāmpai*.

छ *cha* "six" sub. num. 135; *cha* e inst. pl. 120, 318. cf. Sk. *ṣaṭ*; Pa. *ṣkta*. For various etymological suggestions see Bloch § 218, Pischel § 441; Bloch *ṣāḥ*, Turner *cha*.

छा² *chāṭ* "image, form" sub. f. dir. sg. (second member of the compound *tāra-chāṭ* 'bright image'). Sk. *chāvī*, *chāvīḥ*; Pk. *chāvī*.

छा³ *chāṭ* "is" v. pres. 3rd sg. 112, 548; *chāim* pl. 142, also sg. 430; *che* 3rd pl. 383; *chām* 1st pl. 455. *chātān* pres. part. dir. sg. n. 533, *chātā* pres. part. pl. m. 408, 455. Sk. *chāṭeti* Pk. *achāṭ*, *achāṭ* for alternative suggestions see Bloch *aṣṭp*; Turner *chānu*.

- the base jāpa- v. s. v. jāpai; for hāru v. s. v. karana-hāru.
- जायगहार jāyanahāra "one who goes" sub. dir. pl. 493 jāyapa + hāra; agentive noun from the base jā, jāya; v. s. v. jāi.
- जालं jālān "holes" sub. obl. pl. n. 264; Sk. jālakā- n., Pk. jālaya-; MG. jālū n.
- जि जि¹ "only" particle of emphasis 73; Pk. ji; Hc. ii. 217, iv. 419-20; Pischel §336 suggests eva, with a y-glide in the initial syllable (as in Pali yeva), later developing as jeva, ji.
- जि जि² "these" rel. pro. noun. pl. 113, 526, 527; Sk. ye, Pk. je; v. s. v. je.
- जिनदासु jīnadāsu proper noun m. dir. sg. 435.
- जिनि जिनि "by whom" rel. pro. inst. sg. 74, 94; Sk. yēna, Pk. jīpa with the OG inst. inflection. Note the short -i- in the initial syllable. MG. jEnE.
- जिनिवा जिनिवा "to win" obl. of inf. 246, 484; abs. 515. Sk. ji-; Pk. jīpai.
- जिनडे jīnauṁ "whose" rel. pro. dir. sg. n. 403; an early alternation of jeha + nauṁ. v. s. v. je¹. MG. jEnū.
- जिनदासु jīnadāsu proper noun m. dir. sg. 553.
- जिनसंबंधियां jīnasambānḍhiyān "related to Jinas" lw. Sk. jīna-sambandhin Pk. sambān-dhi; extended in OG. with -u: jīnasambānḍhin.
- जिम जिम "as, like" adv. 73, 553, 559; Pischel § 261 suggests building of similar forms on the analogy of evam; kiṣa, jīva (Ap. jemva), in the sense of Sk. katham, yathā.
- जिसडे jisau "of what type, like" adj. 109, 553; jisām n. pl. 74; jisai inst. sg. 143; jisī f. sg. 143, 480, 547. Sk. yādṛśikam; v. s. v. isau.
- जिहां जिहां "where" adv. 483, 538. Turner (s. v. jahā, kabā) suggests three probable sources for the suffix -hā: suffix of Sk. ihā, kuhā; that of Sk. kathām, tāthā, or the ending of loc. in -asmin, Pk., him.
- जितडे jītau "won, conquered" past part. m. dir. sg. 74, 464; jīta obl. pl. 451; Sk. jāyati, past part. jītā-; Pk. jīa, jīta, latter being formed on the analogy of other -ta- past participles.
- जिपां जिपां "conquer" pass. 3rd sg. (pl.-im may be an error for -i) 251; Pk. jīpai; cf. Sk. paradigm of the stem ji, and formations such as jīvan, jīvara-, which may be the sources of Pk. jīpe-.
- जिभा jībhā "tongue" sub. f. dir. sg. 521; cf. Sk. jīhvā; Pk. jībhā, Bloch jīh, Turner jīro.
- जिमगट जिमगट "right" adj. dir. sg. m. 392. Sk. jemati 'eat'; jemanaka-; Pk. jīmaca 'eating', OG. ext. -u, 'hand by which one eats'. Initial -i- cannot be explained. MG. jumno, 'right', jamvū 'to eat', suggest that the -i- should be short. v. s. v. jīmita.
- जिमिसु jimisu "I will eat" v. fut. 1st. sg. 85, jīmatau pres. part. dir. sg. m. 213; jīmatām obl. gen. pl. 226; jīmti abs. 433; jīmatī caus. abs. 512, initial long i in jīma- cannot be explained, v. s. v. jīmapān. MG. jamvū. Turner notes Austric (Munda) affinities. Sk. jemati, Pk. jīmai Bloch jevpā, Turner jīunār.
- जिविसि jivisi "will live" v. fut. 2nd sg. 471, jīvatau pres. part. m. dir. sg. 522; jiviti (v. l. jivati) f. sg. 573; jiviu past part. m. dir. sg. 433, 589; jivī f. sg. 555; jīvatai pres. part. (unenlarged) 539; jīvdai caus. pres. 3rd sg. 463, 522; also in fut. sense 465; jīvdīu caus. past part. m. dir. sg. 463, 522. Sk. jīvati; Pk. jīvai. Turner jīanu.
- जु जु¹ "it" conj. 561; also juu (v. l. jau) 572, v. s. v. jau.
- जु जु² particle of emphasis 412, 444, 544. v. s. v. ji.
- जु जु³ "who" rel. pro. nom. sg. 85, 109, 365, 465, 539. Sk. jah, Pk. jo, Ap. ja.
- जुकु juktu "joined, endowed with" past part. m. dir. sg. 144; Sk. yukta- lw. in OG.
- जुगत जुगत "proper" adj. m. dir. sg. 63; also jugutā 3, 70; Sk. yukta- lw. in OG. v. s. v. juktū, -ga-suggests a late MIA loan.
- जुगविसो जुगविसो "one who practices gymnastics, acrobatics" sub. m. dir. sg. 250. Sk. yoga 'bodily exercise, gymnastics'; Pk. ojugaviso; lw. Pk.
- जुपडे जुपडे "separate" adj. adv. dir. sg. Sk. yutāḥ Pk. jua - ext. in OG.
- जुपारी जुपारी "gambler" sub. m. dir. sg. 470; Sk. dṛyutakārah. eḍyutakārin, Pk. juāri- ext. Turner juwāri¹.
- जूका जूका "louse" sub. f. dir. sg. 401. Sk. yūhā f. lw. in OG. v. s. v. jū.
- जू जू "louse" sub. f. dir. sg. 21, 338; Sk. yūhā f. Pk. jūā f. Bloch ū, Turner jumro.
- जूवु जुवु "youth" adj. n. dir. sg. 91; Sk. yauvanam, Pk. jovvaṇa- n. lw. in OG.

टिलो *ṭilām* meaning and derivation not known 112.

टीप *ṭīpa* "that which is pounded, beaten" sub. m. sg. C01; cf. MG. *ṭīpū* to beat, to pound; der. doubtful, cf. Sk. *ṭīp*, *ṭīpāta*, **ṭīpāta* 'to heap together', 'probably *ṭīpū* 'drop' and *ṭāpavū* 'to fall drop by drop' may be connected Bloch *ṭīp*, Turner *ṭāpānu*

*

थारी *thārī* "having placed" abs. 142. Sk. *sthā-*, *sthāti*, *sthāpāta*, Pk. *thai*, *thavai*, abs. *thavinm* OG. *thavi*. Bloch *thēnē*, Turner *thānu*, *thāpnu*

थालु *thālu* "empty" adj. dir. sg. m. 397, *thālanm* n. 112; cf. MG. (dialects of Saurashtra) *thālū* adj. 'empty, worthless'. Des *thalla* 'poor, without any possessions.

ठाड *thāḍa* "dirt (of oil) which has settled at the bottom" sub. dir. sg. m. 315, cf. Sk. *sthāgha* 'shallow' (cf. Sk. *astāgha* 'deep', Pk. *atthāha*-).

*

दसि *dasu* "smitten, stung" past part. m. dir. sg. 522, 589; *dasī* abs. 522. Sk. *dāsati*, Pk. *damsai*. MG. *ḍasvū*, v. s. v. *damka*. Bloch *ḍasṇē*, Turner *dasnu*.

दोकरि *ḍoharī* "old woman" sub. f. dir. sg. 589; also cf. MG. *dok* f. 'neck', *dokū* n. 'head', and Nepali *doko* 'basket (carried on the back)'. Derivation is not known; for other IA cognates see Bloch and Turner. Bloch *ḍoi*, *dokī*, Turner *ḍoko*.

दोल *dola* "name of a mountain" sub. m. sg. 311.

दंक *daṅka* "sting, bite" (sarppa-'snake bite') sub. m. dir. sg. 532, also *daṅku* 557. MG. *daṅkh*. Relation with Pk. *ḍamsai* is not clear. But compare similar words in Panjabi, Lahandi and Sindhi: *daṅgnā*, *ḍaṅg*, *ḍaṅganu*; a probable source may be *daṅsa-kṣata*-'wound by biting' Bloch *daṅkh*, Turner *dasnu*.

दांस *ḍāṅsa* "mosquitoes" sub. m. dir. pl. 401; -s- may be Sanskrit influence or dialectal. MG. *ḍās*. Sk. *daṅśah* n., Pk. *ḍamsa-m*, v. s. v. *ḍasiu*. Turner *ḍās*.

*

दलित *ḍhalīṭu* "fell, toppled" past part. m. dir. sg. 589; *ḍhalatām* pres. part. gen. obl. pl. 376; *ḍhalivā* obl. of inf. 483, cf. MG. *ḍhaḷvū*, 'fall' *dhāḷvū* caus; *dhāḷ* f. 'slope'. Pk. *dhalaī*, *ḍhālī* caus. Turner *ḍhalnu*, *ḍhūnu*.

दीरही *ḍīrahī* sub. f. 12. meaning and der. not known.

द्विज *dvija* "vicarious" adj. dir. sg. m. 311 Pk. *dhīlla*- Bloch *dhīlā*, Turner *dhīlo*

द्वड *dvad* "near, adjoining" adj. dir. sg. n. 127, *dhakalim* loc. (used adverbially) D. of Sk. *dhaukate* 'approaches', Pk. *dhakkai*, *dhakka-est* in OG-*ḍham* Turner *dhukna*

दुहि *dhūhi* "go near" v. imp. 2nd sg. 545 Pk. *dhakkai* v. s. v. *dhūkalanm*

दोरी *dhūrī* "a small lota" sub. f. 209, cf. MG. *toyli* Der. not known

दोरा *dhōra* "an eatable, a preparation of fermented flour" sub. n. obl. 433. Der. not known. MG. *dhokjū*.

दोराण *dhōraṇam* "cover, lid" sub. dir. sg. n. 211 Pk. *dhakkai* 'covers'; Pk. *ḍhamkīni* f. 'lid, cover'; **ḍhamkana*-cover. v. s. v. *ḍhamkīni*

दोकि *dhōkī* "closed, covered" past part. dir. sg. n. 309; *dhōkātām* pres. part. gen. obl. pl. 552; *dhōkī* abs. 463 Pk. *dhakkai*, *ḍhī* *ḍhamkīni* f. cover, lid. Bloch *dhōkṣē*, *ḍhōkṣē* Turner *dhaknu*.

दोकि *dhōkī* "type of cranes" sub. 21; cf. MG. *dhōkbaglo*; Pk. *dhōka*, *dhēmka* 'a type of bird'.

दुदणवद *dhūṇḍhava* *vaḍai* "by bartering" sub. n. 183, der. not known.

*

त *ta* "then, otherwise" a particle with some contrastive meaning. conj. 332. Sk. *talā*, Pk. *taḷā*, *taya*. Turner *tal*.

तउ *tau* "then, therefore" conj. postpos. Sk. *tāṭah*, Pk. *tao*. MG. *tō*.

तउ *taum* "you" pers. pro. 2nd pers. sg. (v. 1 *tū*, *tūm*) 71, 427, 465, 474, 538; also *taum* 474; *tū* obl. sg. 457, 474, 539; *taim* inst. sg. 74, 522, 526. cf. Sk. *tvām*, which had an alternate dialectally, a dissyllabic form Ved. Sk. *tvām*, Pk. *tumam*, *tuam*; contam. first person *haum*-OG *taam*. Bloch *tū*, Turner *tū*.

तडफडाता *taḍaphadātām* "convulsing (with pain) trembling and shaking violently in agony" pres. part. gen. obl. pl. 25; Pk. *taḍaphadai*, *taḍaphaḍamta*-; cf. Sk. *traṭat* 'crackling' *traṭatraṭa*-; and **phat* (see Turner: *pharakau*) Pk. **phad*-; cf. MG. words, *phapko* 'shock', *pharpharvū* or *phappharvū* 'throbbing (of the heart)' MG. *taḍpharvū* to be convulsing in pain; *taḍphar* 'quarrel'; *taḍphar* (-*bolvū*) 'to speak sharply and plainly-rudely'. cf. also MG. *taḍtarvū* or *tatarvū* 'cracking, making the noise of cracking', Bloch *taḍphar*.

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...

... of the ...
... of the ...
... of the ...



Pk. to; taha may be explained from *etāṣya*; for a detailed discussion of the probable line of development of allied pronominal forms see Davo pp. 32-33.

- ~ v - value. Tessitori §. 98.1. suggests *tasnāt*, Pk. *tamhā*; which is not necessary. v. s. v. jñ.

तीं *āhām* "those" pers. pro. 3rd pers. gen. pl. (v. l. *tihām*, *tihā*) 74, 91; Sk. *te'ām*, Pk. *tesim*.

दूबडें *tūmbadauṣ* "a dried gourd" sub. dir. sg. n. 223. MG. *tūṅgū*. Sk. *tumba*-Pk. *tumba-n*. *tūbri*, Turner *tumbo*.

दुषकारि *travāri* "broomstick" (lit. one which abstracts grass or dust i. e., something which cleans, broom-stick) sub. f. dir. sg. 518. *lv*. Sk. *tr̥ṣa-*+*vāriṇ*. MG. word for broomstick is *sāvrapī*, derived from Sk. *sāvāraṇa-* warding off, keeping back, *sāvāraṇikā* f.

दुस *trai* "thirst" sub. f. dir. sg. 426, 463; Sk. *tr̥ṣā* f.; retention of *-r-* in script may suggest a retention of *-tra-*, and *-tar-* in that case this may not be considered as a *lv*.

दुसि *traiṣ* "thirsty" past part. dir. sg. m. 514, 536. Sk. *tr̥ṣita-*; for der. s. v. *tr̥ṣa-*.

दुसाहिया *trāsāḍiyā* "caused trouble" past part. caus. pl. 22 Sk. *trāsati*; caus. *trāsāyati*; Proto Guj. **trāsai*; caus. **trāsālai* past part. *trāsāli*. Note the preservation of *tr-*; cf. S. *trāṣaṇa* f. *trāṣhā*. Bloch *trāsa-*, Turner *trāsana*.

दुसडें *trūṣhau* "terrorised, afraid" past part. m. dir. sg. 453. Sk. *trāsati*, *trāṣhā*; cf. Pk. *lattho*; Sk. *trāsāyati* caus. note the retention of *tr-* in OG. v. s. v. *trāsāḍiyā*.

त्रि *trū* "group of three" sub. m. dir. sg. 10; Sk. *trikā-*, cf. Pk. *tia*; Proto Gujarati **triu* i. ext. with OG. -n: *trīu*.

त्रिदि *triṅki* "three" num. dir. sg. 73, 74; also *trinni* 74; *trium* (v. l. *tri ham*) obl. 109; *trinha* i: i is emphatic 109 (based on a Prakritic form *tiṅha*-Pischel §. 438); Sk. *trīni* n. pl. MG. *trāṅ*; Pk. *tiṅṅ*, *tiṅha*-have influenced the OG. scribes, though they have retained the *tr-* cluster. Bloch *tin*, Turner *tin*.

त्रिदिसई *triṅkiwāiṣ* "three hundred" num. 613 v. s. v. *trinha* *tanim* cf. MG. *trāṅṅ*, *trāṅṅ* OG.

त्रिपडें *trijpūṣ* "tin" sub. n. dir. sg. 25. *lv*. Sk. *trīpa* n.; note the *-i-* in the initial syllable; also note the extended form to indicate gender.

त्रिधुवनातितापिया *tridhuvanātīṣiyā* "excelling three works" sub. dir. pl. 7, 17. *lv*. Sk. *trīḥa-*+*atiyain-* OG. *tridhuvanātīṣiyā* -est

तेदइ *tedai* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 536; *tedāim* pl. 579; *tediyā* past part. dir. pl. 465; *tedi* abs. 428; *tedāvā* caus. past part. dir. sg. 386. MG. *toṣvū* "to invite, to carry (a child) on the waist". Der. not known.

तेतलडें *tetalauṣ* "that much" adv. n. dir. sg. 483; *tetalaim* loc. sg. 38, 519; *tetalā* obl. 405. Pronominal stem *ta-* for der. s. v. *etalau*. Ap. *tettala*-ext. Bloch *tikā*, *tīlā*. Turner *tyati*.

तेतीवरा *teṭivāra* "in the meantime" adv. 38, 556, *teṭi* is also followed by him emphatic 86. *teṭi* + *vāra*; cf. *tettala*-etc., s. v. *etalau*, *tetalau*; Pk. *tettia*, formed analogically based upon *kettia*-**ḥayattiya*. see Pischel §. 153

तेरमा *teramā* "thirteenth" ordinal obl. 222 also *terahamā* loc. sg. 353; for der. s. v. *teraha*.

तेरइ *teraha* "thirteen" num. dir. sg. 74. cf. Sk. *trāyodasa*; Pk. *teraha*; MI -o- in the initial syllable cannot be explained. Bloch *terā*, Turner *tera*.

तेर तेल *tera* "oil" sub. n. 311, also obl. *tera nau* 315. cf. Sk. *tāilam* n.; Pk. *tilla*, *tella-*; Pk. -ll- cannot be explained; may be *lv*. fr. Sk. Bloch *tel*, Turner *tel*

तेरवा *teravā* "of that size" adj. obl. pl. 405; cf. MG. *evyo jovro*, *kovyo*; used rarely in the present text. The pronominal stems are clear but the derivation is not clear. For some suggestions see Pischel §. 119. of. Pk. *evāḍa-*.

ते to "even, therefore" particle with some emphatic and contrastive force. 94, 132, 463, 560, also *tau* q. v; Sk. *tāta* Pk. *tau* OG *tau* MG. 10.

तेलइ *telai* "wicks" v. pres. 3rd. sg. 246. Sk. *tolayati* Pk. *tolai*, *tolai*, MG. *toḷvū*. Bloch *tu*, *tol*, Turner *tolina*, *tanlanu*.

तेलडें *tambūḍa* "the betel leaf" sub. dir. sg. n. 291, Sk. *tāmbūlam* n. Pk. *tambala-n* Austric; origin has been suggested Turner *tamol*.

तेलडिया *tambūḍiyā* "(insects) belonging to the betel-leaf" sub. m. dir. pl. 21; Sk. *tāmbūlin* for pl. Also cf. MG. *tambūḷi* m. "one who sells betel-leaves"; Sk. *tāmbūlika-*, Pk. *tambolia-* v. s. v. *tambola*.

ते *ta* "till, up to that time" adv. 94, 112, 315. Sk. *tāst*, Pk. *tāva* (cf. Ap. *tāva*) for *v > ~ v*; cf. Pischel *tel*: MI *grā*; *lic*-*ṣiva*-may have a

विसृत् *trīṣṭiṭha* "sixtythree" num. (in. comp.)
37. cf. Sk. *trīṣṭiṭh* f. Pk. *tesatthim*. MG.
trEsaṭh.

तीनउ *trījan* "third" ordinal dir. sg. m. 154,
trījanam n. 161; *trījī* f. obl. sg. 109; *trījan* inst.
sg. m. 118, 425 also loc. sg. 355. Sk. *trītyāḥ*;
Pk. *tījja* ext. in OG. (with tr- group influenced
by *trīni* - tran) *trīja*-u. Bloch *tīj*, Turner *tesro*.

तीस *trīs* "thirty" num. 36. Sk. *trīmsat*, Pk.
trīsām; OG. and MG. have retained tr-. Bloch
tīs, Turner *tīs*.

तीसमा *trīsamā* "thirtieth" ordinal obl. 222 OG
dir. *trīsaman*; ord. suffix -mā, ext. v. s. *trīn*.

तीस तीस *trīśā* "thirty three" num. 135. *trīśā*
obl. pl. 9. cf. Sk. *trīśastrīmsat* f.; Pk. *tētīśam*
Note the preservation of tr- and -tr-, the
latter on the analogy of *trīs*. Turner *tētīś*

त्रेणउ *trējanam* "raft, some sort of help in
swimming" meaning is not clear. sub. n. dir.
sg. 38. cf. MG. *trāpo*, *tarāpo* Noted in Peri-
plus of the Erythraean sea' Gk. *trappos*.
Bloch *tāpo*.

त्रेविंशत *trēviṣamā* "twentythird" ordinal obl. 222.
trēvis + mā; ordinal suffix -mā ext. obl. cf.
Sk. *trāvīmsat*; Pk. *trēviśam* Turner *teis*.

त्रेविंश त्रैवि *trēviś* "by twenty three" num. inst. pl.
613. cf. Sk. *trāvīmsat*; Pk. *trēviśam*

त्रेविंशु *trēviśim* "being broken" pass 3rd pl.
483. Sk. *trutati*, cans. *trōṣyati*. Bloch *trōṣ*.
Turner *trōṣu*.

वृष्टि *trōṣṭi* "broken" past part. f. dir. eg. 489.
MG. *trūṣ-vū*, *trūṣ-vū*. Sk. *truyanti*; Pk. *tutta*;
tr- is retained. Bloch *trōṣṭ*.

कौंबडु *trāmam* "copper" sub. n. dir. sg. 23,
trāmā obl. sg. 463. Sk. *tāmram*. cf. *Sindhi*
trāmo m., *Lahanda trāmī* f.; possibly **trāmra*-
Bloch *tābē*, Turner *tāmo*.

प्रयु *trāṅyū* proper noun m. dir. sg. (v. l. *traksu*)
457.

*

चवेडु *thaciu* "I will praise" v. fut. 1st sg. 372.
Sk. *stāvate* Pk. *tāvai*.

चाइ *thāi* "becomes" v. pres. 3rd sg. 112, 486.
also *thāim* 386; *thāisūm* fut. 3rd pl. 489; *thāu*
imp. 3rd sg. also 2nd pl. 489; *thā* imp. 2nd sg.
328, 470; *thā* past part. m. dir. eg. 546, 557,
(v. l. *thio*) 510; *thāi* abs. 326, 488. Sk. **thāṣī*,
Pk. *thāi*.

चाइ *thāi* "wears out, tires" v. pres. 3rd sg.
380; *thāktu* past part. m. dir. sg. 91. In some

participial forms it is used in another meaning
"remaining, staying": *thākātam* pres. part.
dir. eg. n. 296; *thākatām* obl. pl. 353. *thākatā*
loc. sg. 325; *thākan* past part. m. dir. eg. 426,
529. Turner suggests possible extension in
-akka- of the Sk. *sthā* 'stand' (v. s. v. *thāi*).
Bloch *thakpē*, Turner *thākan*.

चाइ *thāim* "place" sub. dir. sg. n. 22; *thāni* loc.
eg. 22. Sk. *sthānam* Pk. *thāna*; retention of
-n- suggests a loan formation. On the other
hand, various NIA languages have this form
with -n-, which leads Turner to suggest a
connection with Sk. *sthāman*. **sthāmma*- > MI
**sthāmma*-, or *sthāman*- with a dialectal -n-
v. s. v. *thānakom* Bloch *thāp*, Turner *thān*.

चाइ *thānakam* "place, residence, shrine" sub.
dir. eg. n. 437. *thānakam* obl. pl. 26; *thānaki*
loc. eg. 83. *thānake* loc. pl. 542. cf. Sk.
sthānska-. For the retention of -n- v. s. v.
thāna, possibly, this retention may be due to a
specialised meaning - religious parlance -
'shrines', in MG. *thānak* n. means 'shrine of a
deity'; contrast with this MG. *thānū* 'police
station'. This supports the loan formation
rather than postulating -na- in MI.

चाइ *thāpam* "establishes, places" v. pres. 3rd
pl. 7; *thāpi* abs. 574; *thāpāva* gerand dir. eg.
m. 538, *thāpāva* pass. eg. 237, 401. Sk.
sthāpate Pk. *thāpāva*- placed. Bloch *thāpān*,
Turner *thāpāva*.

चाइ *thāla* "plate" sub. 478. Sk. *thālī* f. *sthālam*
n. Pk. *thālī* f. *thālam* n. MG. *thā* m. 'a big
plate'; *thālī* f. 'a smaller plate'. Bloch *thā*,
Turner *thā*.

चाइ *thāra* "place, residence" sub. obl. eg. 251
(*thāra* *kūntau*) Sk. *sthāra*- "standing
still". -ā- cannot be explained. For *thā*. *thā*-
place should be noted. Bloch *thār*

चाइ *thāraṭi* "your" pro loc. eg. 470; for
derivation s. v. *thāraṭa*.

चाइ *thāraṭi* "stopped" cans. past part. f.
dir. eg. 482 cf. Sk. *sthāraṭa*- s. v. *thāraṭa*;
also compare *thāraṭu*, *sthalati* 'to stand firm'.

चाइ *thā* "being, remaining" past part. (auxiliary)
pl. m. 91, 350, 556; *thā* f. 474, 516;
thākam gen. obl. 10, 541. For derivation s. v.
thā; -i- is due to arabic influence of
sthā- and absence of compensatory lengthening
due to its frequency as an auxiliary (cf.
Dawe p. 58).

चाइ *thā* "steady, firm" ad. dir. eg. 54; *thā*
karana n. 'act of stabilizing' 541. Sk. *sthā*-
Pk. *thā*- Bloch *thā*, Turner *thā*

WORD-INDEX

थोडा *thodā* "less, little" adj. dir. eg. m. 586; thokā pl. 377, 413, 416, 419; tholai inst. eg. 401; tholo inst. pl. 471; tholaam dir. eg. n. 221, 586; tholaam saam "a little bit" (cf MG tholū sū) n. 170, 301; tholām n pl 117; tholi dir. eg. f. 112 Sk. stokā- 1'k. thox est in OG with -tan. Bloch thorā, Turner thor

थोडावना *thodāva* m. linaam "a type of vandana" sub pl n 312 This type of vandana is formed when some gull or error is in question. The correct word is chobhla vandana- (Sk kholhya vandana-). in various mss. however, the graphic similarity of cho- and tho- has given rise to a word like thobhla vandana-, it has also acquired a meaning "a vandana performed while standing (i e not hurriedly) Both the words are found in mss. and in the caste of monks

थु *thū* spittle sub dir. eg n 12, 309, also thunka 209 1'k thukka- n of Sk. thukārah (cup). MG thūk Turner thuk

थुं *thūn* "pillar" (in the compound thambhikaham) sub m in 22 thambhai loc. eg of thambha- ext in OG; 41 Sk stambha- 1'k

थुग *thuga* "deposit" sub dir. eg. f. 430 Sk thajana, thajenika. cf 1'k thajana n. Interpretation of -ga is due to the paradigmatic identity with th. MI has thajja- going back to the positive thajyate Nasalisation is not regular The short -i at the end and MG thaj- indicate that -i is not the result of an earlier contraction of -ika > -ia. but MI thajana n is supposed to be an -i. giving a feminine thajyanta- cf Sk thajana f. h. n. 2 would explain the OG short -i and zero in MI.

थुग *thuga* "one hundred and fifty" num. 40 eg 4) also 1'k thigilla anyā 17 For anyā v Sk thigilla-, thigillā-, 1'k thigilla-, 1'k thigilla- > thigilla- can explain OG destha, MG thūth Bloch dir. Turner thg

थुग *thuga* "proper noun" m. dir. eg. 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000

दुधि ओलिया *duhhi oliya* "mixed with curds" adj. dir. eg. m. 312, dudhi- lw. Sk. + oliya; Sk. ara + li, 1'k oli, oli "to go down", ext. in OG. with -n This described a preparation in which cooked rice is soaked in curds.

दुष्य *duṣya* "visions" adj. dir. eg. n. 3. Sk dayālikāh 1'k. *ityāluo.

दुसन *damana* "vision" sub. dir. eg. n. 463. lw. Sk. darsana-

दुलत *dulata* "pounding, preparing flour" pres part dir. eg. m. 213. Sk. dalati 1'k. dalaj; MG dajvū. Bloch dajñē. Turner dalnu.

दुवर *darava* "string, cord" sub. (in the compound -dikaham) 279; also daravaka eg. m. 601. 626. De. gives darava, and is adopted in Jain Sanskrit. Bloch dor, Turner dorō.

दस *das* "ten" num. 27. lw. Sk. dśia.

दसम *dasama* "tenth" ord. dir. eg. n. 437. Note the -s- and dropping of the final nasal. lw. Sk. v s. v. dśia.

दस *dasa* "ten" num. dir. eg. 109; dasamsi ord loc. eg. 353, 451; dasa inst. pl. 29, 463, 618. Sk. dśia, 1'k. dasa.

दुध *dudhi* "burns" v. pres. 3rd eg. 334; dudha past part. m. dir. eg. 14, 474; dudhi f. 112; dajvū pres part. obl. pl. m. 473. Sk. dūsthi. dagūla-, 1'k. dahai; Sk. dahyate, 1'k. dajvū. past part. (analogically from laldha- laldha-) dudhi- Bloch dāhū, Turner dahana.

दुधि *dudhi* "sour milk, curds" sub. dir. eg. n. 312 also dsh 178. MG dahi, dahi. Sk. dādhi, 1'k. dahi. ext Bloch dahi, Turner dahi.

दुध *dudhi* "peak (figuratively used for the peak of a mountain)" sub. dir. eg. f. 36. MG dāh f. "molar tooth". Connection between Sk. dāstrah m. : Pa. datthā f. is doubtful and non-Aryan sources are suggested. For cognates from Anasrio group and Dravidian group see Bloch BPOS vol. V. 4 and Turner under dāro

दुध *duḥ* "tax levied by the king, road toll" sub. dir. eg. n. 129. MG. dū duḥ dānim 1'k. dānam

दुधि *duḥ* "giving" Jain theological term. m. f. 233 Sk. datta- 1'k. datti f. (OG. dist).

दुधि *duḥ* "by gift, donation" sub. inst. eg. n. 461 lw. Sk. dāna + OG. inst. anḍi.

दुध *duḥ* "donors" sub. m. dir. pl. 471. lw. Sk. dā. (Caralya-) dāri- n.

दिक्रियया *dikkhāyī* "renounced, entered monk-hood" past part. dir. pl. m. 112. Sk. dikṣitāh Pk. dikkhā. lw. from Pk.

दिय *diyā* "gives" v. pres. 3rd sg. 435, 483, 539, diyāim pl. 386; diyam 1st sg. 160; diyam imp 3rd sg. 112; diyamā imp. 3rd pl. 625; dai imp 2nd sg. 559; deṣiṭ fat. 3rd sg. 260, 466, 514, 550; deṣṭ fat. 1st sg. 386, 473; deṣan preentive 2nd sg.; diṣṭān pres. part. dir. sg. m. 552. diyamāṭ obl. 552; deyatā pres. part. obl. sg. 143; diyatāi loc. sg. 461; diyamānāi loc. (:) sg. 481; devā obl. of infinitive 123, 488, 628, de abs 326, de (v. l. dei) 73; dijāi pass. sg. 91; dijāim pl. 326, also diyāim used as pass. pl. 626; divārai caus. pres. 3rd sg. 560, divārisiim fat. 3rd sg. 435; divārisiim past part. dir. sg. n. 426; divāri dir. sg. f. 539; dīlhan past part. dir. sg. m. 109; dīlhanū dir. sg. n. 532, 518, 564; dīlhanā pl. n. 527. cf. Sk. dadāti; Pk. del. For a suggestion of different analogical influences (of *mayati*, *labhati*) see Turner under *diṇu*, Tedesco JAOI, 43; Bloch *deṣā*.

दिश *diśa* proper noun m. dir. sg. 109.

दिवसे *divasa* "by days" sub. inst. pl. 359 lw. Sk. divasa + OG -e, inst. pl. suffix.

दिशाक *diśāka* proper noun m. dir. sg. 426.

दिशा *diśā* "directions" sub. obl. pl. f. 142, diśi loc. sg. 446. Sk. diśā Pk. diśā.

दिक्रिय *dikkhā* "son" sub. m. dir. sg. 589, dikkhā obl. sg. 589. der. ? MG. dikko.

दिक्रिय *dikkhā* "daughter" sub. dir. sg. f. 91. 473. 488; MG. dikkhā Der. ?

दीपनी *diṇā* "water flask" (generally made of skin) sub. f. dir. sg. Sk. diṇī- f. Pk. dii. ext.

दीप *diṇā* "lamp" sub. loc. sg. m. 529. Sk. diṇah m. Pk. diṇa m. ext. in. OG: diṇau. Bloch *diṇā*. Turner *diyo*.

दीपद्वेदी *diṇādī* "lamp wick" sub. f. dir. sg. 519. There seems to be some error in the text, -lo- cannot be explained. Sk. diṇavartīh f. Turner *diṇaṭ*. MG. diṇet f.

दीपय *diṇā* "appears, looks" v. pass. 3rd sg. 461, 514; diṇāim pl. 425. Sk. diṇyato. Pk. diṇāim. Bloch *diṇā*.

द्विदि *diḥa* "days" sub. m. dir. sg. 397; also. pl. 94. Sk. diṇasa-. Pk. diṇasa, diḥa; MG. di.

दुष्प्राप्य *duṣpāpya* "difficult to obtain" adj. dir. sg. m. 300. lw. Sk. duṣpāpya-.

दुष्प्राप्य *duṣpāpyā* proper noun dir. sg. f. 435.

दुष्प्राप्य *duṣpāpya* "act of causing pain" sub. dir. sg. n. 441. v. s. v. duḥaviyā.

दुष्प्राप्य *duḥaviyā* "displeased" past part. pl. 22; duḥavereṣi obl. of inf. 411; duḥaviyāi pass. 3rd sg. 586. Pk. duḥavai, duḥavai; prob. a base formed from Pk. duḥa, duḥa. (Sk. duḥkha-); but also cf. Pa. dukkharati.

दुष्प्राप्य *duḥelā* "enamity, misfortune" sub. dir. sg. n. 556 duḥelā adj. obl. sg. "painful" 20. Sk. duḥkha- Pk. dukkha-, duḥa-, ext. with -llauṃ. Probably this is also the source of OG. duḥalaum "difficult." MG. duḥā; Tassittori, however suggests Sk. darisṭha-; see "Notes on OWR" §. 5.

दुष्प्राप्य *duḥlu* "milk" sub. dir. sg. n. 178, 511; duḥli inst. loc. sg. 311. Sk. duḥlān n. Pk. daddhān n. Bloch *duḥ*. Turner *duḥ*.

देष *deṣā* "something which is to be given" sub. dir. sg. 211. Sk. deṣam Pk. deṣa. v. s. v. diṣai.

देख *dekha* "sees" v. pres. 3rd sg. 185, 373, 519, dekhaum 1st sg. 461, dekhisii fat. 3rd sg. 550. also dekhisiiim 481, dekha imp. 3rd pl. 489; dekhatu pres. part. dir. sg. m. 558; dekhatā obl. pl. 427 453. 533 also dekhatā gen. pl. 91. dekhatā abs. 74 110, dikkhalaum causal pres. 1st sg. 74. 167, 535, dikkhātā pres. part. obl. 533, dikkhālu past part. dir. sg. m. 428; dikkhālyā pl. n. 536; dikkhāli imp. 2nd sg. 555; dikkhāli abs. 471 dikhān past part. dir. sg. m. 426; dikhān sub. n. 539; dikhān pl. n. 426. 519; dikhā sg. f. 361, 575. Sk. drakṣyāti, Pa. dukkhati. contaminated with Sk. prakṛate: dekhhai. dikkhā- is the causal base with -ā- as the causative suffix; long -i- in some examples of the causal dikkhā- may be either scribal error or influence of the past participle form dikhā-. The past participle is derived from Sk. diṣta-, Pk. diṣṭha-, ext. in OG dikhān Bloch *dekhuṣ*. Turner *dikhān*.

देखना *dekhanā* "one who sees, desirous of seeing" sub. dir. sg. m. 402, 487. OG. dekhana + agentive suffix hāru der. s. v. dukhāi.

देखना *dekhānu* "giver, desirous of giving" sub. m. dir. sg. 426. OG. deṇa + hāru agentive suffix. der. s. v. diṣai.

देखनी *dekhāni* "place where gods take delight", sub. n. pl. 616. lw. Sk. deṣa-ka-

देखनी *dekhāni* "that which refers to the day" sub. n. dir. sg. 312. Sk. diṣva-ika- Pk. deṣāim. ram OG. deṣāni.

देख *deṣā* "country" sub. m. dir. sg. 446. also deṣa 544. Sk. deṣā Pk. deṣa.

देखना *dekhāni* "sermon, preaching" sub. f. dir. sg. 515. lw. Sk. deṣāni; Pk. deṣā- f.

- देसवट्ट *desavatta* "exile" sub. dir. sg. m. 525. Sk. *ślośa-vṛtta-, Pk. *ślośavatta- ext. in OG.
- दोहलट्ट *dohalata* "longing, desire esp. of a pregnant woman for particular objects" sub. dir. sg. m. 81, 82. Sk. dohadā m. (probably a Pk. form of the word *daar* हदा-); Pk. dohalā- m.
- देवजोग *devajoga* "by chance, destiny" sub. obl. sg. 426, 537. Sk. daivayogya-, OG. daiva- is Sk. lw.; Pk. joggā-.
- दंडइ *danda* "taxes, penalties" v. pres. 3rd sg. 538; dāṇḍiṇi pass. sg. 518. Sk. dandajati. Pk. dandai.
- दंडाऊंछणा *dandā ūcchanā* "(by) the broom tied to the stick" broom refers to the bunch of soft woolen strands tied to the bottom of the stick used by a Jain monk, by that he sweeps the place he walks, he cleans books and brushes his own body. sub. obl. sg. 542; dandāūcchanai inst. sg. 325; Sk. dandaka+prōcchanaka Pk. dandaa-purcchanaya. Sk. ūcchati, dandaka+ ūcchana- ext.
- दंतवणु *dantavanu* "a twig (usually of the Babul tree) used for cleaning the teeth" sub. dir. sg. n. 291. Sk. dantapavanam n. Pk. dantapōgam n., Pk. dantavapa- n.; MG. dātaṇ under the influence of dāt 'teeth', see Turner datium.
- दांडइ *dāṇḍai* "by a way, path" sub. m. loc. sg. 463. Sk. daṇḍa-, daṇḍaka- "a row, line". Pk. dandaya-; note the change in meaning.
- दांठ *dāṇṭa* "teeth" sub. dir. pl. m. 74; dāṇṭi loc. sg. 71. Sk. dāntah m. Pk. danta- m. Bloch danta. Turner dāt.
- द्रवडिउ *dravadiu* "ran" past part. dir. sg. m. 529. Sk. drāvate, Pk. davao; dava- ext. with -da-; Note the retention of initial dr-; however, MG. has dOṛ-vū 'to run', MG. dOṛ f. 'a run' is derivable from *dava-ṭi- (cf. liṭi f. 'a line' from MI. *liha-ṭi-ā).
- द्राळ *drāḷha* "grapes" sub. f. 311. Sk. drāḷhā f., Pk. dakkhā; note the retention of initial group dr-; in MG. also 'darakh' f.
- द्रुपदिकाटरी *drupadikāṭari* "proper noun, a forest so named" sub. f. sg. 426.
- द्रुलसाम *drulśama* "twelfth" ord. dir. sg. n. lw. Sk. drulśata+ OG. -ma; note the absence of nasalisation.
- धरणी *dharaṇi* "proprietor, master" sub. dir. sg. m. 213, 518. Sk. dhāṇikah, Pk. dhānio, dhāṇi. Note the contraction -iu > -i having been worked out in OG. Turner dhāni.
- धनुइ *dhanuḥa* "bow" sub. dir. sg. 25. Sk. dhanyu-dhanuṇa-; Pk. dhānuha.
- धनुहि *dhanuḥiṇi* "bow" sub. loc. (inst.) sg. 434. Probably letter reading should be dhāṇi. Giving as regular loc. sg. of dhānuha Sk. dhānuḥ-, Pk. dhānu, dhānuha m. dhāṇi f. v. s. v. dhānuha.
- धनदनु *dhanadānu* proper noun m. dir. sg. 559.
- धनिकु *dhaniku* "rich" dir. sg. m. 466. lw. Sk.; s. v. dhāni.
- धनु *dhanu* proper noun m. dir. sg. 553.
- धरइ *dharai* "preserves, keeps, bears in mind", v. pres. 3rd sg. 111, 520; dharan imp. 3rd sg. 562; dharatan pres. part. dir. sg. m. 470, 474; dharatām (gen.) obl. 316; dhāriṇā obl. inf. 279 474; dhāri 158, 542, 518; dhāriyai pass. sg. 403, dhāriyam pass. pl. 520. Sk. dhāraṭi. Pk. dharai. Bloch dhārṇē, Turner dhāru.
- धर्म *dharma* proper noun dir. sg. m. 110. lw. Sk.
- धर्मपोव *dharmanphoṇa* proper noun dir. sg. m. 455, 573.
- धर्मनंदु *dharmanāṇḍu* proper noun m. dir. sg. 386.
- धर्मयश *dharmanyaśa* proper noun m. dir. sg. 573.
- धर्मवह *dharmanvasu* proper noun m. dir. sg. 573.
- धाडि *dhāḍi* "assault, attack" sub. f. dir. sg. 547. Sk. *dhāṭayati, dhāṭi; Pk. dhāḍemti, De. dhāḍi. Bloch dhār.
- धानि *dhāni* "grain" sub. loc. sg. n. 175. Sk. dhānyam, Pk. dhāna n. Bloch dhān, Turner dhān.
- धापउ *dhāyau* "ran, followed" past part. m. dir. sg. 416; dhāyā pl. 529; dhāyātām pres. part. obl. gen. pl. 417; dhāi past part. dir. sg. f. 473. Sk. dhāvati, Pk. dhāvai; Bloch dhāṇṇē, Turner dhānuu.
- धारवउ *dhārayauṇi* "cause to place, put" v. caus. pres. 1st sg. 85. Sk. dhārayati, Pk. dhārei, caus. dhārāvei. The context is pā dhārāvāsm 'I will cause him to set his foot (here)'; in MG. this idiom develops in a verbal base padhār -vū 'to welcome'.
- धारवै *dhārayeṇi* "should bear in mind" ger. n. pl. 10. Sk. dhārayitavyam n. Pk. dhāreyavāsm n.
- धारिणि *dhāriṇi* proper noun f. dir. sg. 573.
- धाहुडी *dhāhūḍi* "a type of stone" sub. f. 20 det. not known.
- धीर *dhiira* proper noun m. dir. sg. 522.
- धुर *dhura* "chief" sub. obl. m. 32. Sk. Pk. dhūra-.
- धुइ *dhūi* "shakes trembles" v. pres. 3rd sg. 514; dhūijam past part. dir. sg. n. 514; dhūijate

pres. part. inst. pl. m. 213. Sk. dhūyāte; cf. *l'k. dhā-*.

धूमि धूमि "a type of water-formation? cloud-smoke?" meaning not clear, it is considered to be an *ap-kāra* according to Jain theology 20

धुं *धुं* "in the dust" sub. f. loc. sg. 22 cf. *MG. dhū*, f. *dhū* f. (in the dialects of Saurashtra) **dhū*- m. Sk. dhūh m. f.; for the Indo-European **dhū*- see Turner under *dhū*. Note that the P. I. S. and the Pahlavi languages have the reflexes of the -*dhū*- form

धुं *धुं* "loin-cloth" sub. f. dir. sg. 203 v. 8 v. *dhūyati*.

धुं *धुं* "loin-cloth" sub. f. dir. sg. (v. 1 *dhūyati*) 203. also see under *dhū*. Der not clear. Turner *dhū*.

ध्यायति *dhya-* "thinking, meditating" pres. part. m. dir. sg. 83; *dhya-* inst. sg. 73, *dhya-* f. dir. sg. 561; *dhya-* abs. 74. lw. Sk. *dhya-*; *dhya-* + OG. verbal suffixes.

न as negative particle 461; also used as an emphatic particle in constructions such as 'khan na' 'please tell' 556. Sk. *nā*; *l'k. na*.

न *na* "of" postposition, adjectival. dir. sg. m. 94; also num 94; *nā* pl. 484, 516, *nai* *ghari* 'to the house' loc. sg. 83; also *no* *pā* 'at the feet of' 74; *nī* f. dir. sg. 521, 517. Der. uncertain, see Bloch § 201, where he suggests *bk. nāyana* as a probable source.

न *na* "on the nails" sub. m. loc. pl. 376. Sk. *nakhā* m. n.; *l'k. nakhā* is a lw. from *Ek* on account of the geminate -*kkh-*; regular *Ek* development is *naha* *OG. nakhā* is again a lw. from *Ek*, with the OG. loc. pl. suffix -*e*. Some IA languages have the evolutes of *l'k. nakhā*; P. *nā* and H. *nā*; MG. has preserved this form in the word *nā* 'nail-cutter' Sk. *nakhā-larajī*- ext. in *l'k.* and in the word *nā* 'underside of the nail' *l'k. naha-*, OG. *nā* + suffix *iū*. Bloch *nakh*, Turner *nakh*.

न *na* "is not" v. pres. 3rd sg. 207, 414, 620; Sk. *nā*. *l'k. nā*; short -*a-* is due to auxiliary usage.

नमस्य *namati* "bowing" pres. part. m. loc. sg. 74; *namī* 427. Sk. *namati*, *l'k. namati*. Bloch *lavā*, Turner *nahuna*.

नमस्कृत *namaskarī* "bowed, paid homage to" past part. dir. sg. m. 570; *namaskarī* abs. 85. lw. Sk. *namaskr-* + OG. suffixes.

न *na* proper noun m. dir. sg. 110.

नवम *navama* proper noun m. dir. sg. 425.

नव *navā* "new" adj. dir. sg. m. 74; *navā* loc. sg. 315; *navām* n. pl. 517. *navī* f. 622. Sk. *nāva-*, *l'k. nava-*; ext. in OG. Bloch *navā*, Turner *navo*.

नव *navā* "nine" num. dir. sg. *navo* inst. pl. 10; *sk. nāva-* *l'k. nava*; Bloch *nav*, Turner *nav*.

नवम *navama* "ninth" ord. dir. sg. m. 62; *navama* n. sg. 247. for der. s. v. *navat*.

नवसह *navasā* "nine hundred" num. dir. pl. 28. *navā* + *śam*, for der. q. v.

नवत्य *navatya* "ninety-nine" num. 383; MG. *navāpū*, *navāpū* f. Sk. *navā* + *navatī*; *l'k. nava* + *navim*, MG. *navāpū* is standard colloquial, while the one with -*vy-* is a class-room form, probably analogical, cf. *ckkājū* '92', 'śattānū' '97', 'atthānū' '98' etc.

न *navat* "disgusted, fed up" adj. m. dir. sg. 142, cf. *sk. nirvāṇa-*; loss of initial -*i-* in closed syllable cannot be explained. Possibly a late lw. in OG. may be **nirvāṇa-*.

न *na* "not" (v. 1. *nā*) 38, 518, 560. For various suggestions see Turner under *nā*, "J. Bloch (p. 292) compares M. *ānpō* to be, old H. *ā-* (for which he tentatively suggests Sk. *ābhavati*, cf. *l'k. āha-*); S. K. chatterji, Beng. Lang. I' 1039, derives from **śanti* (replacing Sk. *śanti*, with subsequent special development of -*a-*, which is not impossible in such a word). Possibility of contamination with descendant of *Ek. nah* must be considered".

नागवुक *navagavuk* proper noun m. dir. sg. 488.

न *navitū* *navitū* proper noun m. dir. sg. 470.

न *navā* "dance" sub. dir. sg. m. 579. Sk. *navā* n. *l'k. navā* n. for other IA cognates see Turner under *navā*. Note that while OIA and MIA forms are n. gender, most of the NIA forms are m.

न *navā* "dances" v. pres. 3rd sg. 429. Sk. *navāyati*, *l'k. navāsi*. Bloch *navāpū*, Turner *navāna*.

न *navā* "fled, ran" past part. m. dir. sg. 428; *navāna* m. 453, *navā* f. 537; *navī* f. dir. sg. 426. Sk. *navā*, *l'k. navā*; Bloch *nav*, Turner *navā*.

न *navā* "small" adj. pl. m. 25. Sk. *ślakṣṇā* *l'k. navā*. Bloch *lavā*, *śahā*, Turner *navā*, *navā*.

न *navā* "by names" sub. inst. pl. 376. **navā*-*bhā* *l'k. navā*.

नारकी *nārakī* "one who belongs to hell" adj. sg. 21. lw. Sk.

नारी *nārī* "barber" sub. dir. sg. m. 365. Sk. *nāpīṭh* m. l'k. *nāvis-* m Bloch *nāṅ*, Turner *nānā*.

नासिका *nāsikā* "nose" sub. dir. sg. f. 620 lw. Sk. *nāsikā*; note the palatal *-s-* before *-i-*.

नासिर *nāsira* proper noun dir. sg. n. 386.

नामवत् *nāmavāt* "fleeing, running" pres. part. dir. sg. m. 522. *nāsāt*; pl. 128, 416; *nāsī* abs. 575; *nāsā* in *evāt* p-t part. dir. sg. m. 522; *nāsāvin* 183. Sk. *nasyati* l'k. *ṇasani* Bloch *nās*, Turner *nānu*.

नाभि *nābhi* "navel" sub. dir. sg. f. 556. Sk. *nābhīh*, l'k. *nāhi*; lw. from l'k.

निकृष्यति *nikṛṣyati* "cause to throw" v. caus. fut. 1st sg. 188 lw. Sk. *nikṛip* + OG. verbal suffixes.

निग्रहादि *nigrahādi* "caused to be arrested" caus. past part. dir. sg. m. 386. *nigrahāsi* pass. sg. 72 lw. Sk. *nigraha-* + OG. verbal suffixes.

निघ्न *nighna* "low" adj. dir. sg. 9. The short *-i-* may be a sibil error lw. Sk. *nighā*.

निश्च *niśca* "totally, absolutely, completely" adv. 22. Sk. *niśalya*, l'k. *nittula*. Ap. *nittalla-*; for Ap. *-ti-* → MG. *-ti-* cf. Ap. *jetalla-*, MG. *jetā*.

निद्य *nidyā* "daily" adv. 85, 386. Sk. *nitya-*, l'k. *nittā-*.

निमि *niṃi* "winking or twinkling of the eyes" v. n. 110; pl. 137. lw. Sk. *niṃiṇa-* + OG. verbal suffixes.

निमन्त्रति *niṃantṛati* "while inviting" pres. part. p. n. 1. 102. Sk. *niṃantṛayati* l'k. *niṃantṛi* (1) isent. *caṭā* from Sk., or the *-tr-* group *niṃantṛi*.

निषेध *niśeḍha* "claiming the reward of penitence" (Jain technical term) sub. dir. sg. m. 11. 57. Sk. *niśeḍha-* n. l'k. *nīśa-* n. *evāt* 101.

निषेद्यति *niśeḍyati* "repudiated, removed" past part. dir. sg. m. 364. lw. Sk. *niśeḍka-* + OG. verbal suffixes.

निषेद्यति *niśeḍyati* "repudiated, removed" v. pres. 3rd sg. 25. Sk. *niśeḍyati* lw. *niśeḍka-* l'k. *niśeḍka-*.

निषेद्यति *niśeḍyati* "repudiated, removed" v. pres. 3rd sg. 25. Sk. *niśeḍyati* lw. *niśeḍka-* l'k. *niśeḍka-*.

निषेद्यति *niśeḍyati* "repudiated, removed" past part. dir. sg. 417. lw. v. 321.

निषु *niśu* "strong" adj. dir. sg. n. 94. Sk. *niśiḍa-*, l'k. *niśiḍa-*.

निवर्तयति *nivartayati* "returns, turns away, repudiates" v. pres. 3rd sg. 578; *nivartayām* 1st sg. 585; *nivartayāmi* pres. 3rd sg. 580; *nivartayāmi* obl. of the inf. 352; *nivartayāmi* caus. pres. 1st sg. 319. lw. Sk. (*ni-vrt-*) *nivarta-* + OG. verbal suffixes.

निवारयति *nivārayati* "stopped, objected" past part. m. dir. pl. 430; *nivāra* dir. sg. f. 500; *nivāra* imp. 2nd sg. 500. Sk. *nivārayati*, l'k. *nivāra*.

निश्चय *niśchaya* "definitely" adv. (inst. sg.) 430. lw. Sk. *niśchaya-* with OG. inst. suffix.

निषेधति *niśeḍhati* "I prohibit, I deny" v. pres. 1st sg. 518; *niśeḍhi* past part. m. dir. sg. 411. lw. Sk. *niśeḍha-* + OG. verbal suffixes.

निश *niśā* "night" (first member of a compound) f. sg. 526. Sk. *niśā*, l'k. *niśā*.

निसेज *niśeja* "seat" sub. dir. sg. f. 521. Sk. *niśeḍyā* f. "a small bed or a couch"; l'k. *niśeḍjā*, *niśeḍjā* f. l'k. *-e-* may be analogically influenced by Sk. *sayā* l'k. *sejā*; MG. *sej*.

नीगमयति *nīgamayati* "passes, wastes" v. trans. pres. 3rd sg. 491; *nīgamatām* pres. part. gn. obl. pl. 480. Sk. *nīgamayati*, l'k. *nīggama*.

नीच *nīca* "low" adv. adj. dir. sg. n. 44; *nīca* obl. 586. Sk. *nīca-*, l'k. *nīya*, *nīca-* (the latter, either a lw. from Sk. or analogically influenced by Sk. *nevā-*). Turner *nic*.

नीदानकरण *nīdānakaraṇa* "act of wedding" sub. dir. sg. n. 410. cf. Kashmiri *nīda*, Marathi *nīdāḥ*, MG. *nīd-vū*, Oriya *nīdāḥ*, Dr. *nīdā*; *kuṭṭipodhāraṇam*. Sk. *nīdāḥ* + a wood. *reaper*.

नीजयति *nījayati* "produces, creates" v. pres. 3rd sg. (v. l. *nījayati*) 112; *nījayām* 1st pl. (1st sense) 416; *nījayāmi* abs. 506. Sk. *nījayate*, l'k. *nījayati*. Bloch *nījayati*.

नीजयति *nījayati* "produced, resulted" past part. m. dir. sg. 125; *nījanam* n. sg. 112; *nījanam* n. pl. 514; *nījani* f. 400. Sk. *nījanam* - l'k. *nījānā-*.

नीजयति *nījayati* "produces, places" v. pres. 3rd sg. 7. Sk. *nījayati* (causal). l'k. *nījayati*, v. s. v. *nījayam*.

नीजयति *nījayati* "gone out, went away" past part. m. dir. sg. 426, 519; *nījayāmi* p. 27. 574; *nījayāmi* pl. m. 556; *nījayi* sg. f. 674. 675. *nījayām* pass. pl. 153. Sk. *nījayati* l'k. *nījayati*.

- padhium past part. dir. sg. n. 94; padhii loc. sg. 355; padhivaum ger. 355; padhivā obl. of inf. 94, 355; padhivai pa.s. sg. 355, 438; padhivaim pass. pl. 14, 355; padhijiu precativo 3rd sg. 353; padhi abs. 326, 329, 601. cf. Sk. padhati; Pk. padhai. Bloch padhā, Turner pama.
- पण *pana* "again, also" conj. 492; note the early loss of -n- in open syllable; s. v. paṇi. Sk. pānar Pk. pana. Bloch pan, Turner pani
- पणोगना *paṇōṅganā* "courtezans" sub. f. pl. 89. lw. Sk. paṇāṅganā.
- पतंग *patāṅga* "moth" sub. n. dir. sg. 21. lw. Sk. patāṅga-.
- पति *patti* "foot-soldier" sub. m. dir. sg. 445. lw. Sk. patti.
- पद्मपत्रा *padmapatrā* proper noun dir. sg. f. 547.
- पद्मप्रभा *padmaprabha* proper noun dir. sg. m. 110.
- पन्तर *panara* "fifteen" num. 25, 36; panaramai ord. loc. sg. 355. Sk. pāñcāśāsa-, Pk. paṇṇarasa Ap. paṇṇaraha; MG. paṇḍar. Bloch paṇḍrā. Turner paṇḍra.
- पन्तरा *panarasa* "fifteen" num. 24. s. v. panara; it is an archaism based on Pk. paṇṇarasa.
- पन्तरा *panaraha* "fifteen" num. 25, 326, 352, 353. s. v. panara; panaraha is an archaism based on Ap. paṇṇaraha.
- पमादई *paṃādai* "cause to reach, cause to obtain" v. caus. pres. 3rd pl. 378; paṃādau caus. pres. 1st sg. 629; paṃāliu caus. past part. dir. sg. m. 171; paṃāliam caus. past part. dir. sg. n. 388; paṃāliyā past part. caus. pl. 22. Sk. pāṃnoti, Pk. pāṃnai, pīvai; Dave (p. 160) suggests, Sk. -ṃn- > OG. -m- (cf. Sk. avapna-MG. samjū); Bloch pāṃn, Turner pānu.
- परवाळू *parvāḷū* "coral, young shoot" sub. dir. sg. n. 20; paravāḷam pl. n. 620. Sk. pravāḷa-m, n. Pk. parvāḷa- ext. in OG. Note the retention of -r- in OG., also MG. parvāḷū.
- परसादि *paraśādi* "visible to others, with others as witness" sub. loc. sg. 364; Sk. paraśākyapaśākyo Pk. paraśākkhī.
- परसई *paraśāi* "far, further away" adj. dir. sg. m. 426, 525; (used with orahau far and near); also parahau melhan "release him" 548; paralāḥm pl. n. 151; d. r. uncertain. v. s. v. orahau, oro 'near' and paro 'far' are used in MG. dialects. cf. Sk. pāra- 'far, distant'; it is possible that Sk. Avāra- and pāra- may be the source of MG. oro, Oro and paro.
- परहाड *parahāḍa* "laughed, jested" past part. m. dir. sg. (v. l. parahasiām) 38. Sk. parahāḍita-. Pk. parahāḍia-.
- परमथी *parāḥthī* "to defeat" in the construction parāḥthivai na sakiyāim "not able to defeat." inf. 380. lw. Sk. parāḥthava + -I OG. inf. suffix < Pk. -ium < Sk. -itum.
- परि *pari* "in that manner" adv. 74. cf. Sk. prakāreṇa, Pk. payāreṇa, payāriṃ; MG. pēr; see New Indian Antiquary non-Aryan origin is suggested. Turner pari.
- परिदवड *paridhavaḍ* "causes to be steady" v. caus. pres. 3rd sg. 380. Sk. paristhāpāyati, Pk. paristhavel; meaning may be reinforced by Pk. paristhavaṇa < Sk. pratiśthāpana-. Note the short -i- in OG.
- परिणमइ *pariṇamai* "results into, transforms" v. pres. 3rd sg. 521. Sk. pariṇamate, Pk. pariṇamai.
- परिणित *pariṇiṭ* "married" past part. m. dir. sg. 94. परिणी f. 142, 553; pariṇivā obl. of inf. 471; pariṇivai caus. pres. 3rd sg. 470; pariṇivasa ger. m. dir. sg. 490; pariṇivā abs. 94. Sk. pariṇayati, Pk. pariṇi.
- परिभ्रमी *paribhramī* "after wandering" abs. 423. lw. Sk. paribhram- + OG. abs. suffix -ī < Pk. -ia < Sk. -iya).
- परिवर्जई *parivarjāi* "one who gives up" sub. dir. sg. m. 492 (probably the final -ī is a scribal error). lw. Sk. parivarjaka-.
- परिसाई *parisāi* "in the courtyard" sub. loc. sg. f. 217; Sk. pariśālā Pk. *pari-sāla OG. parisāli MG. parsā f. The explanation is doubtful since the text has -sāli and not -sāli.
- परिहरइ *pariharai* "leaves, deserts" v. pres. 3rd sg. 325; pariharauṃ 1st sg. 516; pariharijiu prec. 3rd sg. 12. Sk. pariharati, Pk. pariharai.
- परिक्षी *parikṣī* "having examined" abs. 382. Sk. parikṣate, Pk. parikkhal. Bloch pārakkhā, Turner parakh.
- परिचई *paricṣai* "examines, knows" v. pres. 3rd sg. 470; paricṣāḥm 3rd pl. pass. 55. Sk. parikṣate, Pk. paricchal, parikkhai v. s. v. parikhī.
- परिसइ *parisai* "serves food" v. pres. 3rd sg. 112; parisaiyā past part. (adj.) pl. n. 563. Sk. parivēṣati, Pk. parivisai.
- पर *para* "guest (outsider)" sub. dir. sg. m. 440. Sk. parah, Pk. para-.
- पडइ *paḍai* "observe, work" v. pres. 3rd sg. 441; cf. MG. paḍvū; Sk. paḍati, Pk. paḍai.

पवित्र *paritra* "pure" adj. dir. eg. n. 540; lw. Pk. *paritta-*; Sk. *paritra-*.

पवित्र *paritra* "spread" past part. dir. eg. n. 416. Sk. *parātrati* Pk. *parātrati*. Bloch *paritr*, Turner *paritra*.

प्राप्त *prāpta* "joy, satisfaction" sub. dir. eg. n. 446, 449; *prāpti* loc. eg. 539, Sk. *prāptā-* m. Pk. *prāptā-* m. Bloch *prāpt*.

प्रातः *prātaḥ* "with. space of three hours" sub. n. dir. pl. 526; *prāta* loc. eg. 142, Sk. *prāharaḥ* Pk. *prāra-* m. Turner suggests Sk. *prāharaḥ* is probably a Sanskritized Persian *prāra* (Modern Persian *shāra*). Bloch *prāra*, Turner *prāra*.

पिरात्र *pirātra* "dress, garment" sub. dir. eg. n. 525. Bloch suggests relationship with Persian *pirāhan* (Mod. Pers. *pirāhan*). but Turner draws attention to the early occurrence of the word *pirāhānā* in Atharvaveda; Bloch *pirāra*, Turner *pirāra*.

पिरी *pirī* "puts on" v. pres. 3rd pl. 614; *pirī* a's. 73, 526, also *pirī* 537; *pirīrāvī* caus. abs. 548. Sk. *paridālati* Pā. *paridāhati* Pk. *pirīra* Turner *pirāra*.

पिरी *pirī* "first" num. ord. dir. eg. n. 433, *pirī* loc. eg. 448 also *pirī* 514; *pirī* f. dir. eg. 169; *pirīrāvī* adv. usage, stereotyped loc. "in the beginning" 419, cf. Sk. *prathamā-*, **prath-illa-*. Pk. *pirī*; Bloch *pirī*. Turner *pirī*.

पिरी *pirī* "earlier" adj. dir. eg. n. 179. OG. *pirī* + *erau*; d.r. s. v. *pirī*.

पहुत *paḥuta* "arrived, reached" past part n. dir. eg. 74, 559, also *paḥta* 429; *paḥutā* pl. 522; *paḥuti* loc. eg. 113; *paḥuti* f. dir. eg. 579; ... *paḥuti* imp. 2nd sg. 481; *paḥuta* imp. 2nd pl. 488. Note that in OG. the past participial form is *paḥut-* while the imp. form (and present tense form in other OG. texts) is *paḥu-*; while in MG. the verbal base *paḥu-* underlies all derivative forms, which is a later analogical extension. Turner's suggestion Sk. *prāhūta-* Pk. *paḥuta-* replaced by *paḥutta-* (Sk. loan), and analogically (*śleṣāto*; *śikta*) giving *-* and *-i-* bases, is supported by OG. *paḥu-* for present and *paḥut-* for past participle. Bloch *paḥutā*, Turner *paḥuta*.

पाद *pāda* "foot-soldier" sub. dir. eg. n. 445; *pāyaka* m. obl. pl. 537. Sk. *pādātika-*, *pāyika* replaced by Pk. *pāika* (lw. from Sk.); short *-i-* in OG. is not regular. Bloch *pāika*.

पाद *pāda* "foot" sub. dir. eg. n. 87; *pāda* loc. pl. 74, 526 Sk. *pādab*, Pk. *pā-*, ext. in OG. Bloch *pā*, Turner *pā*.

पादपाद *pād-pāda* "welcome, lit. lay your foot on" v. pres. 1st sg. der. s. v. *pāda* and Sk. *dhārayati*, cf. MG. verbal base *pādā-*

पादपुत्र *pād-puṭra* "broom used by Jain monks to wipe the floor- to prevent insects being killed while walking etc." sub. dir. eg. n. 326, cf. Sk. *pada-* *prachura-*; Pk. *pāmaḥaṇa* - ext. in OG. for *pāda* q. v., cf. MG. *pūbhū* "wipe, clean". Bloch *pūbhū*, Turner *pūbhū*.

पाद *pāda* "sugar boiled for preserves, sweetmeat preparation" sub. dir. eg. n. 311 lw. Sk. *pāda-* ext. in OG.

पादपि *pād-pi* "a mark on the back" sub. dir. pl. n. 529, also obl. pl. 405; *pādhāyām* *lagga-* "attached to the back" *pādhā* 464; Sk. *pādhā-*, *pādhā-*; f. retention of *-ti* cannot be explained, unless as a special loan formation.

पादपि *pādhā* "stone" sub. loc. eg. n. 535, lw. Sk. *pādhā*; Sk. *-* written as *-kh-*.

पादपि *pādhā* "fortnightly" adj. f. loc. eg. 329, Sk. *pādhā-* Pk. *pādhā-*.

पादपि *pādhā* "without" prepositional usage stereotyped loc. 74, also *pādhā* 416, 474, 526. Sk. *pādhā-*, Pk. *pādhā-*.

पादपि *pādhā* "back, after" adv. adj. dir. eg. n. 110, *pādhā* m. 108, *pādhā* loc. eg. 411, also *pādhā* 143, 493, 474; *pādhā* obl. eg. 451, also pl. 473, 414, also *pādhā* pl. 451, Sk. *pādhā*, *pādhā*, Pk. *pādhā*, *pādhā*, ext. in OG. Turner *pādhā*.

पादपि *pādhā* "one belonging to the end" adj. dir. eg. n. 232, *pādhā* loc. eg. 325; *pādhā* m. n. eg. 305, also *pādhā* 168; *pādhāyām* obl. pl. n. 582, der. s. v. *pādhā*, Pk. *pādhā* - ext. with *-illa-* ext.

पादपि *pādhā* "posterior" adj. comparative dir. eg. n. 478, *pādhā* + *erau*, the comparative suffix is derived from Sk. *-tra-* ext. der. s. v. *pādhā*.

पादपि *pādhā* "wooden board" sub. dir. eg. n. 322, 326; *pādhā* obl. n. 322, Sk. *pādhā* - Pk. *pādhā* - ext. with *-lla-* ext. Bloch *pādhā*, Turner *pādhā*.

पादपि *pādhā* "on the seat, bench" sub. loc. eg. f. 141, Sk. *pādhā*, Pk. *pādhā*, MG. *pādhā* f. also s. v. *pādhā*.

पादपि *pādhā* "sent, dispatched" caus. past part. dir. eg. n. 387, 488. Sk. *pādhāyati*,

- १क. pāṭhāvei, pāṭhāvai, Bloch pāṭhavinā,
 Turner pāṭhānu.
- पादि *pādi* "area, extension, (metaphorically,
 'jurisdiction') sub. f. loc. eg. 526, cf. Sk. pātā-
 m, pātaka-.
- पादोमी *pādōmī* "neighbour" sub. dir. eg. m. 518,
 cf. MG. pāṛōmī m. 'neighbour', pāṛōs m. 'neigh-
 bourhood', Sk. pratīvāsī, cf. prativāsanti, Pa.
 prativasati, १क. padivāsai, for various sugges-
 tions see Turner under pāṛōs; Bloch paros.
- पाणी *pāni* "water" sub. dir. eg. n. 555; Sk.
 pānīyam १क. pānīam, Bloch pānu, Turner pāni.
- पाणीत *pānīta* "water" sub. dir. eg. n. 314, also
 pānīta 20, Sk. pānīyam, १क. pānīam, OG. pāni,
 further ext. in OG. by -n, s v pāni.
- पाण्डु *pāṇḍu* "vesel, pot" sub. dir. eg. n. 561. sk
 pāṇḍam, १क. pāṇḍam; OG. -tt- may be a
 scribal error or Prakritism.
- पापय *pāpaya* "straight" adj. n. obl. 209;
 pāpāya f. 20, 103 der. not known, Desi. gives
 pāpāra- "straight".
- पासी *pāsī* "heel" sub. dir. eg. f. 11; Sk. pāsīnib,
 f. ext., Mā. pāsī f.
- पाय *pāya* "at the feet" sub. loc. pl. m. 189. Sk
 pāyā, १क. pāyā, OG. pāya
- पायत *pāyatam* "breaking of the fast" sub. n.
 dir. ex. 85, 113, 551, 661, pāyāta obl. eg. 112,
 pāyāta loc. eg. 109 Sk. pāyāta-, n. १क.
 pāyāta- pāyāta- n
- पायि *pāyī* "beyond, across" adv. loc. eg. 239.
 १क. pāyī-, १क. pāyī-
- पायस *pāyas* "filling, finishing" pres. part. obl.
 eg. 42, pāyāta 326, 517, pāyāta caus. past
 part. m. dir. eg. 85, pāyāta 1. use. eg. 329. Sk.
 pāyāta १क. pāyī
- पायस *pāyas* proper noun m. dir. eg. 110.
- पायस *pāyāsa* proper noun m. dir. eg. 574
- पायस *pāyāsa* "sitting cross legged."
 sub. dir. eg. n. 12. Sk. *pāyātikā- *pāy-
 ātika referring to lance in a special posture,
 Mā. pāyātikā (cf. lengthening of initial syllable
 remains unexplained)
- पायस *pāyāsa* "arranging, serving" pres.
 part. m. dir. ex. 314, pāyāsa १क. pāyāsa pres.
 1st. eg. 344, pāyāsa past part. m. dir. ex. 441;
 pāyāsa 24, pāyāsa 1. use. eg. 522 Sk. pāyāsa,
 १क. pāyī Bloch pāyī, Turner pāyī
- पायस *pāyāsa* "adv. boundary" sub. f. dir. ex. 174.
 24. Mā. pāyī, Sk. pāyī, १क. pāyī
- पानि *pāni* "near" adv. stereotyped loc. 452.
 pāṛāva-, १क. pāṛāva-; note -ā- in १क. s
 pāhai.
- पाह *pāhi* "by (in the sense of agent)" po-
 sition, stereotyped inst. eg. 533; extend
 form of OG. pāṛāva-; For examples of 1st
 usage see Tessitori § 70; Note the change
 meaning from OG. pāṛāva-, and note the change
 -s- > -h-. Bloch pās.
- पाह *pāhi* "stone" sub. dir. eg. m. 20; pāhān
 pl. 508; pāhāni inst. eg. 386. Sk. pāyānab, १क.
 pāhāna-m., note १क. -ṣ- > -h- change
 MG. pāho (dialectal); Turner pāhoro.
- पितृ *pīṭhāru* proper noun dir. eg. m. 108.
- पितृविदि *pīṭhāvīdi* "will cause pain, torture" v.
 caus, fut. 3rd. eg. 189. Sk. pāyāyati, १क. pīṭhā,
 Bloch pīṭhā, pīṭhā.
- पितरे *pīṭhāre* "by parents" sub. inst. pl. 161. 1w.
 Sk. pīṭhāre- OG. inst. pl. suffix.
- पिय *pīya* "drinks" v. pres. 3rd. eg. 525; pīyam
 1st. eg. 463; pī imp. 2nd. eg. 463; pīṭhānam past
 part. n. dir. eg. 525; pīyam ger. n. dir. eg. 521;
 pī abs. 556; pāi caus. abs. 557. Note the short
 and long -i- in the stem in the present tense,
 indicating OG. contraction of -iy- > -i-,
 (though -y- is graphically retained; which is
 lost later giving pī 3rd. eg. pres.). The past
 participle -dh- is analogical extension from
 labdha- labdha type. Bloch pīyā, Turner pīna
- पियत *pīyāta* "goal" sub. dir. eg. m. 6. cf. Sk
 pīṭhāh; *pīṭhāna-; MG. pīṭhāna m.
 parṭhā f.
- पिय *pīyā* "pus" sub. dir. eg. 25. derivation not
 known. MG. pīyā.
- पियत *pīyāta* "by breath" sub. n. inst.
 eg. 614. OG. pīhā + pāyī; Sk. pīhā-, १क.
 pīhā-, MG. pīhā.
- पियत *pīyāta* "browl, wild" adj. n. pl. 616. Sk
 pīhā-, १क. pīhā-, MG. pīhā.
- पियत *pīyāta* "march" sub. n. dir. eg. (v. l.
 pāyānam) 449; Sk. pāyāta- n १क. pāyāta-
 n The -i- instead of the expected -a- (as
 shown in a later 112.) is either due to the
 following -y-, or, Marwari influence.
- पियत *pīyāta* "a type of tree" sub. dir. ex. 501.
 der. not known
- पियत *pīyāta* "crushing, pulverizing" pres.
 part. m. dir. ex. 213; Sk. pīyāta, pīyāta,
 १क. pīyā; Bloch pīyā, Turner pīna.
- पियत *pīyāta* "in the paternal house (of the
 wife)" sub. n. loc. ex. 473, 554, cf. Sk.
 pīyāta-; १क. pīyāta-; MG. pīyā.

पुट्टिका *puttaka* "small bundle" sub. dir. sg. f. 601; of Sk. *puta*-bundle; **putta-*, Pk. *putta-*, *putta-*. MG. *putta* m. a big bundle, *putti* f. a small bundle. Bloch *put*, *putti*, Turner *puti*.

पुति *puti* "again" adv. (v. I. *puta*) 38, 94, 492, also used in the sense of conj. and emphasis. 547, 555. Sk. *putān* api, Pk. *putāvi* OG. *puti*. s. v. *puta*.

पुण्यारोसि *puṅgyarōsi* "piety, lit. a heap of piety" sub. dir. sg. m. 428; lw. Sk. *puṅyarōsi* -.

पुत्र *putra* "son" sub. m. dir. sg. 525; Sk. *putrah*, Pk. *putto*, *putta*; lw. Pk.

पुनिस *punisa* "the night of the fullmoon" sub. f. obl. sg. 483. Sk. *pūrṇamā* m. "full moon", lte Sk. *pūrṇimā* f., Pk. *puṇṇimā*, f. MG. *punam* f. Bloch *punav*, Turner *punā*.

पुरिमताड *purimataḍa* proper noun dir. sg. m. 516.

पुरपुर *purapur* proper noun m. dir. sg. 544

पुरावसति *purāvatasati* proper noun m. loc. sg. 429.

पुई *puḍi* "rice or grain scalded with hot water and then dried over fire" sub. pl. 502, Sk. *puthaka-*, Pk. *pahūka-*, MG. *puḍi*. Bloch *poḍā*.

पुग *puḡa* "arrived, reached" past part. dir. sg. m. 296; *puḡai* loc. sg. 478. Turner, under *puḡa* suggests analogical formation of **puḡga* replacing *puḡa* (*pūrṇāh*) as past part. to *puḡai* (*purāḍe*), and *puḡai* as *puḡga* formed on the analogy of *bhujai* : *bhujga*.

पुई *puḍi* "asks" v. pres. 3rd sg. 448, also 2nd sg. 538; *puḍi* imp. 2nd sg. 538; *puḍatai* pres. part. m. loc. sg. 522; *puḍatim* gen. obl. pl. 386, 556; *puḍia* past part. m. dir. sg. 86; *puḍi* yā. pl. 112; *puḍii* loc. sg. 428; *puḍi* ste. 386, 573; *puḍi* yāi. pass. sg. 339. Sk. *prechāti* Pk. *puḍai*, Bloch *puḡḡe*, Turner *puḍnu*.

पुचान *puḍān* "one who asks, desirous to ask" sub. dir. sg. m. 577. OG. *puḍāna*+*hāra*, der. s. v. *puḍai*.

पुज *puḡai* "worships, respects" v. pres. 3rd sg. 14; *puḡaum* 1st sg. 528; *puḡitu* past part. m. dir. sg. 74; *puḡitā* pres. pass. part. pl. 72. lw. Sk. *puḡayati*; or a lw. in Pk. as *puḡa-*, and OG. *puḡa-* cf. Pk. *puḡi*ne. pass., *puḡi*a-

पुजतर *puḡatar* "priest - who performs the worshipping ceremony in the temple -" sub. m. dir. sg. 527. Sk. *puḡāhara*-est. for *puḡa-* to be considered a lw. s. v. *puḡai*.

पुथि *puḍi* "at the back." adv. 447, 529, 557. Sk. *puḍi* f. ribs. Pk. *puḍi*thi, *putḍi*thi; MG. *puḍi* th. Turner *puḍi*.

पुइ *puḍi* "pancakes" sub. dir. pl. m. 315' Sk. *pūpa*- Pk. *pūa*-la; ext. with -*da*- MG. *puḍo*.

पुइ *puḍi* "fills, supports" v. pres. 3rd sg. 470; *puḍaum* 1st sg. 466; *puḍati* pres. part. f. dir. sg. 559; *puḍivā* ger. pl. 457; *puḍi* abs. 516. Sk. *puḍāyati* Pk. *puḍi* Turner *puḍm*.

पुइ *puḍi* "having assembled" abs. 614. the context is *eahlā puḍi* 'having assembled the conu. l'. Sk. *puḍayati* 'fills'. Note the OG. change in meaning cf. MG. (dialectal) *tālū puḍvū* 'to lock' v. s. v. *puḍai*.

पुरावयो *purāvayō* "in the previous stage" sub. loc. sg. f. 417. lw. Sk.

पुइ *puḍi* "before, ahead" adv. stereotyped loc. 109, 428, often followed by -*him* emphatic. lw. Sk. *puḍva* -

पेट *pet* "atomach" sub. dir. sg. n. 58, Pk. *petta*-*putta*-n, cf. MG. *pot*-*ḷū*, s. v. OG. *puttali*kā; also MG. *peru* 'lower belly'; hesitation in vowel quality may suggest an early lw; Bloch *pet*, Turner *pet*

पोतनपुरी *potanapuri* proper noun m-loc. sg. 450.

पोसि *posi* "a type of Jain penance", Jain theological term. sub. dir. sg. f. 142. Sk. *pausa*, Pk. *posai*.

पोसि *posi* "a kind of cake" sub. dir. sg. f. 317. lw. Sk. *paḷikā* *polikā*; Pk. *poliā*, MG. *poḷi*.

पोइ *poi* "sews, strings on, fixes on" v. pres. 3rd sg. 25. Sk. *pravyati*; *prōta-*, Pk. *poḷi*, *poḷ-*, MG. however, continues a form with -*r-*, *parov-vū*, for which see Turner *bonna*.

पोइ *poi* "supports, feeds" v. pres. 3rd sg. 538; *poi* abs. 516. Sk. *poḷayati*, Pk. *posai*; → may suggest it to be a lw.

पोइ *poi* "a type of Jain penance, Jain theological term, sub. dir. sg. m. 547. Pa. *uposatha* Pk. *posā*hā-

पंचवीस *pancaviśa* "twentyfive" num. dir. sg. 428; also *pancaviśā* 420, Sk. *pāñcaviśat* Pk. *panpaviśā* f. *panviva* f. n., Ap. *pancām*. Turner *pacis*.

पंचवीस *pancaviśa* "twenty fifth" ord. dir. sg. 62; *pancaviśamā* obl. 222. for der. s. v. *pancaviśa*.

पंचास *pancāśa* "fifty" num. dir. sg. 424, 413. Sk. *pāñcāśat* f. Pk. *pancāśam*. Bloch *pancās*, Turner *pacāśa*.

पंचास *pancāśa* "seventy five" num. dir. 133. cf. Sk. *pāñcāśat* f. Pk. *pancāśattari* Turner *pacāśattar*.

- पंचुपरि *pañcuhari* "five un-atables, ndumbara and the rest", sub. f. sg. 352. Sk. pañca + udumbara -, Pk. pameumbara -; note the OG. -i as a suffix for f. derivation.
- पंचतालीस *pañcatalīsa* "forty five" num. 9. 407. cf. Sk. pañcacaṭvāriṃśat Pk. pañayālisa, Ap. paṇatālī-aha. Turner pañtālīs.
- पंडु *paṇḍu* "pale" adj. dir. eg. 213. Sk. pāṇḍu- m, Pk. paṇḍu- m.
- पारिया *pañhāyī* "birds" sub. dir. pl. m. 102; Sk. pakṣī. Pk. paṇkhi, paṅkhi, paṅkhiā-; ext. in OG. with -u; Turner pañkhi.
- पांच *pañca* "five" num. dir. eg. 74; also pañca 85; Sk. pañca-, Pk. pañca-. Bloch pañc, Turner pañc.
- पांचमं *pañcamam* "fifth" ord. dir. eg. n. 162, 355; pañcamam loc. eg. 355. dir. s. v. pañca.
- पांचसहस्र *pañcasāṅgha trīśatī* "five hundred sixty three" num. 37; dir. s. v. pañca, saṅ, and trīśatī.
- पांजरं *pañjarāṅgha* "cage" sub. dir. eg. n. 403; Sk. pañjara - Pk. pañjara - ext. in OG. MG. jājṛū; but also piṅṛū in the compound hārpiñjar 'skeleton'. Bloch piñjar. Turner piñjarā.
- पिंडु *paṇḍu* "solid, mass" sub. dir. eg. m. 311 Sk. paṇḍa, Pk. piṇḍa-.
- पीनत *piñyatā* "carding" pres. part. dir. eg. m. 213 Sk. piñjyati, Pk. piñjē; MG. piñyū.
- पुंजे *puñja* "in a heap, in a lamp" sub. loc. eg. m. 22. Sk. puñja-, Pk. puñja-.
- पुंजी *puñjī* "having cleaned, wiped" abs. 325. Sk. puñja- 'a heap', Pk. puñjai 'to make a heap' refers to the heap of dust made by sweepers who clean the rooms or floor. MG. puñyū to clean, may, however be connected with Sk. pra-yuj-, Pk. paumjai; s. v. paumji.
- पुंयत *puñyatrā* "invisible insects in water" sub. m. pl. 21. cf. MG. porṣ, der. not known.
- प्रकाश *prakāśa* "to manifest, publish" obl. of inf. 511; lw. Sk. prakāśa-
- प्रकाश *prakāśai* "makes manifest, brings to light" v. pres. 3rd eg. 590; prakāśi abs. 630. lw. Sk. prakāśa-
- प्रकाश *prakāśai* "burns" v. pres. 3rd eg. 521; pra-yāṅgha past part. m. dir. eg. 488; pra-yāṅghā caus. pres. part. m. pl. 522. lw. Sk. pra-yāṅgha-
- प्रकाश *prakāśai* "having bowed, respected" abs. 73, 409. lw. Sk. praśam-; Pk. paṇamaj.
- प्रतिपाठ *pratipāṭha* "I atone" v. pres. 1st. eg. 310. lw. Sk. pratikram-.

- प्रतिपाठ *pratipāṭha* "obstruction, resistance" sub. dir. eg. m. 7. Sk. pratigāṭha-; OG. prati lw. + ghāṭha.
- प्रतिपद्यते *pratipadyate* "observes, follows" v. pres. 3rd. eg. 464; pratipadyi abs. 430. lw. Sk. pratipāḍ-.
- प्रतिपद्यते *pratibujhāti* "realises, knows" v. pres. 3rd. eg. 471, pratibujhāsi fut. 3rd. eg. 471; pratibodhā abs. 38. Sk. bādhyate Pk. bujjhai; Sk. bōdhāti, OG. prati lw. + bujh-. Bloch bujjhā, Turner bujjhāṇṇ-.
- प्रभविष्ये *prabhaviṣyati* "happened, created" past part. dir. eg. n. 426; prabhaviṣyati pass. eg. 517. lw. Sk. prabhav- + OG. past participle n. suffix -iṅam.
- प्रवह *pravaha* proper noun m. dir. eg. 516.
- प्रवर्तयति *pravartayati* "causes to circulate, spread" v. caus. pres. 3rd. eg. 472; pravartāyāṅgha past part. n. dir. eg. 482; pravartāyāṅgha fut. 1st. eg. 482; pravartāyāṅgha abs. 517. lw. Sk. pravart-.
- प्रवर्द्धते *pravarddhāti* "increases" v. pres. 3rd. eg. 514. lw. Sk. pravardh-.
- प्रवासावित *pravāsāvīti* "caused to rain" caus. past part. m. dir. eg. 561. OG. pra+vāsāvīti; Sk. varṣati, Pk. vasaai.
- प्रशंसित *praśaṅgha* "praised" past part. m. dir. eg. 85. lw. Sk. praśaṅga-
- प्रसव *prasava* "gives birth, creates" v. pres. 3rd. eg. lw. Sk. praśāyate, prasava-.
- प्राइ हिं *prāi hiṃ* "generally" adv. stereotyped inst. 385. Sk. prāyēja.
- प्राहुं *prāhūṅ* "guest" sub. dir. eg. m. 410, short -u- may be scribal error. lw. Sk. prāghā- rṇaka-, prāghāṅga-.
- प्राणिपद्यते *prāṇiyāṅgha* "being, living creature" sub. dir. eg. m. 618; prāṇiyāṅgha sub. inst. eg. 591; prāṇiyāṅgha obl. pl. m. 325; prāṇiyāṅgha obl. pl. m. 400. Sk. prāṇin; OG. prāṇi + ext. with -g; -ya- in OG. prāṇiyāṅgha cannot be explained, unless it is some representation of y-glide.
- प्राप्ति *prāpti* "to obtain, to attain" obl. of inf. 7. lw. Sk. prāp-.
- प्रायिहिं *prāyēhiṃ* "generally" adv. stereotyped inst. 586. lw. Sk. prāyēja; prāy- + OG. inst. suffix. s. v. prāhīm.
- प्रायिहिं *prārthiṅ* "to request" obl. of inf. 575. lw. Sk. prārtha-.
- प्रायिहिं *prāśukāṅgha* "what is devoid of life and hence desirable, esp. food for Jain monks Jain theological term." adj. dir. eg. m. 561. lw. Sk. prāśuka - e-śāyā-.

- बल्लु *balala* "bulls" sub. pl. m. 507. Sk. *balivardah* m. Pk. *balivadda* m., *balidda* m., *baladda* m., MG. *balad*. Turner *balad*.
- बल्लि *balali* "some preparation of milk" cf. MG. *balī*, der. not known.
- बल्लकारि *balātkara* "by force" sub. inst. sg. m. 33; lw. Sk. *balātkāra* - + OG. inst. suffix -i.
- बल्लिनी *balhina* "sister" sub. f. dir. sg. 142, MG. bl.n. Sk. *balhina*, Pk. *bahini*; -n- in OG. indicates Sk. loan influence? Final -i > -a is irregular. Bloch *bahin*, Turner *baini*.
- बल्लति *bahattari* "seventy two" num. dir. sg. also *bahattari* 74; cf. Sk. *dvāseptatiḥ*, Pk. *bāvatari*, *bāhattari*. Bloch *bāhattar*, Turner *layalhattar*.
- बल्लु *bahurū* "sweeper's broom (?) in a compound baharūlika, sub. 518. the context is *bahāri* (*vuhāri*) *baharūlika*': *bahāri* means sweeper. Sk. *vyavahārin*, cf. Pk. *bahuriyā* f. 'broom'
- बालु *balula* "a typo of grain (?)" sub. dir. pl. m. (v. l. *lakula*) 433. Der. not known.
- बालु *balhau* "tied, obstructed" past part. m. dir. sg. 474, 463, 474; *balhi* f. 480; Sk. *badhnāti*, Pk. *taddha*-. also see s. v. *bārdhā*.
- बाप *baṇa* "father" sub. obl. sg. m. 108; Pk. *loṭṭa*-. Bloch *baṇ*, Turner *baṇ*.
- बाप बचतुं सति *baṇa paṇcaṇṇa sātī* "twelve multiplied by five is sixty." 614 This phrase indicates the manner in which multiplication tables are memorised in village schools. For derivations see under *barala*, *ṭṭa*, and *sāthi*.
- बारु *barā* "twelfth" ord. f. 259; *bārahamaī* loc. sg. m. 315 der. s. v. *bāraha*.
- बारु *barā* "twelve" num. dir. sg. 91, 514; *bāre* (v. l. *barā*) inst. pl. 113, cf. Sk. *dvāśāś*, At Pk. *darāśāś*, *darāśāś*, Pk. *bārāś*, *bārāś*. Bloch *bārī*, Turner *bāra*.
- बारु *bāra* "at the door" sub. loc. sg. n. 83, Sk. *dāra* m. Pk. *bāra* - n, Bloch *bāri*, Turner *dāra*.
- बारु *barā* "Eighty two" num. dir. sg. 74; cf. Sk. *dvāśeptati*, Pk. *baṇṇaṇṇa*. Bloch *bāvan*, Turner *baṇṇa*.
- बारु *barā* "sixty two" num. 616 cf. Sk. *dvāśāś*, Pk. *baṇṇaṇṇa*, MG. *baṇṇa*. Turner *baṇṇaṇṇa*.
- बारु *barā* "outside" adv. 577, *bāhīri* (stereotyped loc.) 527, also *bāhāri* 29, *bāhīra* dir. sg. m. 112, 442 549 cf. Sk. *bāhī* s. perh. contain. be *bāhā*, Pk. *bāhā*-. M. *bāhī*, *lar*. Bloch *bāhī* 343, 344. Turner *bāhī*.
- बि *bi* "two" num. dir. 91, 110, 432, 535; also be 433, 480, 536, 578; *bihām* emphatic 388. Sk. *dvē* n. du. Pk. be, OG. *bi*; MG. *bē*; OG. be should be a result of a contraction of some MI emphatic form such as *be-hu* > *beu* > *be*; OG. *bi* is retained in numerous OG. compounds. The following numerals with *bi* are noted. *bi* *śāś* *caurāś* 'two hundred eighty four' 616; *bi* *śāś* *chavviśā* n. pl. 'two hundred twenty six' 78; *bi* *śāś* *chappanna* loc. pl. 'two hundred fifty six' 397; *bi* *śāś* *chahuttara* 'two hundred seventy six' 394; *bi* *śāś* *triśā* n. pl. 'two hundred thirty' 78; Bloch *don*, Turner *dui*.
- बिगुणतु *biguṇam* "double" adj. dir. sg. n. 461. OG. *bi* + *guṇam*; for *bi* q. v. *guṇam* s. v. *guṇa*. The lit. meaning of the compound is 'multiplied by two'.
- बिहोतु *bihottaru* *śāś* "one hundred and twelve" num. dir. sg. m. 421. MG. *bāṇṇṇa* O; cf. Sk. *dvāśāś* - *uttara* - *śāś*-. Note that the unemphatic *bi*- is used in the compound, as in other cases (v. s. v. *bi*), but MG. has replaced it by *bā*- on the analogy of *bār* 'twelve'. v. s. v. *bāraha*.
- बिपासी *biṇṇā* "eighty two" num. 394, cf. Sk. *dvāśāś* f., Pk. *bāśāś*; MG. *byāśi*, *bāśi* Note the OG. *bi*- in compounds has been replaced by *bā*- in MG; here it is on the analogy of *-ā* in MG *ekāśi* 'eightyone'. For a similar case see s. v. *bi* *loṭṭaru* *śāś*; also see s. v. *bi*. Turner *baśāś*.
- बिजु *biṇṇā* "seed filled, a citron, Citrus Medica" sub. obl. sg. 16; Sk. *biṇṇāpūra* - m. Pk. *bāṇṇāya* - n.; borrowed in Pk. the form may be **biṇṇāya*-. MG. *biṇṇā* n.
- बिजु *biṇṇā* "second" ord. dir. sg. n. 417, 433; *biṇṇā* m. pl. 302, 417; *biṇṇā* m. pl. 499; *biṇṇā* inst. sg. 91, also *biṇṇā* 489; *biṇṇā* loc. sg. 613; *biṇṇā* f. sg. 463. Sk. *dvitīya* - Pk. *biṇṇā*-, ext. in OG. v. s. v. *bi*.
- बिहति *bihati* "fears" v. pres. 3rd sg. 3; *bihāta* pres. part. m. dir. sg. 463; *bihāta* caus. pres. part. m. dir. sg. 514; *bihāvi* caus. abs. 453. Sk. *bihāti*, Pk. *bihati*, *bihati*; note the loc. -ī- in Pk., which may be due to the analogy of Sk. *bhāta*, Pk. *bhāta*.
- बुजु *buṇṇa* "know, awake" v. imp. 2nd sg. 433 lw. Pk. v. s. v. *buṇṇā*.
- बुजु *buṇṇā* "enlightens, causes to know" v. pres. caus. 3rd sg. 340; *buṇṇā* pass. pres. 3rd pl. Sk. *bhāṇyate*, Pk. *buṇṇā*.
- बुजु *buṇṇa* "promise, words" sub. m. dir. pl. 433; *buṇṇa* inst. pl. 340. der. s. v. *buṇṇā*.

बोलत बोलत "speaks" v. pres. 3rd sg. 380, 456; bolatān pl. 147, 481, 548; bolau imp. 2nd pl. 534; bolatau pres. part. m. dir. eg. 514; bolatā pl. 538; bolatāu ger. dir. eg. n. 262; bolāvīyai caus. pass. 3rd sg. 55, bolāvīa caus. past part. m. dir. eg. 434; bolāvātī caus. pres. part. f. dir. eg. 589. Baddist Sk. bahubollakha 'talkative'. Fk. bolai; Bloch suggests Dravidian origin. Bloch bolgē, Turner bolna.

बुरा बुराभारु "proper noun, name of a town" f. dir. eg. 521.

बुझी बुझी "surrounded, clustered" past part. f. dir. eg. 521, cf. Fk. Ap. vamāla- 'to collect'; also bambōla-; der. not known.

बुझ बुझी "ties, obstructs" v. pres. 3rd sg. 522; bāmbhām 1st sg. 435, 443, also bāmbhau (nasal is dropped, probably influenced by participial baddha-552; bāmbhūn past part. m. dir. eg. 538; bāmbhī abs. 448, 488, Sk. badhātī, bandhati, Fk. bandhai, Bloch bāmbhā, Turner bāmbhū.

बुझत बुझत "obesance, act of bowing (to gods and teachers)" sub. n. dir. eg. 135; bāmbhām n. pl. 123, also bāmbhām n. pl. 326, 338; bāmbhāpi loc. eg. 135, also bāmbhāpi loc. eg. 160, Sk. vandana- Fk. vandana- ext. in OG. Note the special development -nd- > ~n- in this word of theological usage. Note also initial v-> b-; a. v. vāmbhānām.

*

बुझी भौम "buffalo" sub. f. eg. 311, MG. bhEs, Sk. mahīsi f, Fk. mahisi f. Bloch mahais f, Turner bhaisi.

बुझत बुझत "speaks, tells" v. pres. 3rd sg. 426; bhaṅsu fut. 1st sg. 455; bhaṅau imp. 3rd sg. 489; bhaṅi imp. 2nd sg. 546; bhaṅijia precativē 2nd sg. 435; bhaṅatān pres. part. m. dir. eg. 463; bhaṅatā obl. eg. 465; bhaṅatī f. dir. eg. 474; bhaṅi loc. eg. 455; bhaṅia past part. m. dir. eg. 142, bhaṅiyā pl. 381; bhaṅiam n. eg. 38; bhaṅiyām n. pl. 154, 581; bhaṅī abs. 142; bhaṅiyām ger. n. dir. eg. 323; bhaṅiyai pres. eg. 365; bhaṅiyāim pass. pl.; bhaṅāvīa caus. pres. 3rd sg. 577; bhaṅāvīa caus. past. part. m. dir. eg. 577, Sk. bhāṅatī, Fk. bhaṅai. Turner bhannu.

बुझत बुझत "wandering" pres. part. m. dir. eg. 426; bhāmān past. part. m. dir. eg. 426; bhāmīyā pl. 448; bhāmādī caus. abs. 154; Sk. bhramati, Fk. bhamaī, Bloch bhōvṅē, Turner bhayānu.

बुझत बुझत "proper noun, name of the country, m. 425.

भरित भरित "filled" past part. m. dir. eg. 461; also bhario lw. Fk. 461; bhari f. 464; bhariṅā obl. of inf. 38. Sk. bhārati, Fk. bharaī. Bloch bhar, bhār, Turner bharnu?

भरत भरत "good, proper" adj. dir. eg. n. 434; 524; bhali f. 426, 524. Sk. lex. bhallaḥ, Fk. bhalla-; note the short -a-, being in an unemphatic form. Bloch bhālā, Turner bhalo.

भरि भरि "having faith, householders - who are fit to achieve highest stage of deliverance". adj. m. dir. pl. 38; Sk. bhavya-, Fk. bhavia, OG. rebuilt with -ka, bhavika-.

भरि भरि "having eaten" abs. 433, Sk. bhakṣīyā-; Fk. bhakkhei. Note the -a- in the initial syllable, which is irregular.

भाई भाई "brother" sub. m. dir. eg. 94; also pl. 427. Sk. bhṛātṛya-, Fk. bhāis. Bloch bhāi, Turner bhāi.

भागदु भागदु "simpleton, afflicted" adj. m. dir. eg. 38, Sk. bhagna-, Fk. bhagga- ext.-ḍau.

भाजत भाजत "violates, breaks" pres. 3rd sg. 560, bhāṅau past part. n. eg. 444, bhāṅām n. pl. 94; bhāji f. eg. 481; bhājī abs. 514; also means 'ran away, fled' when followed by auxiliary gayā: bhāji gayā 484. Sk. bhānakti, bhājyāte, bhājīyati, past part. bhagna-; Fk. bhājya, bhagga-, Bloch bhājē, Turner bhāṅna, bhājānu.

भाई भाई "hired" first part of the compound bhāi dāna- 'paying for hire' 468, Sk. bhāti f. 'wages, earnings of prostitution'; v. a. v. bhājē.

भाइ भाइ "furnace, frying-pan" i. e. where frying or roasting is done" sub. dir. eg. m. 25, Sk. bhṛāchitra-, Fk. bhāṅṅha- ext. in OG, gives MG. bhāstho.

भाइ भाइ "on hire, rent" sub. obl. eg. n. 507, 521; Sk. l. x. bhājam n. 'wages', bhājīh f. 'earnings of prostitution'; Fk. bhājya, MG. bhārū. Bloch bhār, Turner bhārē.

भाइ भाइ "in the plate" sub. loc. eg. 296, Sk. bhājanau Fk. bhājāna-, ext. in OG, MG, bhāpū.

भाइ भाइ "sister's children" sub. dir. pl. 142, Sk. bhāgīnyāh Fk. bhājya, bhājīnyā (cf. Sk. bhṛātṛiyāh Fk. bhātījya-; MG. bhātījo; Fk. forms suggest loan influence from Sk.) Turner bhāij.

भाइ भाइ proper noun m. dir. eg. 544.

भाइ भाइ "cherishes" v. pres. 3rd sg. 85; bhāvatau pres. part. m. dir. eg. 110; bhāvātām obl. gen. pl. 108; bhāvātām fut. 3rd pl. 433; bhāvēvi ger. f. 249; bhāvāvea caus. ger. m. dir. eg. 80. Sk. bhāvayati Fk. bhāvei.

- भिसानिविप *bhikṣānivipā* "living on alms" sub. dir. pl. m. 564, lw. Sk. *bhikṣāvī* ext. in OG. with -u.
- भीति *bhīti* "wall" sub. f. 264, 601; also loc. sg. 41, Sk. *bhittih* Pk. *bhitti*. Bloch *bhit*, Turner *bhit*.
- भीनङ् *bhīnaṅ* "wet, softened" past part. n. dir. sg. 519, *bhīni* adj. f. 601. It is not clear whether this is connected with Sk. past participle *bhinna-* pierced, (Sk. *bhad-*, *bhinna-*) as the context *manu bhīnaṅ* 'his heart softened-his mind was pierced-and hence softened' may suggest, or is it related with Sk. *abhyajate*, *abhyajati*, whose Gujarati evolute is *bhījvū* 'to be wet'? Bloch *bhijne*, Turner *bhijna*, *bhigna*.
- भीम *bhīma* proper noun m. dir. sg. 487.
- भीम *bhīma* "man of the bhīla tribe" m. dir. sg. 419; Lullaham inst. pl. 418; Pk. *bhīlla-*.
- भू *bhūm* "earth, distance" sub. f. dir. sg. 326, 461, 489, 514, Sk. *bhūmih* f. Pk. *bhūmi-*, Bloch *bhui*, Turner *bhui*.
- भ्रूलु *bhṛūlu* "a tyro of whirlwind" sub. m. dir. sg. 20, der. not known.
- भ्रूमि *bhṛūmi* "in the cellar" sub. n. loc. sg. 186, Pk. **bhūmi-għara*, (cf. Sk. *bhūmi-gṛha-* 'underground chamber') **bhūmihara-*; MG. *bhūru* n. Note the retention of -m- in OG.
- भ्रु *bhṛu* "lunger" sub. f. dir. sg. 112. cf. Sk. *bhṛuk-*, **bhṛū-*, Pk. *thakkhā*. Bloch *brūk*, Turner *brūk*.
- भ्रुङ् *bhṛuṅ* "Lungry" adj. dir. m. 325. OG. *bhṛūhi* + *āra*, MG. *bhṛūhā* is the result of further extension of *bhṛūhā* + *u*; this -u is later analogically replaced by -o (for gender) giving *bhṛūhā* + *o*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "Hungry" past part. m. dir. pl. 433 der. s. v. *thakha*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "not" past part. m. dir. sg. 426. Pk. *bhṛūṅ*, cf. Turner *bhṛūna*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "by difference" sub. inst. pl. 314 lw. Sk. *bhṛū-* + OG. inst. pl. suffixes -e.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "enjoys" v. pres. 3rd sg. 402; *bhṛūṅ* + *āra*, pl. 302; *bhṛūṅ* imp. 3rd sg. 577; *bhṛūṅ* + *āra* pres. part. m. dir. sg. 317, lw. Sk. *bhṛū-*, derived as verbal base.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "consumes" sub. dir. sg. m. 402; -l seems to be an error, lw. 54.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* proper noun m. dir. sg. 473.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "honest, simple-simpleton" adj. dir. sg. m. 38, Pk. *bhola-*, ext. in OG.; AG. *bhola*. Turner *bhola*, *bhola*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "by simplemindedness" sub. inst. sg. 297; OG. *bhola* + *parāna*, der. s. v. *bhola*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "impolite behaviour" sub. dir. sg. 12. Sk. *bhāṇḍa* - m. 'a jester, buffoon', Pk. *bhāṇḍa* - m. MG. *bhāṇḍi*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "store-keeper; a surname" sub. dir. sg. m. 402, Sk. *bhāṇḍāgārika* - Pk. *bhāṇḍi-* Turner *bhāṇḍi*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "division, part" sub. m. dir. sg. 283; *bhāṅga* pl. 285, also *bhīṅga* m. pl. 134; *bhāṅga* loc. sg. 285, MG. *bhāṅga*. Sk. *bhāṅga-*, Pk. *bhāṅga-*, ext. in OG.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "store-house" sub. f. 478, lw. late Sk.; cf. Guj. surname *bhāṅgāli* m. Sk. **bhāṅgāsālika*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "barber's box" sub. f. dir. sg. 363, Sk. *bhāṇḍi* 'razor-case', Bloch *bhāṇḍi*, Turner *bhāṇḍi*.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "eyelashes" sub. f. 44; cf. Sk. *pakṣman*, pl. *pakṣmāni*..., Pk. *pamha*; MG. *pāpa* f. der. (with initial bh- in OG) not clear.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "roasts" v. pres. 3rd sg. 23; *bhū-* *jatau* pres. part. m. dir. sg. 213, Sk. *bhāṅḍi* 'enjoys, consumes', Pk. *bhāṅḍi*; note the significant change in meaning. MG. *bhūjvū* 'to roast'.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "be" sub. sg. m. 21, lw. Sk.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "be" sub. f. sg. 316, lw. Sk.
- भ्रुङ् *bhṛūṅ* "roasted" past part. 290; lw. Sk. *bhṛūṅ*.
- *
- म ना "do not" prohibitive particle adv. 38, Sk. *mā*, Pk. *mā*.
- मङ् *maṅ* "crown" sub. m. dir. sg. 470, Sk. *māṅga-*, Pk. *maṅga-* m. n.; MG. *mOr*.
- मङ् *maṅ* "little later" adj. dir. sg. 9. 179; OG. *maṅ* + *crāna* OG. comparative suffix; Sk. -*tara-*, MG. *mOr* adj. m. 'late'; der. not known.
- मङ् *maṅ* proper noun m. dir. sg. 423.
- मङ् *maṅ* "name of mosquito-like insect" sub. m. pl. 404; cf. Sk. *maṅga-*, Pk. *maṅga-*.
- मङ् *maṅ* "jealousy" sub. m. 512, Sk. *maṅga-*, Pk. *maṅga-* m.; prob. lw. fr. 13.
- मङ् *maṅ* proper noun, name of a town; m. dir. sg. 473, 522.

नदीयु *nadīyū* proper noun m, dir. eg. 576.
 नदीयुवत *nadīyūvata* proper noun m, dir. eg. 425.
 नदीयुवत *nadīyūvata* proper noun m, dir. eg. 426.
 नदीयु *nadīyū* proper noun m, dir. eg. 522.
 नदीयु *nadīyū* "believes, considers" v. pres. 3rd. eg. 446; manānū 1st. eg. 429; also mānānū 1st. eg. 535; manānū pres. part. m, dir. eg. (v. l. mānānū) 73; manātā pl. 6; manātā loc. eg. 112; manīam past part. n, dir. eg. 475; manāvaim case. pres. 3rd. pl. 489; manāvi abs. 558. Sk. mānyak, Pk. mannai; MG. mānvū; OG. -a- in the initial syllable may be due to analogical influence of word like mānab; note the appearance of mā- in some varīe lectiois. Bloch mānāp, Turner mānna.
 नदीयुवत *nadīyūvata* "pleasant" adj. n, dir. eg. 24; Ek. manobhārin lw. ext. in OG. with -am.
 नदीयु *nadīyū* "dies" v. pres. 3rd. eg. 446, 526, mānāt pres. part. m, obl. pl. 537; māri abs. 111; ... māri case. pres. 3rd. eg. 526; māraam 14. eg. 553 (in future sense); māri imp. 2nd. eg. 446, 483, 530; mārivaam gr. 447; māru pres. part. m, dir. eg. 447, 522; māriyā pl. 448, 537; mārie inst. eg. 522; māriyā obl. of inf. 454, 554; māri inf. 557, Ek. mārate, māriyati, Pk. marai, mārei, Bloch mārpē, mārpē. Turner marna, māru.
 मारी *marī* "chillies, pepper" sub. n. 314. Ek. maricah m, Pk. maria- m, n.; perhaps a loan from Ek. in Pk., * marica-, MG. mari, māreū, Bloch mīri, Turner maric.
 मारी *marī* "pounded, rubbed" past part. f. 519, māriyāim pass. pl. 519, lw. Ek. māriatī, mārd- + OG. verbal suffixes.
 मारी *marī* proper noun m, dir. eg. 110.
 मारी *marī* "rubbed" past part. f. 519, cf. Ek. māraam n, 'pestle'; Bloch suggests Dravidian origin; MG. masa- rū 'to rub, squeeze', Turner māraam.
 मारी *marī* "crematorium" sub. n. 251. Ek. imānām n, Pk. māraṣpa-; MG. māraṣ, Bloch māraṣ, Pk. māraṣ, Turner māraṣ.
 मारी *marī* *maharjī* "great saint" sub. m, dir. eg. 300; also obl. 559, 561, lw. Ek.
 मारी *mahā* "officers" sub. n, dir. pl. 489; mahate inst. pl. 489; also mahamāta m, dir. eg. 543, mahamātai inst. eg. 545. Ek. mahānta-, Pk. mahamta-; OG. extended, with significant change in meaning.
 मारी *mahā* "kitchen, belonging to food" sub. f. eg. 113; Ek. mahānāṣ- n., Pk. mahānāṣa- n., mahānāṣiya-.

महानदीयु *mahānādīyū* "in the great rivers" sub. obl. pl. f. 618, lw. Ek. mahā + nadī; note -ya which suggests extension of nadī- in OG.
 महारु *mahīpuru* proper noun m, dir. eg. 469.
 महारु *mahāratu* "great soul" sub. m, dir. eg. 561, Ek. mahā- satta-, Pk. mahā- satta-; lw. Pk.
 महाराज *mahārāja* proper noun m, dir. eg. 108.
 महाराज *mahārāja* proper noun m, dir. eg. 621.
 महाराज *mahāradatta* proper noun m, dir. eg. 434; also mahāsaradatta 434, mahāsaradattī inst. eg. 434.
 महारि *mahāri* "buffalo" sub. f. 264; Ek. mahīṣī, Pk. mahisi, also see s. v. lhasimi.
 महारु *mahāru* "a tree, Bassia Latifolia, bees-wax" (in a compound mahayādika) sub. 501, Ek. madhūka- Pk. mahūka- m.
 महारि *mahīṣī* "(woman) milk-vendor" sub. f. 300; mathita + hāri; Pk. * mahia + hāri; MG. mahīhāri.
 मातुल *mātula* "mother's brother" sub. m, dir. eg. 142, mālai inst. eg. 142, Ek. mātnala-, Pk. māula- ext. in OG. This word is not used in MG. and it is replaced by mānū, which has spread in all NIA languages; (cf. however, in dialects of esurāhtra 'mālo' is used in referring to a person who has done something unusual, it is also used as an exclamation of surprise, and inflected for gender; this comparison is extremely doubtful) Bloch māvlā, mānā. Turner mānā.
 माती *māti* "house-fly" sub. f. dir. pl. 21, (v. l. māmkhī) 521; mākhīe inst. pl. 521. Ek. mākhīkā Pk. mākhī, Bloch māsi, Turner mākho.
 माग *māg* "demands, asks," v. pres. 3rd. eg. 470, 520; māgi imp. 2nd. eg. 470; māgiam past part. n, dir. eg. 112, māgiyam pass. pl. (v. l. māngiyam) 112, Ek. mārgati, Pk. māggai, Bloch māggē, Turner māgnu.
 माती *māti* "earth, soil" sub. f. dir. eg. 20, 185, Ek. māttikā, Pk. māttī, Bloch māti, Turner māto.
 माती *māti* "shortened (in idiomatic usage- 'inauspicious') " adj. dir. eg. n. 404; māthai (idiomatic usage: sājai māthai thikai) 'inauspicious' loc. eg. 282; MG. māthū 'inauspicious, undesirable'. It is probable that earlier meaning 'shortened, rubbed, recast' came to mean 'inauspicious' especially in idiomatic usage, paired with sājanā; Ek. sāja- 'equipped'; māthānā; Ek. māṣta- 'repaired', Ek. mṣta- Pk. māṣtha- Turner mātho.

- मासुसु** *māsuṣu* "man" sub. dir. sg. m. 518, (v. 1. māsuṣu) 556, also mānuṣa 21. Sk. mānuṣ; bh. Pk. māsuṣa-; Bloch māntṣ. mānuṣ, Turner mānis.
- माता** *mātā* "by the mother" sub. inst. sg. f. 81, also mātā 81 and mātām inst. sg. 81. lw. Sk. mātā + OG, inst. suffixes.
- माथ** *māthau* "head" sub. dir. sg. n. 326; māthai loc. sg. 38, 327, 341, 483. Sk. māstaka-, Pk. matthaa-. Bloch māthā, Turner māth.
- माय** *māya* "mother" sub. f. dir. sg. 108. Sk. matā, Pk. māyā, Bloch mai, Turner mā.
- मायम** *māyamau* "illusory" adj. dir. sg. n. 430. lw. Sk. māyānaya-.
- मालव्य** *mālavya* proper noun m. dir. sg. 534.
- मातृ** *mātrā* "parents" sub. 132. MG. māvta. Sk. mātāpitṛ-. Note the -tr- in OG; Pk. māpū cannot explain OG, and MG. forms; it seems to be a later compound, as suggested by retention of -p-.
- मासे** *māse* "by the month" sub. m. inst. sg. 255. lw. Sk. māna - + OG, suffix -e.
- माहर** *māharau* "my" pro. adj. m. sg. 94; māharā pl. 446, 463, 559; māharai inst. sg. 85; loc. sg. 85; māharau n. dir. sg. 434, māharām n. pl. 473; māhari f. 471; Sk. māma replaced by Pk. māha + OG, postposition rāhaum (cf. rāhaim, later haraim, hrāim) is added. MG. mārū. For a different explanation i. e. māha + kāra- see Pischel §. 434. Turner macra.
- माहि** *māhi* "in, into" postpos. 73, 549, 554, (v. 1. māhim) 38; māha 426, 560; māhā 94, 562; māhaitau 'from' māha + itau 401; Sk. mādhyaḥ, madhye, Pk. mājjho, OG. māhi (-)jh- > -h- in OG, is a special treatment in an auxiliary word). Bloch māj, Turner māḥ.
- महित** *māhita* "belonging to the inside" adj. m. dir. sg. 548, der. s. v. māhi.
- मिच्छामि दुःखं** *michchāmi dukkha* "may my sins be atoned, wiped out" a very common Jain phrase (P'k.) spoken while paying routine obeisance to the teachers, and on other religious occasions 38. Sk. mithyā me duḥkṛtam. Note the pronominal 'me' being confused with the verbal form.
- मित्र** *mitra* "friend" sub. m. dir. sg. 553. Sk. mitra-, Pk. mitta-, lw. P'k.
- मित्रानु** *mītrānū* proper noun m. dir. sg. 545.
- मिथ** *mita* "met" past part. m. dir. sg. 434; mīlyā pl. 85; mīlyān n. pl. 626; mīlīm v. pres. 3rd pl. (note -li- instead of -la-; may be a scribal error) 282; mīlīv obl. of Inf. 67; mīli abs. 483. Sk. mīlati, P'k. mīlai, Bloch mīlā, Turner mīlū.
- मुक्तिगमिषा** *mūktigamiṣā* "those who are on the path to d. liverance" sub. obl. pl. n. 493. lw. Sk. ext. in OG, by OG, n. dir. suffix -am maktigāmīam.
- मुक्ता** *mūktā* "having covered the mouth, by tying a piece of cloth" sub. m. dir. sg. 325. lw. Sk. mukha-; Sk. koḥaḥ P'k. kosa-OG, kosa.
- मृग** *mūjha* "infatuate, swoon" v. imp. 2nd sg. 435; Sk. mūhyati, P'k. mājhlai; lw. P'k.
- मृग** *mūlya* "a particular kind of lentil" sub. 502. lw. Sk.; s. v. munga.
- मुनिप्रव्रत** *mūnīpravata* proper noun m. dir. sg. 110.
- मुप** *mūyau* "dead" past part. m. dir. sg. 94; also mūyau 432; Sk. mṛtāb, P'k. muṣ- ext.; OG. past part. is the result of extended base in Pk. that alone can explain -y- in OG, mūyau, MG. however, has muo, result of an unextended base. Long -ū- in some forms explains the presence of the dialectal form P'k. muo OG. mā-a. Bloch melā, Turner moro.
- मूर्ख** *murmuru* "burning charcoal" sub. dir. sg. 20. lw. Sk. mūrma-; Sk. mūrma-; Sk. mūrma-; Sk. mūrma-; Sk. mūrma-.
- मुसल** *mūsala* "pestle" sub. dir. sg. 520. lw. Sk.
- मुस** *musaim* "robs, steals" v. pres. 3rd pl. 547; Sk. mu-ṇāti, mu-ati, P'k. musai.
- मुहाबरी** *muhābari* "on the mouth" sub. loc. sg. 325. Sk. mukha-dvāre P'k. moha-bāre, OG. muhābari.
- मुहनी** *muhāni* "piece of cloth kept on the mouth by the Jains (of one sect) to prevent insects in the air from being killed by their breath during speech." sub. f. sg. 133. Sk. mukha-patīkā, Pk. muhāvattīā; MG. mamti, mupatti. (cf. Pk. muha-patti).
- मू** *mū* "pers. pro. obl. sg. 94, 561, also mūm 356; 426; mainm inst. sg. 401, 525, 548, (v. 1. mā) 74. Ap. māhu, mainm.
- मू** *mū* "dumb" sub. dir. sg. 44. lw. Sk.
- मू** *mū* "puts" v. pres. 3rd sg. 474; mūm-kīsi fut. 3rd sg. 382; mūkiu past part. m. dir. sg. 550; mūki abs. 403, 489, also mūmki 74, 445, 485; mūmkaṭi pres. part. f. dir. sg. 562. Sk. muṣcāti, mukṭāb, P'k. mūmcaī, mukṭai. Bloch muknō, Turner mukuro.
- मुनि** *mūni* "by sale" sub. inst. sg. 548; Sk. mūlyā- P'k. mulla-.
- मुनिग** *mūnigau* "principal, chief" sub. m. dir. sg. 446; Sk. mūle gataḥ OG. mūli + gau.

बस्त्र *māṣka* "basket" (first member of a compound) sub. 477. lw. Śk. *mūṣa*, *mūṣaka*, *māṣaka*.

माला *mālā* "chain, series" sub. f. loc. sg. 109. lw. Śk. *mekhalā* + OG. loc. suffix -m.

मेल *mēla* "leaves, abandons" v. pres. 3rd sg. 577; *mēlham* 1st sg. 106, 349; *mēli* imp. 2nd sg. 487, 544; *mēlha* imp. 3rd sg. 548, *mēlhiṣm* fut. 3rd sg. 382; *mēlihu* past part. m. dir. sg. 387; *mēlihyā* pl. 551; *mēlihum* n. sg. 465, also *mēli* 465; *mēlihyām* n. pl. 25; *mēli* abs. 451, also *mēli* 589; ... *mēlāvai* caus. pres. 3rd sg. 548; *mēlāvai* past part. m. dir. sg. 434, 548; *mēlihyai* pass. sg. 529, also *mēlihyai* 529. Der. not known, l'k. *millai*, MG. *mālū*.

मेलन *mēlow* "meeting, union" sub. m. dir. sg. 578. Śk. *mēlāpaka* l'k. *mēlva-*, *mēlvaṣṣ*.

मेघ *mēha* "cloud" sub. m. sg. 483. Śk. *mēgha-* l'k. *mēha-*.

मेघ *mēha* "rain" sub. m. dir. sg. 501. Śk. *mēgha-* l'k. *mēha-*.

मोक्ष *mokṣa* "sends" v. pres. 3rd sg. 533, 530, 534; *mokṣai* past part. m. dir. sg. 108; *mokṣi* pl. 454, 558; *mokṣāvai* caus. abs. 470, 534, der. s. v. *mukai*, f. Śk. *mukṣa-*.

मोक्ष *mokṣam* "open, free" adj. dir. sg. n. 243; *mokṣām*, n. pl. 495; *mokṣā* m. pl. 42. 44; Śk. *mukṣa* l'k. Do. *mukṣa-la*-ext. in OG. MG. *mokṣo*, Bloch *mokṣa*.

मोक्ष *mokṣakarṣa* "act of easing, spreading- (one's feet)" sub. dir. sg. 301. OG. *mokṣala* + *karṣa*, der. s. v. *mokṣarṣ*.

मोक्ष *moṣam* "big" adj. n. dir. sg. 211; *moṣe* inst. sg. 464; *moṣai* inst. sg. m. 154. Śk. *maha*-suffixed with -*ṣ*- (cf. Gōj. *liṭi* "line" MI. *lhaṭṭi*, Śk. *rekṣā*, *lekṣā*; for -*ṣ*- as a MI formative suffix see Bhayani H. C. *vāgyāpār* p.) Turner *moṣo*.

मोक्ष *moṣeri* "bigger" adj. f. 186; OG. *moṣ* + *eri*; for der. s. v. *moṣam*.

मोक्ष *moṣṭya* " (ornament) on which pearls are stiched" sub. 510. Śk. *maukṭika*-l'k. *moṣṭia*-OG. *moṣi*; Śk. *lagyatī* l'k. *laggai*, OG. suffix -*laga*, *lagi* cf. *hiraṅga*.

मोक्ष *moṣakāśā* "modaka cūṣka and others" sub. n. sg. 175. *moṣakāśra* seems to be the name of some sweet preparation; cf. a similar MG. name *moṣiūr*.

मोक्ष *moṣakṣi* "a small, black insect" sub. 21. MG. *makepo* n. also *makṣi* f. For a possible

confusion in the Śk. *matkupa-* and *markata-*, and its evolutes in Mod. IA languages see Turner under *makanu*. Final -*di* may be influenced by MG. *kipi* 'ant', Śk. *kitikā*, Bloch *mākar*.

मोक्ष *moṣyā* "box-wooden" sub. obl. pl. 547; Śk. *maṣyā*, l'k. *mamyā*; MG. *maj*.

मोक्ष *moṣṭaka* "upper crust (which is thin) of a baked loaf" sub. m. dir. sg. 317. lw. Śk. *marṣaka-*, MG. *māṣro*, *māṣo*; the former is derived from l'k. *mamo* OG. *māmān*-ext with -*u*, which is later analogically replaced by -*o*.

मोक्ष *moṣṭam* "chief minister" sub. m. dir. sg. 545: Śk. *mantrīndra-*, l'k. *mantrīndro*; OG. has retained the -*tr*- group.

मोक्ष *moṣṭi* "an iron piece (or sometimes wooden) fitted to the grandstone" sub. f. 20. Śk. l'k. *markati* f. 'an iron monkey-shaped bolt'.

मोक्ष *moṣṭuna* "bed-beg" sub. 21. MG. *mākar*, *mākan*; Śk. lex. *matkuna*, l'k. *makkuna-*, *mamkuna-*, Turner *makanu*.

मोक्ष *mōkṣhana* "butter" sub. n. 495; also *māmṣhana*, 316. Śk. *mraṣṣanam*, l'k. *makkha-* *ṣṣa-*, Bloch *mākhana*; Turner *makkhan*.

मोक्ष *mōkṣalām* "circles" sub. dir. pl. n. 542. Śk. *mandalini*, l'k. *mandalāim*, OG. *māmdalām*.

मोक्ष *mōkṣa* "a particular kind of lentil" sub. dir. m. 288, Śk. *maṣṣā* l'k. *mugga-* s. v. *maṣṣa*, Bloch *mūg*, Turner *mūn*.

मोक्ष *mōkṣa* "fit" sub. dir. sg. f. 309. MG. *mūth*, *mūthi* f. Śk. *muṣṭh*-l'k. *muṣṭhi-*, Bloch *mūth*, Turner *mūth*.

*
य *ya* enclitic particle 113, 589, der. s. v. i; cf. Śk. *ṣṣa*, l'k. *ava*, *va*, OG. *a*.

य *yamā* proper noun f. dir. sg. 108.

य *yugalya* "pairs-refers to Jain mythology to a heavy past where pairs-brothers and sisters could marry" sub. pl. m. 36; lw. Śk. *yugalin*-OG. *yugali* + *u*.

य *yajam* proper noun m. dir. sg. 515.

य *yoga* "by yoga" sub. inst. sg. m. 580. lw. Śk. *yoga* + OG. inst. suffix.

*
रक्ष *rakṣa* "let" prohibitive particle (v. l. *rakṣe*) 540; Śk. *rāk-ṣai*, l'k. *rakkhāi*.

रक्ष *rajva* "dust" sub. dir. sg. 373. lw. Śk. *rajah*.

रक्ष *rajata* "silver" sub. der. sg. 478. lw. Śk.

- रतिपुत्रि *ratiputari* proper noun f. dir. eg. 423.
- रत्नमयी *ratnamayari* proper noun f. dir. eg. 488.
- रत्नवती *ratnavati* proper noun f. dir. eg. 533.
- रत्नम् *ratnam* proper noun m. dir. eg. 451.
- रतिपायु *ratipaya* "pleased" adj. m. dir. eg. 557.
Der. not known. cf. MG. rajyāt f. as a proper noun.
- रसनिद्रु *rasanidru* "a new of taste, tongue" sub. dir. eg. 516; Sk. rasanendriya-, Ik. *rasanindriya-, note the retention of -n- in OG., indicative of karnel influence.
- रह *raha* "for, to, 'past position 38, 85, 483, 516, v. l. ram 416. Der. uncertain; for various suggestions see Tesettori § 71, Davu pp. 59.
- रह्य *raha* "stays, remains" v. pres. 3rd eg. 91; raham let eg. 318, rahasi fut. 3rd eg. 356; rahasi let eg. 431, 474, raha imp. 2nd eg. 38; rahasi pres part m. dir. eg. 216, also rahita 544, in both cases -i- cannot be explained; rahā past part. m. dir. eg. 83, rahiyā pl. 109, raham n. eg. 143, rahiyam n. pl. 556, also rahyam gen. obl. pl. 109, rati f. dir. eg. 474; rahisam ger. 209, rahiyat pass. eg. 259; rahasi caus. pres. 3rd eg. 477, 516; rahisam pres. let. eg. 329, rahavata pres. part. obl. pl. 279, rahaviya past part. m. dir. pl. 329, rahava f. dir. eg. 579, rahava abs. 528, also rahavi 481, rahava inf. 542, Sk. rahata Ik. rahat, Bloch raha f. Turner rahana.
- रात्रि *ra* "night" sub. f. eg. 321, Sk. rātri Ik. rātri, ra, ra lw fr. Ik. ? note the exceptional loss of -ti- in MI of MG. rat f. v. a. v. rati.
- रात्रि *ra* "belonging to night" adj. dir. eg. 321, Sk. rātri rātrika- Ik. ra, a. v. rat.
- राय *raya* "king" sub. m. dir. eg. 73, also rayu 544, rayu obl. eg. 327, rayi ins. eg. 112, 527, Sk. rāy, Ik. rayā, ray, OG. rā ext. Bloch ray, rayu, Turner ray.
- रय *raya* "a lion" sub. f. 519, Sk. rāyā f. "a lion used for preserving" Ik. rāyā f. MG. rāyā, Bloch rāyā, Turner ra byan.
- रयि *rayi* as "the prot. of preserve" ger. m. eg. 679, rāyā obl. of inf. 441, 574, rāyāim pass. pl. 444, Sk. rāyāim Ik. rāyāim. Bloch rayi f. Turner rayāim.
- रयि *rayi* "total" v. l. total ext. f. m. dir. eg. 679, rāyāim let. eg. 14, lw. Sk. rayā, v. l.
- रयि *rayi* "total" v. l. total ext. f. m. dir. eg. 679, rāyāim let. eg. 14, lw. Sk. rayā, v. l.

- राजदेम *rājādeśa* "royal command" sub. m. obl. eg. 416; lw. Sk. rājādeśa-.
- राजि "on the throne, kingdom" sub. n. loc. eg. 108, 457, Sk. rājya Ik. rajje OG. rajj.
- राणी *rāṇī* "queen" sub. f. dir. eg. 489; Sk. rāṇī, Ik. rāṇī, rāṇīā. Bloch rāṇī, Turner rānī.
- राति *rāti* "night" sub. f. dir. eg. 326; also loc. eg. 142, 474, Sk. rātri, rātri, Ik. rāti, OG. rāti MG. rāt. Bloch rāt, Turner rāt.
- रापा *rāpā* "cooked" past part. pl. 238; rāpā f. 311; MG. rādhvū, Sk. rādhyāti, caus. rādhyati, rādhyā; Ik. rādhyā, OG. ext., also v. v. rādhyāim, Bloch rādhyā, Turner rādhyā.
- राय *raya* "porridge (sweetened)" sub. dir. eg. f. 288, 311; Ik. (Do.) rābbā; probably a lv. from Perso-arabic, cf. Ar. rābb; Turner rābbi.
- रामति *rāmāti* "game, play" sub. f. dir. eg. 12, Sk. ramyati Ik. rammi, adj. ramma-, OG. rāma-ti, MG. ramat; initial short vowel due to analogy of Sk. ramato, MG. ramvū, Turner ramānu.
- रायवदन *rāyavādana* proper noun m. dir. eg. 571.
- रितु *ritu* "season" sub. dir. eg. 376, lw. Sk. rītu m.; MG. ratu f.
- रिम *rasa* "anger" sub. f. eg. 386, Sk. riyati, MG. ris. Bloch ris, Turner ris.
- रलिगयितु *raligayitu* "pleased" 519 (v. l. ralyāyita); v. a. v. raliyāyita.
- रुयि *ruyi* "becomes angry", v. pres. 3rd eg. 470; rūthau past part. m. dir. eg. 511, 536, Sk. ruayati, ruṣṭa, Ik. rūṣi, rūthā-, Bloch ruṣṭi.
- रुयु *rūyu* "good, proper" adj. dir. eg. m. 151, rūtham n. eg. 517; rūli f. eg. 474, 571, Sk. rūpa- Ik. rū-, ext. -lītu.
- रुयु *ruyu* "poured" past part. a pl. 91, rōlansam "a t of pouring" sub. dir. eg. a. 217 der. not known, MG. ruvū "to pour".
- रुयु *ruyu* "weeping, lamenting" pres. part. dir. eg. m. 223; ruayati f. 549, Sk. rōlā, Ik. rōlā, MG. ruvū, Turner ruṣṭi.
- रुयु *ruyu* "pleased" past part. m. dir. eg. 441, ramjyā pl. 456; ramjyā caus. abs. 222, Sk. rāyā, Ik. ramjā-, ext. in OG.
- रुयु *ruyu* "poor, ugly" a term of reproach f. m. v. l. eg. 322, Sk. rōlā, Ik. rōlā-, ext. in OG.
- रुयु *ruyu* "rope" sub. eg. 250, 447, MG. rōlā v. l. "a thick, coarse rope"; 147 rōlā ext. with -am, can explain MG. form; der. not known.

रिचं रूचिभ्यो "cook" v. pres. 3rd pl. 311; rūchībhāyām pass. 3rd pl. 311; Sk. rūchīyati. caus. rūchīyati; Pk. rūchīhai, v. e. v. rūchā. Bloch rūchā, Turner rūchānu.

रुचिदं रूचिभ्यो "obstructed, prevented" past part. m. dir. sg. 446; rūchībhā abs. 528; rūchīdhāyā caus. past. m. dir. sg. 534. Sk. rūchīhāti, Pk. rūchīhāsi, Bloch rūchīhā, Turner rūchīnu.

*

रुच्यन्तु रुच्यन्तु proper noun m. dir. sg. 469.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु proper noun m. dir. sg. 553.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु proper noun m. dir. sg. 461.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "in the act of touching" -ob. n. loc. sg. 161; dir. s. v. rūchāsi.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "a crooked piece of wool" sub. dir. sg. 259; lw. Pk. rūchānā- der. not known

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "a little, slight" adv. 460, 488; usually followed by ekā to indicate indefiniteness dir. uncertain; note MG's alternating forms rūchāsi-rūchāsi. cf. OG. post pos. rūchā; probably extension of rūchā-; Turner rūchānu

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "on account of, as far as" post pos. 86, 450; Sk. rūchāsi 'is fixed to', Pk. rūchāsi, Te-sitori (72) suggests Ap. rūchāsi as a probable source of this post position, also see s. v. rūchāsi, Bloch rūchāsi, Turner rūchānu.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "modest" adj. dir. sg. m. 3. Sk. rūchāsi- Pk. rūchāsi, lw.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "saffron, carthamus tinctorius, name of a plant" sub. f. sg. 311; Pk. rūchāsi; der. not known.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "a sweet preparation made of wheat and ghee" sub. f. 264. MG. rūchāsi, this word is a Sanskritisation of the current word "rūchāsi", and the Sk. source; Sk. rūchāsi f., Pk. rūchāsi; v. s. v. rūchāsi.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु name of an ocean (mythological), m. dir. sg. 550.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "obtains, gets" v. pres. 3rd sg. 86; rūchānu 1st sg. 528; rūchānu 1st sg. 260; rūchānu 2nd sg. 521; rūchānu abs. 466, 558; rūchānu past part. m. dir. sg. 470; ... rūchānu past part. m. dir. sg. 426, also (v. l.) rūchānu 527; rūchānu m. pl. 389; rūchānu m. sg. 74; rūchānu f. sg. 363; rūchānu loc. sg. 429, also rūchānu 438. Sk. rūchānu, rūchānu-, Pk. rūchānu, rūchānu-, Bloch rūchānu, rūchānu, Turner rūchānu.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "small" adj. dir. sg. m. 553; rūchānu obl. sg. 578; rūchānu n. pl. 441; rūchānu f. 338 (Jahnu-nīti, idiomatic 'urination'). Sk. rūchānu-, Pk. rūchānu- ext. in OG. -janu.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "one hundred thousand" sub. dir. 74; also rūchānu 74; Sk. rūchānu, Pk. rūchānu-, Bloch rūchānu, Turner rūchānu

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "ehame, modesty" sub. dir. sg. f. 557. Sk. rūchānu, Pk. rūchānu, MG. rūchānu, Bloch rūchānu, Turner rūchānu

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "being ashamed, becoming bashful" pres. part. m. dir. sg. 557; rūchānu abs. 474. Sk. rūchānu, Pk. rūchānu

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "sticks, attaches" but the participial form used as auxiliary means 'started'; v. pres. 3rd sg. 456. rūchānu pres. part. m. obl. pl. 525, rūchānu loc. 282, rūchānu past part. m. dir. sg. 38, 74, rūchānu m. pl. 279; rūchānu m. pl.; rūchānu f. sg. 431, rūchānu caus. pres. 3rd pl. 154; rūchānu past part. pl. 22, rūchānu abs. 341. Sk. rūchānu, Pk. rūchānu, MG. rūchānu, Bloch rūchānu, Turner rūchānu

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "a chocolate size sweet prepared out of sugar and sesamum, sometimes available in longer stick-bar-like sizes" sub. f. dir. 314. MG. rūchānu, the text also glosses this word by rūchānu, Sk. rūchānu- (Turner suggests contamination of rūchānu- with rūchānu) Pk. rūchānu f. 'stick' rūchānu (Do) m. 'an eatable'. Also of MG. rūchānu f. 'stick'. Turner rūchānu.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "a sweet preparation made of wheat and ghee" sub. f. 310. Sk. rūchānu f., Pk. rūchānu, MG. rūchānu.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "obtain, achieve" v. pres. 3rd pl. 355, rūchānu caus. pres. 3rd pl. 378. Sk. rūchānu, rūchānu-, Pk. rūchānu, rūchānu-; note that in MG., evolves of active rūchānu (OG. rūchānu) and passive rūchānu (OG. rūchānu) do not survive, but the past participle rūchānu- (rūchānu-) is employed as an active base, rūchānu 'I gain', and is further derived as a past participle rūchānu-ū n. 'found'. Bloch rūchānu, rūchānu, Turner rūchānu.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "should write" ger. m. dir. sg. 259; rūchānu past part. pl. m. 641; in the rest of the forms the base is passive: rūchānu pass. sg. 85, 423, 518, 590, rūchānu m. pl. 584; rūchānu pass-fat. 3rd sg. 17, rūchānu pass. fat. of the causal base 3rd pl. 438. lw. Sk. rūchānu; Sk. rūchānu + OG. verb inflection suffixes MG. rūchānu. Bloch rūchānu, rūchānu, Turner rūchānu.

रुच्यन्तु रुच्यन्तु "takes, accepts" v. pres. 3rd sg. 474; rūchānu 2nd sg. 466, rūchānu 3rd pl. 386; rūchānu 1st sg. 433, 460, 465, 466, 516; rūchānu 2nd sg. 431, 465, 544, rūchānu fut. 3rd sg. 382; rūchānu fut. 3rd pl. 489; rūchānu fut. 3rd sg. 382; rūchānu fut. 3rd pl. 489; rūchānu fut. 1st sg. 223, 260, 577; rūchānu precativ. 2nd pl.

- 435; *liyata* pres. part. (unenlarged) 452; *liyatan* pres. part m. dir. sg. 386; ... *lidhan* past part m. dir. sg. 446, 559. *lidhan* n. sg. 431, 416, 480, 481; *lidhā* m. pl. 386. *lidhā* f. sg. 74, 539. . *lijaim* pass. 3rd pl. 569; *lyatan* pass. pres. part 434; *levaun* ger. n. sg. 223. *levi* f. 401; *levā* obl. (inf.) 401, 447. 451, 463, 183, 558. *lei* abs. 142, 524 also 430, 460, 488, 536. *Sk. lāti* replaced by *lei* (probably under the influence of *dei*, (*Sk. dāditi*), *nei* (*nayati*)) in *Mi*: *OG. li-* The past participle *lit-* is similarly replaced by *lidhā-* on the analogy of *labhā-*: *laddhā-*, and ext. in *OG.* For the possible analogical influence of these forms see Tedesco *JAOS* 43; Turner also suggests *Sk. lābhatē*, Bloch *lonē*, Turner *linu*.
- लिहती** *lihātī* "being wiped, licked" pass pres part. f. 402; *Sk. lihātī*, *Pk. lihātī*.
- लिहावती** *lihāvātī* proper noun f. dir. sg. 473.
- लुगडा** *lugadā* "cloth garment" sub. obl. sg. n. 321. Turner connects *Sk. rugāh*, *Pk. lugga-* 'worn out' with this word for garment. Turner *lagā*.
- लुसित** *lūsita* "wiped out" past part, m. dir. sg. 74, 555 *Pk. lumchāi* 'wipes, removes, 'cleans (by wiping)'. *MG. luvhū* 'to wipe'.
- लुहनु** *luhanu* "(act of) wiping" sub. n. sg. 12. *Pk. lūhāi* 'to wipe'. cf. *OG. lusa-* 'to wipe, s. v. *lūsita*.
- लेशाल** *leshāla* "grammar school" sub. f. loc. sg. 432. *Sk. lekha-sālā*, *Pk. leha-sālā*; replaced in *MG.* by *nisāl*.
- लोचउ** *locana* "I remonstrate" v. pres. 1st. sg. 167. Used mainly by Jains, referring to notion of 'thinking'. *lv. Sk. locnte*. *Sk. loca-* + *OG.* verbal inflection
- लोह** *lohu* "flour" sub. dir. sg. m. 311. der. not known; probably connected with **lotyate*, cf. *Sk. Dūtup loṭati*; *Pk. loṭai* rolls, tumble down; cf. *MG. ālotvū* 'to roll (on ground)'.
*
- लोलत** *lohatau* "combing, refers to the action of preparing cotton for making slivers" pres. part. dir. sg. m. 213. *Sk. loṭate* 'to gather into a heap or a lump'; *Pk. lohāi* 'processing cotton as it comes off the plant, ginning'. *MG. lohāvū* is u-ed in this sense.
- लोपियउ** *lopiyau* "to abolish, to transgress" ger. n. sg. 361; *Sk. lopyāte*, *Pk. lupāi*.
- लोपनेइ** *lopanamēla* proper noun m. dir. sg. 386.
- लोही** *lohī* "blood" sub. n. 25. *Sk. lohita-* n. 'blood', *Pk. lohā-* n. Turner *lohā*.
- लोकनु** *lamkhanu* "act of throwing" sub. n. dir. sg. (second member of a compound *kesalamkhanu*, *nakkalamkhanu*, *rūhira lamkhanu*) 12. der. v. s. v. *lamkhāi*.
- लोकत** *lamkata* "name of a heaven, acc. to Jains" proper noun m. sg. 26.
- लौचपणउ** *laucapanau* "debauchery" sub. dir. sg. n. 475 *lv. Sk. lampata* + *OG.* suffix *panam*.
- लौसइ** *lūkhāi* "throws" v. pres. 3rd sg. 529; *lāmkhāi* past part. m. dir. sg. 577; *lāmkhāyā* m. pl. 21; *lāmkhatau* pres. part. m. dir. sg. 213; *lāmkhāiyā* pass. sg. 577; *līmkhī* abs. 386, 431. In *MG.* the root *līmkh-* survives dialectally (in the southern dialects), while the standard form is *nākh*. *Sk. namkātī*. Turner *BSOS* iv, pp. 575.
- लंगिउ** *lāngiū* "crossed, passed" past part. m. dir. sg. 85; *lānghi* abs. 108; *Sk. langhāyatī* *Pk. langhei*. Turner *nāchanu*.
- लौचगि** *lāuchaganu* "by length" sub. inst. sg. f. 614. *OG. lāmba* + *paṅi*; dir. s. v. *lāmba*.
- लौच** *lambī* "tall, distant" adj. m. pl. 616. *Sk. lambah* *Pk. lamba-*, Bloch *lāb*, Turner *lānu*.
- लिहाणउ** *lihāṅaṅam* "a type of sweet preparation" sub. dir. sg. n. 315. der. not known. -*ṅa-*um, apparently, are suffixes.
- लोपी** *lūpī* "having besmeared, plastered" v. 185. *Sk. lūpāti*, *Pk. lūpāi*. Bloch *lūpī*. Turner *lipnu*.
- लुंइ** *lūṅai* "robs" v. pres. 3rd sg. 526; *lūṅai* pass. 3rd sg. 518. *Sk. lūṅati*, *Pk. lūṅai*. D. *lūṅpē*, Turner *lūṅnu*.
- *
- वहिरि** *vairi* "enemy" sub. m. dir. sg. 538, abs. 457. *Sk. vāiri*, *Pk. vairi-*. *MG. vāiri*, result of *OG.* ext. or later suffixation of *vLR* (*Sk. vāiram*).
- वडिंगण** *vaiṅgaṅa* "brinjals" (*vaiṅgaṅa* proper noun m. dir. 501. *Pk. vāiṅgana* *Pk. vaiṅgaṅa*, *MG. vāṅgaṅa*. Bloch *vāgi*. *laigun bhāra*.
- वलाणइ** *valhāṅai* "expounds, explains, comm. v. pres. 3rd sg. 438; *vakhāṅam* past part. sg. n. 111; *vakhāṅāvi* abs. of the base 601. *Sk. vyākhyānam* *Pk. vakhāṅam* rivud also as a verb *vakhāṅai*, *OG. va*. Note the change in meaning in *MG.* 'praise', *vakhāṅvū* 'to praise, to app. Bloch *vakhāṅ*, Turner *bakhānu*, *bakhā*.
- वलाणु** *valhānu* "commentary, explanation" n. dir. sg. 318. *Sk. vyākhyānam*, *Pk. ṅam*, *MG. vakhāṅ* 'praise' v. s. v. v. Bloch *vakhāṅ*, Turner *bakhān*.
- वच्छ** *vaccha* "boy, child" term of endearment sub. m. voc. sg. 38; *vacchā* voc. pl. *Pk. vacchā-*.

वसुवो वसुवो name of a river f. dir. eg. 574.

वसुवो वसुवो "affectionate, kind" (second part of a compound mitravacchala) m. dir. eg. 557. lv. l'k.

वसु वसु- "with" post. part. indicating instrumentality. eg. 24, 307, 321; vaśaim pl. 380. lit. not known. MG. varṣ.

वसु वसु- "chick, bigger" adj. m. dir. eg. 427. 417; vadāi loc. eg. 161; valā obl. eg. 878. valā f. 300, 338 (idiomatic valā niti 'act of defecation'). Sk. lex. vadraś 'big'. l'k. varā-; MG. varṣo; note the absence of compensatory lengthening in OG. and MG; perhaps an early lw. from Panjabi or Sindhi. Bloch vā, Turner bāṣo.

वसु वसु- "weaving" pres. part. dir. eg. m. 213. Sk. vāpātī, vāna 'the act of weaving'. l'k. vāstī probably changed to *vāstī after Sk. vā-; vāte; l'k. vāna-; vāpāna-. MG. vāsvū Bloch vāpā, Turner vānu.

वसु वसु- "wild fruits" sub. dir. pl. n. 413. OG. vāpa+phala-, Sk. vānam, l'k. vānam OG. vāpa. Sk. phalam l'k. phalam OG. phala.

वसु वसु- "in the other forest" sub. loc. eg. n. 577. Sk. vānātāre, l'k. vānātāre OG. vānātāri.

वसु वसु- "congratulates, welcomes" v. caus. pres. 3rd sg. 547. 562; vadhiviu past part. m. dir. eg. 73, 558. Sk. vādhāpāyati l'k. vādhāve MG. vādhiviu. Panjabi, Jalandra and Sindhi cognates show absence of centralisation. Another evolute of the same in MG is vālvū 'to cut', and Panjabi, Sindhi also have vālvāna, vālvāna respectively. Bloch vālvō. vālvāyā, Turner hāyān, bāyā.

वसु वसु- "are caused to increase" v. caus. pres. 3rd pl. 185. Sk. vārdhate l'k. vādhāci OG. vādhā-+causal ura-. cf. MG. vādhārvū, also similar forms vādhārvū 'to cause to improve' vāsvārvū 'to cause to sleep' etc. See Tessitori § 141; also s. v. vādhāvai.

वसु वसु- "good" adj. m. (first part of a compound varaparava) 463; vari f. eg. 463. Sk. varam l'k. vāra.

वसु वसु- "chooses, marries" v. pres. 3rd sg. 471. Sk. varayati l'k. varai.

वसु वसु- "years" sub. n. dir. pl. (v. l. varisa) 24, varai loc. eg. 255. (v. l. varisi) 514; varasē loc. pl. (v. l. varise) 113. Note the possible dialectal variation between varasa- and varisa-. l'k. varisa- (early loan fr. Sk. vāra- to distinguish it from MIA evolute vassa- in the

sense of 'rain' cf. Sindhi vasa f. 'rain', Sinhalese vas 'rain'). Bloch varasē, Turner bāra. bāsi.

वसु वसु- "rains" v. pres. 3rd sg. 483, varasāiu caus. past part. m. dir. eg. 561; varasā- vāṣ pl. 517 l'k. varasi. (early) lv. from Sk. vāra-; see under varisa.

वसु वसु- "monsoon" sub. m. dir. eg. 85. varasāla loc. eg. 38, also varasālo loc. eg. 401; l'k. varisā+kaḥ-, varisāla-, ext. in OG.; s. v. varasē. MG. vānāsū 'monsoon' has replaced this word.

वसु वसु- "smiter, bridegroom" sub. m. dir. eg. 469. Sk. varā l'k. varā- MG. var. Bloch var, Turner bāṣ.

वसु वसु- "boon, blessing" m. dir. eg. 470 Sk. vārah l'k. varā- MG. var.

वसु वसु- "in an undesirable way, ugly way" sub. eg. 25 Probably connected with Sk. vāṣpa- v. s. v. varūm.

वसु वसु- "ugly, undesirable, hostile, not in proper form" adj. dir. eg. n. 384, also varūyaum 384, 629, also varūyaum 25, 380 Sk. vāṣpa-, l'k. vāra-; vāra- ext. in OG. Note the early loss of -i- in the open syllable. MG. varvū adj.

वसु वसु- "having described" abs 987, varvāiu past part. m. dir. eg. 519. lv. Sk. varvāyati, the causal base is taken as primitive and inflectional suffixes are attached to it.

वसु वसु- "stays, exists" v. pres. 3rd sg. 426; varitātā pres. part. m. obl. eg. 514. lv. Sk. varitāte, vāra-.

वसु वसु- "turned" past part. loc. eg. 38. lv. Sk. varitā-, vārite.

वसु वसु- "turning back" pres. part. m. dir. eg. 110. valāthi obl. 604; valyāi pass. eg. 451. Sk. valāto. l'k. valai; MG. valvū 'to turn'.

वसु वसु- "again" adv. 522, 549; again and again' valā valā 94. absolutive form of the OG. base val-; s. v. valātau.

वसु वसु- "name of a disease?" valgulirogu sub. m. dir. eg. 432. lv. Sk. valgulī, meaning is not clear.

वसु वसु- "due to, as a result of" (also vāsaitān, vāsatau and vāntān); 73, 94. OG. vāsa+itau; cf. Sk. vāsaitān, vāśit; Tessitori § 72.2. suggests to connect Ap. hūntau to OWR. -tau, -thau ablative post-position of OWG. This -itau may be connected with MI -himito, -hemitō which are ablative suffixes der. uncertain s. v. itau.

- 435; *liyata* pres. part. (unenlarged) 432; *liyatan* pres. part m dir. eg. 326, ... *lihtau* past part m dir. eg. 446, 559, *lihtau* n. eg. 431, 446, 480, 481; *lihta* m. pl. 386; *lihta* f. eg. 74, 539; . . . *lijaim* pass, 3rd pl. 569; *lijatan* pass. pres. part 431. *leva* n. ger. n. eg. 223, *levi* f. 401; *levū* obl. (inf.) 101, 147, 151, 463, 483, 558; *lei* abs. 142, 528 also lo 430, 466, 484, 536. Sk. *lāti* replaced by *lei* (probably under the influence of *dei*, (Sk. *dhāti*), *nei* (*nayati*) in M). OG *li-*. The past participle *lihta-* is similarly replaced by *lihta-* on the analogy of *labha-*: *laddha-*, and ext in OG. For the possible analogical influence of these forms see Tedesco JAOS 43; Turner also suggests *ḥk. lāhate*: Bloch *lenē*, Turner *liu*.
- लिहति** *lihati* "being wiped, heked" pass pres. part. f. 402, Sk. *lihati*, Pk. *lihai*.
- लीलावती** *līlāvati* proper noun f dir. eg. 473.
- लुगडा** *luḡḡā* "cloth garment" sub. obl. eg. n 321 Turner connects *ḥk. ruḡḡāb*, Pk. *lugga-* 'worn out' with this word for garment. Turner *luḡā*.
- लुपित** *luḡita* "wiped out" past part, m. dir. eg. 74. 555 Pk. *lumchai* 'wipes, removes,' cleans (by wiping). MG. *luḡvū* 'to wipe'.
- लुपु** *luḡānu* "(not of) wiping" sub. n. eg. 12. Pk. *lihai* 'to wipe'. cf. OG. *lusa-* to wipe, s. v. *lisu*.
- लेशाल** *leśāla* "grammar school" sub. f. loc. eg. 432 Sk. *leḥa-śālā*, Pk. *leḥa sālā*, replaced in MG by *nisāl*.
- लोचउ** *locana* "I remonstrate" v pres. 1st. eg. 167. Used mainly by Jains, referring to notion of 'thinking'. lw. Sk. *locate*, Sk. *loca* → OG. verbal inflection.
- लोह** *loḡa* "flour" sub. dir. eg. m 311 der not known; probably connected with **lotyate*, cf. Sk. *Dhātup. loḡati*; Pk. *lottai* rolls, tumble down, cf. MG. *lotvū* 'to roll (on ground)'.
- लोलतउ** *lohatau* "combing, refers to the action of preparing cotton for making 'slivers'" pres. part. dir. eg. m. 213. *ḥk. lo-tato* 'to gather into a heap or a lump'; Pk. *lohāi* 'processing cotton as it comes off the plant, ginning'. MG. *lohivū* is used in this sense.
- लोपियउ** *loḡiānu* "to abolish, to transgress" ger. n. eg. 361; *ḥk. lupyāte*, Pk. *luḡḡai*.
- लोषनेदु** *loḡhanāmlu* proper noun m. dir. eg. 386.
- लोही** *lohi* "blood" sub. n. 25. Sk. *lōhita-* n. 'blood', Pk. *lohā-* n. Turner *lohu*.
- लोकनु** *loḡānu* "act of throwing" sub. n. dir. eg. (second member of a compound *kesalamkhanu*, *naklamkhanu*, *ruḡhira loḡānu*) 12. der. v. s. v. *lāmkhai*.
- लोक** *loḡāla* "name of a heaven, acc. to Jains" proper noun m. eg. 26.
- लोकवणउ** *loḡapajanaḡvā* "debauchery" sub. dir. eg. n 475 lw. Sk. *loḡapata* + OG. suffix *paḡam*.
- लोक** *loḡkhai* "throws" v. pres. 3rd. eg. 529; *loḡkhiu* past part. m. dir. eg. 577; *loḡkhiyā* n. pl. 21; *loḡkhiatan* pres. part. m. dir. eg. 213; *loḡkhiyai* pass. eg. 577; *loḡkhi* abs. 326, 431. In MG. the root *loḡkh-* survives dialectally (in the southern dialects), while the standard form is *nākh*. Sk. *namkati*. Turner BSOS iv, pp. 533.
- लोकिय** *loḡyānu* "crossed, passed" past part. n. dir. eg. 85; *loḡyānu* abs. 108; Sk. *loḡyānu* Pk. *loḡyānu*. Turner *nākhānu*.
- लोकिय** *loḡyānu* "by length" sub. inst. eg. 614, OG. *lāmba* + *paḡi*; dir. s. v. *lāmbā*.
- लोका** *loḡkā* "tall, distant" adj. m. pl. 616. *lambā* Pk. *lamba-*, Bloch 12b. Turner *lāmbā*.
- लोकियउ** *loḡyānu* "a type of sweet preparation" sub. dir. eg. n. 315, der. not known -*ya-*um, apparently, are suffixes.
- लोपि** *loḡpi* "having besmared, plastered" 185. Sk. *loḡpāti*, Pk. *loḡpāi*. Bloch 12b. Turner *loḡpi*.
- लुपु** *loḡpū* "robs" v. pres. 3rd. eg. 526; *loḡpū* pass. 3rd. eg. 518, Sk. *loḡpāti*, Pk. *loḡpāti*. 12b. Turner *loḡpū*.
- *
- वहिरि** *vairi* "enemy" sub. m. dir. eg. 538, 547. Sk. *vairi*, Pk. *vairi-*. MG. *vEr*, result of OG. ext. or later suffixation of *vEr* (Sk. *vairam*).
- वैगण** *vaiḡḡāna* "brinjals" (*vaiḡḡāna* pres. sub. pl. 501, Pa. *vaiḡḡāna* Pk. *vaiḡḡāna*, MG. *vEḡḡāna*. Bloch *vāḡi*, *baigun bhira*).
- वैगण** *vaiḡḡāni* "expounds, explains, con" v. pres. 3rd. eg. 438; *vaiḡḡāni* past part. eg. n. 111; *vaiḡḡāni* abs. of the base 601. Sk. *vyākhyānam* Pk. *vaiḡḡāni* rived also as a verb *vaiḡḡāni*, OG. v. Note the change in meaning in MG. 'praise', *vaiḡḡāni* 'to praise, to speak', Bloch *vaiḡḡāni*, Turner *baiḡḡāni*, *baiḡḡāni*.
- वैगण** *vaiḡḡāni* "commentary, explanation" n. dir. eg. 318. Sk. *vyākhyānam*, Pk. *vaiḡḡāni*, MG. *vaiḡḡāni* 'praise'. v. s. v. Bloch *vaiḡḡāni*, Turner *baiḡḡāni*.
- वैच** *vaiḡḡā* "boy, child" term of er sub. m. voc. eg. 38; *vaiḡḡā* voc. Pk. *vaiḡḡā-*.

- 433; *liyata* pres. part. (unenlarged) 452; *liyatan* pres. part. m. dir. eg. 386;... *lāhau* past part m. dir. eg. 416. 359; *lāhau* n. eg. 431, 446, 480, 481; *lāhū* m. pl. 386; *lāhī* f. eg. 74, 539, . . . *lijāim* pass, 3rd pl. 569; *lijatan* pass pres. part 434. *levaṇam* ger. n. eg. 223; *levi* f. 401; *levā* obl. (inf.) 101, 417, 451, 463, 483, 558; *lei* abs 142, 528 also *le* 130, 166, 488, 536 *Sk. lāti* replaced by *lei* (probably under the influence of *dei*, (*Sk. dāditi*), *nei* (*nayati*) in M); OG. *li-*. The past participle *lit-* is similarly replaced by *liddha-* on the analogy of *laddha-* *laddha-*, and ext. in OG. For the possible analogical influence of these forms see Tedesco JAOS 43; Turner also suggests *Sk. lāhate*; Bloch *leñē*; Turner *liu*.
- लिहती līhātī* "being wiped, licked" pass pres. part. f 402; *Sk. līhātī*, *l'k. līlātī*.
- लीलावती līlāvātī* proper noun f. dir. eg. 473.
- लुग्गा luggā* "cloth garment" sub. obl. eg. n. 321. Turner connects *Sk. rugāṣā*, *l'k. lugga-* 'worn out' with this word for garment Turner *lūgā*.
- लुसित lūsita* "wiped out" past part, m. dir. eg. 74, 555. *l'k. lurchat* 'wipes, removes,' cleans (by wiping) MG. *luchvū* 'to wipe'.
- लुनु luhānu* "(act of) wiping" sub. n. eg. 12. *l'k. līhātī* 'to wipe'. cf. OG. *lūsā-* to wipe, s. v. *lūsā*.
- लयाल lēwāla* "grammar school" sub. f. loc. eg. 432 *Sk. lekha-sālā*, *l'k. leha-sālā*; replaced in MG by *nisāl*.
- लोचउँ locauṁ* "I remonstrate" v. pres. 1st. eg. 167. Used mainly by Jains, referring to notion of 'thinking'. *lw. Sk. locate*, *Sk. loca-* → OG. verbal inflection
- लोटु loṭu* "flour" sub. dir. eg. m. 311. der. not known; probably connected with **lotyate*, cf. *Sk. Dhātup. lotati*; *l'k. loṭṭai* rolls, tumble down; cf. MG. *alotvū* 'to roll (on ground)'.
लौहउत lōhātatau "combing, refers to the action of preparing cotton for making silvers" pres. part. dir. eg. m. 213. *Sk. loṣṭato* 'to gather into a heap or a lump'; *l'k. lohātī* 'processing cotton as it comes off the plant, ginning'. MG. *lohre* is used in this sense.
- लोचउँ लोचउँ lōcāuṁ* "to abolish, to transgress" ger. n. eg. 361; *Sk. lupyāte*, *l'k. lupāi*.
- लोचउँ लोचउँ lōcāuṁ* proper noun m. dir. eg. 386.
- लोही lohī* "blood" sub. n. 25. *Sk. lōhita-* n. 'blood', *l'k. lohā-* n. Turner *lohāt*.
- लोकनु lamkhanu* "act of throwing" sub. n. dir. eg. (second member of a compound *kesalamkhanu*, *nakalamkhanu*, *ruthira lamkhanu*) 12. der. v. s. v. *lāmkhāi*.
- लोक लोका* "name of a heaven, acc. to Jains" proper noun m. eg. 26.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "debauchery" sub. dir. eg. n. 17; *lw. Sk. lāmpata* + OG. suffix *paṇam*.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "throws" v. pres. 3rd eg. 529; *lāmkhū* past part. m. dir. eg. 577; *lāmkhīyā* m. pl. 21; *lāmkhātan* pres. part. m. dir. eg. 213; *lāmkhīyā* pass. eg. 577; *lāmkhī* abs. 386, 131. In MG. the root *lāmkh-* survives dialectally (in the southern dialects), while the standard form is *nākh. Sk. namkṣati*. Turner ISOS iv, pp. 533.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "crossed, passed" past part. m. dir. eg. 85; *lānglī* abs. 168; *Sk. langhāyati*, *l'k. langhāi*. Turner *nākhānu*.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "by length" sub. inst. eg. n. 614. OG. *lāmba* + *paṇi*; dir. s. v. *lāmbā*.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "tall, distant" adj. m. pl. 616. *Sk. lambab* *l'k. lamba-*, Bloch *lāb*, Turner *lamu*.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "a type of sweet preparation" sub. dir. eg. n. 315. der. not known. *-ta-um*, apparently, are suffixes.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "having besmeared, plastered" abs. 185. *Sk. lūmpāti*, *l'k. lūmpāi*. Bloch *lūpñē*, Turner *lūpna*.
- लौचउँ लौचउँ lōcāuṁ* "robs" v. pres. 3rd eg. 526; *lūmtīyāi* pass. 3rd eg. 518. *Sk. lūntati*, *l'k. lūntāi*. Bloch *lūpñē*, Turner *lutna*.
- *
- वदरि vāri* "enemy" sub. m. dir. eg. 538, also pl. 457. *Sk. vāri*, *l'k. vāri-*. MG. *vāri*, is the result of OG. ext. or later suffixation of *-i* to *vāri* (*Sk. vāiran*).
- वदरि वदरि vāri* "brinjals" (*vāimagaṇa* *pramukha*) sub. pl. 501. *l'a. vāimagaṇa* *l'k. vāimagaṇa-*, *vāimagaṇa-*, MG. *vāigaṇ*. Bloch *vāgi*, Turner *baigun bhārā*.
- वदरि वदरि vāri* "expounds, explains, comments" v. pres. 3rd eg. 438; *vakkhānam* past part. dir. eg. n. 111; *vakkhānāvi* abs. of the causal base G01. *Sk. vyākhyānam* *l'k. vakkhānam*, derived also as a verb *vakkhānāi*, OG. *vakkhāns-*. Note the change in meaning in MG. *vakkhān* 'praise', *vakkhāvū* 'to praise, to appreciate'. Bloch *vakkhān*, Turner *bakkhānu*, *bakkhān*.
- वदरि वदरि vāri* "commentary, explanation" sub. n. dir. eg. 318. *Sk. vyākhyānam*, *l'k. vakkhānam*, MG. *vakkhān* 'praise'. v. s. v. *vakkhān*. Bloch *vakkhān*, Turner *bakkhān*.
- वदरि वदरि vāri* "boy, child" term of end. sub. m. voc. eg. 38; *vaccānu* voc. *l'k. vacchā-*.

बलुण *baluṅga* name of a river f. dir. sg. 574.

बलुचलु *baluchalu* "affectionate, kind" (second part of a compound *mitra-baluchalu*) m. dir. sg. 557. lw. l'k.

बलुद *baluda* "with" post. part. indicating instrumentality. eg. 94. 507, 521; valaum pl. 386. Ety. not known. MG. varṇe.

बलुद *baluda* "elder, bigger" adj. m. dir. eg. 427, 447; valai inst. eg. 461; vada obl. eg. 578, vali f. 300, 338 (idiomatic *vali niti* 'act of defalcation'). Sk. l'x. vadrah 'big'. l'k. valin-; MG. varo; note the absence of compensatory lengthening in OG and MG; perhaps an early lw. from Panjabi or Sindhi. Bloch var, Turner baro.

बलुतउ *balutau* "weaving" pres. part. dir. eg. m. 213. Sk. vāyati, vāna 'the act of weaving'. l'a. vināti, probably changed to *vunāti after Sk. vā-; vyāte; l'k. viṇaṇa-, vaṇaṇa-. MG. vaṇvū. Bloch viṇṇe, Turner bunnu.

बलुतलु *balutala* "wild fruits" sub. dir. pl. n. 433. OG. vaṇa+phala-, Sk. vanam, l'k. vanam OG. vaṇa. Sk. phalam l'k. phalam OG. phala.

बलुतलु *balutala* "in the other forest" sub. loc. eg. n. 557. Sk. vanāntāre. l'k. vanāntāre OG. vaṇāntāri.

बलुतलु *balutala* "congratulates, welcome" v. caus. pres. 3rd eg. 547. 562; vadhāva post. part. m. dir. eg. 73, 538. Sk. vadhāpayati l'k. vadhāvei MG. vadhāvū. Panjabi, Lahanda and Sindhi cognates show absence of cerebralisation. Another evolute of the same in MG. is vadhvū 'to cut', and Panjabi, Sindhi also have vadhhaṅ, vadhāṇu respectively. Bloch vadhāne, vadhāyā, Turner barnu, harai.

बलुतलु *balutala* "are caused to increase" v. caus. pass. 3rd pl. 483. Sk. vadhāte l'k. vadhāi OG. vadhā+causal ām-. cf. MG. vadhārvū, also similar forms sudhārvū 'to cause to improve' suārvū 'to cause to sleep' etc. See Tessitori § 141; also s. v. vadhāvai.

बलु *balu* "good" adj. m. (first part of a compound *varapuruṣa*) 463; vari f. eg. 463. Sk. varam l'k. vara.

बलु *balu* "chooses, marries" v. pres. 3rd eg. 471. Sk. varayati l'k. vari.

बलु *balu* "years" sub. n. dir. pl. (v. l. varisa) 94; varasi loc. eg. 255, (v. l. varisi) 514; varase inst. pl. (v. l. varise) 113. Note the possible dialectal variation between varasa- and varisa-. l'k. varisa- (early loan fr. Sk. varṣa- which evolves varsa- in the

sense of 'rain' cf. Sindhu va-a f. 'rain', Sinhalese vas 'rain'.). Bloch varasāṇe, Turner barsa, bāsā.

बलु *balu* "rains" v. pres. 3rd eg. 483, varasavin caus. past part. m. dir. eg. 561; varasāvijā pl. 517. l'k. varisa-, (early lw. from Sk. varṣa-) see under varisa.

बलुतलु *balutala* "monsoon" sub. m. dir. eg. 85. varasālai loc. eg. 58. also varasāle loc. eg. 401, l'k. varisā+kala-, varasāla-, ext. in OG.; s. v. varasa. MG. eOmāsū 'monsoon' has replaced this word

बलु *balu* "sutor, bridegroom" sub. m. dir. eg. 469. Sk. varāḥ l'k. vara- MG. var. Bloch var, Turner barā.

बलु *balu* "boon, blessing" m. dir. eg. 470. Sk. vārah l'k. vara- MG. var.

बलु *balu* "in an undesirable way, ugly way" sub. sg. 25. Probably connected with Sk. virūpa- v. s. v. varūam

बलु *balu* "ugly, undesirable, hostile, not in proper form" adj. dir. eg. n. 384, also varūyam 384, 629, also varūyam 23, 389. Sk. virūpa-, l'k. virūsa-, virūsa- ext. in OG. Note the early loss of -i- in the open syllable MG. varvū adj.

बलु *balu* "having described" abs 987, varpavia post. part. m. dir. eg. 619. lw. Sk. varṣayati, the causal base is taken as primitive and inflectional suffixes are attached to it.

बलु *balu* "stays, exists" v. pres. 3rd eg. 426; varitātā pres. part. m. obl. eg. 514. lw. Sk. varittate, varta-.

बलु *balu* "turned" past part. loc. eg. 38. lw. Sk. varitā-, vartite.

बलुतलु *balutala* "turning back" pres. part. m. dir. eg. 110; valatā obl. 601; valiyai pass. eg. 451. Sk. valate, l'k. valsi; MG. vaṇvū 'to turn'.

बलु *balu* "again" adv. 522, 549; again and again' vah vah 94. abeolutive form of the OG. base val-; s. v. valatau.

बलु *balu* "name of a disease?" valgulitrogu sub. m. dir. eg. 432. lw. Sk. valguli, meaning is not clear.

बलुतलु *balutala* "due to, as a result of" (also vasaitau, vasaitau and vaistau); 7. vaia+ita; cf. Sk. va § 72.2. suggests to e -tan, -than al'. This-itan may -hōite
nimto.
der.

- बट** *batu* proper noun in dir sg 351
बसा *vasā* "green-c. fat, lard" sub f (in the com- pound *vasāli*) 459 Sk *vasa*, Pk *vasā*.
बसियाँ *vasiyān* "settled, stayed" past part. n dir. pl. 379; *vasī* f dir sg 353 Sk *vasati*, Pk. *va-sai*, Turner *bassu*.
बहतउ *bahatau* "carrying" pres part m dir. sg. 386, *bahata* obl pl 91, *bahata* cons. pres. part obl. sg 463, Sk. *vāhati* Pk *vahai* Bloch *vāhāṇē*, Turner *bahannu*.
बहिलउ *bahilau* "early" adj adv dir sg. n. 571, 587; Pk. *vahilla-* ext. in OG, Also noted as *vihalau* m, dir sg 490, also *vahilau* (v. l. *vihalau*) 545; may be connected with the root *vah-* 'to flow'. Bloch *vahila*.
बहू *vahū* "wife" sub f. dir. sg 360 Sk. *vadhūh*, Pkt *vahū* Bloch *vahū*, Turner *vahu*.
बादउ *vāu* "blowd (wind)" past part m dir sg 314. Sk *vāti* Pk. *vai*.
बादिणि *vanu* "reading" sub n loc. sg. 117. Sk. *vācane* Pk *vāyane* OG. *vānu*.
बाचई *vacum* "reads" v. pres 3rd pl 614, *vācijiu* prec. 3rd sg 353. lw. Sk. *vācayanti*.
बाछरु *vācharū* "calves" sub. dir. pl. 589. Sk. *vācha-rūpa*, Pk *vaecha-rūva*, Pk. *vaccia*. Bloch *vāsrū*, Turner *bachero*.
बाच्छरु *vācchalu* "donation, gift" sub. dir. sg. n. 381; Sk. *vātsalyam* Pk. *vaccalla-* 'affection, love' Note the change in meaning, and *sanskritisation* of the OG. word.
बादर *vādai* "in the yard, enclosure" sub. m. loc. sg. 25. Sk. *vatah*, Pk. *vaja-* ext. in OG, *vāḍau*, MG. *vāḍo*. Bloch *vāḍā*, Turner *bār*.
बादि *vādi* "fence" sub. f. dir. sg. 481. Sk. *vāṭī* f. (cf. Sk. *vāṭah* m.; v. s. v. *vāḍai*), Pk. *vāḍi*, vāḍi. MG. *vār* f. Bloch *vāḍā*, Turner *bār*.
बाणउयू *vāṇautu* "assistant in a bania's firm, usually the accountant)" sub. m. dir. sg. 381; *vāṇautri* inst. sg. 518. Sk. *vāṇija-patrab*, Pk. *vāṇiuta-*, note the retention of *-tr-* in OG.; MG. *vānotar*.
बाणवइ *vāṇavai* "describes" v. pres. 3rd sg. 173. cf. Sk. *vāṇayati*, Pk. *vāṇvei*; *vāṇavai*; the causal base is used as primitive in OG; note the OG. *-ṇ-* which cannot be explained, and the validity of this etymology becomes questionable. cf. however Marathi *vāṇ*, *vāṇ* 'colour', (Ga.) *vāṇ* 'colour'. Marathi *vāṇavāṇ*, *vāṇiṇṇē* 'to praise'; Bloch has tried to connect the two verbs M. *vāṇavāṇē* 'to describe' and H. (G.) 'to be ready', but n-
 cannot be explained. The verb *vāṇāṭi* 'likes,' and some other roots also may *vāṇ*, *vāṇavāṇē*, *vāṇiṇṇē*, Tur-
बाणारसी *vāṇārasi* name of a
बाणियउ *vāṇiyau* "bania, shop" sg. 559, *vāṇiyā* obl. sg. 12 Pk. *vāṇia-* ext. in OG; *vāṇi* *vāṇiyau*. Bloch *vāṇi*, Turner
बात *vāta* "talk, news" sub. f. obl. sg. 518. Sk. *vārta*, Pk. v-
बायउ *vāyau* "increased" past 91 Sk. *vāḍdhā-* Pk. *vādḍha-* *vāḍdhū* (archaic). Bloch *vāḍdhū*
बायइ *vāyari* "uses, employs" 211. lw. Sk. *vāyāra-* + OG. ver-
बायई *vāyaim* "strikes (the bell), go" 3rd pl. 376; the causal is used base, Sk. *vāḍḍiyati*, Pk. *vāyāi*.
बार *vāra* "turn, occasion" sub. f. dir. *vārah* m., Pk. *vāra-* m. Note that other IA languages *vāra* is f.; Pk. Sk. *vela* f, Pk. *velā* f, MG. *vel* f. abso- lute meaning and usage). Bloch *vā-* *lār*.
बाउ *vāraum* "prevent, forbid" v. pres. 378. *vāri* abs. 520. Sk. *vārāyati*, Pk. Turner *barnu*.
बाववार *vāvavāra* "again and again" adv. 33 *vāra* reduplicated; for der. s. v. *vāra*.
बालउ *vālau* "name of a wire-like worm" sub. sg. n. 21. Sk. lex. *vālakah* m. 'bracket' connected with *vāla-* 'hair', made of hair. MG. *vālo* 'wire', *vāḷi* f. 'nose-ring'— cf. Sk. *vālayati* 'turns round', MG. *vāḷṭṭu*, sweep, to turn round'. Bloch *vāḷo*, Turner *bā-*
बावइ *vāvai* "plants, sows" v. pres. 3rd sg. 481 *vāvau* imp. 3rd sg. 481; *vāvivaum* ger. dir. sg. n. 280; *vāvātā* pres. part. m. dir. pl. 480; *vāv-* past part. f. dir. sg. 466. Sk. *vāpayati*, Pk. *vāvei*, Turner *abānu*.
बावि *vāvi* "in the well" sub. f. loc. sg. 74 Sk. *vāpī* f, Pk. *vāvī* f, MG. *vāv*.
बावइ *vāvai* "by residence" sub. m. inst. (loc.?) sg. 455. Sk. *vāsa-* Pk. *vāsa-*, OG. ext. *vāssu*. MG. *vāso*, Bloch *vās*.
बासती *vāsatī* proper noun f. dir. sg. 487.
बासुयू *vāsyū*

स्य सैन्ये "aid, army" sub. f. dir. sg. 431. cf. MG. (dialectal) var f. 'army', also there शैवे 'to run to help', cf. vyakarati. 1k participial form vāharia- 'called out, challenged', cf. Sindhi vāhara 'guard' Panjabi vāhara 'protection'. Bloch vāraṅṅ

स्य सैवे "in the rivulet, stream" sub. m. loc. sg. 28. Ety. not clear; Dkt. gives three words for rivulets: vāhola, vāhali and vārao. cf. MG. 41.60 OG. vāhala is probably connected with Sk. vāh- 'to flow'. Bloch vālaḥ

स्य सैवे "shouts, calls out" v. pres. 3rd sg. 474. Ety. not clear; (vrb), the text may be corrupt and correct reading may be vāharaḥ 'shouts, announcements'.

स्य सैवे "in the conveyance i. e. cart" sub. n. loc. sg. 320. Sk. vāhane, 1k, vāhane OG. vāhina.

स्य सैवे "having changed, assuming different forms" abs. 474. Sk. vikarvāna- 'ability to assume different forms'; lw, Sk.

स्य सैवे "wiped off, removed, falsified" past part. v. dir. sg. 515. lw. Sk. vighatati. vighat- + OG. verbal suffixes.

स्य सैवे "proper noun f. dir. sg. 573.

स्य सैवे "moves" pres. 3rd sg. 526. lw. Sk. vīcarati.

स्य सैवे "between, in the middle, amidst" adv. 222. 1k, vica- n. middle. Turner suggests Sk. vīcaḥ, ara- vyaḥ- 'wide space'; perhaps *vri-tya- may explain 1k, vica. Short -i- in the initial syllable may be due to its usage as a postposition; MG. has vac- (in formations like vacā, vacā, vaco; vaco has duplication -- for emphasis). Turner bio.

स्य सैवे "proper noun m. dir. sg. 525.

स्य सैवे "proper noun m. dir. sg. 426.

स्य सैवे "name of a town f. dir. sg. 425.

स्य सैवे "rebukes" v. pres. 3rd sg. (v. l. vāhāi) 38; vāhāim (v. l. vāhāim) pl. 578. MG. vāhivā 'to rebuke'. Der. not known.

स्य सैवे "destroyed, fled" past part. m. dir. sg. 483. Sk. vīna-; ja- 1k, vīnattha-; note the absence of compensatory lengthening.

स्य सैवे "to destroy" cans. inf. of purpose 111. Sk. vīnāyati, 1k, vīnāci.

स्य सैवे "proper noun, m. dir. sg. 480.

स्य सैवे "rivals, haters" sub. obl. pl. m. 483. lw. Sk. vīdvēcin, vīdvēci + OG. gender suffix -n, or -m.

स्य सैवे "according to the custom" adv. 325, note usage of saum; OG. vidhi + saum, vāhi-lw. Sk.; saum is derived from Sk. sahitaṃ, see under saum.

स्य सैवे "in modesty" sub. m. loc. sg. 369. lw. Sk. vinaya-.

स्य सैवे "troubled" past part. m. dir. pl. 430. Sk. natati, *vinatayati, 1k, vipadei; Note that -n- when followed by a flapped sound in the second syllable (in this case, {r}) is retained, cf. MG; kanarvū to give trouble, harass Sk. ku-nat-).

स्य सैवे "having checked, known" abs. 55. Sk. vijāna- 1k, vināna-; OG. vināna- + verbal inflection, the -i- in the initial syllable may be the influence of Sk. spelling on the scribe.

स्य सैवे "destruction" sub. m. dir. sg. lw. Sk. vināsa-.

स्य सैवे "modest, instructed" adj. dir. sg. m. 163; lw. Sk. vinayab.

स्य सैवे "name of a town dir. sg. f. 464.

स्य सैवे "should be cheated" ger. dir. sg. m. 153. lw. Sk. vipratārayati; vipratār- + OG. verbal inflection.

स्य सैवे "thinks" v. pres. 3rd sg. 590. Sk. vimarati, an early lw. in 1k, vimarisi; v. s. v. vimāsi.

स्य सैवे "proper noun m. dir. sg. 110.

स्य सैवे "proper noun f. dir. sg. 516.

स्य सैवे "thinks" v. pres. 3rd sg. 590; Sk. vimarati 1k, *vimaśai, MG. vimaśap f. 'problem' (Sk. vimarisā- 1k, *vimaśaṅā f.), v. s. v. vimarasi.

स्य सैवे "hurt, violated" past part. pl. 338; lw. Sk. vi-radh- + OG. verbal inflection, past part. virādhi.

स्य सैवे "in oblivion, disappearance" sub. loc. sg. 471. lw. Sk. vilāna-.

स्य सैवे "lamenting, bemoaning" pres. part. m. dir. sg. 491. lw. Sk. vilāpate, vilāp + OG. inflectional suffixes.

स्य सैवे "enjoy" v. fut. 1st pl. 455. lw. Sk. vilāsi; Sk. vilas- + fut. 1st pers. pl. suffixes siyām (< Sk. -gyāmah, this is a dialectal form in OG., probably Marwari, also notice the -i- in vilas- > vilā- which indicates Marwari influence); the loss of -e of the stem is due to the inflection suffix beginning with e-.

स्य सैवे "being observed" pass. pres. part. m. dir. sg. 316; lw. Sk. vilokayati, viloka

- + OG, passive, present participial and m. suffixes: -i-ā-ū.
- विचरति** *vicarati* "gives up" v. pres. 3rd sg. 513, lw, Sk. *vicarjyati*, *vicarja-*.
- विचारा** *vicāra* proper noun m, dir, eg. 467.
- विचारा** *vicāra* "a type of measure, sometimes used to measure ground and fields also," sub. f. 441. That which is a full measure is referred to as *vis vasā* in MG, and half-full is referred to as *das vasā*, der, not known.
- विषय** *viśaya* "with reference to" post pos. 73, 369, stereotyped loc; Sk. *viśaya-viśaye*, OG, *viśai*; the -*y*- is Sanskrit influence on the scribe, MG, *viśe*.
- विषयस्य** *viśayasya* "belonging to the subject" sub. dir pl, m. 326, lw, Sk. *viśaya-*, OG, *viśai* ext. *viśaiu*, the extended stem is declined for pl. *viśaiya*.
- विषयासक्त** *viśayāsakta* "attached to carnal pleasures" past part, m, dir, eg. (v. l. *viśayāsaktu*) 516, lw, Sk. *viśayāsakta-*.
- विषाहना** *viśāhana* "material, apparatus" sub. n, dir, eg. 386, Sk. **viśādhana*-Pk. **viśāhana*-OG, ext. *viśāhanaum* MG, *vasānū* "materials (in the preparation of sweets)".
- विषम** *viśama* "poison" sub. n, dir eg. 426 Sk. *viśam*; Pk. *viśa-n*, Turner list.
- विमोचिष्यन्** *vimocishyann* "act of purifying" sub. dir, eg. n. 41, Sk. *viśuddhi*-Pk. *viśuddhi*-OG, *viśuddhi-*, -*karann* Sk. *karannam*, Pk. *karannam*.
- विस्तारि** *viśtāri* "in extenso, by expanding" sub. inf. eg. m. 424, 601, lw, Sk. *viśtāra*+OG, root declension.
- विस्तारि** *viśtāri* "eternal" past part, f. 36, lw, Sk. v. s. v. *viśtāriya*.
- विस्तारि** *viśtāri* "expanded" past part, of the causal base m, dir eg. 514, *viśtāri* n. 74, lw, Sk. *viśtāravati*, *viśtāra*+OG, past part, suffix -*ia*.
- विशङ्कति** *viśaṅkati* "attacks" v. pres. 3rd sg. 451, lw, Sk. *viśaṅkati*, MG, *viśaṅke* "attacks" is derived from the same word Sk. *viśaṅkati*, Pk. *viśaṅkati*.
- विश्रम** *viśrama* "abandonment" sub. m, dir, eg. 402, (v. l. *viśramya*) 110, la, Sk. *viśramya-*.
- विश्रम** *viśrama* "goes out (to collect alms-food)" v. pres. 3rd sg. 471, *viśramam* pl. 94; *viśrami* past part, m, dir, eg. 40, also *viśramiya* (v. l. *viśram*) 71; *viśrami* inf. 112; *viśrami* (v. l. *viśrami*) n. 40, pres. 3rd sg. 516; *viśrami* past part, m, dir, eg. 112, *viśrami* abs. 564 Sk. *viśramati*, Pk. *viśrami*.
- विह्वल्य** *vihvalya* "quickly, early" v. s. v. *vihvalya*, *vihvalya*.
- विह्वल्य** *vihvalya* "laugh, jest" v. pres. 3rd pl. 589, *vihvalya* past part, n, pl. 589, Sk. *vihvalya*, Pk. *vihvali*.
- विक्रिष्यति** *vikriśyati* "to sell" ger. dir, eg. 1500, Sk. *vikriśite*, replaced by Pk. *vikriśati*, cf. Sk. *vikraya*-MG. (dialects) *vekvū*, Bloch *vikri*.
- विक्रिष्यति** *vikriśyati* "to sell" inf. (obl.) 548; *vikri* loc. eg. (of past part, *vikri*) 477, Sk. *vikriśite*, Pk. *vikri*, MG. (dialects) *vekvū*; also v. s. v. *vikriśyaum*, *vevai*, Bloch *vikri*, Turner *biknu*.
- विज** *viśa* "lightening" sub. f, dir, eg. 20, 514, Sk. *viśyut*, f. Pk. *viśi* f. Bloch *viś*, Turner *bijali*.
- विजायते** *viśāyate* "act of fanning" sub. dir 12, Sk. *viśyate*, Pk. **viśi*, causal base *viśāyate*. The nasal in MG. *viśāyate* 'fan' and Sindhi *viśāyate* cannot be explained; see under *vimjai* Bloch *viśnā*.
- विनय** *viśaya* "requests" v. pres. 3rd sg. 426; *viśayati* past part, m, dir, eg. 112; *viśayati* loc. eg. 188, Sk. *viśāyati*, Pk. *viśāyati*, *viśāyati*, Turner, *binti*.
- वीर** *viśa* proper noun m, dir, eg. 110, 322.
- वीरस्य** *viśasya* proper noun m, dir, eg. 521.
- विंशति** *viśanti* "twenty" adj. num. 61, Sk. -*viśanti* in compounds, Pk. *viśam* MG, *viś*, Bloch *viś*, Turner list.
- विंशति** *viśanti* "twenty" adj. num. in the context *viśam* *navottara* "twenty-nine" 74; also *viśam* in the context *ekū* *śu* *viśam* "one hundred twenty" 74, also *viśam* *śu* "one hundred twenty" 613; Sk. *viśanti* f. Pk. *viśai*; final nasal cannot be explained, cf. AP. *viśam*.
- विंशति** *viśanti* "on the twentieth" ord. loc. 27, 355, OG, *viśa*+*man*; v. s. v. *viśa*.
- विस्मरति** *viśmarati* "forgotten" past part, m 604, Sk. *viśmarati* Pk. *viśmarati*, *viśmarati*-OG, *viśmariti*, Bloch *viśmar*, Turner *Liśama*.
- विस्मरति** *viśmarati* "trusting places" sub. dir, pl. 117, *viśmarati* loc. eg. 117, *viśmarati* loc. pl. 117, Sk. *viśmarati* Pk. *viśmarati*-OG, ext. *viśmarati*, Bloch *viśmar*, Turner list.
- विस्मरति** *viśmarati* "imitation of hollow sound made by the sinking of an object is

- + OG, passive. present participial and m. suffixes: -i-tā-a.
- विपज्ज** *viṣajai* "gives up" v. pres. 3rd sg. 513. lw. Sk. *viṣarjayati*, *viṣarjā-*.
- विशद** *viśada* proper noun m. dir. eg. 463.
- विशा** *viśā* "a type of measure, sometimes used to measure ground and fields also," sub. f. 441. That which is a full measure is referred to as *viśa* in MG, and half-full is referred to as *daśa viśā*; der. not known.
- विषद** *viśad* "with reference to, regarding to" past pos. 73, 369; stereotyped loc.; Sk. *viśaya-viśaye*, OG, *viśai*; the -*ya-* is Sanskrit influence on the scribe, MG, *viśo*.
- विषय्या** *viśayyā* "belonging to the subject" sub. dir. pl. m. 326. lw. Sk. *viśaya-*, OG, *viśai* ext. -*viśai*, the extended stem is declined for pl. *viśaiyā*.
- विषय्यासक्त** *viśayyāsaktu* "attached to carnal pleasures" past part. m. dir. eg. (v. l. *viśayyāsaktu*) 516. lw. Sk. *viśayyāsakta-*.
- विमहाण्ड** *viśāhaṇḍa* "material, apparatus" sub. n. dir. eg. 386. Sk. **viśāhāna*-Pk. **viśāhāna*-OG, ext. *viśāhāna* MG, *vaśānū* 'materials (in the preparation of sweets)'.
विषु *viśu* "poison" sub. n. dir. eg. 426 Sk. *viśam*; Pk. *viśa*-n. Turner bis2.
- विमोक्षकरण** *viśodhikaraṇa* "act of purifying" sub. dir. eg. n. 41. Sk. *viśuddhi*-Pk. *viśuddhi*-OG, *viśodhi*-; -*kaṇa*: Sk. *karaṇam*, Pk. *karaṇam*.
- विस्तारि** *viśtāri* "in extenso, by expanding" sub. inf. eg. m. 424, 601. lw. Sk. *viśtāra*+OG. noun declension.
- विस्तारी** *viśtāri* "spread" past part. f. 36. lw. Sk. v. s. v. *viśtāri*.
- विस्तारिञ्च** *viśtāriñca* "expanded" past part. of the causal base m. dir. eg. 514. *viśtāri* also. 74. lw. Sk. *viśtārayati*, *viśtāra*+OG. past part. suffix -*ñca*.
- विष्फुर** *viśphura* "attacks" v. pres. 3rd sg. 451. lw. Sk. *viśphurati*; MG. *viṣphro* 'attacks' is derived from the same source: Sk. *viśphurati*, Pk. *viṣphurati*.
- विस्मय** *viśmaya* "astonishment" sub. m. dir. eg. 482. (v. l. *viśmaya*) 110. lw. Sk. *viśmaya-*.
- विहर** *viśarai* "goes out (to collect alms-food)" v. pres. 3rd sg. 501; *viśaraim* pl. 94; *viśariu* past part. m. dir. eg. 85, also *viśariyau* (v. l. *viśariu*) 351; *viśarivā* inf. 112; *viśarāvai* ('offers alms') sus. pres. 3rd sg. 510; *viśarāvī* past part. m. dir. eg. 112. *viśarāvī* also. 561. Sk. *viśarati*, Pk. *viśarai*.
- विहल** *viśhalu* "quickly, early" v. s. v. *viśhalu*.
- विहस** *viśhasu* "laugh, jest" v. pres. 3rd pl. 589; *viśhasyam* past part. n. pl. 589. Sk. *viśhasati*, Pk. *viśhasi*.
- विक्रियते** *vikriyate* "to sell" ger. dir. eg. n. 506. Sk. *vikriyate*, replaced by Pk. *vikriyati*. cf. Sk. *vikraya*-MG. (dialectal) *vekvū*. Bloch *vikrō*.
- विक्रिया** *vikriyā* "to sell" inf. (obl.) 518; *vikri* loc. eg. (of past part. *vikriyā*) 477. Sk. *vikriyate*, Pk. *vikriyati*, MG. (dialectal) *vekvū*; also v. s. v. *vikriyānu*, *vevai*. Bloch *vikrō*, Turner *hukna*.
- विज** *viśa* "lightening" sub. f. dir. eg. 20, 514. Sk. *vidyāt*. f. Pk. *viśa* f. Bloch *viś*, Turner *bijuli*.
- विजापण** *viśāpanu* "act of fanning" sub. dir. eg. 12. Sk. *viśyate*, Pk. **viśai*, causal base *viśāyā-*. The nasal in MG. *viśā* 'fan' and Sindhi *viśānu* cannot be explained; see under *viśai* Bloch *viśā*.
- विनय** *viśmai* "requests" v. pres. 3rd sg. 426; *viśaviu* past part. m. dir. eg. 112; *viśavii* loc. eg. 188. Sk. *viśāpaya*, Pk. *viśāpavai*, *viśāpavai*, Turner. *biñti*.
- वीर** *viśa* proper noun m. dir. eg. 110, 522.
- वीरसेन** *viśasenu* proper noun m. dir. eg. 521.
- वीस** *viśa* "twenty" adj. num. 61. Sk. -*viśat* in compounds, Pk. *viśam* MG. *viśa*, Bloch *viśa*, Turner *biś*.
- वीसई** *viśaim* "twenty" adj. num. in the context *viśatim* navottara 'twenty-nine' 74; also *viśam* in the context *ekū sau viśam* 'one hundred twenty' 71, also *viśam* sau 'one hundred twenty' 613; Sk. *viśatim* f., Pk. *viśai*; final nasal cannot be explained, cf. Ap. *viśam*.
- वीसम** *viśamai* "on the twentieth" ord. loc. eg. 355. OG. *viśa*+*mau*; v. s. v. *viśa*.
- वीसरिया** *viśariyā* "forgotten" past part. m. 601. Sk. *viśarati* Pk. *viśarai*, *viśariyā-*, OG. *viśariu*, Bloch *vi-arnō*, Turner *biśana*.
- वीसामा** *viśamā* "resting place" sub. dir. pl. m. 117; *viśamā* loc. eg. 117, *viśamā* loc. pl. 117. Sk. *viśramā* Pk. *viśama*-OG, ext. *viśamā*, Bloch *viśamā*, Turner *biśā*.
- बुडबुडा रू** *bulabulā rū* "imitation of a sound made by the sinking of an ob."

मनो *manī* "a type of jiva which has a mind" sub m. eg. 33. Sk. *manjīn* f. *k.* *manī* in f. *k.*

संज्ञायु *saññahū* "sincero" adj. in dir. eg. 34. Sk. *saññī*(*ñā*)-ext. in OG. *saññethau*, note the final -*hū* which may be Ap. influence or borrowing from dialects of midland

समय *samai* "at the time" sub m. loc. eg. 73. 112; Sk. *anmayah*, *amaye*, f. *k.* *anmayā*-(O) *aman*, loc. eg. *samai*, MG. *saṃho*. *saṃho*

समय *samaraī* "remembers" v. pres. 3rd sg. 74. *saṃsaram* 3rd pl. 579; *saṃsaraum* 1st sg. 311. *saṃsaraī* ger. pl. 511; *saṃsaraī* abs. 296. *saṃsaraī* caus. pres. 3rd sg. 521. Sk. *saṃsaraī* f. *k.* *saṃsaraī*.

समराय *samaraṇa* "memory, remembrance" sub n. dir. eg. 435, also *saṃsaraṇa* 204, 428, 460. *saṃsaraṇā* f. 482; Sk. *saṃsaraṇam*. *saṃsaraṇā* f. *k.* *saṃsaraṇā*-n.

समारथ *saṃsarāṭhī* "causing to repair" causal base, pres. part. obl. 577. Sk. *saṃsarāṭhī* f. *k.* *saṃsarāṭhī*; OG. *saṃsarāṭhī*. caus. *saṃsarāṭhī*, *Mī* *saṃsarāṭhī* "to cause to repair".

सम *saṃ* "like, of the same type" (conj. ad; f) 402, Sk. *saṃa*- f. *k.* *saṃa*-ext. in (O)

समाय *saṃmā* "is adjusted, is contained" v. pres. 3rd sg. 222; *saṃmāyāura* ger. n. dir. eg. 74. Sk. *saṃmāṭhī* f. *k.* *saṃmāṭhī*, *Mī*, *saṃmā* Turner *saṃmāṭhī*.

समाय *saṃmā* "lecturo, etc." v. pres. 3rd pl. 569; *saṃmāṭhī* abs. 550. Here the initial -*saṃ* in *saṃ*- is due to analogical influence of the Sans. theological term *saṃmā* etc. in. Sk. *saṃmāṭhī*

सय *saṃ* "hitting, proper" abs. 316. *sa* + *y* sound. Sk. *saṃ*, *saṃ* f. *k.* *saṃ*, *saṃ* ext. with -n.

समाय *saṃmā* (d. extended) appeared post part. in dir. eg. 75, 429; *saṃmāṭhī* pl. 571. Sk. *saṃmāṭhī* f. *k.* *saṃmāṭhī*-n.

सय *saṃ* "hundred" num. dir. eg. 488, also *saṃ* elsewhere. Sk. *saṃ* f. *k.* *saṃ*, *saṃ*- f. *k.* *saṃ*, Turner *saṃ*

सय *saṃ* "with, in relation to" conj. ad. *saṃ* in dir. eg. (v. l. *saṃ*, *saṃ* n. 174, *saṃ* pl. 342; *saṃ*, in dir. eg. 115, 470, 488. *saṃ*, also *saṃ* 488, *saṃ* f. (v. l. *saṃ*) 579. Sk. *saṃ*- f. *k.* *saṃ*, *saṃ* for the change (N) ext. *saṃ*, *saṃ* *Mī* *saṃ* *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* ext.

सय *saṃ* "with" conj. ad. in dir. eg. 4, 7, 8, 11, 15. *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "good" conj. ad. in dir. eg. 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100. *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "equal" conj. ad. in dir. eg. 447, *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "body" conj. ad. in dir. eg. 474, also *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "when all is at stake" conj. ad. in dir. eg. 488, also *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "all whole" conj. ad. with various emphatic particles. *saṃ* *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "father-in-law, wife's or husband's father" conj. ad. in dir. eg. 511. Sk. *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "thousand" num. dir. eg. 74, 84. *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "to be hit, to suffer" conj. ad. in dir. eg. 74. *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "in" conj. ad. in dir. eg. 211. *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "proper, crystal" conj. ad. in dir. eg. 211. *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "in the presence of, as without" conj. ad. in dir. eg. 211, 212, 213, 214, also *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "with" conj. ad. in dir. eg. 211, 212, 213, 214, also *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सय *saṃ* "with" conj. ad. in dir. eg. 211, 212, 213, 214, also *saṃ* ext. *saṃ* *saṃ* Turner *saṃ*

सकटापिता *śakṭāpīṭā* "father of one seated in a pallock-cart" sub, m, dir, eg. 94 lw, Sk. sakatā-pitā

सकटापि *śakṭāpī* proper noun m dir, eg. 433.

सकृन्त *śakṛntā* proper noun m dir, eg. 433, 614 lw, Sk, sākrātā-

सकृन्त *śakṛntā* "perpetual, eternal" adj. n, pl.

सकृन्त *śakṛntā* "a shelf generally hung in the kitchen in which remains of cooked food are kept" sub, n, dir, eg. (v. l. *śakṛntā*) 131, Ved, Sk, *śakṛntā* "a kind of loop or swing made of rope and suspended from either end of a pole or yoke to receive a load", lk, *śakṛntā*-, MĀ, *śakṛntā* *śakṛntā* (disk, etc.), Blh, h, *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* proper noun m, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* proper noun m, dir, eg. 112.

सकृन्त *śakṛntā* proper noun m, dir, eg. 116.

सकृन्त *śakṛntā* "swelling" sub, m, dir, eg. 21, cf. Sk, *śakṛntā* "verbal swelling, tumour".

सकृन्त *śakṛntā* proper noun m, dir, eg. 119.

सकृन्त *śakṛntā* "son's" sub, m, 21, lw, Sk.

सकृन्त *śakṛntā* proper noun m, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* proper noun f, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* proper noun m, dir, eg. 481.

सकृन्त *śakṛntā* "cemetery" sub, n, dir, eg. 360.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain expression" sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "Jain woman" (f. of *śakṛntā*) sub, n, dir, eg. 110.

सकृन्त *śakṛntā* "by the co-wife" f, eg. 426. Sk. **śakṛntā*, *śakṛntā*; Bloch *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*-. The reading should be *śakṛntā*, note the MG. cognate *śōk*.

सकृन्त *śakṛntā* "is capable" v. pres. 3rd eg. 339, 516, 557; *śakṛntā* 1st eg. 488, 512; also *śakṛntā* 339; *śakṛntā* past part. m, dir eg. 456, 461; *śakṛntā* past, pl. (honorific) 490, Sk, *śakṛntā*, *śakṛntā*, lk, *śakṛntā*, *śakṛntā*, Bloch *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "all" adj. adv. dir. eg. n. 7, (v. l. *śakṛntā*, *śakṛntā*) 94, 463; *śakṛntā* pl. 521; also *śakṛntā* 339; *śakṛntā* pl. 110; *śakṛntā* m, eg. 10, *śakṛntā* pl. 437; *śakṛntā* obl. 66, 403; *śakṛntā* inst. eg. 381, *śakṛntā* loc. pl. 527; Sk, *śakṛntā*-lk, *śakṛntā*-probably a late lw, in lk, ext. in OG. Bloch *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "seventeen" num, dir. eg. 291, also *śakṛntā* 618; *śakṛntā* obl. eg. 291, 613; note the -t- in OG. MG. has geminated -t-, *śakṛntā*. Sk. *śakṛntā*, lk, *śakṛntā*. Ap. *śakṛntā*. Bloch *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "seventeenth" ord. obl. 222. *śakṛntā* mai loc. eg. 335; note the -t-; cf. *śakṛntā* in OG. v. s. *śakṛntā*. OG. ordinal *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "seventy-seven" num, dir. eg. (v. l. *śakṛntā*, *śakṛntā*) 74. cf. Sk. *śakṛntā* f, lk, *śakṛntā*. Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "fifty-seven" num, 390; also *śakṛntā* 401, Sk, *śakṛntā* f, lk, *śakṛntā*. Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "ninety-seven" num, 613; Sk, *śakṛntā* f, lk, *śakṛntā*. MG. *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "twenty-seven" num, 74, also in this index "twenty-seven *śakṛntā* *śakṛntā* san" "twenty-seven multiplied by four = 108" 617, note that this OG. system of multiplication is similar to present day grammar school tradition of multiplication. Sk. *śakṛntā* f, lk, *śakṛntā*. Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "one hundred and seven" num, 627. Sk, *śakṛntā*, lk, *śakṛntā*. Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "eighty seven" num, 74, Sk, *śakṛntā* f, lk, *śakṛntā*. MG. *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "eighty seven" num, 74, Sk, *śakṛntā* f, lk, *śakṛntā*. MG. *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*.

सकृन्त *śakṛntā* "eighty seven" num, 74, Sk, *śakṛntā* f, lk, *śakṛntā*. MG. *śakṛntā*, Turner *śakṛntā*.

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

सकटावित् *śakṭāvita* "father of one seated in a pallock-cart" sub. m. dir. sg. 91 lw. Sk
śakṭā-pitā

सकटावित् *śakṭāvita* proper noun m. dir. sg. 435.
सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 433.
सावन्त *śāvanta* "perpetual, eternal" adj. n. pl. 614 lw. Sk. śasvati-

सकृन्त *śakṛnta* a shelf generally hung in the kitchen in which remains of cooked food are kept "sub. n. dir. sg. (v. l.) śakṛntam" 131. Ved. Sk. śikṛyām suspended from either end of a pole or yoke to receive a load, lk śikkaya-. Mō. skū, chikū (dīkṣatā). Bloch skū, Turner skōl.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 110.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 110.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 112.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* proper noun m. dir. sg. 511.

सकृन्त *śakṛnta* "by the co-wife" f. sg. 426. Sk. *śapṭakñj, śapṭāñj; Bloch śavat. Turner śantā-nate śOk.

सकृन्त *śakṛnta* "is capable" v. pres. 3rd sg. 329, 316, 337; śakṛntam 1st sg. 488, 512; also śakṛnt 339; śakṛnt past part. m. dir. sg. 476, 461; śakṛntam past pl. (honorific) 490, Sk. śakṛntī. śakṛnt. lk. śakṛnt, śakṛntī, Bloch śakṛnt, Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* "all" adj. adv. dir. sg. n. 7, (v. l.) śagalā, śagalū 91, 463; śagalām pl. 327; also śagalā sg. 389, pl. 110; śagalū-m. sg. 10, śagalā pl. 473; śagalā obl. CG, 403; śakṛnta inst. sg. 381, śagalā loc. pl. 327; Sk. śakṛnta-lk. śagalā-probably a late lw. in lk. ext. in OG. Bloch śagalū.

सकृन्त *śakṛnta* "seventeen" num. dir. sg. 241, also śakṛnta 618; śakṛnta obl. sg. 241, 613; note the -t- in OG. MG. has geminated -tt-, śakṛnt. Sk. śakṛnta, lk. śakṛnta. Ap. śakṛnta. Bloch śakṛnt, Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* "seventeenth" ord. obl. 222. śakṛnta mai loc. sg. 235; note the -t-; cf. śakṛnta in OG. v. s. v. śakṛnta. OG. ordinal śakṛntam.

सकृन्त *śakṛnta* "seventy-seven" num. dir. sg. (v. l. śakṛnta, śakṛnta) 74. cf. Sk. śakṛnta, lk. śakṛnta. Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* "fifty-seven" num. 399; also śakṛnta 401, Sk. śakṛnta, lk. śakṛnta. Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* "ninety-seven" num. 613; Sk. śakṛnta, lk. śakṛnta. Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* "twenty-seven" num. 71, also in this form "śakṛnta caṅku śakṛnta" 617, note that this OG. system of multiplication is similar to present day grammar school tradition of multiplication. Sk. śakṛnta, lk. śakṛnta. Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* "one hundred and seven" num. 827 Sk. śakṛnta, lk. śakṛnta. Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* "eighty-seven" num. 71 Sk. śakṛnta, lk. śakṛnta. Turner śakṛnt.

सकृन्त *śakṛnta* meaning and derivation not known

सष्टि *sāṣṭhi* "sixty" num. die sg. 10, 121 Sk. *ṣaṣṭhi* l'k. *ṣaṣṭhi* OG. *sāṣṭhi* MG. *sāṣṭhi* Bloch *sāṣṭhi*, Turner *sāṣṭhi*.

सत्तु *sāṭṭhu* "sixty" num. dir. sg. 71; also *sāṭṭhu* sau 'one hundred sixty' 618 Sk. *ṣaṣṭhi* f. l'k. *ṣaṣṭhi*-f. OG. expected form is *sāṣṭhi*, but *sāṭṭhu* can be explained by analogical extension of -n from other numerals. v. s. v. *sāṭhi*

सप्त *sāpta* "seven" num. dir. sg. 28, 73; *sāpta* inst. pl. 438 Sk. *ṣaṭpā* l'k. *ṣaṭpā*; Bloch *sāpt*, Turner *sāpt*.

सतगारव *sātagāra* "complacent on account of happiness, arrogance of happiness" (first part of a compound (*sātagāra*vādi) sub. 366, Sk. *sāta* + *gaurava*, lw. (Jain theological term) in l'k. *sāta* + *gāra*va.

सतमी *sātami* "seventh" ord. f. dir. sg. OG. *sātā*+ord. suffix *ma-u*, v. s. v. *sāta*.

सति *sāti* "with, together" meaning is not clear, nor is derivation, 465, (context : tāharau gholaun āpaṇau sāti).

सत्तु *sāṭṭhu* "cooked flour (sweetened)" sub. dir. sg. m. 288, Sk. *sāṭṭhu* m. l'k. *sāṭṭhu*-, *sāṭṭhu*-, OG. *sāṭṭhu*; Bloch *sāṭṭhu*, Turner *sāṭṭhu*.

सध *sādhai* "accomplishes" v. pres. 3rd sg. 431. lw. Sk. *sādhaiyati*.

सामह *sāmaha* "in front of, opposite" adj. adv. (v. l. *sāmaha*, *sāmaha*, *sāmaha*, *sāmaha*) dir. sg. m. n. 73, 488, 516, 543, 570; *sāmaha* obl. pl. 454; *sāmahi* f. sg. 502, Sk. *sāmaukhah* l'k. *sāmaha*- OG. ext. Bloch *samor*, Turner *sāma*.

सरविद्य *saravīdyai* "is accomplished" v. caus. pass. 3rd sg. 438, Sk. *sāratī* l'k. *sarati* v. s. v. *sarimu*. Bloch *sarāṭi*, Turner *sarnu*.

सरिसा *sarīsā* "equal" adj. obl. 31. v. s. v. *sarīkhau*.

सारी *sārī* "dice" sub. f. dir. pl. 483, Sk. lex. *sārī* f. 'chessman' l'k. *sārī* f. 'colourful container from which dice are tossed while gambling'.

सास *sāsa* "breath" sub. m. 42, Sk. *svāśah* l'k. *sāsa*-, Turner *sāsa*.

साय *sāyā* "wife or husband's mother" sub. f. 201, Sk. *ivāśrūh* l'k. *sāyā*-, Bloch *sāyā*, Turner *sāyā*.

साहित *sāhita* "held" past part. m. dir. sg. 556; *sāhi* abs. 435, 539, Sk. *sādhayati* l'k. *sāhi* *sāhi*, OG. *sāhai*.

सि *si* "they" dem. pro. nom. pl. 337; it occurs as a correlative, e. g. *ji nāthā si nāthā*, Sk. *sah*.

l'k. so OG. *sa* analogically influenced by Sk. *ṣe* l'k. p. OG. *ji*, *līa* also re. *ti* (Sk. *te*) is used.

सिद्धि *siddhi* "harat" past part. m. dir. sg. 365. (The initial short -i- is a scribal error, other mss. have long -ī-). Sk. *sikṣate* l'k. *sikṣai*, Bloch *sikṣā*, Turner *sikṣā*.

सिद्धि *siddhi* "towards perfection, salvation" sub. f. loc. sg. 121 lw. Sk. *siddhi* + OG. loc. suffix

सित *sita* "cold" adj. dir. sg. 166, Sk. *sita*-.

सिद्ध *siddha* "becomes dependant, gets afflicted, exhausted", ps-2, sg. 215, lw. Sk. *siddati*.

सिद्ध *siddham* "established" adj. dir. sg. n. 102, Sk. *siddham*, l'k. *siddha*-ext. OG.; notice MG. "sādhū" with altered meaning 'straight'; Turner *siddho*.

सिम *sima* "upto, within the limit" post. ps. 110; also *simu* 523, Sk. *simān*, *simā*, l'k. *simā*. Bloch *śv*.

सिमधर *samadhara* proper noun m. dir. sg. 547.

सिमल *simala* "staying on the border, frontier" sub. dir. sg. m. 451, Sk. *simā*-l'k. *simala*-. v. s. v. *sima*.

सिमल *simala* "in winter" sub. loc. sg. 401, Sk. *sitakalah*, l'k. *siā*-āla.

सु *su* "he" dem. pro. m. nom. sg. 109, 111, 365, Sk. *sah*, l'k. *so*, v. s. v. *sa*.

सुकमारिका *sukamārika* "a type of puri-like preparation." sub. f. 311. 'This is a Sanskritization of the MG. *sūvāji*. lw. Sk.

सुखि *sukhi* "happy" adj. dir. sg. m. 91. lw. Sk. *sukhī*, OG. *sukhī* ext. with -s.

सुजाय *sujāyā* "intelligent, clever (man)" adj. dir. sg. m. 386; OG. *su* + *jāyā*; v. s. v. *jāyā*.

सुदनु *sudantu* proper noun m. dir. sg. 517.

सुद्धि *suddhi* "purification" sub. f. 345, Sk. *suddhī*, l'k. *suddhi*, lw. l'k.

सुदर्शन *sudārśana* proper noun m. dir. sg. 445.

सुपार्थ *sūpārtha* proper noun m. dir. sg. 110.

सुभ *sūbha* "good, auspicious" adj. n. dir. sg. 435, Sk. *sūbha*-; lw. Sk.

सुमति *sūmati* proper noun m. dir. sg. 110.

सुमित *sūmitra* proper noun m. dir. sg. 451, 331 359.

सुमेन *sūmena* proper noun m. dir. sg. 521.

सुलहलदिक *sulahladika* "sulahlala and others; sulahlala is a type of small insect" sub. 338, 401, l'k. not known.

सुविधि *sūvidhi* proper noun m. dir. sg. 110.

- साठि *sathi* "sixty" num. dir. sg. 10. 421 Sk
 सतिथि Pk. सतिथि OG. सतिथि MG. सतिथि Bloch
 sath. Turner sathi
- साठु *sathu* "sixty" num. dir. sg. 74; also सathu
 सान 'one hundred sixty' 618. Sk. सतिथि f. Pk.
 सतिथि - f. OG. expected form is सतिथि. but सathu
 can be explained by analogical extension of -u
 from other numerals. v. s. v. सतिथि
- सात *sata* "seven" num. dir. sg. 28. 73; सूते inst
 pl. 438 Sk. सप्तā Pk. सत्ता; Bloch sāt, Turner
 sat.
- सातगार *sātagāra* "complacent on account of
 happiness, arrogance of happiness" (first part
 of a compound (sātagaravādi) sub. 366. Sk.
 sāta + gāra, lw. (Jain theological term) in
 Pk. sāta + gāra.
- सातमी *sātami* "seventh" ord. f. dir. sg. OG. sātā+
 ord. suffix ma-u, v. s. v. sata.
- साति *sati* "with, together" meaning is not clear,
 nor is derivation, 465. (context : tāharau ghōlan
 syanau sātī).
- सातु *sātu* "cooked flour (sweetened)" sub. dir.
 sg. m. 238. Sk. saktah m. Pk. sattu-, sattuā-
 OG. sātū; Bloch sātū, Turner sātu.
- सातपु *sātpu* "accomplishes" v. pres 3rd sg. 43;
 lw. Sk. sādhyati.
- सातपुट *sātpuṭa* "in front of, opposite" adj. adv.
 (v. l. sāmāna, sāmāha, sāmāhura, sāmāhura)
 dir. sg. m. n. 73. 484, 516, 515, 579. sāmāhuh
 oī. pl. 434; sāmāhuh f. sg. 562 Sk. sammuklah
 Pk. sāmāhuh - OG. ext. Bloch samur Turner
 sātū
- सातपुट *sātpuṭa* "is accomplished" v. caus.
 pass. 3rd sg. 434 Sk. sātati Pk. sātati v. s. v.
 sātām. Bloch sātī. Turner sātū.
- सातिका *sātika* "equal" adj. oī. 31 v. s. v.
 sātāka
- साति *sati* "dice" sub. f. dir. pl. 443. Sk. lex
 sātī f. 'chessman' Pk. sātī f. 'colourful con-
 tainer from which dice are tossed while gam-
 bling'.
- सात *sata* "breath" sub. m. 42. Sk. svāśah Pk.
 sātā-, Turner sat.
- सातु *sātu* "wife or husband's mother" sub. f. 271.
 Sk. svāśah Pk. sātā-, Bloch sātī, Turner sat.
- साति *sati* "bed" past part. m. dir. sg. 356.
 sātī, sb. 423, 329. Na. sātīyat. Pk. sātī- sātī,
 (N). sātī.
- सि *si* "they" dem. pro. nom. pl. 377, it occurs
 as a correlative. e. g. jī sātīha si. sātīha, Na. sātī.
- Pk. so OG. sv. analogically influenced by Sk. ye
 Pk. jī. Oī. jī. I. l. -where, ti (Sk. te) is u-ed.
- सिद्धि *siddhi* "harat" past part. m. dir. sg. 365.
 (The initial short -i- is a scribal error, other
 mss. have long -ī-). Sk. sīk;ate Pk. sikkhai,
 Bloch sikkhē, Turner sikkū.
- सिद्धि *siddhi* "towards perfection, salvation"
 sub. f. loc. sg. 421. lw. Sk. siddhi + OG. loc.
 suffix
- सित *sita* "cold" adj. dir. sg. 466. Sk. sītā-.
- सिद्ध *siddha* "becomes despondent, gets afflicted,
 exhausted". pass. sg. 245. lw. Sk. siddati.
- सिद्ध *siddham* "established" adj. dir. sg. n. 102.
 Sk. siddham. Pk. siddha-ext. OG.; notice MG.
 "siddhū" with altered meaning 'straight'.
 Turner siddho.
- सिम *sima* "upto, within the limit" post pos
 110; also simu 523. Sk. simān, simā, Pk. simā.
 Bloch sīv.
- सिमपुरु *sīmāpuru* proper noun m. dir. sg. 317.
- सिमा *sīmā* "staying on the border, frontier"
 sub. dir. sg. m. 451. Sk. simā- Pk. simāla-
 v. s. v. sīma.
- सिमा *sīmā* "in winter" sub. loc. sg. 401. Sk.
 sītākālah, Pk. sīa- sīa.
- सु *su* "he" dem. pro. m. nom. sg. 109, 111, 365.
 Sk. sah. Pk. so, v. s. v. sa.
- सुदुर्मा *sudurmā* "a type of pari-like pre-
 paration." sub. f. 311. This is a sanskritisa-
 tion of the MG. sūvalī. lw. Sk.
- सुखि *sukhi* "happy" adj. dir. sg. m. 91. lw.
 Sk. sukhi, OG. sukhi ext. with -u.
- सुखि *sukhi* "intelligent, clever (man)" adj.
 dir. sg. m. 366; Oī. su + jana; v. s. v. janaī.
- सुदु *sudū* proper noun m. dir. sg. 317.
- सुद्धि *suddhi* "purification" sub. f. 345, Sk. suddhih,
 Pk. sūddhi, lw. Pk.
- सुदुर्मा *sudurmā* proper noun m. dir. sg. 445.
- सुदुर्मा *sudurmā* proper noun m. dir. sg. 110.
- सुदु *sudū* "goal, aspirations" adj. n. dir. sg. 433.
 Sk. sūda-; lw. Sk.
- सुदु *sudū* proper noun m. dir. sg. 110.
- सुदु *sudū* proper noun m. dir. sg. 451, 331
 379.
- सुदु *sudū* proper noun m. dir. sg. 321.
- सुदु *sudū* "sūbhāṭa and others;
 sūbhāṭa is a type of small insect" sub. 334,
 401. Idr. not known.
- सुदु *sudū* proper noun m. dir. sg. 110.

सुपेय *supeya* proper noun m, dir, eg. 430.

सुमि *sumi* "dries" v. pres, 3rd sg. 516, short -u- in initial syllable may be graphic, Ek. śūgrati Pk. sūssati (Sk. śoṣṭyati, Pk. sosei, MG. soṣ-vū).

सुसुर *musura* "father-in-law, wife's or husband's father" sub. m, dir, eg. 556, Sk. śvāsuras, Pk. sasura- ext. in OG. sasura, initial -u- may be graphic, or assimilatory, MG. sauro, v. s. v. sasura, Bloch śāsā, Turner sasuro.

सुह *śuh* "joy, happiness" sub. n, dir, eg. 432, Ek. sukḥam Pk. suham OG. suh-u.

सुह *śūhi* "dries" v. pres, 3rd sg. 309, Ek. śaḥkah Pk. sukḥa-, sukka-. Bloch sukā, Turner suko, sukna.

सुखवपु *sūkavapu* "drying-action of-" sub. n, dir, eg., 12, v. s. v. sūkai, OG.

सुखी *sūki* "dry" adj. f. 601, v. s. v. sūkai, OG. sūk- + feminine suffix -ī.

सुग *śuga* "disgust, dislike" sub. f, dir, eg. 433, cf. MG. sūg, f. der, not known.

सुचित *sūci* "suggested, indicated" past part. m, dir, eg. 501; śūcavevaṃ caus. gen. n, eg. 10; śūcavevaṃ n, pl. 10, Sk. śūcyate, śūcyati.

सुध *śudh* "purifies, becomes clear" v. pres, 3rd sg. 13, 172, 230; śūbhavi caus. abs. 484, Sk. śudhyati Pk. sūjhai, Turner sūjhna.

सुणी *śūṇi* "swollen" past part. f, dir, eg. 521, Sk. śūyate, śūnāh (cf. śūnyā- originally "hollowness, emptiness" MG. śūn) Pk. śūn- śūna-. MG. śūyū, śūyū, Bloch suṇā, Turner sūjna.

सुत *śūta* "sleeping" adj. past part. m, dir, eg. 447, 482; śūta obl, eg. 446; śūtai loc, eg. 481; śūte inst, eg. 259, Sk. śūptāh Pk. sutta, Turner sutna.

सुवपार *sūradhāra* "carpenter" sub. m, 408, lw, Sk.

सुदणकरण *sūḍaṇakaraṇa* "act of cutting, arranging, trimming" sub. n, eg. 440, lw, Sk. śūlana - + karaṇa.

सुपह *śūpa* "sleeps" v. pres, 3rd sg. 163; śūyai pass, eg. 259; śūyari caus. abs. 25, Sk. śvāpati, Pk. svai, MG. evū, Turner sutna.

सुपह *śūpaḥ* "parrot" sub. m, dir, eg. 463, Sk. śūka- Pk. suā- ext. -daḥ, MG. supo.

सुर *śura* proper noun m, dir, eg. 445.

सुरग *śuraga* "a vegetable which grows under the ground" sub. n, dir, eg. 288, MG. śūran, Der. not known.

सुरा *śūra* "heroism" sub. f, eg. 48, Sk. śūrah Pk. śūra, OG. śūra + tā.

सूर्य *śūrya* proper noun m, dir, eg. 464.

सुष *śuṣ* "perspiration" sub. dir, eg. m, 309, Sk. śvedah Pk. soṣ, sen; MG. parasevo 'perspiration' Sk. praśvedah, OG. *paraseu, replaced by paraseo.

सेठि *sethi* "merchant, businessman (rich)" sub. m, obl, eg. 432, 548, Sk. śreṭhi Pk. setthi MG. seth, Bloch śet Turner seth².

सेतिका *setika* "a type of measure, more common as Jain theological term" sub. f, 459, lw, Sk. (not found in MW); Pk. seigā, seiā.

सेव *śeva* "service" sub. f, dir, eg. (v. l. sevā) 432, Sk. sevā Pk. sevā.

सेवाली *śevāli* proper noun m, dir, eg. 109.

सेवालाहारी *śevālahāri* "one who lives by eating sevāla-see woods-" adj. m, dir, eg. 109, lw, Sk. sevāla + āhārin.

सेवित *śevit* "served" past part, m, dir, eg. 516; sevatau pres. part, m, dir, eg. 222; sevīyai pass, eg. 516, Sk. sevate Pk. sevai.

सेपउ *śepau* "find" v. pres, 1st pl. 456, soḍhaṭau pres. part, m, dir, eg. 382; soḍhi abs. 325; cf. Sk. soḍha-, śoḍhām, which might have developed as the NIA stem soḍh-; or this may be a lw, fr. Sk. soḍhāyati, to avoid confusion with soḥ- from śoḥhate. see Turner soḍhu.

सोल *śola* "sixteen" num. dir, eg. 74, Sk. soḍāsa, Pk. solasa, solaha. Bloch soḷa, Turner soḷa.

सोलमा *śolamā* "sixteenth" ord. obl. 222, solamā loc, eg. 355; OG. sola + māu, v. s. v. sola.

सोनिपकाय *śonipkāya* "whose bodies have withered, emaciated" adj. m, dir, pl. 110, Sk. śoṣṭa-kāya-, Pk. soṣia + kāya; lw, Pk.

संकोही *śamkōhi* "having reduced, shrunk" abs. 532, Sk. *śamkṛta- 'put together'; śamkṛtiḥ f. 'bringing together'; cf. Pa. śamkṛtiḥ 'shrivelled, shrunk' Pk. śamkuda-, śamkoda- 'contraction'.

संक्रमविषय *śamkrāmavīyā* "caused to move" past part. of the causal base m. pl. 22, lw, Sk. śamkrām- + OG. āv-ia.

संघट *śaṅghaḍau* "pair, couple" sub. m, dir, eg. 435, Sk. śaṅghāta- Pk. śaṅghāda- ext. OG.

संजम *śanjama* "control, restraint" sub. m, dir, eg. 573; Sk. śamyama- Pk. śanjama- lw, Pk.

संजमसुरी *śanjamasūri* proper noun m, dir, eg. 484.

संज्ञा *śaṅghāṇi* "sides (two sides-right and left-of the body, Jain theological term)" sub. obl. pl. m, 170, 326; cf. MG. śaṅghāṇi, śaṅghāṇi the sides of the pincers meaning in this sides' śaṅghāṇi padilo' śaṅghāṇi- T.

सूत्र सूत्रात् "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. सूत्रात्; Do. सूत्रेणा- Initial -am-> -a- in MG. cannot be explained.

सूत्र सूत्रिक: "ginger" sub. f. sg. 314. also सूत्रिणी 271. Sk. सुत्रिह, सुत्रिणी 'dry ginger'. Pk. सुत्रिणी, MG. सूत्रि; final -i in OG. may be a prakritic inflexion. Bloch sūt, Turner sutho.

स्तव स्तवम् "I praise" v. pres. 1st sg. 377; stāvai fut. 3rd sg. 622; stāvītai pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. stava + OG. verbal inflexion.

स्मरणि स्मरणि "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. śmāśānāt, OG. smasān + loc. sg. suffix -i.

स्वध्या स्वध्या "meditation, study." sub. m. dir. sg. (v. l. svādhyāya) 109. lw. Sk. svādhyāyah. svādhyāya- (for śmān- in OG. cf. Sk. vinaya- lw. in OG. vinay MG. vnao, Sk. istrūjāya- lw. in OG. istrūjan MG. istrūjo etc.)

*

शम शम "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. ham, haq, hūm) 74, 85; Sk. śham, Pk. śham. śham. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. hū.

शक्री शक्री "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also शक्री (v. l.) 544. Sk. lex. hākātra 'making of the sound hāk', onomat. sound of calling Pk. hākārei, hākārai; MG. hamkāre 'to drive'; also cf. MG. hāk f. 'call, shout, challenge'. Bloch Lāknā. Turner Lāknā, hākāra.

शक्री शक्री "wooden fetters" sub. f. dir. 402 Sk. hākāra, Pk. hākāra, OG. hākā f. MG. hākā f.

शक्ति शक्ति "weapon" sub. n. dir. sg. 329. Sk. *hastā-kāra- Pk. haṭṭhiyāra-n Turner haṭṭyāra.

शक्ति शक्ति "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. *hastā-kūta-; (Sk. haṭṭha and kūtara 'mallet' Pk. kūla) Pk. *haṭṭha-ula- MG. hāḥyo. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner hōtro.

शक्ति शक्ति "takes away, robs" v. pres. 3rd sg. hakti inf. of purpose 7. Sk. hakti. Pk. hakti. Bloch haktā, Turner haktā.

शक्ति शक्ति "pleased" past part. m. dir. sg. 479 hakti (v. l. hakti) pl. 142 Sk. hakti. hakti; MG. hakti 'pleased' that should be interpreted as -ak- and hence the intervening stage *hakti. *hakti should be independent of the Pk. hakti.

शक्ति शक्ति "self-hatred of ascetic, yellow ornament" sub. dir. sg. n. 20. Sk. hakti- m. lw. hakti- m. n.

शक्ति शक्ति "cause to shake, move" v. caus. pres. 1st sg. 309 Pk. hakti MG. hakti, but of Hindi hakti. Panyāsi Lāknā. Prāyādan origin is suggested. Bloch haktā, Turner hiltā, hakti.

शक्ति शक्ति proper noun in dir. sg. 479

शक्ति शक्ति "light (of weight)" m. dir. sg. m. 602 Probably the text should be hakti. of MG. hakti Sk. hakti, hakti, Pk. hakti, hakti- Bloch suggests Ivesānā origin Bloch hakti Turner hakti hakti

शक्ति शक्ति now ale 479, 500 v. l. hakti (v. l. MG. hakti, of h and other Pk. hakti-ale), ale hakti etc. Absence of -h- forms in the western group leads Chatterji (OPINION 456) to suggest Sk. stem hakti for the a- of the demonstrative base of Sk. hakti, hakti etc. h- in Gujar. cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. hakti, Pk. hakti MG. hakti (the alternant hakti with -h- in the initial syllable is properly explained by Pk. hakti, also (MG. hakti-ale) may be explained as extended forms of hakti- The MG. hakti and hakti-ale (ale) should be kept apart

शक्ति शक्ति past part. m. dir. sg. 479, 500 for the v. hakti

शक्ति शक्ति "laughing, joking" past part. m. dir. sg. 226, 244 207. Sk. hakti. Pk. hakti. Bloch hakti Turner hakti

शक्ति शक्ति proper noun in dir. sg. 479

शक्ति शक्ति "drive out" past part. m. dir. sg. 424 Pk. hakti "call". MG. hakti-ale v. hakti

शक्ति शक्ति "cut" sg. 402 403 also hakti (v. l. hakti) m. dir. sg. f. Pk. hakti-ale hakti-ale f. hakti-ale f. Turner hakti

शक्ति शक्ति "cut" m. dir. sg. f. Pk. hakti-ale hakti-ale f. hakti-ale f. Turner hakti

शक्ति शक्ति "cut" m. dir. sg. f. Pk. hakti-ale hakti-ale f. hakti-ale f. Turner hakti

सुवृत् *sūvṛta* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. saṁśca; Do. suricāla-. Initial -um- > -a- in MG cannot be explained.

सुंठी *sūṅṭhī*; "ginger" sub. f. sg. 314. also *sūṅṭhī* 291. Sk. *sūṅṭhīh*, *sūṅṭhī* 'dry ginger'. Pk. *sūṅṭhī*, MG. *sūṅṭhī*; final -ī in OG. may be a *prakṛitī* inflexion. Bloch *sūṅ*, Turner *sūṅho*.

स्तव्यं *stāvyaṁ* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *stāvīsi* fut. 3rd sg. 622; *stāvītai* pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflexion.

स्मरानि *smāraṇi* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *śmāraṇām*, OG. *smāraṇ* + loc. sg. *smāra* -i.

स्वाध्यास *svādhyāsa* "meditation, study." sub. m. dir. sg. (v. l. *svādhyāsa*) 109. lw. Sk. *svādhyāyab*, *svādhyāya-* (for final -a in OG. cf. Sk. *vinaya-lw*, in OG. *vinau* MG. *vano*, Sk. *īstraṅjaya-lw*, in OG. *īstraṅjan* MG. *īstramjō*, etc.)

*

ह्रस्व *hṛasva* "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. *ham*, *hau*, *hūm*) 74, 85; Sk. *aham*, Pk. *aham*, *ahamāṇi*. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. *hū*.

हकारि *hākāra* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *hākārei* (v. l.) 544. Sk. lex. *hākāra* "making of the sound hak", onomat. sound of calling. Pk. *hākārei*, *hākārai*; MG. *hamkāvū* 'to drive'; also cf. MG. *hāk f.* 'call, about, challenge'. Bloch 'hākṇē', Turner *hāknu*, *hākānu*.

हृदि *hṛdi* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk. *hṛdih m.*, Pk. *hṛdi m.*, OG. *hṛdi f.* MG. *hṛf f.*

हथियार *hatthiyāra* "weapon" sub. n. dir. sg. 529. Sk. **hata-kāra*- Pk. *hatthiyāra*-n. Turner *hatthiyā*.

हथि *hatthi* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hata-kūta*-; (Sk. *hātab* and *kūṭam* 'mallet' Pk. *kūla*) Pk. **hattha-ūla*- MG. *hathoro*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *hotro*.

हर *hara* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg.; *harivā* inf. of purpose 7. Sk. *hāraṭi*, Pk. *harai*. Bloch *harṇē*, Turner *haru*.

हर्षित *harṣita* "pleased" past part. m. dir. sg. 420. *harṣiya* (v. l. *harṣiya*) pl. 142. Sk. *hāraṣṭi*, *harṣita*; MG. *harakā* indicates that — should be interpreted as -kh- and hence the intervening stage **harīsa*, **harīṣin* should be independent of the Pk. *harīsa*.

हरियालु *hariyālu* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *hariśāla*-m., Pk. *hariśāla*-m. n.

हलावृत् *halāvṛta* "cause to shake, move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Pk. *hallai*. MG. *halvū*; but cf. Hindi *hilā*, Panjabi *hillaṇā*; Dravidian origin is suggested. Bloch *hāṅṇē*, Turner *hilna*, *hallinū*.

हरिदत्त *haridatta* proper noun m. dir. sg. 425.

हलपट *halayata* "light (of weight)" adj. dir. sg. m. 602. Probably the text should be *halayau*; cf. MG. *halvo* Sk. *laghub*, *laghukah*, Pk. *lahusa-*, *halasa-*, Bloch suggests Dravidian origin Bloch *halū*. Turner *halako*, *halāū*.

हव *hava* "now" adv. 432, 590. (v. l. *hiva*) 480; MG. *have*; cf. H and other Bihari dialects *ab*, *abe*, *abai* etc. Absence of -b- forms in the western group leads Chatterji (ODDL p. 836) to suggest Sk. *evam*, Pk. *evam*; for the a- of the demonstrative base of Sk. *assa*, *adya*, *ītra* etc. h- in Guj cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *adhuṇā*, Pk. *ahaṇā* MG. *hamṇā* OG. alternant *hiva* with -i- in the initial syllable is properly explained by Pk. *evam*; also OG. *havadām*-*hivādām* are explained as extended forms of *hava*-. Thus, MG. *hamṇā* and *havṛā*, *havṛe* (dialectal) should be kept apart.

हवत् *havatā* "just now" adv. 142, also *havadām* 465, 573. for der. s. v. *hava*.

हमत *hamata* "laughing, jesting" pres. part. m. dir. sg. 223, 514, 536. Sk. *hasati*. Pk. *hasai*; Bloch *haṅṇē*. Turner *hānu*.

हस्तिपुत्र *hastiputra* proper noun m. dir. sg. 461.

हाडि *hāḍi* "drove out" past part. m. dir. sg. 428. Pk. *hakkā f.* "call"; MG. *hāvū* to drive; v. a. v. *hākārai*.

हाट *hāṭa* "shop" sub. sg. 386, 478, also *hāṭta* 478; Sk. *hāṭṭam* m. 'market', lex. *hāṭṭi f.*, Pk. *hāṭta*-m. *hāṭṭigā*, *hāṭṭi f.* "small shop", MG. *hāt f. n.* Turner *hāt*

हाड *hāḍa* "bone" sub. n. dir. sg. 245. MG. *hār* n. 'bone' Pk. Do. *halja*; Bloch suggests connection with Sk. *hāṭhi* n. 'bone', *athā f.* 'kernel of fruit', *athilla f.* 'round pebble', but -ṭha- > -ḍa- cannot be explained. Bloch *hār*, Turner *hār*.

हाव *hāva* "hard" sub. m. dir. sig. 58; *hāṭhi* inst. sg. 354, 359; also loc. sg. 543; *hāṭhi* inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. *hāṭṭah*. Pk. *hattha-*, Bloch *hāt*, Turner *hāt*.

- संतापद्** *santāpādi* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. *santāpāyati* Pk. *santāpēvi*, MG. *santāpū*; note the loss of nasal in most of NIA languages. Turner *sātānu*.
- संथारद्** *santhārau* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 511, *santhārai* loc. sg. 323; *santhāra* obl. 338; MG. *sūthro* 'bed on which a person is placed before death'; Sk. *samsthāra-*, Pk. *samthār*, OG. ext.
- संदिशयद्** *sandishayam* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. *sandishati*, Pk. *sandisāsi*, caus. *sandishāveci*.
- संदेशद्** *sandēśau* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. *sandēśa-* Pk. *sandēśa-* ext. in OG.
- संपूषण** *sampūṣaṇa* "act of lighting (fire)" sub. n. 440; note OG. *-ā-* for *-ka-*. Sk. *samdhukṣaṇa-* Pk. *sandhukkhaṇa-*.
- संनिवेशि** *sanniveśi* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. *sanniveśa-* Pk. *sanniveśa-*.
- संपन्न** *sampajai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. *sampadyate* Pk. *sampajjai*.
- संबन्धि** *sambandhiu* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; *sambandhiam* n. sg. 115; *sambandhiyam* n. pl. 135. Sk. *sambandhin* Pk. *sambandhi* ext. in OG.
- संबन्धिपद्** *sambandhiu* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. *sambandha-* (v. s. v. *sambandhiu*) as a verbal stem.
- संभार** *sambhāra* proper noun m. dir. sg. 110.
- संभवद्** *sambhāvaim* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl. 433; *sambhāvīu* caus. past part. m. dir. sg. 461; *sambhāvītan* pass. pres. part. m. dir. sg. 110; *sambhāvī* abs. 534. Sk. *sambharati*, Pk. *sambhāvai*, lw. Pk.
- संभारु** *sambhāru* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. *sambhārah* Pa. *sambhāro* m. 'collection'. v. s. v. *sambhāra*.
- संभूयि** *sambhūyāsi* "having adorned, provided" abs. 515, lw. 6k. *sambhūyati*, *sambhūyā-* + OG. abs. suffix.
- संभारुचि** *sambhāraṣi* "annual" sub. adj. 385; Sk. *sambhāra-*, *sambhāraṣi*. Pk. *sambhāraṣi-* lw. Pk.
- संस्तवद्** *samstāvam* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; *samstāvatau* pres. part. m. dir. sg. 110, lw. Sk. *samstāvate*, *samstav* + OG. verbal suffixes.
- संहर्ति** *samharti* "having destroyed, withdrawn" abs. 463. Sk. *samhartati* Pk. *samharai*, lw. *samhar-* + OG. abs. suffix.
- संग्** *samgam* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 446, also *sam* inst. 578; ety. not clear, cf. Sk. *samjāti* 'belonging to the same family', see Turner *sānu*.
- संगच्छद्** *samcarratum* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 376. Sk. *samcarrati*, Pk. *samcarrāsi*.
- सग्धि** *samdhā* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 358; Sk. *sandhikā*, Pk. *sandhi*, OG. *sāndhi*, MG. *sā* lh. m. "unestrated bull" should be separated from *sā* lh. m. "unestrated female camel". The former is related to Sk. *sandhā* 'unestrated'; the source of latter is not clear. Sk. *sandhikā* is a Sanskritization of Pk. *sandhi* (hence short -i in OG. and -zero in MG.). Bloch *sār*, Turner *sār*.
- संग्धि** *samdhā* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 453. Sk. *samdhāti* Pk. *sandhā* OG. *sūndha*, *sāndhiu*, Bloch *sādh*, Turner *sādhnu*.
- संग्धि** *samjadyai* "attained" past part. m. dir. sg. 461. Sk. *samjadyai* - cf. Sk. *sampatati*, v. s. v. *paṣai*, Bloch *sāpāṣā*.
- संभारु** *sambhārai* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; *sambhāraim* 3rd pl. 604; *sambhāraim* 1st sg. 345; *sambhāratā* pres. part. obl. 345, *sambhāri* past part. f. 601. Sk. *sambharati* 'collects', *sambhārayati*, Pk. *sambhārei* 'garnishes'; MG. *sambhāvū* 'to remember' and *sambhār* 'masala used in cooking preparations'. Turner *samānu*, *sambhāru*.
- संभारु** *sambhālai* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529; *sambhālan* imp. 2nd pl. 329; *sambhālata* pres. part. (unenlarged) 86; *sambhālatau* pres. part. m. dir. sg. 426, *sambhālata* obl. pl. 426; *sambhālū* past part. m. dir. sg. 367, 519; *sambhālūm* n. sg. 109, *sambhālīyāsi* pass. 157, 420, *sambhālīyam* pass. pl. 371; *sambhālūtū* pass. pres. part. m. sg. 326; *sambhālī* inf. of purpose 426; *sambhālī* abs. 85, 109, 498. cf. MG. *bhāyū* 'to observe, see', *nihāyū* 'to see', *sābhāyū* 'to hear', *sambhāyū* 'to guard, take care of'. Sk. *bhālayate*, *nibhālayati* and *sambhālayati*. For *-r-* forms in MG. *sambhāvū*, *sambhār*, see under *sambhāra*. Turner *samānu*, *nīyānu*, *sambhāru*.
- सिंहदद्** *sindhaktu* proper noun m. dir. sg. 525.
- सिद्** *sindhu* proper noun m. dir. sg. 487.
- सिद्** *sindhai* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; *sindhatau* pres. part. m. dir. sg. 549. Sk. *sindhāti*, Pk. *sindhāsi*. Bloch *sindh*, Turner *sindhu*.
- सिद्** *sindhācu* "rook-salt" sub. dir. sg. n. 29. Sk. *sindhāvā-* Pk. *sindhāva-*.

दुग्ध *śūvala* "a type of salt" sub. dir. eg. n. 20. MG. *śūvala*; Do. *śūmalu* - Initial -*nm*-> -*a*- in MG. cannot be explained.

दुग्धि *śūñhi* "ginger" sub. f. eg. 314. also *śumthi* 291. Sk. *śūñhih*, *śūñhi* 'dry ginger'. Pk. *śūñhi*, MG. *śūth*; final -*i* in OG. may be a prakritic influence. Bloch *sūt*, Turner *sutho*.

दुग्धं *śaroum* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *śavīdi* loc. 3rd sg. 622; *śavītai* pass. pres. part. loc. eg. 80; lw. Ek. *śava* + OG. verbal inflection.

दुग्धानि *śmasāni* "to the burial ground" sub. n. loc. eg. lw. Ek. *śmasāni*, OG. *śmasān* + loc. eg. suffix -*i*.

दुग्धान्तं *śvādhya* "meditation, study." sub. m. dir. eg. (v. l. *śvādhya*) 109. lw. Ek. *śvādhya*, *śvādhya* (for *śnal* -*n* in OG. cf. Sk. *vinaya* - lw. in OG. *vinan* MG. *vano*, Sk. *śāstrīyaya* - lw. in OG. *śāstrānjan* MG. *śāstrājo*, etc.)

*

दुग्धि *śam* "I" 1st pers. pres. nom. eg. m. f. (v. l. *ham*, *śam*, *hūm*) 74, 85; Ek. *śam*, Pk. *śam*, *śam*. Initial *a*- before *h*- develops as a murmured vowel in MG. hū.

दुग्धि *śakārei* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *śakārei* (v. l.) 544. Sk. lex. *śakāra* "making of the sound *hak*", onomat. sound of calling Pk. *śakārei*, *śakārai*; MG. *śamkārū* "to drive"; also cf. MG. *śak* f. "call, shout, challenge". Bloch *śākṛē*, Turner *śākna*, *śakāna*.

दुग्धि *śadi* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk. *śadhī* m., Pk. *śadi* m., OG. *śadi* f. MG. *śep* f.

दुग्धि *śasthiyāra* "weapon" sub. n. dir. eg. 529. Sk. **śasta-kāra* - Pk. *śasthiyāra* - n Turner *śasthiyār*.

दुग्धि *śasthiyāra* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **śasta-kūṭa*-; (Sk. *śastab* and *kūṭam* "mallet" Pk. *kūṭa*) Pk. **śastha-ūṭa*-. MG. *śasthoṭa*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *hetro*.

दुग्धि *śarai* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg; *śarivā* inf. of purpose 7. Sk. *śarati*, Pk. *śarai*. Bloch *śarpē*, Turner *harno*.

दुग्धि *śarai* "pleased" past part. m. dir. eg. 429. *śaraiyā* (v. l. *śarīyā*) pl. 142. Sk. *śarati*, *śarita*; MG. *śarath* indicates that *ś*- should be interpreted as -*kh*- and hence the intervening *ś* **harai*, **hariga* should be independent of the Pk. *harai*.

दुग्धि *śarigūla* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. eg. m. 20. Ek. *śarigūla* - m., Pk. *śarigūla* - m. n.

दुग्धि *śarāra* "cause to shake. move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Pk. *śarāra*. MG. *śarvū*; but cf. Hindi *hāra*, Panjabi *hāra*; Dravidian origin is suggested. Bloch *hāra*, Turner *hāra*, *hāra*.

दुग्धि *śaridatta* proper noun m. dir. eg. 425.

दुग्धि *śalaya* "light (of weight)" adj. dir. eg. m. 602. Probably the text should be *śalayan*; cf. MG. *śalva*. Sk. *śalgha*, *śalghaka*, Pk. *śalva*-, *śalva*-; Bloch suggests Dravidian origin. Bloch *śalv*, Turner *śalva*, *śalv*.

दुग्धि *śara* "now" adv. 452, 590. (v. l. *śara*) 480; MG. *śara*; cf. H. and other Biharī dialects *śa*, *śa*, *śai* etc. Absence of -*b*- forms in the western group leads Chatterji (ODBL p. 856) to suggest Sk. *śara*, Pk. *śara*; for the *a*- of the demonstrative base cf. Sk. *śara*, *śara*, *śara* etc. *h*- in Guj. cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *śara*, Pk. *śara* MG. *śara*. OG. alternant *śara* with -*i*- in the initial syllable is properly explained by Pk. *śara*; also OG. *śara* - *śara* are explained as extended forms of *śara*-. Thus, MG. *śara* and *śara*, *śara* (dialectal) should be kept apart

दुग्धि *śara* "just now" adv. 142, also *śara* 465, 573. for dir. s v. *śara*

दुग्धि *śarāra* "laughing, jesting" pres. part. m. dir. eg. 223, 514, 536. Ek. *śarāra*, Pk. *śarāra*; Bloch *śarāra*, Turner *śarāra*.

दुग्धि *śarāra* proper noun m. dir. eg. 461.

दुग्धि *śarāra* "drove out" past part. m. dir. eg. 428. Pk. *śarāra* f. "call"; MG. *śarāra* to drive; v. s v. *śarāra*.

दुग्धि *śarāra* "shop" sub. eg. 286, 478, also *śarāra* 178; Sk. *śarāra* m. "market". lex. *śarāra* f.; Pk. *śarāra* - m. *śarāra*, *śarāra* f. "small shop", MG. *śarāra* f. n. Turner *śarāra*.

दुग्धि *śarāra* "bone" sub. n. dir. eg. 245. MG. *śarāra* n. "bone" Pk. Do. *śarāra*; Bloch suggests connection with Sk. *śarāra* n. "bone", *śarāra* f. "kernel of fruit", *śarāra* f. "round pebble", but -*śarāra*->-*śarāra*- cannot be explained. Bloch *śarāra*, Turner *śarāra*.

दुग्धि *śarāra* "knd" sub. m. dir. sig. 24; *śarāra* inf. 524, 359; also loc. eg. 544; *śarāra* inf. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. *śarāra*, Pk. *śarāra*-. Bloch *śarāra*, Turner *śarāra*.

- संतापद्** *sāntāpādi* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. samśāpāyati Pk. samśāveci, MG. sātāvū; note the loss of nasal in most of NIA languages. Turner sātānu.
- संथारत** *sānthārau* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 541; sānthārai loc. sg. 323; sānthārā obl. 338; MG. sūthro 'bed on which a person is placed before death'; Sk. samśāra-, Pk. samthār, OG. ext.
- संदिशावत्** *sāndiśāvāt* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. samśiśati, Pk. samśiśai, caus. samśiśāveci.
- संदेश** *sāndēśau* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. samśeśa- Pk. samśeśa- ext. in OG.
- संपद्य** *sāmpadyāna* "act of lighting (fire)" sub. n. 440; note OG. -s- for -kh-. Sk. samdhakāpa- Pk. samdhukkhaṇa-.
- संनिवेशि** *sāmniveśi* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. samniveśa- Pk. samniveśa-.
- संपद्य** *sāmpadyai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. sampadyate Pk. sampajjai.
- संबन्धि** *sāmbandhiu* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; sambandhiu n. sg. 115; sambandhiyām n. pl. 135. Sk. sambandhi Pk. sambandhi ext. in OG.
- संबन्धित** *sāmbandhira* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. sambandha- (v. s. v. sambandhiu) as a verbal stem.
- संभव** *sāmbhava* proper noun m. dir. sg. 110.
- संभवद्** *sāmbhavaim* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl. 433; sambhāvīu caus. past part. m. dir. sg. 461; sambhāvītau pass. pres. part. m. dir. sg. 110; sambhāvī abs. 554. Sk. sambhavati, Pk. sambhavai, lw. Pk.
- संभार** *sāmbhāra* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. sambhārah Pk. sambhāro m. 'collection'. v. s. v. sambhāra.
- संभूय** *sāmbhūy* "having adorned, provided" abs. 515. lw. Sk. sambhūyati, sambhūy- + OG. abs. suffix.
- संभवत्प्रिय** *sāmbhavaṇīya* "annual" sub. adj. 385; Sk. sambhavara-, sām̐bhavaraika, Pk. sambhavaṇīya- lw. Pk.
- संभवत्** *sāmbhavaṇī* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; sambhavātau pres. part. m. dir. sg. 110. lw. Sk. sambhavate, sambhav- + OG. verbal suffixes.
- संहर्षि** *sāmhari* "having destroyed, withdrawn" abs. 463. Sk. samharati Pk. samharai, lw. samhar- + OG. abs. suffix.
- संगी** *sāṅgi* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 416, also sub. inst. 578; cty. not clear, cf. Sk. saṅgati 'belonging to the same family', see Turner sāṅgu.
- संगत** *sāṅgatau* "moving, going" pres. part m. dir. sg. 576. Sk. saṅgacati, Pk. samcarai.
- संघि** *sāṅghī* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 358; Sk. saṅghikā, Pk. saṅghī, OG. sāṅghī, MG. sāṅgh m. 'uncastred bull' should be separated from sāṅgh, sāṅghī f. female camel'. The former is related to Sk. sāṅgha 'uncastred'; the source of latter is not clear. Sk. saṅghikā is a sanskritization of Pk. saṅghī (hence short-*i* in OG and -zero in MG.). Bloch sār, Turner sār.
- संघि** *sāṅghī* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 455. Sk. samdhadhāti Pk. samdhāi OG. sām̐dhai, sām̐dhiu, Bloch sām̐gh, Turner sām̐dhu.
- संपदित** *sāmpadīu* "attained" past part m. dir. sg. 461. Sk. sampatita- cf. Sk. sampatati, v. s. v. pajjai, Bloch sām̐paj.
- संभरद्** *sāmbharaṇi* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; sambharaim 3rd pl. 604; sambharūm 1st sg. 315; sambharatī pres. part. obl. 345. sambhari past part. f. 604. Sk. sambharati 'collects', sambharayati, Pk. sambhāre 'garnishea'; MG. sambhārvū 'to remember' and sambhār 'maala used in cooking preparations'. Turner samānu, sambhāru.
- संभरद्** *sāmbharaṇi* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529; sambharaṇi imp. 2nd pl. 329; sambhā-lata pres. part. (unenlarged 86); sambhālatu pres. part. m. dir. sg. 426; sambhālatā obl. pl. 426; sambhāliu past part. m. dir. sg. 367, 519; sambhālīu n. sg. 109; sambhālīyai pass. sg. 157, 420; sambhālīyām pass. pl. 371; sambhālītau pass. pres. part. m. sg. 326; sambhālīvaṇi inf. of purpose 426; sambhālī abs. 85, 109, 498. cf. MG. bhāyū 'to observe, see', nihāyū 'to see', nibhāyū 'to hear', sambhāyū 'to guard, take care of'. Sk. bhālayate, nibhālayati and sambhālayati. For -r- forms in MG. sambhārvū, sambhār, see under sambharai. Turner samānu, niyānu, sambhāru.
- सिंहद** *sāmbhaddu* proper noun m. dir. sg. 525.
- सिंह** *sāmbhu* proper noun m. dir. sg. 487.
- सिंह** *sāmbhu* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; sambhātāu pres. part. m. dir. sg. 519. Sk. siṅhāti, Pk. siṅhāi. Bloch siṅhā, Turner siṅgu.
- सिंह** *sāmbhu* "rock-salt" sub. dir. sg. n. 20. Sk. samdhava- Pk. samdhāra-.

दुसुदु *śūśala* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20 MG same[al]; De. subcāla-. Initial -m- > -n- in MG. cannot be explained.

दुसुदु *śūśā* "ginger" sub. f. sg. 314. also *śūśā* 231. Sk. *śūśāh*, *śūśāhī* 'dry ginger'. Pk. *śūśāhī*, MG. *śūśā*; final -ī in OG. may be a prākṛitic influence. Bloch *śūś*, Turner *śūśā*.

दुसुदु *śaravā* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *śaravā* fut. 3rd sg. 622; *śaravā* pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. *śaravā* + OG. verbal inflection.

दुसुदु *śmaśāni* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *śmaśānām*, OG. *śmaśān* + loc. sg. *śmaśāni*.

दुसुदु *śrādhya* "meditation, study" sub. m. dir. sg. (v. l. *śrādhya*) 109. lw. Sk. *śrādhya*, *śrādhya*- (for final -ā in OG. cf. Sk. *vinaya*-lw. in OG. *vinan* MG. *vaṇo*, Sk. *īstrañjaya*-lw. in OG. *īstrañjan* MG. *īstrañjo*, etc.)

*

दुसुदु *śāhā* "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. *śāhā*, *śāhā*, *śāhā*) 74, 85; Sk. *śāhā*, Pk. *śāhā*, *śāhā*. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. hū.

दुसुदु *śākārai* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *śākārai* (v. l.) 544. Sk. lex. *śākārai* "making of the sound *hak*", onomat. sound of calling. Pk. *śākārai*, *śākārai*; MG. *śākāravū* "to drive"; also cf. MG. *śākā* f. 'call, shout, challenge'. Bloch *śākāp*, Turner *śākāna*, *śākāra*.

दुसुदु *śāḍi* "wooden letters" sub. f. dir. 402. Sk. *śāḍi* m., Pk. *śāḍi* m., OG. *śāḍi* f. MG. *śāḍi* f.

दुसुदु *śāḍiyāra* "weapon" sub. n. dir. sg. 529. Sk. **śāḍi-kāra*- Pk. *śāḍiyāra*-n. Turner *śāḍiyāra*.

दुसुदु *śāḍiyāra* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **śāḍi-kāra*-; (Sk. *śāḍi* and *kūḍi* m. 'mallet' Pk. *kūḍi*) Pk. **śāḍi-kāra*- MG. *śāḍiyāra*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *hoḍo*.

दुसुदु *śāḍi* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg.; *śāḍi* inf. of purpose 7. Sk. *śāḍi*, Pk. *śāḍi*. Bloch *śāḍi*, Turner *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* "pleased" past part. m. dir. sg. 429. *śāḍi* (v. l. *śāḍi*) pl. 142. Sk. *śāḍi*, *śāḍi*; MG. *śāḍi* indicates that - should be interpreted as -kh- and hence the intervening stage **śāḍi*, **śāḍi* should be independent of the Pk. *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. sg. m. 20 Sk. *śāḍi*-m., Pk. *śāḍi*-m. n.

दुसुदु *śāḍi* "cause to shake, move" v. cans. pres. 1st sg. 309. Pk. *śāḍi*. MG. *śāḍi*; but cf. Hindi *śāḍi*, Panjabi *śāḍi*; Dravidian origin is suggested. Bloch *śāḍi*, Turner *śāḍi*, *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* proper noun m. dir. sg. 425.

दुसुदु *śāḍi* "light (of weight)" adj. dir. sg. m. 602. Probably the text should be *śāḍi*; cf. MG. *śāḍi*. Sk. *śāḍi*, *śāḍi*, Pk. *śāḍi*, *śāḍi*, Bloch suggests Dravidian origin Bloch *śāḍi*, Turner *śāḍi*, *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* "now" adv. 432, 390, (v. l. *śāḍi*) 480; MG. *śāḍi*; cf. *śāḍi* and other Bihari dialects *śāḍi*, *śāḍi*, etc. *śāḍi* forms in the western group leads Chatterji (ODBL p. 856) to suggest Sk. *śāḍi*, Pk. *śāḍi* for the demonstrative base (cf. Sk. *śāḍi*, *śāḍi*, *śāḍi* etc. *śāḍi* in Guj. cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *śāḍi*, Pk. *śāḍi* MG. *śāḍi* OG. alternant *śāḍi* with -i- in the initial syllable is properly explained by Pk. *śāḍi*; also OG. *śāḍi*-*śāḍi* are explained as extended forms of *śāḍi*-. Thus, MG. *śāḍi* and *śāḍi*, *śāḍi* (dialectal) should be kept apart

दुसुदु *śāḍi* "just now" adv. 142, also *śāḍi* 465, 573. for der. s. v. *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* "laughing, jesting" pres. part. m. dir. sg. 223, 314, 536. Sk. *śāḍi*, Pk. *śāḍi*; Bloch *śāḍi*, Turner *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* proper noun m. dir. sg. 461.

दुसुदु *śāḍi* "drove out" past part. m. dir. sg. 428. Pk. *śāḍi* f. "call"; MG. *śāḍi* to drive; v. s. v. *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* "shop" sub. sg. 396, 478, also *śāḍi* 478; Sk. *śāḍi* m. 'market', kr. *śāḍi* f.; Pk. *śāḍi*-m. *śāḍi*. *śāḍi* f. "small shop", MG. *śāḍi* f. n. Turner *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* "bone" sub. n. dir. sg. 245 MG. *śāḍi* n. 'bone' Pk. De. *śāḍi*; Bloch suggests connection with Sk. *śāḍi* n. 'bone', *śāḍi* f. 'kernel of fruit', *śāḍi* f. 'round pibble', but -*śāḍi*- > -*śāḍi*- cannot be explained. Bloch *śāḍi*, Turner *śāḍi*.

दुसुदु *śāḍi* "hand" sub. m. dir. sig. 24, *śāḍi* inst. sg. 352, 359; also loc. sg. 545; *śāḍi* inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. *śāḍi*- Pk. *śāḍi*- Bloch *śāḍi*, Turner *śāḍi*.

- संतापद्** *samtāpādi* " troubles, harasses " v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. samtāpāyati Pk. samtāpāve, MG. sātāvū; note the loss of nasal in most of NIA languages, Turner sātānu.
- संथारु** *sānthāru* " a bed (of a monk), place where the monks live " sub. m. dir. sg. 541. samthārai loc. sg. 323; samthārā obl. 338; MG. sāthro 'bed on which a person is placed before death'; Sk. samstāra-, Pk. samthār, OG. ext.
- संदिशवत्** *sāmdisāvāt* " I get permission " v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. samdisāti, Pk. samdisai, caus. samdisāveī.
- संदेश** *sāmdesa* " message " sub. dir. sg. m. 192. Sk. samdeśa- Pk. samdesa- ext. in OG.
- संपन्न** *sāmpanna* " act of lighting (fire) " sub. n. 440; note OG. -s- for -kh-. Sk. samdhukṣaṇa- Pk. samdhukkhaṇa-.
- संनिवेशि** *sāmniveśi* " in the residence " sub. m. loc. sg. 112. Sk. samniveśa- Pk. samniveśa-.
- संपन्न** *sāmpajai* " succeeds, prospers, accrues " v. pres. 3rd sg. 588. Sk. sampadyate Pk. sampajjai.
- संबन्धि** *sāmbandhi* " relative " sub. m. dir. sg. 16, 519; sambandhiam n. sg. 115; sāmbandhiyām n. pl. 135. Sk. sambandhin Pk. sambāndhi ext. in OG.
- संबन्धित** *sāmbandhitau* " should be related " ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. sāmbandhitau- (v. s. v. sambandhitau) as a verbal stem.
- संभव** *sāmbhava* proper noun m. dir. sg. 110.
- संभवद्** *sāmbhavam* " likely to happen, develop; to produce " v. pres. 3rd pl. 433; sambhāvau caus. past part. m. dir. sg. 461; sambhāvitan pass. pres. part. m. dir. sg. 110; sambhāvī abs. 554. Sk. sambhavati, Pk. sambhavai, lw. Pk.
- संभार** *sāmbhāra* " goods, stuff " sub. m. dir. sg. 463. Sk. sambhārah Pk. sambhāro m. 'collection'. v. s. v. sambhārai.
- संभूय** *sāmbhūy* " having adorned, provided " abs. 515. lw. Sk. sambhūyati, sambhūy- + OG. abs. suffix.
- संभारयि** *sāmbhāriya* " annual " sub. adj. 385; Sk. samvatsara-, sāmvasarika, Pk. samvachariya- lw. Pk.
- संस्तवद्** *sānstavāt* " I praise " v. pres. 1st sg. 614; samstāvatan pres. part. m. dir. sg. 110. lw. Sk. samstavate, samstav + OG. verbal suffixes.
- संहर्ति** *sāmharti* " having destroyed, withdrawn " abs. 403. Sk. samharati Pk. samharai, lw. samhar- + OG. abs. suffix.
- सार्द्ध** *sārdh* " meet cordially, embrace " sub. int. sg. 416, also said inst. 578; ety. not clear. cf. Sk. saṅgīth 'belonging to the same family', see Turner sānu.
- संचरतः** *sāncaratām* " moving, going " pres. part m. dir. sg. 576. Sk. sañcarati, Pk. samcarai.
- संधि** *sāndhi* " female camel " sub. f. dir. sg. 311, 558, Sk. sandhikā, Pk. sandhi, OG. sāmthi, MG. sālh m. " uncastrated bull 'should be separated from sālh, sālhnī f. female camel'. The former is related to Sk. sādāh "uncastrated"; the source of latter is not clear Sk. sandhikā is a sanskritization of Pk. sathhi (hence short- in OG. and -zero in MG.). Bloch sār, Turner sār
- संधि** *sāndhi* " having connected, aimed " past part. loc. sg. 453. Sk. sandadhāti Pk. sāmthāi OG. sāmthai, sāmthiu, Bloch sālhi, Turner sādhnū.
- संपदित** *sāmpaditū* " attained " past part. m. dir. sg. 461. Sk. *sāmpatita- cf. Sk. sāmpatiti, v. s. v. padai, Bloch sārpaṇṇa.
- संभरद्** *sāmbharai* " remembers " v. pres. 3rd sg. 326, 345; sāmbharaim 3rd pl. 604; sāmbharūm 1st sg. 315; sāmbharatā pres. part. obl. 345. sāmbhari past part. f. 604. Sk. sāmbharati 'collects', sāmbharayati, Pk. sambhārei 'garnishes'; MG. sambhārvū 'to remember' and sambhār 'masala used in cooking preparations'. Turner samālnu, sambhāru.
- संभलद्** *sāmbhalai* " hears, listens " v. pres. 3rd sg. 429, 529; sāmbhalau imp. 2nd pl. 329; sāmbhalata pres. part. (unenlarged 86); sāmbhalatan pres. part. m. dir. sg. 426, sāmbhalatā obl. pl. 426; sāmbhalin past part. m. dir. sg. 367, 519; sāmbhaliarū n. sg. 109; sāmbhaliyai pass. sg. 157, 420, sāmbhaliyam pass. pl. 371; sāmbhaliyā pass. pres. part. m. dir. sg. 326; sāmbhalivā inf. of purpose 426; sāmbhali abs. 85, 109, 498. cf. MG. bhālvū 'to observe, see', nithālvū 'to see', sālhaivū 'to hear', sambhālvū 'to guard, take care of'. Sk. bhālayate, nithālayati and sambhālayati. For -r- forms in MG. sambhārvū, sambhār, see under sambhārai. Turner samālnu, niyālnu, sambhāru.
- सिंहदम्** *sīṅhadatu* proper noun m. dir. sg. 525.
- सिद्** *sīṅha* proper noun m. dir. sg. 487.
- सिंचद्** *sīncatī* " sprinkles " v. pres. 3rd sg. 521; sīncatan pres. part. m. dir. sg. 519. Sk. sīcētī, Pk. sīcāvi. Bloch sīcṇṇa, Turner sīcānu.
- सोपद्** *sōpāra* " rock-salt " sub. dir. sg. n. 20. Sk. saṅdhava- Pk. sīcāhava-.

दुषुद् अमृतम् "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. samēl; Dv. samēlā-. Initial -am- > -a- in MG. cannot be explained.

दुग्धिं अमृतिं "ginger" sub. f. sg. 314. also smṛtiḥ 291. Sk. smṛtiḥ. fanṭhi 'dry ginger'. Pk. smṛtiḥ, MG. smṛh; final -i in OG. may be a prakritic inflexion. Bloch sūt. Turner sutho.

एतद् अस्मै "I praise" v. pres. 1st sg. 377; stavāsi fut. 3rd sg. 622; stavāsi pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. stava + OG. verbal inflexion.

एतानि अस्मिन् "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. smāśānāt., OG. smāśān + loc. sg. smāśā -i.

एतद्वाचं अद्वयम् "meditation, study." sub. n. dir. sg. (v. l. svādhyāya) 109. lw. Sk. svādhyāyah, svādhyāya- (for final -a in OG. cf. Sk. vinaya- lw. in OG. vinas MG. vāso, Sk. istrāñjaya- lw. in OG. istrāñjān MG. satrumjo, etc.)

*

एतं अस्मि "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. hsm, hsa, hūm) 74, 85; Sk. aśm, Pk. aśam. aśam. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. hū.

एतद्वाचं आह्वयं "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also hākārei (v. l.) 544. Sk. lex. hākāra 'making of the sound hā', onomat. sound of calling. Pk. hākārei, hākārai; MG. hāmkārvū 'to drive'; also cf. MG. hāk f. 'call, shout, challenge'. Bloch hākānē, Turner hākān, hākārnū.

एते ह्यदि "wooden letters" sub. f. dir. 402. Sk. hādih m., Pk. hādī m., OG. hādī f. MG. hēf f.

एतद्वाचं अस्त्रियं "weapon" sub. n. dir. eg. 529. Sk. *hastā-kāra- Pk. hatthiyāra- n. Turner hatiyār.

एतद्वाचं अस्त्रियं "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. *hastā-kūta-; (Sk. hāstah and kūtam 'mallet' Pk. kūḷa) Pk. *hattha-ūla-. MG. hattho. Naasliation in OG. cannot be explained. Turner hotro.

एतद्वाचं अस्त्रियं "takes away, robs" v. pres. 3rd sg.; harivā inf. of purpose 7. Sk. hāraṭi, Pk. hārai. Bloch harēḷ, Turner haru.

एतद्वाचं अस्त्रियं "pleased" past part. m. dir. eg. 429. harāyā (v. l. harēyā) pl. 142. Sk. hāraṭi, hāraṭā; MG. harakh indicates that -a- should be interpreted as -kh- and hence the intervening stage *haraiḥ, *haraiḥ should be independent of the Pk. haraiḥ.

एतद्वाचं अस्त्रियं "sulphuret of arsenic, yellow pigment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. haritāla- m., Pk. haritāla- m. n.

एतद्वाचं अस्त्रियं "cause to shake. move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Pk. hālāi. MG. hālū; but cf. Hindi hālā, Panjabi hāllānā; Dravidian origin is suggested. Bloch hālnē, Turner hālnu, hāllinnu.

एतद्वाचं अस्त्रियं proper noun m. dir. eg. 425.

एतद्वाचं अस्त्रियं "light (of weight)" adj. dir. eg. m. 602. Probably the text should be halayau; cf. MG. hāyo Sk. laghah, laghakah, Pk. lahusa-, halusa-, Bloch suggests Dravidian origin. Bloch hājū. Turner halako, halau.

एतद्वाचं अस्त्रियं "adv. 452, 390. (v. l. hiva) 480; MG. hāve; cf. H and other Bihari dialects ab, abe, abai etc. Absence of -b- forms in the western group leads Chatterji (ODBL p. 856) to suggest Sk. evām, Pk. evam; for the a- of the demonstrative base cf. Sk. asaḍ, adya, ātra etc. h- in Guj. cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. adhūnā, Pk. adhūnā MG. hamgū. OG. alternant hiva with -i- in the initial syllable is properly explained by Pk. evam; also OG. havadām- hivadām are explained as extended forms of hāva-. Thus, MG. hampā and hāvya, hāvra (dialectal) should be kept apart.

एतद्वाचं अस्त्रियं "just now" adv. 142, also hāvaḍām 465, 573. for der s v hāva.

एतद्वाचं अस्त्रियं "laughing, jesting" pres. part. m. dir. eg. 223, 514, 536. Sk. hasati, Pk. hasai; Bloch hasēḷ, Turner hāsmn.

एतद्वाचं अस्त्रियं proper noun m. dir. eg. 461.

एतद्वाचं अस्त्रियं "drove out" past part. m. dir. eg. 428. Pk. hākā f. "call"; MG. hākārvū to drive; v. s. v. hākārai.

एतद्वाचं अस्त्रियं "shop" sub. eg. 386, 478, also hāṭṭā 478; Sk. hāṭṭah m. 'market', lex. hāṭṭī f.; Pk. hatta- m. hāṭṭigā, hāṭṭī f. "small shop"; MG. hāṭ f. n. Turner hāt.

एतद्वाचं अस्त्रियं "bone" sub. n. dir. eg. 245. MG. hār n. 'bone' Pk. De. hādā; Bloch suggests connection with Sk. āsthī n. 'bone', āsthī f. 'kernel of fruit', āsthīla f. 'round pebble', but -āsthā- > -dā- cannot be explained. Bloch hār, Turner hār.

एतद्वाचं अस्त्रियं "hand" sub. n. dir. sig. 38; hāthī inst. eg. 538, 559; also loc. eg. 543; hāthē inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. hāsthah. Pk. hattha-. Bloch hāt, Turner hāt.



दुःखे *duḥkhe* proper noun m, dir, eg, 430.

दुःखी *duḥkhi* "dries" v, pres, 3rd sg, 516, short-u-initial syllable may be graphic, Sk, śūyati Pk, sūyai (Sk, śūdyati, Pk, sūci, MG, sos-vū).

दुःखतः *duḥkhat* "father-in-law, wife's or husband's father" sub, m, dir, eg, 556, Sk, śvāsura, Pk, sasara- ext in OG, sasuru, initial -u may be graphic, or assimilatory, MG, sasro, v, e, v, sasura, Bloch śāsra, Turner sasuro.

दुःखम् *duḥkham* "joy, happiness" sub, n, dir, eg, 432, Sk, sukham Pk, suham OG, suh-u.

दुःखी *duḥkhi* "dries" v, pres, 3rd sg, 309, Sk, śukhah Pk, sukha-, sukka-, Bloch sukā, Turner suko, sukna.

दुःखयुः *duḥkhyuḥ* "drying -action of-" sub, n, dir, eg, 12, v, s, v, sūkai,

दुःखी *duḥkhi* "dry" adj, f, 601, v, s, v, sūkai, OG, sūk- + feminine suffix -i.

दुःखी *duḥkhi* "disgust, dislike" sub, f, dir, eg, 435, cf, MG, sūg, f, der, not known.

दुःखितः *duḥkhit* "suggested, indicated" past part, m, dir, eg, 501; śūcavaram caus, gen, n, eg, 10; śūcavaram n, pl, 10, Sk, śūcyate, śūcayati.

दुःखितः *duḥkhit* "purifies, becomes clear" v, pres, 3rd sg, 13, 172, 230; śūhāyati caus, abs, 484, Sk, śūhāyati Pk, śujhāi, Turner śujhna.

दुःखी *duḥkhi* "swollen" past part, f, dir, eg, 521, Sk, śūyate, śūhāh (cf, śūnyā- originally 'hollowness, emptiness' MG, sūn) Pk, sūn- sūna- MG, sūyū, sūyū, Bloch sūnā, Turner sūjnu.

दुःखी *duḥkhi* "sleeping" adj, past part, m, dir, eg, 447, 482; sūtai obl, eg, 446; sūtai loc, eg, 481; sūtai inst, eg, 259, Sk, sūptāh Pk, sutta, Turner sātnu.

दुःखी *duḥkhi* "carpenter" sub, m, 408, lw, Sk.

दुःखी *duḥkhi* "set of cutting, arranging, trimming" sub, n, eg, 440, lw, Sk, sūdāna- + karana.

दुःखी *duḥkhi* "sleeps" v, pres, 3rd sg, 163; sūyai pass, eg, 259; sūyāri cans, abs, 25, Sk, svāpati, Pk, suvai, MG, savū, Turner sātnu.

दुःखी *duḥkhi* "parrot" sub, m, dir, eg, 463, Sk, sūka- Pk, sūa- ext, -lau, MG, sūyo.

दुःखी *duḥkhi* proper noun m, dir, eg, 445.

दुःखी *duḥkhi* "a vegetable which grows under the ground" sub, n, dir, eg, 238, MG, sūrap, Der, not known.

दुःखी *duḥkhi* "heroism" sub, f, eg, 48, Sk, sūrah Pk, sūra, OG, sūra + tā,

दुःखी *duḥkhi* proper noun m, dir, eg, 464.

दुःखी *duḥkhi* "perspiration" sub, dir, sg, m, 309, Sk, svedah Pk, so, seu; MG, paraseo 'perspiration' Sk, prasvedah, OG, *paraseu, replaced by paraseo.

दुःखी *duḥkhi* "merchant, businessman (rich)" sub, m, obl, eg, 432, 548, Sk, śreṣṭhi Pk, saṭhi MG, śeṭh, Bloch set Turner seth².

दुःखी *duḥkhi* "a type of measure, more common as Jain theological term" sub, f, 459, lw, Sk, (not found in MW); Pk, seigā, seia.

दुःखी *duḥkhi* "service" sub, f, dir, eg, (v, l, sevā) 432, Sk, sevā Pk, sevā.

दुःखी *duḥkhi* proper noun m, dir, eg, 109.

दुःखी *duḥkhi* "one who lives by eating savāsa-sea weeds-" adj, m, dir, eg, 109, lw, Sk, sevāla + śhārin.

दुःखी *duḥkhi* "served" past part, m, dir, eg, 516; sevāna pres, part, m, dir, eg, 222; sevāyai pass, eg, 516, Sk, sevate Pk, sevai.

दुःखी *duḥkhi* "find" v, pres, 1st pl, 456, sodhātan pres, part, m, dir, eg, 382; sodhā abs, 325; cf, Sk, suddha-, soddham, which might have developed as the NIA stem sodh-; or this may be a lw, fr, Sk, sodhāyati, to avoid confusion with soh- from sobhate. see Turner sodhna.

दुःखी *duḥkhi* "sixteen" num, dir, eg, 74, Sk, godāśa, Pk, solasa, solaha, Bloch soḷḷ, Turner sora.

दुःखी *duḥkhi* "sixteenth" ord, obl, 222; solama loc, eg, 355, OG, sola + mau, v, a, v, sola.

दुःखी *duḥkhi* "whose bodies have withered, emaciated" adj, m, dir, pl, 110, Sk, śeṣita-kāya-, Pk, sośa + kāya; lw, Pk.

दुःखी *duḥkhi* "having reduced, shrunk" abs, 532, Sk, *sankṛta- 'put together'; śankṛtiḥ f, 'bringing together'; cf, Pa, sankṛtito 'shrivelled, shrunk' Pk, sankuda-, sankoda- 'contraction'.

दुःखी *duḥkhi* "caused to move" past part of the causal base m, pl, 22, lw, Sk, sankṛan- + OG, śv- iu.

दुःखी *duḥkhi* "pair, couple" sub, m, dir, eg, 433, Sk, saṅkṛta- Pk, saṅghāda- ext, OG.

दुःखी *duḥkhi* "control, restraint" sub, m, dir, eg, 573; Sk, saṅyama- Pk, saṅjama- lw, Pk.

दुःखी *duḥkhi* proper noun m, dir, eg, 484.

दुःखी *duḥkhi* "sides (two sides-right and left-of the body, Jain theological term)" sub, obl, pl, m, 100, 326; cf, MG, sāslo, saṅso 'pincers', the sides of the pincers have given a different meaning in this context 'having wiped the sides' saṅsāsā padicūḥ; Sk, saṅsāsā-, Pk, saṅsāsā-, Turner saṅso.

शकटापिता *śakṭāpīṭā* "father of one seated in a bullock-cart" sub. m. dir. sg. 91. lw. Sk. śakṭā-pīṭā.

शकटाल *śakṭāla* proper noun m. dir. sg. 435.

शकुन्तल *śakuntalā* proper noun m. dir. sg. 435.

शाश्वती *śāśvatī* "perpetual, eternal" adj. n. pl. 614. lw. Sk. śāśvatā-

शीकड़ *śīkau* "a shelf generally hung in the kitchen in which remains of cooked food are kept" sub. n. dir. sg. (v. l. *chikaum*) 434. Ved. Sk. śīkyām "a kind of loop or swing made of rope and suspended from either end of a pole or yoku to receive a load", Pk. *sikkaya-*, MG. *sikū*, *chikū* (dialectal); Bloch *sikē*, Turner *siko*¹.

शीतल *śītalā* proper noun m. dir. sg. 110.

शीतलु *śītalū* proper noun m. dir. sg. 112.

शुद्धबुद्धि *śuddhabuddhi* proper noun m. dir. sg. 516.

शोचतउ *śocatau* "lamenting" pres. part. dir. sg. m. 590; lw. Sk. *śoc-*, *śoc-* + *tau*.

शोष *śoṣa* "swelling" sub. m. dir. sg. 521. cf. Sk. *śoṣa-* m. "morbid swelling, tumour".

शोकर *śoṣkara* proper noun m. dir. sg. 559.

शोकर *śoṣka* "conch" sub. m. 21. lw. Sk.

शोति *śoṭi* proper noun m. dir. sg. 110.

शुभारसेतु *śubhāraseṭu* proper noun f. dir. sg. 480.

शुभारसेतु *śubhāraseṭu* proper noun m. dir. sg. 481.

समान *śamāna* "cemetery" sub. n. dir. sg. 360. lw. Sk. *śamānaṃ*.

श्रावक *śrāvaka* "householder (Jain expression)" sub. m. dir. sg. 467. lw. Sk.

श्राविका *śrāvika* "Jain woman" (f. of *śrāvaka*) sub. f. dir. sg. 510. lw. Sk.

श्रेष्ठि *śreṣṭhi* "(rich) merchant, businessman" sub. m. (v. l. *śreṣṭhi*) 8, 365. *śreṣṭhim* inst. sg. 506. lw. Sk. *śreṣṭhin*, probably an effort to Sanskritize the already common *śreṣṭhi* resulted in the vulgar Sanskrit *śreṣṭhi*.

श्रयण *śrayaṇa* proper noun m. dir. sg. 110.

*

स अ "he/she/that" dem. pro. m. f. 400, 420, 431, 465, 473. Sk. *śa*, *śā*; Pk. *śo*, *śi*. v. s. v. 8.

सङ्गि *śaṅgi* "with" post. pos. 22, 99, 128, 547, 578; sai inst. 3; Sk. *śaṅgim*, Pk. *śaṅgam*; note the loss of -h-; see Bloch 51.

सङ्गि *śaṅgi* "self" pro. dir. sg. 91. Sk. *śvayam*, Pk. *śayam*.

सङ्गी *śaṅgi* "by the co-wife" f. sg. 126. S. **śaṅgī*, *śaṅgī*; Bloch *śavat*, Turner *śaṅgī*. The reading should be *śaṅgi*, note the MG. co. note 80k.

सङ्गि *śaṅgi* "is capable" v. pres. 3rd sg. 33, 510, 557; *śaṅgam* 1st sg. 188, 512; also *śaṅgi* 339; *śaṅgi* post. part. m. dir. sg. 456, 464. *śaṅgiyam* pres. pl. (honorific) 490. Sk. *śaṅgī*; *śaṅgīte*. Pk. *śaṅgī*, *śaṅgī*, Bloch *śaṅgī*, Turner *śaṅgi*.

सङ्गल *śaṅgalam* "all" adj. adv. dir. sg. n. 7, (v. l. *śaṅgalau*, *śaṅgalū*) 94, 465; *śaṅgalam* pl. 327; also *śaṅgala* sg. 589, pl. 110; *śaṅgalū* m. sg. 10. *śaṅgalā* pl. 433; *śaṅgalā* obl. 66, 405; *śaṅgale* inst. sg. 381, *śaṅgale* loc. pl. 527; Sk. *śaṅgala-* Pk. *śaṅgala-* probably a late lw. in Pk. ext. in OG Bloch *śaṅgā*.

सतर *śatara* "seventeen" num. dir. sg. 281, also *śatara* 618; *śatarala* obl. sg. 281, 618; note the -t- in OG. MG. has geminated -tt-, *śattara*. Sk. *śatāśa*, Pk. *śattarasa*. Ap. *śattarasa*. Bloch *śatrā*, Turner *śatra*.

सतरमा *śataramā* "seventeenth" ord. obl. 222. *śattara* mai loc. sg. 355; note the -t- and *śatara* in OG. v. s. v. *śatara*. OG. ordinal *śataramau*.

सतहत्तर *śatahattara* "seventy-seven" num. dir. sg. (v. l. *śatahattara*, *śatahattara*). 74. cf. Sk. *śāptasaptatiḥ* f., Pk. *śattahattarim*. Turner *śatahattara*.

सतावन *śatāvana* "fifty-seven" num. 390; also *śatāvāna* 401. Sk. *śaptapañcāśat* Pk. *śatāvānaṃ*; note the -t- in OG, MG. has geminated -tt- *śattāvāna*; Turner *śatāvāna*.

सत्ताणवह *śattāṇavah* "ninety-seven" num. 613; Sk. *śatpāṇavatiḥ* f., Pk. *śattāṇavim*, MG. *śattāṇū*. Turner *śatāṇave*.

सत्ताविंस *śattāvimsa* "twenty-seven" num. 74, also in the idiom "śattāvīsa cauka atthottaraṃ saṃ" "twenty-seven multiplied by four = 108" 617; note that this OG. system of multiplication is similar to present day grammar school tradition of multiplication. Sk. *śaptāvimsatiḥ* f. *śaptāvimsat* f. Pk. *śattāvīsam*, Turner *śatāvi*.

सत्तौत्तर *śattottara* *śaya* "one hundred and seven" num. 423. Sk. *śatā-*, Pk. *śatta-*, *śattottara-* "more by seven".

सत्तासी *śattāśī* "eighty seven" num. 71. Sk. *śatpāñcāśatiḥ* f. Pk. *śattāśim*; -y- in OG. and MG. *śatpāśī* may be analogical cf. *ekyāśī*, *byāśī*, *tryāśī*, *coryāśī* etc. in MG. Turner *śatāśī*.

सत्तिहा *śattihā* 9. meaning and derivati known.

वृषि... a type of jiva which has a mind
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... in the ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... at the time ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... " ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (memory, remembrance) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (meaning to repair, cause)
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... like of the same type ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... is adjusted, is contained ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (has) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (filling, proper) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

वृषि... (is) ...
... २७, ३१ ६६ ...

षाट्ठी *ṣaṭṭhi* "sixty" num. dir. sg. 10, 121 Sk. *ṣaṭṭh* Pk. *ṣaṭṭhi* OG. *ṣaṭṭhi* MG. *ṣaṭṭhi* Bloch *sath*, Turner *sathi*

षाट्ठ *ṣaṭṭha* "sixty" num. dir. sg. 74; also *ṣaṭṭha* *śau* "one hundred sixty" 618 Sk. *ṣaṭṭh* f. Pk. *ṣaṭṭhi*-f. OG. expected form is *ṣaṭṭhi*, but *ṣaṭṭha* can be explained by analogical extension of -u from other numerals v. s. v. *ṣaṭṭha*

सात *sāta* "seven" num. dir. sg. 24, 73, *sāta* in-st. pl. 438 Sk. *saṭpā* Pk. *satta*, Bloch *sat*, Turner *sāt*.

सातगारव *sātagāraṇa* "complacent on account of happiness, strogance of happiness" (first part of a compound (*sātagāraṇa*) sub. 366, Sk. *sāta* + *gaurava*, lw. (Jain theological term) in Pk. *sāta* + *gāraṇa*.

सातमी *sātaṃi* "seventh" ord. f. dir. sg. OG. *sata+* ord. suffix *ma-u*, v. s. v. *sāta*.

साति *sāti* "with, together" meaning is not clear, nor is derivation, 463, (context: *tāharaṇa ghoḍna śāyana sāti*).

सात् *sātā* "cooked flour (sweetened)" sub. dir. sg. m. 288, Sk. *saktuh* m. Pk. *sattu-*, *sattas-*, OG. *sātū*; Bloch *sātū*, Turner *sātu*.

सावह *sāvahā* "accomplishes" v. pres. 3rd sg. 431 lw. Sk. *sāvahayati*.

सामह *sāmaha* "in front of, opposite" adj. adv. (v. l. *sāmaṇsu*, *sāmuhā*, *sāmuhum*, *śamuhā*) dir. sg. m. n. 73, 488, 516, 541, 549, *sāmuhā* obl. pl. 454; *sāmahi* f. sg. 362 Sk. *sāmukhah* Pk. *sāmuhā*-OG. ext. Bloch *samor*, Turner *sāmu*

सारियह *sāriyaha* "is accomplished" v. caus. pass. 3rd sg. 438, Sk. *sārati* Pk. *sarati* v. s. v. *sarium* Bloch *sariṇ*, Turner *sarṇu*.

सारिल *sārikhā* "equal" adj. obl. 51, v. s. v. *sārikhā*.

सारि *sāriṇ* "dice" sub. f. dir. pl. 483, Sk. *lex-sāri* f. "chessman" Pk. *sāri* f. "colourful container from which dice are tossed while gambling".

सास *sāsa* "breath" sub. m. 42, Sk. *svāśah* Pk. *sāsa-*, Turner *sāsa*.

साव *sāvā* "wife or husband's mother" sub. f. 201, Sk. *ivāṣṭhā* Pk. *śavāṣū-*, Bloch *sāvā*, Turner *sāvā*.

साहिउ *sāhiu* "held" past part. m. dir. sg. 536; *sāhi* abs. 435, 539, Sk. *sāvahayati* Pk. *sāhi* *sāhi*, OG. *sāhai*.

सि *si* "they" dem. pro. nom. of 3rd...

Pk. *sa* OG. *sa* analogically influenced by Sk. *yo* Pk. *yo* OG. *yo*, l. *sa* where, 41 (Sk. *yo*) is used.

सिहित *sāhiṭa* "latent" past part. m. dir. sg. 367. (The initial *h* is a scribal error, after *mo* has long -i-), Sk. *sāhiṭa* Pk. *sāhiṭa*, Bloch *sāhiṭa*, Turner *sāhiṭa*.

सिद्धि *sādhya* "towards perfection, salvation" sub. f. loc. sg. 121 lw. Sk. *sādhya* + OG. loc. suffix

सित *sita* "obl." adj. dir. sg. 160, Sk. *sita-*

सिवाह *sivāha* "becomes despondent, gets exhausted, exhausted" pres. sg. 245, lw. Sk. *sivāti*.

सिवाह *sivāha* "established" adj. dir. sg. n. 102, Sk. *sādhya*, Pk. *sādhya*-ext. OG. *sādhya*; notice MG. 'sādhū' with altered meaning 'straight', Turner *sādhya*.

सिम *sima* "upto, within the limit" post. pres. 110, also *sima* 523, Sk. *sīmān*, *sīmā*, Pk. *sīmā*, Bloch s v.

सिमपक *sīmāpaka* proper noun m. dir. sg. 547.

सिवाल *sivāla* "staying on the border, frontier" sub. dir. sg. m. 151, Sk. *sīmā*-Pk. *sīmāla-*, v. s. v. *sīmā*.

सिवाले *sivāle* "in winter" sub. loc. sg. 401, Sk. *sivālakā*, Pk. *sivāla*.

उ *u* "he" dem. pro. m. nom. sg. 109, 111, 363, Sk. *u*, sub. Pk. *u*, v. s. v. *u*.

सकुमारिका *sakumārīka* "a type of porri-like preparation." sub. f. 311. This is a Sanskritization of the Mū. *śūrajī*, lw. Sk.

सुखिउ *sukhiu* "happy" adj. dir. sg. m. 91, lw. Sk. *sukhi*, OG. *sukhi* ext. with -u.

सुजाण *sujāṇa* "intelligent, clever (man)" adj. dir. sg. m. 380; OG. *su* + *jāṇa*; v. s. v. *jāṇa*.

सुदम् *sudama* proper noun m. dir. sg. 547.

सुद्धि *suddhi* "purification" sub. f. 315, Sk. *suddhī*, Pk. *suddhi*, lw. Pk.

सुदसंउ *sudarsana* proper noun m. dir. sg. 445.

सुपाश्च *sūpāśca* proper noun m. dir. sg. 110.

सुभ *sūbha* "good, auspicious" adj. n. dir. sg. 435, Sk. *sūbha*; lw. Sk.

सुमति *sūmati* proper noun m. dir. sg. 110.

सुमित्त *sūmitta* proper noun m. dir. sg. 451, 534 550.

सुसंउ *sūsana* proper noun m. dir. sg. 621.

सुलहलदिक *sulahlalika* "sulahlala and others; sulahlala is a type of small insect" sub. 338,

वृषेय *vṛṣeya* proper noun m, dir, sg. 430.
 वृषद *vṛṣad* "dries" v. pres. 3rd sg. 516. short-
 initial syllable may be graphic. Sk. śūyati
 Pk. sūssai (Sk. śoṣyati, Pk. socei, MG. soṣ-vū).
 वृषात् *vṛṣāta* "father-in-law, wife's or hus-
 band's father" sub. m, dir. sg. 556. Sk. śvāsurah,
 Pk. asura- ext. in OG. asuraṇ, initial -
 may be graphic, or assimilatory. MG. sasro. v.
 s, v. asura, Bloch śāśā, Turner sauro.
 वृद्ध *vṛddha* "joy, happiness" sub. n, dir. sg. 432.
 Sk. sukham Pk. suham OG. suh-a.
 वृष्य *vṛṣya* "dries" v. pres. 3rd sg. 309. Sk. suṣkaḥ
 Pk. sukka-, sukka-. Bloch sokā, Turner suko,
 sukna.
 वृष्यत् *vṛṣyat* "drying - action of -" sub. n,
 dir. sg. 12, v. s. v. sūkai.
 वृष्यी *vṛṣyī* "dry" adj. f. 601. v. s. v. sūkai. OG.
 sūk- + feminine suffix -ī.
 वृष्य *vṛṣya* 'disgust, dislike' sub. f, dir. sg. 435. cf.
 MG. sūg. f. der. not known.
 वृषित *vṛṣita* "suggested, indicated" past part. m,
 dir. sg. 501; śūcavevaṇi caus. gen. n, sg. 10;
 śūcavevān m. pl. 10. Sk. śūcyate, śūcyati.
 वृष्यति *vṛṣyati* "purifies, becomes clear" v. pres. 3rd
 sg. 13, 172, 230; śūbhavi caus. abs. 484. Sk.
 śūbhayati Pk. sujjhai, Turner sujhu.
 वृष्यी *vṛṣyī* "swollen" past part. f, dir. sg. 521.
 Sk. śūyate, sūnāh (cf. śūnyā - originally 'hollow-
 ness, emptiness' MG. sūn) Pk. sūn- sūn-.
 MG. sujvū, sanvū, Bloch sunā, Turner sujnu.
 वृष्यत् *vṛṣyat* "sleeping" adj. past part. m, dir. sg.
 447, 482; sūta obl. sg. 446; sūtai loc. sg. 481;
 sūte inst. sg. 259. Sk. sūptāh Pk. sutta, Turner
 satno.
 वृष्यार *vṛṣyāra* "carpenter" sub. m. 408. lw.
 Sk.
 वृष्यारण *vṛṣyāraṇa* "act of cutting, arrang-
 ing, trimming" sub. n. sg. 440. lw. Sk. sūdana
 - + karaṇa.
 वृष्यी *vṛṣyī* "sleeps" v. pres. 3rd sg. 163; śūyai
 pass. sg. 259; śūyāri caus. abs. 25. Sk. svāpati,
 Pk. savai, MG. savū, Turner satno.
 वृष्यत् *vṛṣyat* "parrot" sub. m, dir. sg. 463. Sk.
 iṅka- Pk. suā-ext. -dau, MG. suṛo.
 वृष्य *vṛṣya* proper noun m, dir. sg. 445.
 वृष्य *vṛṣya* "a vegetable which grows under the
 ground" sub. n, dir. sg. 288. MG. sūrap. Der.
 not known.
 वृष्य *vṛṣya* "heroism" sub. f, sg. 48. Sk. śūrah
 Pk. sūra, OG. sūra + tā.

वृष्य *vṛṣya* proper noun m, dir. sg. 464.
 सेत् *set* "perspiration" sub. dir. sg. m. 309. Sk.
 svedah Pk. so, seu; MG. parsevo 'perspiration'
 Sk. prasvedah, OG. *parseva, replaced by
 paraso.
 सेत् *seth* "merchant, businessman (rich)" sub.
 m, obl. sg. 432, 548. Sk. śreṣṭhi Pk. seṭhi MG.
 seth, Bloch set Turner seth.
 सेत् *seth* "a type of measure, more common
 as Jain theological term" sub. f. 459. lw. Sk.
 (not found in MW); Pk. seigā, seā.
 सेव *seva* "service" sub. f, dir. sg. (v. l. sevā) 432.
 Sk. sevā Pk. sevā.
 सेवती *sevati* proper noun m, dir. sg. 109.
 सेवती *sevati* "one who lives by eating
 seaweeds - sea weeds -" adj. m, dir. sg. 109. lw.
 Sk. sevā + āhārin.
 सेवित *sevita* "served" past part. m, dir. sg. 516;
 sevata pres. part. m, dir. sg. 222; sevīyai
 pass. sg. 516. Sk. sevate Pk. sevai.
 सेवित *sevita* "find" v. pres. 1st pl. 456. sodha-
 ta pres. part. m, dir. sg. 382; sodhī abs. 325;
 cf. Sk. suddha-, sōdham, which might have
 developed as the NIA stem sodh-; or this may
 be a lw. fr. Sk. sōdhīyati, to avoid confusion
 with soh- from sobhate. see Turner sodhu.
 सेत *seta* "sixteen" num. dir. sg. 74. Sk. pōḍas,
 Pk. solasa, solaha. Bloch solā, Turner sora.
 सेत *seta* "sixteenth" num. obl. 222; sola-
 ma loc. sg. 355; OG. sola + mau, v. s. v. sola.
 सेत *seta* "whose bodies have wither-
 ed, emaciated" adj. m, dir. pl. 110. Sk. śoṣita-
 kāya-, Pk. soia + kāya; lw. Pk.
 सेत *seta* "having reduced, shrunk" abs.
 532. Sk. *samkṛta- 'put together'; samkṛtiḥ
 f. 'bringing together'; cf. Pa. samkuto
 'shrivelled, shrunk' Pk. samkda-, samkōla-
 'contraction'.
 सेत *seta* "caused to move" past
 part. of the causal base m pl. 22. lw. Sk.
 sankram- + OG. śv- + iu.
 सेत *seta* "pair, couple" sub. m, dir.
 sg. 435. Sk. samghāta- Pk. samghāta-ext. OG.
 सेत *seta* "control, restraint" sub. m, dir.
 sg. 573; Sk. samyama- Pk. samjama- lw. Pk.
 सेत *seta* "proper noun m, dir. sg. 481.
 सेत *seta* "sides (two sides-right and left-
 of the body, Jain theological term)" sub. obl.
 pl. m, 100, 326; cf. MG. sāsa, sāpa 'pincers',
 the sides of the pincers have given a different
 meaning in this context; Sk. sandāśa- 'having wiped the
 sides' sandāśa- paliḥi; Sk. sandāśa-, Pk.
 sandāśa-. Turner saśso.

- साट्टि *sāṭṭhi* "sixty" num. dir. sg. 10, 121. Sk. *ṣaṭṭhi* Pk. *saṭṭhi* OG. *saṭṭhi* MG. *sāṭṭhi*. Bloch *sāṭṭhi*. Turner *sāṭṭhi*.
- साट्ट *sāṭṭhu* "sixty" num. dir. sg. 74; also *sāṭṭhu* sau 'one hundred sixty' 618 Sk. *ṣaṭṭhi* f. Pk. *saṭṭhi*-f. OG. expected form is *sāṭṭhi*, but *sāṭṭhu* can be explained by analogical extension of -u from other numerals. v. s. v. *sāṭṭhi*
- सात *sāta* "seven" num. dir. sg. 28, 73; *sāte* inst. pl. 438. Sk. *saptā* Pk. *satta*; Bloch *sāt*, Turner *sāt*.
- सातमारव *sātāgarava* "complacent on account of happiness, arrogance of happiness" (first part of a compound (*sātāgaravādi*) sub. 566. Sk. *sāta* + *garava*, lw. (Jain theological term) in Pk. *sāta* + *garava*.
- सातमी *sātami* "seventh" ord. f. dir. eg. OG. *sāta* + ord. suffix *ma-u*, v. s. v. *sāta*.
- साति *sāti* "with, together" meaning is not clear. nor is derivation. 465. (context : *tāharau ghodau āpanau sāti*).
- साट्ट *sāṭṭu* "cooked flour (sweetened)" sub. dir. eg. m. 288. Sk. *saktah* m. Pk. *sattu-*, *sattna-*. OG. *sātū*; Bloch *sātū*, Turner *sātu*.
- सापट्ट *sāṭṭai* "accomplishes" v. pres. 3rd sg. 431 lw. Sk. *sāḥayati*.
- सामहट्ट *sāmahaṭṭu* "in front of, opposite" adj. adv. (v. l. *sāmmau*, *sāmahaṭṭu*, *sāmahum*, *sāmahaṭṭu*) dir. eg. m. n. 73, 488, 516, 545, 579. *sāmmuhā* obl. pl. 454; *sāmahi* f. sg. 562. Sk. *sammukhah* Pk. *sammaha-* OG. ext. Bloch *samor*. Turner *sāmu*.
- सारविपट्ट *saraviṭṭu* "is accomplished" v. caus. pass. 3rd sg. 438 Sk. *sarati* Pk. *sarati* v. s. v. *sarim*. Bloch *sarṇē*. Turner *sarnu*.
- सारिखा *sārīkhā* "equal" adj. obl. 51 v. s. v. *sārīkhā*.
- सारि *sāri* "dice" sub. f. dir. pl. 483. Sk. *hex-sāri* f. 'chessman' Pk. *sari* f. 'colourful container from which dice are tossed while gambling'.
- साम *sāma* "breath" sub. m. 42. Sk. *svāśah* Pk. *sāma-*. Turner *sāo*.
- साट्ट *sāṭṭu* "wife or husband's mother" sub. f. 201. Sk. *svairīh* Pk. *sasṭu-*. Bloch *sāṭṭu*, Turner *sāo*.
- साट्टि *sāṭṭi* "hell" past part. m. dir. eg. 556. *sāṭṭi* abs. 423, 559. Sk. *sāḥayati* Pk. *sāṭṭi* *sāṭṭai*, OG. *sāṭṭai*.
- सि *si* "they" dem. pro. nom. pl. 577; it occurs as a correlative, e. g. *ji nāṭṭā si nāṭṭā*. Sk. *sah*. Pk. *so* OG. *sa* analogically influenced by Sk. *yo* Pk. *jo* OG. *ji*. I.l.-where, *ti* (Sk. *te*) is used.
- सिगिट्ट *sighiṭṭu* "learn" past part. m. dir. eg. 365. (The initial *short -i-* is a scribal error, other mss. have long *-i-*). Sk. *sikṣate* Pk. *sikkhai*. Bloch *sikṣē*. Turner *siknu*.
- सिद्धि *siddhi* "towards perfection, salvation" sub. f. loc. eg. 121. lw. Sk. *siddhi* + OG. loc. suffix
- सित *sita* "old" adj. dir. eg. 466. Sk. *sīta-*.
- सिद्ध *siddha* "becomes despondent, gets afflicted, exhausted" pass. eg. 245. lw. Sk. *sīdati*.
- सिद्ध *siddha* "established" adj. dir. eg. n. 102. Sk. *siddham*. Pk. *siddha-* ext. OG.; notice MG. "siddhū" with altered meaning 'straight'. Turner *siddho*.
- सिम *simu* "upto, within the limit" post pos. 110; also *simu* 523. Sk. *simān*, *simā*, Pk. *simā*. Bloch *s.v.*
- सिमपट्ट *simapṭṭu* proper noun m. dir. eg. 547.
- सिमाट्ट *simāṭṭu* "staying on the border, frontier" sub. dir. eg. m. 451. Sk. *simā-* Pk. *simāla-*. v. s. v. *simā*.
- सियाले *siyale* "in winter" sub. loc. eg. 401. Sk. *sakālah*, Pk. *sīa-āla*.
- सु *su* "he" dem. pro. m. nom. eg. 109, 111, 365. Sk. *sah*, Pk. *so*, v. s. v. *sa*.
- सुकुमारिका *sukumarikā* "a type of pari-like preparation." sub. f. 311. This is a samskritization of the MG. *sūvājī*. lw. Sk.
- सुखि *sukhu* "happy" adj. dir. eg. m. 94. lw. Sk. *sukhi*, OG. *sukhu* ext. with -u.
- सुजाण *suṭṭhaṇ* "intelligent, clever (man)" adj. dir. eg. m. 586; OG. *su + jāṇu*; v. s. v. *jāṇai*.
- सुद्ध *suddhu* "purification" sub. f. 345. Sk. *suddhih*, Pk. *siddhi*, lw. Pk.
- सुद्ध *suddhu* proper noun m. dir. eg. 445.
- सुभा *suppha* proper noun m. dir. eg. 110.
- सुभ *sūbha* "good, auspicious" adj. n. dir. eg. 455. Sk. *subha-*; lw. Sk.
- सुमति *sumati* proper noun m. dir. eg. 110.
- सुमित्त *sumittu* proper noun m. dir. eg. 451, 534 559.
- सुमन *sumana* proper noun m. dir. eg. 521.
- सुहृद्वादि *suhṛḍvādī* "sulahals and others; suhalah is a type of small insect" sub. 233. 401. Der. not known.
- सुविधि *suvidhi* proper noun m. dir. eg. 110.

- हायियु *hāhiyū* "elephant" sub. dir. sg. m. 344;
hāhiyā pl. 74; Sk. hastī m., Pk. hatthi, OG.
hāthi- ext. with -u; Bloch hattī, Turner hāti.
- हारइ *hārai* "is defeated, loses" v. pres. 3rd sg.
470; hārium past part. n. dir. sg. 471; hāri abs.
470. Original causal is employed as a primi-
tive base. Sk. hārayati, Pk. hārei, bārai.
- हासउं *hāsauṃ* "laughter" sub. dir. sg. n. 520.
Sk. hāsyaṃ, Pk. hassa- n. OG. hāsa- ext. -uṃ.
- हिया *hiyā* "heart" sub. n. obl. sg. 111, 446, 578;
Sk. hīdayam Pk. hiasam, OG. hiyaṃ Bloch
hiyyā, Turner hiyo.
- हिच *hiva* "now" adv. 571. for der. s. v. hava.
- हिचदां *hivaḍāṃ* "just now" adv. 427, 576; for
der. s. v. hava.
- हिरालग *hirāḷaga* " (ornament) on which diamonds
are studded" sub. 519. Sk. hiraka- Pk. hīras,
OG. hīrā; Sk. lagyati, Pk. laggai, OG. suffix
-laga, lagi. cf. motūlaga.
- हिरिलु *hīlītu* "insulted, did not show respect"
past part. n. sg. 153. Pk. hīlā 'insults', prob.
connected with Sk. helā, or hīḍ- hī- hīḍati,
hīḷati. OG. hīla- is suffixed with Sk. past part.
suffix -ita, which in turn is suffixed by OG. -u.
Bloch heḷaṇē.
- हयणहाइ *hayaṇahāru* "that which is destined, that
which is going to be" sub. n. dir. sg. 179. OG.
(huyai) huyana + hāra.
- हउइ *heḥai* "below" adv. adj. sg. loc. (v. l. heḥi) 38;
heḥī f. 420; heḥbam m. dir. sg. 589; goes with
genitive or compounded with stem. Sk. adhāstāt
contam. npariḥāt would give *adhiḥāt; Buddh-
ist Sk. heḥā, heḥāto, Pk. heḥhā, heḥtha-.
- हो *ho* particle for address, vocative particle 580.
Sk. hō. Pk. ho -o is retained as a special
treatment in OG.
- होइ *hoi* "is, becomes" v. pres. 3rd sg. 74, 425,
(also used in fut. sense) 466; hoisii fut. 3rd
sg. 434, 530; hoisim pl. 538; hoisi 2nd sg.
427; hoisa 1st sg. 470, 473; hoisum 1st pl.
110; hoytai pres. part. loc. sg. 50, 539; -used
- as conditional. hoijū precative 3rd sg. 527
528; hoijūm 1st sg. 516, 571; hoī abs. 430
474; hoivaṃ ger. n. dir. sg. 420, hoivā inf. o
purpose 577. huyai v. pres. 3rd. sg. 109, 473
526; huyaim pl. 74; huum 1st sg. (in fut.
sense) 473. huu imp. 3rd sg. 386; hūyan past
part. m. dir. sg. 74, 85, 386; also hūnu, 38, hū
365; huyam n. sg. 74; hui f. sg. 91, 463;
huyā 538, (v. l. hūā) 112 pl; huyām n. pl. 85;
hūmtau pres. part. m. dir. sg. 522, 540, also
hūmtu 73, 425; hūmtā pl. 425, 473; as an
auxiliary after other past participle: mokṣiyā
humtā 538, also 401; also hūto m. sg. 402 and
hūtā m. pl. 425, 473; hūti f. sg. 425; humtai
loc. sg. 529; also humto 438; humtai inst. sg.
539; haata unenlarged pres. part. 426, haatai
enlarged pres. part. loc. sg. 386 used in condi-
tional sense. hūi abs. 463, 474. Sk. bhāvati,
*bhoti, Pk. hoī, hoai; Bloch hoṇē, Turner
hunu.
- होइपातनु *hoḍpātānu* "making a noise, making a
bet" sub. n. dir. sg. 12. De. huddā, hoḍḍa, MG.
hoḍ. f.; OG. hoḍa + pātānu lw. Sk.
- होला *holā* " parched grain " sub. m. obl. (in a
compound : puhūmkā bolāḍika) 502; MG. Oḷo
' parching of green seeds of gram; prepared
and consumed on the field as a part of festival.'
der. not known.
- हंस *haṃsa* proper noun m. dir. sg. 451.
- होदी *hōḍī* "earthen cooking pot" sub. f. sg. 175
late Sk. haṇḍikā f. Turner hāri.
- होइली *hōḍilī* "small earthen pot (for cooking)"
sub. f. sg. 178; for der. s. v. hārdī. MG. hāli,
hāḷli.
- हि *hi* emphatic particle. 38, 74, 108, 446, 454.
see Intro.
- हिंगलो *hiṅgalo* "Ferula Asa Fetida" sub. dir.
sg. m. 20. Sk. hiṅguh m. Pk. hiṅgula- m. n.
OG. ext. hiṅgulaṃ. MG. hīṅḷo. Bloch hīṅ,
hīṅgūla, Turner hiṅ.
- होइइ *hōḍī* "walks" v. pres. 3rd sg. 525;
hiṅḍatau pres. part. m. dir. sg. 514. Sk. dhātup-
hiṅḍato, Pk. hiṅḍai, MG. hīḍvū. Turner hīṅḍ

135; *liyata* pres. part. (unenlarged) 452; *liyatau* pres. part. m. dir. sg. 386;... *lidhau* past part. m. dir. sg. 416, 539; *lidhau* n. sg. 431, 416, 480, 481; *lidhā* m. pl. 396; *lidhi* f. sg. 74, 539;... *lijaina* pass. 3rd pl. 569; *lijatau* pass. pres. part. 431; . *levaam* ger. n. sg. 223; *levi* f. 401; *levā* obl. (inf.) 401, 417, 451, 463, 483, 558; *lei* abs. 112, 528 also le 430, 466, 488, 536. Sk. *lāti* replaced by *lei* (probably under the influence of *dei*, (Sk. *dadāti*), *nei* (*nayati*) in MI; OG. li-. The past participle *lita-* is similarly replaced by *lidhā-* on the analogy of *labhā-*: *ladhā-*, and ext. in OG. For the possible analogical influence of these forms see Tedesco JAOS 43; Turner also suggests Sk. *lāhate*; Bloch *lenē*, Turner *linu*.

विहीनी *lhitā* "being wiped, licked" pass pres. part. f. 402; Sk. *lhati*, Pk. *lihai*.

लीलावती *līlavatī* proper noun f. dir. sg. 473.

रुग्ण *luggā* "cloth garment" sub. obl. sg. n. 321. Turner connects Sk. *rugnāh*, Pk. *lugga-* "worn out" with this word for garment. Turner *luggā*.

रुग्णित *lūgu* "wiped out" past part. m. dir. sg. 74, 555 Pk. *lamchai* 'wipes, removes,' cleans (by wiping). MG. *luchvū* 'to wipe'.

रुहनु *lūhanu* "(act of) wiping" sub. n. sg. 12. Pk. *lūhai* 'to wipe' cf. OG. *lusan-* to wipe, s. v. *lūsin*.

रुसाल *lūsāla* "grammar school" sub. f. loc. sg. 432. Sk. *lūklā-sālā*, Pk. *leha-sālā*; replaced in MG by *nisā*].

रोचते *locanā* "I remonstrate" v pres. 1st. sg. 167. Used mainly by Jains, referring to notion of 'thinking'. lw Sk. *locate*, Sk. *loca-* + OG. verbal inflection

रोल *lofa* "flour" sub. dir. sg. m. 311 der. not known, probably connected with **lotyate*, cf. Sk. *lūhātup* *lojati*, Pk. *lottai* rolls, tumble down; cf. MG. *loṭvū* 'to roll (on ground)'

रोलतते *lohita* "combust" refers to the action of preparing cotton for making shivers "pres. part. dir. sg. m. 213. Sk. *loṭate* 'to gather into a heap or a lump'; Pk. *lohāi* 'processing cotton as it comes off the plant, ginning'. MG. *lohā* is used in this sense

रोचियते *lojānam* "to abolish, to transgress" ger. n. sg. 361; Sk. *lopyāte*, Pk. *loppai*.

रोचियते *lohānam* proper noun m. dir. sg. 386.

रोहि *lohā* "blood" sub. n. 25. Sk. *lohita-* n. "blood", Pk. *lohā-* n. Turner *lohū*.

रोलतनु *lohāhanu* "act of throwing" sub. n. dir. sg. (second member of a compound *kesalamkhanu*, *nikhalamkhanu*, *rulhira lamkhanu*) 12. der. v. s. v. *limkhāi*.

लोक *lokhala* "name of a heaven, acc. to Jains" proper noun m. sg. 26.

लौच्यपण *loṭṭapāṇam* "debauchery" sub. dir. sg. n. 475 lw. Sk. *loṭṭapā* + OG. suffix *pāṇam*.

लोचते *lōkhāi* "throws" v. pres. 3rd sg. 529; *lōkhliu* past part. m. dir. sg. 577; *lōkhhiyā* m. pl. 21; *lōkhliatau* pres. part. m. dir. sg. 213; *lōkhhiyāi* pass. sg. 577; *lōkhhi* abs. 386, 434. In MG. the root *lōkh-* survives dialectally (in the southern dialects), while the standard form is *nākh*. Sk. *namkṣati*. Turner BSOS iv, pp. 535.

लौघित *lōghū* "crossed, passed" past part. m. dir. sg. 85; *lōghū* abs. 168; Sk. *loṅghayati*, Pk. *lamghei*. Turner *nāghānu*.

लौघण *lōghāṇa* "by length" sub. inst. sg. n. 614. OG. *lōmba* + *paṇi*; dir. s. v. *lōmbā*.

लंब *lōmbā* "tall, distant" adj. m. pl. 616. Sk. *lambah* Pk. *lamba-*, Bloch *lāb*, Turner *lānu*.

लिङ्गण *lōṅghāṇam* "a type of sweet preparation" sub. dir. sg. n. 315, der. not known. -*ṭa-*um, apparently, are suffixes.

लीप *lōpa* "having besmeared, plastered" abs. 185. Sk. *lōpāti*, Pk. *limpāi*. Bloch *lōpā*, Turner *lōpa*.

लुट *lōṭai* "robs" v. pres. 3rd sg. 526; *lōṭiyāi* pass. 3rd sg. 518, Sk. *loṭṭati*, Pk. *lumṭai*. Bloch *lōṭā*, Turner *lōṭnu*.

*

वहिरि *vāiri* "enemy" sub. m. dir. sg. 538, also pl. 457. Sk. *vāiri*, Pk. *vairi-*. MG. *vāiri*, is the result of OG. ext. or later suffixation of -*i* to *vāri* (Sk. *vāiram*).

वह्निगण *vāhṅgāṇa* "brinjals" (*vāhṅgāṇa* *pramukhā*) sub. pl. 501. Pk. *vāhṅgāṇa* Pk. *vāhṅgāṇa-*, *vāhṅgāṇa-*, MG. *vāṅgāṇa*. Bloch *vāṅgi*, Turner *baigun bhira*.

वसण *vakhāṇai* "expounds, explains, comments" v. pres. 3rd sg. 438; *vakhāṇium* past part. dir. sg. n. 111; *vakhāṇāvi* abs. of the causal base 601. Sk. *vyākhyānam* Pk. *vakhāṇam*, derived also as a verb *vakhāṇai*, OG. *vakhāṇa-*. Note the change in meaning in MG. *vakhāṇ* 'praise', *vakhāṇvū* 'to praise, to appreciate'. Bloch *vakhāṇ*, Turner *bakhānu*, *bakhān*.

वसणु *vakhānu* "commentary, explanation" sub. n. dir. sg. 318. Sk. *vyākhyānam*, Pk. *vakhāṇam*, MG. *vakhāṇ* 'praise', v. s. v. *vakhāṇai*. Bloch *vakhāṇ*, Turner *bakhān*.

वच *vachā* "boy, child" term of endearment. sub. m. voc. sg. 58; *vachānu* voc. pl. 111, lw Pk. *vachā-*.

वृष्य varṣya name of a river f. dir. eg. 574.

वृष्य varṣya = affectionate kind" (second part of a compound mitrasavāhala) m. dir. eg. 577. lv. lk.

वृष्य varṣya "with" post. part. indicating instrumental. eg. 574, 567, 561; vāraṃ pl. 586. Hy. not known. MG. varṣ.

वृष्य varṣya "elder, ligner" adj. m. dir. eg. 427. 417; vāhi inst. eg. 471; vāhi old eg. 578. vāhi f. 590, 588 (idiomatic vāhiṃti 'act of defecation'). Sk. lx. vārah 'lag. lk. vāra-; MG. varṣ; note the absence of comparative lengthening in OG and MG; perhaps in early lv. from Panjabi or Sindhi. Bloch vā, Turner bāra.

वृष्य varṣya "weaving" pres. part. dir. eg. m. 213. Sk. vāyati, vāna 'the act of weaving'; Pk. vāyiti, probably changed to *vānati after Sk. vā-; vāyite; Pk. vāyana-; vānana-. MG. vāyū. Bloch vāyū, Turner banna.

वृष्य varṣya "wild fruit" sub. dir. pl. n. 432. OG. vāna+ phala-, Sk. vāna, Pk. vānaṃ OG. vāna. Sk. phalam Pk. phalam OG. phala.

वृष्य varṣya "in the other forest" sub. loc. eg. n. 577. Sk. vānāntara. Pk. vānāntara OG. vānāntara.

वृष्य varṣya "congratulates, welcomes" v. caus. pres. 3rd eg. 547. 562; vadhāvaṃ past part. m. dir. eg. 73, 558. Sk. vadhāpāyati Pk. vadhāvei MG. vadhāvū. Panjabi. Lahnda vadhāvei MG. vadhāvū. Panjabi. Lahnda and Sindhi cognates show absence of cerebralisation. Another evolute of the same in MG. is vadhāvi 'to cut', and Panjabi, Sindhi also has vadhāna, vadhāva respectively. Bloch vadhā, vadhāya, Turner bāra, bāra, bāra.

वृष्य varṣya "are caused to increase" v. caus. pass. 3rd pl. 485. Sk. vadhāto Pk. vadhāto OG. vadhāto + causal āra-. cf. MG. vadhāru; also similar forms andhāru 'to cause to improve' anāru 'to cause to sleep' etc. See Tessitori § 141; also s. v. vadhāva.

वृष्य varṣya "good" adj. m. (first part of a compound varṣapūra) 463; varī f. eg. 463. Sk. varam Pk. vāra.

वृष्य varṣya "chooses, marries" v. pres. 3rd eg. 471. Sk. varayati Pk. vāra.

वृष्य varṣya "years" sub. n. dir. pl. (v. l. varisa) 94; varasi loc. eg. 255. (v. l. varisi) 514; varasa inst. pl. (v. l. varisa-) 113. Note the possible dialectal variation between varasa- and varisa- 'sa- (early loan fr. Sk. vāra- to which it from MIA. evolute vāsa- in the

sense of 'rain' cf. Sāhā vasa f. 'rain', Sāhāsa vasa 'rain' . . . Bloch varasā; Turner bāra. bāra

वृष्य varṣya "rain" v. pres. 3rd eg. 480. varasa vasa caus. past part. m. dir. eg. 561; varasā- vāra pl. 517 Pk. varasā. early lv. from Sk. varṣa- see under varisa

वृष्य varṣya "non-seen" sub. m. dir. eg. 83 varasā loc. eg. 83. also varasā loc. eg. 401. Pk. varasa- kalya- varasā- cat in OG; s. v. varasā. MG. vāsa- 'non-seen' has replaced this word

वृष्य varṣya "suter, bridegroom" sub. m. dir. eg. 409. Sk. varāḥ lk. vāra- MG. var. Bloch var. Turner var?

वृष्य varṣya "boon blessing" m. dir. eg. 470. Sk. vārah Pk. vāra- MG. var.

वृष्य varṣya "in an undesirable way, ugly way" sub. eg. 25. Probably connected with Sk. vāra- v. s. v. varāṃ

वृष्य varṣya "ugly, undesirable, hostile, not in proper form" adj. dir. eg. n. 384. also varāṃsum 384. 629. also varāṃsum 25. 389. Sk. vāra- Pk. vāra- vāra- ext. in OG. Note the early loss of -i- in the open syllable. MG. varāṃ adj.

वृष्य varṣya "having described" abs. 987. varāvaṃ past part. m. dir. eg. 519. lv. Sk. varāyati, the causal base is taken as primitive and inflectional suffixes are attached to it.

वृष्य varṣya "stays, exists" v. Pres. 3rd eg. 420; varitāḥ pres. part. m. obl. eg. 514. lv. Sk. varitā. varitā-.

वृष्य varṣya "turned" past part. loc. eg. 38. lv. Sk. varitā-, varitā.

वृष्य varṣya "turning back" pres. part. m. dir. eg. 110; valatā obl. 604; valiyāḥ pass. eg. 151. Sk. valate, Pk. valai; MG. valū 'to turn'.

वृष्य varṣya "again" adv. 522, 519; again and again' valī valī 91. absolute form of the OG. base val-; s. v. valatan.

वृष्य varṣya "name of a disease?" valguliroga sub. m. dir. eg. 432. lv. Sk. valguli, meaning is not clear.

वृष्य varṣya "due to, as a result of" (also vānāna, vānāna and vānāna); 73, 94. OG. vāda + itan; cf. Sk. valatāḥ, valūt; Tessitori §. 72.2. suggests to connect Ap. hūntā to OG. -tan, -than ablative post-position of OWIT. This -itan may be connected with MI -hinto, -honto which are ablative suffixes, der. na- certain s. v. itan.

435; *liyata* pres. part. (unenlarged) 432; *liyatan* pres. part. m. dir. sg. 346;... *lilhan* past part. m. dir. sg. 416, 559; *lilhanu* m. sg. 431, 416, 480, 481; *lilhā* m. pl. 386; *lilhī* f. sg. 71, 539;... *lijaim* pass. 3rd pl. 569; *lijatan* pass. pres. part. 131; . *levaun* ger. n. sg. 223, *levī* f. 401; *levā* obl. (inf.) 101, 147, 151, 163, 483, 558; *lei* abs. 112, 528 also *le* 139, 166, 488, 536. *Sk. lāi* replaced by *lei* (probably under the influence of *dei*, (Sk. *daditi*), *nei* (*nayati*) in *MI*; *OG li-*. The past participle *lit-* is similarly replaced by *liddha-* on the analogy of *lābha-*: *laddha-*, and ext. in *OG*. For the possible analogical influence of these forms see Tedesco *JAOS* 43; Turner also suggests *Sk. lābhatē*; Bloch *kenē*; Turner *linu*.

लिहति *lihati* "being wiped, licked" pass pres part. f. 402; *Sk. lihati*, *l'k. lihāi*.

लिहति *lihātī* proper noun f. dir. sg. 473.

लघटा *lagṭā* "cloth garment" sub. obl. sg. n. 321 Turner connects *Sk. ragṭā*, *Pk. lagga-* 'worn out' with this word for garment. Turner *lagā*.

लसि *lasi* "wiped out" past part. m. dir. sg. 74, 555. *l'k. lamchāi* 'wipes, removes,' cleans (by wiping). *MG. lachvū* 'to wipe'.

लसु *lahanu* "act of) wiping" sub. n. sg. 12. *l'k. lūhāi* 'to wipe'. cf. *OG. lusa-* to wipe, s. v. *lūsa*.

लसाल *lesāla* "grammar school" sub. f. loc. sg. 432. *Sk. lekha-sālā*, *l'k. leha-sālā*; replaced in *MG. by nisāla*.

लौचडे *locanū* "I remonstrate" v. pres. 1st. sg. 167. Used mainly by Jains, referring to notion of 'thinking' *lw. Sk. locate*, *Sk. loca-* + *OG. verbal inflection*.

लौट *loṭu* "flour" sub. dir. sg. m. 311 der. not known; probably connected with **loṭyate*, cf. *Sk. Dhātup. loṭati*; *l'k. loṭai* rolls, tumble down; cf. *MG. āloṭvū* 'to roll (on ground)'.

लौहट *lohṭanū* "combing. refers to the action of preparing cotton for making slivers" pres. part. dir. sg. m. 213. *Sk. loṭato* 'to gather into a heap or a lump'; *l'k. lohāi* 'processing cotton as it comes off the plant, ginning'. *MG. lohṭvū* is used in this sense

लौचिडे *loṭisānū* "to abolish, to transgress" ger. n. sg. 361; *Sk. lupṭāte*, *l'k. lupṭai*.

लोचने *lohaneṣū* proper noun m. dir. sg. 386.

लोहि *lohi* "blood" sub. n. 25. *Sk. lohita-* n. 'blood', *l'k. lohāi* n. Turner *lohāt*.

लोक *loṃkhanu* "act of throwing" sub. n. dir. sg. (second member of a compound *keṣamkhanu*, *nakṣamkhanu*, *ruḥira loṃkhanu*) 12. der. v. s. v. *loṃkhāi*.

लोक *loṃkata* "name of a heaven, acc. to Jains" proper noun m. sg. 26.

लोकपाडे *loṃkapatānū* "debauchery" sub. dir. sg. n. 473 *lw. Sk. lampata* + *OG. suffix patānū*.

लोक *loṃkhāi* "throws" v. pres. 3rd sg. 529; *loṃkhāi* past part. m. dir. sg. 577; *loṃkhiyā* m. pl. 21; *loṃkhatanū* pres. part. m. dir. sg. 213; *loṃkhiyāi* pass. sg. 577; *loṃkhāi* abs. 386, 434 In *MG.* the root *loṃkh-* survives dialectally (in the southern dialects), while the standard form is *nākh. Sk. namkṣati*. Turner *BSOS* iv, pp. 533.

लोक *loṃghu* "crossed, passed" past part. m. dir. sg. 85; *loṃghu* abs. 168; *Sk. langhayati*, *l'k. langhet*. Turner *nākhānū*.

लोक *loṃkhanu* "by length" sub. inst. sg. n. 614, *OG. lamba* + *pati*; dir. s. v. *lamba*.

लोच *loṃbū* "tall, distant" adj. m. pl. 616. *Sk. lambab* *l'k. lamba-*, Bloch *lāb*, Turner *lamu*.

लोक *loṃkhanū* "a type of sweet preparation" sub. dir. sg. n. 315, der. not known. -*ta-um*, apparently, *aro* suffixes.

लोचि *loṃpī* "having besmeared, plastered" abs. 185. *Sk. lupṭāti*, *l'k. loṃpūi*. Bloch *l'pōē*, Turner *lipnu*.

लोक *loṃṭu* "robs" v. pres. 3rd sg. 526; *loṃṭiyāi* pass. 3rd sg. 518. *Sk. lupṭati*, *l'k. loṃṭai*. Bloch *loṃṭō*, Turner *loṃṭnu*.

*

वहिरि *vairi* "enemy" sub. m. dir. sg. 538, also pl. 457. *Sk. vāiri*, *l'k. vairi-*. *MG. vEri*, is the result of *OG. ext. or later suffixation of -i* to *vEr* (*Sk. vāiram*).

वहिरि *vairiyāna* "brinjals" (*vairiyāna* *pramukha*) sub. pl. 501. *l'k. vāiriyāna* *l'k. vairiyāna-*, *vairiyāna-*, *MG. vEgān*. Bloch *vāgi*, Turner *baigan bhira*.

वहिरि *vākhānū* "expounds, explains, comments" v. pres. 3rd sg. 438; *vākhānū* past part. dir. sg. n. 111; *vākhānū* abs. of the causal base *GOI. Sk. vyākhyānam* *l'k. vākhānam*, derived also as a verb *vākhānū*, *OG. vākhāna-*. Note the change in meaning in *MG. vākhānū* 'praise', *vākhānū* 'to praise, to appreciate'. Bloch *vākhānū*, Turner *bākhānū*, *bākhānū*.

वहिरि *vākhānū* "commentary, explanation" sub. n. dir. sg. 318. *Sk. vyākhyānam*, *l'k. vākhāna-*, *MG. vākhānū* 'praise'. v. s. v. *vākhānū*, Bloch *vākhānū*, Turner *bākhānū*.

वहिरि *vāccha* "boy, child" term of endearment. sub. m. voc. sg. 38; *vācchanū* voc. pl. 111, *lw. l'k. vāccha-*.

वृत्त varāṅga name of a river f. dir. eg. 574.

वृत्त varāṅga "affectionate, kind" (second part of a compound mitrasa-*vāḥala*) m. dir. eg. 557. lv lk.

वृत्त varāṅga "with" post. part. indicating instrumentality. eg. 94, 507, 521; valatm pl. 386. Ety. not known. MG. varā.

वृत्त varāṅga "elder, bigger" adj. m. dir. eg. 427. 417; valai inst. eg. 461; vala old eg. 578. val f. 390, 538 (idiomatic *vaiṅṅā* 'act of deflation'). Sk. kx, *vadrah* 'log'. Pk. *valā-*; MG. varā; note the absence of compensatory lengthening in OG. and MG; perhaps an early lw. from Panjabī or Sindhī. Bloch var, Turner *vaṅa*.

वृत्त varāṅga "weaving" pres. part. dir. eg. m. 213. Sk. *vṛatī*, *vāna* 'the act of weaving'; Pk. *virāṅ*, probably changed to **vānā* after Sk. *ū-*, *ṛyāte*; Pk. *virāna-*, *varāna-*. MG. *varū-*. Bloch *virā-*, Turner *banna*.

वृत्त varāṅga "wild fruits" sub. dir. pl. n. 435. OG. *varā+* *phala-*, Sk. *vanam*, Pk. *vaṅam* OG. *vana*. Sk. *phalam* Pk. *phalam* OG. *phala*.

वृत्त varāṅga "in the other forest" sub. loc. eg. n. 557. Sk. *vanāṅgare*. Pk. *vaṅāṅgare* OG. *varāṅgari*.

वृत्त varāṅga "congratulates, welcomes" v. caus. pres. 3rd eg. 547. 502; *vadhāvān* past part. m. dir. eg. 73, 558. Sk. *vadhāvāyati* Pk. *vadhāvai* MG. *vadhāvū*. Panjabī, I. shraṇḍa and Sindhī cognates show absence of centralisation. Another evolute of the same in MG. is *vāḥrū* 'to cut', and Panjabī, Sindhī also have *vadhāna*, *vadhāna* respectively. Bloch *vāḥrū*, *vadhāya*, Turner *harṅa*, *baṅai*.

वृत्त varāṅga "see caused to increase" v. caus. pres. 3rd pl. 485. Sk. *vadhāto* Pk. *vadhīcei* OG. *vadhā-* + causal *ā-*, cf. MG. *vadhāvū*; also similar forms *vadhāvū* 'to cause to improve' *svāvū* 'to cause to sleep' etc. See Tessitori §. 141; also s. v. *vadhāvai*.

वृत्त varāṅga "good" adj. m. (first part of a compound *varāpuruṅa*) 463; varī f. eg. 463. Sk. *varam* Pk. *vara*.

वृत्त varāṅga "chooses, marries" v. pres. 3rd eg. 471. Sk. *varayati* Pk. *varai*.

वृत्त varāṅga "years" sub. n. dir. pl. (v. l. *varā-*) 94; *varāsi* loc. eg. 255, (v. l. *varāsi*) 514; *varāse* inst. pl. (v. l. *varā-*) 113. Note the possible dialectal variation between *varāsa-* and *varāsa-*. Pk. *varāsa-* (early loan fr. Sk. *vāra-* to distinguish it from MIA. evolute *vassa-* in the

sense of 'rain' of Sindhī *vāsa* f. 'rain', Sinhalese *vāsa* 'rain'.) Bloch *varāsa-*, Turner *barsa*. *luai*!

वृत्त varāṅga "rains" v. pres. 3rd eg. 483, *varāsa-* *vinā* caus. past part m. dir. eg. 561. *varāsa-* *viya* pl. 517. Pk. *varāsa-* (early lw from Sk. *vāra-*) see under *varā-*.

वृत्त varāṅga "monsoon" sub. m. dir. eg. 85. *varāsa-* loc. eg. 38, also *varāsa-* loc. eg. 401; Pk. *varāsa* + *kal-*, *varāsa-*, ext. in OG.; s. v. *varāsa*, MG. (Omāsu 'monsoon' has replaced this word.

वृत्त varāṅga "suitor, bridegroom" sub. m. dir. eg. 469. Sk. *varāḥ* Pk. *varā-* MG. var. Bloch var, Turner *bar*!

वृत्त varāṅga "boon, blessing" m. dir. eg. 470. Sk. *vāra* Pk. *varā-* MG. var.

वृत्त varāṅga "in an undesirable way, ugly way" sub. eg. 25. Probably connected with Sk. *virūpa-* v. s. v. *varūm*.

वृत्त varāṅga "ugly, undesirable, hostile, not in proper form" adj. dir. eg. n. 384, also *varūyaum* 384, 629, also *varūyaum* 25. 389. Sk. *virūpa-*, Pk. *virūsa-*, *virūsa-*, ext. in OG. Note the early loss of *-i-* in the open syllable MG. *varū* adj.

वृत्त varāṅga "having described" abs. 937, *varāvin* past part m. dir. eg. 519. lv. Sk. *varāyati*, the causal base is taken as primitive and inflectional suffixes are attached to it.

वृत्त varāṅga "stays, exists" v. pres. 3rd eg. 426; *varitātā* pres. part m. obl. eg. 514. lv. Sk. *varitāte*, *varā-*.

वृत्त varāṅga "turned" past part. loc. eg. 38. lv. Sk. *varitā-*, *varitā*

वृत्त varāṅga "turning back" pres. part m. dir. eg. 110, *valatā* obl. 604; *valiyai* pa-s. eg. 451. Sk. *valate*. Pk. *valai*; MG. *valū* 'to turn'.

वृत्त varāṅga "again" adv. 522, 549; again and again' *vali vali* 94 absolute form of the OG. base *val-*; s. v. *valatā*.

वृत्त varāṅga "name of a disease?" *valguhroga* sub. m. dir. eg. 432. lv. Sk. *valguli*, meaning is not clear.

वृत्त varāṅga "due to, as a result of" (also *vasaitān*, *vasātan* and *vaśātan*); 73, 94. OG. *vāsa* + *itān*; cf. Sk. *vaśātaḥ*, *vaśitā*; Tessitori §. 72.2. suggests to connect Ap. *hāntān* to OG. *-itān*, *-itān* ablativ post-position of OWR. This *-itān* may be connected with MI *-hānto*, *-hānto* which are ablative suffixes der. n. uncertain s. v. *itān*.

एष सैन्य "his army" sub. f. dir. eg. 474. cf. 28. (dāśakal) विर f. 'army', also विरो शिर 'to run to help', cf. vyaharati. 1k. principal form valāra- 'scabbled out, elal' derived of. Śi-āhi valāra 'guard' Panjali valāra 'protection'. 1k. valāra?

वृत्त नदी "in the rivulet, stream" sub. m. loc. eg. 28. 1k. not clear; 1k. gives three words for rivulet: valāra, valāra and vira- of. 28. 28. 28. (OG) valāra is probably connected with 1k. valāra to f. 1. 1k. valāra

वृत्त नदी "sheets, calls out" v. pres. 3rd sg. 47. 1k. not clear; (pres. the text may be corrupt and correct reading may be valāra 'sheets, announces').

वृत्त नदी "in the conveyance of cart" sub. m. loc. eg. 329. 1k. valāra, 1k. valāra (OG) valāra.

वृत्त नदी "Having changed, assuming different forms" ale. 474. 1k. vikāraṅga- 'ability to assume different forms' ; 1k. 1k.

वृत्त नदी "wiped off, removed, falsified" past part. m. dir. eg. 514. 1k. 1k. vighāta- + OG, verbal suffixes.

वृत्त नदी "moves" pres. 3rd sg. 526. 1k. 1k. vicarati.

वृत्त नदी "between, in the middle, amidst" adv. 223. 1k. vica- = m. middle. Turner suggests 1k. vīcāh, nra- vīcāh- 'wide space' ; perhaps *dvi-āra- may explain 1k. vīcāh, short -i- in the initial syllable may be due to its usage as a postposition; MG. has vāo- (in formations like vācā, vācā, vācā; vācā has duplication --o- for emphasis). Turner loc.

वृत्त नदी proper noun m. dir. eg. 525.

वृत्त नदी proper noun m. dir. eg. 426.

वृत्त नदी vijayā's name of a town f. dir. eg. 425.

वृत्त नदी "retakes" v. pres. 3rd sg. (v. l. vadhāi) 28; vadhāim (v. l. vadhāim) pl. 578. MG. vadhū 'to retake'. Der. not known.

वृत्त नदी "destroyed, fled" past part. m. dir. eg. 483. 1k. vīnāṅga- 1k. vīnāṅga-, note the absence of compensatory lengthening.

वृत्त नदी "to destroy" caus. inf. of purpose 111. 1k. vīnāṅgaṅga, 1k. vīnāṅga.

वृत्त नदी proper noun m. dir. eg. 480.

वृत्त नदी "rivals, haters" sub. obl. pl. 11. 483. 1k. 1k. vidve- in, vidve- + OG, gender

वृत्त नदी "according to the custom" ale. 225. note usage of sum: OG, vidhi + sum, vidhi- 1k. 1k. sum is derived from 1k. 1k. 1k. see under sum.

वृत्त नदी "in modesty" sub. m. loc. eg. 369. 1k. 1k. vīnāṅga-.

वृत्त नदी "troubled" past part. m. dir. pl. 479. 1k. natati. *vīnāṅgaṅga, 1k. vīnāṅga. Note that -n- when followed by a flapped sound in the second syllable (in this case, { r }) is retained. cf. MG. kanarvū to give trouble, karas- 1k. ka-nar- 1k.

वृत्त नदी "having checked, known" abs. 55. 1k. vīnāṅga- 1k. vīnāṅga-; OG, vīnāṅga- + verbal inflection, the -i- in the initial syllable may be the influence of 1k. spelling on the scribe.

वृत्त नदी "destruction" sub. m. dir. eg. 1k. 1k. vīnāṅga-.

वृत्त नदी "modest, instructed" adj. dir. eg. m. 103; 1k. 1k. vīnāṅga.

वृत्त नदी name of a town dir. eg. f. 161.

वृत्त नदी "should be cheated" ger. dir. eg. m. 453. 1k. 1k. vīpratārayati, vīpratāra- + OG, verbal inflection.

वृत्त नदी "thinks" v. pres. 3rd sg. 590. 1k. vīnāṅgaṅga, an early 1k. in 1k. vīmarīṅga; v. v. v. vīnāṅga.

वृत्त नदी proper noun m. dir. eg. 110.

वृत्त नदी proper noun f. dir. eg. 516.

वृत्त नदी "thinks" v. pres. 3rd sg. 590; 1k. vīnāṅgaṅga 1k. *vīnāṅgaṅga, MG. vīnāṅga f. 'problem' (1k. vīmarīṅga- 1k. *vīnāṅgaṅga f.). v. v. v. vīnāṅga-ai.

वृत्त नदी "hurt, violated" past part. pl. 318. 1k. 1k. vī-radh- + OG, verbal inflection, past part. vīrādhā.

वृत्त नदी "in oblivion, disappearance" sub. loc. eg. 471. 1k. 1k. vilāya-.

वृत्त नदी "lamenting, bemoaning" pres. part. m. dir. eg. 491. 1k. 1k. vilāpate, vilāp- + OG, inflectional suffixes.

वृत्त नदी "enjoy" v. fut. 1st pl. 455. 1k. 1k. vilāṅgaṅga; 1k. vilāṅga- + fut. 1st pers. pl. suffixes sīyām (< 1k. -yāsam, this is a dialectal form in OG, probably Marwari, also noticed the -i- in vilāṅga- > vilāṅga- which indicates Marwari influence); the loss of -e- of the stem is due to the inflection suffix beginning with -i-.

वृत्त नदी "being observed" past. pres. part. m. dir. eg. 516; 1k. 1k. vilāṅgaṅga, vilāṅga.

- बहु** *bahu* proper noun in dir. eg. 351
- बसा** *basā* "grain, fat lard" sub. f. (in the com- pound *vasādi*) 439 Sk. *vasa*, Pk. *vasā*
- बसियाँ** *basiyān* "settled, stayed" past part. n. dir. pl. 579; *vasi* f. dir. eg. 333 Sk. *vi-anti*, Pk. *vasai*, Turner *basnu*.
- बहना** *bahana* "carrying" pres. part. m. dir. eg. 386, *valnata* obl. pl. 91, *bahata* caus. pres. part. obl. eg. 463, Sk. *vāhata* Pk. *vahai* Bloch *vāhānā*, Turner *bahann*
- बहिन** *bahina* "early" adv. dir. eg. n. 571, *vihala* m. dir. eg. 490, also *vahala* (v. l. *vihala*) 545, may be connected with the root *vah-* 'to flow' Bloch *vahila*
- बहू** *bahū* "wife" sub. f. dir. eg. 560 Sk. *vadhūh*, Pk. *vahū* Bloch *vahū*, Turner *vahu*
- बाह** *bah* "blow (wind)" past part. m. dir. eg. 514, Sk. *vātī* Pk. *vai*
- बाहिन** *bahina* "reading" sub. n. loc. eg. 117, Sk. *vācane* Pk. *vayane* OG. *vaiin*
- बाचने** *bachane* "reads" v. pres. 3rd pl. 614, *vachina* proc. 3rd eg. 373 In Sk. *vachayati*
- बाचरू** *bacharū* "calves" sub. dir. pl. 589, Sk. *vatsa-rūpa*, Pk. *vachā-rupa*, Pk. *vachā*, Bloch *vāstrū*, Turner *bachero*
- बाच्छल्य** *bachalya* "donation, gift" sub. dir. sg. n. 381; Sk. *vatsalyam* Pk. *vachalla-* 'affection, love' Note the change in meaning, and Sanskritisation of the OG. word.
- बाट** *bat* "in the yard, enclosure" sub. m. loc. eg. 25, Sk. *vatah*, Pk. *vata-* ext. in OG, *vafau*, MG. *vāro* Bloch *vāta*, Turner *bat*
- बाटि** *batī* "fence" sub. f. dir. eg. 181, Sk. *vātī* f. (cf. Sk. *vāta* m., v. s. v. *vājai*), Pk. *vāḍi*, *vāḍi*, MG. *vār* f. Bloch *vāḍā*, Turner *batī*.
- बाणउय** *baṇauya* "assistant in a bania's firm, usually the accountant" sub. m. dir. eg. 548; *vānautri* inst. eg. 518, Sk. *vānija-patrab*, Pk. *vāniutia-*, note the retention of -tr- in OG.; MG. *vānotar*.
- बाणवद** *baṇavad* "describes" v. pres. 3rd eg. 173, cf. Sk. *vāṇayati*, Pk. *vāṇpei*; *vāṇaveci*; the causal base is used as primitive in OG; note the validity of this etymology becomes questionable, cf. however Marathi *vān*, *vāṇi* 'colour', *prāise*; Bloch has tried to connect the two verbs M. *vāṇāṇā* 'to describe' and H. (G.) *bannā* 'to be ready'; but n-y alternations cannot be explained. Turner suggests another verb *vāṇāḥi* 'likes,' and further suggests that some other roots also may be confused. Bloch *vān*, *vāṇāṇā*, *vāṇāḥi*, Turner *baṇnā*.
- बाणारमी** *baṇāramī* name of a town f. dir. eg. 553.
- बाणिय** *baṇiya* "bania, shopkeeper" sub. m. dir. eg. 559, *vāṇiyā* obl. eg. 427, 171 Sk. *vāṇiyā*, Pk. *vāṇa-* ext. in OG. *vāṇiu*, here written as *vāṇiyā* Bloch *vān*, Turner *baṇiyā*.
- बात** *bat* "talk, news" sub. f. dir. eg. 142, 183; obl. eg. 748, Sk. *vārtā*, Pk. *vattī*, Turner *batī*.
- बाप** *baṇ* "increased" past part. dir. eg. n. 91 Sk. *vṛddha-* Pk. *vadhā-* ext. in OG, MG. *vadhū* (archaic). Bloch *vāḍhā*, Turner *baṇa*, *baṇarū* *vajpara* "uses, employs" v. pres. 3rd eg. 241 In Sk. *vājpara-* + OG. verb inflection.
- बाप** *baṇ* "strikes (the bell, gong)" v. pres. 3rd pl. 376, the causal is used as primitive base, Sk. *vadhayati*, Pk. *vāvai*.
- बार** *bar* "turn, occasion" sub. f. dir. eg. 85, Sk. *varah* m., Pk. *vāra-* m. Note that in Mī, and other IA languages *vāra* is f.; Pk. *vārū* f. (cf. Sk. *vela* f., Pk. *vela* f. MG. *voj* f. also has identical meaning and usage). Bloch *vār*, Turner *barī*.
- बार** *bar* "prevent, forbid" v. pres. 1st eg. 578, *vāri* abs. 520, Sk. *vāryati*, Pk. *vārei*, Turner *barū*.
- बारबार** *barabar* "again and again" adv. 338, OG. *vāra* reduplicated; for der. s. v. *vāra*.
- बाज** *baṇ* "name of a wire-like worm" sub. dir. sg. m. 21, Sk. *lox*, *vālakah* m. 'bracelet' prob. connected with *vāḥa-* 'hair', made of horse-hair. Mī, *vāḷo* 'wire', *vāḷi* f. 'nose-ring'—also cf. Sk. *vālayati* 'turns round', MG. *vāḷvū*, to sweep, to turn round'. Bloch *vāḷā*, Turner *balō*.
- बाज** *baṇ* "plants, sows" v. pres. 3rd eg. 482; *vavau* imp. 3rd eg. 481; *vāvivaum* ger. dir. eg. n. 280; *vāvātā* pres. part. m. dir. pl. 480; *vāvī* past part. f. dir. eg. 466, Sk. *vāpayati*, Pk. *vāvei*, Turner *baṇānn*.
- बावि** *baṇi* "in the well" sub. f. loc. eg. 74 Sk. *vāpī* f., Pk. *vāvī* f., MG. *vāv*.
- बास** *baṇi* "by residence" sub. m. inst. (loc. ?) eg. 453, Sk. *vāsa-* Pk. *vāsa-*, OG. ext. *vāsau*, MG. *vāso*, Bloch *vās*.
- बासंत** *baṇanti* proper noun f. dir. eg. 487.
- बासउय** *baṇauya* proper noun m. dir. eg. 110.
- बासतय** *baṇataya* "resident" sub. m. dir. pl. 1w. Sk. *vāstavya*.

STATE OF TEXAS, COUNTY OF DALLAS

Know all men by these presents that I, the undersigned, do hereby certify that the within and foregoing is a true and correct copy of the original as the same appears in the files of the undersigned.

Witness my hand and seal of office this 1st day of January, 1901.

Notary Public in and for the State of Texas.

My commission expires the 1st day of January, 1902.

My office is at the City of Dallas, Texas.

My name is J. M. [Name]

My residence is at [Address]

My qualification is [Qualification]

My term of office is [Term]

My salary is [Salary]

My bond is for [Bond]

My oath is [Oath]

My commission is [Commission]

My certificate is [Certificate]

My record is [Record]

Subscribed and sworn to before me this 1st day of January, 1901.

Notary Public in and for the State of Texas.

My name is J. M. [Name]

My residence is at [Address]

My qualification is [Qualification]

My term of office is [Term]

My salary is [Salary]

My bond is for [Bond]

My oath is [Oath]

My commission is [Commission]

My certificate is [Certificate]

My record is [Record]

My qualification is [Qualification]

My term of office is [Term]

My salary is [Salary]

My bond is for [Bond]

My oath is [Oath]

+ OG, passive, present participial and m, suffixes: -i-ta-u.

विवर्जद *vivarjati* "gives up" v. pres. 3rd sg. 513, lw, Sk, vivarjayanti, vivarja-.

विशद *viśāda* proper noun m, dir, eg. 463.

विशा *viśā* "a type of measure, sometimes used to measure ground and fields also," sub, f. 411. That which is a full measure is referred to as *viśā* in MG, and half-full is referred to as *das va-ā*; der, not known.

विषद *viśā* "with reference to, regarding to" post pos. 73, 369; stereotyped loc; Sk, *viśāya-viśāye*, OG, *viśā*; tho -*ā* is sanskritic influence on the scribe, MG, *viśā*.

विषया *viśayā* "belonging to the subject" sub, dir, pl, m, 326, lw, Sk, *viśāya-*, OG, *viśā* ext. *viśā*, the extended stem is declined for pl, *viśāyā*.

विषयासक्त *viśayāsakta* "attached to carnal pleasures" past part, m, dir, eg. (v. l. *viśayāsakta*) 516, lw, Sk, *viśayāsakta-*.

विशाहणद *viśāhanam* "material, apparatus" sub, n, dir, eg. 380, Sk, **viśāhāna*-Pk, **viśāhāna*-OG, ext. *viśāhānam* MG, *vaśānū* "materials (in the preparation of sweets)".

विषु *viśu* "poison" sub, n, dir, eg. 426, Sk, *viśam*; Pk, *viśa*-n. Turner bis.

विशोधकणु *viśodhakarānu* "act of purifying" sub, dir, eg. n. 41, Sk, *viśuddhi*-Pk, *viśuddhi*-OG, *viśodhi-*, -*karānu*; Sk, *karsnam*, Pk, *karānam*.

विस्तार *viśtāra* "in extenso, by expanding" sub, inst, eg. m, 424, 601, lw, Sk, *viśtāra*+OG, noun declension.

विस्तार *viśtāra* "spread" past part, f. 36, lw, Sk, v. s. v. *viśtāra*.

विस्तारित *viśtārita* "expanded" past part, of the causal base m, dir, eg. 514, *viśtāri* abs, 74, lw, Sk, *viśtārayati*, *viśtāra*+OG, past part, suffix -*ita*.

विषुह *viśuḥ* "attacks" v. pres. 3rd sg. 451, lw, Sk, *viśuḥ*; MG, *viśuḥ* "attacks" is derived from the same source; Sk, *viśuḥ*; Pk, *viśuḥ*.

विमय *viśmaya* "astonishment" sub, m, dir, eg. 482, (v. l. *viśmaya*) 110, lw, Sk, *viśmaya-*.

विसर *viśara* "goes out (to collect alms-food)" v. pres. 3rd sg. 511; *viśaram* pl. 94; *viśarin* past part, m, dir, eg. 85, also *viśariya* (v. l. *viśaria*) 331; *viśariva* inf. 112; *viśarivai* ("offers alms") 37; pres. 3rd sg. 316; *viśaravin*

past part, m, dir. eg. 112, *viśarivai* abs. 561 Sk, *viśarati*, Pk, *viśarai*.

विहल *viśala* "quickly, early" v. s. v. *viśalām*.

विहस *viśaha* "laugh, jest" v. pres. 3rd pl. 589; *viśahiyām* past part, n, pl. 589. Sk, *viśahati*, Pk, *viśahati*.

विक्रिय *vikriya* "to sell" ger. dir. eg. n. 506. Sk, *vikriyā*, replaced by Pk, *vikkipai*. cf. Sk, *vikraya*-MG. (dialectal) *vekvū*. Bloch *vikn*.

विक्रि *vikri* "to sell" inf. (obl.) 518; *vikri* loc. eg. (of past part, *vikri*) 477, Sk, *vikriyate*, Pk, *vikkei*, MG. (dialectal) *vekvū*; also v. s. v. *vikriyāvam*, vocat. Bloch *vikn*. Turner *baknu*.

विज *viśa* "lightening" sub, f, dir, eg. 20, 514. Sk, *viśyāt*, f. Pk, *viśu* f. Bloch *vij*, Turner *bijali*.

विजाप *viśāpana* "act of fanning" sub, dir, eg. 12, Sk, *viśāpate*, Pk, **viśāpā*, causal base *viśāpā-*. The nasal in MG, *viśāpā* 'fan' and Sindhī *viśāpana* cannot be explained; see under *viśāpā* Bloch *viśāpā*.

विनय *viśaya* "requests" v. pres. 3rd sg. 426; *viśayiv* past part, m, dir, eg. 112; *viśayiv* loc. eg. 188, Sk, *viśāpāyati*, Pk, *viśāpāyati*, *viśāpāyati*, Turner, *tiānti*.

वीर *viśa* proper noun m, dir, eg. 110, 522.

वीरसेतु *viśāsetu* proper noun m, dir, eg. 521.

वीस *viśa* "twenty" adj, num. 61. Sk, -*viśā* in compounds, Pk, *viśam* MG, *viś*, Bloch *viś*, Turner bis.

वीस *viśā* "twenty" adj, num. in the context *viśā* *navottara* 'twenty-nine' 74; also *viśā* in the context *ekū* *śa* *viśā* 'one-hundred twenty' 74, also *viśā* *śa* 'one hundred twenty' 813; Sk, *viśā* f., Pk, *viśā*; final nasal cannot be explained, cf. Ap. *viśā*.

वीस *viśā* "on the twentieth" ord. loc. eg. 355, OG, *viśā*+*mau*; v. s. v. *viśā*.

वीसर *viśara* "forgotten" past part, m. 601. Sk, *viśarati* Pk, *viśarati*, *viśariya-*, OG, *viśaria*, Bloch *viśara*, Turner *biśara*.

वीस *viśā* "resting place" sub, dir, pl, m, 117; *viśā* loc. eg. 117, *viśā* loc. pl. 117, Sk, *viśārah* Pk, *viśāra*-OG, ext. *viśāra*, Bloch *viśāra*, Turner *biśā*.

वीस *viśā* "imitation of lulling sound made by the sinking of an object in

- +OG, passive, present participial and m. suffixes: -i-ta-u.
- विजगै** *vijagai* "gives up" v. pres. 3rd sg. 513. lw, Sk, vivarjyati, vivarja-
- विशद** *viśada* proper noun m, dir, sg. 107.
- विशा** *viśa* "a type of measure, sometimes used to measure ground and fields also, sub. f. 111. That which is a full measure is referred to as *vis vasā* in MG, and half-full is referred to as *das vasā*; der. not known.
- विषद** *viśad* "with reference to, regarding to" post pos. 73, 369; stereotyped loc. Sk, viśya-viśaye, OG, viśai, the -ā- is Sanskrit influence on the scribe, MG, viśe.
- विषदया** *viśadyā* "belonging to the subject" sub. dir. pl. m. 326 lw, Sk, viśaya-, OG, viśai ext. viśain, the extended stem is declined for pl. viśaiyā.
- विषयशक्त** *viśayāśakta* "attached to carnal pleasures" past part. m, dir, sg. (v. l. viśayāśakta) 510, lw, Sk, viśayāśakta-
- विशाहणदं** *viśāhaṇam* "material, apparatus" sub. n, dir, sg. 386, Sk, *viśāhāna-Pk, *viśāhāna-OG, ext. viśāhaṇam MG, viśāṇū "materials (in the preparation of sweets)".
- विष** *viśa* "poison" sub. n, dir, sg. 426, Sk, viśam; Pk, viśa-n, Turner bis².
- विशोधकण्ड** *viśodhakarana* "act of purifying" sub. dir, sg. n. 41, Sk, viśuddhi- Pk, viśuddhi-OG, viśodhi-; -karana: Sk, karaṇam, Pk, karaṇam.
- विस्तारि** *viśtāri* "in extenso, by expanding" sub. inst. eg. m. 424, 601, lw, Sk, viśtāra- + OG, noun declension.
- विस्तारि** *viśtāri* "spread" past part. f. 30, lw, Sk, v. s. v. viśtāriṇ.
- विस्तारित** *viśtāriṇ* "expanded" past part. of the causal base m, dir, sg. 514, viśtāri abs. 74, lw, Sk, viśtāriyati, viśtāra- + OG, past part. suffix -iṇ.
- विषपुराद** *viśpurādi* "attacks" v. pres. 3rd sg. 431, lw, Sk, viśpurati; MG, viśphre "attacks" is derived from the same source: Sk, viśpurati, Pk, viśpurati.
- विस्मय** *viśmay* "astonishment" sub. m, dir, sg. 482, (v. l. viśmaya) 110, lw, Sk, viśmaya-
- विहर** *viśara* "goes out (to collect alms-food)" v. pres. 3rd sg. 561; viharaim pl. 04; viharin past part. m, dir, sg. 85, also vihariyan (v. l. viharin) 531; vihariṇ inf. 112; viharāvai (<offertalms>) abs, pres. 3rd sg. 516; viharāvin past part. m, dir, sg. 112, viharāvi abs. 54 Sk, viharati, Pk, viharati.
- विहृत** *viśhṛta* "quickly, early" v. s. v. viśhṛtam.
- विहृत** *viśhṛtam* "hurry, just" v. pres. 3rd pl. 89, viśhṛtam past part. n, pl. 589, Sk, viśhṛta Pk, viśhṛta.
- विक्रियिषु** *vikriyaṇam* "to sell" ger. dir. sg. n. abs. Sk, vikriyati, replaced by Pk, vikkiñai. cf. Sk, vikraya-MG (dialectal) vevvū. Bloch vikri-
- विक्रिया** *vikriya* "to sell" inf. (old.) 548; vikii loc. eg. (of past part. vikri) 177, Sk, vikriyati, Pk, vikki, MG, (dialectal) vevvū; also v. s. v. vikriyam, vevai. Bloch vikriṇ. Turner laknu.
- वीर** *vīra* "lightning" sub. f. dir, sg. 20, 514. Sk, vīdyat. Pk, vījja f. Bloch vīj, Turner bijjli.
- वीरारण** *vīrāraṇa* "act of fanning" sub. dir, sg. 12, Sk, vījate, Pk, *vījai, causal base vījāva-. The na-ai in MG, vījō 'fan' and Sindhi vījāna cannot be explained; see under vimjai Bloch vījja.
- वीरवद** *vīravada* "requests" v. pres. 3rd sg. 426; viśaviṇ past part. m, dir, sg. 112; viśaviṇ loc. eg. 188, Sk, vījāpāyati, Pk, viśpāvaṇ, viśpāvai, Turner, hīnti.
- वीर** *vīra* proper noun n, dir, sg. 110, 522.
- वीरमेव** *vīrāmēva* proper noun n, dir, sg. 521.
- वीर** *vīra* "twenty" adj. num. 61, Sk, -vīśat in compounds, Pk, viśam MG, viś, Bloch viś, Turner bis².
- वीर** *vīśat* "twenty" adj. num. in the context viśam navottara "twenty-nine" 74; also viśam in the context eku sau viśam "one hundred twenty", 71, also viśam sau "one hundred twenty" 613; Sk, viśatib f., Pk viśai; final nasal cannot be explained, cf. Ap viśam.
- वीरम** *vīśamai* "on the twentieth" ord. loc. eg. 355, OG, viśa + ma; v. s. v. viśa.
- वीरारिया** *vīrāriyā* "forgotten" past part. m. 604 Sk, viśarati Pk, viśarai, viśariya-, OG viśariṇ, Bloch vi-ariṇ, Turner viśarai.
- वीराराम** *vīśamā* "resting places" sub. dir. pl. m. 117 viśamā loc. eg. 117, viśamē loc. pl. 117, Sk viśrāmā Pk, viśāma-OG, ext. viśamā, Bloch viśavṇ, Turner li-ā.
- बुडुडा रडु** *bularada rāṇu* "imitation of bubbling; sound made by the sinking of an object in

सुखं *suḥya* proper noun m, dir. sg. 430.

सुखं *suḥi* "dries" v, pres, 3rd sg. 516, short-initial syllable may be graphic, Sk. *sūcyati* l'k. russai (Sk. *śūcyati*, l'k. socei, MG. *soḥ-vū*).

सुख्यं *suḥya* "father-in-law, wife's or husband's father" sub. m, dir. sg. 536, Sk. *śvāsurah*, l'k. *suḥra*-ext. in OG. *suḥra*, initial -u- may be graphic, or assimilatory. MG. *saḥro*, v. 1, v. *saḥra*, Bloch *sāsrā*, Turner *saḥro*.

सुखं *suḥa* "joy, happiness" sub. n, dir. sg. 432, Sk. *sukhām* l'k. *suḥam* OG. *suḥ-u*.

सुखं *sūkhī* "dries" v, pres, 3rd sg. 300, Sk. *śuḥyāh* l'k. *sukḥa*-, *sukḥa*-, Bloch *sukā*, Turner *suko*, *sukan*.

सुख्यं *sūkṣraṇa* "drying-action of-" sub. n, dir. sg., 12, v. s. v. *sūkai*.

सुखी *sūkhī* "dry" adj. f. 601, v. s. v. *sūkai*, OG. *sūk-* + feminine suffix -ī.

सुखं *sūḥya* "disgust, dislike" sub. f, dir. sg. 433, cf. MG. *sūg*, f. der. not known.

सुखितं *sūkhita* "suggested, indicated" past part. m, dir. sg. 501; *sūcavaram* caus. gen. n, sg. 10; *sūcavāram* n, pl. 10, Sk. *sūcyate*, *sūcyati*.

सुख्यं *sūḥyā* "purifies, becomes clear" v, pres, 3rd sg. 13, 172, 230; *sūḥyavi* caus. abs. 484, Sk. *śuḥyati* l'k. *sūḥyā*, Turner *sūḥna*.

सुखी *sūkhī* "swollen" past part. f, dir. sg. 521, Sk. *śūyate*, *śūyāh* (cf. *śūnyā*-originally 'hollowness, emptiness' MG. *śūn*) l'k. *śūn-* *śūnā*- MG. *sojvū*, *sunvū*, Bloch *sunā*, Turner *suḥna*.

सुख्यं *sūḥya* "sleeping" adj. past part. m, dir. sg. 417, 482; *sūḥā* obl. sg. 446; *sūḥā* loc. sg. 481, *sūḥā* inst. sg. 259, Sk. *sūptāh* l'k. *sutta*, Turner *suḥna*.

सुख्यं *sūḥyā* "carpenter" sub. m. 408, l'w. Sk.

सुख्यं *sūḥyā* "set of cutting, arranging, trimming" sub. n, sg. 440, l'w. Sk. *śūlāna* -+ *karāna*.

सुख्यं *sūḥya* "sleeps" v, pres, 3rd sg. 163; *sūḥyati* pass. sg. 239; *sūḥyā* caus. abs. 25, Sk. *śuḥyati*, l'k. *suḥai*, MG. *suḥū*, Turner *suḥna*.

सुख्यं *sūḥyā* "parrot" sub. m, dir. sg. 467, Sk. *śūka*-l'k. *śūka*-ext. -*śūka*, MG. *suḥya*.

सुखं *suḥa* proper noun m, dir. sg. 447.

सुखं *suḥya* "a vegetable which grows under the ground" sub. n, dir. sg. 288, MG. *śūra*, l'w. not known.

सुख्यं *sūḥyā* "heroism" sub. f, sg. 48, Sk. *śūrah* l'k. *śūra*, OG. *śūra* + *ī*.

सुखं *suḥya* proper noun m, dir. sg. 474.

सुखं *suḥa* "perspiration" sub. dir. sg. m. 309, Sk. *śvedah* l'k. *śoḥ*, *śu*, MG. *parśavo* 'perspiration' Sk. *parśvedah*, OG. 'parāraḥ, replaced by *parśavo*.

सुखि *suḥi* "merchant, businessman (rich)" sub. m, obl. sg. 432, 548, Sk. *śreṣṭhi* l'k. *suḥi* MG. *suḥi*, Bloch set Turner *sethī*.

सुखि *suḥi* "a type of measure, more common as Jain theological term" sub. f, 459 l'w. Sk. (not found in MW), l'k. *seḥā*, *śūh*.

सुखं *suḥa* "service" sub. f, dir. sg. (v. 1, *śevā*) 432, Sk. *śevā* l'k. *śevā*.

सुख्यं *suḥya* proper noun m, dir. sg. 169.

सुख्यं *suḥya* "one who lives by eating" *śevāla-śa* woods- adj. m, dir. sg. 169, l'w. Sk. *śevāla* + *śāhārin*.

सुख्यं *suḥya* "served" past part. m, dir. sg. 516; *śevātan* pres. part. m, dir. sg. 222, *śevāyat* pass. sg. 616, Sk. *śevate* l'k. *śevai*.

सुख्यं *suḥya* "sixteen" num, dir. sg. 14, Sk. *śoḥāsa*, *śoḥāsa* pres. part. m, dir. sg. 242, *śoḥā* s'ba 225; cf. Sk. *sūdhā-*, *sūdhām*, which might have developed as the NIA stem *śoḥ-* or this may be a l'w. fr. Sk. *śoḥāṣṭā*, to avoid confusion with *śoḥ-* from *śoḥāṣṭā* see Turner *śoḥāsa*.

सुख्यं *suḥya* "sixteen" num, dir. sg. 14, Sk. *śoḥāsa*, l'k. *śoḥāsa*, *śoḥāsa*, Bloch *śoḥā*, Turner *śoḥā*.

सुख्यं *suḥya* "sixteenth" ord. obl. 222; *śoḥāsa* loc. sg. 255, 481, *śoḥā* + *śoḥā*, v. s. v. *śoḥā*.

सुख्यं *suḥya* "whose holes have withered, emaciated" adj. m, dir. pl. 110, Sk. *śoḥāṣṭā*-*śoḥāṣṭā*, l'k. *śoḥā* + *śoḥā*, l'w. l'k.

सुख्यं *suḥya* "having relaxed, shrank" s'ba. 522, Sk. *śamkṛta-* 'put together', *śamkṛtā* f. 'bringing together'; cf. l'w. *śamkṛtā* -shrivelled, shrank l'k. *śamkṛta-*, *śamkṛta-* 'contraction'.

सुख्यं *suḥya* "caused to move" past part of the causal law m, pl. 22 l'w. Sk. *śamkṛta-* + (sk) *śamkṛta-*.

सुख्यं *suḥya* "par, couple" sub. m, dir. sg. 417, Sk. *śamkṛta-* l'k. *śamkṛta-* ext. (sk) *śamkṛta-*.

सुख्यं *suḥya* "control, restraint" sub. m, dir. sg. 373; Sk. *śamkṛta-* l'k. *śamkṛta-* l'w. l'k.

सुख्यं *suḥya* proper noun m, dir. sg. 447.

सुख्यं *suḥya* "a Jain theological term" sub. obl. pl. m. 169, 227; cf. MG. *śūra*, *śūra* + *śūra*, the obl. of the l'w. *śūra* have given rise to *śūra* meaning in the context 'having and the sub' *śūra* + *śūra*, -*śūra* + *śūra*, 13, *śūra*- Turner *śūra*.

साठि *sāṭhi* "sixty" num. dir. sg. 10, 121 Sk. *sāṭhi* l'k. *sāṭhi* OG. *sāṭha* MG. *sāṭh* Bloch *sāth*, Turner *sāth*.

साठु *sāṭhu* "sixty" num. dir. sg. 74; also *sāṭhu* *sau* 'one hundred sixty' 618 Sk. *sāṭh* f. l'k. *sāṭhi*-f. OG. expected form is *sāṭha*, but *sāṭhu* can be explained by analogical extension of -u from other numerals. v. s. v. *sāṭhu*

सात *sāta* "seven" num. dir. sg. 29, 73; *sate* inst. pl. 438 Sk. *saptā* l'k. *satta*, Bloch *sat*, Turner *sāt*.

सातगारव *sātāgarava* "complacent on account of happiness, arrogance of happiness" (first part of a compound (*sātāgaravādi*) sub. 366. Sk. *sāta* + *garava*, lw. (Jain theological term) in l'k. *sāta* + *garava*.

सातमी *sātāmī* "seventh" ord. f. dir. sg. OG. *sāta* + ord. suffix *mā*-u, v. s. v. *sāta*.

साति *sāti* "with, together" meaning is not clear, nor is derivation, 405, (context: *taharṇa ghoḍau ṅpanna sāti*).

सादु *sādu* "cooked food (sweetened)" sub. dir. sg. m. 289, Sk. *sāktu* m. l'k. *sattu*-, *sattua*-, OG. *sātū*; Bloch *sātū*, Turner *sātu*.

साध *sādhai* "accomplishes" v. pres. 3rd sg. 134 lw. Sk. *sādhyati*.

सामहउ *sāmahaṭu* "in front of, opposite" adj. adv. (v. l. *sāmahu*, *sāmuhau*, *sāmuhum*, *sāmuhau*) dir. sg. m. n. 73, 488, 518, 545, 579. *sāmuhā* obl. pl. 454; *sāmuhī* f. sg. 562. Sk. *sammukhab* l'k. *sammula*- OG. ext. Bloch *samor*, Turner *sāmu*.

सारविद्य *sāravīdyā* "is accomplished" v. caus. pass. 3rd sg. 438. Sk. *sārati* l'k. *sarai* v. s. v. *sarium*. Bloch *sarūḥ*, Turner *sarnu*.

सारिका *sārikā* "equal" adj. obl. 31 v. s. v. *sārikāhu*.

सारी *sārī* "dice" sub. f. dir. pl. 483. Sk. lex. *sārī* f. 'chessman' l'k. *sārī* f. 'colourful container from which dice are tossed, while gambling'.

सास *sāsa* "breath" sub. m. 42. Sk. *śvāsah* l'k. *sāsa*-, Turner *sā*-.
सासु *sāsū* "wife or husband's mother" sub. f. 201. Sk. *śvārūh* l'k. *sāsū*-. Bloch *sāsū*, Turner *sās*.

साहित *sāhiṭ* "held" past part. m. dir. sg. 536, *sāhi* sb. 433, 539. Sk. *sādhyati* l'k. *sāhi* *sāhi*, OG. *sāhai*.

सि *sī* "they" dem. pro. nom. pl. 537; it occurs as a correlative, e. g. *ji nāṭhā ei nāṭhā*. Sk. *sah*,

l'k. *so* OG. *sa* analogically influenced by Sk. *ye* l'k. *pe* OG. *pe* l'k. *so* where, *ti* (Sk. *to*) is used.

सिद्धि *siddhi* "earn" past part. m. dir. sg. 375. (The initial short *si* is a scribal error, other mss. have long *si*-), Sk. *siddhate* l'k. *sukhā*, Bloch *sikhā*, Turner *sikhā*.

सिद्धि *siddhi* "towards perfection, salvation" sub. f. loc. sg. 121 lw. Sk. *siddhi* + OG. loc. *andhi*.

सित *sita* "cold" adj. dir. sg. 166. Sk. *sita*-.
सिद्ध *siddha* "becomes despondent, gets afflicted, exhausted", pres. sg. 245, lw. Sk. *sālati*.

सिद्ध *siddha* "established" adj. dir. sg. n. 102. Sk. *siddham*, l'k. *siddha*-ext. OG.; notice MG. "siddhā" with altered meaning 'straight'. Turner *siddho*.

सीम *sīma* "upto, within the limit" post pos. 110, also *sīmu* 523. Sk. *sīmān*, *sīmā*, l'k. *sīmā*. Bloch *s v*.

सीमधर *sīmadharu* proper noun m. dir. sg. 347.

सीमातु *sīmātu* "staying on the border, frontier" sub. dir. sg. m. 151. Sk. *sīmā*-l'k. *sīmāla*-. v. s. v. *sīma*.

सियाले *siyale* "in winter" sub. loc. sg. 401. Sk. *sitakalah*, l'k. *sīa*-*āla*.

सु *su* "ho" dem. pro. m. nom. sg. 109, 111, 365. Sk. *sah*, l'k. *so*, v. s. v. *su*.

सुमारिका *sūmarikā* "a type of puri-like preparation." sub. f. 311. This is a Sanskritization of the MG. *sūvāji*. lw. Sk.

सुखि *sukhi* "happy" adj. dir. sg. m. 94. lw. Sk. *sukhi*, OG. *sukhi* ext. with -u.

सुजण *sujana* "intelligent, clever (man)" adj. dir. sg. m. 386; OG. *su* + *jaṇu*; v. s. v. *jānai*.

सुदनु *sudantu* proper noun m. dir. sg. 347.

सुद्धि *suddhi* "purification" sub. f. 345. Sk. *suddhih*, l'k. *suddhi*, lw. l'k.

सुदर्शन *sudarsana* proper noun m. dir. sg. 445.

सुभाष *sūphaṣa* proper noun m. dir. sg. 110.

सुभ *sūbha* "good, auspicious" adj. n. dir. sg. 435. Sk. *subhā*-, lw. Sk.

सुमति *sūmati* proper noun m. dir. sg. 110.

सुमित्र *sūmitru* proper noun m. dir. sg. 451, 534 539.

सुमेन *sūmena* proper noun m. dir. sg. 621.

सुहलदिक *sūhaladika* "sulahala and others; sulahala is a type of small insect" sub. 338, 401, D.r. not known.

सुविधि *sūvidhi* proper noun m. dir. sg. 110.

साट्टि *sāṭṭhi* "sixty" num dir sg 10, 121 Sk. *sāṭṭhi* l'k. *sattthi* OG. *sāthi* MG. *sāth* Bloch *sāth*, Turner *sātha*.

साठ्ठु *sāṭṭhu* "sixty" num dir. sg. 14; also *sāṭṭhu* san "one hundred sixty" 618 Sk. *sāṭṭh* f. l'k. *sāṭṭhi*-f OG. expected form is *sāṭṭha*, but *sāṭṭhu* can be explained by analogical extension of -u from other numerals. v s v *sāṭṭha*

सात *sāta* "seven" num dir sg 28, 73, etc inst pl, 438 Sk. *saptā* l'k. *sattā*, Bloch *sāt*, Turner *sāt*.

सातमारव *sātāmarava* "complacent on account of happiness, arrogance of happiness" (first part of a compound (*sātāgarāvāli*) sub. 566. Sk. *sāta* + *garava*, lw. (Jain theological term) in l'k. *sāta* + *garava*.

सातमी *sātami* "seventh" ord. f. dir. sg. OG. *sāta*+ord. suffix *ma-u*. v s, v. *sāta*.

साति *sāti* "with, together" meaning is not clear. nor is derivation, 465, (context : *taharaṇa ghoḷṇu ṅpajau sāti*).

सातु *sātu* "cooked flour (sweetened)" sub. dir. sg. m. 288, Sk. *saktuh* m. l'k. *sattu-*, *sattua-*. OG. *sātū*; Bloch *sātu*, Turner *sātu*.

साधु *sādhai* "accomplishes" v. pres. 3rd sg 431 lw. Sk. *sādhayati*.

सामहउ *sāmahau* "in front of, opposite" adj. adv. (v. l. *sāmāsu*, *sāmuhau*, *sāmuhum*, *sāmahau*) dir. sg. m. n. 73, 488, 516, 545, 579. *sāmuhā* obl. pl. 454; *sāmahi* f. sg. 562. Sk. *sammukhab* l'k. *sammuhā*-OG. ext Bloch *samor*, Turner *sāmu*.

सारविषय *saravīyā* "is accomplished" v caus. pass. 3rd sg. 438. Sk. *sārati* l'k. *sarati* v s. v. *sarium*. Bloch *sarṇe*, Turner *sarnu*.

सारिता *sārīkhi* "equal" adj. obl. 51. v. s. v. *sarīkha*.

सार्दि *sārdim* "dice" sub. f. dir. pl. 483, bk. lex. *sāri* f. 'chessman' l'k. *sāri* f. 'colourful' container from which dice are tossed while gambling'.

सास *sāsa* "breath" sub. m. 42, Sk. *śvāśah* l'k. *sāsa-*, Turner *sās*.

सासु *sāsu* "wife or husband's mother" sub. f. 201, Sk. *śvārūh* l'k. *sāsū-*, Bloch *sāsū*, Turner *sās*.

साहित *sāhiu* "held" past part. m. dir. sg. 556, *sāhi* abs. 435, 539, Sk. *sāhiyati* l'k. *sāhi*; *sāhai*, OG. *sāhai*.

सि *si* "they" dem. pro. nom. pl. 537; it occurs as a correlative, e. g. *ji nāthā si nāthā*, Sk. *śah*.

l'k. *śah* OG. *śah* analogically influenced by Sk. *ya* l'k. *ya* OG. *ya* l'k. where, *ti* (Sk. *ti*) is used.

सिद्धि *siddhi* "attainment" past part. m. dir. sg. 562. (The initial short *i*- is a critical error, other mss. have long *i*-), Sk. *siddhate* l'k. *sikkhai*, Bloch *sikkā*, Turner *sikkā*.

सिद्धि *siddhi* "towards perfection, salvation" sub. f. loc. sg. 121 lw. Sk. *siddhi* +OG. loc. *siddhi*

सिद्ध *siddha* "old" adj. dir. sg. 166, Sk. *siddha*.

सीरा *sīra* "becomes despondent, gets afflicted, exhausted" past. eg. 215, lw. Sk. *sīrati*.

सीपउ *sīpau* "established" adj. dir. sg. n. 102. Sk. *siddham*, l'k. *siddha*-ext. OG.; notice MG. 'sūhū' with altered meaning 'straight'. Turner *siddho*

सीम *sīma* "upto, within the limit" post pos. 110, also *sīmu* 523. Sk. *sīmān*, *sīmā*, l'k. *sīmā*. Bloch s v.

सीमेषु *sīmēṣu* proper noun m. dir. sg. 517.

सीमातु *sīmātu* "staying on the border, frontier" sub. dir. sg. m. 151, Sk. *sīmā*-l'k. *sīmāla-* v s, v. *sīma*.

सीयाले *sīyale* "in winter" sub. loc. sg. 401. Sk. *s takalāh*, l'k. *sīa-āla*.

ए *sa* "he" dem. pro. m. nom. sg. 109, 111, 365. Sk. *śah*, l'k. *śa*, v. s, v. *śa*.

एकुमारिका *śukumarika* "a type of juri-like preparation." sub. f. 311. This is a sanskritization of the MG. *sūvajī*, lw. Sk.

सुखितु *sukhita* "happy" adj. dir. sg. m. 91. lw. Sk. *sukhi*, OG. *sukhi* ext. with -u.

सुजानु *sujānu* "intelligent, clever (man)" adj. dir. sg. m. 586; OG. *śu + jānu*; v. s, v. *jānsi*.

सुदनु *sudantu* proper noun m. dir. sg. 517.

सुद्धि *suddhi* "purification" sub. f. 345, Sk. *suddhih*, l'k. *suddhi*, lw. l'k.

सुदर्शनु *sudarśanu* proper noun m. dir. sg. 445.

सुपार्व *sūpāriva* proper noun m. dir. sg. 110.

सुभ *sūbha* "good, auspicious" adj. n. dir. sg. 455. Sk. *sūbha-*; lw. *śuk*.

सुमति *sūmati* proper noun m. dir. sg. 110.

सुमितु *sūmitu* proper noun m. dir. sg. 451, 534 539.

सुमेन *sūmena* proper noun m. dir. sg. 521.

सुलहालदिक *sulahalādika* "sulahals and others"; *sulahala* is a type of small insect" sub. 358, 401. Dar. not known.

सुविधि *sūvidhi* proper noun m. dir. sg. 110.

दृष्टि *dr̥ṣṭi* proper noun m, dir, sg. 430.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "drives" v. pres. 3rd sg. 316, short-initial syllable may be graphic, Sk. *dr̥ṣṭāyati* l'k. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "father-in-law, wife's or husband's father" sub. m, dir, sg. 556, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, ext. in OG, *dr̥ṣṭāyati*, initial -u- may be graphic, or assimilatory, MG. *dr̥ṣṭāyati*, v. s. v. *dr̥ṣṭāyati*, Bloch *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "joy, happiness" sub. n, dir, sg. 432, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, sub. n, dir, sg. 432.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "drives" v. pres. 3rd sg. 309, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, *dr̥ṣṭāyati*, Bloch *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "drying - action of -" sub. n, dir, sg. 12, v. s. v. *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "dry" adj. f. 601, v. s. v. *dr̥ṣṭāyati*, OG. *dr̥ṣṭāyati* + feminine suffix -i.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "disgust, dislike" sub. f, dir, sg. 435, cf. MG. *dr̥ṣṭāyati*, f. der. not known.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "suggested, indicated" past part. m, dir, sg. 501; *dr̥ṣṭāyati* caus. gen. n. sg. 10; *dr̥ṣṭāyati* n. pl. 10, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "purifies, becomes clear" v. pres. 3rd sg. 13, 172, 230; *dr̥ṣṭāyati* caus. abs. 484, Sk. *dr̥ṣṭāyati* l'k. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "swollen" past part. f, dir, sg. 621, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, *dr̥ṣṭāyati* (cf. *dr̥ṣṭāyati* - originally 'hollowness, emptiness' MG. *dr̥ṣṭāyati*) l'k. *dr̥ṣṭāyati*, sūn- *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, *dr̥ṣṭāyati*, Bloch *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "sleeping" adj. past part. m, dir, sg. 447, 482; *dr̥ṣṭāyati* obl. sg. 446; *dr̥ṣṭāyati* loc. sg. 484; *dr̥ṣṭāyati* inst. sg. 259, Sk. *dr̥ṣṭāyati* l'k. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "carpenter" sub. m, 408, l'k. Sk.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* *dr̥ṣṭāyati* "act of cutting, arranging, trimming" sub. n, sg. 440, l'k. Sk. *dr̥ṣṭāyati* - *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "sleeps" v. pres. 3rd sg. 163; *dr̥ṣṭāyati* pass. sg. 259; *dr̥ṣṭāyati* caus. abs. 23, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* *dr̥ṣṭāyati* "parrot" sub. m, dir, sg. 403, Sk. *dr̥ṣṭāyati* l'k. *dr̥ṣṭāyati*, ext. -*dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* proper noun m, dir, sg. 415

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "a veg ground" sub. n

not known.

दृष्ट

दृष्ट *dr̥ṣṭ* proper noun m, dir, sg. 415

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "perspiration" sub. f, dir, sg. 415, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, ext. -*dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "merchandise" sub. n, dir, sg. 432, 514, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "a type of prayer, with reference as Jain theological term" sub. f, dir, sg. 415 (not found in MW); l'k. *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "service" sub. f, dir, sg. 415, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* proper noun m, dir, sg. 171

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "one who has been made" sub. n, dir, sg. 415, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "served" past part. m, dir, sg. 171, *dr̥ṣṭāyati* pres. part. m, dir, sg. 271, *dr̥ṣṭāyati* pass. sg. 516, l'k. *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "saw" v. pres. 3rd sg. 171, *dr̥ṣṭāyati* pres. part. m, dir, sg. 271, *dr̥ṣṭāyati* pass. sg. 516, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "sixteen" num. l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "sixteenth" ord. abs. 271, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "whose knot has been cut, unknotted" adj. m, dir, sg. 117, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "having reduced, diminished" 632, Sk. *dr̥ṣṭāyati* "put together"; *dr̥ṣṭāyati* f. 'bringing together'; cf. l'k. *dr̥ṣṭāyati* 'shrivelled, shrunk' l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* *dr̥ṣṭāyati* "part of the canal law" m. pl. 77, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* *dr̥ṣṭāyati* "part, couple" sub. n, dir, sg. 435, Sk. *dr̥ṣṭāyati*, l'k. *dr̥ṣṭāyati*, MG. *dr̥ṣṭāyati*, Turner *dr̥ṣṭāyati*.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* *dr̥ṣṭāyati* "control" sub. n, dir, sg. 573, Sk.

दृष्ट *dr̥ṣṭ* "control"

- संतापद्** *samtāpa* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. samtāpayaī Pk. samtāveī, MG. sātāvū; note the loss of *v*-*al* in most of NIA languages. Turner sānna.
- संघारत** *samghāra* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 511. *samghāra* loc. sg. 323; *samghāra* obl. 338; MG sātho 'bed on which a person is placed before death'; Sk. samatāra-, Pk. samthār, OG. ext.
- संदिगवत्** *samdiśavā* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. samdiśati, Pk. samdiśi, caus. samdiśāve.
- संदिगद्** *samdiśa* "message" sub. dir. sg. m. 102. Sk. samśesa- Pk. samśesa- ext. in OG.
- संदिपद्** *samdiśana* "act of lighting (fire)" sub. n. 410. note OG. — for -kh-, Sk. samdhukana- Pk. samdhukkhaṇa-.
- संनिवेशि** *samniśeva* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. samniśeva- Pk. samniśeva-.
- संपद्य** *sampadya* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. sampadyati Pk. sampajati.
- संबन्धि** *sambandhi* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519. *sambandhi* n. sg. 115. *sambandhiyām* n. pl. 135. Sk. sambandhin Pk. sambandhi ext. in OG.
- संबन्धिपद्** *sambandhiya* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513 OG. *sambandhi-* (v. a. v. *sambandhi*) as a verbal stem.
- संघ** *samgha* proper noun m. dir. sg. 110.
- संभवद्** *sambhava* "likely to happen, develop, to produce" v. pres. 3rd pl. 433. *sambhava* caus. past part. m. dir. sg. 461. *sambhāvita* pass. pres. part. m. dir. sg. 110. *sambhāvi* abs. 551. Pk. *sambhavi*, Pk. *sambhavi*. lw Pk.
- संघर्ष** *samgharṣa* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Pk. *samgharṣa* Pk. *samgharṣa* m. -collection" v. a. v. *samgharṣa*.
- संघर्षि** *samgharṣi* "having adorned, prevailed" abs. 510 lw. Pk. *samgharṣi*, *samgharṣa* + (3rd), etc. 511 x.
- संघर्षयि** *samgharṣaya* "annoy" sub. adj. 345; Pk. *samgharṣaya*, *samgharṣaya*, Pk. *samgharṣaya* -lo. Pk.

साँ *sāṅ* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 116, also *sāṅ* inst. 578; ety. not clear. cf. Sk. *śajāti* 'belonging to the same family', see Turner sānu.

साँचरत *sāncarata* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 376. Sk. sāncarati, Pk. sāncarsi.

साँदि *sāmdhi* "female camel" sub. f. dir. sg. 511, 558; Sk. *sāndhikā*, Pk. *sandhi*, OG. *sāmdhi*, MG. *sāṅ* m. 'uncastred bull' should be separated from *sāṅ*, *sāṅ* f. female camel'. The former is related to Sk. *sāṅ* 'uncastred'; the source of latter is not clear. Sk. *sāndhikā* is a Sanskritization of Pk. *sāṅ* (hence short -i in OG. and -zero in MG.). Bloch *sāṅ*, Turner *sāṅ*.

साँधि *sāmdhi* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 453. Sk. *sāmdadhāti* Pk. *sāmdhā* OG. *sāmdha*, *sāmdhi*, Bloch *sāṅ*, Turner *sāṅ*.

साँपडि *sāmpadhi* "attained" past. m. dir. sg. 461. Sk. **sāmpatita-* cf. Sk. *sāmpatati*, v. a. v. *padati*, Bloch *sāpapa*.

साँभर *sāmbhara* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; *sāmbharaim* 3rd pl. 604; *sāmbharām* 1st sg. 315; *sāmbharatā* pres. part. obl. 315. *sāmbhari* past part. f. 601. Sk. *sāmbharati* 'collects', *sāmbhārayati*, Pk. *sāmbhāre* 'garnishes'; MG. *sāmbhārvū* 'to remember' and *sāmbhār* 'masala used in cooking preparations'. Turner *sāmbhāra*, *sāmbhāra*.

साँभर *sāmbhalai* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529. *sāmbhalau* imp. 2nd pl. 329; *sāmbhalata* pres. part. (unenlarged 86); *sāmbhalata* pres. part. m. dir. sg. 426. *sāmbhalatā* obl. pl. 426. *sāmbhalia* past part. m. dir. sg. 367, 519; *sāmbhalium* n. sg. 109. *sāmbhaliyai* pass. sg. 157, 420. *sāmbhaliyaim* pass. pl. 371; *sāmbhalitā* pass. pres. part. m. sg. 326; *sāmbhalitā* inf. of purpose 426; *sāmbhali* abs. 85, 109, 408. cf. MG. *bhāyū* 'to observe, see', *nihāyū* 'to see', *sābhāyū* 'to hear', *sāmbhāyū* 'to gush' like case of'. Pk. *bhāyate*, *nihāyati* and *sāmbhāyati*. For -r- forms in MG. *sāmbhārvū*, *sāmbhār*, see under *sāmbhara*. Turner *sāmbhāra*, *niyāna*, *sāmbhāra*.

साँकल *sāmkalata* proper noun m. dir. sg. 523

सूत्रम् *sūtra* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. *samāsa*; Dr. *saṃcāla-*. Initial -am- > -a- in MG. cannot be explained.

सुती *sūti* "ginger" sub. f. sg. 314. also *sunthi* 281. Sk. *suṣṭhīh. suṣṭhīśly* ginger'. Pk. *suṣṭhī*, MG. *sūth*; final -i in OG. may be a prakritic inference. Bloch *sūti*. Turner *sūtho*.

सुप्तम् *sūptam* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *stacīāsi* loc. 3rd sg. 622; *stacīvati* pass. pres. part. loc. sg. 60; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflection.

सुप्तम् *sūptam* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *smaśānāt-*, OJ. *smācān* + loc. sg. *smācī* -i.

सुप्तम् *sūptam* "meditation, study." sub. m. dir. sg. (v. l. *svādhyāya*) 109. lw. Sk. *svādhyāyah. svādhyāya-* (for final -u in OG. cf. Sk. *svayāya-* lw. in OG. *vīna* MG. *vāno*, Sk. *svāstrīyāya-* lw. in OG. *svāstrīyān* MG. *svāstrīyāno*, etc.)

सुप्तम् *sūptam* "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. *ham, hsu, hūm*) 74, 85; Sk. *ahām*, Pk. *aham. ahaam*. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. hū.

सुप्तम् *sūptam* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *hakkāri* (v. l.) 544. Sk. lex. *hakkāra* "making of the sound *hak*", onomat. sound of calling Pk. *hakkāri, haktāri*; MG. *hamkārvū* 'to drive'; also cf. MG. *hāk* f. 'call, shout, challenge'. Bloch *hākṣṇē*, Turner *hākno, hākāra*.

सुप्तम् *sūptam* "wooden letters" sub. f. dir. 402. Sk. *hālī* m., Pk. *hālī* m., OG. *hālī* f. MG. *hef* f.

सुप्तम् *sūptam* "weapon" sub. n. dir. sg. 320. Sk. **hasa*-*kāra-* Pk. *hatthiyāra-* n. Turner *hatiyāra*.

सुप्तम् *sūptam* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hasa*-*kūta-*; (Sk. *hāstah* and *kūjan* 'mallet' 'small') Pk. *kūla* Pk. **hattha*-*ūla-*. MG. *hatho*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *botro*.

सुप्तम् *sūptam* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg.; *harīti* inf. of purpose 7. Sk. *hārati*, Pk. *harai*. Bloch *harṣṣ*, Turner *harna*.

सुप्तम् *sūptam* "pleased" past part. m. dir. sg. 429. *harāyī* (v. l. *harāyī*) pl. 142. Sk. *hārati*, *hārīti*; MG. *harakṣi* indicates that -ṣ- should be interpreted as -kh- and hence the intervening stage **harīṣṭ*, **harīṣṭi* should be independent of the Pk. *harīṣṭ*.

सुप्तम् *sūptam* "sulphuret of arsenic, yellow pigment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *harīṣṭā-* m., Pk. *harīṣṭā-* m. n.

सुप्तम् *sūptam* "cause to shake, move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Pk. *hallai*, MG. *halvū*; but cf. Hindi *hilānā*, Panjabi *hillānā*; Dravidian origin is suggested. Bloch *halnā*, Turner *hilnā, hallinnā*.

सुप्तम् *sūptam* proper noun m. dir. sg. 425.

सुप्तम् *sūptam* "light (of weight)" adj. dir. sg. m. 602. Probably the text should be *halayau*; cf. MG. *haljo* Sk. *laghuh, laghukah*, Pk. *lahna-*, *halna-*. Bloch suggests Dravidian origin. Bloch *halū*, Turner *haluko, lalaū*.

सुप्तम् *sūptam* "now" adv. 452, 590, (v. l. *hiva*) 480; MG. *have*; cf. H and other Bihar dialects *ah, abe, abai* etc. Absence of -h- forms in the western group leads Chatteji (ODBL p. 856) to suggest Sk. *evam*, Pk. *evam*; for the a- of the demonstrative base cf. Sk. *asa*, *adya*, *ātra* etc. h- in Guj cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *adhuṣā*, Pk. *adhuṣā* MG. *hamṣā*. OG. alternant *hiva* with -i- in the initial syllable is properly explained by Pk. *evam*; also OG. *havadām*-*hivādām* are explained as extended forms of *hava-*. Thus, MG. *hamṣā* and *havā*, *have* (dialectal) should be kept apart.

सुप्तम् *sūptam* "just now" adv. 142, also *havadām* 465, 573. for der. s. v. *hava*

सुप्तम् *sūptam* "laughing, jesting" pres part. m. dir. sg. 223, 514, 536. Sk. *hasati*, Pk. *hasai*; Bloch *hasṣṣ*, Turner *hāso*.

सुप्तम् *sūptam* proper noun m. dir. sg. 461.

सुप्तम् *sūptam* "drove out" past part. m. dir. sg. 428. Pk. *hakkā* f. "call"; MG. *hākṣṇū* to drive; v. s. v. *hakkāri*.

सुप्तम् *sūptam* "shop" sub. sg. 386, 478, also *hatta* 478; Sk. *hatṭah* m. 'market', lex. *hatti* f.; Pk. *hatta-* m. *hattigā, hattī* f. 'small shop', MG. *hāt* f. n. Turner *hāt*.

सुप्तम् *sūptam* "bone" sub. n. dir. sg. 245. MG. *hār* n. 'bone' Pk. *Do. hadda*; Bloch suggests connection with Sk. *hasthi* n. 'bone', *asthi* f. 'kernel of fruit', *asthila* f. 'round pebble', but -gtha- > -dda- cannot be explained. Bloch *hār*, Turner *hār*.

सुप्तम् *sūptam* "hand" sub. m. dir. sig. 38, *hāthi* inst. sg. 538, 559; also loc. sg. 543; *hātho* inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. *hāstah*, Pk. *hattha-*. Bloch *hāt*, Turner *hāt*.

संतापः *saṁtāpaḥ* "trouble, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. *saṁtipatyati* Pk. *saṁtāve*, MG. *saṁtāvū*; note the loss of nasal in most of NIA languages, Turner *saṁtāna*.

संघारः *saṁghāraḥ* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 341. *saṁghārai* loc. sg. 323; *saṁghāra* obl. 338; MG. *sāthro* 'bed on which a person is placed before death'; Sk. *saṁghāra*-, Pk. *saṁghār*, OG. ext.

संदिवायः *saṁdīvaḥ* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 312, Sk. *saṁdisati*, Pk. *saṁdisā*, caus. *saṁdisāve*.

संदेशः *saṁdeśaḥ* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. *saṁdeśa*- Pk. *saṁdeśa*- ext. in OG.

संपन्नः *saṁpannaḥ* "act of lighting (fire)" sub. n. 410. note OG. — for -kh-. Sk. *saṁdhukāna*- Pk. *saṁdhukkhāna*-.

संनिवेशः *saṁniveśaḥ* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. *saṁniveśa*- Pk. *saṁniveśa*-.

संपन्नः *saṁpajai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. *saṁpadyate* Pk. *saṁpajai*.

संबन्धिः *saṁbandhiḥ* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519. *saṁbandhīm* n. sg. 115, *saṁbandhīyām* n. pl. 135. Sk. *saṁbandhin* Pk. *saṁbandhi* ext. in OG.

संबन्धितः *saṁbandhitaḥ* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. *saṁbandhi-* (v. s. v. *saṁbandhi*) as a verbal stem.

संभवः *saṁbhavaḥ* proper noun m. dir. sg. 110.

संभवः *saṁbhavaḥ* "likely to happen, develop, to produce" v. pres. 3rd pl. 433, *saṁbhāvita* caus. past part. m. dir. sg. 461, *saṁbhāvita* pass. pres. part. m. dir. sg. 110, *saṁbhāvi* abs. 554. Sk. *saṁbhavati*, Pk. *saṁbhavati*, lw. Pk.

संभारः *saṁbhāraḥ* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 473. Sk. *saṁbhāra* Pk. *saṁbhāro* m. 'collection' v. s. v. *saṁbhāra*.

संभविः *saṁbhaviḥ* "having observed, provided" abs. 515, loc. 584, *saṁbhāvī*, *saṁbhāvī* - (OG), abs. 515.

संभविः *saṁbhaviḥ* "annual" sub. m. dir. 343; Sk. *saṁbhavata*, *saṁbhavata*, Pk. *saṁbhavata* - (OG) abs. 515.

संभवः *saṁbhavaḥ* "I give" v. pres. 1st sg. 614, *saṁbhavata* pres. part. m. dir. sg. 110, lw. Sk. *saṁbhavata*, *saṁbhavata* - (OG) verbal stem.

संभविः *saṁbhaviḥ* "having departed, with adv." abs. 515, - (OG) *saṁbhavata* 12 *saṁbhavati*, lw. *saṁbhavata* - (OG) abs. 515.

सांघः *saṁghaḥ* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 416, also *sāṁ* inst. 378; ety. not clear. cf. Sk. *saṁghā* 'belonging to the same family', see Turner *sānu*.

सांघारतः *saṁgharataḥ* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 376. Sk. *saṁgharati*, Pk. *saṁgharati*.

सांघिः *saṁghī* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 338; Sk. *saṁghīkā*, Pk. *saṁghī*, OG. *saṁghī*, MG. *sāṁ* m. 'uncastrated bull' should be separated from *sāṁ*, *sāṁ* f. female camel'. The former is related to Sk. *sāṁdha* 'uncastrated'; the source of latter is not clear Sk. *saṁghīkā* is a Sanskritization of Pk. *saṁghī* (hence short -i in OG and -zero in MG.). Bloch *sār*, Turner *sār*.

सांघिः *saṁghī* "having connected, aimed" 1st part. loc. sg. 453. Sk. *saṁdadhāti* Pk. *saṁdadhī* OG. *saṁdadhā*, *saṁdadhī*, Bloch *sāṁ*, Turner *sāṁ*.

सांपदितः *saṁpadiḥ* "attained" past part. m. dir. sg. 461. Sk. **saṁpatita*- cf. Sk. *saṁpatiti*, v. s. v. *paṁsi*, Bloch *sāpāṁ*.

सांभारः *saṁbhāraḥ* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; *saṁbhāram* 3rd pl. 604; *saṁbhāra* 1st sg. 315; *saṁbhāra* pres. part. obl. 315. *saṁbhāra* past part. f. 604. Sk. *saṁbhāra* 'collects', *saṁbhārayati*, Pk. *saṁbhāra* 'gar-ni-bes'; MG. *saṁbhāru* 'to remember' and *saṁbhār* 'masala used in cooking preparations', Turner *saṁbhāru*, *saṁbhāru*.

सांभारः *saṁbhāraḥ* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529, *saṁbhāra* imp. 2nd pl. 329; *saṁbhāra* pres. part. (unenlarged) 86; *saṁbhāra* pres. part. m. dir. sg. 426, *saṁbhāra* obl. pl. 426, *saṁbhāra* past part. m. dir. sg. 267, 519; *saṁbhāra* m. sg. 109, *saṁbhāra* pass. sg. 157, 420, *saṁbhāra* pass. pl. 371; *saṁbhāra* pass. pres. part. m. sg. 326; *saṁbhāra* inf. of purpose 426; *saṁbhāra* abs. 83, 109, 424, cf. MG. *bhāvū* 'to observe, see', *nihāvū* 'to see', *sāṁbhāvū* 'to hear', *saṁbhāvū* 'to guard, take care of', Sk. *bhāsyate*, *nīdhāsyati* and *saṁbhāsyati*. For - forms in MG. *saṁbhāru*, *saṁbhār*, see under *saṁbhāra*. Turner *saṁbhāru*, *nihāvū*, *saṁbhāru*.

सांभारः *saṁbhāraḥ* proper noun m. dir. sg. 323

सांभारः *saṁbhāraḥ* proper noun m. dir. sg. 447.

सांभारः *saṁbhāraḥ* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 551; *saṁbhāra* pres. part. m. dir. sg. 519. Sk. *saṁbhāra* Pk. *saṁbhāra*, Bloch *saṁ*, Turner *saṁ*.

सांभारः *saṁbhāraḥ* "re-keels" abs. dir. sg. 27. Sk. *saṁbhāra*- Pk. *saṁbhāra*-.

सुंचल *sūncala* "a type of salt" sub. dir. eg. n. 20. MG. *śaṃcala*; Ds. *śaṃcala*-. Initial -um-> -n- in MG. cannot be explained.

सुंठी *sūṅṭhī* "ginger" sub. f. sg. 314. also *sūṅṭhī* 291. Sk. *śaṅṭhīh*, *śaṅṭhī* 'dry ginger'. Pk. *śaṅṭhī*, MG. *sūṅṭhī*; final -ī in OG. may be a prakritie influence. Bloch *sūṅṭhī*, Turner *sūṅṭhī*.

स्तवर्त्त *stavarṭṭa* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *staviṣṭi* fut. 3rd sg. 622; *stavitai* pass. pres. part. loc. eg. 80; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflection.

स्मृतानि *smṛtāni* "to the burial ground" sub. n. loc. eg. lw. Sk. *śmaśānāni*-. OG. *śmaśān* + loc. eg. suffix -ī.

स्वाध्याय *svādhyāya* "meditation, study." sub. m. dir. eg. (v. l. *svādhyāya*) 109. lw. Sk. *svādhyāyab*, *svādhyāya*-. (for final -a in OG. cf. Sk. *vinaya*-lw. in OG. *vinaya* MG. *vaya*, Sk. *śāstrujāya*-lw. in OG. *śāstrujāya* MG. *śāstrujāya*, etc.)

*

हृत् *hṛt* "I" 1st pers. pro. nom. eg. m. f. (v. l. *ham*, *han*, *hūm*) 74, 85; Sk. *aham*, Pk. *aham*, *aham*. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. lū.

हकार *hakāra* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *hakārai* (v. l.) 544. Sk. lex. *hakkāra* "making of the sound hak", onomat. sound of calling. Pk. *hakkārai*, *hakkārai*; MG. *hamkāravū* "to drive"; also cf. MG. *hāk* f. 'call, shout, challenge'. Bloch *hākṇā*, Turner *hākṇa*, *hākāra*.

हृदि *hṛdi* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk. *hadīh* m., Pk. *hadī* m., OG. *hadī* f. MG. *her* f.

हथियार *hatthiyāra* "weapon" sub. n. dir. eg. 529. Sk. **hastha-kāra*- Pk. *hatthiyāra*-n. Turner *hatthiyār*.

हस्त *hastha* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hastha-kūṭa*-; (Sk. *hastab* and *kūṭam* 'mallet' Pk. *kūṭa*) Pk. **hattha-ūla*-. MG. *hathora*. Nasalisation in OG. cannot be explained. *botro*.

हथियार *hatthiyāra* "weapon" v. pres. 3rd sg; *hathiyāra* 7. Sk. *hāraṭi*, Pk. *haraṭi*.

हथियार *hatthiyāra* "weapon" past part. m. dir. eg. (v. l.) pl. 142. Sk. *hāraṭi*, indicate that - -kh- and hence the -ai. **haraṭi* should be *haraṭi*.

हरियाल *hariyāla* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. eg. m. 20. Sk. *haritāla*-m., Pk. *hariāla*-m. n.

हलार्त्त *halārṭṭa* "causo to shake, move" v. cans. pres. 1st sg. 309. Pk. *hallai*, MG. *halvū*; but cf. Hindi *hīlānā*, Panjabi *hīlānā*; Dravidian origin is suggested. Bloch *hālāṅṭhī*, Turner *hilau*, *hallinu*.

हरिदत्त *haridattu* proper noun m. dir. eg. 425.

हलयत्त *halayattu* "light (of weight)" adj. dir. eg. m. 602. Probably the text should be *halayau*; cf. MG. *halvo*. Sk. *laghūh*, *laghukab*, Pk. *lahua*-, *halua*-, Bloch suggests Dravidian origin. Bloch *haljū*. Turner *halako*, *halāṅṭhī*

हवा *hava* "now" adv. 452, 590. (v. l. *hiva*) 480; MG. *have*; cf. H. and other Bihari dialects *ah*, *abe*, *abai* etc. Absence of -b- forms in the western group leads Chatterji (ODDBL p. 856) to suggest Sk. *evam*, Pk. *evam*; for the a- of the demonstrative base cf. Sk. *asaṅ*, *adya*, *ātra* etc. h- in Guj. cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *adhuṣā*, Pk. *ahūṣā* MG. *hamṇā* OG. alternant *hiva* with -i- in the initial syllable is properly explained by Pk. *evam*; also OG. *havadām*-*hivadām* are explained as extended forms of *hava*-. Thus, MG. *hamṇā* and *havṛā*, *havṛe* (dialectal) should be kept apart

हवदा *havada* "just now" adv. 142, also *havadām* 465, 573. for *dur*. s. v. *hava*.

हसत *hasata* "laughing, jesting" pres. part. m. dir. eg. 223, 514, 536. Sk. *hasati*, Pk. *hasai*; Bloch *hasṇā*, Turner *hāsan*.

हसिपुर *hasipur* proper noun m. dir. eg. 461.

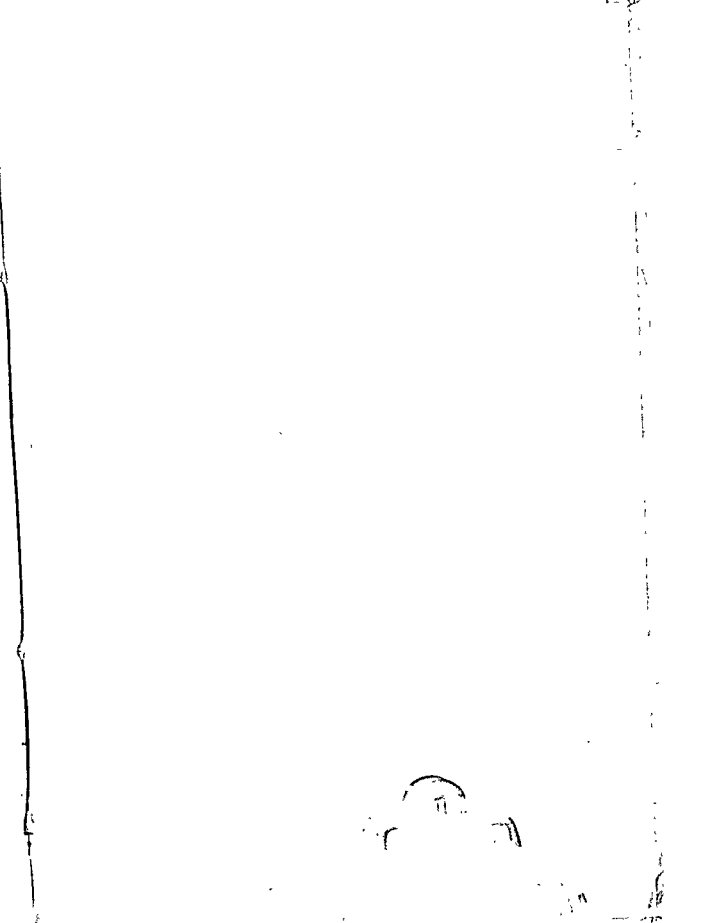
हकिट *hakit* "drove out" past part. m. dir. eg. 428. Pk. *hakkā* f. "call"; MG. *hākvū* to drive; v. s. v. *hākārai*.

हट्ट *hatta* "shop" sub. eg. 386, 478, also *hatta* 478; Sk. *hatṭha* m. 'market', lex. *hatṭi* f.; Pk. *hattā*-m. *hattigā*, *hatti* f. "small shop", MG. *hāt* f. n. Turner *hāt*.

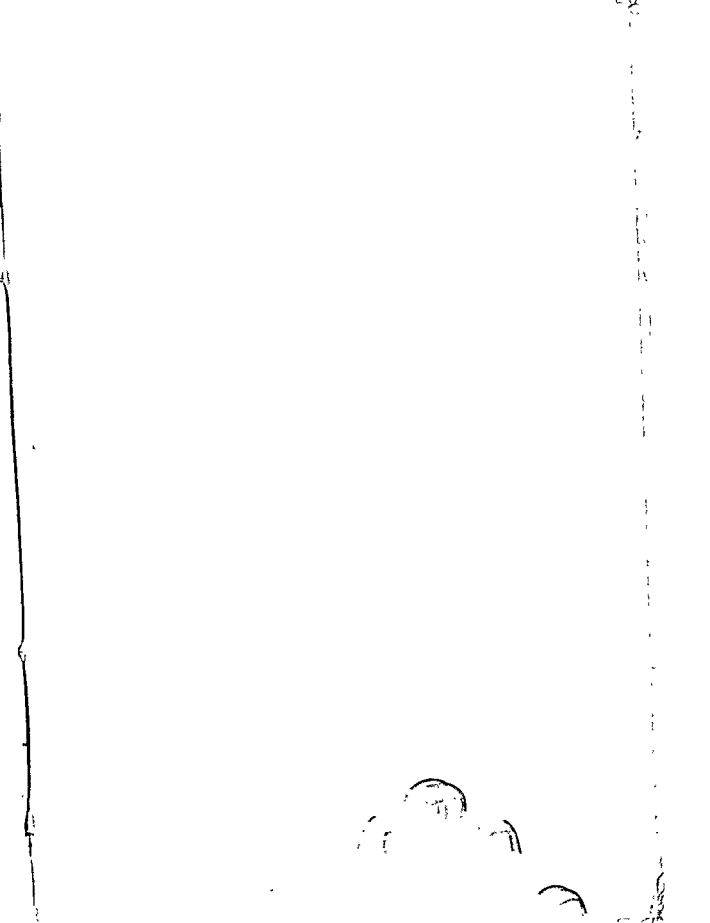
हड्ड *hadḍa* "bone" sub. n. dir. eg. 245. MG. *hār* n. 'bone' Pk. Ds. *hadla*; Bloch suggests connection with Sk. *asthi* n. 'bone', *asthi* f. 'kernel of fruit', *asthila* f. 'round pebble', but -astha->-ḍha- cannot be explained. Bloch *hār*, Turner *hār*.

हथ *hatthi* "hand" sub. m. dir. sig. 228; *hatthi* inst. eg. 538, 559; also loc. eg. 10; pl. 463; also loc. 10; Pk. *hattha*-. Bloch

- हाथियर** *hāthiyar* "elephant" sub. dir. sg. m. 344; *hāthiyā* pl. 74; Sk. *hastī* m., Pk. *hatthi*, OG. *hāthi*-ext. with -u; Bloch *hatthi*, Turner *hāthi*.
- हार** *hārai* "is defeated, loses" v. pres. 3rd sg. 470; *hārium* past part. n. dir. sg. 471; *hāri* abs. 470. Original causal is employed as a primitive base Sk. *hārayati*, Pk. *hārei*, *hārai*.
- हास** *hāsam* "laughter" sub. dir. sg. n. 520. Sk. *hāsyam*, Pk. *hassa*-n. OG. *hāsa*-ext. -nm.
- हिया** *hiyā* "heart" sub. n. obl. sg. 111, 446, 578; Sk. *hṛdayam* Pk. *hīsam*, OG. *hiyam* Bloch *hiyā*, Turner *hiyo*.
- हिय** *hiya* "now" adv. 571. for der. s. v. *hava*.
- हिवा** *hiwā* "just now" adv. 427, 576; for der. s. v. *hava*.
- हिराजग** *hirajaga* "(ornament) on which diamonds are studded" sub. 519. Sk. *hīraka*-Pk. *hīras*, OG. *hīrā*; Sk. *lagyati*, Pk. *laggai*, OG. suffix -*laga*, *lagi* cf. *motilaga*.
- हिंसित** *hinsita* "insulted, did not show respect" past part. n. sg. 153 Pk. *hīlai* "insults", prob. connected with Sk. *heḷā*, or *hīj*-*hīj*-*hīḥati*, *hīḥati*. OG. *hīla*- is suffixed with Sk. past part. suffix -*ita*, which in turn is suffixed by OG. -u. Bloch *heḷānē*
- हयनाथ** *hayanaṭha* "that which is destined, that which is going to be" sub. n. dir. sg. 179. OG. (*haya*) *hayanā* + *hīra*
- हथ** *hathā* "below" adv. adj. sg. loc. (v. l. *hethi*) 38, *hethi* f. 429, *hethā* m. dir. sg. 589; goes with genitive or compounded with stem. Sk. *adhiḥatā* constant *adhiḥatā* would give **adhiḥatā*; *Buddh-ist* Sk. *heṭṭā*, *heṭṭāto*, Pk. *hetthā*, *hetthā-*.
- हो** *ho* particle for address, vocative particle 580. Sk. *hō*, Pk. *ho* -u is retained as a special treatment in OG.
- हो** *ho* "is, become" v. pres. 3rd sg. 74, 425, (also used in *fat. senso*) 468; *hoisi* *fat.* 3rd sg. 434, 550; *hoisam* pl. 534; *hoisi* 3rd sg. 427; *hoisa* 1st sg. 470, 473; *hoisam* 1st pl. 110; *hoiyati* pres. part. loc. sg. 59, 539, -used as conditional. *hoijā* precativ. 3rd sg. 537, 528; *hoijām* 1st sg. 516, 571; *hoi* abs. 430, 174; *hoivān* ger. n. dir. sg. 420, *hoivā* inf. of purpose 577, *hoiyai* v. pres. 3rd. sg. 109, 473, 526; *hoiyam* pl. 74; *hoim* 1st sg. (in *fat. senso*) 473, *hoi* imp. 3rd sg. 386; *hoiyam* past part. m. dir. sg. 74, 85, 386; also *hoim*, 38, *hoi* 363; *hoiyam* n. sg. 74; *hoi* f. sg. 94, 463; *hoiyā* 538, (v. l. *hūā*) 142 pl; *hoiyām* n. pl. 83; *hūmtam* pres. part. m. dir. sg. 522, 540, also *hūmtu* 73, 425; *hūmtā* pl. 425, 473; as an auxiliary after other past participle: *mokaliyā* *hūmtā* 538, also 401; also *hūto* m. sg. 402 and *hūtā* m. pl. 425, 473; *hūti* f. sg. 425; *hūmtai* loc. sg. 529; also *hūmtē* 438; *hūmtai* inst. sg. 539; *hūnta* unenlarged pres. part. 426, *hūntai* enlarged pres. part. loc. sg. 386 used in conditional sense. *hūi* abs. 463, 474. Sk. *bhāsvati*, **bhoti*, Pk. *hoi*, *hoai*; Bloch *hoṇē*, Turner *hunn*.
- होदपानु** *hodapānu* "making a noise, making a bet" sub. n. dir. sg. 12. De. *huddā*, *hoiā*, MG. *hor*, f.; OG. *hoda* + *pānu* lw. Sk.
- होला** *holā* "parched grain" sub. m. obl. (in a compound: *puhukā* *holālika*) 502; MG. Ojo "parching of green seeds of gram; prepared and consumed on the field as a part of festival." der. not known.
- हम** *hamas* proper noun m. dir. sg. 451.
- होदी** *hōdī* "earthen cooking pot" sub. f. sg. 175 late Sk. *handikā* f. Turner *hāri*.
- होदी** *hōdī* "small earthen pot (for cooking)" sub. f. sg. 178; for der. s. v. *hāndī*, MG. *hōdī*, *hōdī*.
- हो** *hō* emphatic particle 38, 74, 103, 416, 444, see Intro.
- हिंगुला** *hingulā* "Ferula Assa Ferula" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *hinguh* m. Pk. *hingula*-m. n. OG. ext. *hingulau*. MG. *higlo*. Bloch *h.g.* *hingū*ā, Turner *hū*.
- हिय** *hiyā* "walks" v. pres. 3rd sg. 525; *hīmtam* pres. part. m. dir. sg. 544. Sk. *dḥitap* *hīmtate*, Pk. *hīmtai*, MG. *hīmtū*. Turner *hīyam*



- हाथिय *hāthiyā* "elephant" sub. dir. sg. m. 344;
hāthiyā pl. 74; Sk. hastī m., Pk. hatthī, OG.
hāthi- ext. with -n; Bloch hatthī, Turner hāthi.
- हार *hāra* "is defeated, loses" v. pres. 3rd sg.
470; hāriam past part. n. dir. sg. 471; hāri abs.
470. Original causal is employed as a primi-
tive base. Sk. hārayati, Pk. hārei, hārai.
- हास *hāsa* "laughter" sub. dir. sg. n. 520.
Sk. hāsyam, Pk. hasa- n. OG. hāsa- ext. -am.
- हृदय *hṛdayā* "heart" sub. n. obl. sg. 111, 416, 578;
Sk. hṛdayam Pk. hīsam, OG. hiyaṁ Bloch
hiyyā, Turner hiyo.
- हिय *hira* "now" adv. 571. for der. s. v. hava.
- हियदाँ *hiraḍim* "just now" adv. 427, 576; for
der. s. v. hava.
- हिरास्य *hirāśya* " (ornament) on which diamonds
are studded" sub. 519. Sk. hīraka- Pk. hīraa,
OG. hīrā; Sk. lagyati, Pk. laggai, OG. suffix
-lga, lagi. cf. motilaga.
- हीन *hīna* "insulted, did not show respect"
past part. n. sg. 153. Pk. hīlai 'insults', prob.
connected with Sk. helā, or hīl- hīl- hījati,
hījati. OG. hīla- is suffixed with Sk. past part.
suffix -ita, which in turn is suffixed by OG. -n.
Bloch hejanā.
- ह्यया *hyayā* "that which is destined, that
which is going to be" sub. n. dir. sg. 179. OG.
(haya) huyana + hīra.
- ह्यथ *hyathā* "below" adv. adj. sg. loc. (v. l. hethi) 38,
hethi f. 420; hethāa m. dir. sg. 589; goes with
genitive or compounded with stem. Sk. adhātāt
contam epāṛitāt would give *adhīstāt; Buddh-
ist Sk. hethā, hethāto, Pk. hethā, hethāa.
- ह्य *hy* particle for address, vocative particle 580.
Sk. hī. Pk. ho. o is retained as a special
treatment in OM.
- ह्य *hy* "is, become" v. pres. 3rd sg. 74, 425,
(also used in fat. sense) 466; hoisii fut. 3rd
sg. 431, 559; hoisim pl. 538; hoisi 2nd sg.
427; hoira 1st sg. 470, 473; hoisam 1st pl.
110; hoiyati pres. part. loc. sg. 59, 559 -used
- as conditional hoijiu precativo 3rd sg. 527,
528; hoijium 1st sg. 510, 571; hoī abs. 430,
474; hoivaṁ ger. n. dir. sg. 420, hoivā inf. of
purpose 577. huyai v. pres. 3rd. sg. 109, 473,
526; huyaim pl. 74; huam 1st sg. (in fut.
sense) 473, hu imp. 3rd sg. 386; hūyam past
part. m. dir. sg. 74, 85, 386; also hūan, 38, hū
365; huyam n. sg. 74; hui f. sg. 91, 463;
hūyā 538, (v. l. hūā) 142 pl; hūyam n. pl. 85;
hūmtau pres. part. m. dir. sg. 522, 540, also
hūmtu 73, 425; hūmtā pl. 425, 473; as an
auxiliary after other past participle: mokaliyā
hūmtā 538, also 401; also hūto m. sg. 402 and
hūtā m. pl. 425, 473; hūti f. sg. 425; hūmtai
loc. sg. 529; also hūmtō 438; hūmtai inst. sg.
539; hūta unenlarged pres. part. 426, hūmtai
enlarged pres. part. loc. sg. 386 used in condi-
tional sense. hūi abs. 463, 474. Sk. bhāvati,
*bhoti, Pk. hoi, hoai; Bloch honā, Turner
huna.
- होपयतु *hoḍapātanu* "making a noise, making a
bet" sub. n. dir. sg. 12. De. huddā, hodā, MG.
hor. f.; OG. hoda- + pātanu lw. Sk.
- होला *holā* "parched grain" sub. m. obl. (in a
compound: pahumkā holāḍika) 502; MG. Ojo
'parching of green seeds of gram; prepared
and consumed on the field as a part of festival.'
der. not known.
- होस *hośas* proper noun m. dir. sg. 451.
- होदी *hōdī* "earthen cooking pot" sub. f. sg. 175
lato Sk. haṇḍikā f. Turner hōḍi.
- होदी *hōḍī* "small earthen pot (for cooking)"
sub. f. sg. 178; for der. s. v. hāndī. MG. hōḍi,
hōḍii.
- हो *hō* emphatic particle. 38, 74, 108, 416, 454,
see Intro.
- होमो *hōmō* "Ferula Asa Fetida" sub. dir.
sg. m. 20. Sk. hōgūh m. Pk. hōgūla- m. n.
OG. ext. hōmgūlau. MG. hōglo. Bloch hōg,
hōmgūla. Turner hōh.
- होमो *hōmō* "walks" v. pres. 3rd sg. 525;
hōmlatau pres. part. m. dir. sg. 544. Sk. dhātup.
hōplāte. Pk. hōmlai, MG. hōlvū. Turner hōra



हायियद् *hāyiyā* "elephant" sub. dir. sg. m. 344;
hāthiyā pl. 74; Sk. haṣī m., Pk. haṭṭhi, OG.
hāthi- ext. with -u; Bloch haṭṭi, Turner hāti.

हारद् *hārai* "is defeated, loses" v. pres. 3rd sg.
470; hārium past part. n. dir. sg. 471; hāri abs.
470. Original causal is employed as a primitive
base. Sk. hārayati, Pk. hārei, hārai.

हासद् *hāsam* "laughter" sub. dir. sg. n. 520.
Sk. hāyam, Pk. haṣa- n. OG. hāsa- ext. -am.

हिया *hiyā* "heart" sub. n. obl. sg. 111, 416, 578;
Sk. hṛdayam Pk. hlaam, OG. hiyaṁ Bloch
hiyā, Turner hiyo.

हिव *hiṭa* "now" adv. 571. for der. s. v. hava.

हिवद् *hiṭadām* "just now" adv. 427, 576; for
der. s. v. hava.

हिरालग *hirāḷaga* "ornament on which diamonds
are studded" sub. 519. Sk. hīraka- Pk. hīran,
OG. hīrā; Sk. lagyati, Pk. laggai, OG. suffix
-laga, lagi. cf. motilaga.

हिरित् *hīṛitu* "insulted, did not show respect"
past part. n. sg. 153. Pk. hīlāl 'insults', prob.
connected with Sk. helā, or hiḍ- hiḷ- hīḍati,
hīṭati. OG. hīla- is suffixed with Sk. past part.
suffix -ita, which in turn is suffixed by OG. -u
Bloch hejanē.

हयगद् *hayaṅgāḥuru* "that which is destined, that
which is going to be" sub. n. dir. sg. 179. OG.
(huyai) huyaṅga + hāra.

हैद् *heṭhai* "below" adv. adj. sg. loc. (v. l. heṭhi) 38;
heṭhi f. 420; heṭhau m. dir. sg. 589; gees with
genitive or compounded with stem. Sk. adhastāt
contam. upāriṣṭāt would give *adhīṣṭāt; Buddh-
ist Sk. heṭṭā, heṭṭāto, Pk. heṭṭhā, heṭṭha-.

है *hē* particle for address, vocative particle 580.
Sk. hō. Pk. ho. -o is retained as a special
treatment in OG.

होद् *hoi* "is, becomes" v. pres. 3rd sg. 74, 425,
(also used in fut. sense) 466; hoisii fut. 3rd
sg. 434, 550; hoisiim pl. 538; hoisai 2nd sg.
427; hoisu 1st sg. 470, 473; hoisum 1st pl.
110; hoyatai pres. part. loc. sg. 50, 539; -used

as conditional. hoijin precativē 3rd sg. 527,
528; hoijam 1st sg. 516, 571; hoi abs. 430,
474; hoivaum ger. n. dir. sg. 420, hoivā inf. of
purpose 577. huyai v. pres. 3rd. sg. 109, 473,
526; huyaim pl. 74; huum 1st sg. (in fut.
sense) 473, huu imp. 3rd sg. 386; hūyan past
part. m. dir. sg. 74, 85, 386; also hūna, 38, hūn
365; huyam n. sg. 74; huī f. sg. 04, 463;
huyā 538, (v. l. hūā) 112 pl; huyām n. pl. 85;
hūntau pres. part. m. dir. sg. 522, 510, also
hūmtu 73, 425; hūntā pl. 425, 473; as an
auxiliary after other past participle: mokaliyā
hūntā 538, also 401; also hūto m. sg. 402 and
hūtā m. pl. 425, 473; hūti f. sg. 425; hūntai
loc. sg. 520; also hūnto 438; hūntai inst. sg.
539; hūnta unenlarged pres. part. 426, hūntai
enlarged pres. part. loc. sg. 386 used in condi-
tional sense. huī abs. 463, 474. Sk. bhāṭati,
*bhoti, Pk. hoi, hoai; Bloch hoṅṅ, Turner
hunu.

होदपातद् *hodapātana* "making a noise, making a
bet" sub. n. dir. sg. 12. De. huddā, hodia, MG.
hoṅ. f.; OG. hoda + pātana lw. Sk.

होद् *hoḷu* " parched grain" sub. m. obl. (in a
compound: puhumkā hoḷādika) 502; MG. Oḷo
'parching of green seeds of gram; prepared
and consumed on the field as a part of festival.'
der. not known.

होस *hōsa* proper noun m. dir. sg. 451.

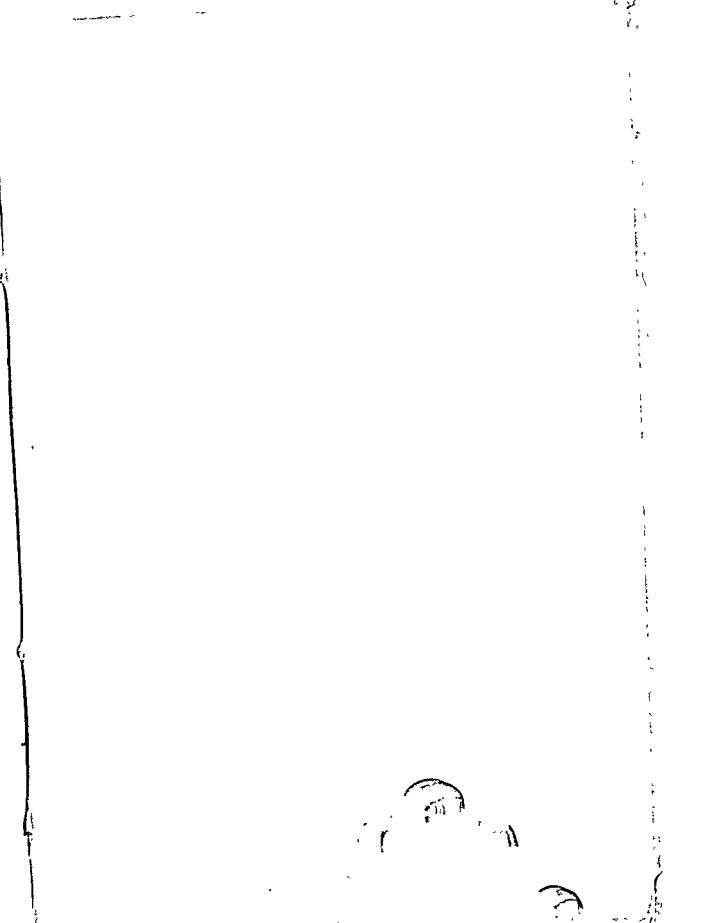
होद्दी *hōmḍi* "earthen cooking pot" sub. f. sg. 175
late Sk. haṅḍikā f. Turner hōri.

होद्दली *hōmḍuli* "small earthen pot (for cooking)"
sub. f. sg. 178; for der. s. v. hāndi, MG. hōli,
hōlli.

हि *hi* emphatic particle. 38, 74, 108, 416, 454.
see Intro.

हिंगल् *hiṅḡala* "Ferula Assa Fetida" sub. dir.
sg. m. 20, Sk. hiṅḡuh m. Pk. hiṅḡula- m. n.
OG. ext. hiṅḡula. MG. hiṅḡo. Bloch hiṅḡ.
hiṅḡūla, Turner hiḡ.

होद्द *hōmḍai* "walks" v. pres. 3rd sg. 525;
hiṅḡatau pres. part. m. dir. sg. 514. Sk. dhāṭap-
hiṅḡate, Pk. hiṅḡai, MG. hōvū. Turner hōra



- संतापद्** *sāntāpādi* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. *santāpāyati* Pk. *santāpē*, MG. *santāvū*; note the loss of nasal in most of NIA languages, Turner *sāntānu*.
- संघात** *sāṅghāta* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 544. *sāṅghāra* loc. sg. 323; *sāṅghāra* obl. 358. MG. *sāthra* 'bed on which a person is placed before death'; Sk. *samsthāra*, Pk. *samthār*, OG. ext.
- संदिशावट** *sāṅdīśāvṭ* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. *samdiśati*, Pk. *samdiśā*, caus. *samdiśāve*.
- संदेश** *sāṅdeśa* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. *samdeśa*- Pk. *samdeśa*- ext. in OG.
- संपूषण** *sāṅpūṣaṇa* "act of lighting (fire)" sub. n. 440; note OG. -*ṣ* for -*kh*-. Sk. *samdhukāna*- Pk. *samdhukkhaṇa*-.
- संनिवेसि** *sāṅniveśi* "in the residence" sub. n. loc. sg. 112. Sk. *sāniveśa*- Pk. *sāniveśa*-.
- संपन्न** *sāṅpajai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 688. Sk. *sampadyato* Pk. *sampajjai*.
- संबन्धि** *sāṅbandhi* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; *sāmbandhi* n. eg. 115; *sāmbandhiyām* n. pl. 135. Sk. *sāmbandhin* Pk. *sāmbandhi* ext. in OG.
- संबन्धित** *sāṅbandhita* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. *sāmbandha*- (v. s. v. *sāmbandhi*) as a verbal stem.
- संभव** *sāṅbhava* proper noun m. dir. sg. 110.
- संभवेद्** *sāṅbhavēd* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl. 433; *sāmbhāva* caus. past part. m. dir. sg. 461; *sāmbhāvita* pass. pres. part. m. dir. sg. 110; *sāmbhāvi* abs. 554. Sk. *sāmbhavati*, Pk. *sāmbhavai*, lw. Pk.
- संभार** *sāṅbhāra* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. *sāmbhārah* Pa. *sāmbhāro* m. 'collection' v. s. v. *sāmbhāra*.
- संभूयि** *sāṅbhūyī* "having adorned, provided" abs. 545. lw. Sk. *sāmbhūyati*, *sāmbhū*; - + OG. abs. suffix.
- संवत्सरिय** *sāṅvatśariya* "annual" sub. adj. 385; Sk. *sāmvatsara*-, *sāmvatsarika*, Pk. *sāmvacchariya*- lw. Pk.
- संतवद्** *sāṅtāvṭ* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; *sāntavatau* pres. part. m. dir. sg. 110. lw. Sk. *sāntavata*, *sāntav* + OG. verbal suffix.
- संहृति** *sāṅhṛti* "having destroyed, withdrawn" abs. 463. Sk. *sāmhṛati* Pk. *sāmhṛai*, lw. *sāmhṛa*- + OG. abs. suffix.
- संग** *sāṅga* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 110; also see inst. 578; ety. not clear. cf. Sk. *sāṅgīti* 'belonging to the same family', see Turner *sāṅga*.
- संगच्छति** *sāṅgacchati* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 576. Sk. *sāṅgacchi*, Pk. *sāṅgacchi*.
- सांघि** *sāṅghī* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 518. Sk. *sāṅghikā*, Pk. *sāṅghī*, OG. *sāṅghī*. MG. *sāṅghī* m. 'uncastrated bull' should be separated from *sāṅghī*, *sāṅghī* f. 'female camel'. The former is related to Sk. *sāṅghā* 'uncastrated'; the source of latter is not clear. Sk. *sāṅghā* is a Sanskritization of Pk. *sāṅghī* (hence short -i in OG and -*era* in MG). Bloch *sāṅghī*, Turner *sāṅghī*.
- संग्रहित** *sāṅgrhita* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 473. Sk. *sāṅgrhīti* Pk. *sāṅgrhī* OG. *sāṅghā*, *sāṅghā*, Bloch *sāṅghī*, Turner *sāṅghī*.
- संग्रहित** *sāṅgrhita* "attained" past part. m. dir. sg. 461. Sk. **sāṅgrhita*- cf. Sk. *sāṅgrhīti*, v. s. v. *paṅai*, Bloch *sāṅgrhī*.
- संभारद्** *sāṅbhārad* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345, *sāmbhāraim* 3rd pl. 604; *sāmbhāram* 1st sg. 345; *sāmbhāratā* pres. part. obl. 345. *sāmbhāri* past part. f. 601. Sk. *sāmbhārti* 'collects', *sāmbhāryati*, Pk. *sāmbhārel* 'garnishes'; MG. *sāmbhārvū* 'to remember' and *sāmbhār* 'masala used in cooking preparations'. Turner *sāmbānu*, *sāmbhāraṇu*.
- संभालद्** *sāṅbhālad* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529, *sāmbhālu* imp. 2nd pl. 329; *sāmbhālata* pres. part. (unenlarged 80); *sāmbhālatau* pres. part. m. dir. sg. 426, *sāmbhālata* obl. pl. 426, *sāmbhālita* past part. m. dir. sg. 367, 519; *sāmbhālita* n. sg. 109; *sāmbhālita* pass. eg. 137, 420, *sāmbhālita* pass. pl. 371; *sāmbhālita* pass. pres. part. m. sg. 326; *sāmbhālita* inf. of purpose 420; *sāmbhālita* abs. 85, 109, 498. cf. MG. *bhālāvū* 'to observe, see', *nihālāvū* 'to see', *sāmbhālāvū* 'to hear', *sāmbhālāvū* 'to guard, take care of'. Sk. *bhālayate*, *nibhālayati* and *sāmbhālayati*. For -*r*- forms in MG. *sāmbhārvū*, *sāmbhār*, see under *sāmbhāra*. Turner *sāmbānu*, *niyānu*, *sāmbhāraṇu*.
- सिंहदत्त** *sīṅhadatta* proper noun m. dir. sg. 625.
- सिंह** *sīṅha* proper noun m. dir. sg. 487.
- सिंचद्** *sīṅcādi* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; *sīṅcātau* pres. part. m. dir. sg. 519. Sk. *sīṅcāti*, Pk. *sīṅcā*, Bloch *sīṅcā*, Turner *sīṅcā*.
- सिंचयद्** *sīṅcāyad* "rook-salt" sub. dir. sg. n. 20. Sk. *sāṅdhavā*- Pk. *sāṅdhava*-.

सूत्रम् *śūtra* "a type of salt" sub. dir. eg. n. 20.
 MG *śaṅka*; Do. *śaṅka*-um. Initial -um-> -a-
 in MG cannot be explained.

शुद्धिः *śuḍhi*: "ginger" sub. f. eg. 314 also *śumthi*
 201. Sk. *śuṅthī*, *śuṅthī* 'dry ginger'. Fk. *śumthi*,
 MG *śuḍhi*; final -i in OG. may be a *prakṛite*
 influence. Bloch *śuṭ*, Turner *śuṅho*.

शतम् *śata* "I praise" v. pres. 1st eg. 377;
śata inf. 3rd eg. 622; *śata* inf. pass. pres.
 part. loc. eg. 80; lw. Sk. *śata* + OG verbal
 inflection.

शमनम् *śamaṇi* "to the burial ground" sub n
 loc. eg. lw. Sk. *śamaṇān*., OG. *śamaṇān* + loc
 eg. *śamaṇi*-i.

शान्तिः *śānti* "meditation, study." sub. m. dir
 eg (v. l. *śānti*) 109. lw. Sk. *śānti*.
śānti-a- (for final -a in OG. cf. Sk. *vinaya*-
 lw. in OG. *vinaya* MG. *vano*, Sk. *śānti*-
 lw. in OG. *śānti* MG. *śānti*, etc.)

*

शब्दम् *śabdam* "I" 1st pers. pro. nom. eg. m. f. (v. l.
śabdam, *śab*, *śab*) 74, 85; Sk. *śabdam*, Fk. *śabdam*.
 Initial a- before h- develops as a mur-
 mured vowel in MG. *hū*.

शब्दम् *śabdam* "calls, invites" v. pres. 3rd eg.
 403; also *śabdam* (v. l.) 541. Sk. *śabdam*.
 'making of the sound *hak*', onomat. sound of
 calling Fk. *śabdam*, *śabdam*; MG. *śabdam*
 'to drive'; also cf. MG. *śabdam* f. 'call, about,
 challenge'. Bloch *śabdam*, Turner *śabdam*,
śabdam.

शब्दम् *śabdam* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk.
śabdam, Fk. *śabdam*, OG. *śabdam* f. MG. *śabdam*

शस्त्रम् *śastra* "weapon" sub. n. dir. eg. 322.
 Sk. **śastra*-*śastra*- Fk. *śastra*-n Turner
śastra.

शस्त्रम् *śastra* "hammer" sub. dir. sig. m. 213.
 Sk. **śastra*-*śastra*-; (Sk. *śastra* and *śastra*
 'mallet' Fk. *śastra*) Fk. **śastra*-*śastra*-
śastra. Nasalisation in OG. cannot be ex-
 plained. Turner *śastra*.

शस्त्रम् *śastra* "takes away, robs" v. pres. 3rd eg.
śastra inf. of purpose 7. Fk. *śastra*, Fk. *śastra*
 Bloch *śastra*, Turner *śastra*

शस्त्रम् *śastra* "pleased" past part m. dir. eg.
 429. *śastra* (v. l. *śastra*) pl. 142. Sk. *śastra*,
śastra; MG. *śastra* inf. etc. that
 should be interpreted as -*śastra*- and hence the
 interesting stage **śastra*-. **śastra* should be
 independent of the Fk. *śastra*

शस्त्रम् *śastra* "sulphuret of arsenic, yellow
 orpiment" sub. dir. eg. m. 20 Fk. *śastra*-n.
 Fk. *śastra*-m n

शस्त्रम् *śastra* "cause to shake, move" v
 caus. pres. 1st eg. 302 Fk. *śastra*. MG. *śastra*,
 but cf. Hindi *śastra*, Panjabi *śastra*. Indi-
 an origin is suggested. Bloch *śastra*, Turner
śastra, *śastra*.

शस्त्रम् *śastra* proper noun m. dir. eg. 423

शस्त्रम् *śastra* "light (of weight)" ad. dir. eg.
 m. 602 Probably the text should be *śastra*.
 cf. MG *śastra* Sk. *śastra*, *śastra*. Fk.
śastra, *śastra*- Bloch suggests *śastra*
 origin. Bloch *śastra* Turner *śastra* *śastra*.

शस्त्रम् *śastra* "now" adv. 402, 500 v. l. *śastra* 441.
 MG have. of *śastra* and other *śastra* (dubious).
 also, *śastra* etc. Absence of -*śastra* forms in the
 western group leads Chatterji (ODDH. p. 212)
 to suggest Fk. *śastra* Fk. *śastra*. for the a- of
 the demonstrative base of *śastra* *śastra*, *śastra*
 etc. h- in Guy cannot be explained, but it may
 be analogical extension of *śastra* *śastra*, Fk.
śastra MG *śastra* (40) alternate *śastra* with -i-
 in the initial syllable is properly explained by
 Fk. *śastra*. also (40) *śastra*-*śastra* are
 explained as extended forms of *śastra*- These
 MG. *śastra* and *śastra* *śastra* (dubious)
 should be kept apart

शस्त्रम् *śastra* "past now" adv. 142, also *śastra*
 401, 523 for dir. v. *śastra*

शस्त्रम् *śastra* "laughing, jesting" pres. part m.
 dir. eg. 223, 314, 336 Sk. *śastra*, Fk. *śastra*,
 Bloch *śastra* Turner *śastra*

शस्त्रम् *śastra* proper noun m. dir. eg. 401

शस्त्रम् *śastra* "drows out" past part m. dir. eg.
 424 Fk. *śastra* "call", MG. *śastra* to drive.
 v. a v. *śastra*

शस्त्रम् *śastra* "shop" sub. eg. 202, 424, also *śastra*
 474, Sk. *śastra* m. *śastra* f. *śastra* f. Fk.
śastra-m *śastra* f. *śastra* f. Turner *śastra*
 lat f. n. Turner *śastra*

शस्त्रम् *śastra* "home" sub. m. dir. eg. 24. MG. *śastra*
 n. *śastra* Fk. *śastra*. Bloch suggests
 connection with *śastra* *śastra* = *śastra* *śastra*
 'kernel of fruit', *śastra* f. *śastra* *śastra*
 but *śastra* > *śastra* cannot be explained. Bloch
 lat. Turner *śastra*

शस्त्रम् *śastra* "land" sub. m. dir. eg. 24. MG. *śastra*
 n. *śastra* f. *śastra* f. *śastra* f. Fk. *śastra*
 n. 423, also *śastra* pl. Fk. *śastra* f.
śastra Bloch *śastra* Turner *śastra*

संतापद् *sāntāpādi* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. *santāpāyati* Pk. *santāpāci*, MG. *santāpāyū*; note the loss of *-nā-* in most of NIA languages. Turner *sāntānu*.

संघारउ *sāṅghārau* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 511; *sāṅghārai* loc. sg. 323; *sāṅghārau* obl. 338; MG *sāthro* 'bed on which a person is placed before death'; Sk. *samstāra-*, Pk. *sāṅghār*, OG. ext.

संदिशवउ *sāṅdīśavau* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 312; Sk. *samdiśati*, Pk. *samdiśai*, caus. *samdiśāvai*.

संदेशउ *sāṅdeśau* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. *samdeśa-* Pk. *samdeśa-* ext. in OG.

संपुण्ड *sāṅpūṅḍa* "act of lighting (fire)" sub. n. 440, note OG. *-ṣ-* for *-kh-*. Sk. *samdhukṣāna-* Pk. *sāṅdhukkhāna-*.

संनिवेसि *sāṅniveśi* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. *samniveśa-* Pk. *samniveśa-*.

संपन्न *sāṅpajai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. *sampadyate* Pk. *sampajjai*.

संबन्धि *sāṅbandhi* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; *sāṅbandhi* n. sg. 115; *sāṅbandhiyām* n. pl. 135. Sk. *sambandhin* Pk. *sāṅbandhi* ext. in OG.

संबन्धिउ *sāṅbandhirau* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. *sāṅbandha-* (v. s. v. *sāṅbandhiu*) as a verbal stem.

संभव *sāṅbhava* proper noun m. dir. sg. 110.

संभवइ *sāṅbhavāim* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl. 433; *sāṅbhāvāu* caus. past part. m. dir. sg. 461; *sāṅbhāvāitau* caus. pres. part. m. dir. sg. 110; *sāṅbhāvāi* abs. 551. Sk. *sāṅbhavati*, Pk. *sāṅbhavai*, lw. Pk.

संभार *sāṅbhāru* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. *sāṅbhārah* Pk. *sāṅbhāro* m. 'collection' v. s. v. *sāṅbhāra*.

संभूय *sāṅbhūy* "having adorned, provided" abs. 515, lw. Pk. *sāṅbhūyati*, *sāṅbhūy-* + OG. ste. suff. x.

संभवउत्थिय *sāṅbhavāy* "annual" sub. adj. 385; Sk. *sāṅbhavāra-*, *sāṅbhavārika*, Pk. *sāṅbhavāriya-* lw. Pk.

संभवउत्थिय *sāṅbhavāy* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; *sāṅbhavāyau* pres. part. m. dir. sg. 110. lw. Sk. *sāṅbhavate*, *sāṅbhav + OG.* verbal suffixes.

संहरि *sāṅhara* "Latin - destroyed, withdrawn" abs. 463. Sk. *sāṅharati* Pk. *sāṅharai*, lw. *sāṅhar-* + OG. abs. suff. x.

संभि *sāṅbi* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 416, also *sāṅ* inst. 578; ety. not clear. cf. Sk. *sāṅjāti* 'belonging to the same family'; see Turner *sāṅnu*.

संचरउ *sāṅcaratāu* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 576. Sk. *sāṅcarati*, Pk. *sāṅcarai*.

संदि *sāṅdhi* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 558, Sk. *sāṅdhikā*, Pk. *sāṅdhī*, OG. *sāṅdhī* MG. *sāṅ* th. m. 'uncastrated bull' should be separated from *sāṅbh*, *sāṅbhū* f. female camel'. The former is related to Sk. *sāṅdha* 'uncastrated' the source of latter is not clear. Sk. *sāṅdhikā* is a Sanskritization of Pk. *sāṅdhi* (hence short -i in OG. and -zero in MG.). Bloch *sāṅ*, Turner *sāṅ*.

संभि *sāṅdhi* "having connected, aimed" pas. part. loc. sg. 453. Sk. *sāṅdhitā* Pk. *sāṅdhā* OG. *sāṅdhi*, *sāṅdhiu*. Bloch *sāṅbh*, Turner *sāṅdhiu*.

संभिउ *sāṅpadhi* "attained" past part. m. dir. sg. 461. Sk. *sāṅpadyate* - cf. Sk. *sāṅpadyati* v. s. v. *paḍai*, Bloch *sāṅpadyā*.

संभर *sāṅbhara* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; *sāṅbharaim* 3rd pl. 604; *sāṅbharū* 1st sg. 345; *sāṅbharatā* pres. part. obl. 345 *sāṅbhari* past part. f. 604. Sk. *sāṅbharat* 'collects', *sāṅbhārayati*, Pk. *sāṅbhārei* 'gar. nishes'; MG. *sāṅbhārvā* 'to remember' and *sāṅbhār* 'masala used in cooking preparations' Turner *sāṅmānu*, *sāṅbhāru*.

संभल *sāṅbhala* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529; *sāṅbhalau* imp. 2nd pl. 329; *sāṅbhālatā* pres. part. (unenlarged 86); *sāṅbhālatā* pres. part. m. dir. sg. 426, *sāṅbhālatā* obl. pl. 426; *sāṅbhalu* past part. m. dir. sg. 367, 519; *sāṅbhalum* n. sg. 103; *sāṅbhaliyai* pass. sg. 157, 420, *sāṅbhaliyam* pass. pl. 371; *sāṅbhālītā* pass. pres. part. m. sg. 326; *sāṅbhālīva* inf. of purpose 426; *sāṅbhālī* abs. 83, 109, 498. cf. MG. *bhāyū* 'to observe, see', *nihāyū* 'to see', *sāṅbhāyū* 'to hear', *sāṅbhāyū* 'to guard, take care of'. Sk. *bhālayate*, *nihālayati* and *sāṅbhālayati*. For *-r-* forms in MG. *sāṅbhārvū*, *sāṅbhār*, see under *sāṅbharai*. Turner *sāṅmānu*, *niyānu*, *sāṅbhāru*.

सिद्धन् *sāṅdhāntu* proper noun m. dir. sg. 525.

सिद्ध *sāṅdhu* proper noun m. dir. sg. 487.

सिद्ध *sāṅdhi* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; *sāṅdhitau* pres. part. m. dir. sg. 519. Sk. *sāṅdhī*, Pk. *sāṅdhi*. Bloch *sāṅdhi*, Turner *sāṅdhi*.

सिद्ध *sāṅdhāru* "rock-salt" sub. dir. sg. n. 2) Sk. *sāṅdhavā-* Pk. *sāṅdhava-*.

सुंवल्ल *sumācala* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. *sañcala*; Do. *sumācala*-. Initial -mā-> -a- in MG. cannot be explained.

सुंठी *sunṭhī* "ginger" sub. f. sg. 314. also *sunṭhī* 291. Sk. *sunṭhīh*, *sunṭhī* 'dry ginger'. Pk. *sunṭhī*, MG. *sūṭhī*; final -ī in OG. may be a prakitric influence. Bloch *sūt*, Turner *sūtho*.

स्तवति *stavarūṭi* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *stavāṭi* fut. 3rd sg. 622; *stavāṭi* pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflection.

स्तवति *stavarūṭi* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *stavarūṭi*, OG. *stavarūṭi* + loc. sg. suffix -i.

स्वाध्याय *svādhyāyā* "meditation, study." sub. m. dir. sg. (v. l. *svādhyāyā*) 109. lw. Sk. *svādhyāyāh*, *svādhyāyā*- (for final -u in OG. cf. Sk. *vināyā*-lw. in OG. *vināyā* MG. *vano*, Sk. *īstrūñjaya*-lw. in OG. *īstrūñjaya* MG. *īstrūñjo*, etc.)

*

हं *haum* "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. *hūm*, *hau*, *hūm*) 74, 85; Sk. *ahām*, Pk. *aham*, *ahānī*. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. hū.

हकार *hakāra* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *hakāra* (v. l.) 544. Sk. lex. *hakkāra* "making of the sound hak", onomat. sound of calling. Pk. *hakkāra*, *hakkāra*; MG. *hakkāravū* "to drive"; also cf. MG. *hāk* f. 'call, shout, challenge'. Bloch *hākṇē*, Turner *hāknu*, *hakkānu*.

हति *hadī* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk. *hadīh* m., Pk. *hadī* m., OG. *hadī* f. MG. *hey* f.

हथियार *hatthiyāra* "weapon" sub. n. dir. sg. 329. Sk. **hastā-kāra*- Pk. *hatthiyāra*-n. Turner *hatiyār*.

हथु *hatthūṭa* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hastā-kūṭa*-; (Sk. *hastāh* and *kūṭam* 'mallet' Pk. *kūṭa*) Pk. **hatthā-ūla*-. MG. *hathoṭa*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *hotro*.

हर *harai* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg; *harivā* inf. of purpose 7. Sk. *hāraṭi*, Pk. *harai*. Bloch *harṇē*, Turner *haru*.

हरति *haratī* "pleased" past part. m. dir. sg. 429. *haratīyā* (v. l. *haratīyā*) pl. 142. Sk. *hāraṭi*, *haratī*; MG. *harakh* indicates that -ā should be interpreted as -kh- and hence the intervening stage **harīṣi*, **harīṣi* should be independent of the Pk. *harīṣi*.

हरियाल *hariyāla* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *haritāla*-m., Pk. *harīṣāla*-m. n.

हलवा *halvāna* "cause to shake, move" v. cans pres. 1st sg. 309. Pk. *hallai*, MG. *halvū*; but cf. Hindi *hilaṅ*, Panjabi *hillaṅ*; Dravidian origin is suggested. Bloch *hālnē*, Turner *hālnu*, *hallinu*.

हरिद *haridattu* proper noun m. dir. sg. 425.

हल *halaya* "light (of weight)" adj. dir. sg. m. 602. Probably the text should be *halayan*; cf. MG. *halvo*. Sk. *laghāh*, *laghakah*, Pk. *lahua*-, *halua*-. Bloch suggests Dravidian origin. Bloch *halū*, Turner *haluko*, *halū*.

हव *hava* "now" adv. 452, 590, (v. l. *hiva*) 480; MG. *hava*; cf. H and other Bihari dialects *ab*, *abe*, *abai* etc. Absence of -b- forms in the western group leads Chatterji (ODDEL p. 856) to suggest Sk. *evām*, Pk. *evvam*; for the a- of the demonstrative base of Sk. *asa*, *adya*, *ītra* etc. h- in Guj. cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *adhuṣā*, Pk. *ahunā* MG. *hamuṣā* OG. alternant *hiva* with -i- in the initial syllable is properly explained by Pk. *evvam*; also OG. *havadām*-*hivadām* are explained as extended forms of *hava*-. Thus, MG. *hamuṣā* and *havra*, *havre* (dialectal) should be kept apart.

हवडा *havṛḍā* "just now" adv. 142, also *havadām* 465, 573. for der. a v. *hava*

हसत *hasata* "laughing, jesting" pres part m. dir. sg. 223, 514, 536. Sk. *hasati*. Pk. *hasai*; Bloch *hasṇē*, Turner *hāsnu*.

हस्तियु *hastiyuru* proper noun m. dir. sg. 461.

हाकिट *hākīṭi* "drove out" past part. m. dir. sg. 428. Pk. *hakkā* f. "call", MG. *hākṇē* to drive; v. a. v. *hakkāra*.

हाट *hāṭa* "shop" sub. sg. 386, 478, also *hāṭa* 478; Sk. *hāṭṭah* n. 'market', lex. *hāṭṭī* f.; Pk. *hāṭta*-m. *hāṭṭigā*, *hāṭṭī* f. 'small shop', MG. *hāt* f. n. Turner *hāt*.

हाडु *hāḍu* "bone" sub. n. dir. sg. 245. MG. *hār* n. 'bone' Pk. Do. *hādū*; Bloch suggests connection with Sk. *asthī* n. 'bone', *asthī* f. 'kernel of fruit', *asthā* f. cannot be explained. Bloch *hār*, Turner *hār*.

हाथ *hātha* "hand" sub. m. dir. sig. 38; *hāthī* inst. sg. 538, 539; also loc. sg. 54; *hāthe* inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. *hāsthā*, Pk. *hatthā*-. Bloch *hāt*, Turner *hāt*.

संतावइ *samtāvai* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. samtāpayaī Pk. samtāvei, MG. sātāvū; note the loss of nasal in most of NIA Languages. Turner sātānu.

संपारउ *sam̐pārau* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 541; sam̐hārai loc. sg. 323; sam̐hāra obl. 338; MG. sāthra 'bed on which a person is placed before death'; Sk. samstāra-, Pk. samthār, OG. ext.

संदितावउ *sam̐diatāvau* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. samdiati, Pk. samdisai, caus. samdisāvei.

संदेशउ *sam̐desau* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. samdeśa- Pk. samdeśa- ext. in OG.

संधुषण *sam̐dhūṣaṇa* "act of lighting (fire)" sub. n. 440; note OG. -ṣ- for -kh-. Sk. sandhukṣaṇa- Pk. sandhakkhaṇa-.

संनिवेशि *sam̐niveśi* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. samniveśa- Pk. samniveśa-.

संपन्नइ *sam̐pajjai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. sampadyata Pk. sampajjai.

संबंधिउ *sambandhiu* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; sambandhiu n. sg. 115; sambandhiyām n. pl. 135. Sk. sambandhin Pk. sambandhi ext. in OG.

संबंधिउउ *sambandhiṭṭhau* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. sambandha- (v. s. v. sambandhiu) as a verbal stem.

संभव *sambhava* proper noun m. dir. sg. 110.

संभवइ *sambhavaim* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl 433; sambhāva caus. past part. m. dir. sg. 461; sambhāvītau pass. pres. part. m. dir. sg. 110, sambhāvi abs. 554. Sk. sambhavati, Pk. sambhavai, lw. Pk.

संभार *sambhāra* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. sambhārah Pk. sambhāro m. 'collection' v. s. v. sambhārai.

संभृषी *sambhūṣi* "having adorned, provided" abs. 545, lw. Sk. sambhūṣati, sambhūṣ- + OG; abs. suffix.

संभृषयि *sambhūṣaya* "annual" sub. adj. 383; Sk. samvatsāra-, samvatsarika, Pk. samvatsāriya- lw. Pk.

संभृषयिउ *sambhūṣayau* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; samstāvatau pres. part. m. dir. sg. 110, lw. Sk. samstāvate, samstav + OG. verbal suffixes.

संहरी *sam̐harai* "having destroyed, withdrawn" abs. 463. Sk. samharati Pk. samharai, lw. samhar- + OG. abs. suffix.

संभि *sam̐bi* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 416, also sūiu inst. 578; ety. not clear. cf. Sk. sañjāti 'belonging to the same family', see Turner sūinu.

संचरउ *sam̐caratūm* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 576. Sk. sañcarati, Pk. samcarai.

संभिइ *sam̐bhi* "female camel" sub. f. dir. sg. 511, 538, Sk. sañbhikā, Pk. sandhi, OG. sam̐bhi, MG. sūlh m. 'uncastrated bull' should be separated from sūlh, sūlhi f. female camel'. The former is related to Sk. sūndah 'uncastrated'; the source of latter is not clear. Sk. sañbhikā is a sanskritization of Pk. sañbhi (hence s-ort- in OG and -ro- in MG). Bloch sār, Turner sār.

संभिइइ *sam̐bhi* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 453. Sk. samdadhāti Pk. sam̐bhi OG. sūndhat, sūndhiu. Bloch sūlh, Turner sūdhnu.

संपदिउ *sam̐padiu* "attained" past part. m. dir. sg. 461. Sk. *sampatita- cf. Sk. sampatīti, v. s. v. padai, Bloch sūparpū.

संभरइ *sambhārai* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; sambhāraim 3rd pl. 604; sambhāraim 1st sg. 315; sambhāratā pres. part. obl. 345. sambhāri past part. f. 601. Sk. sambhārti 'collects', sambhārayati, Pk. sambhāreī 'garnishes'; MG. sambhārvū 'to remember' and sambhār 'masala used in cooking preparations'. Turner samānu, sambhāru.

संभलइ *sambhalai* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529; sambhalau imp. 2nd pl. 329; sambhālata pres. part. (unenlarged 86); sambhālata pres. part. m. dir. sg. 426, sambhālata obl. pl. 426, sambhalu past part. m. dir. sg. 367, 519; sambhālau n. sg. 109; sambhāliyai pass. sg. 137, 420, sambhāliyam pass. pl. 371; sambhālā pass. pres. part. m. sg. 326; sambhālā inf. of purpose 426; sambhālī abs. 85, 109, 498. cf. MG. bhālvū 'to observe, see', nihālvū 'to see', sūbhālvū 'to hear', sambhālvū 'to guard, take care of'. Sk. bhālayate, nibhālayati and sambhālayati. For -r- forms in MG. sambhārvū, sambhār, see under sambhārai. Turner samānu, niyānu, sambhāru.

सिंहदनु *sindhadānu* proper noun m. dir. sg. 525.

सिंह *sim̐hu* proper noun m. dir. sg. 487.

सिंचइ *sim̐ci* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; sim̐cātau pres. part. m. dir. sg. 549. Sk. sīñcāti. Pk. sīñci. Bloch sīcū, Turner sīnu.

सिंचउ *sim̐chau* "rook-salt" sub. dir. sg. n. 70. Sk. sīndhāvā- Pk. sīndhava-.

सूचक *sūcalu* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. *sūcalu*; Ds. *sūcalu*- Initial -*um*-> -*a*- in MG. cannot be explained.

सूती *sūthī* "ginger" sub. f. sg. 314. also *sūthī* 291. Sk. *śunthih*, *śunthī* 'dry ginger'. Pk. *śunthī*, MG. *sūth*; final -*i* in OG. may be a prakitric influence. Bloch *sūt*, Turner *sūtho*.

स्तव *stavaum* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *stavāli* fat. 3rd sg. 622; *stavāli* pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflection.

स्मृतानि *smānī* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *śmāśānī*, OG. *smāśān* + loc. sg. *sūmī* -*i*.

स्वाध्याय *svādhyāyū* "meditation, study." sub. m. dir. eg. (v. l. *svādhyāya*) 109. lw. Sk. *svādhyāyab*, *svādhyāya*- (for final -*a* in OG. cf. Sk. *vināya*-lw. in OG. *vinā* MG. *vāno*, Sk. *īstruṣṣāya*-lw. in OG. *īstruṣṣān* MG. *īstruṣṣo*, etc.)

*

हृ *hūm* "I" 1st pers. pro. nom. eg. m. f. (v. l. *hum*, *hau*, *hūm*) 74, 85; Sk. *ahām*, Pk. *aham*, *ahaām*. Initial *a*-before *h*-develops as a murmured vowel in MG. *hū*.

हकार *hākāra* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *hākāra* (v. l.) 544. Sk. lex. *hakkāra* 'making of the sound hāk', onomat. sound of calling. Pk. *hakkāra*, *hakkāra*; MG. *hakkārvū* 'to drive'; also cf. MG. *hāk* f. 'call, shout, challenge'. Bloch *hākya*, Turner *hākna*, *hākāru*.

हदि *hadī* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk. *hadī* m., Pk. *hadī* m., OG. *hadī* f. MG. *hep* f.

हथियार *hatihyāra* "weapon" sub. n. dir. eg. 520. Sk. **hasā-kāra*- Pk. *hatihyāra*-n. Turner *hatiyār*.

हथ *hatihāyū* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hasā-kūṣā-*; (Sk. *hāstah* and *kūṣam* 'mallet' Pk. *kūṣa*) Pk. **hattha-ūla*-. MG. *hattho*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *hatro*.

हर् *harī* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg.; *harivā* inf. of purpose 7. Sk. *hāratī*, Pk. *harāi*. Bloch *harṇē*, Turner *haru*.

हर्षित *harṣita* "pleased" past part. m. dir. eg. 429. *harṣiyā* (v. l. *harṣiyā*) pl. 142. Sk. *hāratī*, *harṣita*; MG. *harakh* indicates that - should be interpreted as -*kh*- and hence the intervening stage **harīṣai*, **harīṣa* should be independent of the Pk. *harīṣa*.

हरियालु *hariyalu* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *haritāla*-m., Pk. *hariāla*-m. n.

हलाय *halāyū* "cause to shake, move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Pk. *hallai*, MG. *halvū*; but cf. Hindi *hīlāṅ*, Panjabi *hīllāṅ*; Dravidian origin is suggested. Bloch *hālṇē*, Turner *hilno*, *hallino*.

हरिदत्त *haridattu* proper noun m. dir. eg. 425.

हलपट *halayū* "light (of weight)" adj. dir. eg. m. 602. Probably the text should be *halayan*; cf. MG. *halvo*. Sk. *laghub*, *laghubak*, Pk. *lahua*-, *halua*-; Bloch suggests Dravidian origin Bloch *hajū*, Turner *haluko*, *halāū*.

हव *hava* "now" adv. 452, 590. (v. l. *hiva*) 480; MG. *have*; cf. H. and other Biharī dialects *ab*, *abe*, *abai* etc. Absence of -*b*- forms in the western group leads Chatterji (ODBL p. 856) to suggest Sk. *evām*, Pk. *evam*; for the *a*- of the demonstrative base cf. Sk. *asau*, *adya*, *ātra* etc. *h*-in Guj. cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *adhunā*, Pk. *ahonā* MG. *hamṇā* OG alternant *hiva* with -*i*- in the initial syllable is properly explained by Pk. *evam*; also OG. *havadām*-*hivadām* are explained as extended forms of *hava*-. Thus, MG. *hamṇā* and *havṇā*, *havṇe* (dialectal) should be kept apart.

हवदा *haratā* "just now" adv. 142, also *havadām* 465, 573. for der s. v. *hava*.

हसत *hasatū* "laughing, josting" pres. part. m. dir. eg. 223, 514, 536. Sk. *hasatī*, Pk. *hasai*; Bloch *hasṇē*, Turner *hāṣṇu*.

हसिपुत्र *hasiputra* proper noun m. dir. eg. 461.

हसित *hasitū* "drove out" past part. m. dir. eg. 428. Pk. *hakkā* f. "call"; MG. *hākvū* to drive; v. s. v. *hākāra*.

हाट *hāta* "shop" sub. eg. 386, 476, also *Latte* 478; Sk. *hattah* m. 'market', lex. *hatti* f.; Pk. *hatta*-m *hattigā*, *hatti* f. "small shop", MG. *hāt* f. n. Turner *hāt*.

हाड *hāda* "bone" sub. n. dir. eg. 245. MG. *hār* n. 'bone' Pk. *Do. hālls*; Bloch suggests connection with Sk. *asthi* n. 'bone', *asth* f. 'kernel of fruit', *asthila* f. 'round pebble'; but -*stha*-> -*lla*- cannot be explained. Bloch *hār*, Turner *hār*.

हाथ *hāth* "hand" sub. m. dir. sig. 34; *hāthi* inst. eg. 524, 539; also loc. eg. 545; *hāthe* inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. *hāstah*. Pk. *hastha*-. Bloch *hāt*, Turner *hāt*.

संतापद् *samtāpādi* "trouble, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. samtāpāyati Pk. samtāveī, MG. sātāvvū; note the loss of nasal in most of NIA languages, Turner sānna.

संघाराड *samghāraḍ* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 541. samghāraḍ loc. sg. 523; samghāra obl. 538; MĀ. sāthra 'bed on which a person is placed before death'; Sk. samstāra-, Pk. samthār, OG. ext.

संदिशाब्द *samdiśābha* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 512; Sk. samdiśati, Pk. samdiśai, caus. samdiśāveī.

संदेश *samdeśa* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. samdeśa- Pk. samdeśa- ext. in OĪ.

संप्रकाश *sampṛkāśa* "act of lighting (fire)" sub. n. 440; note OG. -p for -kh-. Sk. samdhukāna- Pk. samdhukkhaṇa-.

संनिवेसि *samniवेशi* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. samniवेशa- Pk. samniवेशa-.

संपन्न *sampajai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. samapadyate Pk. sampajjai.

संबन्धि *sambandhi* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; sambandhiyam n. sg. 115; sambandhiyām n. pl. 135. Sk. sambandhi Pk. sambandhi ext. in OG.

संबन्धिच *sambandhiśa* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. sambandhi- (v. s. v. sambandhi) as a verbal stem.

संभव *sambhava* proper noun m. dir. sg. 110.

संभवद् *sambhāva* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl. 433; sambhāva caus. past part. m. dir. sg. 461; sambhāvitau pas. pres. part. m. dir. sg. 110; sambhāvi abs. 551. Sk. sambhavati, Pk. sambhavai, lw. Pk.

संभार *sambhāra* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. sambhārah Pk. sambhāro m. 'collection' v. s. v. sambhāra.

संभूषी *sambhūṣi* "having adorned, provided" abs. 515, lw. Sk. sambhūṣati, sambhūṣ- + OĪ; abs. suffix.

संभारचरिय *sambhārachariya* "annual" sub. adj. 383; Sk. samvatsara-, sāmvatārika, Pk. samvatchariya- lw. Pk.

संततश्च *samtatāśca* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; samtatavatau pres. part. m. dir. sg. 110, lw. Sk. samtatavate, samtat + OG. verbal suffixes.

संहरी *samhāri* "having destroyed, withdrawn" abs. 463. Sk. samhāraṭi Pk. samhāraṭi, lw. samhāra- + OG, abs. suffix.

सिद्धि *siddhi* "meet cordially, embrace" sub. 1st sg. 140; also s. 1st sg. 578; ety. not clear, cf. Sk. siddhī 'belonging to the same family'; see Turner sānna.

संघट्ट *samghaṭṭa* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 576. Sk. samghaṭṭati, Pk. samghaṭṭati

सोढि *sodhi* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 118. Sk. samdhikā, Pk. samdhī, OG. sādhi, MG. sādhi m. 'uncastrated bull' should be separated from sādhi, sādhi f. 'female camel'. The former is related to Sk. sādhi 'uncastrated'; the source of latter is not clear. Sk. samdhikā is a samskritization of Pk. samdhī (h = s. short -i in OG and -zero in MĀ); Bloch sād, Turner sād

संधि *sandhi* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 110. Sk. sambandhi Pk. sambandhi OG. sambandhi, sāmndhi, Bloch sādhi, Turner sādhi

संपादि *sampādi* "attained" past part. m. dir. sg. 461. Sk. *sampāditā- cf. Sk. sampāṭi, v. s. v. pāṭi, Bloch sādipāṭi.

संभारद् *sambhāraḍ* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; sambhāraim 3rd pl. 604; sambhāraim 1st sg. 345; sambhāraṭi pres. part. obl. 345. sambhāri past part. f. 604. Sk. sāmghaṭṭati 'collects', sambhārayati, Pk. sambhāreī 'gathers'; MĀ. sambhārvū 'to remember' and sambhār 'masala used in cooking preparations'. Turner samāna, sambhāra.

संभालद् *sambhāla* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529; sambhāla imp. 2nd pl. 329; sambhā-lata pres. part. (unenlarged 86); sambhālatau pres. part. m. dir. sg. 426, sambhālatā obl. pl. 426; sambhāliu past part. m. dir. sg. 367, 519; sambhālum n. sg. 109; sambhāliyai pass. sg. 157, 420; sambhāliyam pass. pl. 371; sambhālātā pass. pres. part. m. sg. 326; sambhāliyai inf. of purpose 426; sambhālī abs. 83, 109, 498. cf. MG. bhāṣyū 'to observe, see', nihāṣyū 'to see', sādhiyū 'to hear', sambhāṣyū 'to guard, take care of'. Sk. bhāṣayate, nibhāṣayati and sambhāṣayati. For -r- forms in MĀ. sambhārvū, sambhār, see under sambhāra. Turner samāna, niyāna, sambhāra.

सिद्धत्तु *siddhatattu* proper noun m. dir. sg. 825.

सिद्ध *siddha* proper noun m. dir. sg. 487.

सिचद् *sicci* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; simcentau pres. part. m. dir. sg. 549. Sk. siñcāti. Pk. siñcaṭ. Bloch siñcā, Turner siñca.

सोपद् *sopada* "rook-salt" sub. dir. sg. n. 20. Sk. saindhavā- Pk. sīndhava-.

सूचक *sūcaka* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. sāncak; De. sūncaku-. Initial -am-> -a- in MG. cannot be explained.

सूठी *sūthī* "ginger" sub f. sg. 314. also *sūthī* 291. Sk. *sūthāh*, *sūthāh* 'dry ginger'. Pk. *sūthī*, MG. *sūthi*; floal -ī in OG. may be a prakritic influence. Bloch sat. Turner autho.

स्तवय *stavaṃ* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *stavisi* fut. 3rd sg. 622; *stavitai* pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflection.

स्मसानि *smāsāni* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *smāsānām*., OG. *smāsān* + loc. sg. suffix -ī.

स्वाप्याय *svādhyāy* "meditation, study." sub. m. dir. sg. (v. l. *svādhyāya*) 109. lw. Sk. *svādhyāyah*, *svādhyāya-* (for *śnal* -u in OG. cf. Sk. *vinaya-* lw. in OG. *vinau* MG. *vano*, Sk. *satrañjaya-* lw. in OG. *śatrubjan* MG. *śatrumjo*, etc.)

*

हउ *hauḥ* "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. *ham*, *hau*, *hūm*) 74, 85; Sk. *ahām*, Pk. *aham*, *ahasm*. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. hū.

हकार *hakarai* "calls, invites" v. pres. 3rd sg 403; also *hakarai* (v. l.) 544. Sk. lex. *hakkāra* 'making of the sound hak', onomat. sound of calling. Pk. *hakkārei*, *hakkārai*; MG. *hamkārū* 'to drive'; also cf. MG. *hāk f.* 'call, shout, challenge'. Bloch *hākṇē*, Turner *hāknu*, *hākānu*.

हडि *hadī* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk. *hadīh m.*, Pk. *hadī m.*, OG. *hadī f.* MG. *her f.*

हथियार *hatihyāra* "weapon" sub. n. dir. sg. 529. Sk. **hastha-kāra-* Pk. *hatihyāra-* n. Turner *hatiyār*.

हथु *hatihūḥ* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hastha-kūṭja-* (Sk. *hasthāh* and *kūṭam* 'mallet' Pk. *kūṭja*) Pk. **hattha-ūla-* MG. *hathoro*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *hetro*.

हर्न *harai* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg; *hariva* inf. of purpose 7. Sk. *hāratī*, Pk. *harai*. Bloch *harṇē*, Turner *harua*.

हर्षय *harṣya* "pleased" past part. m. dir. sg. 429. *harṣiyā* (v. l. *harṣiyā*) pl. 142. Sk. *hāṣṭati*, *harṣita*; MG. *harakh* indicates that - should be interpreted as -kh- and hence the intervening stage **harisā*, **harisān* should be independent of the Pk. *harisā*.

हथियार *hatihyāra* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *haritāla-* m., Pk. *harīāla-* m. n.

हलाय *halāyā* "cause to shake, move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Pk. *halai*, MG. *halvū*; but cf. Hindi *hilān*, Panjabi *hillaṇā*; Dravidian origin is suggested, Bloch *hāhṇē*, Turner *hilnu*, *hāllina*.

हलित्तु *halitttu* proper noun m. dir. sg. 425.

हलय *halaya* "light (of weight)" adj. dir. sg. m. 602. Probably the text should be *halayau*; cf. MG. *halvo*. Sk. *laghūh*, *laghukah*, Pk. *lahua-*, *halua-*, Bloch suggests Dravidian origin. Bloch *hajū*. Turner *halako*, *halāū*.

हव *hava* "now" adv. 452, 590. (v. l. *hiva*) 480; MG. *have*; cf. H. and other Bihari dialects *ab*, *abe*, *abai* etc. Absence of -b- forms in the western group leads Chatterji (ODBL p. 856) to suggest Sk. *evām*, Pk. *evam*. for the a- of the demonstrative base cf. Sk. *asa*, *adṛā*, *ātra* etc. h-m Guj cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *adhunā*, Pk. *ahunā* MG. *hamṇē* OG. alternant *hiva* with -i- in the initial syllable is properly explained by Pk. *evam*; also OG. *havaḥam*-*hivaḥam* are explained as extended forms of *hava-*. Thus, MG. *hamṇē* and *havṛā*, *havre* (dialectal) should be kept apart.

हवटा *havatā* "just now" adv. 142, also *havādām* 465, 573. for *der s v. hava*.

हसत *hasata* "laughing, jesting" pres. part. m. dir. sg. 223, 514, 536. Sk. *hasati*, Pk. *hasai*; Bloch *hasṇē*, Turner *hānu*.

हस्तियु *hastiyuru* proper noun m. dir. sg. 461.

हाकिउ *hākiu* "drove out" past part. m. dir. sg. 428. Pk. *hakkā f.* "call"; MG. *hākvū* to drive; v s. v. *hakarai*.

हाट *hāṭa* "shop" sub. sg. 386, 478, also *hāṭta* 478; Sk. *hasthā m.* 'market', lex. *hastī f.*; Pk. *hastā-* m. *hastīgā*, *hastī f.* "small shop", MG. *hāt f. n.* Turner *hāt*.

हाडु *hāḍu* "bone" sub. n. dir. sg. 243. MG. *hāy n.* 'bone' Pk. De. *hadda*; Bloch suggests connection with Sk. *asthi n.* 'bone', *asthī f.* 'kernel of fruit', *asthīla f.* 'round pebble', but -stha-> -ḍa- cannot be explained. Bloch *hār*, Turner *hār*.

हाथ *hātha* "hand" sub. m. dir. sig. 38; *hāthi* inst. sg. 538, 559; also loc. sg. 547; *hāthe* inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Sk. *hasthāh*, Pk. *hattha-*. Bloch *bāt*, Turner *bāt*.

- संतारइ *saññāra* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. saññāpīyati Pk. saññāveī, MG. saññāvū; note the loss of nasal in most of NIA languages, Turner saññānu.
- संथारइ *sañthārau* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 541; sañthārai loc. sg. 323; sañthāra obl. 338; MG. sāthro 'bed on which a person is placed before death'; Sk. sañthāra-, Pk. sañthār, OG. ext.
- संदिमावइ *sañdīmāvaum* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. sañdisati, Pk. sañdisasi, caus. sañdisāveī.
- संदेशउ *sañdesau* "message" sub. dir. sg. m. 192. Sk. sañdesa- Pk. sañdesa- ext. in OG.
- संपरण *sañdhāraṇa* "act of lighting (fire)" sub. n. 440; note OG. - for -kh-. Sk. sañdhuk-ṇa- Pk. sañdhukkhaṇa-.
- संनिवेशि *sañniveśi* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. sañniveśa- Pk. sañniveśa-.
- संपन्नइ *sañpajjai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. sañpadyate Pk. sañpajjai.
- संबन्धिउ *sañbandhiu* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; sañbandhiu n. sg. 115, sañbandhiyām n. pl. 135. Sk. sañbandhiu Pk. sañbandhi ext. in OG.
- संबन्धिउउ *sañbandhiṇau* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. sañbandhi- (v. s. v. sañbandhiu) as a verbal stem.
- संभव *sañbhava* proper noun m. dir. sg. 110.
- संभवइ *sañbhavaim* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl. 433; sañbhāva caus. past part. m. dir. sg. 461; sañbhāvītau pass. pres. part. m. dir. sg. 110; sañbhāvi abs. 554. Sk. sañbhavati, Pk. sañbhavai, lw. Pk.
- संभार *sañbhāru* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. sañbhāra Pk. sañbhāro m. 'collection' v. s. v. sañbhāra.
- संभारि *sañbhāri* "having adorned, provided" abs. 545, lw. Sk. sañbhāriyati, sañbhāri- + OI, abs. suffx.
- संभवउरिणि *sañbhavarīṇi* "annual" sub. adj. 385; Sk. sañbhavāra-, sañbhavāriṇi, Pk. sañbhavarīṇi- lw. Pk.
- संभवउउ *sañbhavau* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; sañbhavatu pres. part. m. dir. sg. 110. lw. Sk. sañbhavate, sañbhav + OG. verbal suffx.
- संभरि *sañbhari* "Lavin" destroyed, withdrawn" abs. 463. Sk. sañbhāriyati Pk. sañbhārai, lw. sañbhāri- + OG. abs. suffx.

संभि *sañbhi* "meet cordially, embrace" sub. inst. eg. 446, also sañbhi inst. 578; ety. not clear. cf. Sk. sañjāti 'belonging to the same family', see Turner sañnu.

संभवतइ *sañbhavatau* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 376. Sk. sañbhāriyati, Pk. sañbhārai.

सांदि *sañdhi* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 358; Sk. sañdhikā, Pk. sañdhi, OG. sañdhi. MG. sañdh m. 'uncastrated bull' should be separated from sañdh, sañdhī f. female camel'. The former is related to Sk. sañdah 'uncastrated'; the source of latter is not clear. Sk. sañdhikā is a sañskritization of Pk. sañdhi (hence short -i in OG. and -zero in MG.). Bloch sār, Turner sār

सांदिइ *sañdhiu* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 453. Sk. sañdadhāti Pk. sañdāhi OG. sañdhai, sañdhiu, Bloch sañdh, Turner sañdhau.

सांपटिउ *sañpatīu* "attained" past part. m. dir. eg. 461. Sk. *sañpatita- cf. Sk. sañpatati, v. s. v. padai, Bloch sañparṇe,

संभरइ *sañbhārai* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; sañbhāraim 3rd pl. 604; sañbhārum 1st sg. 345; sañbhāratī pres. part. obl. 345. sañbhāri past part. f. 601. Sk. sañbhāraṇi 'collects', sañbhārayati, Pk. sañbhārei 'garnishes'; MG. sañbhārvū 'to remember' and sañbhār 'masala used in cooking preparations'. Turner sañānu, sañbhāru.

सांभरइ *sañbhārai* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529; sañbhārau imp. 2nd pl. 329; sañbhā-lata pres. part. (unenlarged 86); sañbhālatāu pres. part. m. dir. sg. 426. sañbhālatā obl. pl. 426; sañbhāliu past part. m. dir. sg. 367, 519; sañbhālu m. n. sg. 109; sañbhāliyai pass. sg. 157, 420. sañbhāliyaim pass. pl. 371; sañbhāliṭā pass. pres. part. m. sg. 326; sañbhāliṭā inf. of purpose 426; sañbhāli abs. 85, 109, 498. cf. MG. bhāliṭvū 'to observe, see', nihāliṭvū 'to see', sañbhāliṭvū 'to hear', sañbhāliṭvū 'to guard, take care of'. Sk. bhālayate, nihālayati and sañbhālayati. For -r- forms in MG. sañbhārvū sañbhār, see under sañbhārai. Turner sañānu, niyānu, sañbhāru.

सिंदइ *sañbhakattu* proper noun m. dir. sg. 523

सिंद *sañbhu* proper noun m. dir. sg. 497.

सिंचइ *sañcī* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; sañcītau pres. part. m. dir. sg. 519. Sk. sañcīti, Pk. sañcī. Bloch sañcī, Turner sañcī.

सिंधइ *sañdhāru* "rock-salt" sub. dir. sg. n. 23. Sk. sañdhāra- Pk. sañdhāra-.

सुंवलु *sūnvalu* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. *suñca*; Do. *suñca*-. Initial -*nm*- > -*a*- in MG. cannot be explained.

सुंठी *sūnṭhī* "ginger" sub. f. sg. 314. also *sūnṭhī* 201. Sk. *suñṭhā*, *suñṭhī* 'dry ginger'. Pk. *suñṭhī*, MG. *sūth*; final -*i* in OG. may be a prakrit influence. Bloch *sū*, Turner *sūtho*.

स्तवतु *stavaṭu* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *stavāṭi* fut. 3rd sg. 622; *stavāṭi* pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflection.

मसतानि *masatāni* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *śmaśānām*., OG. *amaśān* + loc. sg. suffix -*i*.

स्वाध्याय *svādhyāy* "meditation, study." sub. m. dir. sg. (v. l. *svādhyāya*) 109. lw. Sk. *svādhyāyah*, *svādhyāya*- (for final -*u* in OG. cf. Sk. *vinaya*-lw. in OG. *vinau* MG. *vano*, Sk. *śatruñjaya*-lw. in OG. *śatruñjan* MG. *śatruñjo*, etc.)

*

हउ *hauḥ* "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. *hum*, *hau*, *hūm*) 74, 85; Sk. *aham*, Pk. *aham*, *aham*. Initial *a*- before *h*- develops as *a* murmured vowel in MG. *hū*.

हकार *hakarai* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *hakarai* (v. l.) 544. Sk. lex. *hakkāra* "making of the sound *hak*", onomat. sound of calling. Pk. *hakkārai*, *hakkārai*; MG. *hamkārū* 'to drive'; also cf. MG. *hāk f.* 'call, shout, challenge'. Bloch *hākṇṇ*, Turner *hāknu*, *hākānu*.

हदि *hadi* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Sk. *hadhi m.*, Pk. *hadi m.*, OG. *hadī f.* MG. *hey f.*

हथिया *hatthiyā* "weapon" sub. n. dir. sg. 520. Sk. **hastā-kāra*- Pk. *hatthiyāra*-n. Turner *hatyār*.

हथु *hatthū* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hastā-kūṭa*-; (Sk. *hastāh* and *kūṭam* 'mallet' Pk. *kūṭa*) Pk. **hattha-ūṭa*-. MG. *hattho*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *hotro*.

हउ *hauḥ* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg.; *harāṭi* Inf. of purpose 7. Sk. *harāti*, Pk. *harai*. Bloch *harṇṇ*, Turner *harṇa*.

हउ *harāṭi* "pleased" past part. m. dir. sg. 429. *harāṭi* (v. l. *harāṭi*) pl. 142. Sk. *harāṭi*, *harāṭi*; MG. *harakh* indicates that - should be interpreted as -*kh*- and hence the intervening stage **harai*!, **harāṭi* should be independent of the Pk. *harāṭi*.

हउ *harāṭi* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *Larītāla*-m., Pk. *hāṭāla*-m. n.

हउ *halayam* "cause to shake, move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Pk. *halāṭi*, MG. *halvū*; but cf. Hindi *hilānā*, Panjabi *hīlānā*; Dravidian origin is suggested. Bloch *hālānā*, Turner *hilnū*, *hālānū*.

हउ *haridattu* proper noun m. dir. sg. 425.

हउ *halayam* "light (of weight)" adj. dir. sg. m. 602. Probably the text should be *halayam*; cf. MG. *halvo* Sk. *laghuh*, *laghukah*, Pk. *lahva*-, *halva*-. Bloch suggests Dravidian origin. Bloch *halv*, Turner *halako*, *halāv*

हउ *hava* "now" adv. 452, 500, (v. l. *hava*) 480; MG. *have*; cf. H and other Rihari dialects *ab*, *ab*, *abai* etc. Absence of -*h*- forms in the western group leads Chatterji (ODDB p. 856) to suggest Sk. *evam*, Pk. *evam*; for the *a*- of the demonstrative base cf. Sk. *asa*, *atā*, *ātra* etc. *h*- in Guj cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *atthānā*, Pk. *atthānā* MG. *hamyā* OG. alternant *hiva* with -*i*- in the initial syllable is properly explained by Pk. *evam*; also OG. *havadām*-*hivādām* are explained as extended forms of *hava*-. Thus, MG. *hamvā* and *havva*. *Lavye* (dialectal) should be kept apart

हउ *hasatā* "just now" adv. 142, also *hasatā* 465, 573 for der. s. v. *hava*.

हउ *hasatā* "laughing, jesting" pres. part m. dir. sg. 223, 514, 536. Sk. *hasati*, Pk. *hasai*, Bloch *hasṇṇ*, Turner *hāsān*.

हउ *hasṭiyam* proper noun m. dir. sg. 471.

हउ *hāṭi* "drove out" just part m. dir. sg. 428. Pk. *hakkā f.* "call"; MG. *hāṭv* to drive; v. s. v. *hakarāi*.

हउ *hāṭi* "shop" sub. sg. 386, 478, also *hāṭi* 478; Sk. *Lattah m.* 'market', *hāṭi* *hāṭi f.*, Pk. *hatta*-m. *hattāṭi*, *hatti f.* "small shop", MG. *hāt f.* n. Turner *hāt*

हउ *hāṭi* "bone" sub. n. dir. sg. 243 MG. *hāt n.* 'bone' Pk. *hāṭi*; Bloch suggests connection with Sk. *hātī n.* 'bone', *hātī f.* 'kernel of fruit', *hātī f.* 'round pebble', but -*gha*- > -*ṭa*- cannot be explained. Bloch *hāt*, Turner *hāt*.

हउ *hāṭi* "land" sub. m. dir. sig. 386, *hāṭi* inf. sg. 528, 559; also loc. sg. 541; little lost pl. 473; also loc. pl. 10; Sk. *hātāḥ*, Pk. *hattā*-. Bloch *hāt*, Turner *hāt*

संतावइ *saṁtāvai* "troubles, harasses" v. caus. pres. 3rd sg. 526. Sk. saṁtāpayati Pk. saṁtāvei, MG. saṁtāvū; note the loss of *na* in most of NIA languages. Turner saṁtāva.

संघारउ *saṁghāra* "a bed (of a monk), place where the monks live" sub. m. dir. sg. 511; saṁghārai loc. sg. 323; saṁghāra obl. 338; MG. sāthro 'bed on which a person is placed before death'; Sk. saṁstāra-, Pk. saṁthār, OG. ext.

संदिशावउ *saṁdīśāva* "I get permission" v. caus. pres. 1st sg. 342; Sk. saṁdīśati, Pk. saṁdīśai, caus. saṁdīśāvei.

संदिशउ *saṁdīśa* "message" sub. dir. sg. m. 102. Sk. saṁdīśa- Pk. saṁdīśa- ext. in OG.

संघपण *saṁdhyāna* "act of lighting (fire)" sub. n. 440, note OG. -p- for -kh-. Sk. saṁdhyāna- Pk. saṁdhakkhāna-.

संनिवेशि *saṁniveśi* "in the residence" sub. m. loc. sg. 112. Sk. saṁniveśa- Pk. saṁniveśa-.

संपत्तइ *saṁpattai* "succeeds, prospers, accrues" v. pres. 3rd sg. 588. Sk. saṁpadyate Pk. saṁpajjai.

संबंधिउ *saṁbandhi* "relative" sub. m. dir. sg. 16, 519; saṁbandhiam n. sg. 115; saṁbandhiyām n. pl. 135. Sk. saṁbandhin Pk. saṁbandhi ext. in OG.

संबंधिउ *saṁbandhirau* "should be related" ger. (denominative) dir. sg. m. 513. OG. saṁbandha- (v. s. v. saṁbandhi) as a verbal stem.

संभव *saṁbhava* proper noun m. dir. sg. 110.

संभवइ *saṁbhavaim* "likely to happen, develop; to produce" v. pres. 3rd pl 433; saṁbhāva caus. past part. m. dir. sg. 461; saṁbhāvītau pass. pres. part. m. dir. sg. 110; saṁbhāvi abs. 553. Sk. saṁbhavati, Pk. saṁbhavai, lw. Pk.

संभार *saṁbhāra* "goods, stuff" sub. m. dir. sg. 463. Sk. saṁbhārah Pk. saṁbhāro m. 'collection'. v. s. v. saṁbhārai.

संभारि *saṁbhāri* "having adorned, provided" abs. 513, lw. Sk. saṁbhāriyati, saṁbhāri- + (N). abs. suffix.

संभारणिय *saṁbhāriya* "annual" sub. m. dir. 385; Sk. saṁvatsāra-, saṁvatsārika, Pk. saṁvatsāriya- lw. Pk.

संभारउ *saṁbhāra* "I praise" v. pres. 1st sg. 614; saṁbhāra pres. part. m. dir. sg. 110, lw. Sk. saṁbhāra, saṁbhāra + OG. verbal suffixes.

संभर *saṁbhar* "Lavin + destroyed, withdrawn" abs. 473. Sk. saṁbhāra Pk. saṁbhārai, lw. saṁbhāra- + OG. abs. suffix.

सांभ *saṁbha* "meet cordially, embrace" sub. inst. sg. 416, also saṁbha inst. 578; ety. not clear. cf. Sk. saṁjāti 'belonging to the same family', see Turner sāna.

सांभरतउ *saṁbhāratā* "moving, going" pres. part. m. dir. sg. 376. Sk. saṁbhāra Pk. saṁbhārai.

सांभि *saṁbhi* "female camel" sub. f. dir. sg. 311, 538; Sk. saṁbhīkā, Pk. saṁbhī, OG. saṁbhi, MG. sāṁbhi m. 'uncastrated bull' should be separated from sāṁbhi, sāṁbhī f. female camel. The former is related to Sk. saṁbhā 'uncastrated'; the source of latter is not clear. Sk. saṁbhīkā is a Sanskritization of Pk. saṁbhi (hence short -i in OG. and -zero in MG.). Bloch sāṁ, Turner sāṁ

सांभिइ *saṁbhi* "having connected, aimed" past part. loc. sg. 453. Sk. saṁbhadhā Pk. saṁbhāi OG. saṁbhadh, saṁbhi, Bloch sāṁbhi, Turner sāṁbhi.

सांपदिउ *saṁpadū* "attained" past part. m. dir. sg. 461. Sk. *saṁpattita- cf. Sk. saṁpatti v. s. v. padai, Bloch sāṁpattā,

सांभरइ *saṁbhārai* "remembers" v. pres. 3rd sg. 326, 345; saṁbhāraim 3rd pl. 604; saṁbhāraim 1st sg. 343; saṁbhāratā pres. part. obl. 345. saṁbhāri past part. f. 604. Sk. saṁbhāra 'collects', saṁbhārayati, Pk. saṁbhārei 'garnishes'; MG. saṁbhārvū 'to remember' and saṁbhār 'masala used in cooking preparations'. Turner saṁbhāra, saṁbhāra.

सांभरइ *saṁbhalai* "hears, listens" v. pres. 3rd sg. 429, 529; saṁbhalau imp. 2nd pl. 329; saṁbhā-lata pres. part. (unenlarged 86); saṁbhalata pres. part. m. dir. sg. 426, saṁbhalatā obl. pl. 426; saṁbhalai past part. m. dir. sg. 367, 619; saṁbhalium n. sg. 109; saṁbhāliyai pass. sg. 157, 120, saṁbhāliyam pass. pl. 371; saṁbhāliū pass. pres. part. m. sg. 326; saṁbhāliū inf. of purpose 426; saṁbhāli abs. 85, 109, 498. cf. MG. bhāliū 'to observe, see', nihāliū 'to see', sāṁbhāliū 'to hear', saṁbhāliū 'to guard, take care of'. Sk. bhālayati, nihālayati and saṁbhāliayati. For -r- forms in MG. saṁbhārvū, saṁbhār, see under saṁbhārai. Turner saṁbhāra, niyāna, saṁbhāra.

सिंहदइ *siṁhadati* proper noun m. dir. sg. 525.

सिंह *siṁha* proper noun m. dir. sg. 487.

सिंचइ *siṁcā* "sprinkles" v. pres. 3rd sg. 521; siṁcātau pres. part. m. dir. sg. 519. Sk. siṁcāti. Pk. siṁcā. Bloch siṁcā, Turner siṁcā.

सांभर *saṁbhāra* "rook-owl" sub. dir. sg. n. 29. Sk. saṁbhāra- Pk. siṁdhāra-.

सुंजल *śūncalu* "a type of salt" sub. dir. sg. n. 20. MG. śaṅcala; Do. śūncalu-. Initial -am-> -a- in MG. cannot be explained.

सुंठी *śūṅṭhī* "ginger" sub. f. sg. 314. also *śūṅṭhī* 291. Sk. *śūṅṭhīh*, *śūṅṭhī* 'dry ginger'. Fk. *śūṅṭhī*, MG. *śūṅṭhī*; final -ī in OG. may be a prakritic influence. Bloch *śūṅ*, Turner *śūṅho*.

स्तवति *stavaṁ* "I praise" v. pres. 1st sg. 377; *stavīṣi* fut. 3rd sg. 622; *stavīṣi* pass. pres. part. loc. sg. 80; lw. Sk. *stava* + OG. verbal inflection.

स्मशानि *śmaśāni* "to the burial ground" sub. n. loc. sg. lw. Sk. *śmaśānāni*, OG. *śmaśān* + loc. sg. *śmaśān* -i.

स्वाध्यास *svādhyāsa* "meditation, study." sub. m. dir. sg. (v. l. *svādhyāsa*) 109. lw. Sk. *svādhyāsa*, *svādhyāsa* - (for final -a in OG. cf. Sk. *vinaya* -lw. in OG. *vinas* MG. *vano*, Sk. *īstruṅjaya* -lw. in OG. *īstruṅjau* MG. *īstruṅjo*, etc.)

*

हृत् *hṛaṁ* "I" 1st pers. pro. nom. sg. m. f. (v. l. *hum*, *hṛo*, *hūm*) 74, 85; Sk. *ahām*, Fk. *aham*, *ahamā*. Initial a- before h- develops as a murmured vowel in MG. *hū*.

हकार *hākāra* "calls, invites" v. pres. 3rd sg. 403; also *hākārei* (v. l.) 544. Sk. lex. *hakkāra* 'making of the sound hak', onomat. sound of calling. Fk. *hakkārei*, *hakkārai*; MG. *hamkārū* 'to drive'; also cf. MG. *hāk* f. 'call, shout, challenge'. Bloch *hākṣā*, Turner *hākau*, *hākāru*.

हृदि *hṛdi* "wooden fetters" sub. f. dir. 402. Fk. *hadīh* m., Fk. *hadī* m., OG. *hadī* f. MG. *heḥ* f.

हथियार *hatthiyāra* "weapon" sub. n. dir. sg. 529. Sk. **hastā-kāra* - Fk. *hatthiyāra* -n. Turner *hatiyār*.

हथि *hatthiyā* "hammer" sub. dir. sig. m. 213. Sk. **hastā-kūṭṭā*; (Sk. *hāstab* and *kūṭṭam* 'mallet' Fk. *kūṭṭa*) Fk. **hattha-ūla* - MG. *hattho*. Nasalisation in OG. cannot be explained. Turner *botro*.

हृत् *hṛo* "takes away, robs" v. pres. 3rd sg.; *hṛāvī* inf. of purpose 7. Sk. *hṛāti*, Fk. *haraī*. Bloch *harṇā*, Turner *harna*.

हृत् *hṛo* "pleased" past part. m. dir. sg. 429. *hṛāvī* (v. l. *hṛāvī*) pl. 142. Sk. *hṛāvī*, *hṛāvī*; MG. *haraḥh* indicates that -e- should be interpreted as -kh- and hence the intervening stage **hāraī*, **hāriṣu* should be independent of the Fk. *hāriṣi*.

हरिषु *hariṣū* "sulphuret of arsenic, yellow orpiment" sub. dir. sg. m. 20. Sk. *harīṣā* - m., Fk. *hariṣā* - m. n.

हलपट *halapaṭa* "cause to shake, move" v. caus. pres. 1st sg. 309. Fk. *hallai*. MG. *halvū*; but cf. Hindi *hīlnā*, Panjabi *hīllāṅ*; Dravidian origin is suggested, Bloch *hālnā*, Turner *hīlnu*, *hallīnu*.

हरिदत्त *haridattu* proper noun m. dir. sg. 425.

हलपट *halapaṭa* "light (of weight)" adj. dir. sg. m. 602. Probably the text should be *halaya*; cf. MG. *halva*. Sk. *laghuv*, *laghukah*, Fk. *lahua*-, *halua*-, Bloch suggests Dravidian origin. Bloch *halvā*. Turner *halako*, *halvā*.

हृत् *hṛo* "now" adv. 452, 590. (v. l. *hiva*) 490; MG. *havo*; of H and other Bihar dialects *ab*, *abe*, *abai* etc. Absence of -b- forms in the western group leads Chatterji (ODBL p. 856) to suggest Sk. *evam*, Fk. *evvam*; for the a- of the demonstrative base cf. Sk. *asa*, *adrā*, *ātra* etc. h- in Guj cannot be explained, but it may be analogical extension of Sk. *adhunā*, Fk. *ahunā* MG. *hamṇā* OG. *alternant hiva* with -i- in the initial syllable is properly explained by Fk. *evvam*; also OG. *havalām* - *hivalām* are explained as extended forms of *hava*-. Thus, MG. *hamṇā* and *hava*, *havre* (dialectal) should be kept apart

हृत् *hṛo* "just now" adv. 142, also *havalām* 465, 573. for der s v *hava*.

हसति *hasati* "laughing, jesting" pres part. m. dir. sg. 223, 514, 536. Sk. *hasati*. Fk. *hasai*. Bloch *haspā*. Turner *hāṣṇu*.

हथियार *hatthiyāra* proper noun m. dir. sg. 461.

हृत् *hṛo* "drove out" past part. m. dir. sg. 428. Fk. *hakkā* f. "call"; MG. *hāvū* to drive; v. s. v. *hākāra*.

हृत् *hṛo* "shop" sub. sg. 386, 478, also *hatṭa* 478; Sk. *hastah* m. 'market', lex. *hatṭa* f.; Fk. *hatṭa* - m. *hatṭi* f., *hatṭi* f. "small shop", MG. *hāt* f. n. Turner *hāt*.

हृत् *hṛo* "bone" sub. n. dir. sg. 245. MG. *hāṣ* n. 'bone' Fk. *Do*. *halla*; Bloch suggests connection with Sk. *asthi* n. 'bone', *asthi* f. 'kernel of fruit', *asthā* f. 'round pedicle', but -stha->-dha- cannot be explained. Bloch *hāt*, Turner *hār*.

हृत् *hṛo* "hand" sub. m. dir. sig. 24; *hātī* inst. sg. 554, 559; also loc. sg. 545; *hātī* inst. pl. 463; also loc. pl. 10; Fk. *hātī*. Fk. *hattha*-. Bloch *hāt*, Turner *hāt*.